विश्व साहित्य की रूपरेखा

भगवतशरण उपाध्याय

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

195361

मूल्य	:	बारह रुपये
द्वितीय संस्करण	.	सितम्बर, १६५६
प्रकाशक	:	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक	:	युगान्तर प्रेस, दिल्ली

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रंथ की आवश्यकता उसका लेखन प्रारंभ करने से बहुत पहले प्रतीत हुई थी। हिंदी का लेखक प्रायः ससार के सारे साहित्यो के लेखकों से कम पढ़ा-लिखा है। यह दर्द की बात है और मै यह कहते हुए अपने को भी उसी वर्ग मे गिन रहा हूं। लगा कि इस प्रकार का साहित्य प्रस्तुत कर दिया जाए जिससें दूसरे साहित्यो का ज्ञान हमारे सक्रिय लेखकों को हो और वे जानें कि हमे और बहुत जानना है और कि हमारे समानधर्मी विदेशी साहित्यकारो ने किन-किन परिस्थितियो मे कैसी-कैसी कृतियों का सृजन किया है। इसी उद्देश्य को सामने रखकर प्रायः छः महीने की दिन-रात की मेहनत से इसे प्रस्तुत कर सका हू। ग्रन्थ के सम्बन्ध मे किसी प्रकार की मौलिकता का दावा स्वाभाविक ही नही करता। मेहनत का दावा जरूर करता हूं क्योकि बड़ी-बडी पुस्तको को छान-निचोडकर आखिर ग्रन्थ के विविध साहित्यो के इतिहास प्रस्तुत हुए हैं। हां, उस छान-निचोड़ की दिशा मे यदि कुछ वैभव बन पडा हो तो, पडितो और लेखकों की तृप्ति से, सुख पाऊंगा। आशा करता हूं कि लेखक ग्रन्थ को पढ़ेंगे और विविध साहित्यो से बल प्राप्त करेंगे। इसी उद्देश्य को सामने रखकर पुस्तक लिखी गई है, इसी उद्देश्य से यह लेखको को ही समर्पित भी हुई है।

'विश्वसाहित्य की रूपरेखा' की पांडुलिपि आज पांच साल से ऊपर हुए तैयार होकर पड़ी थी। आज तक ग्रन्थ क्यों नहीं छप पाया इसकी एक कहानी है, जिसे कहने की जरूरत नही। वर्तमान प्रकाशकों ने इस बड़े ग्रन्थ को छापकर मेरा और लेखको का हित किया है।

कहना न होगा कि ग्रन्थ लिखने में मुझे प्रभूत परिश्रम करना पड़ा था, और कार्य खोज के आनन्द से भी सयुक्त न था, निरंतर श्रम का था।

काशी
१६-६-५७

—*भगवतशरण उपाध्याय*

दूसरे संस्करण की भूमिका

ग्रन्थ के पहले संस्करण की प्रतियो का डेढ़ साल के अन्दर ही बिक जाना इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है। इस प्रकार के ग्रन्थ साधारणतः बिकने मे समय लेते है परन्तु प्रगट है कि विद्वानो ने इसका आदर किया है। इससे लेखक को निश्चय ही बड़ा सन्तोष हुआ है और साथ ही उसका उत्साह-वर्धन भी हुआ है। कुछ सुधारों के साथ दूसरा संस्करण पाठकों के हाथ मे देते हुए मुझे प्रसन्नता होती है।

काशी
१ अक्तूबर, १९५९ ई०

—*भगवतशरण उपाध्याय*

हिन्दी के लेखकों को समर्पित

अनुक्रमणिका

१. अंग्रेजी साहित्य — १३-६६

१. ऐंग्लो-सैक्सन साहित्य — १३

आरम्भ प्राचीन काव्य धर्म काव्य : प्राचीन गद्य · प्रथम लैटिन-इंग्लिश शब्द-कोष

साहित्यिक आदर्श में परिवर्तन — १६

नार्मन विजय से चॉसर तक

२. अंग्रेजी काव्य — १७

चॉसर और उसके परवर्ती : स्काच कवि . इटैलियन प्रभाव

पुनर्जागरण-युग — २१

पुनर्जागरण-युग का अन्त — २४

क्लासिकल-काव्य — २६

व्यंग्य . भावुकता

रोमाण्टिक काव्य — ३०

बुद्धिवाद और विज्ञान — ३६

आशावाद नैतिक और साहित्यिक आलोचना

नवयुग का उदय — ४०

बीसवीं सदी — ४२

३. नाट्य साहित्य — ४४

शेक्सपियर से पूर्व — ४४

शेक्सपियर और उसके परवर्ती — ४७

शेक्सपियर के समवर्ती — ४६

पुनर्जागरण काल का अन्त — ५२

नाटक का पुनरुत्थान — ५३

शेरिडन से शॉ तक — ५५

औद्योगिक क्रांति : उन्नीसवी सदी का अन्त : बीसवी सदी

४. उपन्यास — ६०

आरम्भ से डि फ्रो तक — ६०

रिचर्डसन से स्कॉट तक ६१
भावुकता . वास्तविकवाद . ऐतिहासिक उपन्यास
डिकेन्ज से आज तक ६७
५. *अंग्रेज़ी गद्य-साहित्य* ७८
अठारहवी सदी तक ७८
आधुनिक गद्य ८२
बीसवी सदी
६. *अमेरिका मे अंग्रेज़ी साहित्य* ८८
२. अरबी साहित्य ९७–१२८
१. *इस्लाम से पूर्व* ९७
प्राचीन कविता : कुरान
२. *हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद* १०२
पुनर्जागरण
३. *नया युग* १०४
बाह्य प्रभाव : भारतीय प्रभाव ' भारतीय पडित बगदाद मे :
भारतीय अंकमाला : पचतत्र कानून व्यवस्था
४. *विदेशों मे अरबी साहित्य* १०८
विज्ञान ' दर्शन कोष . राजनीति सिद्धात : सूफी मत :
अल्फ लैला व लैला
५ *अधकार युग* ११७
विदेशो मे, तुर्क, आन्दोलन
६ *पुनरुत्कर्ष* ११९
७. *वर्तमान युग* १२२
उपन्यास नाटक : लोक-साहित्य . लोक-गीत
३. अक्कादी साहित्य १२९–१४०
१. *वीर महाकाव्य* १२९
इर्रा काव्य : एनुमा-एलिश अन्य काव्य : पुराण : देवस्तोत्र :
सूक्त
४. इटैलियन साहित्य १४१–१६५
१. *मध्य युग* १४१
ह्रास का काल

२. *पुनर्जागरण-युग* १४५

दो धाराए भाषा : इतिहास : जीवन-चरित्र . उपन्यास : नाटक प्रबन्ध काव्य : वैज्ञानिको पर अत्याचार

३. *सत्रहवीं-अठारहवीं सदी* १५३

लिरिक . गद्य : साहित्यिक विद्रोह काव्य

४. *उन्नीसवीं सदी* १५६

रोमाटिक साहित्य : उपन्यास : ड्रामा : लिरिक : काव्य : रोमाटिक . क्लासिकल : यथार्थवाद

५. *बीसवीं सदी* १६४

५. इब्रानी (हिब्रू) साहित्य १६६—१८८

१. *आरंभ* १६६

२. *ताल्मुद-युग* १६९

कल्ला (अधिवेशन)

३. *अरब-स्पेनी युग* १७२

स्वर्ण-युग इटली मे इब्रानी साहित्य . आपत्ति-काल

४. *वर्तमान युग* १७९

५. *फ़िलिस्तीनी साहित्य* १८६

६. *अमेरिकन-इब्रानी साहित्य* १८७

६. ग्रीक साहित्य १८९—२०८

क्लासिकल युग १८९

१. *वीर काव्य* १८९

२. *लिरिक काव्य* १९५

३. *नाटक* १९७

४. *गद्य* २०१

वक्तृता : इतिहास : दर्शन

५. *हैल्लेनिक युग* २०५

काव्य गद्य

६. *रोमन साम्राज्य कालीन साहित्य* २०७

७. चीनी साहित्य २०९—२३१

१. *आरंभ* २०९

२. *क्लासिकल युग* २११

३. कन्फ्यूशस युग ... २१४
४. टाओ युग और बौद्ध युग ... २१५
५. स्वर्ण युग ... २१७
६. समृद्धि-युग ... २२१
७. उपन्यास और नाटक-युग ... २२३
८. पुनर्जीवन काल ... २२४
९. आधुनिक युग ... २२७
१०. समाजवादी (कम्युनिस्त) वर्तमान काल ... २३०

८. चेक साहित्य ... २३२—२३७

९. जर्मन साहित्य ... २३८—२७४

१. प्राचीन युग ... २३८
२. मध्य युग ... २३९
लोक काव्य दरबारी वीर काव्य . प्रणय काव्य : लोकगीत
३. पुनर्जागरण और सुधार-आन्दोलन ... २४३
मानवतावादी
४. अठारहवीं सदी ... २४८
५. आधुनिक युग ... २५०
६. रोमांटिक युग ... २५६
राजनीतिक कविताए यथार्थवादी उपन्यास : लिरिक काव्य : यथार्थवादी कविता ' प्रकृतिवादी साहित्य रस-वादी परपरा
७. वर्तमान युग ... २६९
अभिव्यजनावाद नव यथार्थवाद : नात्सी-रोमान्टिकवाद

१०. जापानी साहित्य ... २७५—२९२

१. आरंभ युग ... २७५
२. नारा युग ... २७६
३. हेइयन युग ... २७७
४. कामाकुरा युग ... २७९
५. नाम्बोकुचो और मुरोमाची युग ... २८१
६. इदो युग ... २८३
७. वर्तमान युग ... २८७

११. डच साहित्य २६३—३०३
१२. डेनी साहित्य ३०४—३१७
१३. तुर्की साहित्य ३१८—३२२
१४. नार्वे का साहित्य ३२३—३३५
बाइकिंग काव्य
१५. पोल साहित्य ३३६—३४३
१६. फ़ारसी साहित्य ३४४—३७०
१. इस्लाम से पूर्व ३४४
२. अब्बासी खिलाफत काल ३४८
३. मंगोल युग ३५७
४. आधुनिक ईरान ३६५
१७. फिनलैंड का साहित्य ३७१—३७८
१८. फ्रेंच साहित्य ३७९—४०७
१. मध्य युग ३७९
२. पुनर्जागरण-काल ३८२
३. सत्रहवीं सदी ३८६
४. अठारहवीं सदी ३९२
५. उन्नीसवीं सदी ३९५
६. बीसवीं सदी ४०३
७. लोकसाहित्य ४०६
१९. मिस्र का प्राचीन साहित्य ४०८—४१३
२०. युगोस्लाव साहित्य ४१४—४२१
२१. रूसी साहित्य ४२२—४५५
१. विदेशी साहित्य से सम्बन्ध ४२२
२. पुश्किन-युग ४२६
३. लेरमोन्तोव ४३४
४. गद्य-युग ४३७
५. सुधार-युग ४४०
६. टॉल्स्टॉय और दॉस्ताएव्स्की ४४५
७. कविता का पिछला युग ४४९

८. बीसवीं सदी और वर्तमान ४५१
९. क्रान्ति के बाद ४५४

२२. लातीनी (लैटिन) साहित्य ४५६—४७५
१. रिपब्लिक युग ४५६
२. आगुस्तस का युग ४६३
३. रजत युग ४६६
४ उत्तरकालीन लातीनी साहित्य ४६९

२३. संस्कृत, पाली और प्राकृत ४७६—५१२
१ संस्कृत साहित्य ४७६
वैदिक साहित्य ४७६
सहिता-काल
उत्तर कालीन वैदिक साहित्य ४७९
ब्राह्मण . आरण्यक और उपनिषद्
वेदाग
इतिहास-पुराण ४८१
ऐतिहासिक काव्य पुराण
क्लासिकल साहित्य ४८५
२ पाली ५०१
संस्कृत में बौद्ध साहित्य ५०२
३. प्राकृत ५०४

२४. स्पेनी साहित्य ५१३—५४१
१ मध्य युग ५१३
वीर काव्य
२. पुनर्जागरण युग ५१७
रूढिवादी परम्परा पर आघात
३. अठारहवीं सदी ५२७
४. उन्नीसवीं सदी ५३०
५. वर्तमान काल ५३५
६. स्पेनी अमेरिका ५३७

२५. स्वीड साहित्य ५४२—५५६
१-२ मध्यकालीन साहित्य; बाइबिल के अनुवाद ५४२
३. नई कविता का उदय ५४९

२६. हित्ती साहित्य ५५७-५६०
१. बोगजकोइ के खंडहर ५५७
हित्तियो के अपूर्व साहित्य भडार के प्रतीक

१. अंग्रेज़ी साहित्य

: १ :

ऐंग्लो-सैक्सन साहित्य

(६००-१०६६ ई०)

इस देश के निवासियो के लिए, जो अपना इतिहास सहस्राब्दियो मे गिनते है, इग्लैड का इतिहास बहुत प्राचीन नही। उसके साहित्य का इतिहास तो अपेक्षाकृत नितान्त आधुनिक है। साधारणत उसका आरम्भ कवि चॉसर[1] से माना जाता है।

आरंभ

परन्तु चॉसर से पहले ही अग्रेजी साहित्य का जन्म हो गया था, यद्यपि चॉसर-पूर्व के छ सदियो के उस साहित्य को कुछ समृद्ध नही कहा जा सकता।

अग्रेज़ी का उद्भव ऐंग्लो-सैक्सन बोली से छठी सदी ई० मे हुआ। इससे पूर्व इग्लैड पर ५५ ई०पू०से ४१०ई० तक रोमन्ज़ का अधिकार रह चुका था, फलत वहा लैटिन भाषा का प्रभुत्व था। रोम पर आई आपत्ति के समय जब रोमन्ज़ अपने देश लौट गए तो इग्लैड के देशज सैल्ट्स ने अपनी रक्षार्थ जर्मन निवासी जूट्स को निमन्त्रित किया जिनके पीछे-पीछे सैक्सन्ज़ और ऐंग्ल्ज इग्लैड पहुचे। उनकी भाषा और साहित्य का प्रभाव सातवी सदी के अग्रेज़ी साहित्य पर प्रकट रूप से दिखाई देता है। यह सही है कि उस काल का साहित्य जिस भाषा मे प्रस्तुत हुआ वह भी अग्रेजी कहलाती है, यद्यपि आज हम उसे अपने प्राकृत रूप मे नही समझ सकते, अनुवाद-रूप मे ही पढ पाते है। इसी कारण कुछ विद्वानो ने उसे अग्रेज़ी मानने मे भी आपत्ति की है। परन्तु विशेष अन्तर काल की दूरी ने डाल दिया है और चॉसर-कालीन भाषा-साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप मे ही चाहे क्यो न हो, हमे उस प्रारभिक अग्रेजी साहित्य पर एक नजर डालनी ही होगी। उस प्राक्-चॉसर-साहित्य के निर्माण का सबध दो विशेष घटनाओ से है। उनमे एक तो छठी सदी ईस्वी मे ऐंग्ल्ज, सैक्सन्ज आदि का इग्लैड-प्रवेश है, दूसरी ५९७ ई० मे ऑगस्टाईन[2] का केन्ट मे ईसाई धर्म का प्रचार।

प्राचीन काव्य

जर्मन लोग जहा जाते थे, आज ही की भाति, वे अपनी अनुश्रुतिया भी साथ लिए

---

१ Geoffrey Chaucer (१३४०-१४००), २ Saint Augstine (मृ० ६०४)

जाते थे। चॉसर-पूर्व का अग्रेजी काव्य इन्ही जर्मन अनुश्रुतियो पर अवलबित है। यह काव्य तत्कालीन पश्चात्कालीन हस्तलिपियो मे इग्लैड के अनेक सग्रहालयो मे अशत आज भी सुरक्षित है। इनमे 'बोवुल्फ' की काव्यबद्ध कथा विशेष महत्व की है। कथा के रूप मे तो 'बोवुल्फ' की अनुश्रुति इग्लैड मे ऐंग्ल्ज के आगमन के साथ ही पहुच गई थी परन्तु उसका पद्याकन सातवी सदी के अन्त (प्राय ७०० ई०) मे हुआ, जब भारत मे हूणो की रौंदी भूमि पर जहा-तहा राजपूत-राजकुल खडे हो रहे थे। 'बोवुल्फ' की हस्तलिपि अठारहवी सदी मे जलते-जलते बच गई थी और उसकी सिकी-तपी प्रति आज भी ब्रिटिश म्यूजियम मे सुरक्षित है। जर्मन काव्य से सबधित 'वाल्डेयर' नामक काव्य के भी दो अश पिछली सदी में उत्तरार्द्ध मे कोपेनहागेन के राजकीय पुस्तकालय मे मिल गए थे।

'बोवुल्फ' की कथा का सबध इग्लैड अथवा ऐंग्ल्ज से नही है। जर्मन जाति सदा से अपनी अखडता मे विश्वास करती आई है। इसीसे वह इस स्कैंडिनेविया (नॉरवे, स्वीडन, डेनमार्क) सबधी अनुश्रुति की रक्षा भी कर सकी। कथा अनैतिहासिक है, ग्रेन्डेल नामक उस दैत्य की, जो डेनराज ह्रोथगर की सभा को भयानक रूप से भग कर दिया करता है और जिसका सहार अपने दल की सहायता से बोवुल्फ नाम का पराक्रमी वीर करता है। काव्य के उत्तरार्द्ध मे बोवुल्फ राजा बनकर अग्निदैत्य से अपने देश की रक्षा करता है। निश्चय ही कथा कल्पित जगत् की है, परन्तु उसमे जो वीरो के दरबार, उनका रहन-सहन, आपान आदि का वर्णन है, वह तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। काव्य की पक्तिया अतुकात और लबी है, किंतु प्रत्येक पक्ति मे अनुप्रास की रवानी है और कवि की भारती तो निस्सदेह विशद है, अशत लाक्षणिक भी। वस्तु-नाम उसने साधारणत चित्र-नाम से अकित किए है। उदाहरणत समुद्र को वह 'हस-पथ' और शरीर को 'पजरालय' कहता है।

यह जर्मन अनुश्रुति-प्रधान काव्य ईश्वरवादी ईसाई धर्म के विश्वासो से सर्वथा मुक्त है, यद्यपि अपने निर्माणकाल मे, उस धर्म-प्रचार का समसामयिक होने के कारण, उसमे जहा-तहा ईसाईवादी विधि-क्रियाओ का उल्लेख हो गया है। उसकी काव्यधारा सशक्त है—महाप्राण, अतीव शालीन, वीरकाव्य-सी।

इसी जर्मन परपरा मे कुछ और खण्डकाव्य या स्फुट कविताए है, जिनकी वेदना-व्यजक अनुभूति पाठक के हृदय को छू लेती है। इनमे प्रधान हैं 'दि द्योर्स लेमेंट', 'दि मेडन्ज कम्प्लेंट', 'दि हज्बैंड्ज़ मैसेज', 'दि रूइन', 'दि वाडरर', 'दि सीफेअरर'। अधिकतर कविताए जर्मन सामन्तो के दरबारो की है, शक्तिमय वीरकार्यो की।

धर्म-काव्य

इन कविताओ का सबंध तो उस जर्मन जीवन से है जो ऐंग्ल-सैक्सन-जूट्स के साथ

अनुश्रुतियो की परंपरा मे इग्लैंड पहुचा। इनके अतिरिक्त उस प्राक्-चॉसर-काल मे ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव ने भी कुछ कम काव्य-स्फूर्ति नही सिरजी।

छठी सदी ईस्वी के अन्त मे आगस्टाईन ने रोम से इग्लैंड जाकर केट के जूट्स को ईसाई बनाना शुरू किया। इसी काल आयरलैंड के ईसाई साधुओ ने भी, नॉर्थम्ब्रिया मे अपने मठ बना, प्रचार-कार्य प्रारभ किया। इसी प्रचार-प्रेरणा से तत्कालीन धर्म-काव्य प्रस्तुत हुए। इनकी कथाए तो ईसाई धर्म की थी, पर वाक्यावली, शब्दयोजना, काव्यप्रवाह सभी कुछ उसी पुरानी जर्मन अन-ईसाई परम्परा का था। ईसाई धर्म के समसामयिक प्रचार मे इस नीति ने दूरगामी सफलता पाई। 'अन्द्रियाज़' उसी परपरा का काव्य है, जिसमे सेट एन्ड्रू द्वारा सेट मैथ्यू की रक्षा वर्णित है। इस काल के दो कवि विशेष जाने हुए है—कीडमन[1] और साइनेवुल्फ[2]। इन्होने अनेक ईसाई सन्तो की कथा काव्यबद्ध की। 'बाइबिल' की अनेक कथाओ को इन्होने काव्य का रूप दिया। 'सेट जुलियाना', 'एलीनी' अथवा 'हेलेन', 'जूडिथ' आदि उस काल की कुछ जानी हुई कृतिया है। इनमे 'दि ड्रीम ऑफ दि रूड' जहा प्राचीन अग्रेजी काव्यो मे कल्पना के क्षेत्र मे अपना सानी नही रखता, वहा 'जूडिथ' (निरकुश होलोफर्निज़ जूडिथ द्वारा सहार) ऐंग्लो-सैक्सन काव्य-परपरा मे लोमहर्षक वर्णन और अभिनयोचित तथ्य मे बेजोड है। कीडमन और साइने-वुल्फ के व्यक्तिगत जीवन के आकडे हमे उपलब्ध नही।

प्राचीन गद्य

यह तो हुई उस काल की काव्य-रचना, पर तब का गद्य-सृजन भी कुछ कम महत्व का नही। वस्तुत उस दिशा के गद्य-प्रयास अनेकार्थ मे काव्य से अधिक महत्व के है। कम से कम उस काल के अग्रेज़ लेखको और विद्वानो को हम कवियो की अपेक्षा अधिक जानते है। शेरबोर्न का बिशप आल्धेल्म[3] पहला ज्ञात व्यक्ति है, जिसने इग्लैंड मे अलकृत लैटिन मे गद्य-रचना की। तब की रचनाए लैटिन मे ही है। परन्तु उस काल का महान् पडित और रचयिता बीड[4] है, जिसने अरबो से आक्रात यूरोप के इस पश्चिमी द्वीप मे सस्कृति का एक प्रशस्त केन्द्र स्थापित किया और जिसके 'दि एक्लेज़ियास्टीकल हिस्ट्री ऑफ दि ऐंग्ल्ज' (लैटिन मे) ने उसके लिए अक्षय कीर्ति अर्जित की। बीड इतिहास, ज्योतिष आदि का प्रकाण्ड विद्वान् था, यद्यपि जैरो के मठ से आए तपोनिष्ठ साधुओ मे उसका स्थान विशिष्ट था। बीड के कुछ ही काल बाद डेन्ज के आकमण शुरू हुए। उन्होने अग्रेज़ी सस्कृति पर विकराल चोटे की। परन्तु उन चोटो और अत्याचारो का जनता ने खुलकर सामना भी किया। ऐंग्ल-सैक्सन राजा ऐल्फ्रेड[5] ने अपने देश की रक्षा मे स्तुत्य कार्य किया। वह

१ Caedmon, २. Cynewulf, ३ Aldhelm (६५०-७०९), ४ Bede (६७३-७३५); ५ King Alfred (८४९-९०१)

केवल सैनिक ही न था, भोज की भाति वह विद्या-व्यसनी भी था। समर से समय मिलते ही भोज की ही भाति वह भी भारती का रूप सवारता। उसने ग्रेगरी महान् के 'पैस्टोरल राइल' का अनुवाद प्रस्तुत किया और बीड के इतिहास का अग्रेजी रूपान्तर अपनी प्रजा को दिया। उसके किए अन्य अनुवादो मे ओरोसियस का 'दि यूनिवर्सल हिस्ट्री' और बोएथियस का 'दि कन्सोलेशन आफ फिलॉसफी' है। इसी काल उसी नृपति के तत्वावधान मे 'दि क्रॉनिकल आफ विचैस्टर' नामक एक राष्ट्रीय इतिहास भी प्रस्तुत हुआ। इससे उस काल के इग्लैड के विदेशियो के साथ सघर्ष, तप और त्याग का परिचय मिलता है।

प्रथम लैटिन-इग्लिश शब्दकोष

इसी डेन-आक्रमण-काल मे दो धर्म-गुरुओ ने अत्यन्त निर्भीकता और साहस के साथ अपने उद्‌गारो और रचनाओ द्वारा अपनी जनता का नेतृत्व किया। ये थे, ईल्फ्रिक[1] और वुल्फस्टैन[2]। ईल्फ्रिक ने पहला लैटिन-इग्लिश कोष तैयार किया, अग्रेजी मे अपने प्रवचन दिए और मधुर प्राय गेय गद्य मे अपने श्रोताओ को 'बाइबिल' का सन्देश सुनाया। वुल्फस्टैन की वाणी देश के शत्रुओ के विरुद्ध उठी और वह अपने राजा ईथेलरेड को भी उसकी कमजोरी और कायरता के लिए विधिवत् धिक्कारने से न चूका। डेन्ज के अत्याचारो के बीच उसके अग्रेजी मे दिए प्रवचन वायु मे गूज उठे। उसके 'प्रवचनो' ने जनता मे अपने शत्रुओ के विरुद्ध एक नई स्फूर्ति भर दी।

साहित्यिक आदर्श में परिवर्तन

नार्मन विजय से चॉसर तक (१०६६-१३५०)

नार्मन्ज़, जिन्होने १०६६ ई० मे इग्लैड को विजय किया, डेन्ज़ के भाई-बद होते हुए भी, भाषा और सस्कृति की दृष्टि से फ्रेच बन चुके थे और फ्रेच विधि तथा प्रशासन के साथ-साथ वे साहित्य मे भी फ्रेच आदर्शों के प्रवर्तक बने। एग्लो-सैक्सन साहित्य मानो इस द्वीप से लुप्त हो गया। नये मॉडल प्रस्तुत हुए जिनमे 'चॉसन डे रोलड' तथा 'रोमन डे ला रोज' का यथेष्ट स्थान है। नार्मन विजय के सौ साल पश्चात् नये साहित्य की रचना होने लगी जिसे 'ऐग्लो-नार्मन' साहित्य की संज्ञा दी जाती है और जिसे हम ऐग्लो-सैक्सन और फ्रेच परपरा का घोल कह सकते है।

इस नई परपरा मे लिखित पहला ग्रथ 'पोयमा मौरेले' (११७०) था जो पूर्णत. धार्मिक रंग मे रगा है और जिसमे आक्रात ब्रिटन्ज़ की लाचारी झलकती है। ब्रिटन्ज के

१. AElfric २. Wulfstan

दिलो मे आत्मविश्वास उत्पन्न करनेवाली कृति का सृजन (१२००) लायामन[१] ने किया। लायामन ने वारसे की कृति 'ब्रूट' का अनुवाद प्रस्तुत किया था, जिसमे नार्मन्ज़ की बर्बरता का चित्रण है किंतु उसने अपनी ओर से भी कहानिया जोडी हैं जिनमे किग ऑर्थर की कहानी उल्लेखनीय है।

नार्मन्ज़ के अतिरिक्त और भी बहुत-से प्रभाव काम कर रहे थे। अरब, जिन्होने भारत और चीन से बहुत कुछ सीखा था, समस्त यूरोप को नये विचारो से ऋद्ध कर रहे थे। क्रूसेड्ज (अर्थात् यूरोसेलेम को तुर्कों से छुडाने के लिए ईसाइयो ने जो युद्ध किए) ने भी नये विचारो का सचार किया। इसके फलस्वरूप इग्लैड मे भी स्फूर्ति दिखाई देने लगी। 'कर्सर मुडी' (१३२०) जो 'न्यू टैस्टेमेट' की कहानियो का सग्रह है एक अपूर्व ग्रथ है। इससे पूर्व १३०३ मे रॉबर्ट मानिग[२] ने फ्रेच कहानियो का अनुवाद प्रस्तुत किया था जिसका लोकपरक साहित्य मे अपना स्थान है। इनके अतिरिक्त, फेबल्ज़, जिनपर पचतत्र की कहानियो का प्रभाव दीख पडता है, प्रचलित हुई। इन कहानियो मे 'दि वीपिग बिच', 'दि फॉक्स ऐड दि वुल्फ', 'स्प्रिग टाइम' तथा 'दि साग ऑफ दि हज़्बेडमन' प्रसिद्ध है।

इस काल के लेखको मे से केवल एक ही लेखक के जीवन-चरित का पता चलता है। वह था रिचर्ड रोल्ले[३], जो पुराने तपस्वी सतो और फॉक्स, बुन्यन तथा वेज्ले मे सयोजन का काम करता है। इस काल का अत लॉरेंस मिनोट[४] से होता है जिसने एडवर्ड तृतीय[५] की विजयो का हाल लिखा।

इग्लैड मे एक नई शैली का उद्भव होने लगा जो व्यग्य प्रधान थी। इस शैली का रूप 'दि आउल ऐण्ड दि नाईटिगेल' मे दिखाई देता है।

लैटिन और फ्रेंच का रोमास (एक प्रकार का शौर्य काव्य) के प्रभावाधीन इग्लैड मे 'हेवलॉक' तथा 'हॉर्न' की रचना हुई। इसी प्रभाव के फलस्वरूप ऑर्थर की गाथाएं पुन जीवित हो उठी।

: २ :

अंग्रेज़ी काव्य

चॉसर और उसके परवर्ती (१३५०–१५१६)

आधुनिक अग्रेजी काव्य-साहित्य का आरभ ज्योफ्रे चॉसर से होता है। चॉसर सैनिक, राजनीतिज्ञ और विद्वान् था। मध्य वर्गीय होने के नाते राजदरबारो और साधा-

१. Layamon, २ Robert Manning, ३ Richard Rolle (ज० १२९०), ४ Laurence Minot, ५ Edward III

रण जनता दोनो के सबध मे उसका ज्ञान असाधारण था। उसने फ्रास और इटली की यात्राओ मे फ्रेंच और लैटिन काव्य-रचना का भी अभ्यास किया था। ओविड और वर्जिल की रचनाए उसे कण्ठाग्र थी। समसामयिक साहित्य का उसे समुचित ज्ञान था। रूपक और दरबारी भावाकनो मे उसे विशेष अभिरुचि थी। उसकी प्रारभिक कृतियो 'दि बुक ऑफ दि डचेज' (१३६९) और 'दि हाउस ऑफ फेम' से रूपक और मध्यकालीन वस्तु-रचना के क्षेत्र मे उसे अच्छी ख्याति मिली। परतु उसके वास्तविक कीर्ति-स्तभ है—'ट्रॉयलस ऐण्ड क्रिसिडी' (१३८५–८७), 'दि लीजेन्ड ऑफ गुड विमेन' (१३८५) और 'कैटरबरी टेल्स'। इनमे अतिम रचना चॉसर समाप्त न कर सका था।

'ट्रॉयलस ऐण्ड क्रिसिडी' इटैलियन कथाकार बोकाचो के 'इल फिलोस्त्रातो' पर अवलम्बित है। पीछे यह शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का आधार बना। यह पद्य-साहित्य मे एक प्रकार का उपन्यास है, जिसमे क्रिसिडी के प्रति ट्रॉयलस का प्रणय और क्रिसिडी की उपेक्षा तथा वचकता अकित है। रचना का भावतत्व आज की दुनिया मे भी नितात सार्थक है और इसके चरित्रो की सजीवता आज भी सिद्ध है। इस महान् रचना की अपेक्षा 'दि लीजेन्ड ऑफ गुड विमेन', जिसमे क्लियोपेट्रा, थिस्बी, फिलोमेला आदि नारियो के प्रणय-विषाद प्रतिबिम्बित है, गौण कृति है। इसमे फिर भी रूपको, लिरिको आदि की भरमार है।

पर चॉसर का यश विशेषत 'कैटरबरी टेल्स' पर अवलबित है। कैटरबरी जाने वाले तीर्थयात्रियो की कहानिया अद्भुत क्षमता और कुशलता से कही गई है। वैयक्तिक और सामूहिक दोनो रूपो से ये काव्य-कथाए मध्यकालीन मानवता का चित्रण करती है। अभाग्यवश 'कैटरबरी टेल्स' चॉसर समाप्त न कर सका।

जॉन गॉवर[1] ने भी अपनी रचनाए इसी काल मे की। वह चॉसर का समकालीन था। चॉसर की ही भाति उसने भी फ्रेंच और लैटिन का ज्ञान प्राप्त किया और अग्रेजी की ही भाति उन भाषाओ मे भी वह स्वाभाविक अधिकार से काव्य-रचना करता था। उसने भी अपने जीवन-काल मे ही इतनी ख्याति पाई कि कहते है, यदि चॉसर न हुआ होता तो उस काल का प्रतिनिधि कवि गॉवर ही होता।

विलियम लैगलैड[2] भी इसी काल हुआ और उसने पश्चिमी बोली मे अपनी 'दि विज़न ऑफ पीयर्स दि प्लाऊमैन' लिखी। यद्यपि लदन की भाषा अग्रेज़ी की प्रति-भाषा बनती जा रही थी, फिर भी स्थानीय बोलियो का प्रभाव कुछ कम न था। चॉसर पश्चिमी बोली की कविताओं का विरोधी था। विलियम लैगलैड ने इसी बोली मे काव्य-रचना की। उसने समसामयिक समाज का अपनी कृति मे भरपूर पर्दाफाश किया है। शासन

१. John Gower (मृ० १४०८); २. William Langland (१३३०–१४००)

की दुर्व्यवस्था, धन के अनाचार आदि प्रचुर परिमाण मे चौदहवी सदी की इस असामान्य कृति मे प्रतिबिम्बित है। लैंगलैंड आधुनिक समाज-शास्त्री की भाति काव्यत समाज का विश्लेषण करता है। उसकी धारणा है कि श्रम और ईसाई धर्म की सेवा मे ही मनुष्य का कल्याण है। उसने ईसाई-जीवन के आदर्शों से अनुप्राणित अंग्रेज़ी का सर्वोत्तम काव्य लिखा और उस क्षेत्र मे महाकवि दाते के सन्निकट पहुच गया। लगता है, यदि वह रहस्यवादी न हो गया होता तो निश्चय ही क्राति का अग्रदूत होता।

पन्द्रहवी सदी का काव्य-साहित्य सर्वथा नीरस तो नही कहा जा सकता परन्तु है वह प्रतीकत 'परावलबित'। उस सदी का अधिकतर काव्य चॉसर से अनुप्राणित और प्रकारत उसीकी कृतियो का रूपान्तर है। स्वतन्त्र कृतियो का उस युग मे प्राय अभाव है जिसका एक कारण शायद यह भी है कि चॉसर-सा सुकवि उसका पूर्ववर्ती प्रतीक है। टॉमस ऑक्लीव[1] और जॉन लीडगेट[2] इसी परपरा के कवि है और वह स्टिफेन हावेस[3] भी, जिसने 'दि पास्टाइम ऑव प्लेजर' की रचना की। पन्द्रहवी सदी के पिछले पक्ष मे जॉन स्केल्टन[4] नाम का समर्थ कवि हुआ। उसकी कविता मे काव्यत्व की कमी है, व्यग्यात्मकता जहा-तहा फूहड तक है परन्तु परपरागत काव्य-सौदर्य के अभाव के बावजूद उसमे एक जनपरक ताजगी है।

स्कॉच कवि

स्काटलैंड मे चॉसर का विस्तार अधिक योग्यता से हुआ। 'टैस्टेमेट ऑफ क्रेसिड' और 'किंगिस क्वेर' उस दिशा मे सुन्दर प्रयास है। चॉसर का अनुवर्ती होकर भी विलियम डनबर[5] 'टैस्टेमेट ऑफ क्रेसिड' के रचयिता रॉबर्ट हेनरीसन[6] के विपरीत अपने पैरो पर खडा है। मध्यकालीन चारण की भाति उसकी वाणी तत्कालीन जीवन को मूर्तिमान् करती है। गैविन डगलस[7] भी इसी परिवार का कवि है और यद्यपि उसकी अपनी स्वतन्त्र कृतियो ने आधुनिक आलोचको को विशेपत प्रभावित नही किया, फिर भी उसका वर्जिल का अंग्रेज़ी अनुवाद नि सन्देह सत्य है। स्कॉटलैंड के नृपति जेम्स प्रथम[8] की काव्य-मेधा उस काल सजग थी और उसके 'किंगिस क्वेर' मे राज-रचना का एक नमूना हमे उपलब्ध है।

---

१ Thomas Occlieve (१३७०–१४५४), २ John Lydgate (१३७३–१४५०), ३. Stephen Hawes (१४७५–१५३०); ४ John Skelton (१४६०–१५२६); ५. William Dunbar (१४६०–१५२०), ६. Robert Henryson (१४२५–१५००); ७. Gavin Douglas (१४७५–१५२२); ८. James I (१३९४–१४३६)

इटैलियन प्रभाव (१५१६–१५७५)

सोलहवी सदी के मध्य इटली का सर्वगामी प्रभाव इग्लैड के साहित्य पर भी पडा। वियाट[1] और सरे[2] ने 'टोटेल्स मिसेलिनी' (१५५६) के नाम से कविता-सग्रह प्रकाशित किया। लार्ड सरे को कामुक राजा के कोप का शिकार बन तीस वर्ष की आयु मे ही सिर कटाना पडा। वियाट ने चौदह पक्तियो के इटैलियन सॉनेट को अग्रेजी रूप मे सजाया। इस सॉनेट-निर्माता अग्रेजी कवि का काव्य-सस्कार सकर और बोझिल होता हुआ भी अपनी विशेषता रखता है। सरे की काव्य-धारणा अधिक स्वाभाविक है। उसने वर्जिल के 'ईनिड' के दूसरे और चौथे खडो का अग्रेजी ब्लैक वर्स मे अनुवाद किया। सरे को इसका गुमान भी न था कि जिस मुक्त छन्द का प्रयोग उसने पहले पहल किया वह कालान्तर मे अग्रेजी छन्द-परपरा मे इतने महत्व का सिद्ध होगा। उसी परपरा का उपयोग अग्रेजी के जगद्विख्यात् कवि मारलो और शेक्सपियर दोनो ने किया। मिल्टन, कीट्स और टेनिसन तीनो सरे के छन्द-विन्यास से प्रभावित हुए।

वियाट और सरे दोनो स्वय पैट्रार्क से प्रभावित थे और एलिजाबेथ-युग के प्राय सभी कवियो ने पैट्रार्क की ही उन प्रणय-चेष्टाओ का अनुकरण किया, जिनकी दाय उनको वियाट और सरे द्वारा मिली थी। सॉनेट की परपरा का शेक्सपियर, सिडनी आदि ने भी अनुसरण किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि शेक्सपियर और सिडनी दोनो ने पहले उस प्रणाली का मजाक उडाया मगर दोनो उसके शिकार हो गए। सॉनेट की शैली अग्रेजी मे अमर होकर रही। एलिजाबेथ-युग मे तो उसका प्रचार रहा ही, बाद के युगो मे भी १४ पक्तियो की वह कविता-शैली कवियो द्वारा अपनाई जाती रही। स्वय मिल्टन ने सॉनेट का प्रयोग किया, यद्यपि उसने परपरा के अनुकूल उसका उपयोग प्रणय सबधी अभिव्यक्ति मे नही किया। जनतान्त्रिक टिप्पणियो मे उसे सॉनेट का साहाय्य अत्यन्त शक्तिप्रद सिद्ध हुआ। स्वय वर्ड्स्वर्थ ने इगलैड को प्रमाद से मुक्त करने और नेपोलियन को धिक्कारने के लिए सॉनेट को ही उपयुक्त समझा। कीट्स का 'चैपमैन्स होमर' सॉनेट की ही पद्धति मे लिखा गया। १६वी सदी मे मैरेडिथ ने भी अपनी कविता 'मॉडर्न लव' मे प्रेम के विश्लेषण के लिए सॉनेट का ही प्रयोग किया और रोसेट्टी ने भी घूम-फिरकर दाते और पैट्रार्क के ही सॉनेट को काव्याभिव्यक्ति के लिए उचित समझा। इस प्रकार, यद्यपि वियाट और सरे की कविता स्वय इतनी महत्व की न हुई, परन्तु उसे व्यक्त करने के लिए जिस 'सॉनेट' काव्य-प्रणाली का उन्होने प्रयोग किया वह निश्चय ही अगले युगो मे अग्रेज़ी काव्य का सौदर्य बन गई।

---

१. Sir Thomas Wyatt (१५०३–४२); २. The Earl of Suarey (१५१७–४७)

पुनर्जागरण-युग
(१५७८–१६२५)

एडमन्ड स्पेन्सर[1] काव्य-कला का पण्डित माना गया है। कैम्ब्रिज मे पढते समय ही उसने अपने गुरुजन और सहपाठियो पर गहरा असर डाला। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सर्वत्र पडा और शीघ्र ही लीसेस्टर के अर्ल ने उसे अपने सरक्षण मे ले लिया। वह बराबर आयरलैंड मे रहा और वही से उसने अपनी कविताओ की दो जिल्दे प्रकाशित की—'दि शेपर्ड्स कैलेन्डर' और 'दि फेयरी क्वीन'। स्पेन्सर अग्रेज़ी भाषा का सस्कर्त्ता माना जाता है। अग्रेज़ी मे वह होमर और वर्जिल की वीर काव्य-परपरा स्थापित करना चाहता था, जिसमे शब्दगाम्भीर्य और काव्य-शालीनता नये रूप से अभिव्यक्त हो। अनेक बार उसने ऐसी काव्य-कहानिया लिखी जिनमे कथा-वस्तु क्लासिकल पृष्ठभूमि पर खडा हुआ। दरबार को उसने अपनी काव्य-प्रतिभा से विशेषत आकृष्ट किया। 'फेयरी क्वीन' मे तो उसने स्वय रानी एलिजाबेथ को नायिका बना दिया। परन्तु उसकी काव्य-मेधा अभिजात-कुलीय दरबार तक ही सीमित न रह सकी और उसने उसके पार साधारण मानव के अज्ञान, अधविश्वासो और कमजोरियो पर भी अपनी तीखी निगाह डाली, यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि दरबारी परपरा के बाहर भी उसका कृतित्व उतना ही सार्थक हुआ जितना राजसभा की अभिव्यजना मे। हा, इतना जरूर है कि उसके कृतित्व मे 'रेनेसास' और सावधि युगो का समान रूप से योग मिला। वस्तुत वह पुनर्जागरण-युग और आधुनिक काल की सधि पर खडा हुआ है।

उसकी रचना मे शब्द का माधुर्य अमिट है और, यद्यपि काल की गति ने उसकी कृतियो के कथानको को आज नि शक्त बना दिया है, फिर भी उसके काव्य की अभिव्यजना, कल्पना की सुचारुता और शब्दो का सगीत इस काल भी अपना प्रभाव रखते है। 'शेपर्ड्स कैलेडर' मे पुराण-पन्थिता का प्रचुर पुट है, फिर भी कविताओ का रूप काफी मनोरम है। 'फेयरी क्वीन' ने स्पेन्सर के बाद के अधिकतर अग्रेज कवियो को आकृष्ट किया है। आज उसकी भी सत्ता कमजोर पड गई है, परन्तु एक समय था जब काव्य-कल्पना मे उसका विशेष महत्व था। एलिजाबेथ के युग से ही 'फेयरी क्वीन' का कथानक पुराना और अस्पष्ट हो चला था, परन्तु उस काल इस काव्य का रूपक लोगो को मोह लेता था। आज की दुनिया मे 'फेयरी क्वीन' का ससार मनुष्य का वह यथार्थ चित्रण हमे नही दे पाता जो चॉसर और शेक्सपियर दोनो की

---

१. Edmund Spencer (१५५२–९९)

अमित शक्ति। मध्यकालीन जीवन का फिर भी एक सबल रूप स्पेन्सर की कृतियो मे उपलब्ध है।

एलिजाबेथ-युग की वास्तविक और सुन्दर कविता ने नाटक का रूप लिया और यह मानी हुई बात है कि स्पेन्सर को छोडकर कविता के क्षेत्र मे कोई कवि मार्लो[1] और शेक्सपियर[2] का मुकाबला नही कर सका। एलिजाबेथ-युग के नाटककार नाटक के क्षेत्र के बाहर अपनी काव्य-सम्पदा मे भी कुछ कम चमत्कार उत्पन्न नही करते, यद्यपि उनका प्रधान ध्येय नाटक है। मार्लो का 'हीरो ऐण्ड लीयन्डर' शेक्सपियर के 'वीनस ऐण्ड एडोनिस', 'रेप ऑफ लुक्रीस', और विविध सॉनेट, और बेन जान्सन[3] के अनेक लिरिक उस युग की काव्य-सम्पदा का हमे परिचय देते है। उस काल छोटी-बडी सब तरह की कविताए लिखी गई। माइकेल ड्रेटन[4] की कृतियो मे कविता की अनेकरूपता का भडार प्रस्तुत है। इटैलियन रोमास की धारा तो उसे न छू सकी, पर स्वय उसने कविता की अनेक प्रणालियो का प्रयोग किया। ड्रेटन की कृतियो मे 'दि बैरन्स वर्स', और 'पोल्योल्बियन' भारी-भरकम कविताए है, जिनमे वह इग्लैड की अनुश्रुतिया, जन-विश्वास, भौगोलिक वर्णन आदि प्रस्तुत करता है। परन्तु इनके अतिरिक्त भी उसने कुछ ऐसी कविताए छोडी है जिनकी भाव-सम्पदा और सुकुमारता असाधारण है। 'निम्फीडिया' परी-साहित्य का एक सुन्दर नमूना है और 'बैलेड ऑफ एजिनकोर्ट' तो अग्रेज़ी काव्य-साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड गया है।

ड्रेटन की ही परपरा मे सैमुएल डैनियल[5] ने भी लिखा। 'वार ऑफ दि रोजिज' (लैकास्टर और यार्क के गृह-युद्धो का इतिहास) उसने पद्य मे लिखा, परन्तु उसकी महत्ता वस्तुत 'एपिस्सटल्स' की-सी उसकी कविताओ मे है, जिनका प्रभाव वर्ड्स्वर्थ पर काफी पडा। ये कविताए वर्णनात्मक इतनी नही जितनी चिन्तनशील है।

एलिजाबेथ-काल की लम्बी कविताए अपने ऐतिहासिक भार से पाठक को उबा देती है, परन्तु उस काल के गीत और लिरिक अपने प्रभावो मे आज सदियो बाद भी ताजे है। स्वय शेक्सपियर ने अपने नाटको मे जहा-तहा इन गीतो का उपयोग किया है जो हृदय को छू लेते है। इस प्रकार की गेय कविताओ के क्षेत्र मे जॉन डॉन[6] अनुपम है। वह स्वय रूमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति था—प्रणयी, राज-सभासद्, सैनिक—उसका जीवन विविध स्थितियो से होकर गुजरा। फलत उसका चित्त अस्थिर और जागरूक था। उसने पढा बहुत और सोचा भी काफी अत उसके विचारो मे तीव्रता काफी थी। उसकी अनुभूति

---

१. Christopher Marlowe (१५६४–९३), २ William Shakespeare (१५६४–१६१६); ३ Ben Jonson (१५७३–१६३७); ४ Michael Drayton (१५६३–१६३१), ५. Samuel Daniel, ६. John Donne (१५७२–१६३१)

उसके हृदय पर असाधारण प्रभाव डालती थी, परन्तु उसकी मेधा उसके प्रणय को भी चिन्तनशील दर्शन का रूप दे देती थी। वह सौदर्य के आकार को देखता-समझता है। परन्तु उसके आधार को भौतिक पजर अथवा शव मानता है। प्रणय और चितना दोनो का जॉन डॉन की काव्य-स्थिति मे अद्भुत ऊहापोह है। कुछ अजब नही कि सेन्टपाल का डीन होने के बाद युवावस्था मे ही अपने आवेगमय जीवन के आवेगो के कारण ही उसने अपना अन्त कर लिया था।

जॉन डॉन अपने समय का क्रातिकारी कवि है। वह पारपरिक पद्य के रूप को स्वीकार नही करता, न पुरानी उपमाओ को ही स्वीकार करता है। पैट्रार्क के अनुयायी सॉनेट लिखनेवालो की उपमाओ को वह तत्काल त्याग देता है, यद्यपि उसकी अपनी उपमाए स्वय अनोखी है। प्रसिद्ध डाक्टर जॉन्सन ने कालान्तर मे जॉन डॉन और उसकी प्रणाली को मैटाफिजिकल (भौतिक अनुभूति से परे) कहा, क्योकि उसकी कविताओ मे विरोधी भावनाओ का समरूप मे उपयोग हुआ। जॉन डॉन की पद्धति अनेक बार सूत्रवत् हो जाती है। डॉन का प्रभाव सत्रहवी सदी के धार्मिक कवियो पर वहुत गहरा पडा। जार्ज हर्बर्ट[१] उनमे विशेष प्रसिद्ध है। अपनी कविता 'दि टेम्पल' मे उसने धार्मिक अनुभूति का सुन्दर वृत्तान्त उपस्थित किया। हेनरी वॉन[२] रहस्यवादी कवि हुआ जिसने 'रिट्रीट' और 'आई सॉ इटरनिटी दि अदर नाइट' नाम की महत्वपूर्ण कविताए लिखी। रिचर्ड क्राशॉ[३] इस वर्ग का तीसरा कवि है, जिसकी कविता 'स्टैप्स् टु दि टेम्पल' विशेष महत्व की मानी जाती है।

टॉमस कैरो[४] ने 'कवेलियर' कवियो का प्रारभ किया। उसकी शैली मे काफी भावुकता है और सग्रहो मे उसके प्रेम सबधी लिरिको के उदाहरण उपलब्ध है। 'दि रैपचर' नाम की उसकी कविता मे शृगार का प्राय नग्न वर्णन हुआ है, जिससे आलोचको ने उसकी तीव्र आलोचना की है। इस कवेलियर काव्य-परपरा मे ही सर जॉन सकलिंग[५] भी हुआ जिसने जब-तब उस परपरा को छोडकर विचारशील काव्य की भी रचना की। रिचर्ड लव लेस[६] कैरो या सकलिग का-सा मेधावी तो न था, पर उसने भी कुछ सुन्दर गीत लिखे। इस परपरा से गीतकार रॉबर्ट हेरिक[७] कुछ विशेष दूर न था, यद्यपि उसे कवेलियरो मे नही गिना जाता। वह बेन जॉन्सन का शिष्य था और अपनी कविता उसने डेवेनशायर मे लिखी। १६४८ ईस्वी मे 'हेस्पराइडीज' मे उसकी हजार

१ George Herbert (१५९३-१६३३), २. Henry Vaughn (१६२२-९५); ३. Richard Crashaw (१६१२-४९), ४ Thomas Carew (१५९७-१६३९); ५. John Suckling (१६०९-१६४२), ६ Richard Love Lace (१८१८-५८); ७. Robert Herrick (१५९१-१६७४)

से ऊपर कविताओ का सग्रह प्रकाशित हुआ। विषाद की छाया उसके लिरिको मे काफी पडी है और उसका शब्द-चयन तो निश्चय ही अनूठा है। उसकी कविताओ मे इग्लैड का ग्राम्य जीवन मूर्तिमान् हो उठा है। उसके लिरिक प्रेम और कल्पना-प्रधान है, उनका प्रवाह सरल और सहज है और सीमित क्षणभगुर आनन्द के प्रति उनकी अभिव्यक्ति हृदयग्राहिणी है। हेरिक के जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण मे उसका एकान्तवास भी सहायक हुआ। उसके विपरीत ऐन्ड्रू मार्वेल[1] प्रवाहित जीवन का सबल सुकवि है। उसने क्रॉमवेल और चार्ल्स द्वितीय-काल के इग्लैड का मनोहारी वर्णन किया है। प्यूरिटन होने के कारण उसकी कविताए व्यग्य और शब्द-प्रहारो से भरी है। इस रूप मे उसकी ये कविताए अपनी उन पूर्ववर्त्ती कृतियो के विपरीत पडती है, जो मधुर और सरल थी।

पुनर्जागरण-युग का अन्त

(१६२५–१७०२)

सत्रहवी सदी इग्लैड के इतिहास मे विशेष महत्व की है। गृह-युद्ध ने उस देश मे एक नई परपरा स्थापित की, जिसने जनतन्त्र के विकास मे बडे महत्व के परिवर्तन किए। विज्ञान और तर्कवाद नई शक्ति धारण कर रहे थे और व्यापार तीव्र गति से एक नई विज्ञानानुमोदित क्राति की ओर बढ चला था। डॉन ने उसी नई चेतना का अपनी विकल कविताओ द्वारा परिचय दिया। मिल्टन[2] उसी सदी के आरभ मे उत्पन्न हुआ और उसने उस काव्य-सम्पदा को सिरजा जो अग्रेजी साहित्य मे अमर हो गई।

जॉन मिल्टन इग्लैड के महान् कवियो मे है। यदि हम नाट्य-परपरा के कवियो से उसे अलग कर दे तो निश्चय ही उसकी शालीनता अनुपम है। उसने ख्याति भी अपनी काव्याभिसृष्टि के गौरव के अनुकूल ही पाई है। गृह-युद्ध के पहले की उसकी कविताओ मे 'कोमस' प्रधान है। उसकी प्रारभिक कविताए सन् १६४५ मे सग्रहीत हुई। मिल्टन को जो केवल कवि के रूप मे जानते है, उनको पता नही कि अपने निबन्धो मे उस महाकवि ने गद्य का कितना प्रखर रूप सिरजा है। गृह-युद्धो के अवसर पर उसने जिस गद्य-धारा का सृजन किया वह उस काल के अग्रेज़ी साहित्य मे अनुपम है। मिल्टन अग्रेज़ी साहित्य का प्राय पहला पैम्फलेटियर है जिसने कलम का उपयोग जन-सघर्ष के पक्ष मे किया। क्रॉमवेल के नेतृत्व ने उसमे मानवता के विजयी भविष्य के प्रति अद्भुत निष्ठा और आशा जगा दी थी। उसी सघर्ष की कटुता और मानवता के प्रति सजग निष्ठा ने जीवन के अतिम सालो मे दृष्टिहीन, प्राय निराश, मिल्टन को अपना वह अद्भुत वीर काव्य लिखने को बाध्य किया जो 'पैराडाइज लॉस्ट' और 'पैराडाइज रिगेन्ड' के

१. Andrew Marwell (१६५१-१६७८) ; २ John Milton (१६०८-७४)

नाम से जगत् मे विख्यात हुए। इनमे पहला काव्य-खड सन् १६६७ मे प्रकाशित हुआ, दूसरा चार वर्ष बाद सन् १६७१ मे ।

मिल्टन ने जीवन के भीतर सघर्ष की जो व्यवस्था पाई, वह निश्चय ही तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का प्रतिबिम्ब थी। 'कोमस' मे उसने उसी अन्तस्सघर्ष की व्याख्या की। मिल्टन की सभी कृतियो मे 'कोमस' आज विशेष लोकप्रिय है। इसी प्रकार 'पैराडाइज़ लॉस्ट' मे ईव और एडम सघर्ष करते है, जैसे क्राइस्ट सेटन के विरुद्ध 'पैराडाइज रिगेन्ड' मे सघर्ष करता है और सैमसन 'एगोनिस्टस' मे मिथ्या मतो के विरुद्ध। 'पैराडाइज़ लॉस्ट' सब युगो के लिए महान् कृति है। एडम और ईव, मुमकिन है, हमारे आज के जीवन मे महत्व न रखते हो, परन्तु मिल्टन के शैतान का विद्रोह निश्चय ही एक जीवित परपरा है, जिसमे हम सदा सास ले सकते हैं। मिल्टन न केवल प्यूरिटन सम्प्रदाय का, वरन् विश्व-साहित्य का, एक महान् कृतिकार हे।

सैमुएल बटलर[1] प्यूरिटनवाद का सबसे बडा तत्कालीन प्रतिवादी है। जहा मिल्टन ने प्यूरिटनवाद को सुन्दरतम चित्रित किया वहा बटलर ने उसे अपने व्यग्यात्मक काव्य 'हूडीब्रास' मे मिथ्यावाद का मूर्तिमान स्वरूप कहा। बटलर मिल्टन के प्यूरिटनवाद का इस प्रकार सबसे बडा प्रतिद्वन्द्वी हुआ। बटलर का यह भाण वास्तव मे अपनी भणौती की नग्नता मे मिल्टन की शालीनता का ठीक जवाब है। मिल्टन, कहते है,अपने जीवन-काल मे जनता मे अप्रिय हो गया था, यद्यपि इसके लिए विशेष प्रमाण नही मिलता। वस्तुत उसके जीवन काल मे ही उसकी कृतिया श्रद्धा से पढी गई और १८वी सदी मे तो उसका अनुकरण भी काफी हुआ। इसमे फिर भी सन्देह नही किया जा सकता कि मिल्टन की काव्यधारा क्लिष्ट है और उसमे लैटिन और ग्रीक सन्दर्भो की भरमार है। 'ल'अलेग्रो' और 'इल पेन्सरेसो' उस शेली के सिद्ध प्रमाण है। मिल्टन की पद्धति के विरोधी कवियो ने हीरोइक कपलेट का प्रयोग किया, जिसे कवि पोप ने विशेष महत्व देकर प्रसिद्ध किया।

इस हीरोइक पद्धति मे भाषा के प्रवाह और सरलता को विशेष महत्व दिया गया। प्रसाद उसका विशेष गुण हुआ। इस प्रकार के छन्दपरक आन्दोलन का प्रथम प्रवर्तक एडमन्ड वालेर[2] और सर जॉन डेनहम[3] हुए। इनके आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि काव्य की विकृत और विलष्ट भाषा आशुगम्य और सहज बन गई। विषय और उसकी अभिव्यक्ति दोनो मे सरल समानता दृष्टिगोचर हुई। डेनहम की प्रसिद्ध कविता 'कूपर्स हिल' को जॉन ड्राइडन[4] ने जो इतना सराहा वह उसके सहज प्रवाह के कारण ही।

जॉन ड्राइडन—नाटककार, आलोचक और अनुवादक—स्वय इस पद्धति का

१ Samuel Butler (१६१२-८०), २ Edmund Waller (१६०६-८७) ३ John Denham (१६१५-६६), ४ John Dryden (१६३१-१७००)

प्रधान व्याख्याता था। सुन्दर प्रभावशाली वाक्यावली से अलकृत, सुष्ठ, सरल कविता लिखना उसकी कला का अन्तरग गुण था। ड्राइडन ने अपनी कृतियो द्वारा बडी कीर्ति कमाई है, यद्यपि अग्रेज जाति ने उसे इतना महत्व न दिया। समकालीन घटनाओ को अपनी कविता मे मूर्त्त कर ड्राइडन ने काव्य-क्षेत्र मे उस काल का एक नया प्रयोग किया। उसका 'एनस मिराबिलिस' डच-युद्ध और लन्दन के अग्नि-सहार का काव्य-रूप है। शैफ्ट्सबरी के षड्यन्त्रो और मन्मथ की कृतघ्नता ने उसके 'एबसालोम ऐण्ड एचिटोफेल' मे अपनी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति पाई। इसी प्रकार उसकी अन्य कविताए भी समकालीन राजनीतिक और धार्मिक प्रवृत्तियो की पोषक है। ड्राइडन ने वर्जिल, जुवेनल, ओविड और चॉसर के अनुवाद किए। उसने गद्य का भी रूप निखारा। फेबल्स की भूमिका मे जिस गद्य का ने प्रयोग किया वह उस क्षेत्र मे अनुपम है।

क्लासिकल काव्य

(१७०२–१७७०)

व्यग्य

अलेग्जैन्डर पोप[1] अग्रेजी साहित्य का सबसे बडा व्यग्य-कवि है। व्यग्य को उसने अपनी कला से आलोकित कर एक विशिष्ट रस के रूप मे प्रस्तुत किया। उसके आलोचको ने उसे अनेक प्रकार से जाचा है परन्तु अधिकतर उसपर चोटे ही पडी है। उसके व्यग्य को साधारणत' लोगो ने अन्यायनिष्ठ माना है। जो भी हो, इसमे सन्देह नही कि पोप कलाकार था। अग्रेज़ी भाषा मे उसका स्थान क्लासिकल कवि के सन्निकट है। उसके दृष्टि-विस्तार की कुछ सीमाए निश्चित है। पोप मे सेवा और त्याग की भावना मिल्टन की ही भाति प्रबल थी। 'ऐस्से ऑन मैन' मे उसने पद्य मे अपने अध्यात्म का रूप रखा। परन्तु निश्चय ही आध्यात्मिक साहित्य मे उसके दृष्टिकोण की विशेषता नही। उसका महत्व साहित्य मे व्यग्य कृति उत्पन्न करने मे है। 'दि रेप ऑफ द लॉक' मे उसने १८वी सदी के समाज का जो चित्र खीचा है, वह व्यग्य के रूप मे बडे महत्व का है। 'डन्सियाड' मे उसने प्रमाद और निष्क्रियता का बुरी तरह मज़ाक उडाया है और समसामयिक मूर्खो का जो रूप उसने उसमे प्रस्तुत किया है वह नितान्त हास्यास्पद है। उसकी अपेक्षाकृत छोटी कृतिया तो और भी सुन्दर है। 'दि एपिस्सटल टु डाक्टर आर्बुथनौट' इस दिशा मे सुन्दर दृष्टात के रूप मे रखा जा सकता है। स्पोरस अथवा लार्ड हर्वी के व्यग्य चित्र अत्यन्त आकर्षक है। इसमे एडिसन पर भी उसकी चोट काफी गहरी है।

---

१. Alexander Pope (१६८८-१७४४)

पोप ने व्यग्यात्मक काव्य के अतिरिक्त दूसरी कविताए भी लिखी है जिनमे होमर के अनुवाद के अतिरिक्त 'पेस्टोरल्स' और 'विन्डसर फॉरेस्ट' महत्व की है। होमर की कृति का उसका अनुवाद तो काफी पढा गया है, यद्यपि उसकी अनुवाद-शैली की आलोचको ने कटु आलोचना भी की है। अनुवाद मे जो उसने अलकरण की बहुलता उपस्थित कर दी है उससे उसके प्रति आलोचना की कटुता भी बढ गई है। उसकी रूमानी प्रवृत्ति का विशेषत 'एलोयसा टु एबेलार्ड' और 'एलिजी टु दि मेमॅरी ऑफ ऐन अनफॉरचुनेट लेडी' मे होता है।

अलेग्जैन्डर पोप ने अपने परवर्ती काल के साहित्य पर कुछ कम प्रभाव नही डाला। उसके अनुयायियो मे विशिष्ट सैमुएल जॉन्सन[1] और ऑलिवर गोल्डस्मिथ[2] हुए, यद्यपि अपनी कला मे दोनो उससे काफी भिन्न है। सैमुएल जॉन्सन ने अधिकतर गद्य ही लिखा, यद्यपि उसके दो व्यग्य 'लन्दन' (सन् १७३८) और 'दि वैनिटी आफ ह्यूमन विशेज' (सन् १७४६) उसकी व्यग्यात्मक शक्ति को प्रचुरता से प्रदर्शित करते है। गोल्डस्मिथ के काव्य पर एक सामाजिक छाप है। 'ट्रैवलर' (सन् १७६४) और 'डिजर्टेड विलेज' (सन् १७७०) मे गोल्डस्मिथ ने इग्लैड और आयरलैड की सामाजिक और आर्थिक कुरीतियो का चित्रण किया है। समसामयिक सामाजिक स्थिति को समझने और व्यक्त करने की उसमे पोप से कही बढकर शक्ति थी। उसकी शैली चॉसर की कला के अनुकूल थी, और उसकी अभिव्यक्ति मे भावो का सम्मिश्रण असाधारण हुआ।

पोप और उसके अनुयायियो ने अपनी कृतियो पर समकालीन समाज की छाप डाली। १८वी सदी के कवियो की एक विशेषता प्रकृति-पर्यवेक्षण की रही है। जेम्स टॉमसन[3] इस प्रकार का सम्भवत पहला कवि है जिसने प्रकृति का आमूल वर्णन किया है। 'सिक्स सीजन्स' नाम की उसकी कृति ऋतुओ का चित्रण करती है जो कालिदास के 'ऋतुसहार' की भाति प्रकृति सबधी स्वतन्त्र काव्य है, यद्यपि दोनो की प्राकृतिक सवेदना मे न केवल मात्रा का बल्कि गुण का भी अन्तर है। 'सीजन्स' नाम की यह कविता बडी लोकप्रिय हुई। यह है भी बडी सरल, प्राय १०० वर्षो तक इग्लैड के कविता-पाठको पर उसका अधिकार बना रहा। साधारण जीवन, गरीबी आदि के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति विशेष लोकप्रियता का कारण हुई। इसी कारण जो लोग पोप की प्रतिभा के समक्ष नही टिक पाते थे उन्होने भी टॉमसन की सादगी को सराहा, थी भी प्रकृति-अकन की उसकी कला सर्वथा मौलिक जो प्रकृति के प्रति लोगो की बढती हुई अभिरुचि को समृद्ध करती गई।

---

१. Samuel Johnson (१७०६-८४), २ Oliver Goldsmith (१७२८-७४), ३. James Thomson (१७००-४८)

भावुकता

तब के इग्लैड मे एक नई मानवता का उदय हो रहा था। व्यवसाय ने एक धनी और सतुष्ट वर्ग उत्पन्न कर दिया था जो मनुष्य के प्रति दया और सहानुभूति की प्रेरणाओ से आकृष्ट हुआ और, यद्यपि उसने अपने स्वार्थ के अर्जन मे कभी कमी न की, अपनी अभिरुचि की उसने परिधि निश्चय ही बढा दी। मानव-चित्त मे एक प्रकार का विद्रोह उदित हो रहा था और उसका सबध निरन्तर बढते हुए जनान्दोलनो से होता जा रहा था। व्यापार, जो निरन्तर समाज को धनी और कगाल—दो स्पष्ट भागो मे विभक्त करता जा रहा था, मानवता के प्रति इस नई सहानुभूति का विशेष कारण बना। अनेक साहित्यकारो ने उस काल की परस्पर विरोधी तथा मानवता-प्रेरित प्रवृत्तियो का अपनी कृतियो मे अकन किया। विलियम काउपर[1] ने अपनी कृति 'जॉन गिल्पिन' मे इसी प्रकार की प्रवृत्तियो और अनुभूतियो का प्रदर्शन किया। काउपर के 'लेटर्स' अग्रेजी भाषा के सर्वोत्तम नमूने है। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'टास्क' है जिसमे कवि नगरो से दूर देहात की दुनिया मे घूमता है और बडे सहज भाव से गाव के दृश्य प्रस्तुत करता है। उस काल के कवियो ने तर्कवाद के विरोध मे बहुत कुछ लिखा। परन्तु कुछ को इसी कारण तर्कवाद और न्याय-सम्मत जीवन के लोप का भी अदेशा हो आया। काउपर भी उन्हीमे था और उसने अपनी सशक्त कविता 'कास्ट अवे' मे अपने उसी भय का मूर्तन किया।

इस भय ने १८वी सदी के कृतित्व को काफी कलुषित भी कर दिया। फलत एक अद्भुत कष्टकर कायिक चेतना कवियो के एक वर्ग मे उत्पन्न हुई। विषाद की एक विचित्र अनुभूति का उन्होने अनेकत अकन किया। विषाद प्रेरित काव्य 'एलेजी' का इसी कारण अनेकत अकन उदय हुआ। बहुत कुछ तो हिन्दी के आधुनिक छायावाद की भाति विषादमय कविता लिखना उस काल का फैशन हो गया था परन्तु, चाहे रीतिवत् ही क्यो न हो, कुछ कवियो का तो इसने जीवन ही अपनी शक्ति से प्रभावित कर दिया। इनमे 'एलेजी' का रचयिता टॉमस ग्रे[2] विशेष प्रसिद्ध हुआ। होरेस वालपोल के साथ अपनी तरुणावस्था मे ग्रे ने यूरोप के समृद्ध और सुखी जीवन का काफी अनुभव किया था। परन्तु १८वी सदी के कैम्ब्रिज के उसके पिछले जीवन ने उसे शिथिल कर दिया। विषाद की एक लहर जैसे उसके रोम-रोम मे बहकर भिन गई जिसने उसकी कृतित्व-शक्ति शिथिल कर दी। अपने समय के यूरोप के प्रसिद्ध विद्वानो मे टामस ग्रे भी एक था। उसने अपनी कविताओ मे नई रुचियो का समावेश किया। उसके 'डिसेन्ट ऑफ ओडिन' मे नार्वे आदि उत्तरी देशो के प्रति सकेत है और 'दि बार्ड' मे मध्यकालीन जीवन के प्रति। विषादपूर्ण एलेजी सबधी साहित्य अग्रेजी मे काफी बढ चला जिसमे कब्रिस्तानो, खडहरो, फैले सुनसान मैदानो का वर्णन

---

१ William Cowper (१७३१-१८००), २. Thomas Gray (१७१६-७१)

महत्व का समझा गया।

विलियम कॉलिन्स[1] तो अपने विषाद के वितरण मे ग्रे से भी बढ गया। कॉलिन्स अपने जीवित वातावरण से अनभिज्ञ हो, यह उसकी 'हाउ स्लीप दि ब्रेव' से तो नही लगता, परन्तु यह निश्चय है कि उसकी प्रवृत्ति प्राय स्वप्निल थी। उसकी कविताओ—'ओड ऑन दि पापुलर सुपर्स्टिशन्ज ऑफ दि हाई लैन्ड्स', 'ओड टु ईवनिग' और 'डर्ज इन सिम्बेलीन'—मे विषाद की छाया जैसे शब्द-शब्द को अपने भार से बोझिल कर रही है। साधारण उसकी कला बोझिल है परन्तु जब कभी वह सरल हो पाती है तब जैसे उसका स्वर मधुर गुनगुनाहट से अद्भुत आकर्षण धारण कर लेता है।

विलियम काउपर के जमाने से ही कविता के क्षेत्र मे असाधारण रुग्णता' का प्रारभ हो गया था। क्रिस्टोफर स्मार्ट[2] ने तो इस काव्यगत रुग्णता की पराकाष्ठा कर दी। उसका नितान्त विकृत और बदनाम जीवन पागलखाने मे ही जाकर सुस्थिर हुआ। वहा उसने दीवारो पर कोयले से अपना 'साग टु डेविड' लिखा। ब्राउनिग ने उस गीत को बेहद सराहा है।

जमाने के भौतिकवाद ने कुछ कवियो को जैसे विक्षिप्त कर दिया। अनेको ने अपनी साधना उस भौतिकवाद के विरोध मे प्रयुक्त की। अर्थवाद दिन-दिन जोर पकडता जा रहा था और कवि, जब वे उसका आन्दोलन के रूप मे प्रतिवाद न कर सके तब, स्वप्निल और अन्तर्मुख हो गए; निरन्तर इलहाम-सा उन्हे होने लगा और वे एक प्रकार की रहस्यमयी प्रेरणा से अपना उद्बोधन करने लगे। विलियम ब्लेक[3] ने तो जैसे फरिश्तो और दूसरी अपार्थिव मूर्तियो को स्पष्ट देखा, जैसे वे मूर्तिया उसे घेरकर मित्रो के समुदाय की भाति बगीचो मे बैठने लगी। इस प्रकार के स्वप्नो ने उसे दुनिया से पृथक् कर दिया। उसके आलोचको का कहना है कि उसने मानव-आत्मा को भौतिकता की दासता से मुक्त कर दिया और जीवन को नेक और बद के परे श्वेताकार जलती हुई शक्ति के रूप मे देखा। नि सदेह ब्लेक रहस्यवादी था। अपनी इस नई चेतना मे काव्य की परंपरा से ब्लेक इतनी दूर हो गया है कि उसने अपनी नई रहस्यमयी भाषा, अपने नए प्रतीक, अपनी नई शब्दावली बना ली है जो पाठक को उलझन मे डाल देती है। यदि कविता का कोई स्वरूप ब्लेक ने प्रस्तुत किया है तो वह केवल 'साग्स ऑफ इन्नोसेन्स ऐण्ड एक्स-पीरियन्स' और 'एवरलास्टिग गॉस्पेल' आदि मे देखा जा सकता है।

रॉबर्ट बर्न्स[4] भी इसी काल हुआ। उसने बडे सुन्दर व्यग्य लिखे जिससे उसका प्रवेश एडिनबरा के शिष्ट समाज मे हो गया। वह अशिक्षित किसान कवि कहा जाता है,

---

१ William Collins (१७२१-५६); २ Christopher Smart (१७२२-७०), ३. William Blake (१७५७-१८२७); ४. Robert Burns (१७५६-६६)

परन्तु कुछ ही दिनो बाद राजधानी के ग्रासव-सिंचित जीवन ने उसे ग्रकर्मण्य बना डाला। उसे फ्रेंच-राज्यक्राति का शिशु भी कहा गया है। परन्तु उसके ये दोनो विरुद प्रश्नात्मक है। वह पोप, टॉमसन, ग्रे, शेक्सपियर सबको पढ चुका था ग्रौर एक शिष्ट ग्रग्रेज कवि की भाति लिखता था। साथ ही उसकी सुन्दरतम कृतिया फ्रेंच क्राति के पहले ही लिखी जा चुकी थी। उसने धर्म की कृत्रिमता के प्रति विद्रोह किया ग्रौर मनुष्य-मनुष्य का भेद उसे ग्रसह्य हो उठा। 'जॉली बेगर्स' मे उसने इस भेद पर प्रबल कुठाराघात किया। 'टैम ग्रो' शैन्टर' भी इसी प्रकार की एक सशक्त कृति है। इसी कारण वह चर्च से विरक्त होकर पानशालाग्रो की ग्रोर ग्राकृष्ट हुग्रा, यद्यपि इस ग्राकर्षण ने उसके चित्त को सयत न रहने दिया।

कविता का रूप ग्रब तक बदल चुका था। फिर भी जॉर्ज क्रैब[1] के-से कुछ लोग पोप की ग्रोर जब-तब झुक पडते थे। जिस कपलेट का पोप ग्रौर जॉन्सन ने प्रयोग किया था, क्रैब ने भी उसका प्रयोग किया। उसकी कविताग्रो के विषय साधारणत देहाती जीवन के थे। उसने रूमानी माया को ग्रपने पास फटकने न दिया। 'दि विलेज', 'दि पैरिश रजिस्टर' ग्रौर 'टेल्स इन वर्स' उसकी प्रभूत ग्राकर्षक कृतिया है। उसकी काफी कटु ग्रालोचना हुई परन्तु रूमानी ग्रालोचको ने वस्तुत उसके ऋद्ध यथार्थवाद को न पहचाना।

रोमान्टिक काव्य
(१७७०–१८३२)

१९वी सदी मे ग्रग्रेजी कविता मे उस नई धारा की ग्रभिसृष्टि हुई जो साधारणत रोमान्टिक (रूमानी, रोमाचक) कही जाती है ग्रौर जिसने भारत की भाषाग्रो के ग्रनेक कवियो को भी समय पाकर प्रभावित किया। रोमान्टिक शैली के कवियो की प्रकृति के प्रति बडी सहानुभूति थी। जीवन के ऊपर प्रकृति का प्रभाव वे प्राय ग्राध्यात्मिक मानते थे। उद्योगवाद ग्रौर उद्योगशील नगरो से ग्रातकित होकर जैसे वे रक्षा के लिए प्रकृति की ग्रोर बढे। प्राचीन धार्मिक परम्पराग्रो की जडता से भी ऊबकर ग्रध्यात्म की नई दशा, एक नई ग्रनुभूति की ग्रोर वे बढ चले। स्पेन्सर, मिल्टन ग्रौर पोप की दुनिया बाहरी थी, इनकी स्वय इनके ग्रावेगो मे बिखरी ग्रथवा कसी। वर्ड्स्वर्थ, कोलरिज, स्कॉट, बायरन, शेली ग्रौर कीट्स रोमान्टिक शैली के प्रमुख कवि हैं।

टॉमस चैटरटन[2] ने मध्यकालीन काव्यधारा का ग्रनुकरण करते हुए उस ग्रद्भुत रस का कविता मे सचार किया जो रोमाटिक काव्य का ग्राधार बना। चैटरटन नितान्त ग्रल्पायु मे मरा, केवल १८ वर्ष की ग्रायु मे। ग्रौर वह भी सामान्य मृत्यु से नही ग्रात्महत्या

१. George Crabbe (१७५४-१८३२); २. Thomas Chatterton (१७५२-७०)

द्वारा। चैटरटन निस्सदेह मनस्वी और मेधावी था और यदि वह जीता रहता तो शायद बहुत कुछ कर सकता, परतु उसके भावावेगो ने उसे अकाल ही उठा लिया। उसकी इस अकाल मृत्यु से आलोचको मे उसके सभावित भावी जीवन के सबध मे आशा और निराशा दोनो की प्रवृत्ति जन्मी है, परतु उनके प्रति समभाव होकर भी कम से कम हम उसे रोमाटिक कवियो की परपरा का दूरस्थ प्रवर्तक मान सकते हैं।

विलियम वर्ड्स्वर्थ[1] रोमाटिक कवियो मे सबसे महान् है। उसका जीवन भी काफी लबा था, ८० वर्ष का; यद्यपि मृत्यु से प्राय ३५ वर्ष पहले ही उसकी कवित्व-शक्ति का निधन हो गया। अपने प्रारभिक वातावरण मे अकृत्रिम मानव ने उसे आकृष्ट किया। रूसो की विचारधारा ने मानवता के प्रति उसकी आशाओ को सशक्त किया, फ्रेंच राज्यक्राति को उसने मनुष्य की स्वतत्रता के जनक के रूप मे स्वीकार किया, और इग्लैड की फ्रास के विरुद्ध युद्ध-घोषणा का उसने सबल प्रतिवाद किया, परतु जब नेपोलियन की महत्वाकाक्षा शार्लमान का अनुकरण कर चली तब उसे बडा क्षोभ हुआ। बर्क के प्रभाव से उसने भी धीरे-धीरे इग्लैड की राजनीति का रुख स्वीकार कर लिया और शीघ्र वह घोर प्रतिक्रियावादी बन गया। इन क्रियाओ-प्रतिक्रियाओ से पृथक् वर्ड्स्वर्थ प्रधानत प्रकृति का कवि है। पिछले काल के प्रकृति-प्रेमी कवियो ने उसका अनुकरण भी प्रचुर मात्रा मे किया है। वर्ड्स्वर्थ की प्रारभिक ख्याति उसके 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन से हुई। इस सग्रह मे उसकी अपनी कविताओ के अतिरिक्त कोलरिज[2] का 'एन्शेन्ट मरिनर' भी प्रकाशित हुआ परतु जहा वर्ड्स्वर्थ ने सादे देहाती जीवन की घटनाओ का मूर्तन किया, वहा कोलरिज ने विचित्रता की उपासना की। 'दि लिरिकल बैलेड्स' (१७९८) के पहले ही 'दि प्रिल्यूड' का प्रकाशन १७५० मे ही हो चुका था। 'प्रिल्यूड' आधुनिक अग्रेजी साहित्य की सबसे महान् कविता मानी जाती है, जिसमे मानव-चित्त की एकानुभूति असाधारण रीति से चित्रित हुई। 'लिरिकल बैलेड्स' के बाद वर्ड्स्वर्थ ने कविता मे सॉनेट का ही उपयोग किया। 'ओड टु इम्मोरटेलिटी' मे उस कवि ने जन्मपूर्व के जीवन का एक रहस्यमय अकन किया। 'कैरेक्टर ऑफ दि हैपी वारियर' मे उसने अपने भाई और नेल्सन के कर्मठ जीवन की ससृष्टि की और 'ओड टु ड्यूटी' मे वह फिर क्लासिकल अनुभूति की ओर आकृष्ट हुआ। 'लाओडेमिया' भी उसकी एक असामान्य क्लासिकल कृति है। प्रकृति के साथ उसकी घनी सहानुभूति थी और आलोचको का विचार है कि काव्यालेखन मे उसे उस दिशा से बडी प्रेरणा मिली। सभव है कि प्रकृति-चेतना का उसे आभास मात्र रहा हो, परतु इसमे सदेह नही कि उसने मनुष्य-प्रकृति की अनजानी

---

१ William Wordsworth (१७७०–१८५०); २. Samuel Taylor Coleridge (१७७२–१८३४)

गहराइयो तक पैठकर अनुभूति की समृद्धि खोजी और पाई। उसकी अपील परिपक्व चेतना के प्रति है।

कोलरिज वर्ड्स्वर्थ का मित्र था, अभिन्न मित्र, और दोनो पर एक दूसरे का गहरा प्रभाव पडा। वर्ड्स्वर्थ की प्रकृति सयत, धीर और तपस्यापूर्ण थी। उसने काव्य के क्षेत्र मे जो खोजा वह पाया। कोलरिज इसके विपरीत सर्वगामी था। इसीसे उसकी बुद्धि एकाकी न हो सकी। कहते है, अफीम के प्रति उसकी अदम्य तृष्णा भी उसमे एकनिष्ठा के अभाव का कारण हुई, यद्यपि अफीम का उपयोग उसने उस रोग के निवारणार्थ किया जो आमरण उसे जकडे रहा। अपने मित्रो और पत्नी तक के प्रति उसका भाव उपेक्षा का था, अनुत्तरदायी, यद्यपि उससे मिलने वाला विरला ही उसके व्यक्तित्व के सम्मोहन और शब्दो के चमत्कार के जादू से बच पाता था।

कोलरिज केवल कवि ही न था, आलोचक और दार्शनिक भी था। उसने दर्शन, धर्म, विज्ञान और राजनीति का समन्वित स्वप्न भी देखा। उसकी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' मे कला की आधुनिक दार्शनिक आलोचना के बीज मिलते है। कोलरिज की कल्पना मे स्मृति और स्वप्न का अद्भुत सयोग था। उसके काल्पनिक ससार मे अद्भुत पक्षियो, अनूठे जहाजो, अनोखे समुद्रो का भी स्थान था। अपार्थिव मूर्तिया, अपार्थिव सगीत, अपार्थिव रूपरेखाए अद्भुत रूप से जीवित-सी होकर उसके कल्पना-क्षेत्र मे विचरण करती थी। 'एन्शेन्ट मरिनर' उसके इसी स्वप्न का सत्य है। 'कुबलाखा' भी इसी परपरा मे एक अबीसीनियन कुमारी का जादूभरा सगीत है। कवि जीवन के ततुओ को तोडकर अज्ञात, परतु जीवित स्वप्न-देश मे पहुच जाता है।

सर वाल्टर स्कॉट[१] की गणना भी रोमाटिक प्रवृत्ति के कवियो मे की जाती है। स्कॉट अग्रेजी के प्रारभिक उपन्यासकारो मे है और उसका साहित्य मे अधिकार विशेषत उपन्यास-रचना पर माना जाता है, परन्तु काव्य के क्षेत्र मे भी उसने काफी ख्याति प्राप्त की, यद्यपि उसका काव्य-क्षेत्र औपन्यासिक विशेषताओ से भरा है। उसकी कविता मे भी उपन्यास की ही भाति मध्यकालीन सघर्षमय जीवन के आलोक मिलते है। मध्यकालीन बैलेड और रोमास उसकी कविताओ मे सजग है। इस प्रकार की उसकी कविताओ का आरभ 'दि ले ऑफ दि लास्ट मिंस्ट्रेल' (१८०५) से होता है। 'मारमियन' (१८०८) और 'दि लेडी ऑफ दि लेक' (१८१०) इसी परपरा की कविताए है। उपन्यासो मे सफल हो जाने से उसकी निष्ठा काव्य-रचना मे कम हो गई, फिर भी भावो के आवेग, करुण रस की आर्द्रता, वीर और रौद्र रसो के परिपाक और अतीत के चमत्कारी वर्णन मे स्कॉट अनोखा है।

---

१ Sir Walter Scott (१७७१–१८३२)

लार्ड बायरन[1] रोमांटिक कवियो मे अपना विशेष स्थान रखता है। बायरन का व्यक्तित्व उसकी कविताओ से कही महान् माना गया है। यद्यपि ऐसा कहने से उसकी कवित्व शक्ति की उपेक्षा भी हो गई है, फिर भी यह सच है कि बायरन का महान् व्यक्तित्व केवल काव्य-शक्ति तक ही सीमित न था और अनेक बार वह राजनीति के क्षेत्र मे भी आकार धारण कर लेता था। यूरोपियन जनता ने तो अधिकतर उसे उसकी स्वातन्त्र्य-प्रियता से जाना। उसने ग्रीक आजादी के लिए जो कुछ किया, वह सब का जाना हुआ है। बायरन महान् था, व्यक्तित्व मे, आजादी की उपासना मे, प्रणय की रुग्णता मे, काव्य की प्रौढता मे। आरभ मे उसने जो 'आवर्स आफ आइडिलनेस' लिखा तो आलोचको और कवियो ने उसे धिक्कारा। इसपर दबना तो दूर रहा, उस महाकवि ने उनका उत्तर 'इग्लिश बार्ड्स ऐण्ड स्कॉच रिव्युअर्स' (१८०९) नामक अत्यन्त प्रखर चुभने वाली व्यग्यात्मक कविता से दिया। बायरन अत्यन्त सुन्दर था, कुछ लगडा, और घोर प्रणयी, दु साध्य कामुक। कहते है कि एक बार जब एक प्रणयिनी से वह पहले पहल मिला, तब उसका प्रभाव उस नारी पर ऐसा पडा कि उसे देखते ही नारी ने अपनी डायरी निकाली और उसमे लिखा—'मैड, बैड ऐण्ड डेन्जरस' (पागल, बद और खतरनाक)। बायरन लार्ड वर्ग का था। लन्दन की बैठको का वह 'विजयी नेपोलियन' माना जाता है, यद्यपि प्रणय के क्षेत्र मे उसकी यह विजय इग्लैड तक ही सीमित न रही। यूरोप के कॉन्टिनेन्ट पर भी उसका विस्तार हुआ, और इटली, विशेषकर वेनिस मे तो उसने भयानक कामुकता का जीवन बिताया। काउटेस गिचौली से उसका सबध इटली के स्वप्न-जगत् का रहस्य बन गया है। वैसे स्वय इग्लैड मे बायरन की कामुकता का व्यापार कुछ कम सजग न था और स्वय उसकी अर्द्धभगिनी के साथ जो उसका प्रणय-सबध बताया जाता है, वह सर्वथा निराधार न था। रोमाटिक प्रवृत्तियो और भावावेगो से उन्मत्त बायरन की तेजस्विता इग्लैड मे राजनीति के क्षेत्र मे विशेष व्यक्त न हो पाई, क्योकि रोमाचकता उसकी राजनीति पर छा गई थी। एक बार नॉटिघम के श्रमिको के प्राणदड के विरुद्ध जो उसने लार्ड सभा मे व्याख्यान दिया, वह अद्भुत शक्ति का था और कुछ लोगो ने आशा भी बाधी कि एक दिन बायरन इग्लैड के राजनीतिक क्षेत्र का नेतृत्व करेगा, परतु उनकी कामना सफल न हुई।

बायरन पर्यटक था। उसने अनेक लबी यात्राए की और उन यात्राओ मे जो रोमाचक साहसिकता का पुट था, उसने उससे अग्रेज पाठको को घर बैठे विदेशो से साक्षात् कराया। 'गियोर' (१८१३) मे उसने अपनी पीढी की अभिरुचि को अभिव्यक्त किया। इससे उसकी ख्याति फ्रास से रूस तक फैली। इससे भी अधिक विख्यात 'चाइल्ड

१. George Gordon Lord Byron (१७८८-१८२४)

हेरल्ड'(१८१२-१८)हुआ, जिसमे उसने लुके-छिपे अपना ही परिचय दिया। इसके पिछले सर्गो का वर्णन व्याख्याप्रधान है। नगर, खडहर, फैले मैदान बायरन के तीव्र वर्णन से पाठक के सामने मूर्तिमान हो आते है। इन सबकी पृष्ठभूमि रोमाचक है, जो एक अनोखी शालीनता का सृजन करती है। उसने कुछ सचेतक कारुणिक कथाए भी अपने 'मैनफ्रेड' और 'केन'जैसी कृतियो मे सिरजी परतु वस्तुत. उसकी ख्याति काव्य के क्षेत्र मे व्यग्यात्मक रचना 'बेप्पो' (१८१८), 'दि विजन ऑफ जजमेट' (१८२२) और 'डॉन जुआन' (१८१६-२४) पर प्रतिष्ठित हुई। 'डॉन जुआन' तो निश्चय ही अग्रेजी भाषा की महत्तम कविताओ मे है। इसमे जीवन की विषमताए, कारुणिकता, साहस, आवेग सभी कुछ सजीव हो उठे है। व्यग्य उसके चित्र-चित्र से बोलता है, जीवन शब्द-शब्द से चूता है।

शेली[1] और कीट्स[2] इसी अग्रेजी रोमाण्टिक शैली के कवि है। शेली प्रखर रोमाचक बायरन के विपरीत इस परपरा का सबसे बडा आदर्शवादी है। उसके आदर्शवाद पर कुछ आलोचको ने असतोष प्रकट किया है और उसे ब्लेक की श्रेणी मे रखा है। नि सदेह शेली ब्लेक की ही भाति द्रष्टा है, परतु वह उससे कही बढकर कवि है। आरभ से ही शेली को सघर्ष करना पडा था, पहले पिता के विरुद्ध, फिर अपने आचार्यो के विरुद्ध। ऑक्सफोर्ड मे जो उसने अपने अनीश्वरवादी सिद्धान्तो से आचार्यो को चुनौती दी, तो उसे विश्व-विद्यालय छोडना पडा। हैरियट के साथ उसका विवाह भी अत्यन्त कष्टकर सिद्ध हुआ और इन कटु अनुभवो ने उसकी प्रकृति को सर्वथा अक्खड बना दिया। उसने अपनी पत्नी को त्याग दिया और पत्नी ने आत्महत्या कर ली। उसके बाद उसने मेरी गोडविन से विवाह किया, जिसके साथ उसने अपने जीवन का बडा भाग स्विट्जरलैंड और इटली मे बिताया, जहा स्पेजिया की खाडी मे तूफान से उसकी मृत्यु हुई। जिसके जीवन मे इतनी घटनाए घटे, इतनी तिक्त अनुभूतिया भरी हो, उसका द्रष्टा हो जाना कुछ अजब नही, विशेषकर जब उसमे कृतित्व की इतनी महान् शक्ति हो, जितनी शेली मे थी। शेली ने जीवन को केवल देखा ही नही, उसकी कटु अनुभूतियो को सहा ही नही, उसने उन्हे बदल भी देना चाहा। आशावादी द्रष्टा की भाति उसने कहा कि यदि अत्याचार दूर कर दिया जाए, क्रूरता और अनाचार का लोप हो जाए, द्वेष और शक्ति के ताडव ससार से उठा दिए जाए तो नि सदेह जीवन सुन्दर हो जाए और ससार स्वर्ग। इसी सदेश को लेकर वह मानवता के सामने खडा हुआ और इसी सदेश को लेकर वह 'क्वीन मैब' और 'रिवोल्ट ऑफ इस्लाम' के साथ कार्यक्षेत्र मे उतरा। लेकिन उसकी साधना की सिद्धि वस्तुत 'प्रोमेथियूस अनबाउण्ड' मे हुई। इस गेय नाटिका मे उसने स्काइलस की 'ट्रैजेडी' को अपना मॉडल बनाया और जुपिटर द्वारा प्रोमेथियूस के चट्टान से बाधे जाने की कथा लिखी।

१. Percy Bysshe Shelley (१७९२-१८२२); २. John Keats (१७९५-१८२१)

उसने इसमे मनुष्य को प्रेम की शक्ति से निरंकुशता और अत्याचार का प्रतिरोध करने को ललकारा। आधुनिक अग्रेजी-साहित्य मे 'प्रोमेथियूस अनबाउण्ड' का लिरिक तत्व अद्वितीय है। शेली की आलोचना भी तीव्र हुई है और इसमे कुछ तथ्य है कि उसमे विनोद की मात्रा बहुत कम है। साधारण जीवन से भी, उसके सघर्ष के बावजूद, उसका सबध कम दीखता है। इस रूप मे न तो वह चॉसर है, न शेक्सपियर, न मिल्टन। ससार मे जैसे वह दूर है और उसकी भाव-प्रतिमाओ मे वायु, सूखी पत्तिया, ध्वनिया, लहरे आदि रूप धारण करती है। अनेक बार तो ऐसा लगता है कि वह जीवित जगत से दूर के किसी आत्म परिवार का परिचय दे रहा है। आज काव्य-पाठको के ससार पर उसकी पकड ढीली पड चली है, क्योकि जीवन उसकी पकड से छूट चुका है। यद्यपि 'ओड टु दि स्काई लार्क' आज भी चाव से पढा जाता है।

रोमाटिक परपरा के विशिष्ट कवियो मे जॉन कीट्स है। रोमाचकता का वह मूर्तिमान् स्वरूप था। इग्लैड के महान् कवियो मे वह सबसे अल्पायु मे मरा, केवल २५ वर्ष की आयु मे। वह रोमाटिक कवियो मे सबसे पिछला था, सबसे पहले मरा। उसका पिता अस्तबल का रक्षक था। उसने उसे डाक्टर बनाने की प्रभूत चेष्टा की, यद्यपि बचपन से ही काव्य-प्रेम ने कीट्स को कविता के प्रति अनुरक्त कर दिया था। प्राचीन काव्यो से उसने कथाए ढूढ निकाली और स्पेन्सर तथा शेक्सपियर की कृतियो से शब्द की माया-शक्ति प्राप्त की। साथ ही एक्रोपोलिस से लार्ड एल्गिन की सगमरमर-प्रतिमाओ (एल्गिन मार्बल्स) और उसके मित्र हेडन के चित्रो ने उसे आलेखन की शक्ति प्रदान की। वैसे कविता के क्षेत्र म वह किसीका शिष्य न था, अपने आप उसने उस दिशा मे सफलता पाई। उसके 'लेटर्स' उसके आलोचनात्मक विचारो के अद्भुत प्रमाण है, यद्यपि साथ ही वे फैनी ब्राउन के प्रति उसके असीम प्रेम का उद्घाटन करते है। इटली जाकर उसने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की रक्षा का असफल प्रयत्न किया। क्षय ने उसे विवश कर दिया और एक दिन वह दुनिया से चल बसा।

उसकी लम्बी कविता 'एन्डीमियन' (१८१८) उसी साल लिखी गई, जिस साल यूरोप का महादार्शनिक हीगेल मरा और महामना मार्क्स उत्पन्न हुआ। आलोचको ने 'एन्डीमियन' की या तो सक्रिय उपेक्षा की अथवा उसकी तीव्र आलोचना। यह सही है कि यह कविता अतिरजित है परन्तु इसके अनेक स्थल उस सौदर्य के प्रतीक भी है जो मूर्तिकार और चित्रकार के समन्वित प्रयत्न शब्दाकन के आधार से प्रस्तुत कर सकते है। 'लामिया', 'इज़ाबेल' और 'ईव ऑफ सेन्ट अग्नीज़' के द्वारा उसने काव्य-कथाए प्रस्तुत की जिनकी पृष्ठभूमि रगो के विस्तार मे नितान्त ऋद्ध थी।

कीट्स आवेगो का कवि था, सौंदर्य का उपासक और उसकी प्रेरणा से समर्थ कवि।

'हाइपीरियन' नामक उसकी कविता, यद्यपि अधूरी रह गई, परन्तु उतने से ही प्रमाणित है कि यदि कीट्स ने उसे पूरा कर दिया होता तो वह दार्शनिक कवि के रूप मे भी कितना महान् होता। धीरे-धीरे उसकी सवेदना अपने वातावरण से घनी हो चली थी और जहा शेली एक स्वप्न के देश मे विचरने लगा था वहा कीट्स अपने वातावरण का घना स्पर्श पाने लगा था। 'हाइपीरियन' मे पुरानी परपरा के देवताओ के स्थान पर नित्य नये देवों की उठने वाली शृखला का प्रतिपादन है जो उसकी मिल्टन-वत् प्रगतिशीलता को एक मात्रा तक प्रकट करता है। यदि कीट्स कुछ काल और जी गया होता तो मानवता उसकी सक्रिय भावुकता के योग से नि सदेह बलवती होती।

बुद्धिवाद और विज्ञान

(१८३२-७५)

आशावाद

१९वी सदी के कवि, जिनका आरभ कीट्स तथा अन्य रोमाटिक कवियो के बाद हुआ, अधिकतर मलका विक्टोरिया के समकालीन थे। टेनिसन[1] शायद विक्टोरिया कालीन कवियो मे सबसे महान् हुआ, यद्यपि उसके आलोचको ने उसके पराभव मे कुछ उठा न रखा। शब्दो की शालीनता और ध्वनियो के उपयोग मे तो वह अग्रेजी साहित्य मे बेजोड़ है। उसकी प्रारभिक गेय कविताए तो जैसे शब्दो के सुन्दरतम नमूने बुनती चली जाती हैं। हा, इतना ज़रूर है कि मौलिकता और गहराई मे अपने पूर्ववर्ती रोमाटिक कवियो की अपेक्षा वह काफी पीछे है। उसकी बडी कविताओ मे लोगो ने शिथिलता का दोष पाया है, यद्यपि 'उलिसिज' के सबध मे यह दोष सार्थक नही। 'उलिसिज' वीर काव्य की आत्मा को रोमाचक सजीवता से अनुप्राणित करती है।

परन्तु वस्तुत टेनिसन की प्रतिभा उसकी लिरिको और 'दि डेथ ऑफ इनोन,' 'दि ड्रीम ऑफ फेयर विमन', 'दि पैलेस ऑफ आर्ट' आदि छोटी कविताओ मे है, यद्यपि उसकी महत्वाकाक्षा उसे इन तक ही सीमित न रख सकी। उसकी 'ईडिल्स ऑफ दि किंग' मे चित्रण और रूपको का प्रसार है परतु चॉसर या स्पेन्सर के सामने वह फीकी पड जाती है। टेनिसन ने ऑर्थर-सबधी कहानियो को विक्टोरिया कालीन आचार से मढा, परन्तु वह स्वयं समसामयिक युग को पकड न सका। आखो के नीचे बहता जीवन उसके दृष्टिपथ से ओझल हो गया, और एक दूर की अनजानी स्वप्निल दुनिया उसकी नजरो मे लहरा उठी। 'ईडिल्स' मे ऑर्थर-सबधी काव्य-कहानियो की ही भाति शब्दो की शालीनता है, कल्पना की रोमाचकता है और अनजाने का अनोखापन है, परतु वह सारा ही जीवन से परे की दुनिया है, उसका लोक उस 'पोयट लारियट' का लोक है जो टेनिसन का था। 'इन मेमोरियम' का

१. Alfred Lord Tennyson (१८०९-९२)

लोक निश्चय ही उसका अपना है, टेनिसन का, कवि का, और चूकि यह कवि की अपनी सच्ची कृति है अत उस युग की वह महान् कृति भी बन गई है। उसमे उसने अपने मित्र आॅर्थर हैलम की मृत्यु का वर्णन किया है और उसके विचार जीवन-मरण तथा उनके बाद की दुनिया का स्पर्श करते है। सावधि जगत् का विज्ञानवाद उसे जैसे डरा देता है और वह बालक की भाति भगवान् की सरक्षा का वरदान मागता है। 'इन मेमोरियम' निस्सदेह अकृत्रिम कृति है।

टेनिसन काफी पढा गया है, उसका अनुकरण भी काफी हुआ है, इसीसे यह भी प्रत्यक्ष है कि उसके अनेक आलोचक हुए। उसने काव्य के क्षेत्र मे प्रगति करते हुए अपनी आखे स्वदेश के औद्योगीकरण की ओर से मीच ली। इसी कारण उसकी कविता भी मैथ्यू आर्नल्ड के शब्दो मे 'जीवन की व्याख्या' न बन सकी। इस खतरे से जंसे भयभीत होकर वह अपनी अन्य कविताओ—'लाक्सले हॉल', 'दि प्रिन्सेस' और 'मॉड'—मे वास्तविक जीवन के स्तर पर उतर आता है।

जिन नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समस्याओ का टेनिसन ने स्पर्श मात्र किया, रॉबर्ट ब्राउनिग[1] के लिए वे प्रधान प्रेरणाए बन गई। रॉबर्ट ब्राउनिग को अधिकतर दार्शनिक कवि माना जाता है। साहस और शक्ति उसके शब्द-शब्द से टपकती है, परन्तु यह सब उसके उस दर्शन से सबध रखता है जिसमे वह निर्भीकतापूर्वक मृत्यु से लडता है अथवा मृत्यु के भय का सफल सामना करता है। इसी कारण उसकी कविता मे जीवन के प्रति बडा विश्वास बन पडा है। आशावादी जीवन स्पष्टत निराशा पर व्यग्य करता है।

ब्राउनिग ने कविताए तो लिखी ही, उसने नाटक के भी कुछ प्रयोग किए। उसने ड्रामे का प्रयोग बिना उसके रगमचीय अभिनय के विचारो के किया। उसमे उसका दर्शन-मात्र प्रतिबिम्बित था, जैसा कि 'पैरासेल्सस' (१८३५) या 'पिप्पा पासेज' (१८४१) से प्रकट है। इन नाटको मे गति केवल मानव-कर्मो की शृखला से प्रस्तुत होती है, उसके लिए अनेक चरित्रो की पारस्परिक प्रतिक्रियाए उतना अर्थ न रखती थी जितना एक ही व्यक्ति के आतरिक द्वन्द्व। इसी कारण उसने एक प्रकार के एक-पात्रीय वक्तव्य वाली नाटकीयता की नीव डाली। इसी रूप मे उसके विशेषत जानेहुए नाटक 'एन्ड्रीया डेल सार्टो','फ्रालिप्पो लिप्पी', 'सॉल', और 'दि विशप आर्डर्स हिज़ टूम्ब' आदि प्रस्तुत हुए। इनका प्रकाशन जिल्दों की एक शृखला मे 'ड्रामेटिक लिरिक्स' (१८४२), 'मैन ऐण्ड विमैन' (१८५५) और 'ड्रामेटिस पर्सोनी' (१८६४) मे सग्रहीत हुए। इन्होने रॉबर्ट ब्राउनिग को जो यश प्रदान किया वह टेनिसन को छोडकर और किसीको १९वी सदी के उत्तरार्द्ध मे न मिला।

इसी परपरा मे प्रस्तुत उसकी 'दि रिग ऐण्ड दि बुक' (१८६८-६९) है, जिसमे

---

१. Robert Browning (१८१२-८९)

एक-पात्रीय नाटकीयता का तन्तु बुना गया है और जो अग्रेजी साहित्य की सबसे लम्बी कविताओ मे से एक है। इसमे ब्राउनिग ने एक इटैलियन अपराध-कहानी का काव्य रूप मे वितन्वन किया है और उसी सूत्र से उसने अपने रहस्यमय काव्य-दर्शन का अकन किया है। उसकी कविताए प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियो से भरी है और इटली का पुनर्जागरण-काल जैसे ब्राउनिग के पृष्ठो मे एक बार फिर जी उठता है। ब्राउनिग के साहस और निर्भीकता के बावजूद उसका प्रयास 'डॉन क्विक्ज़ोट' का-सा है। दर्शन के माध्यम से घूमने वाले उसके चरित्र जैसे एक कल्पित ससार मे घूमते है और किसी प्रकार भी उनको स्वतत्र नही कहा जा सकता। लगता है, जैसे उसके नर-नारी पात्र किसी तानाशाही दुनिया के जीव है, जिनका तानाशाह ब्राउनिग स्वय है।

रॉबर्ट ब्राउनिग के साथ अग्रेज़ी-साहित्य की प्रसिद्ध कवियित्री एलिज़ाबेथ बैरेंट[1] का नाम सबधित है। एलिजाबेथ निस्सन्देह ब्राउनिग के सम्पर्क मे विशेष चमकी परन्तु निश्चय ही काव्य के क्षेत्र मे उसका अपना स्थान है और उसकी कविताए, 'सॉनेट्स फ्रॉम दि पौर्चुगीज', 'ओरोरा ले', जो उसने ब्राउनिग से सबध के पहले लिखी थी, इस दिशा मे ज्वलन्त प्रमाण है। ब्राउनिग एलिज़ाबेथ को लेकर इग्लैंड से बाहर कॉन्टिनेन्ट भाग गया था और उसके अनुयायियो पर उसका यह आचरण रोमाटिक हीरो के रूप मे अपनी छाप छोड गया।

नैतिक और साहित्यिक आलोचना

१९वी सदी के उत्तरार्द्ध मे मैथ्यू आर्नल्ड, फित्सजेरॉल्ड, रोसेट्टी, स्विनबर्न, मॉरिस, क्रिस्टियना रोसेट्टी, पैटमौर, टॉमसन आदि प्रमुख है। मैथ्यू आर्नल्ड[2] जो आलोचक के रूप मे विशेषप्रसिद्ध है, कविता के क्षेत्र मे भीकाफी जानाहुआ है। उसकी कविताए—'एम्पिडाक्लीज ऑन एटना', 'दि फोरसेकन मरमैन', 'थेरसिस', 'दि स्कॉलर जिप्सी' और 'डोवर बीच'—काफी प्रसिद्ध है। विशेषकर अपनी गद्य-कृतियो मे, उसने मानव-जीवन की समस्याओ पर विचार किया। उसकी 'सोहराब ऐण्ड रुस्तम' की-सी लम्बी कविता काफी लोकप्रिय है, परन्तु निस्सन्देह मैथ्यू आर्नल्ड का वास्तविक स्थान आलोचना के क्षेत्र मे है।

एडवर्ड फित्सजेरॉल्ड[3] अत्यन्त प्रमादी था और स्वतन्त्र कविताए भी उसने कुछ बहुत नही लिखी परन्तु फारसी कवि उमर खय्याम की अमर रुबाइयो को जो 'दि रुबाइयात ऑफ उमर खय्याम' के नाम से १८५९ मे उसने प्रकाशित किया, वह अनूदित साहित्य के क्षेत्र मे एक आलोक-स्तम्भ है। कहते है, फित्सजेरॉल्ड ने अनुवाद को मूल से सुन्दरतर बना दिया है। इस एक सफल अनुवाद ने उसे हज़ार स्वतन्त्र कृतियो के कवि-सा साहित्य

१. Elizabeth Barrett (१८०६-६१); २. Mathew Arnold (१८२२-८८), ३. Edward Fitzgerald (१८०९-८३)

मे प्रतिष्ठित कर दिया और वह १९वी सदी के पिछले दशको मे साहित्य के प्रधान व्यक्तियो मे से माना गया है।

फित्सजेरॉल्ड को खोजने का श्रेय डी० जी० रोसेट्टी[1] को है। रोसेट्टी का स्थान विक्टोरिया-काल के साहित्य मे बहुत ऊचा है। वह इटली के एक राजनीतिक शरणार्थी का बेटा था। विक्टोरिया-काल का साहित्यकार होकर भी उसने साहित्य से दार्शनिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रसगो को अलग रखा। वह निरा कलाकार था। वैसे भी वह पहले चित्रकार रह चुका था, जहा उसने परपरा की शृखला को तोडकर स्वतन्त्रता और सत्य का अन्वेषण किया था। उसका चिह्न प्रतीकवादी और कल्पना-प्रधान था, जिससे उसकी कविता मे भी यथार्थ के विरुद्ध चित्रो का प्राधान्य हो गया है, यद्यपि उसके सिद्धान्तो मे यथार्थता का अभाव नही। चित्त के इस सघर्ष का उदाहरण स्पष्ट रूप से उसके 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल' मे मिलता है, जिसमे काव्य-विस्तार और प्रसग रहस्यवादी है परन्तु अन्तिम लक्ष्य शृगारिक है, प्राय यौन, काय-प्रधान। उसकी नितान्त पार्थिव कृतियो मे सर्वत्र प्रतीको की छाया है जो उसके साहित्य पर धुधले जल-प्रवाह, मलिन ज्योत्स्ना और जब-तब प्रभूत चित्रो के साथ अवतरित होती है। उसके लिरिको और बैलेडो का यही वातावरण है। यही उसके प्रकाशनो—'पोयम्स' (१८७०) और 'बैलेड्स' तथा 'सॉनेट्स' (१८८१)—मे प्रतिबिम्बित है। 'दी हाउस ऑफ लाइफ' उसकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमे रहस्य और यौन का अद्भुत सम्मिश्रण है। दाते और उसके समवर्ती साहित्यकारो का जो रोसेट्टी ने अनुवाद किया तो वस्तुत वह स्वय उनके गहरे प्रभाव से वचित न रह सका। रोसेट्टी के आकर्षक व्यक्तित्व ने अनेक प्रतिभाशाली तरुणो को आकृष्ट किया।

इन तरुणो मे स्विनबर्न[2] अपनी कविता और उसके नग्न प्रणय-निवेदन से शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। स्विनबर्न पहले इटन और फिर ऑक्सफोर्ड का विद्यार्थी था, जहा उसने अपनी जीवन सबधी चुनौतियो द्वारा काफी हलचल पैदा की और जब १८६६ मे वह साहित्य के क्षेत्र मे अपनी 'पोयम्स ऐण्ड बैलेड्स' लेकर उतरा, तब तो विक्टोरिया कालीन काव्य मे उसके भाव-विद्रोही प्रणय बहुल नग्न चित्रणो ने उथल-पुथल मचा दी। एक वासना की लहर-सी नये काव्य-क्षेत्र मे बह गई, जिसको विक्टोरिया कालीन काव्य-क्षेत्र मे सहन करने की ताब न थी। एक प्रकार से वह कीट्स की भावनाओ को उनके ग्रीक आधारो से पुनरुज्जीवित कर रहा था। उसके लिरिको ने एक प्रकार से ड्रामा और कोरी कविता के क्षेत्र मे विप्लव मचा दिया। उसकी कृतियो मे 'इटिनस,' 'एटलान्टा इन कैलीडन' (१८६५) और 'इरेक्थियस' (१८७६) विशेष प्रसिद्ध है। स्विनबर्न ने कविताए

---

१ Dante Gabriel Rossetti (१८२८-८२), २ Algernon-Charles Swinburn (१८३७-१९०९)

और नाटक फिर-फिर लिखे परन्तु उसके कृतित्व की शक्ति उनमे इतनी प्रकट न हो सकी जितनी उसकी प्रारभिक कृतियो मे हुई थी। कारण यह था कि उसकी वासना-चेतना स्वाभाविक ही कायिक शक्तियो से सम्बद्ध थी और अपनी तरुण आयु मे उनका 'डोलोरिस', 'लाउस वेनेरिस', 'फास्टाइन' आदि मे वह अकृत्रिम अश्रृखलित रूप प्रस्तुत कर सका। धर्म और परहेज उसकी राह मे कही नही अटके।

विलियम मॉरिस[1] भी रोसेट्टी के ही भावो से प्रभावित था। काव्य के क्षेत्र मे वह शिल्प के क्षेत्र से प्रादुर्भूत हुआ। उसने शिल्प की चेतना काव्य की सृष्टि मे डाली, और अपने जीवन-काल की उस परिस्थिति को वह न भुला सका जहा तीव्र उत्पादन और अमित लाभ का राज है। 'दि डिफेन्स ऑफ गिनिवियर' (१८५८) के चित्र कल्पना-प्रधान होकर भी जीवन से ओतप्रोत है। उनमे शक्ति और वजन है। 'दि अर्थली पैराडाइज' मे उसने लम्बी कविता को चॉसर की भाति कथालेखन का आधार बनाया परन्तु उसमे न तो चॉसर की सचेष्ट मानवता है, न उसका भाषाधिकार और न शक्तिशाली चरित्र-चित्रण। धीरे-धीरे समसामयिक जीवन की परुषता ने उसे कल्पना के अकृत्रिम क्षेत्र को छोडने पर बाध्य किया। उसकी कृतियो मे विशेषत 'ए ड्रीम आफ जॉन बॉल', 'न्यूज फ्रॉम नोह्वे-यर', 'दि वेल ऐट दि वर्ल्ड्स एण्ड' विशेष प्रसिद्ध हुई।

क्रिस्टियना रोसेट्टी[2] यद्यपि प्रसिद्ध रोसेट्टी की ही बहिन थी, परन्तु उसका जीवन भाई के जीवन के बिल्कुल विपरीत था, नितान्त धार्मिक। 'गॉबलिन मार्केट' मे उसने सुन्दर काव्य-चित्रण किया। कॉवेन्ट्री पैटमूर[3] ने इसी काल 'दि एजिल इन दि हाउस' नाम के काव्य मे एक उपन्यास ही रच डाला, जिसमे उसने कविता को रोजमर्रा के जीवन का बाना पहनाया। उसने 'दि अननोन इरोस' द्वारा पेचीदा विचारो को काव्य के रूप मे प्रस्तुत किया और कैथोलिक कवि के रूप मे इसी अपनी जटिल रहस्यमय विचारधारा के कारण विशेष प्रसिद्ध हुआ। फ्रान्सिस टॉमसन[4] भी कैथौलिक कवि ही था और उसने भी काफी लोकप्रियता हासिल की। गरीबी और कष्ट के जीवन को उसने अपनी कविता मे प्रतिबिम्बित किया। 'दि हाउण्ड ऑफ हेवन' उसकी जानी हुई कृति है।

नवयुग का उदय

१९वी सदी के पिछले दशको मे उपन्यास साहित्य काव्य साहित्य के ऊपर उठ गया। कई साहित्यकारो ने पहले काव्य के माध्यम से साहित्य-क्षेत्र मे जीवन आरभ किया परन्तु शीघ्र वे उपन्यासकार हो गए, और उपन्यासकार के रूप मे ही वे विशेष प्रसिद्ध हुए। इनमे

१ William Morris (१८३४-९६); २ Christiana Rossetti (१८३०-९४), ३ Coventry Patmore (१८२३-९६), ४. Francis Thomson (१८९०-१९०७)

टॉमस हार्डी[1] और जॉर्ज मेरेडिथ[2] विशेष उल्लेखनीय है। जॉर्ज मेरेडिथ ने अपनी प्रारभिक काव्य-कृति 'लव इन दि वैली' द्वारा अच्छा नाम कमाया। उसकी कविताओ और उपन्यासो मे स्वभावत ही अनेक बार एकरूपता का दर्शन होता है। उसने उपन्यासो की ही भाति कविताओ मे भी दर्शन की चेतना मूर्त की। सदाचार और वनस्पति-शास्त्र के आकडो को एकत्र कर उसने 'पोयम्स ऐण्ड लिरिक्स ऑफ दि जौय ऑफ अर्थ' लिखा, जिसमे उसने दिखाया कि पृथ्वी मनुष्य को अपनी वन्य प्रकृति दबा रखने मे उसकी सहायता नही करती। पशुता और भावावेग दोनो मनुष्य को दबाए रखने मे एकत्र प्रयत्न करते है। मेरेडिथ की कविताओ मे मनुष्य की कमजोरियो का प्रभूत चित्रण हुआ है। काव्य-रूप मे उसकी कृतिया कठिन है, यद्यपि उनकी भाव-चेतना स्वस्थ और सबल है।

टामस हार्डी प्रारब्धवादी था। नर-नारी के कारुणिक प्रसग उसके उपन्यासो और कविताओ, दोनो मे क्रूर प्रारब्ध-चालित रूप मे उपस्थित होते है, जिनका निराकरण वह कभी नही करता। अपनी लघु लिरिको मे वह परिस्थितियो से मजबूर क्रूरता की चपेटो से विह्वल नर-नारियो को प्रारब्ध द्वारा नियन्त्रित अन्धो की भाति खिचे जाते चित्रित करता है। जिस सक्षिप्तता और शब्द-लाघव द्वारा हॉर्डी इन चित्रो को उपस्थित करता है, वह वैयक्तिक काव्य-कला की एक विजय है। अपनी उपन्यास-शृखला के बाद उसने नेपोलियन के युद्धो के आधार पर 'दि डाइनास्ट्स' (१९०४–८) नाम का एक वीर-काव्यात्मक नाटक भी लिखा। उसका नाटक रगमच के योग्य तो न हुआ परन्तु चित्त के रगमच पर अनेक आलोचको को वह विशेष सफल जचा।

टी० ई० लॉरेन्स[3] ने १९०६ ई० मे 'दि डॉन इन ब्रिटेन' नामक लम्बी कविता के कुछ भाग प्रकाशित किए। यह कविता उस काल की काव्य-धारा के नितान्त विपरीत थी। निस्सन्देह रोमान्टिक कवियो की रूमानी चेतना उसमे नही, परन्तु उसकी इस कृति मे सभ्यता के प्रारभिक दिनो के मानव-प्रयास के जो चित्र प्रस्तुत हुए है, अपनी नग्न सामर्थ्य मे वे निश्चय ही असाधारण है। इस प्रकार की दूसरी कविता 'दि टैस्टामेन्ट आफ ब्यूटी' (१९२९) रॉबर्ट ब्रिजज[4] ने लिखी, जो प्रारभ मे बडी लोकप्रिय हुई। इस दार्शनिक कविता मे ब्रिजज ने बुद्धि और सौन्दर्य की परिभाषा की।

---

१. Thomas Hardy (१८४०-१९२८), २ George Meredith (१८२८–१९०९) ;
३. T E Lawrence (१८८८–१९३५), ४ Robert Bridges (१८४४–१९३०)

बीसवीं सदी

२०वी सदी का आरभ अग्रेजी साहित्य मे एक नये युग के रूप मे आया। यह सही है कि १९वी सदी के पिछले युगो के अनेक कवियो ने अपनी पुरानी निष्ठा किसी न किसी रूप मे जीवित रखी, परन्तु निस्मन्देह उनका युग अब समाप्त हो चुका था। रोमान्टिक परपरा को समाप्त कर उसके स्थान पर कवियो के एक नये दल ने नये लिरिको की रचना की, जिनका स्वर विषाद और करुणा का था और उनकी गेयता मे आकर्षक सौदर्य था। उन्होने अपनी कविताओ से सदाचार और दर्शन की विक्टोरिया कालीन समस्याओ को बाहर कर दिया और हल्की-फुल्की पक्तियो मे अपने चित्त और प्रणय की अनुभूतियो को मूर्त किया। ऑस्कर वाइल्ड,[1] जिसका नाम काफी बदनाम हो गया है, इन्हीमे था। यद्यपि काव्य के क्षेत्र मे वह अपेक्षाकृत प्राय अनजाना है, परतु नाटक-क्षेत्र मे निश्चय ही वह विशेष विख्यात हुआ। अर्नेस्ट डाउसन[2] ऑस्कर वाइल्ड से अपनी कविता के गेय तत्व मे कही अधिक ऋद्ध है। काव्य के प्राचीन प्रतीको का वह नये सिरे से प्रयोग करता है। लियोनल जॉन्सन[3] के लिरिको मे एक प्रकार के गभीर सौन्दर्य का मूर्तन हुआ है। कैम्ब्रिज मे लैटिन का प्रोफेसर ए० ई० हॉसमन[4] इन कवियो से जीवन मे भिन्न होकर भी चित्त से बहुत कुछ इन्ही का-सा है। 'श्रोपशायर लैड' (१८९६) और 'लास्ट पोयम्स' (१९२२) द्वारा उसे इस दिशा मे प्रचुर ख्याति मिली है। उसने पुराने शब्दो के नये प्रयोग किए और आवेगो के मूर्तन तथा उसकी अभिव्यक्ति मे प्रयुक्त भाषा तो निश्चय ही शब्द-रूप मे स्वीकार्य है। प्रकृति के प्रति उसकी भावनाए भी सबल-सहज तीव्रता प्रस्तुत करती है। हॉसमन आवेगो का कवि है।

जॉर्ज पचम के नाम से जिस कव्य-धारा का बोध होता है, वह उस राजा की सम-सामयिकता मात्र से सबध रखती है, कुछ उसके कृतित्व से नही। उसके राज्यकाल के लिरिक कवियो के एक दल को 'जॉर्जियन पोयट्स' कहते है। इधर के आलोचना-क्षेत्र मे उनपर गहरा आघात हुआ है। उनको आलोचको ने गाम्भीर्य हीन, अति समसामयिक माना है। आलोचको का कहना है कि उन्होने घने से घने आवेगो का सुन्दर पद्य-रचना के लिए प्रयोग कर उनके साथ अन्याय किया है। रूपर्ट ब्रूक[5] जिसने १९१४ मे स्वदेश-प्रियता, कर्तव्यनिष्ठा और आदर्शवादपर कुछ सॉनेट प्रकाशित किए, इन आलोचको के रोष

---

१ Oscar Wilde (१८५६–१९००); २. Ernest Dowson (१८६७–१९००), ३. Lionel Johnson (१८६७–१९०२), ४ Alfred Edward Housman (१८५९–१९३६), ५. Rupert Brooke (१८८७–१९१५)

का केन्द्र बन गया। ब्रूक ने युद्ध मे मृत्यु को वीर-दर्प का आधार माना। वाल्टर डि ला मेर[1] शब्द का जादूगर माना जाता है, जिसने शब्दो की चेतना मे एक नई रहस्यमयी ससृष्टि की। उस काल के प्रधान कवियो मे जेम्स एलरॉय फ्लेकर[2] का नाम उल्लेखनीय है। वह फ्रेंच और फारसी पढा हुआ था, जिससे उसने अपनी लिरिको की ध्वनि मे उन भाषाओ के मधुर पद्य का योग दिया। इन कवियो के विरुद्ध जो विशेष आलोचना हुई, उसका स्वर यह था कि कविता मे आज के जीवन का योग होना चाहिए। जॉन मेसफील्ड[3] ने इसी विचार-धारा से प्रभावित होकर अपने प्रारभिक सागर-सबधी लिरिको को छोड मानव-कहानियो की कष्ट-चेतना को अपनाया। 'दि ऐवरलास्टिग मर्सी' और 'दि डेफोडिल फील्ड्स' इस प्रवृत्ति के प्रमाण है। मेसफील्ड ने उन यथार्थवादी प्रसगो को फिर से ग्रहण किया जो उपेक्षित हो गए थे। इस काल के अन्य कवियो ने तो अपने इस विद्रोह को और भी जटिल रूप से प्रकट किया। जेरार्ड मैनली हॉपकिन्स उन्ही मे से है और यद्यपि वह १८८९ मे मर चुका था, १९१८ मे उसकी रचना प्रकाशित हुई। वह जेसुइट कवि था और उसने धार्मिक धाराओ का मूर्तन किया, परन्तु पद्य रचना और विचार दोनो से उसकी मौलिकता प्रमाणित है। उसने कविता की ध्वनि मे शब्द और व्याकरण दोनो को दबा दिया है। उसकी काव्य-शैली का अनेक बाद के कवियो ने अनुकरण किया। विलफ्रिड ओवेन की युद्धसबधी कविताओ पर हॉपकिन्स का काफी प्रभाव पडा, यद्यपि वह एक पीढी पहले मर चुका था।

बीसवी सदी के विशिष्ट अग्रेज़ी कवियो मे एलियट[4] और यीट्स[5] है। एलियट ने पद्य और गद्य दोनो लिखा है और दोनो मे उसने प्रभूत ख्याति पाई है। उसकी प्रारभिक कविताओ का सग्रह १९१७ मे 'प्रूफ राक' के नाम से निकला था। ये कविताए व्यग्यपूर्ण और नाटकीय थी, जिन्होने तत्कालीन सभ्यता पर गहरी व्यग्यात्मक चोटे की। एलियट की साधना और बुद्धि प्रतीकवादी है। उसकी कृति 'दि वेस्ट लैण्ड' का काफी आदर हुआ है। इसमे उसने प्रथम महासमर के बाद के यूरोप का जीवन प्रतिबिम्बित किया है। 'दि वेस्ट लैण्ड' द्वारा उसने यह प्रकट किया है कि आज की सभ्यता का एक अपना अतीत तो अवश्य है, परन्तु न कोई उसका भविष्य है, और न विश्वास, न आदर्श, न निष्ठा। विश्वास की वह अनिवार्य आवश्यकता मानता है। अपने 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' नामक पद्य-नाटक मे उसने इसका विशेष निरूपण किया है। इसकी पद्य-रचना भी सरल है और इसका तथ्य आधुनिक जीवन का स्पर्श करता है। एलियट का प्रभाव देश-विदेश के नवो-

---

१ Walter de la Mare (ज० १८८३), २ James Elroy Flecker (१८८४–१९१५), ३ John Masefield (ज० १८७८), ४ Thomas Stearns Eliot (ज० १८८८), ५ William Butler Yeats (१८६५–१९३९)

दित कवियो पर काफी पडा, यद्यपि आज की सघर्षमयी परिस्थितिया उन्हे उसकी ओर से विमुख कर चली है।

यीट्स एलियट का समीपवर्ती होकर भी उम्र मे काफी बडा था और १६३६ मे उसका देहान्त हो गया। उसके जीवन मे दो पीढियो का काव्य सिरजा गया। स्वय उसने उन दोनो काल की प्रवृत्तियो का अनुसरण किया। यीट्स की शुरू की कविताओ मे अलकार और माधुर्य अधिक है और वह उनकी पृष्ठ-भूमि अपने देश आयरलैंड की प्रकृति से प्रस्तुत करता है। उस काल की रचनाओ मे वह सर्वथा 'रोमाटिक' है। 'दि लेक ऑइल ऑफ इनिसफ्री' उसकी काफी ताजी रचना है। बदलते हुए जमाने और काव्य के रूप को उसने पकडा और इसी कारण वह ज़माने की दौड मे पीछे न छूट सका। उसने अपनी बाद की रचनाओ मे यद्यपि अतीत के विश्वासो और प्रतिमाओ को निखारा, फिर भी उसकी कल्पना ने कुछ सुन्दर रचनाए प्रस्तुत की, जिनका सग्रह चार खडो मे प्रकाशित हुआ—'दि वाइल्ड स्वान्स ऐट कूल', 'माइकेल रॉबर्टीज ऐण्ड दि डान्सर', 'दि टॉवर' और 'दि वाइन्डिग स्टेयर'। यीट्स ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' का अनुवाद कर उन्हे पाश्चात्य पाठको और आलोचको के सम्मुख पहली बार रखा।

: ३ :

नाट्य साहित्य

शेक्सपियर से पूर्व (१५६२ तक)

इग्लैड मे रगमचीय खेलो का आरभ जूलियस सीजर की विजय के बाद रोमन्ज ने किया था। परतु उनके इग्लैड छोडने के साथ ही उन खेलो का अत भी हो गया। आरभ मे विदूषक, भॉड, गायक आदि घूम-घूमकर, स्थान-स्थान, गाव-गाव जा-जाकर कुछ ऐसे प्रदर्शन करते रहे, जिनमे विविध चेष्टाओ, भाव-भगियो, गायन आदि मे नाटक का बीज होता था। इन गायको मे जो अभिनय के बीजतत्व के भी धनी थे, वे 'मिन्स्ट्रल' कहलाते थे। उनके प्रदर्शनो मे भीड काफी इकट्ठी होती थी और, यद्यपि चर्च बराबर इस प्रकार के प्रदर्शनो का विरोध करता था, उसके पादरियो को व्यक्तिगत रूप से इनमे दिलचस्पी थी। लुक-छिपकर वे बराबर इन प्रदर्शनो को देखते थे।

धर्म ने आरभ मे निश्चय ही इस प्रकार के नाट्य प्रदर्शनो का विरोध किया होगा। परन्तु कालातर मे वही रगमचीय अभिनयो का कुछ काल के लिए आधार बन गया। ईसा के जीवन की अनेक घटनाए धीरे-धीरे चर्च की इमारत मे अभिनीत होने लगी जहा रगमच पर अथवा फैले मैदान मे अभिनेता और दर्शक मिले-जुले रहते थे। यह अभिनय बहुत कुछ आज की हमारी 'रामलीला' की ही भाति होते थे। शीघ्र ही चर्च को पता चल गया कि

धीरे-धीरे इन नाटको का अभिनय अथवा नाट्य तत्व धार्मिक प्रदर्शनो से बढ गया था। उसने उनका रुख फिर बदलना चाहा पर अब स्थिति उसके हाथ से बाहर निकल गई थी और तेरहवी-चौदहवी सदियो मे अभिनय ने सर्वथा धर्मेतर लौकिक रूप धारण कर लिया। चर्च ने रगमच अपनी इमारतो से अलग कर दिया।

धार्मिक नाटको मे पहले लैटिन भाषा का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता था। अब नाटक के लौकिक हो जाने से उसकी भाषा अग्रेज़ी हो गई। मध्यवर्गीय जनता और नागरिक सस्थाओ का नाटको के प्रदर्शन मे विशेष हाथ रहा। नाटको का अभिनय-क्षेत्र अब नितान्त विस्तृत हो गया। इन लौकिक नाटको मे भी कथानक विशेषत धार्मिक ही हुआ करते थे, यद्यपि उनके अन्तरग अनेक पारिवारिक दृश्यो से भरे होते थे। इन धार्मिक प्रदर्शनो के बाद उन नाटको की बारी आई जिन्हे मोरैलिटी प्लेज़ कहते है। पन्द्रहवी सदी के पिछले दशको के इन नाटको मे सदाचार का अभिनय होता था और आचार सबधी पाप-पुण्यात्मक पात्र ही इनकी रीढ थे। ये नाटक स्वाभाविक ही उद्देश्यपरक थे और आचारादर्श उनका लक्ष्य था। फिर भी उनमे यथार्थ और करुणा का प्रचुर समावेश था।

मोरैलिटी नाटको के अतिरिक्त कुछ ऐसी सक्षिप्त नाटिकाए भी थी जिन्हे इन्टरल्यूड कहते थे। वे न तो मोरैलिटी नाटको की भाति रूपक थी और न धार्मिक कथाए ही थी। उनका अभिनय अधिकतर ट्यूडर-काल के सामन्त परिवारो मे होता था। उस काल की एक विशेष कृति, हेनरी मैडवल की लिखी 'फुलगिन्स ऐण्ड लुकरी' है। इस प्रकार की नाटिकाओ मे पहली बार सामयिक जनता का भावकोण प्रदर्शित हुआ। १५३३ ईस्वी मे प्रकाशित हेवड का 'दि प्ले ऑफ दि वेदर' एक मनोरजक डायलॉग प्रस्तुत करता है। इन इन्टरल्यूडो ने जनता का विशेष मनोरजन किया। प्रहसन और विनोद अधिकतर ग्राम्य होते थे और अभिनय प्राय भोडे, फिर भी इन इन्टरल्यूडो का नाट्य साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बाद ही प्राय एकाएक—कम से कम मध्य की मजिलो को प्रत्यक्ष करना कठिन है—अग्रेजी के प्रसिद्ध नाटको का आविर्भाव हुआ और मार्लो तथा शेक्सपियर अपनी कृतिया लेकर साहित्य मे उतरे।

मार्लो और शेक्सपियर के आविर्भाव के पहले क्लासिकल ड्रामा (ग्रीक और लैटिन) के अग्रेजी मे कुछ प्रयोग हुए। जॉर्ज गैसक्वाइडनी, निकोलस उदाल आदि ने कॉमेडी और ट्रैजेडी मे कुछ सराहनीय प्रयत्न किए। ग्रीक और लैटिन साहित्य का अध्ययन इग्लैड मे विशेषत रेनेसास से ही आरभ हो गया था और इस दिशा मे ग्रीक और पौराणिक कथाओं ने प्रचुर नाट्य सामग्री मॉडल के रूप मे अग्रेजी नाट्यकारो के लिए प्रस्तुत कर दी। सेनेका के लैटिन व्याख्यानो ने भी इस दिशा मे प्रशस्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस क्षेत्र मे सेनेका के भावतत्व से अनुप्राणित १५६२ मे सैकविल और टॉमस नॉर्टन की

अंग्रेजी कृति 'गोरवोडक' खेली गई। उसका रूप चाहे लैटिन हो परन्तु कथानक अंग्रेज़ी था। 'गोरवोडक' वस्तुत साधारण जनता के लिए नही दरबारियो, वकीलो और अन्य बुद्धिवादी पढी-लिखी जनता के लिए लिखा गया था और स्वाभाविक ही लोकप्रिय न हो सका। इस काल कुछ ऐतिहासिक नाटक लिखे गए जिनको आधार बनाकर शेक्सपियर ने भी अपने अनेक नाटक प्रस्तुत किए। यह सिद्ध हो गया कि स्थानीय और स्वदेशी कथानको से ही विशेषत नाटक जनसाधारण के हृदय मे स्थान पा सकते है। इस दिशा मे कीड[1] और मार्लो ने विशेष प्रयत्न किए। टॉमस कीड ने पहली बार अंग्रेजी जनता के लिए उचित नाटक और रगमच की रचना की। उसकी 'स्पेनिश ट्रैजेडी' मे सेनेका की पृष्ठभूमि किसी न किसी रूप मे वर्तमान थी, परन्तु फिर भी उसने उसे उस ट्रैजेडी का रूप दिया' जो जनता की समझ से दूर न थी। दिन-रात षड्यन्त्रो के जगत् मे रहने वाले लोगो का कीड के इस नाटक ने काफी मनोरजन किया। स्वय शेक्सपियर कीड की इस 'स्पेनिश ट्रैजेडी' से प्रभावित हुआ। क्रिस्टोफर मार्लो कैम्ब्रिज का तरुण नाटककार था। प्राय ३० वर्ष की आयु मे नाटक के क्षेत्र मे बहुत कुछ करके वह मर भी गया। परन्तु उसकी कृतियो ने अंग्रेजी नाट्य साहित्य मे एक विप्लव उपस्थित कर दिया। मार्लो का जीवन स्वय विद्रोहात्मक था और उस काल के राजनीतिक षड्यन्त्रो मे भी, कहते है, उसका हाथ रहा था। उसकी चार महत्त्व की रचनाए ट्रैजेडी के रूप मे १५८७ और १५९३ के बीच प्रस्तुत हुई। वे थी 'टम्बरलेन दि ग्रेट' (दो भागो मे), 'ट्रैजिकल हिस्ट्री ऑफ डॉक्टर फॉस्ट्स', 'दि ज्यू आफ माल्टा' और 'एडवर्ड दि सेकेंड'।

इनमे पहली रचना मे तातार सरदार तैमूर की क्रूरता और विजयो का निदर्शन है। डॉक्टर फॉस्ट्स मे मार्लो ने एक धार्मिक दार्शनिक भावना का व्यक्तिगत प्रकाशन किया जिसमे अन्तर्वृत्तियो का सघर्ष मुख्य था। 'दि ज्यू ऑफ माल्टा' मे बाराबास नाम के एक यहूदी का चित्रण है जिसने ईसाइयो के अत्याचार का बदला अनाचार से दिया। एडवर्ड द्वितीय मे उसी नाम के राजा के भावावेगो और कमजोरियो का वर्णन है। मार्लो ने मुक्त छन्द मे एक नई साहित्यिक चेतना अपने नाटको मे रखी, जो न केवल साहित्य के दृष्टिकोण से क्रातिकारी थी बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी, क्योकि उसने 'टम्बरलेन' के माध्यम से सारी अपार्थिव धार्मिकता को चुनौती दे दी। पार्थिव जीवन, जैसे भौतिक को सत्य मान, अनिश्चित के अपने बन्ध तोड स्वतन्त्र हो गया। 'दि ज्यू ऑफ माल्टा' ज़रूर कुछ कमज़ोर है परन्तु 'एडवर्ड द्वितीय' 'टम्बरलेन' और 'फॉस्ट्स' की ही भाति सफल है। मार्लो ने अंग्रेज़ी ट्रैजेडी को मुक्त छन्द की शालीनता दी जो नाट्याकन मे चिरप्रतिष्ठित हुई।

कीड और मार्लो ने जिस प्रकार ट्रैजेडी को सुघडता दी उसी प्रकार जॉन लिली[2]

---

१ Thomas Kyd (१५५८-९४); २. John Lyly (१५५४-१६०६)

और रॉबर्ट ग्रीन[1] ने कॉमेडी की रूपरेखा सवारी। लिली के दर्शक दरबारी थे और उसके अभिनेता अधिकतर बच्चे। लिली की अनेक नाट्य रचनाए आज हमे उपलब्ध है,'कैपेसपे', 'सैफो ऐण्ड फॉग्रोन', 'गैलेथिया', 'एन्डिमियन', 'मिडास', 'मदर बौम्बी', 'लव्ज मेटा-मोरफोसिस' और 'दि वोमन इन दि मून'। इनमे अतिम नारी के ऊपर एक सुदर व्यग्या-त्मक पद्य-नाटक है। लिली यूफ्यूइज्म का जनक कहलाता है। उसकी कला शिष्ट वर्ग के लोगो के लिए थी। शेक्सपियर के शीघ्र ही अद्भुत कॉमेडी कृतिया रचने के कारण लिली अधकार मे पड गया, नही तो स्वय उसकी रचनाओ का कुछ कम महत्व न था।

रॉबर्ट ग्रीन कवि, नाटककार, गद्य-लेखक आदि सभी कुछ था। उसने अपने कथा-नको मे विविध सामाजिक दलो और भिन्न बौद्धिक मात्राओ के चरित्र एकत्र कर प्रस्तुत किए। वह भी प्रहसनकार (कॉमेडियन) ही था और उसने काल्पनिक जगत् को सम-सामयिक ससार मे ओतप्रोत कर अपनी कॉमेडियो मे प्रदर्शित किया। उसकी विशिष्ट कृतिया 'फ्रायर बेकन ऐण्ड फ्रायर बन्गे' और 'स्कॉटिश हिस्ट्री ऑफ जेम्स दि फोर्थ स्लेन ऐट फ्लौडन'।

सोलहवी सदी के अत तक अग्रेजी नाटक का रूप स्पष्टत प्रतिष्ठित हो गया। अब उनका प्रदर्शन केवल राजकीय दरबार मे ही न होकर जनता मे भी होने लगा, यद्यपि नगरो के प्यूरिटन शासको का दृष्टिकोण उनके प्रति कठोर होने से उन्हे नगर के बाहर सरायो मे ही खेलना पडता था। अभिनेताओ को भी उस काल बडी कठिनाइया सहनी पडती थी, क्योकि कानून उनके काम को जायज न मानता था और समाज भी उन्हे अधिक-तर धूर्त और बदमाश ही समझता था। इसी कारण उन्हे रानी अथवा विशिष्ट सामतो के सरक्षण मे उनके 'जनो' के रूप मे रहना पडता था। रगमच भी आज के रगमच से भिन्न था, उसकी छत न थी, मच एक ऊचा प्लेटफॉर्म था। पीछे की छत मे एक अट्ट था जहा से बिगुल बजाकर खेल का आरभ सूचित कर दिया जाता था। मच पर पर्दे न थे और उसे श्रोतागण तीन ओर से घेरे रहते थे। कीमती वस्त्र पात्रो के रूप और स्थिति को व्यक्त करते थे। मच के पीछे दोनो ओर एक-एक दरवाजा होता, जिससे पात्र आते-जाते थे।

शेक्सपियर और उसके परवर्ती
(१५९२-१६४२)

जिस अग्रेजी नाट्य साहित्य ने ससार के साहित्य-क्षेत्र मे अपना असाधारण स्थान बनाया उसका अनुपम स्रष्टा विलियम शेक्सपियर था। शेक्सपियर स्ट्रेटफोर्ड ऑन एवॉन का रहने वाला था और अभिनेता तथा नाटककार दोनो था। उसके पहले भी इग्लैड मे

१ Robert Greene (१५६०-९२)

नाटककार हुए थे, परतु जिस रूप और मात्रा मे उसने अपनी समकालीन जनता को आकृष्ट किया वैसा न कभी किसीने पहले किया था न पीछे किया। ससार के नाटक-क्षेत्र पर उसने असाधारण प्रभाव डाला।

शेक्सपियर ने अपनी जनता के लिए लिखा, अग्रेज नागरिको और अग्रेजी राज-दरबार के लिए। भाषा, भाव-व्यजना, नाटकीय प्रभाव और चरित्र-चित्रण मे वह लासानी है। उसने लिखा भी अमित मात्रा मे, प्राय ३६ नाटक, अपनी कविताओ के अतिरिक्त। इनमे कुछ ऐतिहासिक है, कुछ अनैतिहासिक, कुछ कॉमेडी (सुखात अथवा विनोद-व्यग्य युक्त नाटक), कुछ ट्रैजेडी (दुखात नाटक), कुछ रोमाटिक कॉमेडी और कुछ रोमाटिक ट्रैजेडी। अपने ऐतिहासिक नाटको के लिए उसने सामग्री इग्लैड और विदेशो के इतिहास से ली, रेफएल होलिशेड के 'क्रॉनिकल्स' और प्लूटार्च की 'लाईव्ज' से।

शेक्सपियर के ऐतिहासिक नाटक है—'हेनरी दि सिक्स्थ' (तीन भाग का नाटक), 'रिचर्ड सेकेण्ड और रिचर्ड थर्ड' 'हेनरी फोर्थ' (दो भाग) और 'हेनरी फिफ्थ'। इनमे से अधिकतर उस महाकवि की प्रारभिक कृतिया है। इनमे रिचर्ड सबधी नाटक ट्रैजेडी है। उसकी अनैतिहासिक कॉमेडियो की सख्या भी काफी है और उन्होने नाटकीय सफलता असाधारण मात्रा मे अर्जित की। 'लव्ज लेबर्स लॉस्ट', 'दि टू जेन्टिलमेन आफ वेरोना', 'दि कामेडी आफ ऐरर्स', 'दि टेमिग आफ दि श्रू', 'ए मिडसम्मर नाइट्स ड्रीम', 'मच अडो अबाउट नथिंग', 'ऐज यू लाइक इट', 'ट्वेल्व्थ नाइट', 'दि मर्चेन्ट आफ वेनिस', 'आल्ज वेल दैट एन्ड्स वेल','ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिडा'—सब नाटकीय जगत मे विख्यात है और आज भी ससार के अभिनय-क्षेत्र पर छाए हुए है। इनमे 'ए मिडसम्मर नाइट्स ड्रीम' कामेडी के क्षेत्र मे अपना सानी नही रखता। इन कामेडियो मे प्लाट का महत्व विशेष नही है। वस्तु के रूप मे शेक्सपियर साधारण से साधारण स्थिति या घटना चुनता है परतु अपनी लेखनी के जादू से, शब्दावली से, चरित्र-चित्रण से, व्यग्यात्मक चोट से, उन्हे असामान्य, सर्वथा अपना बना देता है—एक नई दुनिया, पर जानी-देखी हुई दुनिया, जिसमे प्रणय और घृणा, क्रोध और दया, मिलन और विरह, ईर्ष्या और जलन, चाटुकारिता—सभी अपने आवश्यक आवेशो के साथ अभिसृष्ट होते है और असाधारण शक्ति से हमे वशीभूत कर लेते है। समसामयिक ससार पर तो शेक्सपियर ने चोटे की ही, विगत ग्रीक जगत् को भी, जो क्लासिकल रूप मे उस काल स्तुत्य हो गया था, उसने न छोडा—'ट्रायलस ऐण्ड क्रेसिडा' मे उसे भी व्यग्यात्मक बाणो से जर्जर कर दिया।

शेक्सपियर की महान् ट्रैजेडी-रचनाए 'हैमलेट', 'ओथेलो', 'मैकबेथ', 'किंग लियर', 'ऐण्टॅनी ऐण्ड क्लियोपेट्रा' और 'कोरियोलेनस' है। ये सारे सत्रहवी सदी के पहले छह सालो

मे लिखे जा चुके थे। परन्तु केवल इन्ही तक उस महाकवि के दु खात्मक आवेगो का अकन सीमित नही है। वस्तुत 'रिचर्ड सेकेण्ड' और 'रिचर्ड थर्ड' के रूप मे ही वह अशतः ट्रैजेडी प्रस्तुत कर चुका था। जिस प्रकार उसने रोमाटिक कॉमेडियो की रचना की थी, रोमाटिक ट्रैजेडियो का भी सृजन किया। उनका एक सुघड नमूना 'रोमियो ऐण्ड जूलियट' है। 'जूलियस सीज़र' मे शेक्सपियर ने विगत रोमन इतिहास का ससार फिर से सिरजा और वह इतना सजीव कि उस प्रकार का कोई नाटक न पहले कभी लिखा जा सका था, न पीछे लिखा जा सका। इन ट्रैजेडियो मे शेक्सपियर की कला ने अद्भुत शक्ति धारण कर ली है। 'हैमलेट' खून, आत्महत्या, विक्षेप की कहानी है, परन्तु उसके पात्रो का चित्रण अद्भुत है और छन्द का व्यवहार असाधारण निपुण। 'हैमलेट' पुनर्जागरण काल का प्लॉट लेकर रगमच पर अवतरित होता है। पुनर्जागरण काल की कला, ज्ञान, पापाचरण, शालीन वातावरण सभी कुछ उसके अन्तर्मुख, सयाने, तरुण राजकुमार के चतुर्दिक घूमते हैं। इसमे दृश्य-जगत् की सक्रियता अन्तर्मेधा के चितन से होड करती है। 'ओथेलो' प्रणय-सकट, ईर्ष्या और भावावरोध की करुण कहानी है। 'मैकबेथ' भग्न महत्वाकाक्षा का विमूर्तन है, जिसमे भाषा और भाव सम्मिलित चोट करते है। जीवन की निस्सारता को अभिव्यक्त करते है। 'किग लियर' दु खान्तक नाटको मे जैसे वीर काव्य है, महाकाव्य की शालीनता लिए हुए, प्राय वन्य, शक्तिम। 'ऐन्टॅनी ऐण्ड क्लियोपेट्रा' मे जो मर्यादा और प्रणय नारी को दिया है महाकवि ने उन्हे अपनी अन्य कृतियो मे और कही न दिया। इसके दोनो चरित्र शेक्सपियर के सबसे कुशल, सफल और सर्वथा अकृत्रिम चरित्रो मे है, प्रायः अनुपम। 'कोरियोलेनस' इसके विपरीत राजनीतिक ट्रैजेडी है जिसमे राजनीतिक गाभीर्य वातावरण को कठोर बनाए हुए है।

'दि विन्टर्स टेल' और 'दि टेम्पेस्ट' शेक्सपियर की पिछली रोमाटिक रचनाए है। इनमे वह अपनी कुशल ट्रैजेडियो से हट आया है। इनमे से पहली मे पशुपालन (पैस्टोरल) ससार जी उठा है, परन्तु ससार जो अनजाना नही है, पहचाना जा सकता है। 'दि टेम्पेस्ट' मे पार्थिव-अपार्थिव दोनो शक्तियो का प्रदर्शन है और इसमे कवि की जाग्रत मेधा का विकास है।

महाकवि शेक्सपियर नाटक के ससार मे प्राय अकेला है, काव्य-कुशलता मे, नाटकीय प्रभाव मे, चरित्र-चित्रण मे, वस्तु के सघटन मे, भाषा और भाव मे। वह अपनी जनता की आवश्यकताए-कामनाए, गुण-दोष जानता है, साथ ही अपने रगमंच की सीमाओ को भी। उनके अनुकूल ही वह अपने नाटको के स्थल प्रस्तुत करता है और असामान्य रूप मे सफल होता है।

शेक्सपियर के समवर्ती

शेक्सपियर अग्रेजी साहित्य मे इतना असाधारण है कि उसके सूर्य के समान तेज मे

और नक्षत्रो का मलिन हो जाना स्वाभाविक है। परन्तु इसमे सदेह नही कि, यद्यपि उसकी महानता को उसके समकालीन नाटककार न प्राप्त कर सके, निस्सन्देह अनेक ऐसे थे जिनका अंग्रेजी साहित्य मे अपना स्थान है। बेन जॉन्सन इसी प्रकार का एक यशस्वी व्यक्तित्व था जो शेक्सपियर का अनेकार्थ मे एक प्रकार से जवाब है। जॉन्सन क्लासिकवादी है, ग्रीक और लैटिन नाटको का पोषक और नाटक के क्षेत्र मे सुधारवादी। रोमाचक शैली से मुंह फेर उसने यथार्थवाद को अपनाया और कॉमेडी के क्षेत्र मे उसने काल, स्थान तथा प्लॉट की एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उसकी प्रारभिक कृतियो मे 'एवरी मैन इन हिज़ ह्यूमर' अमर हो गया है। उसके पात्र विनोदी है और उसने उनके रुग्ण आचार की अच्छी खिल्ली उडाई है। उसे कुछ लोगो ने सत्य ही १७वी सदी का डिकेन्स कहा है। समसामयिक व्यापार और धन ने मध्यवर्गीय जनता को जो नितान्त भ्रष्ट कर दिया था तो जॉन्सन अपने नाटको मे उसका भण्डाफोड करने से न चूका। बेन जॉन्सन अत्यन्त मौलिक है और उसके नाटको ने काफी ख्याति भी पाई है, यद्यपि जितनी ख्याति उसे उनके द्वारा मिलनी चाहिए थी उतनी मिली नही। 'वोल पोने', 'दि साईलैट वोमन', 'दि अलकेमिस्ट' और 'बार्थोलोमियो फेयर' अंग्रेजी साहित्य को कॉमेडी के क्षेत्र मे अनूठी रचनाए है।

बेन ज.न्सन ट्रैजेडी के क्षेत्र मे इतना सफल न हुआ। 'सेजेनस' और 'कैटिलीन' ट्रैजेडी के क्षेत्र मे उसकी कृतिया है जिनमे जीवन का अभाव है और जिनके पात्र मूर्च्छित से है। शेक्सपियर की समकालीनता जॉन्सन की ख्याति मे विशेष घातक सिद्ध हुई।

इस काल का दूसरा नाटककार जॉर्ज चैपमैन[१] है जो विशेषत होमर के अपने अनुवाद के लिए प्रसिद्ध है। उसने तीन ऐतिहासिक ट्रैजेडी लिखी—'बुस्सी डि एम्ब्वॉए', 'दि रिवैंज आफ बुस्सी डि एम्ब्वॉए' और 'दि ट्रैजेडी आफ चार्ल्स, ड्यूक आफ बिरोन'। इनकी ऐतिहासिकता फ्रास के दरबार से सम्बद्ध है और मार्लो से काफी प्रभावित उसकी शब्दावली शालीन है, यद्यपि नाटकीय क्षेत्र मे उसको महान् कहना शायद उचित न होगा।

१७वी सदी के कुछ यथार्थवादी नाटककार डेक्कर, फ्लेचर, टूअरनेर आदि हैं। टॉमस डेक्कर[२] यथार्थवादी होता हुआ भी रोमाटिक था। श्रमिको का वह हिमायती था और अपने 'शू मेकर्स हॉली डे' मे उसने उनका प्रशसनीय वर्णन किया है। उसकी रचना 'दि आनेस्ट व्होर' बडी करुण कृति है जिसमे उसने यथार्थवादी ढग से समसामयिक समाज का चित्रण किया है। डेक्कर जहा श्रमिको और साधारण नागरिको को अपना पात्र बनाता है टॉमस हेवुड[३] नये उठते हुए मध्यवर्ग को चित्रित करता है जैसा उसके 'ए वोमन किल्ड विद काइण्डनेस' से प्रकट है। इस कृति मे साधारण जनता का दिग्दर्शन निस्सन्देह उचित नही

---

१. George Chapman (१५५९-१६३४); २ Thomas Dekker (१५७०-१६४१); ३. Thomas Heywood (१५७५-१६५०)

कहा जा सकता। फिर भी इतना सही है कि अब इग्लैड मे ऐसे नाटककार उत्पन्न हो गए थे जिन्होने अपने कृतित्व का क्षेत्र दरबार से हटाकर विस्तृत जनसाधारण पर रखा। ब्योमोन्ट और फ्लेचर, दोनो ने नागरिको को अपने नाटको का केन्द्र बनाया।

जॉन फ्लेचर[1] और फ्रासिस ब्योमोट[2] दोनो ने पहले कुछ काल सम्मिलित रूप से लिखा। 'दि नाइट ऑफ दि बर्निंग पेस्टल' उनकी सम्मिलित रचना है जिसमे उन्होने नागरिको के विश्वासो की आलोचनापूर्ण अभिव्यजना की। उनकी तीन कृतिया 'फिलैस्टर' 'दि मेड्स ट्रैजेडी', और 'ए किंग ऐण्ड नो किंग' विशेष जानी हुई है। इन ट्रैजेडियो का क्षेत्र यथार्थता से काफी दूर है और नाटक-शैली भी यथार्थवादी नही कही जा सकती। कृत्रिम आवेगो का उनमे बरबस योग है। अपनी कृत्रिमता के ही कारण वे शेक्सपियर की-सी स्वाभाविकता अपनी कृतियो मे प्रस्तुत न कर सके।

१७वी सदी के पूर्वार्द्ध मे अपार्थिव प्रसगो की भी काफी रचना हुई। वेब्स्टर[3] ऐसे नाटककारो मे काफी प्रसिद्ध हो गया है। उसकी दोनो रचनाओ—'दि ह्वाइट डेविल' और 'दि डचेज ऑफ मालफी'—मे कथानक प्रतिशोध-प्रधान है। शेक्सपियर के 'हैमलेट' की भाति उसकी शैली मे षड्यन्त्र ललित कला का रूप धारण कर लेते है। उसकी रचना मे नाट्य तत्व प्रभूत है जिसका प्राण कथानक की भयकरता है। जीवन को जॉन वेब्स्टर अपनी कृतियो मे भ्रष्ट, भयानक और क्रूर प्रकाशित करता है। सीरिल टूअरनेर[4] की ट्रैजेडी 'दि रिवेजर्स ट्रैजेडी' और 'दि एथीस्ट्स् ट्रैजेडी' मे वेब्स्टर की शैली असाधारण रूप धारण कर लेती है। उसके पात्र नितान्त क्रूर और प्रतिशोधवादी हो जाते हैं, चरित्र नितान्त भ्रष्ट। दरबार का चित्र ही इन कृतियो का क्षेत्र भी है। अस्वाभाविक पुतलियो की भाति उसके पात्र चलते-फिरते है। वेब्स्टर की ही भाति टूअरनेर भी अपने नाटको मे प्रधानत कवि है।

ब्योमोन्ट और फ्लेचर की ही भाति अनेक तत्कालीन नाटककारो ने सम्मिलित रचना की जिससे उनका व्यक्तिगत मूल्याकन और स्वतत्र कृतिमत्ता की व्याख्या कठिन है। उनमे कुछ की कृतियो का हवाला दिया जा सकता है। टॉमस मिडिलटन[5] का नाम दो कॉमेडियो से सम्बद्ध है—'ए चेस्ट मेड इन चीप साइड' उनमे विशेषत प्रसिद्ध है। उसकी ट्रैजेडियो मे विख्यात है 'दि चेन्जलिग' जिसमे शेक्सपियर और वेब्स्टर दोनो की शैलियो का योग है। यह कृति भी भयानक घटनावादी है। फिलिप मासिजर[6] कॉमेडी का सफल नाटककार माना जाता है और उसने अपनी 'ए न्यू वे टू पे ओल्ड डेट्स' नामक

---

१. John Fletcer (१५७९-१६२५), २ Francis Beaumont (१५८४-१६१६), ३. John Webster (१५७५-१६२४), ४ Cyril Tourneur (१५७५-१६२६), ५. Thomas Middleton (१५७०-१६२७); ६. Philip Massinger (१५८४-१६३९)

रचना मे जॉन्सन की ही भाति मानव-स्वभाव की रुग्णता पर भयकर व्यग्य प्रस्तुत किया है। उठते हुए वणिक्-वर्ग की हृदयहीनता का इतना भण्डाफोड १७वी सदी की रचनाओ मे कम हुआ है।

पुनर्जागरण काल का अंत

(१६४२-१७०२)

१६४२ ईस्वी मे प्यूरिटनो ने इगलैड मे थियेटर बन्द कर दिए। स्वाभाविक ही था कि नाटको की रचना की गति यदि सर्वथा बन्द नही हो जाए तो कम से कम रुक जाए। हुआ भी ऐसा ही। जो कुछ नाटक उस काल या उसके बाद लिखे भी गए, वे नितान्त नगण्य और अस्वाभाविक है। जॉन फोर्ड[1] और जेम्स शर्ले[2] ने अपने नाटको मे भ्रष्टाचार, क्रूरता और भयानकता का चित्रण करते हुए अधिकाधिक करुणाव्यजित काव्यकारिता प्रस्तुत की। गृह-युद्ध के आरभ के साथ-साथ अग्रेजी ड्रामे का सर्वोन्नत युग समाप्त हो गया।

चार्ल्स द्वितीय के राज्यारोहण के बाद १६६० मे इग्लैड मे थियेटर फिर खुले। जॉन्सन, शेक्सपियर फिर रगमच पर अवतरित हुए, यद्यपि नाटक के क्षेत्र मे यह नया जीवन अधिकतर राजदरबार तक ही सीमित रहा। चार्ल्स द्वितीय और उसकी बहन हेन-रीएटा (जिसकी शादी लुई चतुर्दश के अनुज और लीन्स से हुई थी) दोनो फ्रेच दरबार मे रह चुके थे और उसके उपासक थे। उन्होने स्वदेश लौटकर जो कामुकता की धारा बहा दी वह इग्लैड के इतिहास मे बेजोड थी। थियेटर भी उन्ही के प्रयास और सरक्षा मे फिर खुले।

उस काल की नाटक-परंपरा मे कॉमेडी का विशेष प्रभाव बढा। इथरेज, वाइकरले और काग्रीव ने कॉमेडी का अग्रेजी मे नये रूप से निर्माण किया। तीनो दरबारवादी थे और तीनो ने अभिजात कुलीय जीवन के ही प्रसगो का खुले तौर से चित्रण किया। सर जार्ज इथरेज[3] ने अपनी रचना 'दि मैन आफ मोड' मे इस शैली का विशेष प्रयोग किया जिसमे शालीन नर-नारियो का विनोदपूर्ण अकन हुआ। विलियम वाइकरले[4] की नाट्य-शैली इथरेज से कही प्रखर थी और उमे उसने विनोद और भ्रष्टाचार के दृश्यो तक ही सीमित न रखा, बल्कि उसमे व्यग्य की तीव्रता भी पूर्ण रूप से जोड दी। अग्रेजी रगमच पर उसकी चार रचनाओ ने सदा के लिए अपना स्थान बना लिया है। ये है—'लव इन ए

---

१ John Ford (१५८६-१६३६); २. James Shirley (१५९६-१६६६),
३. George Etherege (१६३४-१६९०); ४. William Wycherley (१६४०-१७१५)

वुड'(१८७१), 'दि जेन्टिलमैन डान्सिग मास्टर'(१६७३), 'दि कट्री वाइफ'(१६७५)और 'दि प्लेन डीलर' (१६७६)। इनमे पिछली दोनो कृतिया वाइकरले की शैली और शक्ति को पूर्णत प्रकट करती है। विलियम काग्रीव तीनो मे सबसे अधिक सयत है। उसके डायलॉग बेजोड है, उसकी ख्याति २५ वर्ष की ही आयु मे देश भर मे फैल गई। उस ख्याति को अर्जित करने का श्रेय उसके नाटक 'दि ओल्ड बैचेलर'(१६९३) को है। इसके अतिरिक्त उसने तीन कॉमेडी और लिखी 'दि डबल डीलर' (१६९४), 'लव फॉर लव' (१६९५), 'दि वे ऑफ दि वर्ल्ड' (१७००)। उसने एक ट्रैजेडी भी लिखी, 'दि मोर्निग ब्राइड'। नाटककार के रूप मे उसकी महत्ता उसके अकन की सर्वागीणता मे है। उसका दृष्टिपथ विस्तृत है और उसका अकन समुचित। उसने नेक और बद का अपने नाटको मे चित्रण नही किया, बल्कि शिष्ट और अशिष्ट का, प्रखर और मन्द चित्रण किया है। विलियम काग्रीव का नाम भी अग्रेजी साहित्य के कॉमेडीकारो मे अमर हो गया है।

१७वी सदी के अन्त मे सर जॉन वैनब्रू[1] ने अपनी रचना 'दि रिलैप्स' (१६९६) और जॉर्ज फर्गुहर[2] ने 'दि बोज स्ट्रैटेजम' १८वी सदी के आरभ मे (१७०७) मे लिखी। पिछली कृति १८वी सदी के विस्तृत आलोक के रूप मे उस काल के उपन्यास-ससार की भूमिका है। नाटक की पृष्ठभूमि दरबारी बैठको से हटकर गाव और नगरो को ढक लेती है। उस काल का अग्रेज़ी साहित्य वस्तुत अपनी कॉमेडियो के लिए प्रसिद्ध है परन्तु तब कुछ 'हीरोइक' (वीरपरक) ड्रामे भी लिखे गए। इस क्षेत्र मे ड्राइडन ने सराहनीय प्रयत्न किया। उसका सुन्दरतम नाटक 'औरगज़ेब' (१६७५) है। अपनी रचना 'ऑल फॉर लव' मे उसने शेक्सपियर द्वारा प्रस्तुत 'ऐन्टॅनी ऐण्ड क्लियोपेट्रा' की कहानी फिर से कही और उसमे उसने मुक्त छन्द का प्रयोग किया। टॉमस ओटवे[3] इस दिशा मे ड्राइडन से अधिक समर्थ हुआ और उसने १६८२ ईस्वी मे 'वेनिस प्रिजर्व्ड' लिखकर एलिजाबेथ-कालीन शैली का पुनरुद्धार किया।

नाटक का पुनरुत्थान

(१७०२-१७७०)

१७३७ ईस्वी के लाइसेन्सिग ऐक्ट ने नाटककारो की दु शीलता से ऊबकर भाषा और चित्रण की कुछ सीमाए बाध दी जिससे अनेक नाटककार नाटक के क्षेत्र मे अलग हो गए। हेनरी फील्डिग इसी प्रकार का एक साहित्यिक था, जिसने नाटक का क्षेत्र छोडकर

१. Sir John Vanbrugh (१६६४-१७२६), २ George Furguhar (१६७७-१७०७), ३. Thomas Otway (१६५२-८५)

उपन्यास का क्षेत्र अपनाया। नाटको के सेन्सर की जो परपरा तब प्रतिष्ठित हुई वह आज भी प्रतिष्ठित है। उस काल के अभिनय-क्षेत्र मे दो नाम अमर हो गए—गैरिक[1] और मिसेज सिडौन्स। इसी मिसेज सिडौन्स का चित्र लिखकर सर जोशुवा रेनाल्ड्स ने अपने को धन्य माना।

१८वी सदी की प्रारंभिक कृतियो मे जॉन गे[2] की 'दि बैगर्स ओपेरा' (१७२८) काफी प्रसिद्ध है। अनेक आलोचको ने वालपोल पर इसे एक व्यग्य माना है। इस कृति ने अनेक परवर्ती नाटककारो को प्रभावित किया यद्यपि वे इसकी प्रखरता प्राप्त न कर सके। सामाजिक क्षेत्र मे एक नया जीवन मूर्तिमान हो रहा था, एक नई दुनिया इग्लैड की जमीन पर खडी हो रही थी और साहित्य मे भी तदनुकूल परिवर्तन स्वाभाविक था। भावो और आवेशो की पृष्ठभूमि पर एक नई अनुभूति की चेतना जगी और १८वी सदी के नाटककारो ने उसकी प्रतिष्ठा मे विशेष योग दिया। उसके प्रारभिक प्रवर्तको मे एक रिचर्ड स्टील[3] है जिसने १७०५ मे 'दि टैन्डर हज्बैड' लिखकर गार्हस्थ्य जीवन के सौदर्य का निरूपण किया। जॉर्ज लिल्लो[4] और भी नीचे उतरकर साधारण की परपरा मे खडा हुआ और अपने 'लन्डन मर्चेन्ट ऑर दि हिस्ट्री ऑफ दि जॉर्ज बार्न वेल' मे जो उसने अप्रैं-टिस के जीवन का सही, गम्भीर और अकृत्रिम खाका खीचा वह ड्रामे के क्षेत्र मे एक नया भाव लेकर उतरा। ह्यू केली[5] और रिचर्ड कम्बरलैड[6] ने भावो के जगत् मे अपनी लेखनी चमत्कृत की। कम्बरलैड की कृति 'दि वेस्ट इण्डियन' (१७७१) ने तो भावनाओ के ससार मे मानव-प्रश्नो को सर्वथा डुबो दिया। उसका आकार उसकी शैली मे सर्वथा नगण्य हो गया। और तब प्रख्यातनामा गोल्डस्मिथ और शेरिडन ने अकृत्रिम, स्पष्ट, मानवेगित नाटक की केली और कम्बरलैड की परपरा से रक्षा की।

ऑलिवर गोल्डस्मिथ अग्रेजी साहित्य के महान् व्यक्तित्वो मे है। १७६८ ईस्वी मे उसने 'दि गुड नेचर्ड मैन' लिखा और पाच वर्ष बाद 'शी स्टूप्स टु काकर'। इनमे दूसरी कृति तो आज भी रगमचो (विशेषकर गैर पेशेवाले) का आकर्षण है। अकृत्रिम मानवता जैसे इसमे सजीव हो उठी है। यद्यपि उसमे असम्भाव्यता की मात्रा कुछ कम नही, पात्रो का अकन अद्भुत शक्ति के साथ हुआ है। हार्डकेसल और टोनी लम्पकिन अपना व्यक्तित्व रखते हुए भी उस काल के जीते-जागते विनोदी जीव हैं।

परन्तु १८वी सदी के उस उत्तरार्द्ध मे जिसमे गोल्डस्मिथ ने अपनी रचनाए की, रिचर्ड शेरिडन[7] अनुपम हुआ। वह कभी परराष्ट्र-विभाग का उपमत्री और ट्रेजरी का

---

१. David Garrick (१७१७-७९); २. John Gay (१६८५-१७३२); ३. Richard Steele (१६७२-१७२८); ४. George Lillo (१६९३-१७३९); ५ Hugh Kelly (१७३९-७७); ६. Richard Cumberland (१७३२-१८११); ७ Richard Brinsley Sheridan (१७५१-१८१६)

मत्री था। उस काल के रगमच के प्रमुख निर्माताओ मे शेरिडन अग्रणी था। उसकी ख्याति उसकी तीन कॉमेडी-कृतियो पर अवलबित है—'दि राइवल्स' (१७७५), 'दि स्कूल फॉर स्केन्डल' (१७७७), 'दि क्रिटिक' (१७७६)। शेरिडन निनान्त प्रखर बुद्धि और असाधारण मौलिक था और कॉमेडी के क्षेत्र मे उसने पुनर्जागरण काल की सजीवता फिर मे प्रस्तुत की। उसकी प्रवृत्ति निश्चय ही रोमाचक है। चरित्र-चित्रण के क्षेत्र मे तो वह नितात अनूठा है और उसने बेन जॉन्सन की कृतिमत्ता पुन स्थापित कर दी। हा, यह मानना होगा कि शेरिडन की दुनिया मे न कोई गहराई है, न मानव-स्वभाव की कोई पहचान या व्याख्या। फिर भी अपने अल्पकालीन साहित्यिक जीवन मे उसने जो कुछ रचा वह प्रतीक बन गया। जिस प्रसाद और सरलता से वह अपने पात्र उपस्थित करता है और दृश्य रगता है वह साधारण नही। 'दि स्कूल फॉर स्केन्डल' मे उसकी शैली प्रखर और अधिक सक्रिय हो उठती है और दृश्य नितात अकृत्रिम हो जाते है। विनोद और हास्य की अभिसृष्टि जितनी उसकी कॉमेडियो मे हुई है, उतनी अन्यत्र उपलब्ध नही। १८वीं सदी के उत्तरार्द्ध का जो चित्रण उसने किया है उतना कोई अन्य नाटककार न कर सका।

शेरिडन से शॉ तक

(१७७०–१९५०)

औद्योगिक क्रान्ति

शेरिडन के बाद अग्रेज़ी नाट्य साहित्य पर जैसे तुषारापात हो गया। जहा कहानी, उपन्यास और कविता की साहित्य मे भरमार हो गई, वहा नाटक का क्षेत्र जैसे सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ। उन्नीसवी सदी रोमाटिक कवियो का सृजन-काल है। ऐसा नही कि नाटक लिखने के प्रयत्नो से वह काल सर्वथा रहित हो। नाटक लिखे गए और रोमाटिक कवियो ने स्वय अनेक रचनाए उस दिशा मे प्रस्तुत की। परतु वस्तुत वह असफल रही। शेली की 'चेंची' को छोडकर और कोई रोमाटिक कृति सफल न हुई और वह 'चेंची' भी सर्वथा यौन होने के कारण रगमच पर अभिनीत नही हो सकी, अथवा कम से कम इग्लैड के तत्कालीन सेसर के अनुकूल नही हो सकी।

उस काल, एलिजाबेथ-काल के अर्थ मे नाटक तो नही, परतु प्रहसन और मेलोड्रामा जरूर लिखे गए। नाटक के प्रति उदासीनता का कारण न केवल अभिनय के प्रति रोमाटिको की उदासीनता थी वरन् राजदरबार की उपेक्षा भी उसका एक कारण था। विक्टोरिया को राजनीति साहित्य से अधिक प्रिय थी और इस दिशा मे एलिजाबेथ से वह सर्वथा भिन्न थी। इस प्रकार उन्नीसवी सदी के नाटक को दरबार की सरक्षा न प्राप्त हो

सकी, यद्यपि दरबार की सरक्षता प्राप्त न होना नाटक की सृष्टि मे विशेष कारण नही माना जा सकता, क्योकि आखिर शेक्सपियर या शॉ के नाटको को भी तो वह सरक्षा आज उपलब्ध नही और अपनी नाटकीय कुशलता के कारण ही तो आखिर वे लोकप्रिय हो सके है। नाटक के ह्रास का विशेष कारण हमे अन्यत्र खोजना होगा—जनता की उदासीनता मे। औद्योगिक क्राति ने एक नये मध्यवर्ग और उससे भी समृद्ध धनी वर्ग की अभिसृष्टि कर दी थी और ये दोनो साहित्य के प्रति उदासीन थे। एक धन की सीमाओ के बाहर देखता तक न था, दूसरा उसका गुलाम था और कलाकार उनके साथ अपनी आत्मीयता स्थापित न कर सका। सामतवाद की हमदर्द सरक्षा उठ चुकी थी और पूजीवाद की सरक्षा उपलब्ध न थी और कलाकार भी रोमाटिक होने के कारण यथार्थवादी न हो सका, नये जीवन के नये रूप को अपनी कृतियो मे वह मूर्तिमान न कर सका। इसके अतिरिक्त उस काल लदन मे केवल दो अभिनय-गृह—'कोवेन्ट गार्डन' और 'ड्रूरी लेन'—जिनको नाटक खेलने का एकाधिकार प्राप्त था, सीमित सख्या मे ही नाटको का प्रदर्शन कर सकते थे। हा, १९वी सदी के तीसरे चरण के अत मे निश्चय ही अधिकाधिक नाट्यगृह सर्वत्र बन चले।

उन्नीसवी सदी का अत

ऊपर नाटककार की समसामयिक प्रवृत्तियो से आत्मीयता स्थापित न कर सकना उस काल के नाटक-ह्रास का जो एक कारण माना गया है, वह विशेषत स्मरण रखने की बात है। १८वी सदी मे लिल्लो ने बदलती हुई जन-प्रवृत्ति का एक अश मे अकन किया था। १९वी सदी मे नाटक मे समसामयिक जीवन को यदि किसी भाषा मे किसीने अभिव्यक्त किया तो वह टी० डब्ल्यू० रॉबर्टसन[1] था। उसकी कृति 'कास्ट' मानी हुई रचना है। वह नाटक सगीत-प्रधान है और लोग उसे फूहड कहने से भी न चूके, परतु अभिनीत होकर वह जीवन को खोलकर रख देता है। उन्ही दिनो नार्वे मे नाटक के असाधारण आचार्य इब्सन[2] का प्रादुर्भाव हुआ। इब्सन ने अपने काल के और परवर्ती कलाकारो को, क्या स्वदेश क्या विदेश मे, सर्वत्र प्रभावित किया है। अग्रेजी ड्रामे पर भी उसका गहरा प्रभाव पडा और असाधारण मेधा वाले बरनार्ड शॉ ने स्वय इब्सन की कृतियो से बहुत कुछ सीखा। उसके नाटक 'बैंड' और 'पियर गिन्ट' के बराबर अग्रेजी मे शायद कुछ नही है। उसके अन्य नाटको—'दि डॉल्स हाउस', 'दि घोस्ट्स', 'ऐन एनिमी आफ दि पीपल', 'कैन दि डेड अवेकन', का जोड़ भी आधुनिक नाटक साहित्य मे मिलना सभव नही। उसके बाद हेनरी आर्थर जोन्ज[3] और सर ए० डब्ल्यू पिनेरो[4] का धरातल सहसा बहुत नीचे उतर आता है। इनमे पहले ने 'दि सिल्वर किग' नाम का सगीत-प्रधान नाटक लिखा और 'सेन्ट्स ऐण्ड

---

१. T. W Robertson, २ Henrik Ibsen (१८२८-१९०६); ३ Henry Arthur Jones (१८५१-१९२९), ४. Sir Arthur Pinero (ज० १८५५-१९३४)

सिनर्स' तथा 'मिसेज डेन्स डिफेन्स' नामक समस्या-नाटक रचे और दूसरे ने 'दि सेकेण्ड मिसेज टैंकुएरे' रचा। परन्तु जोन्ज़ और पिनेरो दोनो इब्सन के मुकाबले नितान्त लघु थे, नगण्य। ऑस्कर वाइल्ड का उल्लेख करने के पहले गिल्बर्ट[१] की ओर सकेत कर देना उचित होगा। दोनो ने ओपेरा (सगीत) नाटक प्रहसन लिखे। वस्तुत दोनो वाइल्ड और शॉ के पूर्ववर्ती थे, जिन्होने उनके लिए क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया। वाइल्ड बडी प्रतिभा का नाट्यकार था और उसका जेल चला जाना नाटक साहित्य के लिए बडा घातक सिद्ध हुआ, फिर भी उसकी अनेक कॉमेडी कृतियो मे 'लेडी विडरमियर्स फैन', 'ए वोमन ऑफ नो इम्पोर्टेन्स', 'ऐन आइडियल हज्बैंड' और 'दि इम्पौर्टेस ऑफ बीग अर्नेस्ट, प्रधान है जो उसकी मेधा प्रचुर मात्रा मे प्रकट करती है।

बीसवी सदी

२०वी सदी नये सम्भार के साथ नाटक के क्षेत्र मे अवतरित हुई। उसके साथ १९वी सदी की किसी प्रकार भी तुलना नही की जा सकती। नाटक सबधी २०वी सदी की यह सम्पदा समृद्धि मे एलिजाबेथ-काल के समान थी। बार्कर ने अपनी कृतियो द्वारा एक नये प्रकार की नाट्य कुशलता प्रस्तुत की। बार्कर[२] समस्या-सजीव और असाधारण यथार्थ-वादी था। उसके नाटक 'दि वौयसे इनहेरिटेन्स' (१९०५) और 'वेस्ट' (१९०७) इस दिशा मे प्रमाण है। 'दि मैरिग ऑफ एनलीट' तथा 'प्रूनेला' मे उसने रोमाटिक तत्व भी अकित किए। 'प्रूनेला' की रचना उसने लॉरेन्स हॉसमन के सहयोग मे की थी।

यथार्थवादी और समसामयिक जीवन की पृष्ठभूमि बनाकर नाट्य रचना करने वाले इस काल के कलाकारो मे जॉन गाल्जवर्दी[3] अग्रणी है। 'स्ट्राइफ' (१९०९), 'जस्टिस' (१९१०) और 'लॉयलटीज' (१९२२) नाम की उसकी रचनाओ ने ड्रामा क्षेत्र मे काफी ख्याति पाई। सेन्ट जॉर्ज इरविन[४] ने अपने 'जैन क्लेग' (१९११) और 'जॉन फर्गुसन' (१९१५) मे समसायिक यथार्थवादिता की परपरा रखी। जॉन मेसफील्ड[५] ने १९०८ मे 'दि ट्रैजेडी ऑफ मैन' की रचना की और गार्हस्थ्य पृष्ठभूमि मे काव्यगुण का योग दिया।

इरविन के साथ कुछ आइरिश कवियो का भी नाम लिया जाता है, जिन्होने नाटक के क्षेत्र मे कुछ प्रयोग किए। लेडी ग्रैगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी आदि उसी परपरा के है। यीट्स नाटककार से कवि अधिक सफल माना जाता है। यद्यपि उसकी 'कैथलीननी हाउलीहान' और 'दि लैड ऑफ हार्ट्स डिजायर' आइरिश कल्पना के प्रकट नमूने है।

---

१. Gilbert Cannan (ज० १८८४), २. Harley Grenville Barker (ज० १८७०), ३. John Galsworthy (१८६७-१९३३); ४. Saint George Irwin ; ५ John Masefield (ज० १८७४)

नाटककार के रूप मे जॉन मिलिगटन सिंज[1] उससे कही कुशल कलाकार था। उसका 'प्लेब्वाय ऑफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड' आइरिश चरित्र की सुन्दर व्याख्या है। सीन ओ' केसी[2] ने 'जूनो ऐण्ड दि पेकौक' और 'दि शैडो ऑफ ए गनमैन' मे डबलिन का जीवन प्रतिबिम्बित किया।

सर जेम्स बेरी[3] की बडी प्रतिकूल आलोचना हुई है परन्तु उसका 'पीटरपैन' कल्पना और भावना का सम्मिलित क्षेत्र होकर भी नाटक के दृष्टिकोण से कुछ कम श्लाघ्य नही। उसकी दो और रचनाए—'दि एडमिरेबल क्राइटन' (१९०२) और 'डियर ब्रूटस' (१९१७) विशेष प्रसिद्ध हुई।

परन्तु सावधि साहित्य का शेक्सपियर तो जॉर्ज बरनार्ड शॉ[4] है। अनेक आलोचको का कथन है कि अग्रेजी नाटक-साहित्य मे यदि केवल दो व्यक्तियो का नाम लिया जाए तो उनमे एक शॉ निश्चय होगा। इस राय से कोई सहमत हो या नही, इसमे शायद दो मत नही हो सकते कि शॉ शेक्सपियर के बाद के नाटक साहित्य का सबसे बडा प्रतिनिधि है। उसका जीवन-काल भी सुदीर्घ था। १८५६ से १९५० तक, ९४ वर्ष। अग्रेजी साहित्य के क्षेत्र मे सम्भवत कोई कलाकार इतना दीर्घायु न हुआ। अग्रेजी ड्रामे के इतिहास मे शॉ का सृजन-काल काफी दीर्घ था। १८९२ मे ही उसने अपना नाट्यकार जीवन 'विडोअर्स-हाउसेज' से आरभ किया और १९३९ तक 'इन गुड किंग चार्ल्ज़ गोल्डन डेज़' तक निरन्तर जारी रखा। शॉ की मेधा असामान्य थी, नितान्त प्रखर। इब्सन की भाति उसने भी अपने नाटको को अपने विचारो का समर्थ वाहक बनाया। उसके व्यग्य चुभने की शक्ति मे बेजोड है, काग्रीव और वाइल्ड दोनो का वह सम्मिलित उदाहरण है। वह सोशलिस्ट था, फेबियन सोसाइटी के निर्माताओ मे से, और यौन, धर्म, आचार सभी कुछ उसके अभिप्रेत विषय थे। नाट्य कुशलता उसमे असाधारण थी।

'मिसेज़ वारेन्स प्रोफेशन' मे उसने गणिका के जीवन मे अपने दूषित वातावरण का अनिवार्य परिणाम प्रदर्शित किया है जिसमे नारी वारागना के दूषित पेशे को लाभकर रूप मे बाध्य होकर स्वीकार करती है और इस प्रकार केवल रूमानी वेश्या नही रह जाती। आचार और आचरण के परपरागत क्रम को विपरीत कर अकित करना शॉ की सहज कला है। उसकी कॉमेडी के व्यग्य की यही सार्थकता है। यही रूप निरन्तर 'सीज़र ऐण्ड क्लियोपेट्रा' से लेकर उसकी 'सेन्ट जोन' तक की कृतियो मे विघटित है।

उसकी रचनाए समस्या-प्रधान और प्रश्न-प्रधान होने के कारण चरित्रो को नही देती। इसका अपवाद उसकी नाट्य-शृखला मे बस एक है, 'कैन्डिडा'

---

१. John Millington Synge (१८८१-१९०९); २. Sean O' Casey, ३ Sir James Barrie (१८६०-१९३७), ४. George Bernard Shaw (१८५६-१९५०)

(१८९४)। वस्तु का चुनाव वह अपनी समस्याओ के अनुकूल करता है। इसीसे उसके नाटको की वस्तुभूमि निरन्तर समस्याओ की विविधता के अनुकूल बदलती जाती है। कही तो 'दि डेविल्ज़ डिसाइपल' की भाति उसका प्लॉट साधारण कथानक के रूप मे खुलता है और कही अधिकतर, जैसे 'गेटिग मैरिड' मे कहानी सूक्ष्मतम हो जाती है। फिर भी उसके कुछ नाटको मे इन दोनो तत्वो का सुन्दर सम्मिश्रण है। जैसे—'मेजर बारबरा,' 'दि शोइग अप ऑफ ब्लैको पौसनेट' अथवा 'जॉनबुल्स अदर आइलैंड' मे। इन नाटको की विशेषता इनके कलेवर से अधिक अनेक बार इनकी प्रशस्त भूमिकाओ मे होती है। इन्ही भूमिकाओ मे वह अपने विचारो को व्यग्यपूर्ण शक्तिम चुने शब्दो मे रखता है। 'ऐड्रोक्लीज़ ऐण्ड दि लॉयन' की भूमिका मे ईसाई धर्म पर उसने प्रबल प्रहार किया है। समस्याओ की प्रधानता पहले महासमर के बाद के उसके नाटका मे विशेष रूप धारण करती है। जैसा 'हार्ट ब्रेक हाउस', 'दि ऐपल कार्ट', 'टु ट्रू टु बी गुड', 'दि मिलियोनेयर्स,' और 'जिनेवा' नाम की उसकी रचनाओ से प्रकट है। उसके 'मैन ऐण्ड सुपरमैन' 'बैक टु मथुसेला' ने कभी नाट्य-ससार पर सम्मोहन डाल दिया था, यद्यपि आज उनके जादू की शक्ति उतनी नहीं रही। 'पिगमेलियन' का प्रभाव भी दर्शको पर कुछ कम न पडा। फिर भी यह कहना कठिन है कि शॉ का प्रभाव साहित्यिक जगत् पर कब तक रहेगा। इतना निश्चय कहा जा सकता है कि आगे कुछ काल तक उस महान् कलाकार का प्रभावाकार छोटा नही होगा। राजनीति, समाज, अर्थ, दर्शन, सब पर वह अपने व्यग्य का चुटीला प्रहार करता है और समस्या-प्रधान होकर भी उसके नाटक अभिनय के क्षेत्र मे आज बेजोड है। उसके नाटको की रगमचीय सफलता अर्थार्जन मे भी उसकी असाधारण रूप से सहायक हुई है। साहित्य के क्षेत्र मे अपने जीवन-काल मे शायद किसी अन्य कलाकार ने अपनी रचनाओ से इतना धन नही कमाया जितना बरनार्ड शॉ ने।

आधुनिक काल के अंग्रेज़ी नाटक का विवरण वस्तुत शॉ के साथ समाप्त हो जाता है फिर भी उसके कुछ समकालीनो का उल्लेख यहा अनुचित न होगा। टी एस एलियट का उल्लेख कवि-परपरा मे हो चुका है। उसका 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' (१९३५) पद्यात्मक ट्रैजेडी का एक सुन्दर नमूना है। ओडन और क्रिस्टोफर इशरक ने भी कुछ प्रयोग किए है जो दिलचस्प हैं। इन्होने पद्य और नृत्य के समावेश से नाटक को गद्य के चगुल से मुक्त करना चाहा है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उदीयमान नाटककार भी साहित्य-निर्माण मे प्रयत्नशील है, जिनका विवरण यहा समीचीन नही।

: ४ :

उपन्यास

आरंभ से डि फ़ो तक

कहानी-लेखन की उस परपरा का प्रादुर्भाव जिसे हम उपन्यास कहते है, साहित्य मे अपेक्षाकृत काफी पीछे हुआ। कुछ ने तो अग्रेजी मे उसका आरभ रिचर्डसन की 'पामेला' से माना है। जो भी हो, उपन्यास का आरभ १६वी सदी के पहले नही रखा जा सकता। १६वी सदी मे भी उपन्यास के रूप मे सर फिलिप सिडनी की जिस कृति 'आर्केडिया' का उल्लेख किया जाता है वह वस्तुत उपन्यास के माने हुए रूप को अभिव्यक्त नही करती।

उपन्यास की परिभाषा तो आसान नही पर साधारणत उसकी व्याख्या मे कहा जा सकता है कि वह गद्य की शैली मे लिखा वह साहित्य है जो कहानी पर अवलम्बित है, जिसमे चरित्र का वर्णन है और युग-विशेष का जीवन प्रतिबिम्बित है। जिसमे भावनाओ और आवेगो की क्रिया और प्रतिक्रिया अकित है और जिससे नर-नारियो का अपने वातावरण के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण निदर्शित होता है। इस प्रकार के उपन्यास का आरभ वस्तुत. १६वी सदी मे सभव न था। फिर भी पृष्ठभूमि के रूप मे सर फिलिप[1] की 'आर्केडिया' की ओर हम सकेत कर सकते है।

जॉन लिली ने भी १६वी सदी मे अपने 'यूफएस' और 'यूफएस ऐण्ड हिज इग्लैड' नाम के मनोरजक रोमास लिखे। एलिजाबेथ-युग मे ही रॉबर्ट ग्रीन ने भी अपना 'पैन्डोस्टो' लिखा जिसे शेक्सपियर ने अपने 'विन्टर्स टेल' का आधार बनाया। उस तथाकथित उपन्यास मे लन्दन के उपेक्षित ससार का अकन हुआ। टॉमस लॉज[2] ने भी अपनी 'रोजालाईन्ड' तभी लिखी। परन्तु सही मनोरजन की सामग्री टॉमस डिलोने[3] ने प्रस्तुत की। उसके 'जैक आफ न्यूबरी' मे जुलाहो का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ और 'दि जेन्टल क्राफ्ट' मे चमारो का। टॉमस डेक्कर ने भी समसामयिक घृणित जीवन के चित्र अपनी कृति 'गुल्स हार्न-बूक' मे प्रस्तुत किए। टॉमस नेश[4] ने उपन्यास लेखन की कला मे कुछ प्रगति कर १६वी सदी समाप्त की।

१६वी सदी का उतरार्द्ध उपन्यास-लेखन की दिशा मे पिछली सदियो से कुछ अधिक जाग्रत हुआ। जॉन बुन्यन[5] का नाम अग्रेजी साहित्य मे काफी बड़ा है। वह सैनिक

---

१. Sir Philip Sidney (१५५४-८६); २ Thomas Lodge (१५५८-१६२५); ३. Thomas Deloney (१५४३-१६००); ४ Thomas Nashe (१५६७-१६०१); ५. John Bunyan (१६२८-८८)

और पादरी बारी-बारी रह चुका था और उसने साहित्य-प्रसिद्ध अपनी रचना 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' १६७८ मे प्रकाशित की। दो साल बाद उसकी दूसरी रचना 'दि लाइफ ऐण्ड डेथ ऑफ मिस्टर बैडमैन' भी लिखी गई और अन्त मे 'होलीवार' (१६८२) प्रकाशित हुआ। 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस' रूपक है और उसका कथानक कल्पना पर अवलबित है, यद्यपि उसमे कहानी का यथार्थ कुछ कम नही है।

परन्तु उपन्यास का वस्तुत आरभ १८वी सदी मे डेनियल डि फो[1] से हुआ। डि फो ह्विग और टोरी दोनो दलो का एजेट था। वह सट्टेबाज और दिवालिया भी था और उसने कुछ वैज्ञानिक अन्वेषण भी किए। उसने इधर-उधर की यात्राए भी की थी और वह उस जमाने का जाना हुआ पत्रकार था। अनेक बार उसे कैद भुगतनी पडी। 'दि रिव्यु', जिसका उसने १७०४ से १७१३ तक प्रकाशन किया, अग्रेजी पत्रकारिता की एक मजिल है। उसकी उपन्यास की दिशा मे प्रबल कृति 'रॉबिन्सन क्रूसो' (१७१६) है। यद्यपि 'कैप्टन सिगिलटन', 'मोल फ्लेन्डर्स', 'कर्नल जैक', 'ए जर्नल ऑफ दि प्लेग इयर', 'रोक्साना' आदि भी कुछ कम जानी हुई कृतिया नही है। डि फो अपने पाठको की अभिरुचि के अनुकूल रचना करता था। यही कारण था कि उसकी कृतियो ने प्यूरिटन मध्यवर्ग को शीघ्र ही अपनी ओर आकृष्ट किया। उसकी कल्पना, यथार्थ और यात्रानुभूति ने अग्रेजी साहित्य को 'रॉबिन्सन क्रूसो' के रूप मे जो दिया वह असाधारण देन सिद्ध हुआ। इस कृति का उस साहित्य पर काफी प्रभाव पडा और अनेक भाषाओ मे आज उसके अनुवाद प्रस्तुत हैं।

'रॉबिन्सन क्रूसो' की पृष्ठ भूमि काल्पनिक होती हुई भी यथार्थ का आभास प्रस्तुत करती है और उसकी सरलता विशेषत उसके इसी गुण पर अवलम्बित है, यद्यपि 'रोक्साना' और 'मोल फ्लैन्डर्स' के चरित्र भी पाठक को बरबस अपनी ओर खीचते है।

रिचर्डसन से स्कॉट तक

(१७४०-१८३२)

भावुकता

डि फो के बाद उपन्यास का क्षेत्र फिर अनुर्वर हो गया। उसके 'रॉबिन्सन क्रूसो' के प्रकाशन के प्राय पच्चीस वर्ष बाद रिचर्डसन की 'पामेला' प्रकाशित हुई। सैमुएल रिचर्डसन[2] अग्रेजी साहित्य के प्रधान निर्माताओ मे हो गया है। वह मुद्रक था और जीवन भर मुद्रक ही बना रहा। १७४० मे उसने अपनी 'पामेला' प्रकाशित की। १७४७-४८ मे 'क्लैरिसा' और १७५३-५४ मे 'दि हिस्ट्री ऑफ सर चार्ल्स ग्रैडिसन'।

---

१ Daniel De Foe (१६६०-१७३१), २. Samuel Richardson

तीनो उपन्यासो की कहानी साधारण है। 'पामेला' बादी है जो अपनी मालकिन के पुत्र के दुराचरण के प्रयत्नो से निरन्तर अपनी रक्षा करती है और अन्त मे उसके विवाह-प्रस्ताव को गभीरता मे स्वीकार करती है। सर चार्ल्स ग्रैडिसन भी अपने कुशल व्यवहार और सयम से सदाचरण करता है। रिचर्डसन प्यूरिटन था परन्तु उसकी रचना मे कला का प्रचुर निरूपण हुआ।

वास्तविकवाद

रिचर्डसन मध्यवर्ग का था और उसने उसी वर्ग के पात्रो के गुण-दोषो का विवेचन किया। उसका यह अभाग्य था कि हेनरी फील्डिग उसके जीवन-काल मे ही प्रादुर्भूत हुआ। फील्डिग अभिजातकुलीय था, अभिजातकुलीयो के स्कूल ईटन मे शिक्षा पा चुका था। क्लासिक्स का प्रेमी था और सर रॉबर्ट वालपोल के लाइसेंसिंग ऐक्ट के बनने से पहले तक नाटककार भी था। पेशे से वह जर्नलिस्ट, वकील और जज भी रहा।

१७४२ मे उसने रिचर्डसन की 'पामेला' का मजाक बनाने के लिए 'दि हिस्ट्री ऑफ दि ऐडवेंचर्स ऑफ जोजैफ एन्ड्रूज ऐण्ड हिज फ्रेंड मि अब्राहम ऐडम्ज' प्रकाशित किया। यह 'पामेला' की एक प्रकार से व्यग्यपूर्ण पैरोडी था। इसमे पामेला की स्थिति मे बदलकर एक नौकर रखा गया है, जिसे बिगाडने का प्रयत्न उसकी मालकिन करती है। बाद मे जब वह भाग जाता है तब फील्डिग की दृष्टि मे रिचर्डसन की दुनिया ओझल हो जाती है और उपन्यास अपने स्वाभाविक पथ पर चल पडता है। उसकी 'हिस्ट्री ऑफ जोनाथान वाइल्ड, दि ग्रेट' नामक कृति 'जोजेफ एन्ड्रूज' से भी अधिक व्यग्यपूर्ण है। फील्डिग जीवन के आवेशो का खुला पोषक था और इसी विचार की अभिपुष्टि मे उसने 'दि हिस्ट्री ऑफ टॉम जोन्ज' (१७४९) की रचना की, जो उसकी कृतियो मे सबसे सुन्दर है। उसकी 'अमेलिया' १७५१ मे प्रकाशित हुई। इसकी करुणा इसे अस्वाभाविक बना देती है। जो भी हो, फील्डिग सहज कलाकार था।

टोबियास स्मोलेट[1] फील्डिग का समकालीन था। स्कॉटलैंड का निवासी और पेशे का डाक्टर। उसकी अनेक कृतिया उपलब्ध है, 'दि ऐडवेंचर्स ऑफ रोडरिक रैन्डम' (१७४८), 'दि ऐडवेंचर्स ऑफ पेरेग्रीन-पिकल' (१७५१), 'ऐडवेंचर्स ऑफ फर्डिनेन्ड काउन्ट फैदम' (१७५३), 'दि ऐडवेंचर्स ऑफ सर लैन्सेलॉट ग्रीव्ज' (१७६२), 'दि ऐक्सपीडीशन ऑफ हम्फ्रे क्लिकर' (१७७१)। इनमे और तो घटिया किस्म की है परन्तु 'पेरेग्रीन पिकल' सुन्दर है। इसके पात्र सजीव है। उपपात्र तो नायक से भी अधिक। इसमे और स्मोलेट की अन्य कृतियो मे भी अशान्त और अधीर सामुद्रिक और जहाजी जीवन का सुन्दर और स्वाभाविक चित्र खीचा गया है। उस चित्र मे क्रूरता और कामुकता का भी खासा चित्रण है।

---

१ Tobias George Smollet (१७२१-७१)

लॉरेंस स्टर्न[1] अठारहवी सदी का एक अनूठा उपन्यासकार है। वह सिपाही का लडका और पादरी का पोता था। उसने कैम्ब्रिज से एम० ए० की डीग्री ली और पादरी बन गया। उसका 'लाइफ ऐण्ड ओपीनियन्स ऑफ ट्रिस्ट्रम शैन्डी' (१७५६-६७) अनोखा उपन्यास है, सर्वथा मौलिक, जो प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया था। वैसे कहानी भयानक है, और तीसरे खड मे नायक का जन्म होता है। अपूर्ण वाक्य, अपूर्ण सादे पृष्ठ, अनोखा विनोद, सभी कुछ इसमे अजीब है, फिर भी भावो का विचित्र निर्वाह हुआ है। इस प्रकार वह मानव जीवन की विचित्रता का रूप अकित करता है और मानवता की विषादमयी अनुभूति से सहानुभूति प्रकट करता है। उसके 'सेन्टिमेन्टल जर्नी' (१७६१) में फ्रास की यात्रा का अकन है।

अठारहवी सदी के मध्य मे ही उपन्यासो की धारा जो मोटी हो चलती है, वह उसके अन्त तक बाढ बन जाती है और तब साधारण रूप से भी इन उपन्यासो का विवरण कठिन हो जाता है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण कृतियो का उल्लेख समीचीन है। इन्हीमे सैमुएल जॉन्सन का 'रैसेलास' (१७५६) है, जो अबीसीनिया की कहानी के रूप मे अठारहवी सदी के आशावाद पर एक प्रकार का प्रहार है। इस प्रकार ऑलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकर ऑफ वेकफील्ड' भी रूप और शैली मे प्राय अकेला है। इसका आज भी साहित्यिको मे बडा आदर है। गोल्डस्मिथ असाधारण कलाकार है। उसमे हास्य और चित्रण दोनो सपन्न करने की अद्भुत क्षमता है। उसमे गजब की कारुणिकता है, जिससे वह कगालो और आपद्ग्रस्तो के प्रति असाधारण तौर पर अनुरक्त हो जाता है। इसी काल क्वीन कैरोलिन की अनुचरी फैनीबर्नी नाम की नारी ने भी उपन्यास-रचना की। अपने सुन्दरतम उपन्यास 'इवेलिना' (१७७८) मे उसने गाव की एक लडकी का लन्दन के कृत्रिम भडकीले जीवन मे प्रवेश बडी खूबी से कराया है। उसकी इस कृति की जॉन्सन, बर्क, रेनाल्डस आदि ने भूरि-भूरि प्रशसा की थी। उसने 'सेरवीलिया' 'कैमिला,' और 'वान्डरर' नाम के तीन उपन्यास और रचे। पर तीनो ही एक से एक गए-बीते थे।

भावावेगवादी उपन्यासो का आरभ स्टर्न ने किया था। उनकी परिपाटी चल पडी। हेनरी मैकेन्जी[2] ने अपने 'दि मैन ऑफ फीलिंग' मे उस परपरा को और जाग्रत किया। इसका हीरो स्थल-स्थल पर रो पडता है, जिससे उपन्यास पैरोडी का रूप धारण कर लेता है। इन्ही दिनो टॉमस डे ने अपना 'सैन्डफोर्ड ऐण्ड मर्टन' (१७८३-८६) नामक उपन्यास लिखा, जिससे नीतिपरक उपन्यासो की परपरा चली। उसका 'फूल ऑफ क्वालिटी' (१७६६-७०) भी उसी शैली का वाद-प्रतिवादयुक्त उपन्यास है।

उसके बाद ही उस प्रकार के उपन्यास लिखे गए, जिन्हे गौथिक कहते हैं। यह

---

१. Lawrence Sterne (१७१३-६८); २. Henry Mackenzie (१७५५-१८३१)

भयपरक है। अपराध, पाप, भय, खून, बदला आदि इस प्रकार के उपन्यासो के चित्रण-आधार है। और इनका प्रणयन विशेषत मध्यकालीन 'वस्तु' के पुनरुज्जीवन से आरभ हुआ। इस परपरा का पहला उपन्यासकार प्रसिद्ध सर राबर्ट वालपोल का पुत्र होरेस वालपोल[1] था। अपनी अभिजातकुलीय समृद्धि के वातावरण मे उसने महत्वाकाक्षा के लब्ध्यर्थ उन व्यक्तियो को प्रयत्नशील देखा, जिन्हे स्वार्थ साधने मे आचारोपचार का मोह न था। उसी वातावरण का होरेस वालपोल ने अंकन किया। भेद केवल इतना था कि उसने पृष्ठभूमि मध्यकालीन इटली के पापाचारयुक्त वातावरण से चुनी। वह स्वय पुरातत्वविद् था। पुरातत्व से अनेक लोगो को उस काल कुछ प्रेम होगया था। बात यह थी कि व्यापार, उद्योग आदि से जो समृद्धि हुई तो उसने आखिर ऐसे निठल्ले लोग भी उत्पन्न किये, जो अपना अवकाश—जिसकी कुछ सीमा न थी—भरना चाहते थे। उनकी जागीरदारियो मे खडे मध्ययुगीय गिरजो आदि द्वारा उनकी रोमैन्टिक तुष्टि भी हो जाती थी और इस प्रकार एक पृष्ठभूमि भी उनकी कृतियो के लिए मिल जाया करती थी। होरेस वालपोल इसी रूप से अपने उपन्यासो मे पुरावर्ती पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर गौथिक उपन्यास-परपरा की नीव डाल सका। 'दि कासल ऑफ ओट्रैन्टो' (१७६४) इसी परपरा की कहानी लेकर साहित्य-क्षेत्र मे अवतरित होता है।

विलियम बेकफोर्ड[2] का 'दि हिस्ट्री ऑफ दि कॉलिफ वाथेक' (१७८२) वालपोल की कृति से भी अधिक मध्यकालीन क्रूर घटनापरक है, जिसमे खलीफा की क्रूरता का वर्णन है। इस लोमहर्षक पद्धति के उपन्यासकारो मे सबसे जनप्रिय मिसेज ऐन रैडक्लिफ[3] हुई। उसके पाच उपन्यासो मे सबसे प्रसिद्ध 'दि मिस्ट्रीज आफ उडोल्फो' (१७९४) और 'दि इटैलियन' (१७९७) थे। उसने मनोवेगो को कायम रखते हुए अपने दृश्यो को प्राकृतिक पृष्ठभूमि दी और इस प्रकार १८वी सदी की निसर्गप्रिय काव्य-परपरा का उपन्यास मे भी निर्वाह किया। उस नारी ने अपनी कृतियो द्वारा लार्ड बायरन और शेली तक को प्रभावित किया। उपन्यासकारो की इसी लोकरजक परपरा मे मैथ्यू ग्रेगरी लेविस[4], चार्ल्स रॉबर्ट मैट्रिन[5], मिसेज शेली[6] आदि थे। इन्होने 'दि माक' (१७९६), 'टेल्स ऑफ टेरर', 'टेल्स आफ वंडर' (लेविस), 'मेलमोथ दि वाडरर' (मैट्रिन) और 'फ्रैंकेन्स्टीन' लिखकर लोमहर्षक उपन्यासो का भडार भरा। इनमे मिसेज शेली का लिखा 'फ्रैंकेन्स्टीन' इस प्रकार के उपन्यासो मे बडा सफल हुआ।

उन्नीसवी सदी मे सही उपन्यास कला का जन्म हुआ। ऐसा नही कि लोमहर्षक

---

१. Horace Walpole (१७१७-९७); २ William Beckford (१७६०-१८४४), ३. Mrs Ann Radcliffe (१७६४-१८२३), ४. Mathew Gregry Liewis (१७७५-१८१८); ५. Robert Maturin (१७८२-१८२४); ६ Mrs Mary Wollstone Craft Shelley (१७९७-१८५१)

उपन्यासो का अन्त हो गया हो क्योकि पाठको के मनोरजन के साधन-स्वरूप इस प्रकार के उपन्यासो का सृजन होना स्वाभाविक ही था, कि जब ऐसे पाठको की कमी न थी, परन्तु उन्नीसवी सदी अपने नये वातावरण के साथ आई। उपन्यास अब केवल मनोरजन की सामग्री न था। वरन् स्पष्ट कला के रूप मे सिरजा जाने लगा। इस परपरा का आरम्भ जॉर्ज ऑस्टिन की कन्या जेन ऑस्टिन[1] ने किया। साहित्य मे उसकी सूझ सर्वथा नई थी। न तो उसे उसके पूर्ववर्तियो ने प्रभावित किया और न यूरोपियन उथल-पुथल ने। उसने लोम-हर्षक उपन्यासो पर अपनी कृतियो से भरपूर चोट भी की (देखिए उसका—'नार्थेगर अबे')। उसने वर्णन और यथार्थवादी सूक्ष्मता को बडा महत्त्व दिया और उसकी लेखनी मे पहली बार कला प्रसूत होकर 'प्राइड ऐड प्रेजुडिस' (१८१३) के रूप मे आई। उसके चरित्रो मे अनूठापन कुछ न था। वे समाज मे घर-घर चलते-फिरते हाड-मास के जीव थे। जेन ऑस्टिन के सक्षिप्त डायलॉग भी बडे चुटीले है। उनकी शक्ति लबे वक्तव्यो मे जब-तब नष्ट हो जाती है। इसमे विशेषत दो परस्पर विरोधी पात्रो का चित्रण है। यही रूप हमे उसके दूसरे उपन्यास 'सेन्स ऐण्ड सेसिबिलिटी' (१८११) मे भी मिलता है। जेन ऑस्टिन ने 'मैन्स फील्ड पार्क' (१८१४), 'एम्मा' (१८१६) और 'परसुएशन' (१८१७) नामक तीन और उपन्यास लिखे परतु कोई उसके 'प्राइड ऐण्ड प्रेजुडिस' के स्तर तक न उठ सका।

ऐतिहासिक उपन्यास

इसी काल-प्रसार मे सर वाल्टर स्कॉट ने भी अपने प्रसिद्ध उपन्यास लिखे, परन्तु जेन ऑस्टिन के उपन्यासो से सर्वथा भिन्न। ऐतिहासिक उपन्यास-परपरा का प्रारभ सर वाल्टर स्कॉट ने किया। ज्ञान और सुरुचि मे शायद सर वाल्टर का जोड नही। घटनाओ की खोज और अध्ययन मे उसने असाधारण परिश्रम किया। आलोचना मे भी उसने बडी उदारता दिखाई। जेन ऑस्टिन की कला को अपनी अपेक्षा अत्यधिक ऊचा घोषित किया। वह स्कॉच था, एडिनबरा के एक वकील का पुत्र, और साहित्य मे, विशेषत स्कॉटलैड की ख्यातो मे, उसे बडी दिलचस्पी थी। उसने तत्सबधी कुछ कविताए भी लिखी, परन्तु यशस्वी वह अपने उपन्यासो के कारण ही हुआ। अभिजातकुलीनता के स्वाद ने उसे ऋण के भार से दबा दिया था। फिर भी उसका हाथ निरन्तर खुला रहा और धन की आवश्यकता बराबर बनी रही। उसके जर्नल मे धन सबधी उसकी व्यग्रता का बडा करुण सकेत मिलता है। धन की आवश्यकता ने उसे उपन्यास लिखने को और भी बाध्य किया। मेरिया एजवर्थ ने अपना 'कैसिल रैक्रन्ट' (१८००) लिखकर ऐतिहासिक उपन्यास का रूप रखा था। परन्तु वस्तुत वह परपरा स्कॉट के हाथो सवारी गई। उसमे उसने पृष्ठभूमि,

---

१ Jane Austine (१७७५-१८१७)

वातावरण आदि प्रकृति के स्पर्श और पिछले युगो के सयोग से चित्रित किए जो न फील्डिग ने किया था न ऑस्टिन ने। सही मे, उसमे मध्यकालीन हीरो की असाधारणता हमे विशेष प्रभावित करती है, परन्तु उस युग के समाज और सामान्य जनता की जितनी प्राजल झलक हमे उसके दृश्यो से मिलती है और कही नही।

उसका पहला उपन्यास 'वेवरली' (१८१४) १७४५ के जैकोबिन विद्रोह के चित्र उपस्थित करता है। उसी परपरा मे उसके उपन्यास 'गाई मैनरिग' (१८१५), 'दि ऐन्टीक्वेरी' (१८१६), 'ओल्ड मौरटैलिटी' (१८१६), 'दि हार्ट ऑफ मिडलोथियन' (१८१८) और 'रॉबराय' (१८१८) भी लिखे गए। इनमे स्मृति और कल्पना दोनो एकत्र मिलती है। दोनो उसे सम्मिलित रूप से विधायिनी प्रतिभा प्रदान करती है। क्रूसेड सबधी उपन्यास 'आइवन्हो' (१८२०) और 'दि टेलिस्मान' (१८२५) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'कैनिलवर्थ' (१८२१) और 'दि फार्चुन्ज ऑफ निजेल' (१८२२) मे अत्यन्त आकर्षक रूप मे एलिजाबेथ और जेम्स प्रथम के सबध की घटनाए वर्णित है। उसने केवल स्कॉटलैड और इग्लैड के इतिहास से ही घटनाए चुनकर नही अनुप्राणित की, अपने 'क्वेन्टिन डरवर्ड' (१८२३) मे तो फ्रास के राजदरबार को भी अपनी लेखनी का आधार बनाया। परन्तु इस प्रकार उसका इधर-उधर भटक जाना ही मात्र था क्योकि वह स्कॉटलैड की स्थिति को वस्तुत न भूल सका। 'सेट रोमन्स वेल' (१८२४) और 'रैड गॉन्टलेट' (१८२४) की कथाओ के लिए वह फिर स्कॉटलैड की ओर अभिमुख हुआ।

स्कॉट आज भी ऐतिहासिक उपन्यासो मे रुचि रखने वाले पाठको का मनोरजन करता है। अपने परवर्ती ऐतिहासिक उपन्यासकारो को भी उसने कम प्रभावित न किया। बुलवर लिटन, थैकरे, रीड, जॉर्ज एलियट तक उसके ऋणी है। उसका प्रभाव कालान्तर मे फ्रास से रूस तक और अटलाटिक सागर पार अमेरिका तक व्यापक बना।

उन्नीसवी सदी की उपन्यास-परपरा मे अन्त मे लव पीकॉक[1] का उल्लेख कर देना आवश्यक होगा। शैली मे भिन्न होकर भी पीकॉक 'रोमाटिक साहित्य' का शत्रु था। उसने रोमाटिक साहित्य का मखौल उडाने वाले व्यग्यात्मक उपन्यासो की एक परिपाटी ही खडी कर दी। उसके उपन्यासो मे मनोरजन की सामग्री प्रचुर है, जिसके प्रमाण है उसके 'मेड मेरियन' (१८२२), 'मिसफॉर्चुन्स आफ एल्फिन' (१८२९), और 'क्रोचेट कासल' (१८३१)। उसने भी अपने परवर्ती उपन्यासकारो पर अपना प्रभाव डाला। जॉर्ज मेरेडिथ और आल्डुस हक्स्ले दोनो को उपन्यास के क्षेत्र मे अपने प्रयोग करने में पीकॉक से प्रभूत प्रेरणा मिली।

---

१. Thomas Love Peacock (१७८५-१८६६)

डिकेन्ज़ से आज तक

चार्ल्स डिकेन्ज़[1] उन्नीसवी सदी का सबसे बडा उपन्यासकार है। अनेक लोगो के विचार से तो वह अनेकार्थ मे इग्लैंड का सबसे प्रधान उपन्यासकार है। इस पिछले मत को चाहे कोई न माने, परन्तु इसे स्वीकार करने मे सभवत किसीको आपत्ति न होगी कि डिकेन्ज़ चोटी का उपन्यासकार है। अपनी विनोदात्मक उपन्यास-शैली मे तो नि सन्देह वह बेजोड है। उसका विनोद कभी साहित्य पर बोझ बनकर नही आता, उसमे घुला-मिला प्राण बनकर आता है। स्वाभाविकता उसका प्राण है। डिकेन्ज़ को जीवन साध्य है, प्रिय, परन्तु वह अपने वातावरण से क्षुब्ध है, अपने समाज से घृणा करता है। उसकी प्रवृत्ति विद्रोहात्मक थी और उसके उपन्यासो मे भी उसका विद्रोह झलक आता है पर उसे परिस्थितियो से मजबूर होकर मध्यमवर्गीय आचार से समझौता कर लेना पडा। 'पिकविक पेपर्स' (१८३६-३७) इसका प्रमाण है। 'ऑलिवर ट्विस्ट' (१८३८) मे हास्य के ऊपर कारुणिकता की छाया स्पष्ट है। वह समसामयिक समाज की हृदयहीनता के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाता है। 'निकोलस निकल्बी' (१८३८-३९) मे प्लॉट महत्त्व धारण कर लेता है और चरित्र-चित्रण शक्तिम हो उठता है। बेन जॉनसन की भाति 'दि ओल्ड क्युरियॉसिटी शॉप' (१८४१) मे मध्यवर्ग के आचार पर प्रखर व्यग्य है। 'बार्नाबी रज़' (१८४१) डिकेन्ज़ का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। उसके 'मार्टिन चुज़लविट' (१८४४) मे अमेरिका के दृश्य भरे हैं, क्योकि यह कृति उसकी अमेरिका-यात्रा के बाद सम्पन्न हुई। १८४३ और ४८ के बीच उसने 'क्रिस्मस बुक्स' लिखी। यह कृति जिसमें मानव-दया मे उसकी निष्ठा प्रदर्शित है, बडी लोकप्रिय हुई। करुण रस उसके 'डम्बे ऐण्ड सन' (१८४८) मे जैसे फूट पडा है। 'डैविड कॉपरफील्ड' (१८५०) मे उसकी उपन्यास-कला आत्मकथानक का रूप धर लेती है। चरित्र-चित्रण भी इसमे गजब का हुआ है।

डिकेन्ज़ के प्रधान उपन्यास 'ब्लीक हाउस' (१८५३) के साथ उसके कृतित्व का दूसरा युग आरभ होता है। 'हार्ड टाइम्ज' (१८५४) उसने कारलाइल को समर्पित किया है और 'लेसे फेयर' (अनिरुद्ध व्यापार) पर वह प्रखर प्रहार है। 'लिटिल डोरिट' (१८५७) मे वह आफिसो की दीर्घ-सूत्रता पर चुटीला व्यग्य करता है। 'दि टेल ऑफ टू सिटीज़' (१८५६) फ्रेच राज्य-क्राति सबधी सुन्दर उपन्यास है, जो उसकी प्रतिभा को नई दिशा की ओर ले जाता है, स्कॉट से सर्वथा भिन्न। 'ग्रेट ऐक्स्पैक्टेशन्ज' (१८६१) और 'आवर म्यूचुअल फ्रेंड' (१८६४) नामक दो उपन्यास उसने और लिखे। कभी जब

---

१ Charles Dickens (१८१२-७०)

वह 'दि मिस्ट्री आफ एडविन ड्रूड' लिख ही रहा था कि मृत्यु के क्रूर कर ने उसकी जीवनगति बन्द कर दी।

डिकेन्ज निरन्तर लिखता रहा, साथ ही निरन्तर भ्रमण भी करता रहा। उसने अमेरिका के श्रोताओ को अपने उपन्यास, कविता की भाति पढ-पढकर सुनाए। इससे उसे लाभ प्रचुर हुआ पर जीवन शिथिल हो गया, यद्यपि श्रोताओ की उपस्थिति उसके लिए मादक शराब का काम करती थी। १८७० मे जब वह मरा, इग्लैड के जीवन से जैसे प्रधान सार चला गया। वह अपने समाज के अगाग मे समा चुका था। शॉ के पहले फिर कोई ऐसा न हुआ जो डिकेन्ज की भाति अग्रेज जनता को खिलखिलाकर हसा सकता।

विलियम मेक पीस थैकरे[1] डिकेन्ज का समकालीन था। पर दोनो दो स्तरो के व्यक्ति थे। डिकेन्ज को सही शिक्षा नही मिली थी। उसके पिता को ऋणी होकर अनेक बार जेल का मुह देखना पडा था। स्वय उसे पहले कारखानो मे काम करना पडा। थैकरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अफसर का, कलकत्ते मे जन्मा, बेटा था, चार्टर हाउस और कैम्ब्रिज की हवा खाया हुआ। थैकरे जीवन भर जर्नलिस्ट रहा और लगातार 'पच' मे लिखता था। उसने 'कॉर्नहिल' मैगेजीन का सपादन भी किया। 'वैनिटी फेयर' (१८४७-४८) उसकी पहली कृति थी, जिसने उसे उपन्यासकार के रूप मे अमर कर दिया। दस वर्ष बाद उसने 'दि वर्जीनियन्ज' (१८५७-५६) लिखा। इसी बीच उसने 'पेन्डैनिस' (१८४८-५०), 'हेनरी एस्मड' (१८५२) और 'दि न्यूकम्स' (१८५३-५५) भी लिखे। वह बावन साल की आयु मे मरा, डिकेन्ज से भी छोटी उम्र मे। वह अच्छे प्रकार के रहन-सहन का आदी था, इससे अपनी आय बढाने के लिए उसने भी लन्दन और अमेरिका मे अपनी कृतिया सुनाकर धन कमाना शुरू किया। उसकी आय प्राय डेढ लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो गई थी पर उसे उससे सतोष न होता था।

थैकरे को अपना समाज प्रतिकूल न पडा और उसने उसकी खिल्ली भी नही उडाई। वह अपनी कृतियो मे उसका प्रतिबिम्ब मात्र उतारता गया। नि सदेह इसके लिए उसमे असाधारण प्रतिभा थी। कृतघ्नता के प्रति उसका आक्रोश तीव्र था। उसकी दृष्टि यथार्थ के प्रति गहरी थी और चरित्र-चित्रण उसका डिकेन्ज से कही सूक्ष्म होता था। 'वैनिटी फेयर' इस दशा मे बडा मार्मिक उपन्यास है।

लिटन[2] की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। स्कॉट की भाति ही उसने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और 'दि लास्ट डेज़ आफ पॉम्पेयी' (१८३४) मे कला की दृष्टि से उससे ऊपर उठ गया। वह कला उसके 'रिएन्जी' (१८३५) मे शायद और भी निखरी। 'जनोनी'

---

१. William Make Peac Thackeray (१८११-६३), २. Edward Lytton, Lord (१८०३-७३)

(१८४४) उसका लोमहर्षक उपन्यास है, जिसकी लोमहर्षकता मे वह अपने 'पॉल क्लिफर्ड' (१८३०) मे सामाजिक आक्रोश का भी पुट देता है। लिटन ने कुछ और भी उपन्यास लिखे–'युजीन अराम', 'दि कैक्स्टन्स', 'माई नॉवेल', 'पेल्हम,' 'दि कमिग रेस'। इनमे अन्तिम मे उसने 'यूरोपियन' (काल्पनिक—भावी सामाजिक) उपन्यास की बुनियाद डाली।

चार्ल्स किंग्स्ले[1] ने पहले तो अपने उद्देश्यपरक उपन्यास 'यीस्ट' (१८४८) और 'आल्टन लॉक' (१८५०) लिखे, फिर ऐतिहासिक 'हाइपेटिया' (१८५३) और 'वेस्टवर्ड हो' (१८५५)। 'दि वाटर वेबीज़' नामक उसने एक फैन्टेसी भी लिखी। ए० डब्लू किंग-लेक[2] ने अपने 'इयोथेन' (१८४४) मे पूर्वात्य पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। सर रिचर्ड बर्टन[3] ने 'अरेबियन नाइट्स' (अलिफ लैला) का अनुवाद प्रस्तुत किया, और जॉर्ज बोरो[4] ने अपनी भ्रामक प्रवृत्तियुक्त उपन्यास—'लोवेंग्रो' (१८५१), 'दि रोमानी राई' (१८५७) और 'वाइल्ड वेल्स' (१८६२) लिखे। हडसन[5] और रिचर्ड जेफ्रीज़[6] भी बोरो की परपरा के ही साहित्यिक थे।

चार्ल्स रीड[7] डिकेन्ज़ के सामाजिक आक्रोश की परपरा का उपन्यासकार था, जिसमे सामग्री की यथार्थता अधिक प्रामाणिक थी। 'इट इज नेवर टू लेट टु मेन्ड' (१८५६) कारागार के जीवन का भडाफोड करता है। मध्यकालीन पृष्ठभूमि पर 'दि क्लॉयस्टर ऐण्ड दि हार्थ' (१८६१) नाम का एक सजीव ऐतिहासिक उपन्यास भी रीड ने लिखा। बैन्जेमिन डिजरेली[8] का व्यक्तित्व राजनीति मे बडा था और उसके उपन्यास 'कोनिंग्सबी' (१८४४), 'सिविल' (१८४५) और 'टैंक्रेड' (१८४७) उसकी राजनीतिक आइडियालोजी (सिद्धान्त) प्रस्तुत करते है। डिजरेली उन्नीसवी सदी की राजनीति मे सबसे महान् व्यक्ति (प्रधान मत्री) था। इससे अधिकतर उसका साहित्य उसके राजनीतिक व्यक्तित्व मे खो जाता है। पर है उसके उपन्यास सुन्दर, जिनमे वह टोरी नीति से सवारे नये इंग्लैंड का स्वप्न देखता है। मिसेज गैस्केल[9] ने अपने उपन्यासो 'मेरी बार्टन' (१८४८) और 'नॉर्थ ऐण्ड साउथ' (१८५५) मे व्यावसायिक क्रूरता का भडाफोड किया। उसने 'क्रैफोर्ड' नामक एक और सामाजिक उपन्यास लिखा। विल्की कॉलिन्स[10] ने 'दि वोमन इन व्हाइट' (१८६०) और 'दि मूनस्टोन' (१८६८) लिखकर होरेस

---

१. Charles Kingsley (१८१९-७५); २. Alexander William Kinglake (१८०९-९१); ३. Sir Richard Burton (१८२१-९०), ४ George Henry Borrow (१८०३-८१); ५ William Henry Hudson (१८४१-१९२२), ६ Richard Jefferies (१८४८-८७); ७ Charles Reade (१८१४-८४), ८ Benjamine Disraeli (१८०४-८१); ९ Mrs Elizabeth Cleghorn Gaskell (१८१०-६६), १० William Collins (१८२४-८९)

वालपोल और मिसेज रैडक्लिफ की लोमहर्षक उपन्यास-परपरा पुनरुज्जीवित की। उसकी कला उनसे कही प्रखर और प्रौढ थी।

मौलिक उपन्यासो के सृजन मे दो बहनो—एमिली ब्रोन्टे[१] और चारलोटे ब्रोन्टे[२] को बडी सफलता मिली। इनमे से पहली ने अपने 'वुदरिग हाइट्स' (१८४७) द्वारा प्रभूत ख्याति कमाई है, दूसरी के अनेक उपन्यास 'जेन आयर' (१८४७), 'शर्ले' (१८४९), 'विलेट' (१८५३), 'दि प्रोफेसर' (१८५७) है। उसके दृश्य घरेलू है, यथार्थवादी। जॉर्ज एलियट[३] का नाम भी इनके साथ ही लिया जाता है। सो केवल इसलिए नही कि वह भी नारी थी। उन्नीसवी सदी के नारी-उपन्यासकारो मे वह सबसे अधिक विदुषी थी। वह नारी थी परन्तु उसने पुरुष के नाम से लिखा। वह दार्शनिक मेधा की नारी थी और उसकी उत्कट दार्शनिकता ही हर्बर्ट स्पेन्सर से विवाह मे घातक हुई। अपने पति विख्यात लेखक लेवेस के कहने से उसने उपन्यास लिखना शुरू किया। 'सीन्ज़ ऑफ क्लारिकल लाइफ'(१८५७)को तत्काल सफलता मिली और 'ऐडम बीड' (१८५९) ने उसका यश प्रतिष्ठित कर दिया। 'दि मिल ऑन दि फ्लौस' (१८६०) भी उसकी एक ऊची कृति है। जिसमे 'ऐडम बीड' की ही भाति हृदय और मेधा का सघर्ष है। 'सिलास मारनर' (१८६१) मे वह सघर्ष प्राय एक समष्टि का रूप धर लेता है। 'रोमोला' (१८६३) इटैलियन पुनर्जागरण काल का ऐतिहासिक उपन्यास है और 'फैलिक्स होल्ट' (१८६६) रिफॉर्म बिल का अनुवर्ती। उसका 'मिडिलमार्च' (१८७१-७२) उन्नीसवी सदी के प्रधान उपन्यासो मे गिना जाता है। ऐतिहासिक युगो और दार्शनिक चिन्तन से वह यथार्थ की चतुर्वर्ती भूमि पर इसमे उतर आती है और समाज सहसा इसमे प्रतिबिम्बित हो आता है। बाल्जाक जैसे उसकी इस कृति मे उतर आया हो।

ऐन्थॅनी ट्रोलोप[४] एक दूसरी कोटि का उपन्यासकार है, सहज वर्णन-प्रवाह का। उसकी प्रखर कल्पना निरन्तर दृश्यो और चरित्रो का एकत्र सृजन करती जाती है। वह पुरुष रूप मे जेन ऑस्टिन है, पर साथ ही अपनी सीमाओ को पूर्णत जानने वाला। इसीसे वह अनधिकार चेष्टा नही करता। उसकी कृतिया 'दि वार्डेन' (१८५५) और 'बारचेस्टर टॉवर्स' (१८५७) सुघड हे। ट्रोलोप से कही मौलिक जॉर्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९) है। इधर के सालो मे मेरेडिथ का यश घट गया है क्योकि उसके उपन्यासो की कठिनता आशुगम्य नही। परन्तु उसकी मेधा अस्वीकार नही की जा सकती। यह सत्य है कि अपने 'हीरो' की ही भाति, जिस पर वह हसता है, वह स्वय गर्वीला है। उसके लिए उपन्यास केवल कहानी का आधार नही है। उसके विचार मे जीवन का आदर्श रूप उसकी सहज

---

१. Emily Bronte (१८१८-४८), २ Charlotte Bronte (१८१६-५५), ३. George Eliot Marian Evans (१८१९-८०); ४ Anthony Trollope (१८१५-८२)

स्वाभाविकता मे है, जिसके मस्तिष्क, हृदय, शरीर, सभी नकारात्मक निर्देश हैं। इसी व्याख्या के लिए वह विशुद्ध और सूक्ष्म भावनाओ का विश्लेषण करता है। इसी मनोयोग से वह अपने दूसरे उपन्यासो 'रिचर्ड फेवरेल', 'ईवान हैरिग्टन' और 'हैरी रिचमाड'—की सृष्टि करता है। भावो के विश्लेषण के अर्थ मे ही वह अपने कथानको मे नारी को केन्द्रीय स्थान प्रदान करता है। 'रोडा फ्लेमिग' (१८६५), 'विट्टोरिया' (१८६७) और 'डायना ऑफ दि क्रॉसवेज' (१८८५) भी उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुए। उसकी सबसे प्रख्यात कृति 'दि इगोइस्ट' (१८७७) है। उसके डायलॉग बडे सजीव हैं। उसके 'वन ऑफ आवर काकरर्स' (१८९१) मे उसका दृष्टिकोण और भी जटिल हो गया है। जटिलता उसकी लोकप्रियता मे बाधक हुई है।

मेरेडिथ की ही सूक्ष्म चेतना हेनरी जेम्स[१] को भी मिली थी। जेम्स अमेरिका मे जनमा और शिक्षित हुआ था, परतु इग्लैंड मे बस गया था। उसे नागरिकता का अधिकार उसकी मृत्यु से केवल एक वर्ष पहले मिला। 'डेज़ी मिलर' (१८७९) मे उसने यूरोपियन जीवन के प्रति अमेरिकन प्रतिक्रिया का चित्रण किया और 'दि ट्रैजिक म्यूज़' (१८९०) तथा अन्य उपन्यासो मे अग्रेज़-जीवन का अध्ययन किया। जैसे-जैसे उसकी साहित्यिक सक्रियता बढती गई, वैसे ही वह शैली मे जटिल होता गया। उस जटिलता का दर्शन हमे 'दि विग्स ऑफ दि डव' (१९०२), 'दि ऐम्बैसेडर' (१९०३) और विशेषतः 'दि गोल्डन बोल' (१९०४) मे होता है। जेम्स विशेषकर उसकी अभिजात कुलीनता के प्रति बडी कमजोरिया लेकर यूरोप गया था। उसके जो आदर्श थे, वे उसे वहा न मिले, फिर भी उसने अपनी कल्पना को साहित्य मे सार्थक कर दिया है। यद्यपि चित्र अयथार्थ हैं फलतः जटिल होते गए। उसकी शैली बडी सूक्ष्म है और अपनी कल्पना के प्रति उसकी निष्ठा इतनी प्रबल है कि अपने साहित्यिक विस्तार मे वह चित्रण की एकरूपता के कारण यथार्थ लगने लगता है, मिथ्या भी निरतर के अकन से नित्य सिद्ध होने लगता है।

टॉमस हार्डी इग्लैड के सबसे महान् उपन्यासकारो मे से है। टॉमस हार्डी और हेनरी जेम्स समसामयिक हैं, पर दोनो की दुनिया अलग-अलग है। हार्डी का पहला उपन्यास १८७१ मे 'डेस्परेट रैमेडीज़' निकला और तब और 'जूड दि ऑब्स्क्योर' के १८९५ मे प्रकाशन के बीच वह निरतर उपन्यास लिखता गया। उनमे सबसे महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित हैं—'दि रिटर्न ऑफ दि नेटिव' (१८७८), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'दि मेयर ऑफ कैस्टर-ब्रिज' (१८८६), 'दि वुडलैंडर्स' (१८८७) और 'टैस ऑफ दि डुर्बवित्स' (१८९१)। हार्डी पेशे से शिल्पी था और अपनी कला को भी उसने शिल्प का महत्त्व दिया। इमारत की एक-एक ईंट उसने प्लान के मुताबिक बिठाई। परतु वह प्रारब्धवादी था।

---

१. Henry James (१८४३-१९१६)

प्रारब्ध मनुष्यो को निरतर उनके अत की ओर खीचता जाता है, सदा उनके सुख की सम्भावनाओ से दूर, दु ख की ओर। उसका जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण प्राय दर्शन का रूप धारण कर लेता है। उन्नीसवी सदी का भौतिक आशावाद और ईसाई धर्म की सात्व-नाए, दोनो मे उसका अविश्वास था जो निरतर बढता गया और जीवन का अर्थ उसके लिए प्राय कुछ नही रहा। जीवन को उसने निरुद्देश्य माना। फिर भी प्रारब्ध के शिकार मानवो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है और उसकी यह सहानुभूति उन्ही तक सीमित नही, कीडे-मकोडो तक को छू लेती है। हार्डी कथानक का भी असाधारण शिल्पी है और घटना-चक्र निरतर सहज रीति से उसके उपन्यासो मे घूमता है। देहात का जीवन उसके उपन्यासो मे मूर्तिमान हो उठता है। 'टैस' और 'जूड दि ऑब्स्क्योर' मे तो उसकी कला ग्रीक ट्रैजेडी का रूप धारण कर लेती है। वर्डस्वर्थ की सम्मोहक करुण प्रकृति उसके हाथ मे निताात क्रूर बन जाती है। उसके सुदरतम चरित्र वे है जो नगर के जीवन से दूर गावो के अकृत्रिम वातावरण मे रहते है और नगर की सत्ता स्वीकार नही करते। हार्डी को एक ओर तो 'दूसरे दर्जे का रोमाटिक', दूसरी ओर साहित्य के महानतम व्यक्तियो मे से एक होने का श्रेय मिला है। इसमे सदेह नही कि उसका स्थान अग्रेजी साहित्य मे बहुत ऊचा है, परतु उसका साहित्य आगे भी पाठको को आकृष्ट करेगा, इसमे सदेह है।

डारविन के वानस्पतिक विज्ञान ने जिन अनेक अग्रेज साहित्यिको को प्रभावित किया था, सैमुएल बटलर[1] भी उन्हीमे था। अपने उपन्यास 'दि वे ऑफ ऑल फ्लेश' (१९०३) मे उसने स्विफ्ट की व्यग्यात्मक शैली का सहारा लिया और विक्टोरियाकालीन समाज के तथाकथित समन्वित दृष्टिकोण पर गहरा प्रहार किया। उसकी कृतिया 'अरवोन' (१८७२) और 'अरवोन रिविजिटेड' (१९०१) इस दिशा मे और चुटीली सिद्ध हुई। समसामयिक मूल्यो पर उनकी व्यग्यात्मक चोटे दिलचस्प है। बटलर बौद्धिक क्रातिकारी है और उसकी कृतिया नितात मौलिक है।

१८७०-८० की दशाब्दी मे उपन्यासो के आकार मे विशेष परिवर्तन हुआ। भारी-भरकम उपन्यास लोगो की रुचि से गिर गए और प्रकाशको ने भी देखा कि छोटे उपन्यास छापने मे ही अधिक लाभ है। रॉबर्ट लुई स्टिवेन्सन[2] इस परिवर्तन के स्रष्टाओ मे प्रथम था। उसका 'ट्रेजर आइलैंड' प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया। छोटे उपन्यासो के साथ ही उन छोटी कहानियो का भी प्रादुर्भाव हुआ, जिनका आरम्भ एडगर एलेन पो ने अमेरिका मे पहले ही कर दिया था। स्टिवेन्सन की 'न्यू अरेबियन नाइट्स' (१८८२) के बाद उसके और भी रोमाटिक उपन्यास निकले—'किडनैप्ड' (१८८६), 'दि ब्लैक एरो' (१८८८), 'दि मास्टर ऑव बैलेन्ट्रे' (१८८९), 'दि राग बाक्स' (१८८९)। 'डाक्टर जैकिल ऐण्ड

---

१ Samuel Butler (१८३५-१९०२); २ Robert Louis Stevenson (१८५०-९४)

मिस्टर हाइड' मे स्टिवेन्सन ने नेक-बद का एक रूपक प्रस्तुत किया जो आज भी काफी जनप्रिय है। स्टिवेन्सन कलाकार था और उसकी कला क्या उपन्यास, क्या कहानिया, क्या निबन्ध, क्या पत्र-लेखन सभी सहज और असामान्य है। उसके निबन्ध तो शैली के प्रतीक है—जैसे उसका पाठक सामने हो और उससे वह सीधा बात कर रहा हो। उसके भ्रमण-वृत्तान्त तो सर्वथा अनूठे है।

उसी काल कुछ ऐसे उपन्यासकारो का प्रादुर्भाव हुआ जो बडे सफल हुए, परन्तु जो कहानी कहने मात्र मे निपुण थे और जिन्होने पाठक जनता को देखकर लिखा और लोकप्रिय हो गए। सही उपन्यासकारो की श्रेणी मे उन्हे नही रखा जा सकता, यद्यपि उनमे से कई उनके स्तर को छू लेते है। ये हैं—राइडर हैगर्ड[1], ए० कानन डॉयल,[2] मिसेज हम्फी वार्ड,[3] हॉल केन,[4] मेरी कोरेली,[5] ग्राट एलेन,[6] एडगर वालेस[7] और पी० जी० वुडहाउस[8]। ये प्लॉट की खूबी और कथानक की रोचकता से पाठको का मन हर लेते हैं। इन्होने अपनी कृतियो से धन भी काफी कमाया। इनमे हॉल केन और वुडहाउस विशेष उल्लेखनीय है। वुडहाउस ने तो अग्रेजी साहित्य को अत्यन्त मुहावरेदार भाषा भेट की।

जॉर्ज गिसिग[9] और रुडयार्ड किपलिग ने भी इसी काल लिखा। दोनो ऊपर लिखे उपन्यासकारो से अपनी कला और मर्यादा मे भिन्न थे। गिसिग लोकप्रिय नही हो सका, यद्यपि उसमे मेधा अथवा साहस की कमी न थी। अपने 'वर्कर्स इन दि डॉन' (१८८०), 'डिमोस' (१८८६), 'दि नेदर वर्ल्ड' (१८८९) और 'न्यू ग्रब स्ट्रीट' (१८९१) मे उसने अपने समाज के भ्रष्टाचार का भयानक भडाफोड किया। उसकी अवहेलना शायद उसकी अप्रिय सत्य के प्रति व्यग्रता और प्रहार के कारण हुई। उसकी कृतियो मे रजन का अभाव था। 'दि प्राइवेट पेपर्स ऑफ हेनरी राईक्राफ्ट' (१९०३) मे वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ। किपलिंग (१८६५-१९३६) बडा लोकप्रिय हुआ। वह साम्राज्यवादी था और उसका दृष्टिकोण तब के इग्लैड को अधिक प्रिय था। जब वह साहित्य के क्षेत्र मे उतरा, स्टिवेन्सन की ही भाति कहानी और छोटे उपन्यास लिखने मे वह उस्ताद था। उसकी यह सक्षिप्त शैली भी उसकी लोकप्रियता मे सहायक हुई। उसकी सफलता का एक और कारण उसके कथानको की भारतीय पृष्ठभूमि भी था। उसकी कहानियो—'प्लेन टेल्स फ्रॉम दि हिल्ज' (१८८८)—और उपन्यासो—'दि लाइट दैट फेल्ड' (१८९१) और 'किम'

---

१ Sir Henry Rider Haggard (१८५६-१९२५), २. Sir Arthur Canon Doyl (१८६९-१९३०); ३ Mrs Mary Humphry Ward (१८५१-१९२०); ४ Sir Thomas Henry Hall Caine (१८५३-१९३१), ५ Marie Corelli (१८६४-१९२४) ६ Charles Grant Blairfindie Allen (१८४८-९९); ७ Edgar Wallace (१८७५-१९३२), ८ P G Woodhouse, ९ George Robert Gissing (१८५०-१९०३)

(१८९६), 'लव ऐण्ड मिस्टर लेविशम' (१९००) और 'किप्स' (१९०६) भी लिखे। इनमे अन्तिम सुघड कृति है। वेल्ज़ कलाकार मे अधिक विचार-प्रधान है और, यद्यपि अनेकत वह सुन्दर हैं, उसकी शैली 'जर्नलिस्टिक' है। 'एन वेरोनिका' (१९०९) और 'दि न्यू मेकियावेली' (१९११) फिर भी सुन्दर है। उसका 'टोनो बगे' (१९०९) असाधारण व्यग्यकृति है, प्रचुर टिकाऊ। 'दि हिस्ट्री ऑफ मिस्टर पोली' (१९१०) मे वह एक बार फिर 'किप्स' की परपरा की ओर मुडा और 'मिस्टर ब्रिटलिंग सीज़ इट थ्रू' (१९१६) मे उसने महासमर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया मूर्त की। उसका दृष्टिकोण दिन-दिन विश्ववादी होता जा रहा था और वैज्ञानिक होने के कारण विशेपत वह मानव-जाति को एक इकाई के रूप मे देखने लगा। इसी विचार का परिणाम 'दि आउट लाइन ऑफ हिस्ट्री' (१९२०) नामक उसका इतिहास हुआ। 'दि वर्ल्ड ऑफ विलियम क्लिसोल्ड' (१९२६) और 'जोन ऐड पीटर' (१९१८) मे उसकी विचार-सरणी और भी गद्यपरक हो गई। परतु निश्चय ही वेल्ज़ अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था और उसके 'किप्स' तथा 'टोनो बगे' बने रहेगे।

सामाजिक उपन्यासो की परपरा बीसवी सदी मे स्वाभाविक ही चल रही है, परन्तु अन्य प्रकार के उपन्यास भी बराबर लिखे जाते रहे है। टियोडोर जोज़फ कॉनरड कोरज़े-नियोस्की नामक पोल ने भी कुछ दिलचस्प उपन्यास लिखे। वह जोज़फ कॉनरड[1] नाम से प्रसिद्ध है। उसके उपन्यासो मे जहाजी-समुद्री जीवन का अच्छा खाका बन पडा है। उसकी प्रसिद्ध कृतिया है—'अलमेयर्स फॉली' (१८९५), 'दि निगर ऑफ दि नार्सिसस' (१८९८), 'यूथ' (१९०२), 'टाइफून' (१९०३), 'नौस्ट्रोमो' (१९०४), 'लार्ड जिम' (१९०६), 'दि ऐरो ऑफ गोल्ड' (१९१९)। कॉनरड अग्रेजी के विदेशी निर्माताओ मे से है। जॉर्ज मूर[2] ने फ्रेच साहित्य से प्रभावित होकर कुछ उपन्यास और आत्म परिचायक ग्रथ रचे। इनमे मुख्य हे 'कन्फेशन्स ऑफ ए यगमैन' (१८८८), 'हेल ऐण्ड फेयरवेल अवे' (१९११), 'सॉल्वे' (१९१२), 'वेल' (१९१४), 'ईस्थर वाटर्स' (१८८४), 'दि ब्रूक केरिथ' (१९१६), 'हेलाइज़ ऐण्ड अबेलार्ड' (१९२१)। इनमे अन्तिम धार्मिक उपन्यास है। सॉम्रसेट मॉम[3] ने अपने उपन्यासो मे बडी सफलता पाई है और आज सतहत्तर वर्ष की आयु मे भी लिखता जा रहा है। 'लिज़ा ऑफ लैंबेथ' (१८९७) के लन्दन-जगत् को छोड अपने पिछले उपन्यासो मे उसने चीन, मलाया आदि पौर्वात्य देशो का जीवन व्यक्त किया है। उसकी 'दि ट्रैम्बलिम ऑफ ए लीफ' (१९२१), 'दि पेन्टेड वेल' आदि सुघड कृतिया हैं। आलोचको ने उसकी उपेक्षा की है परतु यथार्थ के निरूपण मे वह निपुण और साहसी है। यह सत्य है, उसके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय है।

---

१ Joseph Conrad (१८५७-१९२४), २ George Moore (१८५२-१९३३),
३. Somerset Maughm (ज० १८७४)

मॉम के विपरीत ई० एम० फोरेस्टर[1] को आलोचको का भी साधुवाद प्राप्त है। वह इधर के काल मे सुन्दर कलाकार माना जाता है। १९११ मे ही प्राय बत्तीस वर्ष की आयु मे (जन्म १८७९) 'हावर्ड्स ऐण्ड' (१९२२) द्वारा उसे सफलता मिली परन्तु उसकी ख्याति 'ए पैसेज टू इन्डिया' (१९२४) द्वारा प्रतिष्ठित हुई। यह उपन्यास किपलिंग के उपन्यासो का जवाब था। फोरेस्टर चित्रो का धनी है, यद्यपि वह कम से कम शब्द-वर्णों का प्रयोग करता है। उसकी यह स्तुत्य कृति व्यग्यात्मक है। टी० एफ० पाविज़[2] का उपन्यास 'मिस्टर वैस्टन्स गुड वाइन' (१९२८) भी व्यग्य की रहस्यवादी पृष्ठ-भूमि पर बना है। उसी काल मिस रोज मेकॉले[3] ने भी अपने 'अरफन आइलैंड' (१९२४) के साथ साहित्य-क्षेत्र मे पदार्पण किया। इस काल के दो लोकप्रिय उपन्यासकार ह्यू वाल-पोल[4] और जे० बी० प्रीस्टले (जन्म १८९४) है। वालपोल ने अपने 'दि वुडन हॉर्स,' 'दि कैथेड्रल' (१९२२) मे लन्दन के दृश्य प्रतिबिबित किए। उसका ऐतिहासिक उपन्यास 'रोग हेरिस' (१९३०) सुघड कृति है। 'दि गुड कम्पेनियन' ने प्रीस्टले को सम्मान दिया और 'एजिल पेवमैन्ट' (१९३०) आदि द्वारा वह निरन्तर ख्याति कमाता गया। सम-सामयिक इग्लैंड उसके उपन्यासो मे खुल पडा है। इगलैंड के प्रति उसका प्रेम भी उसकी ख्याति का कुछ मात्रा मे कारण है।

इधर के उपन्यासकारो मे से कुछ ने उपन्यास को आत्मानुभूति और अपने विचारो के प्रकाशन का माध्यम भी बनाया है। डी० एच० लॉरेन्स[5] असामान्य उपन्यासकार हो गया है, जाने हुए उपन्यासकारो से सर्वथा भिन्न। यह उसके कटु जीवन के अनुभवो का परिणाम था। उसका पिता खान का मजूर था और लॉरेन्स ने मजूरो की सर्वहारा, घृणित, कठिन, दैन्य, क्रूर, भयानक दुनिया आखो देखी थी और आज की सभ्यता उसे नितान्त घृणास्पद लगी। उसके विचार से इसने मानव-भावावेगो को नष्ट कर दिया है, जिनका निवर्तन ही अपेक्ष्य है। अपनी सफल कृति 'सन्स ऐण्ड लवर्स' (१९१३) मे उसने इस दिशा की ओर अस्पष्ट सकेत मात्र किया। फिर उसका अदम्य भावस्रोत 'दि रेनबो' (१९१५), 'विमेन इन लव' (१९२१) और 'आरोज़ रॉड' (१९२२) मे जैसे फूट पडा। अपने 'कगारू' (१९२३) और 'दि प्लूम्ड सर्पेन्ट' (१९२६) मे जैसे वह सभ्य दुनिया छोड मैक्सिको की ओर भाग चला। जीवन की उसकी खुली व्याख्या और चित्रो के कारण उसकी कुछ कृतिया जब्त कर ली गई थी, जिसकी प्रति-क्रिया मे उसने जीवन की नग्नता को और खोलते हुए चुनौती के रूप मे 'लेडी चैटर-

---

१ Edward Morgan Forester (ज० १८७९); २ T. F Pawiz; ३. Miss Rose Macaulay (ज० १८९५); ४. Hugh Walpole (१८८४-१९४१); ५ David Herbert Lawrence (१८८७-१९३०)

लीज़ लवर' (१६२८) लिखी—यौन, निरावृत अकन। परपरा के शत्रु लॉरेंस ने सांप्रति के प्रति विद्रोह किया परतु वह स्वयं यौन की परिधि से बाहर न जा सका। काश, अपनी अनुभूति और 'दृष्ट' का उपयोग उसने सभ्यता के पुनर्निर्माण मे किया होता।

लॉरेन्स के साहस का लाभ कुछ तरुण कलाकारो को भी हुआ। उनमे आल्डुस हक्स्ले[1] प्रधान है, यद्यपि वह लॉरेंस के साध्य से, उसके दर्शन से, नितान्त दूर है। इतनी सूक्ष्म मेधा इस शताब्दी के उपन्यास-निर्माण मे, उस साहित्य के दार्शनिक विश्लेषण मे किसी और को न मिली, यद्यपि यह वक्तव्य दर्शन और निरूपण के पक्ष मे ही सत्य है। पिता की दिशा मे उस मेधावी को चार्ल्स डॉरविन के सहायक टॉमस हक्स्ले का सुदूर पैतृक प्राप्त है और माता के पक्ष मे मैथ्यू आर्नल्ड का योग, फिर वह आज के समार के एक असाधारण प्रतिभाशाली परिवार का व्यक्ति है। उसका बौद्धिक स्तर इग्लैंड के पिछले उपन्यासकारो से सर्वथा भिन्न है। किसी साहित्यकार ने प्रथम महासमर के बाद के इग्लैंड के बौद्धिक जीवन का विश्लेषण ऐसा समर्थ और सही नही किया जैसा हक्स्ले ने। अपने उपन्यास 'क्रोमयेलो' (१६२१) और 'ऐण्टिक हे' (१६२३) मे उसने वचक जीवन का व्यग्यात्मक निदर्शन किया है। 'दोज़ बैरेन लीव्ज' (१६२५) मे एक प्रकार की गवेषणा है—अनुसधान और प्राप्ति। यौनानुभूति उसके लिए लॉरेन्स की भाति आनन्दानुभूति नही है। वह उससे दूर है। मानव को वह बौद्धिक स्तर पर सर्वथा खोलकर देख लेता है, निर्लिप्त, यद्यपि कष्टकर उद्रेक से अशक्य हो जाता है। उसकी सुन्दरतम, सर्वथा मौलिक कृति, 'प्वाइट काउटर प्वाइट' (१६२८) है। जिस यान्त्रिक ससार मे वेल्ज़ प्रेम-विह्वल हो सकता था, उससे हक्स्ले को किंचित् भी सतोष नही होता। इस यान्त्रिक दुनिया को वह अपने 'ब्रेव न्यू वर्ल्ड' (१६३२) मे और भी फटकारता है। धीरे-धीरे मानव-पशु के इस विवेचक की प्रवृत्ति और भी अन्तर्मुखी हो जाती है और उसके 'आइलेस इन गाज़ा' (१६३६) से लगता है जैसे उपन्यास अब उसके विचारो का वहन नही कर सकते। 'एण्ड्स एण्ड मीन्स' (१६३७) मे तो वह कथानक तक को छोड देता है और उसका चिन्तन कला से दूर दर्शन का रूप धारण कर लेता है। कुछ अजब नही जो, जैसा उसने लेखक से कहा था, 'टाइम मस्ट हैव ए स्टॉप' उसे अपनी कृतियो मे सबसे सुन्दर और महान् लगता हो। और कुछ अजब नही कि उसकी प्रेरणा साप्रति जगत् को भूलकर अलख को खोजने लगे। आल्डुस हक्स्ले ने अभी हाल रामकृष्ण-मिशन के लॉस-एन्जिल्स मठ के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द से कान फुका-कर शिष्यत्व ग्रहण कर लिया है।

कुछ उपन्यासकारो ने इधर मनोवैज्ञानिक ढग से भी अन्तर्जीवन को व्यक्त

---

१. Aldous Huxley (ज० १८९४)

करना शुरू किया है । इनमे डोरोथी रिचर्डसन[1] पहली है । उसने अपने 'प्वाइटेड रूफ्स' (१६१५) मे अकेले एक चरित्र की चेतना का अध्ययन किया है। इस दिशा मे मिसेज वर्जीनिया वुल्फ[2] को विशेष सफलता मिली । उसके उपन्यासो मे प्रधान है–'दि वॉएज़ आउट' (१६१५), 'नाइट ऐण्ड डे' (१६१६), 'जैकाब्स रूम' (१६२२), 'मिसेज डैलोवे' (१६२५), 'टु दि लाइटहाउस' (१६२७), 'आर्लैण्डो' (१६२८), 'दि वेव' (१६३१) और 'दि इयर्स' (१६३७) । वर्जीनिया वुल्फ की उपन्यास कला मे चित्रकला का 'इम्प्रेशनिज्म' उतर आया है । इस प्रकार उसके उपन्यास एक प्रकार का आन्तरिक एकान्त चित्रण हो गए है । परन्तु उसके वर्णन मे माधुर्य और प्रवाह है, विनोद है । विनोदनात्मरजन उसके 'ऑर्लैण्डो' का प्राण है ।

इस अध्याय का अन्त जेम्स ज्वायस[3] की कृतियो के उल्लेख बिना नही किया जा सकता । जेम्स ज्वायस को नितान्त सराहा भी गया है, खुली गाली भी मिली है । अच्छा-बुरा वह जैसा भी हो, शताब्दी का वह शायद सबसे मौलिक उपन्यासकार है । लघु कहानियो के जगत् मे अपने सग्रह 'डब्लिनर्स' द्वारा नाम कमा वह उपन्यासो के क्षेत्र मे उतरा । 'ए पोर्ट्रेट ऑफ दि आर्टिस्ट ऐज ए यगमैन' (१६१६) के आधार से उठकर उसकी सर्वथा वैयक्तिक कला 'उलिसेज' (१६२२) मे प्रौढ हो गई। उसके बाद 'फिनेगन्स वेक' (१६३६) प्रकाशित हुआ । उसने सचेतक-अचेतक दोनो जीवनो का सर्वांगीण रूप मे चित्रण किया । उसके दर्शन मे देश और काल की सज्ञा कृत्रिम है, सब कुछ सापेक्ष्य है, कला उसी सापेक्ष्यता का निरूपण है । 'उलिसेज' का जगत यौनचित्रण का अनगीकृत निरावृत्त अतरग है । उसकी कला धर्म और चर्च के प्रति उसके विद्रोह मे निखरी । ज्वायस विश्लिष्ट जगत् मे समष्टि ढूढता है। उसकी कृतिया इसी 'एकायनता' (एकता) के अन्वेषण का परिणाम है। ज्वायस के उपन्यासो का प्रभाव युवा सृजको पर गहरा पडा ।

: ५ :

अंग्रेज़ी गद्य साहित्य

अट्ठारहवीं सदी तक

यहा हम केवल उस गद्य का इतिहास लिखेगे, जो अधिकतर निबधगत है, कहानी, उपन्यास और नाटक सबधी गद्य से भिन्न ।

अग्रेजी गद्य का आरम्भ दसवी सदी से होता है । उसके पहले और काफी बाद

१. Dorothy Richardson, २. Virginia Woolf (ज १८८२), ३ James Joyce (१८८२-१६४१)

तक लैटिन का बोलबाला था। जब उसका स्थान अंग्रेज़ी ने लिया, तब भी उसकी परपरा जीवित रही। लोग लैटिन मे बोलते-लिखते थे और शिष्टता तथा शिक्षित की तो पहिचान ही उसके प्रयोग से होती थी। लैटिन का जब बोलबाला या साधारण प्रयोग उठ गया, तब भी उसकी परपरा बनी रही और इसीसे उस काल अंग्रेज़ी के दो रूप हो गए, एक तो लैटिन-बोझिल, दूसरी सहज अंग्रेज़ी। लैटिन भाषा के रूप मे तो उठ गई, पर गद्य की कृत्रिमता मे अपनापा छोडती गई। इसी बोझिल भाषा मे ईल्फिक ने लिखा। अल्फ्रेड का 'क्रॉनिकल' सरल शैली वाली अंग्रेजी मे लिखा गया। नॉर्मन-विजय (१०६६) के बाद लैटिन-शैली का अंग्रेज़ी गद्य मिट गया, अल्फ्रेड (मृत्यु ९०१) प्राय. १०० वर्ष बाद तक चलता रहा। इस प्रकार प्राजल सरल अंग्रेज़ी अपनी स्वाभाविक धारा मे बह चली, यद्यपि नार्मनो के साथ आई फ्रेंच भाषा का दबदबा उस धारा पर कुछ काल के लिए हावी हो गया। उस प्राचीन गद्य की परपरा का आरम्भ विशेषत तेरहवी सदी मे हुआ। सेन्ट मार्गरेट, सेन्ट कैथरीन, सेन्ट जुलियाना के चरित आदि उसके स्मारक हैं। १४७६ मे इग्लैण्ड मे विलियम कैक्सटन[1] का छापाखाना खुला। कैक्सटन के प्रेस और स्वय उसके प्रयास ने इग्लैण्ड को स्टैन्डर्ड भाषा दी। टॉमस मेलॉरी[2] ने १४७० मे 'मार्टी डी आर्थर' लिखी जो उसी प्रेस मे छपी। लार्ड बर्नर्स[3] ने फिर १५२० मे 'क्रॉनिकल' प्रस्तुत किया जो अनुवाद मात्र था, परन्तु जो चौदहवी सदी का जीवित चित्र प्रतिबिंबित करता था। इसी अनुवाद के साथ कुछ लोगो के विचार से आधुनिक अंग्रेज़ी गद्य का आरम्भ होता है। इसके बाद ही अंग्रेजी बाइबिल प्रस्तुत हुई जो अंग्रेज़ी गद्य का सहज अकृत्रिम अथच सशक्त रूप है। विलियम टिन्डेल[4] और माइल्स कॅवरडेल[5] उसके विधायक थे। जॉन वाइक्लिफ की १४वी सदी वाली शैली मे नया अनुवाद कल्पनातीत सुन्दर उतरा। टिन्डेल ने जो काम शुरू किया था, उसके प्राणदण्ड के बाद कॅवरडेल ने उसे पूरा किया। बाइबिल के अनुवाद के साथ ही तद्वर्ती धार्मिक साहित्य का भी उदय हुआ। उनमें जॉन फौक्स[6] का 'बुक आफ मार्टीयर्स' सबसे अधिक विख्यात है। उसमे प्रोटेस्टैंट शहीदो का बडा भावुक वर्णन है। इसका प्रोटेस्टैन्ट धर्म मे प्राय १०० वर्ष बाद तक बोलबाला बना रहा। रिचर्ड हुकर[7] ने १६वी सदी के अन्त मे अपनी 'लॉज ऑफ एकलेजिएस्टिकल पॉलिसी' सुन्दर सहज भाषा मे लिखी, यद्यपि उसकी शैली अंग्रेज़ी और लैटिन के बीच की थी, जिसमे स्पष्टत शालीनता तथा देशीयता का समान पुट था।

---

१ William Caxton (१४२१-९१), २ Sir Thomas Malory (मृ १४७१); ३. Lord Berners (१४६७-१५५३); ४ William Tindale (१४८४-१५३६); ५ Miles Coverdale (१४८८-१५६८); ६ John Foxe (१५१६-८७); ७ Richard Hooker (१५५४-१६००)

लेडी जेन ग्रे के शिक्षक रोजर ऐशम[1] ने 'टोक्सोफिलस' (१४५५) और 'दि स्कूल मास्टर' (१५७०) मे तत्कालीन गद्य शैली उद्घाटित की। १६वी सदी के तीसरे चरण के आरम्भ मे सर टॉमस नार्थ[2] ने प्लूटार्च के जीवन चरितो का अनुवाद किया जो शेक्सपियर आदि के तत्सबधी ऐतिहासिक नाटको का आधार बना। वैसे ही फिलेमन हॉलैण्ड द्वारा अनूदित प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' भी शेक्सपियर के बडे काम आई।

रैफेल होलिन्शेड[3] ने 'क्रॉनिकल' के रूप मे अग्रेजी जीवन को प्रतिबिबित किया था। वह भी शेक्सपियर की लेखनी के जादू से १६वी सदी के अन्त मे मूर्तिमान् हुआ। उसी सदी के अन्त मे रिचर्ड हकलुइट[4] ने 'दि प्रिसिपल वायजेज' नामक यात्रा-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और १७वी सदी मे रॉबर्ट बर्टन[5] ने 'अनाटॅमी ऑफ मलेकली' (१६२१) लिखकर मानव-मस्तिष्क की क्रियाओ पर प्रकाश डाला।

अग्रेजी गद्य का पहला वास्तविक महान् व्यक्ति फासिस बेकन[6] था। वस्तुत वह काल अग्रेजी गद्य के विकास मे बडा महत्व रखता है। उसी काल बाइबिल का 'सम्मत पाठ' भी प्रस्तुत हुआ। बेकन की विचारधारा ने तत्कालीन धार्मिकता को अपनी वैज्ञानिकता से चुनौती दी। बेकन स्वय तो रूढिवादी ही था परन्तु जिस मन स्थिति को उसने उत्साहित किया, वह धर्म-विरोधिनी सिद्ध हुई। बेकन की अधिकतर कृतिया लैटिन मे है और यह कुछ कम आश्चर्य की बात नही कि इग्लैड का तत्कालीन महत्तम गद्यकार अग्रेजी से उदासीन रहा हो। १५९७ मे उसके 'ऐसेज' प्रकाशित हुए। इन निबन्धो की शैली अत्यन्त कसी हुई, सूत्रवत् है। एक शब्द का व्यवहार भी वह आवश्यकता से अधिक नही करता।

१७वी सदी का पूर्वार्द्ध गृहयुद्ध और प्युरिटन-विजय का था। उस काल का गद्य गभीर और शालीन है, जिसका प्रभाव आज के पाठको पर गहरा पडता है। सर टॉमस ब्राउन[7], जेरमी टेलर[8] और जॉन मिल्टन ने तब अपनी शक्तिम शैली से अग्रेजी गद्य को सनाथ किया। ब्राउन पडित था, राजनीति से सर्वथा दूर। जादू और अमानुषिक घटनाओ मे उसका विश्वास था, यद्यपि वैद्य होने के कारण विज्ञान से उसका सीधा सम्बन्ध था। उसकी शैली मे दोनो का समावेश है और वह नितान्त सुन्दर बन पडी है। अपने 'हाड्रियोटेफिया' और 'अर्न बरियल' (१६५८) और 'रेलिजिओ मेडिसी' मे जिस शैली का ब्राउन ने उद्घाटन किया, वह आश्चर्यजनक है। जेरेमी टेलर ब्राउन का समकालीन था और उसकी कृतिया 'होली लिविग' (१६५०) तथा 'होली डाइग' (१६५१)—

---

१. Roger Ascham (१५१५-१५६८); २. Thomas North, ३ Raphael Holingshed; ४ Richard Hakluyt (१५५३-१६१६), ५ Robert Burton (१५७६-१६४०); ६ Francis Bacon (१५६१-१६२६), ७. Sir Thomas Browne (१६०५-८२), ८. Jeremy Taylor (१६१३-६७)

प्रवचन के क्षेत्र में भाषा की शालीनता में अपना जोड नही रखती। टेलर पादरी था। मिल्टन बाए हाथ से लिखा करता था और अधिकतर उसने लिखा भी लैटिन मे ही। व्याख्यान और लेखन की स्वतन्त्रता के पक्ष मे १६४४ मे जो उसने अपनी 'एरियोपेजेटिका' लिखी, वह शक्ति तथा शालीनता मे लासानी है, यद्यपि उसके वाक्यो की पेचीदगी कुछ सरल नही अनेक बार तो उसने अग्रेज़ी और लैटिन की खिचडी तक कर दी है।

१७वी सदी के आइजक वाल्टन[1] का 'कम्प्लीट ऐंगलर' (१६५३) सदियो पार आज भी पाठको को आकृष्ट करता है। उसने अनेक जीवन-चरित्र लिखे और यह 'ऐंगलर' तो गृह-युद्ध के समय ही लिखा गया, जिसमे मछली मारने के व्यसन के साथ ही अग्रेज़ी देहात का जीवन भी प्रतिबिम्बित हुआ। १६६० के पुनरारोहण के साथ अग्रेज़ी गद्य का एक नया रूप शुरू हुआ। चार्ल्स द्वितीय लुई के फ्रासीसी दरबार मे प्रवासी के रूप मे एक ज़माने] तक रह चुका था। वह जब स्वदेश लौटा तो लुई के दरबार की अनेक विशेषताए साथ लेता आया। उनमे से एक विशेषता फ्रेंच भाषा की चपलता, सरलता और उसका सहज प्रवाह था। अग्रेज़ी पर फ्रेच भाषा की इस रीति की छाया पडी। रॉयल सोसाइटी की नीव ने न केवल वैज्ञानिक विषयो की छानबीन शुरू की वरन् उसका प्रभाव साहित्य और दर्शन पर भी पडा। कवि और नाटककार जॉन ड्राइडन ने साहित्य सबधी निबन्ध तभी लिखे। उनमे 'ऐसेज़ ऑफ ड्रामेटिक पोएज़ी' (१६६८) सबसे पहले प्रकाशित हुआ और 'प्रिफेस टु दि फेबुल्स' (१७००) सबसे पीछे। ड्राइडन की शैली बडी सहज और सरल थी।

इसी काल टॉमस होबेस[2] और जॉन लॉक[3] ने भी अपने राजनीतिक ग्रन्थ लिखे—होबेस ने 'लेवायथान' (१६५१) और लॉक ने 'सिविल गवर्नमेट'। लॉक का निबन्ध 'ऐन ऐसेज़ कनसर्निंग ह्यू मन अन्डरस्टैंडिंग' (१६६०) का प्रभाव सारे यूरोप पर पडा।

१७वी सदी का सबसे विख्यात गद्यकार सैमुएल पेपिज़[4] था। उसने साधारण जन की साधारण बाते अपनी कृति मे लिखी, पहली बार और अपने जीवन की बाते सविस्तार। पेपिज़ रॉयल नेवी का विधाता और रॉयल सोसाइटी का प्रधान था। उसकी डायरी सादी और अद्भुत है, जिसका जोड अग्रेज़ी साहित्य मे नही। पेपिज के कुछ और समकालीन थे जिन्होने उसीकी भाति अपने जीवन की भी अपने लेखो पर छाया डाली। जॉन एवेलिन[5] रॉयल सोसाइटी का सदस्य, राजदरबारी और पेपिज़ का मित्र था, जिसने

---

१ Izaak Walton (१५९३-१६८३); २ Thomas Hobbes (१५८८-१६७८), ३ John Locke (१६३२-१७०४), ४ Samuel Pepys (१६३२-१७०४), ५ John Evelyn (१६२०-१७०६)

उद्यानो, मैदानो, यात्राओ आदि का वर्णन लिखा। वह वस्तुत चार्ल्स द्वितीय के सभासदो से रुचि मे बडा भिन्न था। पेपिज और ऐवेलिन की ही भाति क्लेयरेन्डन का अर्ल एडवर्ड हाइड[1] जब अपने विषय मे लिखने चला तब राजनीति से घने रूप से सबधित होने के कारण उसे 'हिस्ट्री ऑफ दि रिबैलियन' लिख देना पडा। उसकी शैली जटिल है, फिर भी तत्कालीन घटनाओ का उससे भरपूर ज्ञान हो जाता है।

क्वीन एन का काल अग्रेज़ी साहित्य के समुन्नत युगो मे से है। उस काल के अधिकतर गद्य ने उपन्यास का रूप लिया। 'रॉबिन्सन क्रूसो' के लेखक डि फो ने १८वी सदी मे फिर भी गद्य का रुख एक नई दिशा मे फेरा—पत्रकारिता की दिशा मे। 'दि रिव्यू' पत्र-शैली का ही नमूना है। रिचर्ड स्टील[2] और जोजेफ ऐडिसन[3] ने उस दिशा मे और सफल प्रयत्न किए और उनके पत्रो के कॉलमो मे, जो मध्यवर्ग के पाठको के लिए छपते थे, आचार, फैशन, साहित्य सभी कुछ रूपायित होता था। निबन्ध-लेखन भी उस काल एक नए स्तर पर उतरा। ऐडिसन ने अपने 'स्पेक्टेटर क्लब' मे एक नई दुनिया ही रच डाली। जोनाथन स्विफ्ट[4] ने बडी निर्भीकता से जानी हुई दुनिया के व्यग्यात्मक चित्र सिरजे। 'दि बैटल ऑफ दि बुक्स' और 'ए टेल ऑफ ए टब' (१७०४) से लेकर 'गुलिवर्स ट्रैवेल्स' (१७१६) तक की कृतिया एक के बाद एक साहस और शैली की दुनिया रचती गईं। उसके 'जर्नल टु स्टेला' से प्रमाणित है कि उसके व्यग्य ने शत्रु नही उत्पन्न किए। 'ड्रैपियर्स टेलर्स' (१७२४) मे उसने राजनीतिक वचकता का घृणापूर्वक भडाफोड किया। शक्ति, सूक्ष्म और व्यग्यात्मक विनोद मे स्विफ्ट अकेला है। उसने अग्रेज़ी गद्य को नई शक्ति और दिशा दी।

आधुनिक गद्य

१८वी सदी मे इग्लैंड के सक्रिय सघर्षमय जीवन ने भाषा की मर्यादा इस मात्रा मे स्थापित कर दी कि वह अभिव्यक्ति का असाधारण साधन बन गई। राजनीति, विज्ञान, धर्म सभी क्षेत्रो मे उसकी अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई और सर्वत्र उसने समर्थ निर्माताओ का सक्रिय योग पाया। जिस प्रकार होबेस और लॉक ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त दार्शनिक सुगम गद्य मे व्यक्त किए थे, उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र मे भी जोजफ बटलर[5]-सा विवेचक हुआ। 'दि अनालोजी ऑफ रिलीजन' (१७३६) द्वारा उसने धर्म की स्थापनाओ

---

१. Edward Hyde, Earl of Clarendon (१६०८-१६७४), २. Richard Steele (१६७२-१७२६); ३ Joseph Addison (१६७२-१७१६); ४ Jonathon Swift (१६६७-१७४५); ५. Joseph Butler (१६९२-१७५२)

का सशक्त समर्थन किया। परतु दुनिया तेज़ी से बदलती जा रही थी और लोगो मे परपरा के प्रति सन्देह घर करता जा रहा था। ऐसो मे बर्नार्ड मेन्डेविल[1] असामान्य मौलिकता का व्यक्ति था। 'दि फ़ेबल ऑफ दि बीज' (१७१४) मे उसने राज्य की वचकता पर गहरी चोट की। उसके निबन्ध आज के पत्रकारो की कुशल शैली मे लिखे गए है, सरकार की आलोचना मे।

जॉर्ज बर्कले[2] आदर्शवादी था और जीवन के क्षेत्र मे उसने दार्शनिक समस्याओ को सरका दिया। उसने भौतिक ससार के अस्तित्व को न मानकर चेतना को ही मानव-ज्ञान का आधार स्वीकार किया। डेविड ह्यूम[3] ने भी ज्ञान-चिन्तन मे ही अपना गद्य माजा और देकार्त को अपने अनुशीलन मे पुनर्जीवित किया। ह्यूम के 'ऐसेज़ कनसर्निंग ह्यूमन अडरस्टैंडिंग' (१७४८) का चिन्तन के क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पडा।

१८वी सदी मे इतिहास का विशेष चिंतन हुआ है और इतिहास के क्षेत्र मे विशेषत गद्य-भारती जागी। ह्यूम स्वय इतिहासज्ञ था, यद्यपि उस दिशा मे 'दि डिक्लाइन ऐण्ड फाल ऑफ दि रोमन एम्पायर' (१७७६) लिखकर एडवर्ड गिबन[4] ने बडा नाम कमाया। उसकी 'ऑटोबायोग्राफी' स्वय-शैली का सुघड नमूना है। उसके इतिहास ने प्राचीन का उद्घाटन किया, जिससे नवीन का सापेक्ष्य मूल्याकन किया जा सका। गिबन की कृति का भी उस काल के ज्ञान पर बडा प्रभाव पडा। प्रसिद्ध डाक्टर सैमुअल जॉन्सन गिबन के मित्रो मे से था। उसके व्यक्तित्व ने अंग्रेज़ी साहित्य पर असाधारण प्रभाव डाला। उसका यश अधिकतर जेम्स बॉसवेल[5] का 'लाइफ ऑफ जॉन्सन' पर अवलबित है, जिसमे उस महाकाय साहित्यिक के प्रतिपल का जीवन प्रतिबिंबित है। जॉन्सन का शेक्सपियर की कृतियो का सस्करण (१७६५) उस महाकवि के अध्ययन मे बडा सहायक सिद्ध हुआ। उसकी भूमिका ने अपने साहसभरे दृष्टिकोण से एक प्रकार से उसकी रक्षा कर ली। जॉन्सन की महान् कृति उसकी 'डिक्शनरी' (कोष) (१७४७-५५) है, जिसपर बाद के प्राय समस्त कोष अवलम्बित हुए। शब्दो का जितना ज्ञान उनके निर्माण और विकास के रूप मे जॉन्सन को था, उतना किसीको न था। जॉन्सन की बौद्धिक चर्चा प्रसिद्ध है। उसके क्लब मे बर्क, रेनाल्ड्स (जिसके घर क्लब की बैठके हुआ करती थी), फॉक्स आदि सभी बैठते थे। उसकी वाक्यावली की छाप अंग्रेज़ी साहित्य मे उतर गई। उसी चर्चा की गद्य शैली मे जॉन्सन ने कॉवले से ग्रे तक के कवियो का जीवन चरित 'दि लाइव्ज़ ऑफ दि पोयट्स' (१७७९-८१) के नाम से प्रकाशित किया। 'दि रैम्बलर' और 'दि आइडिलर' मे उसने ऐडिसन से कही

---

१. Bernard Mendeville (१६७०-१७३३) २. George Berkeley (१६८५-१७५३); ३. David Hume (१७११-७६); ४ Edward Gibbon (१७३७-९४); ५ James Boswell (१७४०-९५)

अधिक साहित्यिक पूजी प्रस्तुत की। इन पत्रो के अतिरिक्त उसके ज्ञान का भडार 'ए जर्नी टू दि वेस्टर्न आइलैंड्स ऑफ स्कॉटलैण्ड' (१७७५) मे भी खुल पडा है। उसके 'रैसेलस' का हवाला अन्यत्र दिया जा चुका है।

व्यक्तित्व मे जॉन्सन से नितान्त लघु होकर भी कर्तृत्व मे ऑलिवर गोल्डस्मिथ उससे महान् था। उसमे साहित्यिक प्रतिभा कही अधिक थी। जॉन्सन ने उसके विषय मे स्वयं कहा है कि उसने साहित्य के सभी प्रकारो को अपनाया और जिस-जिसको उसने अपनाया, उस-उस प्रकार को अलकृत किया। नाटककार और उपन्यासकार तो वह था ही, निबन्धकार भी वह असामान्य था। उसके निबन्धो मे उसका व्यक्तित्व खुल पडा है। 'दि सिटिज़न ऑफ दि वर्ल्ड' (१७६२) नामक लेख-सग्रह मे उसने एक चीनी यात्री के बहाने जीवन पर कुछ चुटीले व्यग्य किए है। गोल्डस्मिथ भी जॉन्सन की बैठक का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। एडमण्ड बर्क[१] का नामोल्लेख पहले ही हो चुका है। बर्क असाधारण राजनीतिज्ञ था और अपने काल का प्रमुख वक्ता। उसने लिखा भी बहुत कुछ और जहा उसके व्याख्यान शब्दो का जादू प्रस्तुत करते है, उसके लेख चिन्तनशील व्याख्या का। 'इम्पीचमेट ऑफ हेस्टिंग्स' जो उसके वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध पार्लमेंट मे दिए व्याख्यानो का सग्रह है, आज भी भारतीयो के आकर्षण का विषय है। उसकी अधिकतर रचनाए व्याख्यान के ही रूप मे सग्रहीत हुई परन्तु वे भावो की उदारता और भाषा के प्रवाह मे अद्वितीय है। 'दि सबलाइम ऐण्ड दि ब्यूटिफुल' (१७५६) उसकी प्रारम्भिक कृति है। उसकी पिछली कृतियो मे प्रधान हैं—'ऑन अमेरिकन टैक्ज़ेशन' (१७७४), 'ऑन कॅन्सलियेशन विद अमेरिका' (१७७५) और 'रिफ्लेक्शन्स ऑन दि फ्रेंच रिवोल्यूशन' (१७९०)। बर्क प्राचीनता और परपरा का बड़ा हिमायती था। उसकी गद्य-शैली मे जॉन्सन और गिबन दोनो से अधिक प्रवाह है।

१८वी सदी के गद्य की शैली चिट्ठी-पत्रियो और पत्रिकाओ मे भी निर्मित हुई। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्रियो मे तो उसकी आकृति अनेक बार बहुत सुन्दर बन पडी है। वास्तव मे १८वी सदी मे पत्र-लेखन को जितनी सुरुचि का आधार मिला शायद कभी नही। टॉमस ग्रे की चिट्ठियो मे उस सदी के साहित्य का एक प्राजल रूप सुरक्षित है और विलियम काउपर की चिट्ठिया तो उसकी कविताओ से कही अधिक सजीव है। उसके वर्णन जीवन का रस निचोड कर रख देते है; सुन्दर, भोडे सभी प्रकार के जीवन का। जॉन वेजले[२] ने जो मेथॉडिस्ट संप्रदाय का प्रवर्त्तक था, अपनी डायरी मे अपने सघर्ष का सहृदय वर्णन किया है। होरेस वालपोल की चिट्ठिया १८वी सदी के जीवन का दर्पण है। यद्यपि

---

१ Edmund Burke (१७२९-९७); २. John Wesley (१७०३-९१)

उनका कलात्मक रूप चेस्टरफील्ड के अर्ल के पत्रो मे और भी निखर गया है। जेम्स मैक्फर्सन[1] अग्रेज़ी साहित्य का अति करुण व्यक्तित्व है। उसने एक नये किस्म के गतिमान गद्य की अभिसृष्टि की जिसमे उसने अनेक पुरानी कविताओ का रूपान्तर भी किया। बाद मे मालूम हुआ कि उनके मूल सिवा मैक्फर्सन के दिमाग के और कही न थे। जब उससे मूल कविताओ के सबध मे प्रश्न किया गया, तब वह अपने तथाकथित अनुवादो के आधार पर मूल की अभिसृष्टि करने बैठा। मैक्फर्सन के वर्णनात्मक सग्रह का नाम 'दि वर्क्स ऑफ ओस्सियन' है।

१६वी सदी मे कोलरिज ने अग्रेज़ी गद्य को अपनी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' (१८१७) मे जो एक नई चेतना दी, वह थी साहित्यिक आलोचना की। कोलरिज के लेखो ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण से १६वी सदी के चिन्तन को बडा प्रभावित किया। आलोचना के क्षेत्र मे तो उसने सर्वथा नई शब्दावली का सृजन किया। जॉन कीट्स की चिट्ठियो मे भी अद्भुत भावुक शक्ति है, जो उनपर उसकी स्वाभाविक काव्य प्रतिभा की छाया डालती है। परन्तु वास्तव मे बायरन के पत्रो और जर्नलो मे समसामयिक जीवन का जितना कल्पनातीत सुखद, सच्चा और क्रूर वर्णन है, उतना और कही उपलब्ध नही।

चार्ल्स लैम्ब[2] अग्रेज़ी साहित्य के प्रधान निबधकारो मे हो गया है। उसके 'ऐसेज़ ऑफ एलिया' (१८२३) और 'लास्ट ऐसेज़' (१८३३) अग्रेज़ी गद्य साहित्य की अमर कृतिया हो गई है। उसकी निबन्ध शैली का प्रारम्भ फ्रेंच निबन्धकार मोन्तेन ने किया था। उसका पहला अग्रेज़ समर्थक काउले था। पुराने निबन्धकारो की पृष्ठभूमि पर खडा लैम्ब अपने विनोद और नित्य के जीवन का योग देता है। उसका सृजनात्मक हृदय दु ख बर्दाश्त नही कर सकता था। उसकी बहिन का विक्षेप उसके लिए दारुण विषाद बन जाता है। उसके निबन्धो मे साधारण और सामान्य का अटूट उपयोग हुआ है।

निबन्धकार के रूप मे लैम्ब का मित्र विलियम हैज्लिट[3] भी प्रभूत विख्यात हुआ। उसके निबन्धो मे आज भी असामान्य ताज़गी है। वह शब्दो का शिल्पी है और शब्दो का चुनाव धीरता से करता है। अपनी आलोचना मे वह कही समझौता नही करता, प्रखर है। लैम्ब दयार्द्र है, हैज्लिट परुष। अपने 'लिबर अमोरिस' (१८२३) मे उसका व्यंग्य अपने को भी नही छोड पाता। उसके निबध-सग्रहो मे सबसे प्रखर 'दि स्पिरिट ऑफ दि एज'

---

१ James Macpherson (१७३६-९६), २ Charles Lamb (१७७५-१८३४), ३. William Hazlitt (१७७८-१८३०)

(१८२५) है। इसमे उसने अपने समकालीनो का शब्द-चित्रण किया है, स्पष्ट और निष्ठुर।

डि क्विन्सी[1], कॉबेट[2] और लैण्डर[3] भी प्राय उसी काल के निबन्धकार है। टॉमस डि क्विन्सी ने तो अपने 'कन्फेशन्स ऑफ ऐन इगलिश ओपियम ईटर' (१८२१) द्वारा अग्रेजी गद्य मे एक नया प्रयोग किया। इसमे उसने अफीमची के रूप मे अपनी अनुभूतियो और स्वप्नो का चित्रण किया है। विलियम कॉबेट बडे दम का निबन्धकार है, जो बडे जोशोखरोश से लिखता है, 'रूरल राइड्स' (१८३०) मे उसने इग्लैड के देहातो का जीता-जागता चित्र खीचा है। यह यात्रा उसने घोडे पर की थी। उसका वर्णन-बडा स्वाभाविक है, जो कभी बासी नही हो सकता। वाल्टर सैवेज लैण्डर इन सबसे भिन्न है, शैली, शब्दावली, अनुभूति, सबमे अपने 'इमेजिनरी कनवरसेशन्स' (१८२४-२६) मे उसने शाब्दिक सौदर्य का एक राज्य खडा कर दिया।

उन्नीसवी सदी के पत्र-पत्रिकाओ मे भी साहित्य का रस काफी छलका। इनमे 'दि जैन्टिलमैन्स मैगेजीन' (१७३१-१८६८) पोप के जमाने से ब्राउनिग के काल तक चली। उन्नीसवी सदी के पहले दशक मे ही प्रसिद्ध 'एडिन्बरा रिव्यू' निकली। उसका सम्पादक फ्रैंसिस जेफ्रे[4] था, जिसने रोमाटिक कवियो की अच्छी खबर ली। सिडनी स्मिथ[5] भी उस पत्रिका मे लिखता था। उसकी पैनी लेखनी का तीखापन असह्य हो जाता था। एडिन्बरा रिव्यू के जवाब मे 'टोरियो' ने १८०६ मे अपनी 'क्वार्टरली रिव्यू' निकाली। स्कॉट का जामाता और चरितकार लोखार्ट[6] अपनी सबल लेखनी का उपयोग 'ब्लैक वुड्स एडिन्बरा मैगेजीन' के कॉलमो मे करता था। इस पत्रिका का नाम अक्सर कीट्स की समालोचना मे लिखे लेखो के सम्बन्ध मे लिया जाता है।

चार्ल्स डारविन[7] वैज्ञानिक था। परन्तु अपने विचारो की स्पष्टता के कारण उसकी गद्य-शैली की चर्चा भी की जाती है। अपने 'ओरिजिन ऑफ दि स्पिसीज' और 'दि डिसेन्ट ऑफ मैन' मे उसने वैज्ञानिक जटिलता से अलग अकृत्रिम गद्य का प्रयोग किया। डारविन के समर्थन मे टी एच हक्स्ले[8] ने भी स्पष्ट गद्य का सहारा लिया। वैज्ञानिको के अतिरिक्त राजनीतिक दार्शनिको का हाथ भी उन्नीसवी सदी के गद्य-निर्माण मे काफी रहा है। उन्होने राजनीति मे व्यक्तिगत चेतना और व्यापार मे स्वतत्रता का विचार रखा।

---

१. Thomas de Quincy (१७८५-१८५६), २ William Cobbet (१७६२-१८३५); ३. Walter Savage Lander (१७७५-१८६४); ४ Francis Jeffrey (१७७३-१८६८), ५. Sydney Smith (१७७१-१८४५), ६ J G Lokhart; ७. Charles Darwin (१८०६-८२); ८. Thomas Henry Huxley (१८२५-६५)

जेरेमी बेन्थम[1], टी आर माल्थ्यूस,[2] जेम्स मिल[3] और उसका पुत्र जॉन स्टुअर्ट मिल[4] इसी क्षेत्र के लेखक हैं। पर उनकी शैली मे चिन्तन तथा वाद-प्रतिवाद तो है, साहित्यिक आनन्द नही। हा, जॉन स्टुअर्ट मिल की 'ऑटोबायोग्राफी' मे निश्चय ही कुछ आकर्षण है।

टॉमस बैबिंग्टन मैकॉले[5] का गद्य अत्यन्त समृद्ध था। सविस्तार ज्ञान रखता हुआ भी वह अपनी विवेचनाओ मे कठमुल्ला और एकागी था। उसकी भाषा मे गजब का प्रवाह था और शब्दावली का वह आचार्य था। कुवाच्यो के घन मे वह बेजोड था। उसकी 'हिस्ट्री ऑफ इग्लैण्ड' (१८४९-६१) साहित्य की कोटि की है। टॉमस कारलाइल[6] साहित्यकार था, परन्तु उसका आधार उसने इतिहास को बनाया। उसकी सुन्दरतम कृतिया 'सार्टर रिसार्ट्स' (१८३३-३४), 'ऑन हिरोज़ ऐण्ड हिरोवर्शिप' (१८४१) और 'पास्ट ऐण्ड प्रेजेण्ट' (१८४३) है। उसकी ख्याति उसके 'फ्रेंच रिवोल्यूशन' से ही हो गई थी। उसके वाक्य लम्बे, कभी सामान्य, कभी पेचीदे और चिन्तनशील हैं। उसके शब्दो की परपरा अटूट है। उनका प्रवाह अविच्छिन्न। कारलाइल के आदर्शवाद के साथ ही धार्मिको का ऑक्सफोर्ड से एक आन्दोलन चला। उसमे अग्रणी जॉन हेनरी न्यूमेन[7] था, जिसने सुन्दर गद्य रचना की। अपनी 'अपोलोजिया प्रो विटा सुआ' (१८६४) मे उसने अपने ही आध्यात्मिक इतिहास को भावमयी वाणी मे व्यक्त किया। जॉन रस्किन[8] उन्नीसवी सदी के साहित्यकारो मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अपने 'मॉडर्न पेन्टर्स' मे उसने सौंदर्य के दर्शन को धर्म का स्थानापन्न बना दिया। वास्तु का उसने अपने 'सेवन लैम्प्स ऑफ आर्किटेक्चर' (१८४९) और 'दि स्टोन्स ऑफ वेनिस' (१८५१-५३) मे दार्शनिक विवेचन किया। अपनी शताब्दी के घृणित व्यवसायवाद का उच्छेद उसने अपने 'अण्टू दिस लास्ट' (१८६२) मे किया। रस्किन के वाक्य नितान्त लम्बे हैं और शैली पेचीदी है।

उस सदी के साहित्यकारो मे मैथ्यू आर्नल्ड का स्थान बहुत ऊचा है। उसने कविता को जीवन का दर्पण कहा है और आलोचना के साहित्य मे प्राय एक क्राति उपस्थित कर दी। उसने आलोचना के उन सिद्धातो का पहली बार निर्माण किया, जिनके आधार पर साहित्य का मूल्याकन हो सके। जहा रस्किन ने कला को धर्म का पद दिया था, वाल्टर पेटर[9] ने कला का अन्त कला ही मे माना और 'कला कला के लिए' का आदर्श चलाया। उसकी 'स्टडीज़ इन दि हिस्ट्री ऑफ रैनैसास' गद्य साहित्य मे असामान्य सौन्दर्य प्रस्तुत करती है। वाल्टर पेटर उन्नीसवी सदी के गद्य का अन्तिम शैलीकार था।

---

१. Jeremy Bentham (१७४८-१८३२), २ Thomas Robert Malthus (१७६६-१८३४), ३. James Mill; ४ John Stuart Mill (१८०६-७३), ५. Thomas Babington Macaulay (१८००-५९), ६. Thomas Carlyle (१७९५-१८८१); ७ John Henry Newman (१८०१-९०), ८ John Ruskin (१८१९-१९००); ९. Walter Pater (१७३९-९४)

बीसवी सदी

बीसवी सदी का गद्य, नाटक और उपन्यासो से भिन्न, अमित है, और उसका मूल्याकन अथवा उल्लेख आसान नही। जी के चेस्टर्टन,[१] हिलेयर बेलॅक,[२] मैक्स बीरबोहम,[३] लाइड जार्ज[४], विन्स्टन चर्चिल[५] आदि इस काल के कुछ प्रसिद्ध गद्यकार है। इनमे पहला अपने विचारो की शक्ति के लिए स्मरणीय रहेगा, दूसरा अपनी साहित्यिक ताजगी के लिए, तीसरा शैली की बारीकी के लिए और पिछले दोनो अपने व्याख्यानो की शालीनता के लिए। यह शालीनता चर्चिल के सस्मरणो मे फूट पडी है। इस काल की शैली का चमत्कार लिटन स्ट्रैची[६] के अमूल्य इतिहासाकनो मे देखा जा सकता है। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्वीन विक्टोरिया' (१९२१) और 'एलिज़ाबेथ ऐण्ड ऐसेक्स' (१९२८) उसकी शालीन कृतिया है।

: ६ :

अमेरिका में अंग्रेज़ी साहित्य

अग्रेज़ी साहित्य का मूल विकास इग्लैण्ड मे हुआ, जिसका सक्षिप्त विवरण पीछे दिया जा चुका है। इग्लैण्ड के उपनिवेशो मे भी अग्रेज़ी साहित्य फूला-फला। सयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका आदि मे भी, जहा अग्रेज बसे, उस साहित्य की बेल लगी। यहा उन सब देशो के साहित्यिक इतिहास का यह विवरण दे सकना स्थानाभाव के कारण किसी मात्रा मे सम्भव नही। परन्तु अग्रेजी की उन बाह्य शाखाओ के सम्बन्ध मे सर्वथा चुप रह जाना भी उचित नही होगा। इससे उनमे से कम से कम एक—सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साहित्य की ओर सकेत कर देना अनिवार्य है।

इग्लैड के बाहर अग्रेजी साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्र उत्तरी अमेरिका ही बना भी। उसका अपना साहित्य काफी स्वतत्र और विशद भी है। यद्यपि हम यहा उसका सविस्तार उल्लेख नही कर सकेगे। केवल सक्षिप्त, प्राय साकेतिक, उल्लेख ही करेगे, मात्र चोटी के साहित्यकारो का।

वैसे तो सत्रहवी सदी से ही अमेरिका मे साहित्य की चर्चा होने लगी थी, १८वी सदी मे सही-सही उसे वहा प्रतिष्ठा मिली। प्यूरिटनो मे अग्रणी और अमेरिका के महान्

---

१ Gilbert Keith Chesterton (१८७४-१९३६), २ Hilaire Belloc (१८७०-१९५३); ३ Sir Max Beerbohm (ज० १८७२), ४ Llyd George (१८६३-१९४५), ५ Sir Winston Churchill (ज० १८७४); ६ Lyton Strachey (१८८०-१९३२)

चिन्तको मे एक जोनाथान एडवर्ड्स[1] था। १८वी सदी के मध्य की धर्म-शास्त्रीय गवेषणाओ मे उसका स्थान बहुत ऊचा है। वह उदारवादी और कैल्विनवाद का विशिष्ट अग्रणी था। उसकी प्रारम्भिक चेतना आदर्शवादी और रहस्यवादी थी। अमेरिका के उस काल के लिखने वालो मे वह असामान्य है। बेजामिन फ्रैंकलिन[2] के नाम का राजनीति के अतिरिक्त अमेरिका के पत्र-पत्रिकाओ और पुस्तको के प्रकाशन से भी घना सबध है। प्रकाशन के क्षेत्र मे तो बेजामिन फ्रैंकलिन ने युगान्तर उपस्थित कर दिया। वस्तुत अमेरिका की अनेक प्रकाशन-शृखलाओ का आरम्भकर्त्ता वही है। उसकी क्रियाशीलता से साहित्य का कितना उपकार उस देश मे हुआ, आज उसका अन्दाज़ लगा सकना कठिन है।

फिलिप फ्रेनू[3] अमेरिका का पहला विशिष्ट कवि था। वह उस देश की दो साहित्यिक धाराओ—नव क्लासिकवाद और रोमाण्टिक परपरा—के सन्धि-स्थल पर खडा है। वह अमेरिकी नेशनलिस्ट था और उसने देश की आजादी और फ्रेच राज्यक्राति के पक्ष मे लिखा। जैफर्सन के प्रजातात्रिक दल का वह प्रबल समर्थक था। वह बुद्धिवादी और व्यग्यकार भी है। वाशिगटन इरविग[4] पहला अमेरिकन लेखक था, जिसकी इग्लैड मे मुक्त कठ से प्रशसा हुई। उसमे रोमास और उससे भी बढकर विनोद और हास्य का पुट है। उसकी प्रसिद्ध कृतिया 'ब्रेसब्रिज हॉल' (१८२२), 'दि अलहम्ब्रा' (१८३२) और 'ओलिवर गोल्डस्मिथ' (१८४९) है। उसका लिखा जनरल वाशिगटन का जीवन-चरित भी काफी प्रसिद्ध है। इरविग वैसे तो रोमाटिक है, परन्तु उसका व्यग्य भी बडा प्रखर है।

ब्रिया[5] ने अमेरिकन कविता को उसकी पुरानी रूढियो से मुक्त किया। वह रोमाण्टिक कवि और प्रकृति का पुजारी ('ए फॉरेस्ट हिम') था। वह साथ ही प्राचीन 'क्लासिकल परपरा' और आदर्शो का भक्त भी ('दि फ्लड ऑफ ईयर्स') था। 'न्यूयॉर्क ईवनिग पोस्ट' के सम्पादक के नाते उसने काव्य-शैली पर काफी लिखा। वह आजादी और राष्ट्रीयता का प्रबल समर्थक था, परन्तु रोमाण्टिक उदारवादिता की दृष्टि से। जेम्स फेनिमोर कूपर[6] उपन्यासकार था। उसने कुछ समुद्री जीवन की कहानिया भी लिखी। उसे ख्याति 'लैदर स्टॉकिंग टेल्स' से मिली। उसकी अन्य सुन्दर कृतिया है—'दि स्पाई' (१८२१), 'दि पायोनियर्स' (१८२३), 'दि पाइलेट' (१८२४)। उसने यूरोपियन और अमेरिकन दृश्यो का अकन बडी खूबी से किया है।

---

१ Jonathan Edwards (१७०३-५८), २ Benjamin Franklin (१७०६-९०) ३ Philip Freneau (१७५२-१८३२), ४ Washington Irving (१७८३-१८५९), ५ William Cullen Bryant (१७९४-१८७८), ६ James Fenimore Cooper (१७८९-१८५१)

एडगर एलेन पो[1] अमेरिका का प्रकाण्ड साहित्य-निर्माता हो गया है। उसका प्रभाव सारे अग्रेजी साहित्य पर पडा है। वह अभिनेता पिता और अभिनेत्री माता का पुत्र था। शिक्षा उसकी इग्लैड मे हुई थी और साहित्य-साधना उसने पत्रकार के रूप मे शुरू की थी। उसने कविता की व्याख्या की और साहित्य के सिद्धात तथा प्रयोग दोनो क्षेत्रो मे अप्रतिम हुआ। उसने फ्रेंच प्रतीकवादियो और अमेरिकन कल्पनावादियो का समर्थन किया। उसके रोमान्स और बुद्धिवाद के सामजस्य ने गद्य-पद्यात्मक कृति 'यूरेका' को जन्म दिया। वह सम्पादक और समालोचक भी था। उसकी गद्य और पद्य की कृतियो ने ससार के साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला।

'रॉल्फ वाल्डो इमर्सन'[2] उन अमेरिकन प्रतिभाओ मे था जिनका ससार के इतिहास मे साका चला। वह उच्च कोटि का चिन्तक और निबन्धकार था। वह अग्रेजी साहित्य के प्रधान निबन्धकारो मे गिना जाता है। उसकी कृतिया 'नेचर' (१८३६), 'दि अमेरिकन स्कॉलर' (१८३७), 'दि डिविनिटी स्कूल ऐड्रेस' (१८३८) विशेष प्रसिद्ध है। उसमे अपने विचारो द्वारा दूसरे के विचारो को उद्वेलित कर देने की अद्भुत क्षमता थी। अग्रेज और अन्य रहस्यवादी लेखको से वह प्रभावित था। भाषा को उसने द्विधा साधक माना— आध्यात्मिक सत्य के प्रतीक तथा मूर्त्त भावना के वाहक रूप मे। भाषा की सार्थकता, उसके विचार मे इन दोनो स्थितियो की पूर्ण एकता द्वारा सत्य-शिव-सुन्दर के सृजन मे है। उसकी शैली पुष्ट, सक्षिप्त और दार्शनिक है। उसके निबन्ध और कविताए 'क्लासिक' बन गईं। कलात्मक स्रष्टा के रूप मे हेनरी डेविड थोरो[3] का स्थान इमर्सन के निकट ही है। वह प्रकृतिवादी था और वैयक्तिक आध्यात्मिक स्वतत्रता मे विश्वास करता था। उस दिशा मे उसने 'सक्रिय अवज्ञा' (पैस्सिव रैजिस्टैन्स) का प्रचार किया। इस पद का प्रयोग उसीने पहले पहल किया। महात्मा गाधी उससे बडे प्रभावित थे और उसीके शब्दो— पैस्सिव रैजिस्टैन्स—का उन्होने अपने सत्याग्रही दृष्टिकोण से प्रयोग और प्रचार किया। वह उच्च कोटि का निबन्धकार था। उसकी कृतिया 'लाइफ विदाउट प्रिंसिपल' (१८६२), 'दि मेन वुड्स्' (१८६४), 'कैप काड' (१८६५), 'ए यैंकी इन कैनेडा' (१८६६) आदि जानी हुई है। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'वाल्डेन ऑर लाइफ इन दि वुड्स्' है। उसकी कविताओ के भी दो सग्रह प्रकाशित है। प्रकृति सम्बन्धी उसकी कविताएं प्रसिद्ध हैं।

नैथैनियल हाथार्न[4] प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार था। उसने अपने उपन्यासो मे आध्यात्मिक आचारसम्मत यथार्थवाद की साधना की। शैली उसकी बड़ी

---

१ Edgar Allan Poe (१८०६-४६), २ Ralph Waldo Emerson (१८०३-८२), ३ Henry David Thoreau (१८१०-६२), ४. Nathaniel Hathorne (१८०४-६४)

निखरी-सुथरी है। ये उपन्यास एक प्रकार के सामाजिक सम्वेदनशील रूपक है। पाप की समस्या को उसने अपनी कृतियो मे हल करने का प्रयत्न किया। उसका प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कारलेट लेटर' और अनेक अन्य कृतिया उस दृष्टिकोण मे प्रस्तुत हुईं। 'दि हाउस ऑफ दि सेवन गेबल्स' (१८५१) उसकी विशिष्ट कृतियो मे है। हाथार्न ने बहुत लिखा और बहुतो को प्रभावित किया। प्रसिद्ध उपन्यासकार हरमन मेल्विल[१] उन्ही प्रभावितो मे था। पहले उसने अपनी समुद्री यात्राओ से प्रभावित हो तत्सम्बन्धी कहानिया लिखी, फिर रूढिवाद से सर्वथा मुक्त आध्यात्मिक उपन्यास लिखे। उसने प्रतीक रूप से विश्व का सत्य खोजा और परिणाम हुआ तीन उपन्यास—'मार्दी' (१८४९), 'मोबी डिक' (१८५१) और 'पियर' (१८५२)। 'मोबी डिक' उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। उसकी कविताओ का भी एक सग्रह छपा। वह हाथार्न का मित्र था। उसकी शैली मे दृश्यो को व्यक्त करने की बडी शक्ति है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल का वर्णन अद्भुत क्षमता से कर सकता है। 'मोबी डिक' व्हेल मछली के शिकार का अकन करता है, परन्तु वस्तुत वह जीवन की बर्बरता और मानवता के सघर्ष का चित्रण है।

कविता के क्षेत्र मे क्या घर क्या बाहर, हेनरी वाड्स्वर्थ लागफेलो[२] (१८०७-८२) का नाम बडे आदर से लिया जाता है। उसने सुन्दर छन्दोबद्ध अनुवाद के रूप मे ससार के अनूठे साहित्य-रत्नो की भेट अपने देश को तो की ही है, स्वय प्रबन्ध काव्य लिखने मे भी वह अप्रतिम था। सुदर-सरल शैली मे वह आध्यात्मिक सत्य अनायास कह जाता था, जो सहज रीति से पाठको की जबान पर चढ जाता था। उसकी कृतिया निम्नलिखित है–'ए साग ऑफ लाइफ', 'दि विलेज ब्लैकस्मिथ', 'दि वार्निग', 'दि आर्सिनल ऐट स्प्रिग फील्ड', 'दि बिल्डिग ऑफ दि शिप', 'इवैजेलीनी', 'दि गोल्डन लीजेन्ड', 'दि साग ऑफ हिमावाथा', 'टेल्स ऑफ ए वेसाइड इन', 'पॉल रीवियर्स राइड', 'किग रॉबर्ट ऑफ सिसिली', 'दि सागा ऑफ किंग ओलफ', 'दि न्यू इग्लैड ट्रैजेडीज़', 'माइकेल ऐजेलो' आदि। जेम्स रस्सल लोवेल[३] भी लाग-फेलो की ही भाति अमेरिकन साहित्य का विशिष्ट निर्माता था। वह बडी सूझ का आलोचक था। उसी काल का ऑलिवर वेन्डेल होम्स[४] भी सुन्दर निबन्धकार था। उसकी शैली बड़ी मधुर थी। उसने लिखा भी पर्याप्त। लोवेल और होम्स दोनो का अमेरिकन गद्य प्रभूत ऋणी है।

उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध के अमरीकी साहित्य मे वाल्ट व्हिटमैन[५] के आकार की प्रतिभाए इनी-गिनी ही हैं। वह रूढियो का शत्रु था और अपनी कविता

---

१. Herman Melville (१८१९-९१), २ Henry Wadsworth Longfellow (१८०७-८२), ३ James Russell Lowell (१८१९-९१), ४ Dr Oliver Wendell Holmes (१८०९-९४), ५. Walt Whitman (१८१९-९२)

मे उसने तुक, छन्द, रूप, संकेत, शैली सभी दिशाओ मे युगान्तर कर दिया। साहस के साथ उसने जीवन के नए विषयो को अपनाया। भौतिक जीवन के यौन पहलू, जनतान्त्रिक बधुत्व का विकास, वैयक्तिक चेतना का सामाजिक प्रसार मे निलय—ये सब उसकी कविताओ के दृष्टिकोण हुए। उसने अपनी गद्य-कृति 'डैमोक्रेटिक विस्टाज' (१८७१) द्वारा यथार्थवादी दृष्टिकोण से अमेरिकन जनतान्त्रिक सदेश की विफलता पर गहरी चोट की। 'लीव्ज़ ऑफ ग्रास' नामक अपना कविता-सग्रह लेकर १८५५ मे वह साहित्य-क्षेत्र मे उतरा। उसने लिखा—'सावधानी से मेरी कविताए पढो क्योकि वे रक्त-मास के बने मनुष्य को छूती है!' उसकी इमर्सन ने बडी प्रशसा की, यद्यपि लोवेल और होम्स उसके दृष्टिकोण को स्वीकार न कर सके। व्हिटमैन अमेरिका से अधिक यूरोप मे प्रसिद्ध हुआ, उसने कवि को सत्य का सवाहक माना जो प्रगति का अग्रदूत है और जिसके दर्शन की नीव पर प्रगति का निर्माण होता है। व्हिटमैन की कृतिया अनेक है, एक से एक महान्।

जिन अमेरिकन कवियो ने गृह-युद्ध के बाद की कुण्ठा को स्वीकार न कर आगे आशा की लौ देखी, उन्हीमे सिडनी लेनियर[१] भी था। दक्षिण के कवियो मे वह विशिष्ट था। उसने अपनी कविताओ मे सामाजिक आलोचना को स्थान दिया। सगीतज्ञ होने के कारण उसने कविता को प्राय गेय बना दिया। उसकी अनेक कविताए सामाजिक है—'कौर्न', 'देयर इज मोर इन दि मैन दैन देयर इज इन दि लैण्ड', 'दि रिवेन्ज ऑफ हमिश'। कुछ मधुर लिरिक ये है—'दि स्टरप कप', 'ए बैलेड ऑफ ट्रीज ऐण्ड दि मास्टर', 'ईविनिग साग', 'साग ऑफ दि चटाहूची'।

ससार के साहित्य मे मार्क ट्वेन[२] (सैमुअल क्लेमेन्स) का अपना स्थान है। व्यग्य और विनोद के क्षेत्र मे वह प्राय अप्रतिम है परन्तु उसके अतिरिक्त गंभीर साहित्य के विवेचन मे भी वह कुछ पीछे नही। वह वाग्मी भी असाधारण था। वैसे तो उसने अनेक रचनाए की परन्तु सुधार और आदर्शवादी रचनाए उसकी विशेष महत्त्व की हैं। मिसिसिपी घाटी के जीवन का जो चित्र उसने खीचा है, वह साहित्य मे अमिट है। 'टॉम सॉअर' (१८७६), 'लाइफ ऑन दि मिसिसिपी' (१८८३) और 'हकलबेरी फिन' (१८८४) उसकी कुछ असामान्य कृतिया है। इनका हास्य हृदय पर गहरी छाप छोड जाता है। इनमे से अन्तिम कृति जीवन की यथार्थताए, आदर्श, वैयक्तिक चरित और वातावरण का अद्भुत विश्लेषण करती है। उसने मानवतावाद का बडी सहृदयता से चित्रण किया और झूठ तथा कपट का भडाफोड किया। मार्क ट्वेन न केवल अमेरिका मे वरन् सारे यूरोप मे अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उससे कही रोमाटिक ब्रैट हार्ट[३] था, जिसने पश्चिम

---

१. Sidney Lanier (१८४२-८१), २ Mark Twain (Samuel Clemens, १८३६-१९१०); ३ Bret Harte (१८३६-१९०२)

के जीवन को उसी प्रकार अपनी कृतियो मे प्रतिबिम्बित किया जैसे मार्क ट्वेन ने पूर्व को, परन्तु निस्सदेह वह मार्क ट्वेन की निष्ठा और ईमानदारी को नही पा सकता, मार्क-ट्वेन असाधारण ऊंचाई का साहित्यकार है।

एमिली डिकिन्सन[१] उस काल की सबसे बडी अमेरिकन कवियित्री है। उसकी कविताओ मे गहरी मात्रा की मौलिकता है। उसके लिरिक निष्ठा और माधुर्य के सुन्दर उदाहरण है। अमेरिकन यथार्थवाद के साहित्यिक आन्दोलन मे विलियम डीन हॉवेल्स[२] का स्थान ऊचा है। उसने सामाजिक न्याय का सबल चित्र अपनी कृतियो मे खीचा। पहले उसने कविताए लिखी फिर उपन्यास, कहानिया, निबध सब कुछ और यह समूचा साहित्य प्राय ८० जिल्दो मे प्रकाशित हुआ। हॉवेल्स का दृष्टिकोण अभी तक टॉल्सटॉय का है। उसके उपन्यासो मे सबसे सुन्दर 'दि लैदरवुड गॉड' (१९१६)है। यथार्थवादी साहित्यकार की सही परम्परा गार्लेण्ड के बाद फ्रैंक नोरिस[३] ने कायम की। उसकी सुन्दर कृति 'दि ऑक्टोपस' उसी परम्परा का विस्तार करती है। हेनरी जेम्स[४] भी यथार्थवाद के क्षेत्र मे शैलीकार के रूप मे विख्यात हो गया है। वह आलोचक और कृतिकार था और उपन्यास तथा कहानी को व्यजना का सबसे ऊचा साधन मानता था। उसकी कुछ कृतिया, आलोचना की दिशा मे 'क्रिटिकल प्रिफेसेज़', 'दि आर्ट ऑफ दि नॉवल', 'दि आर्ट ऑफ फिक्शन' है, और उपन्यास की दिशा मे 'दि पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी', 'दि स्पाएल्स ऑफ दि पोइन्टन', 'दि विग्स ऑफ दि डोव', 'दि ऐम्बैसेडर्स' और 'दि गोल्डन बोल' है। एडिथ वार्टन[५] ने जो हेनरी जेम्स द्वारा प्रभावित थी, अपने उपन्यासो मे व्यक्ति और समाज के सामजस्य पर विचार किया। उनकी कृतिया 'इथन फ्रोम', 'दि एज ऑव इनोसेंस' उसके उसी दृष्टिकोण की परिचायक है।

क्लासिकल परम्परा का सबसे महत्त्वपूर्ण कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट[६] है। वह अत्यन्त सरल और यथार्थवादी है। १९१३ मे उसने अपने लिरिक 'ए ब्वाएज़ विल' प्रकाशित किया और बाद में अन्य कविताओ का सग्रह। उसमे अनुभूति का पुट पर्याप्त है और करुण वातावरण उसे विशेष आकृष्ट करता है।

थियोडोर ड्रीजर[७] जैकलण्डन के-से उन अनेक साहित्यकारो मे है जो व्यक्तिवाद से समाजवाद की ओर प्रस्थित हो चुके हैं। वह भी प्रकृतिवादी दल का रचयिता है। पहले उसने मनुष्य को उद्देश्यहीन और रूढियो का शिकार चित्रित किया। 'सिस्टर कैरी' और

---

१ Emily Dickenson (१८३०-८६), २. William Dean Howells (१८३७-१९२०); ३ Frank Norris (१८७०-१९०२); ४ Henry James (१८४३-१९१६), ५. Edith Warton; ६ Robert Frost (ज० १८७५); ७. Theodore Dreiser (१८७१-१९४५)

'जेनी गरहार्ट' उसीके नमूने है। 'दि फिनेन्शियर' और 'दि राइटन' मे उसने 'सुपरमैन' की शालीनता स्थापित की परन्तु 'ऐन अमेरिकन ट्रैजेडी' (१९२५) मे ड्रीजर समाजवाद की ओर स्पष्ट रूप से बढ गया। रॉबिन्सन जेफर्स[1] आधुनिक अमेरिकन काव्य-क्षेत्र का विशिष्ट कवि माना जाता है। उसकी कल्पना-शक्ति उतनी ही सबल है, भावनाओं की गति जितनी आकर्षक। जैफर्स नितान्त व्यक्तिवादी है। शेरवुड ऐन्डरसन[2] अभिव्यजनावादी कहानीकार है जो सामाजिक व्यवस्था का प्रबल विरोधी है। उसके उपन्यासो के पात्र अधिकतर आत्मकथात्मक है। उसकी कृतियो मे यौन के प्रति अमात्रिक आकर्षण व्यक्त हुआ है। टॉमस वोल्फ[3] के हीरो भी प्राय उसी प्रकार के है जैसे ऐन्डरसन के पात्र, आत्म-चरितात्मक, जो अपने भीतर की दुर्बलताओ से निरन्तर सघर्ष करते है। एडविन आर्लिगटन रॉबिन्सन[4] इस सदी का सबसे बडा अमेरिकन कवि माना जाता है। उसने अपनी कविताओ मे मनुष्य के विश्व से सम्बन्ध को व्यक्त किया। इसी परपरा का यूजीन ओ'नील[5] भी है। वह पुरानी देव-भावना के मिट जाने और नई विज्ञान-व्यवस्था की सामाजिक असफलता से उद्विग्न हो उठा है। उसने कविता के अतिरिक्त अनेक नाटक भी लिखे और उनमे उसने रोमाटिक यथार्थवाद का प्रयोग किया। १९३६ मे उसे नोबेल पुरस्कार मिला। इधर का वह सबसे बडा अमेरिकन नाट्यकार है।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे[6] अमेरिका के सुन्दरतम उपन्यासकारो मे है। शैली का तो वह असाधारण उस्ताद है और उसका प्रभाव आज के गद्यकारो पर गहरा पड़ा है। उसने युद्ध मे गति और खतरे का विशेष अध्ययन किया है। उसके उपन्यासो मे इनका विवेचन बडी खूबी से होता है। पिछले स्पेनी गृहयुद्ध सम्बन्धी उसका एक ड्रामा और अद्भुत कहानियां 'दि फिफ्थ कॉलम ऐण्ड दि फर्स्ट फॉटी फाइव स्टोरीज़' (१९३८) एकत्र छपे है। उनमे भी गति और खतरे का निर्वाह भरपूर हुआ है। उसका 'फेयर वेल टु आर्म्स' अनेक लोगो के विचार मे सुन्दरतम अमेरिकन युद्ध-उपन्यास है। उसका उसी महत्व का दूसरा उपन्यास 'फॉर हूम दि बेल टॉल्स' है। दोनो ससार के आधुनिक साहित्य मे अपना स्थान रखते है।

अमेरिका मे भी प्रथम महासमर के बाद राजनीतिक और आर्थिक उपन्यास विशेष-रूप से लिखे जाने लगे, उपटन सिंक्लेयर[7] ने अद्भुत योग्यता और क्षमता से कारखानो और उद्योगों का जीवन चित्रित किया। 'दि जगल' से लेकर 'किंग कोल', 'दि गूज़ स्टेप', 'ऑइल',

---

१. Robinson Jeffers (ज० १८८७); २ Sherwood Anderson (१८७६-१९४१); ३. Thomas Wolfe (१९००-३८); ४. Edwin Arlington Robinson (१८६९-१९३५); ५. Eugen O' Neill (ज० १८८८), ६. Ernest Hemingway (ज० १८९८), ७. Upton Sinclair (ज० १८७८)

'बोस्टन', 'दि फ्लिउयर किंग' आदि मे विविध अमेरिकन जीवन की आलोचना हुई है। और इधर हाल मे तो प्रथम महासमर और दूसरे महासमर के अन्त के बीच के जीवन पर ६ उपन्यासो की सीरीज़ मे उपटन ने ससार के साहित्य को एक नई सम्पदा दी है। रूढि-वादिता, मिथ्यावाद, मध्यवर्गीय गाव के जीवन पर अपने उपन्यासो मे उत्कट व्यग्य करने वाला समर्थ उपन्यासकार सिक्लेयर लेविस[1] था जो इटली मे मरा। उसकी सुन्दरतम कृतिया, 'बैबिट' के अतिरिक्त 'ऐरौस्मिथ' (१९२५) और 'डाडस्वर्थ' (१९२९) है। वह पहला अमेरिकन था जिसे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। व्यग्य के क्षेत्र मे रिंग लार्डनर[2] लेविस से भी बढ गया है। उसे इस सदी का सुन्दरतम व्यग्य शैलीकार माना जाता है। उसकी निम्नलिखित कृतिया निम्नवर्ग का जीवन प्राय उसीकी जुबान मे चित्रित करती हैं—'यू नो मी अॉल' (१९१६), 'दि लव नेस्ट ऐण्ड अदर स्टोरीज' आदि।

जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो मे जॉन स्टीनबेक[3] का स्थान बहुत ऊचा है। वह उपन्यास-क्षेत्र का सफल कलावन्त है। वर्तमान उपन्यासकारो मे यथार्थवादी प्रकृतिवाद की कला का वह अप्रतिम शैलीकार है। उसकी कुछ कृतियो को ससार के आलोचको से बडा आदर मिला है। वे ये है—'दि कप अॉफ गोल्ड' (१९२९), 'टु ए गॉड अननोन' (१९३३), 'टोरटिला फ्लैट' (१९३५), 'इन ड्यूवियस बैले' (१९३६), 'अॉन माइस ऐण्ड मेन' (१९३७), 'दि ग्रेप्स अॉफ राथ' (१९३९), 'दि मून इज़ डाउन' (१९४२)। अपने

कार्ल सैण्डबर्ग[4] फास्ट के अतिरिक्त वर्तमान अमेरिकन कवियो मे [illegible] सबसे वृद्ध है। वह ह्विटमैन की परपरा मे है। १९१४ मे वह अति साधारण पुरुष, बर्बर, कल्पना और सौन्दर्य का अप्रतिम प्रतिनिधि बनकर अमेरिकन काव्य-क्षेत्र मे उतरा। उद्योग और खेती सम्बन्धी काव्य-क्षेत्र का वह असामान्य विवेचक है। इस दिशा में उसकी 'शिकागो पोएम्स' (१९१६), कॉर्नहस्कर्स' (१९१८) और 'स्मोक ऐण्ड स्टील' (१९२०) प्रमाण हैं।

एलेन ग्लास्गो[5] दक्षिण की स्थानीयता का उपन्यासकार है। उसने गृह-युद्ध से आज तक के वर्जीनिया के बदलते जीवन का चित्रण किया है। उसके उपन्यास समस्या-उपन्यास हैं। पर्ल बक[6] जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो मे बहुत ऊचा स्थान रखती है। उसके अनेक उपन्यास ससार के श्रेष्ठतम आधुनिक उपन्यासो मे गिने जाते है। उनमे उसने अमेरिका का नही बल्कि चीन के साधारण वर्ग का जीवन व्यक्त किया है। पौर्वात्य जीवन

---

१. Sinclair Lewis (१८८५-१९५१), २ Ring Lardner, ३ John Steinbeck (ज० १९०२); ४. Carl Sandburg (ज० १८७८), ५ Ellen Glasgow (१८७४-१९४५), ६. Pearl Sydenstricker Buck (ज० १८९२)

का इतना सच्चा अध्ययन शायद किसी पाश्चात्य उपन्यासकार ने नही किया है। चीनी जीवन और सघर्ष का जितना सही और सरस अकन उसने किया है अन्यत्र कही उपलब्ध नही। उसके अनेक प्रथम श्रेणी के उपन्यासो मे महान् 'गुड अर्थ' और 'ड्रैगन सीड' हैं। उसने १९३८ मे नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

पद्य मे फास्ट, सैण्डवर्ग और स्टिफेन विन्सेन्ट बेनेट[1] तथा गद्य मे लार्डनर, हेमिंग डॉस पैसस[2] और स्टिफेन विन्सेन्ट बेनेट अमेरिकन साहित्य के निकटतम 'क्लासिकल' (वर्तमान) युग के उत्तरोत्तर प्रतिनिधि है। बेनेट ने केवल वस्तुओ के कारण पर ही नही उनके महत्व पर भी जोर दिया। अपनी कहानियो, उपन्यासो और कविताओ मे उसने सामाजिक दृष्टिकोण का मानवतावादी सहृदयता से अकन किया है।

१. अरबी साहित्य

: १ :

इस्लाम से पूर्व

(६३२ तक)

अरबी भाषा, साहित्य और विज्ञान का विस्तार बडा है। आज भी पश्चिमी एशिया और मध्यपूर्व तथा उत्तरी अफ्रीका की अनेक जातिया अरबी ही बोलती है। अरबी साहित्य अधिकतर इस्लाम की उपज है। अरबी ने लिया सर्वत्र से, परन्तु स्वय वह सर्वथा सैमेटिक ही बनी रही।

अरब के प्राचीन अभिलेखो (सातवी सदी ई० पू० से चौथी सदी ईस्वी) से कुछ ऐसी ज़बानो का पता चलता है जो उत्तर की थी तथा दक्षिणी लिपि मे लिखी जाती थी, और जो आज मर चुकी है। जिस अरबी भाषा और साहित्य का आज प्राधान्य है और जिसने सदियो ख्याति पाई है वह कुरैश जाति की बोली थी। वही सास्कृतिक विचारो, धार्मिक चिंतन और साहित्यिक व्यजना का वाहन बनी, परन्तु जो भाषा हजरत मुहम्मद का आदर्श बनी, वह एक मिली-जुली ज़बान थी जिसे इस्लाम-पूर्व के कवियो ने अपने विचारो और गायनो का वाहन बनाया था।

प्राचीन कविता

प्राचीनतम कवियो मे अनेक नाम गिने जाते है। कुछ ये हैं—इम्रू अल-कस[१], आबिद इब्न-अल-अब्रास[२], अल्कमा[३], अम्र इब्न-कमी-आह[४], अल-मुहाल्हिल[५], अम्र इब्न-कुल्सूम[६], अल-हारिस इब्न-हिल्लिज़ा[७], तरफा इब्न-अल'अब्द[८], अल-मुतलम्मिस[९], अल-अश'अस[१०] और कवियित्री जलीलाह[११], कुछ उत्तरी प्राक्-इस्लाम कवियोके नाम है. औस इब्नहजार[१२] ज़ुहैर इब्न अबी-सुल्मा[१३], अल-हुताया[१४], काब इब्न ज़ुहैर[१५] और अल-नाबिगाह[१६]। अरबी साहित्य का,जैसा कहा जा चुका है, विस्तार बड़ा है और यद्यपि उसमे

---

१. Imru' Al-Qays (ल० ५००); २. 'Abıd Ibn-Al-Abras (ल० ५००); ३. Alqamah; ४. 'Amr Ibn-Qamı 'Ah (ज० ४८०); ५. Al-Muhalhıl; ६. 'Amr Ibn-Qulthum; ७. Al-Harıth Ibn-Hıllızah; ८. Tarafah Ibn-Al' Abd; ९. Al-Mutlammıs; १०. Al-Ash'th, ११ Jalılah, १२. Aws Ibn-Hajar; १३. Zuhayr Ibn-Abı-Sulma; १४. Al-Hutay 'Ah; १५. Ka'b Ibn-Zuhayr, १६ Al-Nabıghah

धार्मिक साहित्य का भाग कुछ कम नही। अरब को अनेक अरब-साहित्यकारो ने शुद्ध साहित्य की सज्ञा दी है और धार्मिक ज्ञान को इल्म कहा है। अरबी मकतबो मे धार्मिक विषयो को छोड, जिनपर शिक्षण होता है वे है—साहित्यिक आलोचना और इतिहास, व्याकरण, लिपि-लेख, कोष (लुगत), अलकार-काव्य, शब्द-शास्त्र, शैली-सिद्धान्त और तर्क-विज्ञान।

इस्लाम-पूर्व के अरबी साहित्य मे गद्य-पद्य ख्यातो-गीतो का हवाला मिलता है। कुरान से ही अनेक प्राक्-इस्लामी शैलियो का पता चलता है। स्वय वह धार्मिक पुस्तक पहले से चली आती शैलियो मे लिखी गई। हम्माद-अल-राविया[1] ने प्राचीन कविताओ के संग्रह का पहला प्रयत्न किया। तब तक केवल मौखिक रूप से इन कविताओ का प्रचार या सरक्षण होता आया था। अम्र-इब्न-कमी' आह ने पहला समूचा कसीदा (ओड) लिखा। फिर अल-कस' तूरफा, जुहैर आदि के दीवान लिखे गए। कुछ खडित काव्यों के स्रष्टा ता' अब्बाता शर्रा[2] और अल-शन्फरा[3] माने जाते है। उकाज के त्योहार पर अधिकतर ऊपर के प्राक्-इस्लामी कवियो के अतिरिक्त अम्र इब्न-कुल्सूम, अल-हारीस इब्न हिल्लिजा और अन्ताराह[4] की कविताए बडे शौक से पढी और सुनी जाती थी। इनके अतिरिक्त अल-जब्बी[5] के कसीदो का सग्रह 'अल-मूफद्दा लियात' मे हुआ और ऐतिहासिक कविताओ का अबु तम्माम[6] ने 'अल हमासह' (शौर काव्य) मे किया। अल-इस्बहानी[7] के गीत 'अल-अगानी' (गीत) मे सग्रहीत हुए।

यह अरबी साहित्य का पहला युग था। कसीदा का उदय और विस्तार मुहम्मद साहब से पहले हो चुका था और उसका प्राय वही रूप आज तक वर्तमान है। कसीदो के विषय विविध और हज़ारो है—प्रिया का आवाहन, आखेट के दृश्य, कबीला-जीवन, आपानको के दृश्य, तूफान और द्वन्द्वयुद्ध, पराक्रम, रात के हमले, दाता के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन, दु:ख-सुख के गीत, मैत्री और प्रतिशोध के गीत, व्यग्य और आलोचना के प्रसग इत्यादि।

इम्रू' अल-कैस और आबिद इब्न अल-अब्रस ने अपनी काव्य-शैलियो मे सुन्दर निखरी हुई टेकनीक का विकास किया। यहूदी अल-समव' अल इब्न-आदिया[8] भी, जो मदीना के पास ही तैमा के दुर्ग मे रहता था, अपनी काव्य-प्रतिभा के लिए विख्यात हो चला था। उसी की भाति कुछ अन्य अरबेतर ईसाई कवियो के नाम भी इस काल प्रसिद्ध हुए। इनमे प्रधान आदी-इब्न ज़ैद[9] फारसी और अरबी दोनो की शैलियो पर समान रूप से अधिकार

१. Hammad Al-Rawiyah (मृ० ७७२); २. Ta' Abbata Sharra; ३. Al-Shanfara , ४. Antarah , ५. Al-Dabbi (मृ० ७८५); ६. Abu-Tammam (ज० ८५०); ७. Abu-Al-Faraj Al-Isbhani (८९७–९६७), ८. Al-Samaw'Al Ibn-'Adiya , ९. 'Adi Ibn-Zayd (ज० ५४५)

रखता था। वह ईराकी ईसाई था और उसका कुल अल-हीरा के अरब लखमियो का सेवक और विशेष प्रियपात्र था। उसकी ख्याति तब अन्तर्जातीय हो गई थी, और वह अल-हीरा के अरब बादशाहो मे सबसे प्रसिद्ध अल-नु' मान तृतीय (५८०-६०२) का कृपाभाजन था। उसीकी भाति अबु-दु' अद अल-इयादी[1] भी ईराकी ईसाई था। उसने प्राक्-इस्लामी काव्य को बाह्य प्रभावो से भरा-पूरा। उसकी शैली पर अल-हीरा के अर्ध-बर्बर, अर्ध घुमक्कड अनागरिक जीवन का पूरा प्रभाव पडा। प्राचीनतम काल से मुहम्मद के समय तक के कवियो मे छन्दो के प्रयोग मे वह अकेला माना जाता है। उसने अठारह छन्दो मे से बारह का प्रयोग किया। प्रसिद्ध इम्रू-अल-कैस तक ने केवल दस तक का इस्तेमाल किया था। अल-हीरा के लखमी दरबार के साये मे अनेक काव्य-रूपो का विकास हुआ। 'रमल' (मोतियो से सुसज्जित) और 'खफीफ' (आशुगम्य) अरबी काव्यालकार मे उन्हीकी देन है। उस दरबार से ही दो और विशिष्ट अरबी कवियो के नाम जुडे हुए है · अल-मुतक्किब अल अबदी[2] और रूपातिलब्ध अल-अ'शा[3] के। 'रमल' और 'मुतकारिब' छन्दो का विकास पह्लवी छदो से माना जाता है। सातवी सदी के अन्त मे अरबी नीति-प्रबन्ध काव्य ने 'मुज्दाविज' (शेरनुमा) छन्द का प्रयोग भी प्रारम्भ कर दिया। इसका उदय सासानी शाहो के शासन काल मे ईरान मे हुआ था, परन्तु इसका प्रयोग अधिक दिनो तक न हो सका और इसका स्थान 'रजाज़' (ऊट के चलन से घुटनो का स्पदन) ने ले लिया।

इस्लाम के उदय के ठीक पहले अल-हिजाज़ का जुहैर इब्न-अबी-सुल्मा साहित्याकाश मे चमक रहा था। वह बद्दू आचारो का प्रतिष्ठाता था और उसने अपनी नीतिपरक कविताओ मे उस मरुभूमि के सारे आचार-विचारो को पिरो दिया। इसीसे उसकी ज़बान एक ओर प्राचीन अरबी भाषा और दूसरी ओर कुरान की शैली की सधि पर अवस्थित है। अल-हारिस-इब्न हिल्लिज़ा की रचनाओ (मु'अल्लकात) मे बिजैन्टाइन साम्राज्य और सासानी साम्राज्यो के मरणान्तक सघर्षो का प्रभूत उल्लेख है। धुबियान का अल-नाबिगा इस्लाम के उदय से पूर्व पचास वर्ष तक सीरिया के ईसाई गस्सानी दरबार मे रहा था और उसकी कविता वहा की शैली से खूब मज गई थी। वह अल-हीरा के ईरान-प्रभावित दरबार मे भी कुछ काल रहा था। उसकी कविता मे दोनो दरबारो की बहार है। उसकी और तरुण कवि अल-अ'शा की नीति-परक कविताओ मे अरबी विचारो का उत्तुग अरमई सस्कृति से अपूर्व सगम हुआ है।

---

१. Abu Du'Ad Al-Iyadı, २. Al-Mutaqqıb Al-Abdı (ल० ५५०); ३. Al-A'sha (ल० ५६५)

कुरान

'कुरान' एक साहित्यिक युग का अन्त और दूसरे का आरम्भ करता है। जीवित, साहित्यिक आवाज़ के रूप मे इसका प्राक्-इस्लामी साहित्य से बडा सामजस्य है। इसमे वर्णित बहिश्त के चित्र सर्वथा पार्थिव आपानको के है जिनके वर्णन मे प्राचीन क़ाफिर (प्राक्-इस्लामी) शायरो ने कलम तोड दी थी। कुरान के आरम्भ के 'सूराओ' (अध्यायो) मे कयामत का वर्णन गज़ब की मार्मिकता, शक्ति और ओज से हुआ है। साहित्यिक शैली की दृष्टि से कुरान ने पूर्ण विकसित प्राचीन काव्य-शैली को छोडकर समकालीन पेशेवर धार्मिक तुकबन्दी की गद्यात्मक तर्ज़ 'सर्ज' को अपनाया। वस्तुत प्राचीन और सम्प्रति के सम्मिलन के लिए कोई अन्य साहित्यिक कडी भी उपलब्ध न थी। उस अधकार के युग मे जब अरबो के पास यहूदियो और ईसाइयो की रचनाओ के मुकाबले का कोई साहित्य न था, 'कुरान' एक महान् चुनौती बनकर आया। उस काल का वह प्रमुख साहित्य और साहित्यिक शैली प्रस्तुत करता है।

मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कुरान तत्कालीन अरबी जगत् का असाधारण दर्पण है। इस अर्थ मे तब तक के अरबी साहित्य और इस असामान्य रचना के सदृश कुछ भी न था।

उसमे सीरिया, ग्रीस, अबीसीनिया और ईरान के साथ कुरैशी व्यापार का जिक्र है, और वहा जाने वाले अरबी कारवानो का। दक्षिण अल यमन को जाड़ो और उत्तर सीरिया को गर्मियो मे जाने वाले कुरैश खान्दान के सार्थवाहो (कारवा) को घने बन्धु भाव से वह प्रेरित करता है। आर्थिक समसामयिक स्थिति का तो उसमे विस्तृत उद्घाटन हुआ है, विशेषकर सूदखोरी का। सूदखोरो पर मुहम्मद साहब[1] की चोट खासी पडी है। धर्म के क्षेत्र मे कुरान तत्कालीन अरब की मूर्तिपूजा, आचार, विश्वास आदि पर प्रभूत प्रकाश डालता है। वस्तुतः वह प्राक्-इस्लामी साहित्य-शैलियो का भी आज हमारा प्रधान ज्ञान-स्रोत है। यदि कुरान न होता तो लैटिन से निकली अनेक रोमान्स भाषाओ की ही भाति अरब की बोलिया भी भाषाओ का रूप धारण कर लेती। कुरान ने जहा अरबी जनता को एक बन्धुत्व की शृखला मे बाधा, वही उसने वहा की विविध बोलियो को भी एक सूत्र मे नथकर अरबी भाषा मे लय कर दिया। अरबो मे एक धर्म के साथ एक भाषा का भी प्राधान्य हुआ। मध्य युग मे उधर की दुनिया मे अरबी शिष्ट साहित्यिक व्यजना की भाषा थी। नवी और बारहवी सदियो के बीच अरबी मे रची वैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक कृतियो की उधर की कोई भाषा बराबरी नही कर सकती। मानव जाति की वर्णमालाओं मे अरबी से केवल लैटिन का विस्तार बडा है। वरन् जितनी भाषाओ की लिपि अरबी वर्णमाला ने प्रस्तुत की है, उतनी और ने नही।

---

१. Mohammad Prophet (५७०-६३२)

कुरान की मक्का सबधी पहली नब्बे 'सूराए' गजब का महत्त्व रखती है। लघु, तीव्र, गहरी चोट करने वाली इन सूराओ को नबी जैसे इलहामी प्रेरणा से अनुप्राणित करता है। इनमे गजब की गति है, गजब की रवानी। शब्द-शब्द मे ज्वाला है। पद-पद मे तूफान छिपा है। जो बोलने वाले की आवाज मे भडक उठता है। विद्रोह, मूर्तिपूजा, दड, एकेश्वरवाद पर साहित्य की एक अनजानी शैली गढती-सी उसकी वाणी गूज उठती है। फिर धीरे-धीरे मदीना की हिजरत के बाद वाणी धीमी हो चलती है। ६२२ से ६३२ तक का काल, नई मदीना की सूराओ का है। इनमे घोषणाए और अनुशासन हैं। इलहामी आवाज की लिरिक अर्धगेयता अब समाप्त हो जाती है और उसका स्थान प्रबन्ध-रूप, व्याख्यान और राजनीतिक सिद्धात ले लेते है।

धीरे-धीरे काव्य-जनीन बोली कुरान के पिछले स्तरो मे एक साहित्यिक गद्यशैली का जन्म होता है। मुहम्मद साहब के तीसरे उत्तराधिकारी उसमान (६४४-५६) के खिलाफत काल मे कुरान का एक पाठ प्रस्तुत किया गया, यद्यपि उसका आज का रूप ९३३ मे प्रस्तुत हुआ। धर्म के क्षेत्र मे अरब मे तो कुरान ने एक क्राति मचा ही दी, अरबी व्याकरण, शब्दकोष, इतिहास, अनुवृत्त, धर्मशास्त्र आदि के निरूपण मे भी उसका प्रभाव दूरगामी सिद्ध हुआ।

कुरान की शैली प्राक्-इस्लामी तुकान्त गद्य की थी और उसकी भाषा सातवी सदी की मक्का की। कुरान मे उपमाओ की भरमार है। साथ ही अमसाल (कहावतो) का भी प्रभूत उपयोग हुआ है। ऐतिहासिक प्रसग का प्रयोग अल्लाह की ताकत जाहिर करने और मनुष्य तथा राष्ट्रो को सावधान करने के लिए हुआ है। अरबी और अन-रबी, मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनो ने कुरान की हृदयस्पर्शी और प्रभावोत्पादक शैली की अमित शक्ति समान रूप से स्वीकार की है। इसी कारण कुरान की भाषा, शैली, व्याकरण और वक्तृत्त्व-शक्ति का अध्ययन प्रखरमति आलोचको का इष्ट हो गया। कुरान का इस्लाम के विस्तार और साधारण मुस्लिम के वैयक्तिक आचार-गठन मे प्रभूत योग रहा है। कुरान के बिना हम इस्लाम की स्थिति को सोच नही सकते। इसके बिना इस्लाम निराधार हो जाएगा। क्योकि उसका आदि स्रोत यही है। यही उसका प्रमाण है, एक-मात्र शब्द-प्रमाण। उन्नीसवी सदी मे यूरोपियन पडितो ने कुरान का अध्ययन शुरू किया और कुछ यूरोपियन अनुवाद प्रस्तुत हुए। परन्तु मूल का असर अनुवाद मे कहा तक आ सकता था, विशेषकर अरबी मूल का, जिसमे ध्वनि का इतना प्राधान्य है, जो शब्द-शब्द पर पुलक और आसू उत्पन्न करता है।

: २ :

हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद

(६३२-७५०)

मुहम्मद की मृत्यु के बाद अरबी साहित्य मे एक नये युग का प्रारम्भ होता है। नया युग जिसमे अरब और उनका साहित्य ससार के सक्रिय सपर्क मे आए। अरबो ने ६२२ और ७५० ई० के बीच सधे शक्तिम धावो द्वारा पिरेनीज़ से पामीर तक सारा भूविस्तार आक्रात कर लिया। सीरिया, ईराक, विजैटीन, ईरान, मिस्र, उत्तरी अफ्रीका और स्पेन, एक-एक कर इस्लाम की बढती हुई शक्ति के शिकार हो गए। इसी बीच साम्राज्य की बढती हुई सीमाओ को सभालने के लिए खलीफा की राजधानी मदीने से सीरिया मे दमिश्क जा पहुची। विजयी रसाले विविध शिष्ट और सुसस्कृत जातियो के सपर्क मे आए और अरबो ने उनसे साहित्य-कला सीखी। नागरिकता के उसूलो को अपना वे व्यवस्थित समाज के रूप मे प्रतिष्ठित हुए। अरबो के हजारो कुल ईराक और सीरिया मे, ईरान और मिस्र मे, सर्वत्र सीमाओ मे फैलकर बस गए। फिर स्वदेश न लौटे। सबसे विशिष्ट आवश्यकता इस काल मे उन्हे अपने कुरान का पाठ शुद्ध रखने की हुई। इससे लिपि और व्याकरण की ओर उनका ध्यान गया। कुरान की व्यवस्था के लिए अनुवृत्तो तथा परपराओ का जानना आवश्यक हो गया और उनके अध्ययन के लिए धर्मशास्त्र एव कानून-विधान की नीव पडी। व्याकरण और निरुक्त (शब्दशास्त्र) को सभालने के लिए प्राचीन साहित्य का अनुशीलन अनिवार्य हो गया। प्राचीन वृत्त एकत्र किए जाने लगे। पुरानी वश-तालिकाए, जो अब तक मौखिक याद की जाती थी, लिख डाली गई। अरबो के पराक्रम की कथाए प्राचीन परपराओ की पेचीदी गुत्थियो से मुक्त की जाने लगी। पैगम्बर की जीवनी (सीरा) और आक्रमणो (मगाज़ो) की ऐतिहासिक खोज के सिलसिले मे कुछ तवारीख लिख डाले गए। वाहब इब्न मुनब्बीह[१] अपने देश अल-यमन की ख्यातो का बडा जानकार था। अपनी उस जानकारी तथा बाइबिल सबधी ज्ञान का लाभ उसने अरबी धर्म-शास्त्र और कानून व्यवस्था की नीव डालकर इस्लाम और अरबी साहित्य को दिया। इस्लाम का निष्णात पडित अल-हसन अल-बसरी[२] उसका समकालीन था। उसके सरक्षित प्रवचन इस्लामी धर्मशास्त्रीय ज्ञान के ही प्रतीक नही, अरबी गद्य के भी उत्तम नमूने है। इस्लाम के अनेक फिरको ने अलहसन को अपना प्रधान धार्मिक नेता माना जिसकी व्याख्या विशेषत. आदर से देखी जाने लगी। फिर भी अभी वह युग लेखन का इतना न था जितना मौखिक वाचन का। प्राचीन चारणो की भाति शायरी मुह से सुनाई जाती थी। सुनाने वाले राविया कहलाते थे।

१. Wahb Ibn-Munabbih (मृ० ७३२), २. Al-Hasan Al-Basri (मृ० ७२८)

वस्तुतः वह रावियो का ही युग था। सामग्री, जिसका राविया उपयोग करते थे, पुरानी थी, प्राचीनो की, जिसे जब-तब वे शुद्ध कर, पाठ-भेद उत्पन्न कर दिया करते थे। का'ब इब्न-जुहैर[१] ने मुहम्मद साहब की प्रशस्ति 'बानत सु'आद' (सुआद महाप्रस्थान कर चुका है) लिखी, जिसके लिए पैग़म्बर ने उसे अपना वस्त्र दे दिया था। अनेक बार तो चारण अपनी रचनाए भी पुराने काव्यो मे जोड दिया करते थे। हम्माद अल-राविया[२] ने इस प्रकार अपनी रचनाए अनेक बार जोडी। उसने जिस ग्राम्य लोक-प्रिय भाषा का उपयोग किया, उसकी वाक्य-परपरा व्याकरण की दृष्टि से प्रश्नात्मक थी, परन्तु चूकि वह आम जनता के लिए लिखता था, उसकी भाषा क्षम्य मानी गई। उसने इस्लाम-पूर्व, 'अल-मुख़द्र-मून' (सकर, खतनाहीन) अल-हुताया के दीवान मे अपनी रचनाओ के योग से बहुत उलट-फेर किए। अल-मुख़द्र-मून उन साहित्यिको का दल था जो पैदा तो हुए थे मुहम्मद साहब के पहले पर मरे इस्लाम के उदय के पश्चात्। अल-मुफ़ज्ज़ल अल-जब्बी[३] ने इसीलिए उसे वचक कहा है। यद्यपि स्वय अल-ज़ब्बी उस प्रकार की वचकता का कुछ कम पोषक नही। हम्माद के शिष्य खलफ-अल-अहमर[४] ने तो कसीदे के कसीदे इधर-उधर कर दिए। परन्तु अनेक बार ये चारण, स्वय ऊचे तबके के कवि थे। अनेक बार तो प्रधान कवियो ने 'उस्ताद की सेवा' मे चारण की स्थिति से ही साहित्य-रचना शुरू की थी। यही सबध पहले अल-फरज़दाक[५] और अल-हुताया[६] मे, अल-हुताया और जुहैर मे, जुहैर और कवि औस इब्न-हुज्र[७] तथा तुफ़ैल अल-गनवी[८] मे था। कवि अल-मिस्कीन[९] को चारण 'गुलाम' कहा गया है। चारण का सामाजिक स्तर इस प्रकार काफी नीचा था। विख्यात है कि जब-जब जरीर[१०] काव्य रचना चाहता था, अपने चारण को दवात लाने और चिराग मे तेल डालने को कह दिया करता था। हकलाने वाला कवि अबू-अल-अला-अल सिन्दी[११] अपनी जगह स्वतत्र किए हुए गुलाम (मावला) को अपनी (सिन्दी की) कविता सुनाने भेज दिया करता था। अल-अखतल[१२] का चारण स्पष्टत नीच सामाजिक स्तर का था।

पुनर्जागरण

परन्तु धार्मिक अनुशीलन का प्रचार बढता जा रहा था। हा, उस साहित्य के विस्तार मे गद्य की उचित शैली का अभाव निश्चय ही बाधक सिद्ध हो रहा था। मुहम्मद ने शायरो की भर्त्सना की थी, जिस परपरा को मुसलमानो ने कुछ हद तक जीवित रखा। फिर भी साहित्यिक अरबी मे पुरानी परपरा को लौटते देर न लगी। यह पुनर्जागरण विशेषत.

---

१. Ka'b Ibn-Zuhayr, २ Hammad Al-Rawiyah (७१३-७२), ३ Al-Mufaddal Al-Dabbi (मृ० ७८६); ४. Khalaf Al-Ahmar (मृ० ८००), ५ Al-Farazdaq; ६. Al-Hutayah; ७. Aws-Ibn-Hujr; ८. Tufayl Al-Ghanawi, ९. Al-Miskin; १०. Jarir (मृ० ७२९), ११ Abu Al-'Ala' Al Sindi (६४०-७१०); १२. Al-Akhta

ईराक मे हुआ जहा नये धर्म की जडे इतनी मज़बूत न हो सकी थी। जब-जब धर्मशास्त्रियो ने इसे दबाना चाहा, तब-तब चारण और कवि दमिश्क और दूसरे राज दरबारो मे चले गए, जहा उनका खुला स्वागत हुआ। इन पनाह लेने वाले कवियो मे प्राचीन अल-फरज़दाक जरीर और ईसाई अल-अखतल थे। उन्होने अल-हीरा और गस्सानी दरबारो की यादे ताजी कर दी और दश्मिक पहुचकर तो उन्होने प्राचीन ग़ैर-मुसलमान कवियो का अनुकरण करना शुरू कर दिया। विशेषकर अल-अख़तल ने, जो अब्बल मलिक (६८५-७०५) का राजकवि हो गया था। उसके और जरीर के बीच व्यग्य-स्पर्द्धा ('मुहाजाह्') और साहित्यिक विवाद (नका'इद) हुए।

घुमक्कड-समाज की नई नागरिक व्यवस्था ने अरबी कसीदे की बनावट मे खासा फर्क डाला। पुराने ढर्रे बदल गए। ईरानी और ग्रीक शिष्ट कुलो की भाति मदीने के सभ्रात कुलो मे भी गायक रखे जाने लगे। 'नसीब', जो कभी कसीदा का ही अग था, अब प्रणय-परक लिरिक बन गया। उसको यह रूप देने मे सबसे अधिक हाथ 'उमर-इब्न अबी-रबीया'[1] का था। उसकी कविता मे गजब का लोच और नजाकत थी। उसकी सादगी और मृदुता ने सुनने वालो के मर्म को छू लिया। उसने करुण और आनन्द रस के स्रोत बहा दिए। उसके दीवान से प्रकट है कि उसका अधिकतर जीवन कामनियो के पदानुसरण मे बीता। वह मक्का के एक रईस अरब पिता और ईसाई माता का पुत्र था।

उससे कुछ ही पहले 'मजनू' हुआ था। जिसका लैला के प्रति प्रेम अमर हो गया है। मजनू हाड-मास का आदमी था, सर्वथा काल्पनिक नही। उसका वास्तविक नाम कैस-अल-मुलव्वा[2] था। स्वय खलीफा अल-वलीद द्वितीय अपने खाली वक्त को (और उसे खाली वक्त की कमी न थी) आपानकपरक कविताओ से भरा करता था। गोशे तनहाई को भरने वाली शायरी और उसकी बुनियाद शराब का पीना इतना बढ गया कि जमाने ने विप्लव से उसका प्रतिकार किया। वह विप्लव वास्तव मे एक नये उदय होते युग की भूमिका था जिसने उमय्या खिलाफत को शीघ्र निगल लिया।

: ३ :

नया युग

(७५०—८३३)

बाह्य प्रभाव

इस्लाम की भौतिक और बौद्धिक विजयो के वारिस और प्रसारकर्त्ता के रूप मे 'नया युग' प्रारम्भिक अब्बासियो के तत्त्वावधान मे उदित हुआ। खिलाफत की राजधानी दमिश्क से

१. 'Umar Ibn-Abi-Rabi'ah (मृ० ७१९), २. Qays Al-Mulawwah (मृ०६९९)

उठकर बगदाद आ गई (७६२)। सारा साहित्य, सारी कला, सारा चिन्तन तब उसी नई दिशा की ओर मुडा, इस्लाम और मुसलमानी सस्कृति की नई राजधानी बगदाद की ओर। बगदाद अब प्रत्येक दिशा मे अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करने लगा। उठते हुए नये अरबी साहित्य को ग्रीक और ईसाई विचारो का, यहूदी और ईरानी चिन्तनो का, अरमई, भारतीय आदि धाराओ का योग मिला। साहित्य एक नई दिशा की ओर चला।

भारतीय प्रभाव

अब्बासी खलीफा अल-मन्सूर (मृ ७७५) ईसाई नेस्तोरी वैद्यो का प्रबल सरक्षक था। उसने उनको अपने धर्मोपदेश करने की अनुमति तो दे ही दी। ग्रीक, सीरियक और फारसी वैज्ञानिक कृतियो मे भी उसने अपना गहरा अनुराग प्रदर्शित किया। परतु खलीफा अल-मामून (मृ ८३३) तो इस दिशा मे मन्सूर से भी बढ गया। ग्रीक प्रभाव अपनी अरबी मूर्धा पर भी तभी चढा। फिर भी कुछ काल बाद ग्रीक सौदर्य-साधना से ऊब और हटकर अरब-मेधा फारस की ओर फिरी। कुछ ही काल बादभारत ने भी अरब को अपनी प्राचीन और समसामयिक प्रतिभा से आकृष्ट किया और उसके दर्शन और विज्ञान अपनी रस-बहुल धाराओ से उस मरु की चिरकालिक प्यास बुझाने लगे। मज्दी और मनीची प्रभाव ने उसे फिर कुछ निस्तेज कर दिया। इसमे सदेह नही कि अनेक अरब विद्वानो ने भारतीय दर्शन का स्वाद लिया। उनके नाम आज उपलब्ध नही। भारतीय दर्शन का आस्वादन करने वाला पहला अरब-ईरानी शिया अबु-अल-रैहा अल-बरूनी[1] था, जिसकी प्रखर मेधा ने भारतीय गणित, ज्योतिष, इतिहास, पुराण और भाषा सस्कृत का गभीर अध्ययन किया। भौतिक विज्ञान और गणित के क्षेत्र मे अरबी साहित्य मे वह सर्वथा बेजोड है। भारत सबधी उसका ग्रथ स्वय भारत के इतिहास-निर्माण मे आज एक मजिल का काम करता है। अल-बरूनी के बौद्ध धर्मावलम्बी बलख और सुग्ध (सोग्दियाना) से सम्पर्क ने इस्लाम और अरबी साहित्य दोनो को प्रभूत रूप से प्रभावित किया।

भारतीय पडित बग़दाद मे

७७० ई० मे भारत से एक 'हिन्दू' गणित और ज्योतिष का एक-एक ग्रन्थ लेकर बगदाद पहुंचा। ज्योतिष की वह पुस्तक सिद्धातो की थी। जिसका इब्राहीम अल-फ़ज़ारी[2] ने तत्काल अरबी अनुवाद 'अल-सिन्द-हिन्द' प्रस्तुत कर दिया। इस अनूदित ग्रन्थ ने अरब ज्योतिष के अध्ययन मे विप्लव उपस्थित कर दिया। उसीमें पहले पहल भारतीय अंको का उल्लेख हुआ। जिससे अरबी के अक-नाम 'हिन्दसा' की सज्ञा सार्थक हुई। उसी आधार से उठ वह अकमाला अल-ख्वारिज्मी के ग्रथो द्वारा पश्चिमी जगत्—यूरोप के देशों मे प्रचलित हुई।

१. Abu-Al-Rayhan Al-Biruni (मृ० १०४८); २ Ibrahim Al-Fazari (मृ० ७७७)

भारतीय अंकमाला

अरबी साहित्य की अनेक विज्ञानपरक दिशाओ मे इन भारतीय ग्रथो का गहरा प्रभाव पडा। परन्तु यदि केवल अकमाला के प्रचार तक ही यह प्रभाव सीमित रहता तो भी 'अल-सिन्द-हिन्द' का प्रकाशन ससार के सारे देशो के सार्वकालिक इतिहास मे युग-प्रवर्त्तक माना जाता। ख्वारिज्मी की मृत्यु ८५० ई० के लगभग हुई।

खलीफा अल-मामून ने 'बैत-अल-हिक्मा' (ज्ञान-सदन) की बगदाद मे प्रतिष्ठा कर (८३०) अरब जगत् मे पहली शोध-सस्था और उन्नत अध्ययन-पीठ की नीव डाली। अध्ययन-पीठ तो यह सस्था थी ही, अपने ग्रथागार और वेधशाला के कारण भी यह जगत् का आकर्षण बन गई। इतनी बडी अनुवाद-सस्था तो प्राचीन जगत् मे कही न देखी गई थी। ज्योतिष के सम्बन्ध मे जितना कार्य पहले हो चुका था, उसकी वहा छानबीन की गई। इसके अतिरिक्त उस दिशा मे वहा बडे असाधारण कार्य हुए। अल-मामून ने वहा और दमिश्क से बाहर पर्वत कासिऊन पर एक-एक वेधशाला स्थापित की। इस प्रकार की एक ही सस्था प्राचीन जगत् मे तीसरी सदी ई० पू० मे स्थापित हुई थी, सिकन्दरिया का 'म्यूजियम'।

पंचतंत्र

बगदाद मे और अन्यत्र अरबी साहित्य के क्षेत्र मे गैर अरबी भी प्रभूत सख्या मे अध्ययन, खोज, अनुवाद और रचना करने लगे थे। अल-खलील इब्न-अहमद[1] ने पेचीदे अरबी छद शास्त्र को पूर्णत निश्चित कर दिया और उसके ईरानी शिष्य सीबा-वैह[2] ने व्याकरण के रूपो के सबध मे वही कार्य किया था जो उसके गुरु ने छद-रचना के क्षेत्र मे किया था। भाषा-विज्ञान का मनन विशेषत अल-बसरा के केन्द्रो मे हुआ। इसी प्रकार का एक दूसरा पीठ अल-कूफा मे स्थापित हुआ। खुसरो के समय पहलवी मे 'पचतत्र' की सस्कृत कथाओ का एक अनुवाद प्रस्तुत हुआ था। इब्न-अल-मुकफ्फा (शिया होने के कारण ७५७ ई० के लगभग मार डाला गया) ने उसका अरबी अनुवाद 'कलील वा दिम्न' (बिदपाई की कहानिया) के नाम से किया। मुकफ्फा का दूसरा नाम रूज्बी था।

इस काल वैय्याकरणो का नाम भी स्तुत्य हुआ। अबु' उबैदाह[3] विशिष्ट व्यग्यकार के अतिरिक्त महान् पडित था। उसने वहा ईरानियो का नेतृत्त्व कर अरब राष्ट्रीय दल से लोहा भी लिया। उसका प्रतिस्पर्द्धी अल-अस्मा'इ[4] सम्पादक, टीकाकार और अरबी काव्य का आलोचक था। वह कभी हारू-अल-रशीद[5] का दरबारी भी

---

१. Al-Khalıl Ibn-Ahmad (मृ० ७९१), २ Sıbawayh (मृ० ७९३); ३. Abu'ubaydah (मृ० ८२४); ४. Al-Asma'ı (मृ० ८३०), ५. Haron Al-Rashıd (मृ० ७८६-८०९)

रह चुका था। जो कुछ भी अरबी साहित्यिक क्षेत्र मे पश्चात्काल मे लिखा गया उस सबकी बुनियाद अल-अस्मा'इ की ही प्रखर मेधा ने डाली।

इस काल की विशिष्ट प्रगति काव्य की दिशा मे हुई। एक नई प्रकार की काव्य-रचना, नई उपमाओ से मडित हुई। इस नई चेतना का प्रारभ करने वाला एक अच्छा कवि था—बश्शार इब्न-बुर्द[1]। खलीफा अल-महदी (७७५-८५) ने उस ईरानी प्रज्ञा-चक्षु को उसके इस्लाम-विरोधी विचारो के कारण प्राण-दण्ड दे दिया। भावुकता, शैली की निखार और भावो की मृदुता मे बश्शार लासानी था। इसी काल अरबी साहित्य के दो प्रमुख स्तम्भ हुए, अबु-नुवास[2] और अबु-अल-अताहियाह[3]। अबु-नुवास हारू अल-रशीद के विदूषक के रूप मे प्रसिद्ध है, साथ ही वह अलफ लैला (अरेबियन नाईट्स) के अनेक विनोदो का भी स्मरणीय नायक है। अनेक आलोचक तो उसे अरबी साहित्य का सुन्दरतम कवि मानते है। जन्म से वह ईरानी था जिसने शिक्षा बसरा मे पाई थी और जो बगदाद मे बस गया था। वहा खलीफा के दरबार मे पहुचते ही उसने वहां की सारी प्रतिभाओ को अपने तेज़ से मलिन कर दिया। उसकी कविताओ के विषय विविध है—प्रशस्ति (मदह), व्यग्य (हिज), आखेट के गीत (तरदियात), एलेजी (मरसिया), धर्म (ज़ोहदियात)। उसके मदिरा सम्बन्धी मदिर गीतो (खमरियात) ने तो सुनने वालो को विमुग्ध कर दिया। उसने मदिरा के आपानको का समर्थन करते हुए लिखा कि 'तोबा और परहेज की जरूरत नही, क्योकि खुदा की रहमत आदमी के गुनाह से बडी है।' कामुकता और विलास-वासना का तो अबु-नुवास और उसके ईरानी वन्धुओ ने जो अरबो मे प्रचार किया उससे उनकी आचार-रीढ टूट गई।

अबु अल-अताहियाह अबु-नुवास के विपरीत श्रीमानो के विलास का शत्रु था। वह अरब था, अल-कुफा मे जन्मा, जो मिट्टी के बर्तन बेचकर अपनी रोजी कमाता था। किव-दन्ती है कि प्रणय मे असफल होने से वह तप शील हो गया। उसके शत्रुओ ने एलान कर दिया कि अपनी तर्क-बुद्धि (इस्लाम-विरोधी) को छिपाने के लिए उसने आचार-प्रधान दर्शन अगीकार कर लिया है, जो गलत था। अताहियाह जनकवि था, जिसने जन-भाषा का प्रयोग अपनी कविता मे किया। अरबी मे इस प्रकार का प्रयोग करने वाला वह पहला कवि था। उसने अपनी कविता की भाषा से प्रमाणित कर दिया कि महान् कवि का भाषा सबधी साधारणीकरण किसी प्रकार कवि की मेधा या महानता को कम नही करता। उसकी कविताओ मे धर्म को प्रचुर स्थान मिला है। इस दिशा मे उसने युग-प्रवर्त्तक का काम किया, क्योकि कविता से उसके बाद धार्मिक भावना फिर बहिष्कृत न हुई। धार्मिक भावो का काव्य द्वारा प्रकाश औरो ने किया था। अन्धकवि बश्शार का

१ Basshar Ibn-Burd (मृ० ७८४), २ Abu-Nuwas (७५०-८१०); ३. Abu-Al-'Atahiyah (७४८-८२८)

ज़िक्र ऊपर किया जा चुका है। इसी प्रकार अबीसीनिया के भाड कवि अबु-दुलामाह[1] ने भी इस्लाम के विरुद्ध बडी गहरी व्यग्यात्मक फबतिया कसी थी। अताइया के पद्य मे इतिहास का गहरा धर्मशास्त्रीय विवेचन है। अल्लाह की इच्छा उसने प्रत्येक कार्य मे मानी थी और प्रार्थना मात्र को सर्वार्थ-साधक कहा। धर्म को ही सारी लौकिक बातो मे उसने निर्णायक माना।

कानून-व्यवस्था

गद्य का साहित्य भी तब का बडा ही विस्तृत है। उसका क्षेत्र अधिकतर धर्मशास्त्र और दर्शन था। रोमन्ज के 'जूरिस्प्रुडैन्स' (जूरिसप्रूडैन्शिया) के आधार पर उन्होने 'फिकह' नाम से मुस्लिम कानून-व्यवस्था की चार शाखाओ को जन्म दिया। इनमे सबसे प्राचीन और महत्त्वपूर्ण शाखा 'मजहब' अबु हनीफाह[2] ने चलाई, जिससे उसका नाम 'हनीफा' पडा। हनीफा अल-कूफा और बगदाद मे रहा। उसके सम्प्रदाय मे बडी सहिष्णुता है। मलिक इब्न-अनस[3] के नाम पर 'अलमुवत्ता' नाम से उसने अपने निर्णयो की कानूनी व्यवस्था की। तीसरी व्यवस्था मुहम्मद इब्न-इद्रीस अल-शाफी'इ[4] के नाम से 'शाफी' कहलाई। चौथी कानून-व्यवस्था 'हन्बली' का नाम उसके व्यवस्थापक अहमद इब्न-हन्बल[5] के नाम पर पडा। इसकी रूढिवादिता बगदादी कट्टर मुल्लाओ की शपथ बन गई।

इतिहास का भी तब स्वतन्त्र अध्ययन आरम्भ हुआ। इब्न-इसहाक[6] ने मुहम्मद साहब का जीवन-चरित लिखा जो इब्न-हिशाम[7] के सस्करण मे आज भी सरक्षित है। पैगम्बर के आक्रमणो का विवरण अल-वाकीदी[8] ने 'अल-मगाजी' के नाम से लिखा।

: ४ :

विदेशों में अरबी साहित्य

(८३३-१५१७)

खलीफा अल-मामून (८१३-३३) के बाद अरबो के विस्तृत साम्राज्य की शक्ति टूटने लगी। बगदाद की केन्द्रीय सत्ता बहुत कुछ धूमिल हो गई। साम्राज्य के विविध प्रात स्वतत्र हो गए और वहा एक नये साहित्य की साधना होने लगी।

इस नये नष्टप्राय अरब-सत्ता के युग मे जिन विशिष्ट देशो ने अरब साहित्य

१. Abu-Dulamah (मृ० ७८०); २. Abu-Hanifah (मृ० ७६७), ३. Malik Ibn-Anas (७१५-९५); ४. Muhammad Ibn-Idris-Al-Shafi'I (मृ० ८२०); ५. Ahmad Ibn Hanbal (मृ० ८५५); ६ Ibn-Ishaq (मृ० ७६६); ७. Ibn-Hisham (मृ० ८३४); ८. Al-Waqidi (मृ० ८२३)

साधना का विस्तार किया, स्पेन उनमे मुख्य था। कोर्दोवा मे उमैया खानदान की शाख लगी थी (७५६-१०३१)। वहा इब्न-'अब्द-रब्बिही'[1] खलीफा अब्द-अल-रहमान तृतीय का राजकवि, अग्रणी साहित्यकार हुआ। पौर्वात्य अल-काली[2] खलीफा अल हकम-द्वितीय (६६१-७६) के शासन मे कोर्दोवा के विश्वविद्यालय मे लब्ध-प्रतिष्ठ हुआ। प्राचीन अरबी साहित्य पर उसने 'अल-अमाली' नामक बहुविषयक ग्रन्थ लिखा। मुसलमानी स्पेन का सबसे मौलिक विचारक और प्रधान मनीषी इब्न-हज़्म[3] हुआ जिसने तुलनात्मक धर्म पर 'अल-फस्ल फि अल-मिलाल' (सम्प्रदाय-विभाजन) नामक मौलिक ग्रन्थ लिखा। सेविल, तोलेदो और ग्रानादा मे नये मुस्लिम राज्य स्थापित हो जाने के कारण कोर्दोवा की सत्ता ग्रहग्रहीत हो गई परन्तु मोजारबो ने अरबी सस्कृति का विस्तार उत्तर के प्रदेशो मे भी करना शुरू किया। कास्तिल और लियोन के राजा अल्फौन्ज़ो (१२५२-८२) के लिए पचतत्र की कहानियो का अनुवाद हुआ, जो अन्तत 'ला' 'फौन्तेन' का आधार बना। सेविल के कामुक कवि इब्न हानी (६३७-७३) पर ग्रीक रस-शास्त्र की छाप गहरी थी।

सरवैन्टीज के डॉनक्विक्ज़ोट का कथा-विस्तार ईरानी अल-हमज़ानी[4] की कृति 'मकामा' (सभा) पर अवलम्बित बताया जाता है। अल-हमज़ानी की कृति तुकान्त गद्य मे दार्शनिक और आचार-परक खोज का सगम है। उसका नायक अश्वासीन दार्शनिक है।

इब्न-ज़ैदून[5] कवि और पत्र-लेखक था। सुन्दरी अल-वल्लादाह[6] स्पेनी साहित्य की सेफो थी और इब्न-कुज़मान[7] कोर्दोवा का भ्रमणशील गायक था। स्पेन के अरबी साहित्यकारो ने स्पेनी साहित्य के निर्माण मे भी बडी सहायता दी। वहा के यूरोपियन साहित्य को प्रेरणा और रूप भी उसने दिए।

विज्ञान

अरबी-साहित्य मे अनुवाद-युग (७५०-६००) के बाद वैज्ञानिक सक्रियता का युग (६००-११००) आया। ज्योतिषी अबु-मा'शर[8] ने यूरोप को ज्वार-भाटे का सिद्धान्त सिखाया। लैटिन मे उसके चार ग्रन्थो के अनुवाद हुए। धीरे-धीरे अब यूरोप को अरब-विज्ञान-भडार को जानने की बेचैनी हुई। पर जानकारी का साधन अगाध था। केवल इस्तम्बूल (कॉन्सटैन्टीनोपल-कुस्तुन्तुनिया) की मस्जिदो मे दसो हज़ार हस्तलिपिया थी।

---

१ Ibn-'Abd-Rabbihi (८६०-६४०), २. Al-Qali (६०१-६७); ३. Ibn-Hazm (६६४-१०६४), ४. Al-Hamdhani (६६६-१००८); ५ Ibn Zaydun (१००३-७१); ६. Al-Walladah (मृ० १०८७), ७ Ibn Quzman; ८. Abu-Ma'Shar (मृ० ८८६)

इनके अतिरिक्त कैरो, दमिश्क, मोसुल, बगदाद, ईरान, भारत और उत्तरी अफ्रीका मे बेशुमार साहित्यिक निधि राशिभूत थी। बगदाद मे ऊपर बताए ज्ञानपीठ के अतिरिक्त एक और कॉलेज निजामियम था। जिसे 'उमर-अल-खैयाम' के सरक्षक और सल्जूक सुल्तान अलप अर्स्लान तथा मलिकशाह के वजीर ईरानी निज़ामुल्मुल्क ने १०६५-७ मे स्थापित किया था। १००५ मे फातिमी खलीफा, अल हाकिम ने कैरो मे विज्ञान-शाला कायम की। जहा ज्योतिष और चिकित्सा पढाई जाती थी। मिस्र का सबसे महान् ज्योतिषी अली इब्न यूनुस[1] था।

रोजर बेकन का 'ऑप्टिक्स' इब्न-अल-हैसाम[2] (अल-हजेन) के 'थेसारस ओप्टिको' पर अवलम्बित था। यह हैसाम कैरो के खलीफा अल-हाकिम के दरबार मे रहनेवाला चक्षु-विशारद और भिषग् था। अरबो के ज्योतिष-ज्ञान ने तो यूरोप को दास बना लिया। कोर्दोवा और तोलेदो (स्पेन) मे इसका आरम्भ हुआ। अल-जर काली[3] (अर्जाकेल, जिसे चॉसर आर्सेकीलेस कहता है) का तोलेदो मे १०८० मे खीचा गया ज्योतिष सबधी तोलेदो-चक्र उसीके नाम से विख्यात हुआ।

दर्शन

अनुवाद के युग मे मेधावी मुस्लिम दार्शनिको का भी प्रादुर्भाव हुआ। अरिस्टॉटल के दार्शनिक परिवार के समुन्नत शीर्ष निम्नलिखित थे

अल-किन्दी[4] अल-फाराबी[5],इब्न सीना[6] (अविसेन्ना), इब्न बाज्जाह[7] (आवेन्पेसे) इब्न-तुफैल[8] और इब्न रशद[9] (आवेरोएस)। ये सभी वैज्ञानिक होने के कारण इस्लाम के वस्तुतः विद्रोही थे। वे न तो इस्लाम मे पूर्णत. घुलमिल सके, न अपने विचार उसमे प्रविष्ट करा सके, परन्तु उन्हे अन्यत्र उचित आदर मिला, जहा वे अमर हो गए।

कोष

दसवी सदी के गर्वस्वरूप बसरा और बगदाद के विश्वकोषकारो का पीठ 'इख्वा अल-सफा' (ईमानदारी के बधु, ल० ९००) था। उनके ५२ पत्र (रसाएल) समसामयिक समूचे ज्ञान और विचारो के परिचायक है। इनके बाद इस दिशा मे विश्वकोषकार, शब्द-कोषकार और जीवनचरितकार प्राय ५०० वर्ष काम करते रहे। दो मिस्री अल-नुवैरी[10] और अल-कल्क़शन्दी[11] ने अपने-अपने विश्वकोष लिखे। दमिश्क की इब्न-अबी-उसैबियाह[12]

१. Alı Ibn-Yunus (मृ० १००९); २. Ibn-Al-Haytham, ३ Al-Zar Qalı; ४. Al-Kındı (मृ० ८५०); ५ Al-Farabı (मृ० ९५०); ६. Ibn-Sına (९८०-१०३७); ७. Ibn-Bajjah (मृ० ११३८); ८. Ibn Tufayl (मृ० ११८५); ९. Ibn-Rashad (११२६-९८); १०. Al-Nuwayrı (मृ० १३३२), ११. Al-Qalqashandı (मृ० १४१८); १२. Ibn-Abı-Usaybı'ah (१२०३-७०)

ने दार्शनिको और वैज्ञानिको के जीवनचरित लिखे। इस प्रकार के चरित अलेप्पो के मिस्री अल-किफती[1] ने भी लिखे।

अल-सफदी[2] ने २६ खडो मे वृहद् शब्दकोष प्रस्तुत किया। अल-अस्कलानी[3] का उद्योग भी इस दिशा मे सराहनीय था। तुर्क अबु-नसर अल-जौहरी[4] ने 'अलसिहा' (सच्चे जन) नामक एक कोष रचा जो पश्चात्कालीन कोषकारो के लिए प्रतीक बन गया। इसी प्रकार इब्न-मुकर्रम[5] का 'लिसा अल-अरब' (अरवो की जवान), अल-फीरुजाबादी[6] रचित 'कामूस' (महापर्व कोष) अरबी के प्रामाणिक लुगत है।

राजनीति

इसी प्रकार राजनीतिक साहित्य की भी रचना प्रभूत मात्रा मे हुई। हारू अल-रशीद का हनीफी प्रधान जज अबु-यूसुफ[7] था, जिसे खलीफा ने पहले पहल 'काजी-अल-कजा' (प्रधान जज) का खिताब दिया। उसने 'किताब अल खराज' लिखा। इब्न-अल-तिकतका[8] ने जो शिया था 'किताब अल-फख्री' रचा। जिसका पहला भाग राजनीति पर था। दूसरा मुस्लिम राजकुलो पर। स्पेन मे इब्न-अबी-रन्दका अल-तुर्तूशी[9] कानून और अनुवृत्त साहित्य पर प्रमाण माना जाता था। उसका 'सिराज-अल-मुलूक' (सुल्तानो का चिराग) शासन और राजनीति पर ग्रन्थ हिन्दू-फारसी उद्धरणो और सन्दर्भों से भरा है। सल्जूक सुल्तानो के वजीर निजाम-अल-मुल्क (ल० १०२०-९२) का उल्लेख ऊपर हो चुका है। वह ईरानी राजनीतिज्ञ और राजनीति का प्रकाड पडित था। उसने मलिकशाह के लिए 'सियासत-नामा' लिखा।

सिद्धान्त

परन्तु इस्लाम का मनु वास्तव मे अल-मावर्दी[10] था, जो वगदाद और वसरा के कॉलेजो मे पढाता था। उसका प्रधान ग्रन्थ 'अल-अहकाम अल-सुल्तानिया' था।

सुन्नी इस्लाम के राजनीतिक सिद्धान्तो का इसमे बडा प्रामाणिक प्रतिपादन और व्याख्यान हुआ है। प्राय चार सौ साल बाद अरबी साहित्य का उच्चतम स्तम्भ दार्शनिक और इतिहासकार इब्न-खल्दून[11] हुआ। राजनीति-शास्त्र पर उसका विवेचन भी असाधारण है।

इसी बीच कुरान का अध्ययन भी होता रहा और उसकी व्याख्या मे विद्वत्तापूर्ण

---

१. Al Qifti (मृ० १२४८), २ Al-Safadi (मृ० १३६३); ३. Al-Asqulani (मृ० १४४९); ४. Abu-Nasar Al-Jawhari (मृ० १००८); ५. Ibn-Mukarram (मृ० १३११); ६. Al-Firuzabadi (मृ० १४१४), ७. Abu-Yusuf (७३१-९८), ८. Ibn-Al-Tiqtaqah (ज० १२६२), ९. Al-Turtushi (१०५९-११२६), १० Al-Mawardi (मृ० १०५८), ११. Ibn-Khaldun (मृ० १४०६)

डाला। अरबो मे बस एक सूफी कवि इब्न-अल-फरीद[1] हुआ जो ईरानी आचार्यों के तबके का था। कोर्दोवा के इब्न-मसर्राह्[2] ने इश्राकी (प्रकाशपूर्ण) शाखा कायम की। धीरे-धीरे उसके विचारो का प्रसार बढा और अलैग्जेण्डर हेल्स, डुन्स स्कोट्स्, रोजर बेकन, रेमण्ड लल आदि विद्वान् उनसे प्रभावित हुए। दाते की 'डिवाईन कामेडी' पर भी उसका गहरा प्रभाव पडा।

अबू-अल-फतूह अल सुहरावर्दी[3] भी उसी वर्ग का सूफी कवि था। ट्यूनिस के अबू-अल-हसन अल-शाज़ीली[4] ने मोरक्को और ट्यूनिस के शाज़ीली (सूफियो का एक फिर्क़ा) फिरके का प्रचार किया। मिस्र के अबु-अल-मवाहिब-अल-शाज़ीली[5] की 'कवानीन' में सूफी मत का सार दिया हुआ है।

मगोल आक्रमण ने १२५८ मे बगदाद को बरबाद कर दिया। सीरिया और मिस्र मे कुछ काल फिर भी साहित्य-निर्माण का कार्य हुआ। यद्यपि सीरिया को यूरोपियन क्रूसेडो ने दम न लेने दिया। क्रूसेड-युग के मनोरजक सस्मरण उसामाह् (१०९५–११८८) ने आत्मचरित मे दिए हैं। अनेक साहित्यिको ने सलादीन के चरित लिखे। इन्हीमे उसका सेक्रेटरी इस्पहान का इमाद अल-दीन[6] था। बहा-अल-दीन अल-शद्दाद[7] और पश्चात्कालीन दमिश्की विद्वान् अबु-शामाह्[8] ने भी सलादीन पर ही लिखा।

ईराक और ईरान मे अल-गज्ज़ाली[9] इस्लाम का प्रकाड पडित हुआ। 'मकामात' (सभाए) लिखकर अल-हरीरी[10] ने ख्याति पाई। नवी और ग्यारहवी सदी के बीच सिसिली मे भी अरबी साहित्य फला-फूला। इब्न हम्दीस[11] वहा का सबसे बडा कवि था। नॉरमन आक्रमण के समय वह सेविल भागा। फिर अपने आका अल-मुतमिद[12] के साथ उसे वहा से भी मोरक्को भागना पडा। आगे सौ वर्ष सिसिली का ईसाई राजदरबार अरब साहित्यकारो का अखाडा रहा। नॉरमन राजदरबार के रत्न इब्न-ज़फर[13] और अल-इद्रीसी[14] थे।

मिस्र मे ममलूक सुल्तानो (१२५०-१५१७) ने मगोलो के धावो को रोका और हुलागू और तैमूर दोनो उसी दिशा मे अकृतकार्य रहे। उस काल ऊचे तबके का कवि केवल

---

१. Ibn-Al-Farid (११८१-१२३५), २. Ibn-Masarrah (८८७-९३१); ३. Abu-Al-Futuh Al-Suhrıwardy (मृ० ११९१), ४ Abu-Al-Hasan Al-Shadhılı (१२५८); ५ Abu-Al-Muwahıb Al-Shadhılı (१४०७-७८); ६ Imad-Al-Din (मृ० १२०१), ७. Baha'-Al-Dın Al-Shaddadi; ८ Abu-Shamah (मृ० १२६८); ९. Al-Ghazzalı (मृ० ११११); १०. Al-Harırı (१०५४-११२२); ११. Ibn-Hamdıs (१०५५-११३२), १२. Al-Mu'Tamıd (१०४०-९५); १३. Ibn-Zafar (मृ० ११६९); १४. Al-Idrısı (मृ० ११६६)

एक हुआ—अल-बूसीरी[1]। उसने पैगम्बर की जीवनी 'अल-बजा' लिखी। अल-मक्रीज़ी[2] ने इतिहास ग्रन्थ लिखे। इब्न-अरबशाह[3] ने जिसे तैमूर समरकन्द उठा ले गया था, उसकी प्रसिद्ध जीवनी लिखी। जलाल-अल-दीन अल-सुयूती[4] सल्जूक विजय से पहले की सदी का प्रधान व्यक्तित्व हुआ। उसने प्राचीन क्लासिकल, मुस्लिम अनुवृत्तो का संग्रह किया। फारसी 'हज़ार अफसाने' (अल-जहशियारी—मृ० ९४२) के आधार पर प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अरेबियन नाईट्स' लिखा गया। पुस्तक को उसका वर्तमान रूप चौदहवी सदी मे मिला। अरब-ईरान और पौर्वात्य देशो के सबध से पूर्व से प्रभूत सामग्री आई जो पुस्तकाकार होती गई। 'अल्फ लैला व लैला' (सहस्र और एक रजनी) उसीका परिणाम था। इसकी दो तहे है। एक बगदाद मे प्रस्तुत हुई, जिसमे खलीफा हारू अल-रशीद के दरबार के चित्र है। दूसरी तह मिस्र मे, जिसमे जिन्नो आदि का जिक्र है।

अल्फ लैला व लैला

कहानी शाह शहरयार और उसके अनुज शाहजमान की है। दोनो अपनी पत्नियो की वचकता से क्षुब्ध देश-विदेश घूमते रहे और अन्त मे एक जिन्न की सहायता से तै किया कि नारी का विश्वास नही करना चाहिए। लौटकर शहरयार अपने राज्य की तरुणियो मे से नित्य एक को रात मे भोगता है और सुबह मरवा डालता है। तब वजीर की कन्याए शहजाद और दीनज़ाद स्वय शहरयार को सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न करती है। शहजाद रात मे, जब उसकी बारी आती है, शहरयार के पास जाती है, और एक किस्सा सुनाती है। किस्सा सुबह के वक्त अपने 'क्लाइमेक्स' पर पहुचता है, और शाह की उत्कण्ठा इतनी प्रबल हो जाती है कि किस्सा पूरा सुनने के लिए वजीरजादी की जान वह उस रात बख्श देता है। पर नित्य वही स्थिति होती है और शाह को उत्सुक हो उसे नित्य मुक्त कर देना पडता है। इसी प्रकार एक हजार राते बीत जाती है और शहज़ाद से उसके तीन पुत्र होते हैं। अन्त मे वज़ीर-कन्या शाह के क्रोध से छुट्टी पा जाती है। सुख और इज्जत से रहने लगती है।

कहानी के अन्तराल से कहानी निकालते जाना वस्तुतः भारतीय पद्धति थी। 'पचतत्र' उसका असामान्य उदाहरण है। कहना न होगा कि अल्फ-लैला व लैला की अनेक कहानिया उसी और अन्य भारतीय आधार से उठी हैं। ग्रन्थ मे जहा-तहा कविताए भी दी हुई हैं, जो भावावेगो को मुखरित करती हैं। कुछ शायरी के उदाहरण उसमे शायरो के नाम

१. Al-Busiri (१२१२-९६); २ Al-Maqrizi (१३४६-१४४२); ३. Ibn-Arabshah (१३९२-१४५०), ४ Jalal-Al-Din Al-Suyuti (१४४५-१५०५)

देकर भी दिए गए है . वे नाम है—अबु-नुवास, इब्न-अल-मु'ताज़ और इस्हाक अल-मवसिली (७६७-८५०)। गम्भीर अरबी साहित्यकारो ने इस ग्रथ को फूहड और निन्द्य कहा। इनमे प्रधान इतिहासकार अल-मसू'दी (मृ० ६५६), जिसने 'मुरूज-अल जहब' (सोने के मैदान) लिखा और अल-नदीम (मृ० ६६५), जिसने 'अल-फिहरिस्त' लिखा, थे। अल-कुर्ती, जिसके विचार अल-मक्रीज़ी और अल-मक्करी (१५६१–१६३२) ने अपनी कृतियो मे उद्धृत किए हैं, केवल एक ऐसा इतिहासकार था, जिसने अपने मिस्र के इतिहास मे फातिमी खलीफा अल-आमिर (११०१-३०) के प्रणय-वृत्तो की इन 'रातों' की कहानियो से उपमा दी। अल्फ-लैला को आज तक अरबी विद्वान् हिकारत की नज़र से देखते है। कुछ भी हो, उन्हे छिपकर बैरूट, कादिर, बगदाद, मोरक्को से मध्य एशिया तक सर्वत्र साधु-असाधु, धनी-गरीब, चोरी से या खुले पढते ही हैं। अल्फ-लैला की कहानियों का यूरोपियन साहित्य पर भी खासा असर पडा। हारू अल-रशीद का नाम तो अधिकतर उन्हीके जरिये पहुचा। यद्यपि वह शार्लेमान का मित्र होने के नाते यूरोप मे सर्वथा अनजाना न था। फिर चॉसर के 'स्क्वायर्स टेल' अल्फ-लैला की ही एक कहानी है। आटवाने गैलोड (१६४६-१७१५) के इसके फ्रेंच अनुवाद ने यूरोप को प्राय. सौ वर्ष के लिए साहित्य का मसाला दे दिया। सदी भर उसका उपयोग वहा होता रहा। हरमन जोहेन्बर्ग के १८३५ के मिस्री हस्तलिपि से प्रस्तुत अनुवाद से ही अधिकतर यूरोपियन भाषाओ के अनुवाद प्रस्तुत हुए। अलाद्दीन और अद्भुत चिराग, अलीबाबा और चालीस चोर, मांझी सिंदबाद आदि की कहानिया यूरोप मे बाल साहित्य का अनिवार्य अश बनकर घर-घर की वस्तु बन गई हैं। कुछ अजब नही कि कासानोवा के सस्मरणो पर भी अल्फ-लैला की कहानियो का प्रभाव पड़ा हो।

स्पेन पर ईसाई शासन स्थापित होने के बाद अरबी-यहूदी ग्रथो का अग्निकाड शुरू हुआ और उनके विरले ही ग्रथ इस आसुरी सहार से बच पाए। फर्डिनेन्ड की अग्नि-लिप्सा चगेज और तैमूर की बर्बरता से कही अधिक थी। उन दिनो के कुछ एक साहित्यिको का उल्लेख कर देना समीचीन होगा। इब्न अल-खतीब[1] शैली का जादूगर था। वह ऊचे तबके का कवि था, मुवश्शहो का सुन्दर लिखने वाला, जो स्पेन मे मरा। उसके बाद 'हिस्पानो' (स्पेनी)—अरबी सस्कृति उत्तर-पश्चिम अफ्रीका की ओर हिज़रत कर गई, जहा फैज़ और त्लेमसेन में उसके केन्द्र कायम हुए। तेरहवी सदी मे पहले फैज़ फिर चौदहवी मे ट्यूनिस उसके दुर्ग बने। तन्जियर प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बत्तताह[2] का जन्मस्थान था। भा[illegible] इतिहास पर उसके भ्रमण-वृत्तान्तो से बडा प्रकाश पडा है। मोरक्की इतिहासकार अब्द-अल-वाहिद कुछ काल स्पेन मे रहा था, जहा उसने १२२४ मे मुवाहिद

१ Ibn-Al-Khatib (१३१३-७४); २. Ibn-Battutah (१३०४-७७)

खान्दान का प्रामाणिक इतिहास लिखा। ट्यूनिस निवासी इब्न-खल्दून[1] ने इतिहास-विज्ञान की नव-पद्धति को जन्म देकर अपना नाम इतिहास-निर्माण के क्षेत्र मे अमर कर दिया।

इसी काल कुछ बडे प्रामाणिक इतिहासकारो ने अपने ग्रथ लिखे। दो अग्रणी अरबी इतिहासकार मिस्री इब्न-अब्द-अल-हाकम[2] और अल-बलाजरी[3] (ईरानी था पर अरबी मे लिखता था)थे। पहले का 'फतूह मिस्र' मिस्र, उत्तर अफ्रीका और स्पेन की अरब-विजय पर पहला प्रामाणिक ग्रन्थ है, इसी प्रकार दूसरे का 'फतूह अल-बुल्दान' मुस्लिम राज्य के मूल का निरूपण पहली बार करता है। अल-तबरी[4] और अल-मस'ऊदी[5] के हाथो इतिहासकारिता चोटी पर पहुच गई। फिर मिस्कवैह्[6] के बाद उसका ह्रास होने लगा। राष्ट्रीय जीवनचरितो का एक कोष सीरिया के एक प्रधान जज इब्न-खल्लिकान[7] ने लिखा। उससे पहले पूर्वी भूगोलकारो मे सबसे महान् याकूत[8] ने साहित्यकारो का एक कोष 'म' अजम अल-उदबा' नाम से प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार इब्न-असाकिर[9] ने ८० खण्डो मे दमिश्की प्रसिद्ध पुरुषो का चरित लिखा। मर्व के इब्न-कुतैबाह्[10] ने 'अल-शे'र व 'अल-शो'अरा' (कविता और कवि) लिखकर बडी ख्याति पाई और उसने गद्य की जो शैली प्रचलित की वह चिरकाल तक चली।

दसवी सदी मे साहित्यिक इतिहास के सिलसिले मे आलोचना-विज्ञान ने शैलियों का अध्ययन करते समय भाषा-शास्त्र सम्बन्धी विवेचन भी किया। अल-आमिदी[11] मे कवि अबू-तम्माम[12] और अल-बुहतुरी[13] का इसी प्रकार का अध्ययन किया। कुदामाह इब्न-जा'फर[14] के जरिए इस क्रम मे ग्रीक 'रहोटोरिक' मानदडो का उपयोग अरबी साहित्य के मूल्याकन मे भी किया गया। अब्बासी सुल्तान इब्न-अल-मु'ताज[15] ने इस दिशा मे अपनी किताब 'अल-बदी' लिखी। अभागा सुल्तान बस एक ही दिन सल्तनत का भोग कर सका। दूसरे ही दिन उसकी हत्या कर दी गई। काव्यालकार पर उसकी पुस्तक पहली कृति थी, जिसमे अरबी विचारो और आदर्शों के आधार पर अलकार के सिद्धान्त रखे गए।

---

१. Ibn-Khaldun (१३३२-१४०६), २. Ibn-'Abd-Al-Hakam (मृ० ८७०), ३. Al-Baladhuri (मृ० ८९२), ४ Al-Tabari (८३८-९२३); ५ Al-Mas'udi (मृ० ९५६); ६ Miskawayh (मृ० १०३०), ७. Ibn-Khallikan (मृ० १२८२), ८. Yaqut (११७९-१२२९), ९ Ibn-'Asakir (मृ० ११७७); १०. Ibn-Qutaybah (मृ० ८८५); ११. Al-Amidi (मृ० ९८७); १२. Abu-Tammam (मृ०८ ४६) १३. Al-Buhturi (मृ० ८९७), १४ Qudamah Ibn-Ja'far (मृ० ९२२); १५. Ibn-Al-Mu'tazz (मृ० ९०८)

अबु-हिलाल अल-अस्करी[1] ने अपनी 'किताब-अल-सिना'अतें' में गद्य और पद्य दोनों की शैलियो, अलकार आदि पर विचार किया। इसी प्रकार उसने 'इ'जाज़ अल-कुरान' मे अलकारो आदि पर भी लिखा, जिससे प्रेरणा पाकर अशरी धर्मशास्त्री अल-बाकिलानी[2] ने अलकार और आलोचना की समस्याओ पर विचार किया। इसका प्रधान विवेच्य तत्व रसात्मक आलोचना है। अरबी साहित्य के प्रबल स्तभ अल-मुतनब्बी[3] और अल-मा'अर्री[4] भी तभी हुए। इनमे से पहला अरबी पद्य का आचार्य माना जाता है। दूसरे ने भी अलकार आदि पर लिखा परतु उसकी ख्याति बौद्धिक, दार्शनिक सत्य की खोज के क्षेत्र मे अधिक है। अल-जाहिज़[5] ने साहित्य सबधी पुराने दृष्टिकोण का प्रतिवाद किया। उसी परपरा मे अबु-मन्सूर अल-सा' आलिबी[6] भी हुआ। जिसने समकालीन कवि-कृतियो का एक सग्रह 'यतीमात-अल-दहर' नाम से निकाला जो विद्वत्ता और साहित्यिक सुरुचि का असामात मॉडल है। इब्न राशीक[7] ने 'अल-उम्दाह' मे काव्य-कला के विषय मे लिखा कि यदि उसके समसामयिक पुरानी काव्य-रूढियो को छोड दे, तो सही कविता कर सकेगे। उसने प्रकृति और यथार्थ के प्रति जागरूक होने के लिए अपने कवियो को प्रेरित किया और पुराने रूपो और टेकनीक की अच्छी खिल्ली उडाई। अब्द-अल-कादिर-अल-जुरजानी[8] और ज़िया' अल-दीन-इब्न-अल 'असीर'[9] ने भी उसी परपरा मे साहित्य का कल्याण किया।

: ५ :

अंधकार युग

(१५१७—१८००)

आगे का युग अपेक्षाकृत अधकार का था। उसमानी तुर्कों ने बास्फॉरस पर १४५३ मे अधिकार और १५१७ मे ममलूक सुल्तानो की सत्ता का अत कर अरबी साहित्य की धारा कुठित कर दी। यूरोपियन व्यापारियो को तब अपनी राह दूसरी ओर पश्चिमी समुद्र से बनानी पडी और भूमध्यसागर का महत्व घट गया। परंतु जिस मात्रा मे यूरोप जागरूक हुआ, उसी मात्रा मे अरबो की कर्मठता मूढ होती गई। फिर भी साहित्य चर्चा होती रही।

---

१. Abu-Hilal-Al-'Askari (मृ० १००५); २ Al-Baqillani (मृ० १०१२), ३. Al-Mutanabbi (मृ० ९६५), ४ Al-Ma'arri (९७३-१०५७) ५ Al-Jahiz (मृ०८६९); ६ Abu-Mansur-Al-Tha'alibi (मृ १०३८); ७. Ibn-Rashik (मृ० १०७०), ८ 'Abd-Al-Qadir Al-Jurjani (मृ० १०७८), ९. Diya'-Al-Din' Ibn-Al-Athir (मृ० १२३९)

स्पेनी युग की अरबी सक्रियता का एक भूरापूरा चित्र हमे अल्जियर के अहमद इब्न मुहम्मद अल-मक्करी[1] के इतिहास-साहित्यपरक ग्रन्थ मे मिलता है। पर वस्तुत सोलहवी से अठारहवी सदी का अरब-ससार निद्राग्रस्त है।

विदेशो मे

भारत मे जहा वस्तुत. राजभाषा होने से फारसी का बोलबाला था, अरबी ग्रन्थो की रचना भी प्रचुर मात्रा मे हुई। उस काल दो ऐतिहासिक पुस्तके प्रस्तुत हुई, जिनमे से पहली 'तुहफत-अल-मुजाहिदीन' मालाबार मे इस्लाम के प्रवेश और पुर्तगालियो के साथ युद्धो का विवरण है, और दूसरी गुजरात का इतिहास है। इसी प्रकार कुछ साहित्य-सृजन मलाया मे भी हुआ। उस युग की विचारशील परम्परा का उद्घाटन मिस्र के 'अब्द-अल-वहाब-अल-शा'रानी[2] ने अपनी आत्मकथा 'लताएफ अल-मिनन' मे किया।

अब्द-अल-वहाब इस्लाम का अन्तिम महान् रहस्यवादी था। उसका दूसरा ग्रन्थ 'लवाकीह-अल-अन्वार' (जिसका दूसरा लोकप्रिय नाम 'तबकात अल-कुब्रा' है) सूफी चरितो का प्रधान कोष है। वह धर्मशास्त्र को रहस्यवाद की पहली सीढी मानता था। और उसने कानूनी व्यवस्था की चारो शाखाओ का समन्वय किया। उसने उसमानी सुल्तानो के शासन-काल के किसानो के गरीबी की ममलूको के समय की समृद्धि से तुलना की है।

तुर्क

तुर्कों ने भी पीछे अरबी का अध्ययन शुरू किया। अरबी बोलने वाले प्रान्तो के साम्राज्य मे सम्मिलित हो जाने के बाद तो यह अध्ययन अनिवार्य हो गया। कुछ तुर्कों ने अरबी मे ग्रथ भी लिखे। इनमे प्रधान हाज़ी खलफाह[3] का ग्रन्थ है, जिसमे अरबी, फारसी और तुर्की ग्रन्थो की तालिका है। वस्तुत. यह ग्रन्थ कोष है। हाज़ी खलफाह उसमान-साम्राज्य के युद्ध-विभाग मे कॉन्सटेन्टीनोपल मे सेक्रेटरी था। मध्य अफ्रीका मे भी इस्लाम का प्रवेश होने पर वहा अरबी मे ग्रन्थ रचना हुई। १५४० के लगभग सोमाली अरब अरबफकीह ने अबीसीनिया मे मुसलमानो और ईसाइयो के युद्धो का वर्णन किया। टिम्बकटू के निवासी अल-सा'दी ने सोगै राज्य का इतिहास 'तारीख अल-सूडान' (सूडान का इतिहास) नाम से लिखा।

आन्दोलन

इस युग के बाद अरब मे एक धार्मिक राजनीतिक आन्दोलन चला। ईरान के

---

१. Ahmad Ibn-Muhammad Al-Maqqarı (१५९१-१६३२); २. 'Abd-Al-Wahhab Al-Sha'ranı (मृ० १५६५); ३. Hajjı Khalfah (मृ० १६५८)

इब्न-तैमीयाह[1] के उदाहरण से प्रभावित होकर नजद के मुहम्मद इब्न-अब्द-अल-वहाब[2] ने इस्लाम की समसामयिक स्थिति मे सुधार करने का प्रयत्न किया। उसकी कुरीतियो को हटाकर पैगम्बर-कालीन शालीनता प्रतिष्ठित करना उसका ध्येय था। धीरे-धीरे उसका प्रचार दूर-दूर तक हुआ। मध्य अरब की भूमि पर वह विशेष लोकप्रिय हुआ। बहुमुखी प्रतिभा वाला सुल्तान इब्न-सु'अद (जन्म १८८०) इस आन्दोलन का चतुर अग्रणी था। अपनी विशिष्ट स्थिति से वह वहाबी आन्दोलन की ओर ससार की दृष्टि आकर्षित करने मे सफल हुआ। इस मूलवादी इस्लामी आन्दोलन से वह रहस्यवादी 'सनूसी' बिरादरी निकली, जिसे कायम करने वाला मुहम्मद इब्न-अली-अल-सनूसी[3] था। वह अल्जियर्स मे जन्मा और लीबिया मे जागबूब मे मरा। अल-सनूसी के प्रोग्राम की एक योजना पैगम्बर और उसके शीघ्र पश्चात् काल की परपरा मे अरब मे धर्म-प्रधान राज्य स्थापित करने की भी थी। इटली की साम्राज्यनीति ने उसकी रीढ तोड दी, यद्यपि दूसरे महायुद्ध के अवसर पर ब्रिटिश सरकार ने फिर उसे आश्वस्त किया।

इस युग मे फिर भी भाषा सबधी विचार होते रहे। दक्षिण अरब मे अल-सैयद अल-मुर्तजा[4] ने 'ताज-अल-'अरूस' लिखकर प्राचीन कोषकारो की परपरा लौटा ली। वह वर्तमान शिया-युग का अन्तिम स्तम्भ था, अल-यमन की जैदी परपरा का। उसका प्रधान ग्रन्थ अल-गजाली की 'इह्या' पर लिखा भाष्य था। उसमे उसने पुराने मॉडलो को छोडकर नयो को आधार बनाया और एक नई जागृति उसने उस जरिये सारे अरब और मुस्लिम जगत् मे पैदा कर दी।

: ६ :

पुनरुत्कर्ष

(१८००-१९१४)

१८०० से १९१४ ई० तक का युग अरबी साहित्य मे पुनरुत्कर्ष का था। समूचा उन्नीसवी सदी मे प्रथम महासमर तक टर्की का अधिकार अधिकतर अरब-जगत् पर बना रहा था। अब भी कॉन्स्टैन्टीनोपल एक विशाल साम्राज्य की राजधानी थी, जो साथ ही ससार के मुस्लिमो पर धार्मिक हुकूमत करने वाली खिलाफत का भी केन्द्र थी, (क्योकि सुल्तान ही खलीफा भी था)। नील नद की घाटी मे तब आजादी की पहली लहर बही,

---

१. Ibn-Taymıyah (१२६३-१३२८); २ Muhammad Ibn-'Abd-Al-Wahhab (ज० १७२०), ३ Muhammad Ibn-'Alı-Al-Sanusı (१७९१-१८५९); ४. Al-Sayyıd Al-Murtda (१७३२-९१)

अरब आज़ादी की पहली लहर, उस काल का मिस्री साहित्य राजनीतिक विद्रोही अल-जबर्ती[१] की नीव पर खडा हुआ। अब्दुल्लाह् फिक्री[२], अली अल-लैसी[३] और अब्दुल्ला अल-नदीम[४] ने गद्य-पद्य दोनो लिखे। फिर भी ये उसमानी परपरा के ही कवि थे क्योकि सैद्धान्तिक रूप से तुर्की का सुल्तान अब भी मुसलमानी-जगत् का नियन्ता था।

उस युग के इस्लाम के अग्रणी जमाल-अल-दीन अल-अफगानी[५] और उसका मेधावी शिष्य मुहम्मद 'अब्दू[६] थे। इनमे से पहले ने उसमानी खलीफा के नेतृत्व मे मुस्लिम-जगत् का सगठन शुरू किया, दूसरे ने धर्मशास्त्र को फिर से सभाला। अन्य अनेक पडितो ने भी इस दिशा मे कार्य किया और सुल्तान-खलीफा द्वारा वे समादृत हुए। अली अबु-अल-नसर[७] इब्राहीम अल-मुवैलिही[८] और मुस्तफा कामिल[९] खलीफा के आदर के पात्र बने। अहमद शौकी[१०], हाफिज इब्राहीम[११] और इस्माइल साबरी[१२] भी इसी परपरा के लेखक थे। मुस्तफा कामिल ने खुले तौर पर लिखा कि मिस्र की सहानुभूति समूचे मुस्लिम-ससार की एकता के पक्ष मे है। उसी उसमानी पक्ष का सीरियक अहमद फारिस अल-शिदयाक[१३] ने भी समर्थन किया। दूर मोरक्को के लेखक शिहाब अल-दीन अल-सलावी[१४] ने भी उसी विचार की पुष्टि की। सीरिया और ईराक मे, जहा टर्की की नीति भी अनेक बार साहित्यिक दृष्टिकोणो का कारण बन जाती थी, साहित्यिको के मत दोनो ओर बट गए थे। सीरिया मे जन्मे, और प्रसिद्ध दैनिक 'अल-अहराम' (पिरैमिड)के प्रतिष्ठाता (१८७५) सलीम तकला[१५] ने उसमानी-सघ का पक्ष लिया। इसी प्रकार उस पक्ष का प्रसिद्ध सीरियक-मिस्री कवि खलील मत्रान[१६] ने भी समर्थन किया। परन्तु सीरियक जर्नलिस्ट और साहित्यिक इसके विरुद्ध थे। इन्हीमे 'अल-मुशीर के प्रतिष्ठाता सलीम सरकीस[१७] भी थे। फरह अन्तून[१८] ने मिस्र मे 'जामिया अल-उसमानिया' (उसमानी-सघ) नाम का जर्नल निकाला।

---

१. Al-Jabartı (१७५६-१८२५), २ Abdullah Fıkrı (१८३४-९०) ; ३. Alı-Al-Laythı (१८३०-९६) ; ४. Abdullah Al-Nadım (१८४४-९६), ५. Jamal-Al-Dın-Al-Afghanı (१८३९-९७), ६. Muhammad Abdu (१८४९-१९०५), ७. 'Alı-Abu Al-Nasar (मृ० १८८०) ; ८. Ibrahım Al-Muwaylıhı (१८४६-१९०६), ९. Mustafa Kamıl (मृ० १९०८) ; १०. Ahmed Shawqı (१८६८-१९३२) ; ११. Hafız Ibrahım (१८७१-१९३२), १२. Ismaıl Sabrı (१८६१-१९२३), १३. Ahmad Farıs Al-Shıdyaq (१८०४-८७), १४ Shıhab-Al-Dın Al-Salawı (१८३५-९७), १५. Salım Taqla (१८४९-९२), १६. Khalıl Matran (ज० १८७२) ; १७ Salım Sarkıs (१८६९-१९२६) १८. Farah Antun (१८७२-१९१४)

मुस्लिम धर्मशास्त्री और 'अल-मनार' के सम्पादक रशीद रिजा[1] ने इस मिस्र मे बसे सीरियक ईसाई अन्तून का उसमान-पक्षीय दृष्टिकोण सराहा। जुर्जी जैदान[2] और अदीब इसहाक[3] भी उसी विचार के प्रचारक बने। इसी काल प्रतिभाशाली कवि वली-अल दीन यकन[4] हुआ, जो जन्मा कॉन्स्टैन्टीनोपल मे था पर पूरा मिस्री हो गया था। उसकी कविता मे उसमानो के अनाचारो के विरुद्ध धिक्कार है और अपनी मातृभूमि के लिए मुग्ध उल्लास। वह भी सुधारवादी था।

परन्तु इस काल की अरबी कविता मे प्राय. सर्वत्र सुल्तान-खलीफा के लिए अकारण अगाध भक्ति है। उनकी कविताए मूलत और प्राय पूर्णत प्रशस्तिवादी है, जिनका केन्द्र खलीफा की शालीनता है। इस युग के प्रशस्त कवि और अग्रणी साहित्यकार सीरियक बुत्रुस करामाह[5], ईराकी कवि अब्द-अल-बाकी अल-उमरी[6] और लेबनानी कवि नासिफ अल-याज़िजी[7] की भी यही प्रशस्तिवादी सरणी है।

तुर्की सुधारो के बाद मिदहत पाशा के प्रान्तीय शासनकाल (१८२२–८४) मे सीरिया मे एक शक्तिमान साहित्यिक आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। कॉन्स्टैन्टीनोपल के निरकुश शासन के विरुद्ध जोशीले कसीदे लिखकर मस्जिदो और गिरजो के दरवाजो पर चिपका दिए गए। उन साहित्यकारो पर अब्द-अल-हमीद के सुल्तानी शासन मे बडे जुल्म हुए। साहित्यकार बिखर गए, परन्तु सुधारो के बाद लोग शाति की छाया मे लौटे और अब नए सिरे से टर्की राष्ट्र के पक्ष मे रचना शुरू हुई। रूसी-टर्की-युद्ध, ग्रीक-युद्ध, इटली-टर्की-युद्ध और बाल्कन युद्धो के अवसरो पर प्रभूत साहित्य की रचना हुई, जो टर्की के समर्थन मे थी। खलील मत्रान ने बोअर युद्ध के अवसर पर दक्षिणी अफ्रीका वालो के पक्ष मे सुन्दर कसीदा लिखा। रूसी-जापानी युद्ध (१९०४–५) के समय सहानुभूति जापानियो के पक्ष मे थी और अनेक कसीदो की रचना रूस के विरुद्ध हुई। इस काल का बहुत-सा साहित्य समसामयिक, निर्यौन और प्रगतिशील है।

नेपोलियन के आक्रमण (१७९८-१८०१) से मिस्र मे आधुनिकता का भी साहित्य मे बोलबाला हुआ। इस काल जो मध्यपूर्व मे एक सास्कृतिक आन्दोलन हुआ, उसका नेता बुत्रुस अल-बुस्तानी[8] था। उसकी रचनाए अनेक है। इस काल पाश्चात्य विज्ञान से प्रभावित कुछ विज्ञानवादी—शिबली शुमाय्यिल[9] भी हुए। मुहम्मद अली[10] और उनके पौत्र

१. Rashıd Rıda (१८६५-१९३५), २ Jurjı Zaydan (१८६१-१९१४), ३. Adıb Ishaq (१८५६-८५), ४. Walı-Al-Dın-Yakan (१८७३-१९२१), ५ Butrus Karamah (१७७४-१८५७), ६. 'Abd-Al-Baqı Al-'Umrı (१७९०-१८६२), ७. Nasıf Al-Yazıjı (१८००-७१), ८. Butrus Al-Bustanı (१८१९-१८८३), ९. Shıblı Shumayyıl (१८५०-१९१६), १०. Muhammad 'Alı (१८०५-४८)

इस्माइल[1] ने मिस्र मे नए युग का आरम्भ किया। मुहम्मदअली द्वारा शिक्षा के लिए पेरिस भेजा रिफाआह अल-तिहतावी[2] पहला मिस्री कवि था, जिसने काव्य मे फ्रेच-रूप और टेक-नीक का उपयोग किया। खलील मत्रान ने काव्य के क्षेत्र मे प्राचीनतावादी होते हुए भी, नये युग की नीव डाली। उसके दृष्टिकोण का आधार अधिकतर पश्चिमी दर्शन था। अपने काव्य-सग्रह 'अल-खलील' (मित्र) (१९०८) मे उसने अपने इन विचारो को परिपुष्ट किया। सीरिया मे इस दृष्टिकोण का और भी पोषण हुआ। १९०४ तक अमेरिकन राज-नीतिक विचार और साहित्यिक अभिप्राय (मोटिफ) भी अरबी साहित्य-क्षेत्र मे पनप चले। १९१३ की २४ अप्रैल को राष्ट्रीय मिस्री विश्वविद्यालय ने अनेक अरबी कवियो और साहित्यिको को एक दावत मे एकत्र कर एक नई एकता का सूत्रपात किया। इस दावत मे शरीक सभी अरबी साहित्यिक थे। (दावत खलील मत्रान को दी गई थी) अहमद शौकी, इस्माइल साबरी, जुर्जी जैदान, शकीब अर्स्लान[3], अमीन रीहानी[4], जिब्रान खलील जिब्रान[5], हाफिज इब्राहीम[6], मेरी-जियादाह, अल्तून अल-जुमैयिल, मुहम्मद लुत्फी जुमा, अब्बास महमूद अल-अक्काद और मुहम्मद कुर्द अली। इस सम्मेलन से साहित्य मे नया उत्साह आया।

: ७ :

वर्तमान युग

(१९१४ से)

१९१४ के युद्ध ने उसमानी टर्की की शक्ति तोड दी। साथ ही टर्की के तत्वावधान मे अरब सघ की योजनाए भी तीन-तेरह हो गई। उस युद्ध के बाद अरबी साहित्य एक नई दिशा मे चला, विशेषत स्थानीय और प्रान्तीय सीमाओ से परिमित होकर। इसके दो महत्वपूर्ण कारण थे, जो उन्नीसवी सदी मे ही उदित हो गए थे। एक तो १८६० के गृह-युद्ध के बाद लेबनान टर्की से स्वतन्त्र हो गया था। दूसरे मिस्र पर १८८२ मे ब्रिटिश सरकार ने अधिकार कर लिया था। देश-प्रेम और आजादी की लहर ने दोनो देशो को अपनी राज-नीतिक स्थिति को और निकट से देखने और उस दिशा मे साहित्य-रचना करने को बाध्य किया था। और जब १९१८-१९ मे वह युद्ध टर्की का साम्राज्य सहारक सिद्ध हुआ तब तो अरबी एकता की बुनियाद ही बिगड गई। फिर उपन्यास, नाटक आदि का उदय पश्चिम

---

१. Isma'il (१८६३-८२), २. Rifa'ah Al-Tihtawi (१८०१-७३); ३. Shakib Arslan (ज० १८६९); ४ Amin Rihani (१८७६-१९४०), ५. Jibran Khalil Jibran (१८८३-१९३१), ६. Hafiz Ibrahim (१८७१-१९३२)

की ओर अरबो को आकृष्ट करने लगा। इन्ही दिनो याकूब सर्रूफी[१] ने अपने गद्य की अविरल प्राजल शैली मे एक नए गद्य-टेकनीक को जन्म देकर यह दिखा दिया कि किस प्रकार विज्ञान आदि का वाहन होकर भी गद्य सुन्दर साहित्यिक आकृति धारण कर सकता है।

उपन्यासो की दिशा मे पहला कदम सीरिया के साहित्यकारो ने उठाया—घर और बाहर दोनो जगह। सीरियक उपन्यासकारो का अनुसरण करते हुए मिस्री उसमान जलाल[२] ने १८९२ मे फ्रेच ग्रन्थ 'पॉल एट विर्जीनी' का रूपान्तर प्रकाशित किया। यहा कहना न होगा कि सीरियक साहित्यकार अधिकतर फ्रेच आदर्शो के कायल हो चले थे। जुर्जी जैदान की परपरा के कायल 'मिस्र का कवि' अहमद शौकी ने 'अर्जर अल-हिन्द' (हिन्द की कुमारी) नाम से एक आकर्षक काल्पनिक उपन्यास लिखा। मुहम्मद इब्राहीम अल-मुवैलिही ने 'हदीस ईसा इब्न-हिशाम', हाफिज इब्राहीम ने 'लैले सतीह' और मुहम्मद लुत्फी जुमा ने 'लैले अल-रूह अल-हैर' लिखकर उपन्यासो के लिए मध्यकालीन 'मकामाह' की परपरा पुनर्जाग्रत की।

उपन्यास

हुसैन हैकल[३] ने पहला मिस्री उपन्यास 'जैनब' लिखकर नये उपन्यासो का श्रीगणेश किया। इसपर नि सन्देह फ्रेच मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का प्रभाव है, फिर भी इसका सारा वातावरण मिस्री है। 'अब्द-अल-कादिर अल-माजिनी'[४] और मुहम्मद अब्दुल्लाह इनान[५] ने साहित्य को जनता के और निकट लाकर रखा। मुहम्मद तैमूर[६] ने अपने अल्प-कालिक जीवन मे अपनी कहानियो मे 'अल-शैख जुमा' मे आम जबान का प्रयोग किया। फिर भी क्लासिकल अरबी का दबदबा अभी साहित्य से उठा नही। अभी उसपर उसका शिकजा कसा है। अल-माजिनी ने अपने 'इब्राहिम अल-कातिब' (१९३१) मे इस दृष्टि-कोण का विरोध करते हुए रोज़मर्रा की जबान को 'फूहड', लचक मे कमजोर और साहित्यिक निखार के अनुपयुक्त माना।

नाटक

मध्य उन्नीसवी सदी के पहले अरबी साहित्य मे नाटक नही था। अनेकार्थ मे नाटक का प्रदर्शन इस्लाम की 'स्पिरिट' के विपरीत पडता था। नेपोलियन के साथियो ने सेना के

---

१. Ya'qub Sarrufi (१८५२-१९२७); २. 'Uthman Jalal (१८२९-९८) ३. Husayn Haykal (ज० १८८८), ४. Abd-Al-Qadır Al-Mazını (ज० १८९०); ५. Muhammad 'Abdullah Inan (ज० १८९६), ६. Muhammad Taymur (१८९२-१९२१)

मनोरजन के लिए मिस्र मे एक थ्येटर कायम किया। उसके लौटने के बाद ही वह थ्येटर तो वहा की धरा से उठ गया, परन्तु उसका निशान मिटा नही, यद्यपि मिस्र के पास खेलने के लिए नाटक जैसी कोई चीज़ न थी। पहला अरबी नाटक पचास वर्ष बाद लेबनान मे खेला गया। कासिम अमीन[1] ने अपने 'तहरीर अल-मरा'अह' (नारी का उत्थान) और 'अल-मरअह-अल-जदीद' द्वारा जनता को नाटक के स्वागत के लिए तैयार कर दिया था। मारून नक्काश[2] ने, (जो सिदन का था पर बैरुत मे रहने लगा था) मोलिए के नाटक 'ला अवारे' का अनुवाद 'अल-बुखैल' (कजूस) ईसाई समाज के बीच अपने घर मे खेलने का प्रबन्ध किया। धीरे-धीरे प्राइवेट क्लबो और विद्यापीठो मे नाटक खेलने की प्रथा चल निकली। नजीब हद्दाद[3] के कोनले ह्यू गो और शेक्सपियर के अनूदित नाटक काफी लोकप्रिय हुएँ। वैसे ही नजीब हुबैकाह[4] के नाटक भी खूब खेले गए। अगला कदम काव्य-नाटक ने उठाया। इस क्षेत्र के नेता खलील अल-याजिजी[5] और प्रसिद्ध कोषकार अब्दुल्लाह अल-बुस्तानी[6] थे। अरबी थ्येटर के क्षेत्र मे वास्तविक प्रगति अहमद शौकी ने की। 'मसरा' क्लिउबात्रा' (क्लियोपैट्रा की मृत्यु १९२९), 'मजनू-लैला' (१९३१), 'अली बे अल-कबीर' (१९३२), 'अन्तरह' (१९३२) और 'अमीरत अल-अन्दलुस' (अन्डलूसिया की शाहजादी, १९३२) नामक शौकी के नाटको ने अपनी सीमाओ के बावजूद थ्येटर का रग जमा दिया। खलील मत्रान (जिसे 'दो देशो का कवि' मिस्र और सीरिया का, कहते है) १९३४ मे ड्रमैटिट पेशे की उन्नति के लिए बने राष्ट्रीय मिस्री सघ का प्रधान चुना गया। उसने अपने मित्र मिस्र के महान् अभिनेता जॉर्ज अबयाज़ के परामर्श से शेक्सपियर के 'ओथेलो', 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' और 'हैमलेट' का सुन्दर अनुवाद किया। यद्यपि विषय परदेशी था, परन्तु मिस्री थ्येटर के लिए काफी खेल के प्रसग मिल गए।

शौकी की भूमि राष्ट्रीय थी। उसने फैरोहो तक की मिस्री परपरा की रक्षा मे अपनी रचनाए की थी। सुलेमान अल-बुस्तानी[7] ने होमर की 'ईलियड' का अनुवाद करके अरबी भाषा की प्रबन्धकाव्य के लिए योग्यता स्थापित कर दी। शौकी ने अरबी छन्दो को कुछ विस्तार दे दिया था। जिससे उनकी ग्रहण-शक्ति कुछ बढ जाए। उसने छन्द और तुक को केवल साधन माना और उनकी प्राचीन सीमाओ को उसने तोड दिया। गद्य की दिशा मे भी अपने 'अमीरत-अल अन्दलुस' की सरल भाषा, सहज डायलॉग आदि से अरबी गद्य को एक नया कलेवर दिया। बोझिल भाषा की कृत्रिमता उससे दूर हो गई। अपने प्राचीन

---

१. Qasım Amın (१८६५-१९०८), २ Marun Naqqash (१८१७-५५), ३. Najıb Haddad (१८६७-९७), ४. Najıb Hubayqah (मृ० १९०६); ५. Khalıl Al-Yazıjı (१८५६-८९), ६. Abdullah Al-Bustanı (१८५०-१९३०), ७. Sulayman Al-Bustanı (१८५६-१९२५)

पद्धति के निबन्धो 'अल-शौकीयात' और अगली रचनाओ के बीच प्रशस्त साहित्यिक ससार था। मध्यकालीन युग से चलकर उसने वर्तमान युग का द्वार खोल दिया।

सीरिया, मिस्र और ईराक मे साहित्यिक विचार सकुचित सीमाओ को तोडकर सार्वभौम रूप लेने लगे। बाहर से आते हुए प्रकाश से वहा के अरब-साहित्यकारो ने मुह नही छिपाया। आजादी, सामाजिक प्रगति, आर्थिक चेतना, सबने उन्हे अपनी ओर खीचा। सबकी ओर उनकी गति हुई। समसामयिक काव्यधारा अपनी प्राचीन विपन्नता की अर्गला को तोड सीमातीत मैदान मे बाहर बह चली। कुछ ने उसका प्रतिरोध भी किया। कुछ ने सावधान करने का भी प्रयत्न किया। इन्हीमे मिस्र का मुस्तफा लुत्फी, अल-मन्फलूती (मृ० १९२४) था, जिसने नई दुनिया की ओर आख मीचकर चलने वालो को आगाह किया।

ईराक ने नई धारा का स्वागत किया। जमील सिदकी अल-जहाबी[१] ने अपनी अनूठी गति, रहस्य, हास्य और शालीन स्वर मे उमर खैयाम की लौकिकता और अल-मा'अर्री की प्रश्नात्मकता एकत्र कर दी। उसका 'सौरह' फि अल-जहीम' (नरक मे विद्रोह) ४३० दोहो मे प्रस्तुत, उसके भावो की रवानी और दिमागी आजादी प्रकट करता है। वह दाते और अल मा-अरी दोनो को जानता है, परन्तु अनुकरण एक का भी नही करता। बहिश्त का वर्णन करता हुआ वह लेबनानी बगीचो का वर्णन करने लगता है, उसके ग्रीष्मकालिक पर्वत-शिखरो का, उसकी नाजनीनो-शराबो का, श्रीमानो-विलासियो का, यौन कामनाओं का। ईश्वर की बात करता-करता वह ऊपर उड जाता है, अल्लाह के अस्तित्व मे सन्देह करने लगता है, फिर हिन्दुओ की भाति सृष्टि का आदिकारण आकाश घोषित करता है, जिसमे सृष्टि फिर समा जाएगी। अल-जहावी के दोजख के अतिम दृश्य मे लैला और उसका प्रणयी सामरी आ पहुचते है। फिर कवि, कवियो, दार्शनिको, वैज्ञानिको आदि की समूची जमात उस नरक मे ला बिठाता है, आखिर इनको खुदा पर एतकाद न था। इसी बीच उसके वैज्ञानिको मे से एक आग बुझाने का इजन ईजाद कर देता है, फिर तो वहा वह उपद्रव मचता है कि नरक के शासक हैरान हो जाते है। दोजख की जब सबसे भयकर सजा का जरिया, आग ही बुझ जाएगी फिर क्या होगा? अन्त मे दैवी हस्ती के बीच-बचाव मे उस नाजुक स्थिति की सभाल होती है।

अल-रुसाफी[२] (किरकुक मे जन्मा), कुर्दिश खान्दान का ईराकी है, जो बद्दू परपरा मे पला है। उसकी अरबी मे मरु का सम्मोहक स्वर है, अभिराम, मादक। निकट पूर्व मे अल रुसाफी खूब घूमा है और उसे अरब और तुर्की जीवन का अन्तरग-बहिरग

---

१. Jamil Sidqi Al-Zahawi (ज० १८६३), २. Al-Rusafi (१८७५-१९४५)

सब मालूम है। ब्रिटिश मैन्डेट का उसने विरोध किया था। ईराक के स्वतन्त्र होने पर वह उसकी लोकसभा का सदस्य चुना गया। वह काव्य की शक्ति के लिए पुसत्व की शक्ति अनिवार्य मानता है। उसने स्वय मुहम्मद साहब को न छोडा। उसका कहना है कि कुरान की आरम्भिक सूराओ मे गजब की ताकत है, क्योकि तब तक पैगम्बर एक पत्नी-व्रती है, पर जब उसका पौरुष अनेकधा नारियो मे (बहुविवाह द्वारा) बट जाता है, तब उसकी सूराओ का ओज भी दुर्बल हो जाता है, स्वयं अल-रुसाफी कोई पश्चिमी ज़बान नही जानता, पर उसकी अपनी भाषा पर पकड काफी मजबूत है। धार्मिक विश्वासो की दिशा मे वह प्रौढ और स्वतत्र है। 'अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा नही' को बदलकर वह कहता है 'जीव के सिवा दूसरा खुदा नही।'

अल नज़फ का रहने वाला मुहम्मद रिज़ा अल-शबीबी[१] ईराक की सरकार में लम्बे अरसे तक मिनिस्टर रह चुका है। वह शिया है और अपने विश्वासो में काफी कट्टर है। उसकी कविता आचारयुक्त और भक्तिपरक है। अपने विश्वासो मे वह आशावादी है।

१६३० के बाद सीरिया और लेबनॉन मे साहित्य-क्षेत्र मे एक नई फसल कटी। विशारह अल-खूरी, बैरुत के पत्र 'अल-बर्क' (विद्युत) का सम्पादक, कवि के रूप मे सारे अरब-ससार मे विख्यात हुआ। शिबली अल-मलात, अमीन तकी-अल-दीन और इल्यास फैयाज के कसीदो ने जनता और आलोचको को अपनी ओर खीचा। इस नई प्रगति में लेबनान का प्रकाशवाहक सलीम अन्हूरी (जन्म, १८५५) रहा था। उसका दीवान 'अल-ज़ौहर अल-फर्द' (अनूठा रत्न, १६०४) ने उसे बडी प्रतिष्ठा दी। इस्कन्दर अल-आजार, फेलिक्स फारिस दाऊद मजाइस के साथ अन्दूरी ने पुराना पन्थ छोडकर काव्य मे नया मार्ग बनाया। उन्ही दिनो उमर-फाखूरी का साप्ताहिक पत्र 'अल-म'आरज' प्रदर्शिका बैरुत से और शाकिर अल-कर्मी का 'अल-ज़मा' दमिश्क से निकला। इन्ही दिनो साहित्य के इतिहास पर भी कुछ काम हुआ और बुत्रुस अल-बुस्तानी ने 'अल-मराहिल' (मजिले) नाम से तीन खडो मे अरब साहित्य का इतिहास छापा। मिखाइल नईमा[२] ने भी अपना इतिहास 'जिब्रान' तभी प्रकाशित किया। फुआद अफ्राम अल-बुस्तानी 'अल-रवा' (आश्चर्य) का लेखक वाचाल और रोमाटिक निकूला फैयाज विख्यात साहित्यिक और बैरुत की अमेरिकन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अनीस अल-मकदीसी और मिस्र के ताहा हुसैन[३] अरब-साहित्य मे नई मजिलो का निर्माण करते रहे है। इनमे ताहा हुसैन 'जाईम अल-मूजह्दीन'

---

१. Muhammad Rida Al-Shabibi (ज० १८६०); २. Mikha'il Na'imah (ज० १८६४); ३. Taha Husayn (ज० १८८६)

(आधुनिक विचारधारा के नेता) करके प्रसिद्ध है और निस्सदेह वर्तमान जागृनि की सबसे ऊंची आवाज है।

लोक-साहित्य

ऊपर लिखे साहित्य के अतिरिक्त अरबी मे अलिखित साहित्य का भी एक खासा भडार है। वह लोक-साहित्य है, मछुओ, कबीलो, खानाबदोशो और अपढ अरब जनता का रोजमर्रा की जबान मे नित्य कही जाने वाली कहानिया 'हद्दूस' (कहानी) कहलाती है। 'रिवायह' रावी द्वारा सुनाया जाने वाला पहला प्रबन्धकाव्य था। अब वह कहानी का सामान्य नाम है। उसीसे नाटक—कॉमेडी और ट्रैजेडी—दोनो का भी बोध होता है। रात की कहानिया 'अस्मार' और प्रहसन पुराण 'खुराफत' कहलाते है। अल-नदीम (मृ० ९५५) ('अल-फिह्रिस्त' का सकलनकर्त्ता) के समय से ही लोक-साहित्य का सग्रह शुरू हो गया था। बाद मे अज्ञात रचयिताओ की कहानिया लोकप्रिय हुई। 'बत्तालून' अनुदात्त नायक की 'जीहा' (दुष्ट नायक) की कहानिया है। इन लोक-कहानियो का प्रचलन अरब ससार मे बहुत है। सदा से अरब कहानियो के कहने-सुनने वाले रहे है।

लोक-गीत

अरबो के लोक-गीत भी पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध है। अरब स्वभाव से ही गायक होता है। उसके गीतो मे धार्मिक अनुवृत्तो की ओर भी सकेत होते है। सीरिया-फिलिस्तीन मे भी 'अताब' (करुण गीत), बद्दू ऊट-सवारो मे 'मव्वाल', देहातो मे विवाह के गीत 'लगूता' और 'जलवा' गाए जाते है। एक विशेष प्रकार की मौखिक सुनाई जाने वाली कविता 'मतलू' (बहुवचन 'मताली'—मत्त कर देने वाली) कहलाती है। मरण और शोक प्रकट करने वाले गाने 'तनावीह' नाम से विख्यात है। 'गिना' और 'मीजाना' भी लोकगीतो की ही दो किस्मे है।

ताज़िया के सिलसिले मे भी एक प्रकार के मौखिक अलिखित साहित्य का उपयोग होता है। 'ताज़िया' मरण-गायनो की ही सज्ञा है। शिया-मुस्लिम जगत् मे मुहर्रम के अवसर पर इन मरसियो का वाचन होता है। उस काल अनेक मुस्लिम देशो मे 'आशूरा' नाम का एक प्रकार का नाटक खेला जाता है। खिलाफत की लडाई मे जो गृह-युद्ध हुआ था, उसमे अली के पुत्र अल-हुसैन और अल-हसन करबला के मैदान मे मारे गए थे। यह लीला (या लोक-नाटक) उसी घटना के स्मारक मे की जाती है, जिसमें मरसिया पढा जाता है और अनेक प्रकार से श्रद्धालु शोक प्रकट करते है। शोक प्रकट करते हुए ही कागज़ की ताजिया उठाकर लोग जलूस मे करबला के मैदान मे (करबला ईराक मे है, इससे अन्य देशो मे स्थान विशेष करबला मान लिया जाता है) पहुचते हैं। राह मे साथ ही साथ कृत्रिम लडाई भी होती चलती है।

अरबी साहित्य मे इधर बडी प्रगति हुई है और उसका भविष्य आशागर्भित है। सारा एशिया आज पश्चिम की शोषक नीति से विद्रोह कर उठा है। अरब देशो—ईराक, सोरिया, लेबनान, ट्रान्सजार्डन, अरब, यमन, अदन, मिस्र, मोरक्को, लिबिया, सूडान—सर्वत्र एक नई आज़ादी की आवाज उठी है और उसका अनुवर्ती साहित्य उस वातावरण मे सतत जागरूक है।

३. अक्कादी साहित्य

: १ :

वीर महाकाव्य

अक्कादी साहित्य से तात्पर्य उन सारे नगरो के साहित्य से है जो अति प्राचीन काल मे (३०००-६०० ई० पू०) मध्य और दक्षिण ईराक तथा दक्षिण-पश्चिमी ईरान पर छाए हुए थे और जो सुमेरी-एलामी-बाबुली (अक्कादी)—आसुरी सभ्यता के केन्द्र माने जाते है।

वह साहित्य बहुत पुराना है, प्राय उतना जितनी सभ्यता पुरानी है, सुमेरी सभ्यता। सदियो-सहस्राब्दियो दजला-फरात के द्वाब के दक्षिणी भाग मे, फिर मध्य और उत्तर मे, पश्चिम और पूर्व मे गीली ईंटो पर कीलनुमा अक्षरो मे (जिससे लिपि का नाम 'क्यूनी-फॉर्म' पडा) साहित्य लिखा गया। उस अगाध भडार मे सभी सुरक्षित भी न रह सका, अधिकाश नष्ट हो गया, फिर भी बहुत कुछ बच रहा। विशेषत. एक असुर सम्राट् अशुर-बनिपाल (असुर-अवनीपाल) के अध्यवसाय से।

ईसापूर्व तीसरी सहस्राब्दी मे ही इस साहित्य का निर्माण शुरू हो गया था परन्तु समय-समय पर मौसम और मनुष्य दोनो उसे नष्ट कर देते थे। सातवी सदी ई० पू० के इस अशुर-बनिपाल (६६८-२६ ई० पू०) को इसकी रक्षा की ऐसी लगन लगी कि उसने अपने ग्रन्थागार मे हज़ारो लिखी ईंटे, खुदे पत्थर एकत्र कर लिए। यदि वे सारे एक ही जगह उस प्राचीनकाल मे ही एक भावुक मानव की निष्ठा से संरक्षित न कर लिए गए होते तो सभवत हमे उस प्राचीन सभ्यता के साहित्य का बोध न होता।

इस सगृहीत सामग्री मे काव्य, कानून, अनुवृत्त, धर्मशास्त्र, सूक्त सभी कुछ था। उस भडार के कुछ रत्नो का हम यहा विवरण देगे।

सुमेरी साहित्य और इस अर्थ मे विश्व-साहित्य का प्राचीनतम ऐतिहासिक वीर-महाकाव्य (एपिक) 'गिल्गमेश' है। यह उस जल-प्लावन की कहानी है जिसका उल्लेख प्राय सारी सभ्यताओ के साहित्य मे मिलता है। उस जल-प्रलय से सृष्टि की रक्षा बाइबिल मे नूह करता है, शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति मे मनु। वह जल-प्रलय सुमेर मे ई० पू० ३५०० के लगभग हुआ। उसमे पुराविदो ने बाढ और वर्षा के जल से लाई पांच फुट गहरी मिट्टी खोद डाली है। उस जल-प्रपात का पहला लोमहर्षक वर्णन सुमेरी मे १५०० ई० पू० के लगभग लिखा गया, शतपथ ब्राह्मण की कथा से प्राय. डेढ़

हज़ार वर्ष पहले। उसीका महाकाव्य रूप कुछ काल बाद फिर 'गिल्गमेश' नाम से रचा गया जो १२ ईंटो पर खुदा हुआ अशुर-बनिपाल के ग्रन्थ-सग्रह मे असुरो की राजधानी निनेवे से मिला।

'गिल्गमेश' काव्य के भीतर काव्य है। काव्य का 'हीरो' गिल्गमेश है परन्तु उसके भीतर आए जल-प्लावन का वर्णन जल-प्लावन के हीरो, गिल्गमेश, का पूर्वज जिउसुद्दू करता है। वह शुरुप्पक का रहने वाला है, सुमेरी-बाबुली कथाओ का मनु। 'गिल्गमेश' महाकाव्य मे वही जिउसुद्दू अपने वशधर और काव्य के नायक गिल्गमेश से जल-प्रलय की कथा इस प्रकार कहता है—

"मैं तुझसे एक भेद की बात कहूगा, और तुझसे देवताओ की रहस्य-मंत्रणा तक कह दूगा। मगर शुरुप्पक को तू जानता है, उसे, जो फरात (फरातू) के तट पर है—वह नगर पुराना हो गया था, और उसमे बसने वाले देवता—महान् देवता के चित्त मे हुआ कि जल-प्रलय करें ..."

"दिव्य स्वामिन्—नेक देवता एंकी—उनके विरुद्ध था। उसने उनकी मत्रणा एक नरकट की झोपडी को सुनाकर कही—नरकट की झोपडी, नरकट की झोपडी! दीवार, ओ दीवार! सुन, हे नरकट की झोपडी! समझ ओ दीवार!"

यह इस प्रकार झोपडी के बहाने इसलिए कहा गया कि जिउसुद्दू, जो उसी झोपडी मे सो रहा था, सुन ले। फिर देवता ने खुलकर उससे कहा—

"शुरुप्पक के मानव, उबर्दुदू के पुत्र, घर को गिरा डाल, एक नौका बना, माल-असबाब छोड दे, जान की फिक्र कर। जायदाद को तोबा कर और (अचानक मर नही) ज़िन्दगी बचा ले! सारे जीवो के बीज चुन ले और नौका के बीच ला रख!"

जिउसुद्दू ने नौका बनाई और उसे जीव-बीजो से, भोजन आदि से भर लिया और नगरवासियो से वह बोला—"शक्तिमान् पवन देवता एन्लिल उससे घृणा करता है, इससे वह जिउसुद्दू अब उनके बीच नही रहेगा। जाते समय उसने झूठ कहा कि देवता उनपर कृपा करेंगे, रहमत बरसाएगे। उसने अपने परिवार को फिर नाव मे चढा उसे सब ओर से बन्द कर लिया। और तब भयानक तूफान आया और काले विकराल मेघो के बीच स्वय देवताओ को समस्त नागरिको ने मशाल चमकाते देखा।

"भाई भाई को न पहचान पाता था। शून्य और आदमी मे कोई फर्क नही था। (ये लोग दिखाई नही पडते थे) स्वय देवताओ को जल-प्लावन से भय हो चला। वे सरके। वे देवता उनके स्वर्ग मे जा पहुचे। देवता कुत्तो की भाति भय से काप रहे थे, स्वर्ग की देहली मे एक दूसरे से चिमटे। देवी इनन्ना (सुमेरी मातृदेवी, शेमियो की इश्तर अथवा अस्तार्ते-स्त्री) प्रसवपीडिता नारी की भाति चीख उठी। वह मधुभाषिणी देवपत्नी रो-रोकर देवताओ से कहने लगी—'दिन मिट्टी हो जाए क्योकि मैंने देवसभा

मे अनुचित कहा ! भला क्यो देवताओ की सभा मे मैंने कुवाच्य कहा ? क्यो अपनी ही प्रजा के लिए तूफान बरपा किया ? मैंने क्या अपनी प्रजा को इसीलिए जना कि उनसे मछलियो के अडो की तरह समुद्र भर जाए ?"

छह दिन और सात रात तूफान और जल की बाढ उमडती रही और जल की सतह पर बहता जिउसुद्दू अपने साथियो के लिए ज़ार-ज़ार रोता रहा। पर्वत-शृखला के ऊचे शिखर मात्र जल के ऊपर थे। इन्हीमे एक से नौका जा लगी और सप्ताह भर वही लगी रही। जिउसुद्दू कहता गया—

"सातवे दिन मैंने एक कबूतर निकाला और उडा दिया। कबूतर उड गया। वह चहुं ओर उडता रहा पर कही उतरने को जगह न मिली और वह लौट आया। मैंने एक अबाबील निकाली और उडा दी। अबाबील उड गई। वह चहु ओर उड़ती रही पर कही उतरने को जगह न मिली और वह उडती हुई लौट आई। मैंने एक काग निकाला और उडा दिया। काग उड गया और उसने घटते हुए जल को देखा। उसने (दाना) चुगा, जल हेला, डुबकिया लगाईं, लौटकर नही आया। मैंने (हविष) निकाला और कुर्बानी की (यज्ञ किया) चारो हवाओ के प्रति। पर्वत की उत्तुग शिला पर मैंने आपान (मदिरा) चढाया, और सात बोतल रख दिए, उनके नीचे बेत, दारु और धूप-अगुरु बिखेरे। देवताओ ने सुरभि सूघी, देवताओ ने प्रभूत गध ली, देवता यज्ञ के स्वामी के चारो ओर इकट्ठे हो गए। अन्त मे देवी (इनन्ना) ने पहुचकर वह ग्रैवेयक (हार) उठाकर, जो देव अन ने उसके कहने से बनाया था, कहा—'देवताओ, जैसे मैं अपने गले की नीलमणियो को नही भूलती, उसी प्रकार मैं इन दिनो को नही भूल सकती। इन्हे सदा याद रखूगी। देवता यज्ञ मे पधारे, परन्तु एन्लिल न आवे, इस यज्ञ का भाग वह न पावे, क्योकि उसने कहना न माना, क्योकि उसने जलप्रलय की सृष्टि की और नाश के लिए मेरी एक-एक प्रजा गिन ली।' तब देवता एन्लिल ने नाव देखी। एन्लिल क्रुद्ध हो उठा। उसने पूछा कि किस प्रकार कोई मर्त्य (उस प्रलय से) बचकर निकल गया। श्रीमान् और शिष्ट भूदेव एंकी ने उससे तर्कपूर्वक कहा—

'देवताओ के देवता, वीर, क्यो, क्यो तूने कहना नही माना और बरबस प्रलय की ! पाप पापी के ऊपर डाल, सीमोल्लघन का अपराध सीमा लाघने वाले पर। कृपा कर, जिससे वह सर्वथा उच्छिन्न (एकाकी) न हो जाए, नितान्त विभ्रान्त (मूढ) न हो जाए। तेरे जलप्रलय लाने से अच्छा है कि सिंह भेजकर प्रजा की सख्या कम कर दे। तेरे जलप्रलय लाने से अच्छा है कि भेडिया भेजकर प्रजा की सख्या कम कर दे।'

"क्रुद्ध देवता शान्त हो चला; एकी कुछ के किए पापो का दड बहुतो को देने वाले उस देव की भर्त्सना करता गया। अन्त मे एन्लिल नौका के भीतर चला आया। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बाहर लाया, स्वयं मुझे। वह मेरी पत्नी को भी बाहर निकाल लाया

और मेरी बगल मे उससे घुटने झुकवाए (प्रणाम कराया)। उसने हमारे माथे का स्पर्श किया और हमारे बीच खड़े होकर हमे आशीर्वाद दिया। 'पहले जिउसुद्दू मनुष्य था। पर अब से जिउसुद्दू और उसकी पत्नी निश्चय ही हमारी तरह देवता होगे। जिउसुद्द और उसकी पत्नी दूर नदियो के मुहाने मे वास करेंगे।' "

परन्तु जैसा ऊपर कहा जा चुका है, यह कहानी मे कहानी है। जलप्रलय की कथा। इस काव्य का अन्तरग तो है और इसीसे वही प्रधान भी है, परन्तु काव्य स्वय गिल्गमेश के पराक्रमो पर आधारित है जो इस प्रकार है—

(पहली ईंट) गिल्गमेश का पिता आधा अपार्थिव है आधा मानव, और माता देवी निन्सुन (लुगालबन्दा की पत्नी) है। उसका उरुक राज्य का शासन इतना निरकुश और अत्याचारव्यजित है कि प्रजा देवताओ से रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। देवताओ ने उसका अन्त करने के लिए एक विचित्र बनैला मानव सिरजा। उस एंकिदू का सारा बदन बालो से भरा था (ऋग्वैदिक वृषाकपि) और वह वन के पशुओ के साथ रहता था।

मरु के शिकारियो ने गिल्गमेश से उसकी शिकायत की कि वह अचरज का जीव उन्हे डरा देता है। पशुओ को उनके पाश से छुडाकर स्वतन्त्र कर देता है। गिल्गमेश ने उसे रिझाने के लिए सुन्दर देवदासी (मन्दिर की कन्या) भेजी। जिससे एक बार पतन हो जाने पर पशु उससे मुह फेर ले। वह अपने कार्य मे सफल हुई और जब वह उसके आलिगन से अलग हुआ तब—

> **"हरिणों ने उसे देखा, उस एंकिदू को, और भाग चले।**
> **खेत के पशु उससे दूर-दूर हो चले।**
> **क्योंकि एंकिदू की पवित्रता नष्ट हो चुकी थी।"**

अपने पशु-मित्रो को छोड देने पर वह उस नारी के साथ उरुक पहुचा। नारी ने गिल्गमेश के पराक्रम और शक्ति का वर्णन कर उसकी ईर्ष्या उभाड दी थी।

> **"मुझे उसे ललकारने दो ! मै गर्व से बोलूंगा;**
> **उरुक के नगर में चिल्लाकर कहूंगा।**
> **'शक्तिमान मै हूं। मैं, मैं जो प्रारब्ध को बदल सकता हूं।**
> **निश्चय ही मुझे मरु में जन्मे की कुव्वत बड़ी है।'"**

एंकिदू के आने का पता गिल्गमेश को अपने सपने से चल गया था और उसकी मां ने सपने का अर्थ यह लगाया था कि दोनो वीर मित्र हो जाएगे।

(दूसरी ईंट) नारी ने एकिदू को नगर मे लाकर उसे रोटी खाना, जौ की शराब पीना, तेल लगाना, नहाना, सभ्यता के सारे तरीके सिखा दिए थे। एकिदू गिल्गमेश से लड़ा। खूब द्वन्द्व-युद्ध हुआ। दोनो एक दूसरे की शक्ति से परिचित हो उसे सराहकर मित्र हो गए।

(तीसरी ईंट) फिर वे (सीरिया) के दारुवन की ओर चले जिसकी रक्षा हुवावा अथवा हुबाबा (हव्वा दैत्य—सभवत जलहीन मरु का रूपक) करता था—

> **"हुवावा की गरज तूफान है,**
> **उसका मुखगह्वर आग,**
> **उसकी सांस मृत्यु।"**

एकिदू पहले कुछ घबडाया परन्तु गिल्गमेश की महत्वाकांक्षा उसे प्रेरित करती रही। यद्यपि उरुक के वृद्धो और सूर्य देवता तक ने उन्हे मना किया, दोनो दारुवन की ओर चल पडे। माता निन्सुन सूर्यदेव को मनाती रही। (चौथी ईंट टूट गई है पर जान पडती है) वे सकुशल दारुवन पहुच गए। (पाचवी ईंट) गिल्गमेश को भयानक स्वप्न आए जिनका अर्थ एकिदू ने हुवावा का सहार लगाया। दैत्य के मिलने पर गिल्गमेश ने सूर्य को याद किया और देवता ने जब आठ हवाए चलाकर हुवावा को विक्षिप्त कर दिया तब गिल्गमेश ने उसका सिर काट लिया। (छठी ईंट) दोनो वीर विजयी होकर उरुक लौटे। अब देवी इनिन्ना, जिसके अनेक प्रिय पात्र थे, उसपर रीझ गई, परन्तु गिल्गमेश ने उसे यह कहकर विमुख कर दिया कि उसके सभी प्रणयियो का भीषण अन्त हुआ।

क्रोधाभिभूत देवी ने अपने पिता अन देवता से उसके सहार के लिए दिव्य वृषभ सिरजने को कहा। देवता ने उत्तर दिया कि इसका परिणाम पृथ्वी पर सात वर्ष तक अकाल होगा। परन्तु वनस्पतियो की स्वामिनी ने प्रत्युत्तर मे कहा—

दिव्य वृषभ सिरज दिया गया। पहले सौ आदमी, फिर दो सौ और तब तीन सौ उससे लडने भेजे गए। उसने सब को मार डाला। तब एकिदू ने उसकी सीगे पकड़कर उसे पटक दिया और गिल्गमेश ने उसे मारकर इनिन्ना का घोरतर अपमान किया। वृषभ की सीगो से उन्हे साठ मन तेल मिला जिसे उन्होने महार्ह-रत्नो के दीप मे डाल लुगाल्बन्दा के मन्दिर मे जलाया। तब दोनो प्रीतिभोज मे बैठे और गिल्गमेश ने पहेली कही—

> **"वीरो में शालीन कौन है,**
> **वीरो में अप्रतिम कौन है,**
> **गिल्गमेश वीरों में शालीन है,**
> **एंकिदू वीरों में अप्रतिम।"**

उस रात एकिदू ने एक भयानक स्वप्न देखा (सातवी ईंट टूट गई है परन्तु एशिया माइनर के बोगजक्रोए से मिले महाकाव्य के एक हित्ती अनुवाद से स्पष्ट है कि) उसने देखा कि देवताओ ने अपनी सभा मे निश्चित किया कि एंकिदू वृषभ मारने के कारण मरे और गिल्गमेश जीवित रहे। उसने जागकर बुरी तरह उस नारी को कोसना शुरू किया जिसने उसे पशु-जीवन के निश्छल वातावरण से लाकर विपज्जनक मानव-जगत् मे पटक दिया।

फिर एकिदू ने एक और स्वप्न देखा जिसमे यमलोक का वर्णन है—

"उस सदन की ओर जहां प्रवेश कर कोई लौटकर नही आता,
उस मार्ग से जो फिर लौटता नहीं,
उस सदन की ओर जिसमें बसने वाले प्रकाश नही पाते,
जहां धूल (खाने के लिए) मांस है, मिट्टी रोटी है,
और जहां वे पक्षियो की भांति परों के वस्त्र पहनते है,
और अन्धकार में रहते आलोक से वंचित रहते हैं।"

(आठवी ईंट) गिल्गमेश अपने मरणासन्न मित्र को धीरज बधाता है परन्तु वीर एकिदू की शक्ति निरन्तर क्षीण होती जाती है—

"कैसे हो, कैसी नीद है यह जिसने तुम्हें जकड़ लिया है ?
तू काला पड़ गया है, मेरी आवाज नही सुनता !
पर उसने अपनी आंखें नही खोली।
गिल्गमेश ने उसके हृदय पर हाथ रखा, गति बन्द थी,
उसने (अपने मृत) मित्र को वधू की भांति ढंक दिया।"

गिल्गमेश उसके लिए कातर विलाप करने लगा, परन्तु तभी स्वय उसे एक दारुण विचार ने आ घेरा—क्या अपने मित्र की ही भाति एक दिन वह भी इसी प्रकार मर जाएगा, अकडकर गूगा हो जाएगा ? सत्रस्त हो उसने दूर बसने वाले जिउसुद्दू को ढूढ निकालने और उससे उस अमरता का भेद जानने का निश्चय किया जो जल-प्रलय के पश्चात् जिउसुद्दू को देवताओ से प्राप्त हुआ था। (नवी ईंट मे उसकी यात्रा का वर्णन है)। पहले वह भयानक पर्वतो पर चढता है जिनकी रक्षा भीषण वृश्चिक-मानव करते है, वृश्चिक-मानव जिनके सिर और धड मनुष्य के है, टागे पक्षियो की, और डक बिच्छू के। तब उसे मद्यकन्या मिलती है, जो समुद्र की गहराइयो मे रहती है और जिससे (दसवी ईंट मे) वह अपनी पिछली साहसपूर्ण यात्रा का वर्णन करता हुआ अमरता प्राप्त करने की अपनी महत्वाकाक्षा घोषित करता है। मधुबाला (उमर खय्याम के स्वर मे जैसे) कहती है—

"गिल्गमेश, तू दूर (विदेश) क्यों भाग रहा है ?
जो तू ढूंढ़ रहा है वह (अमर) जीवन तू नहीं पा सकता।
जब देवताओ ने मानव-जाति को सिरजा—
तब उसके लिए मृत्यु की व्यवस्था की।
स्वयं उन्होने दोनों हाथ जीवन को पकड़ा !
और देख, गिल्गमेश, तू तो अपना पेट भर।
दिन और रात ऐश कर,
यही, यही, आदमी की किस्मत है।"

गिल्गमेश उससे आश्वस्त नही होता, चलता चला जाता है, जब तक जिउसुद्दू के 'मृत्यु के समुद्र' मे नाव चलाने वाले माझी को नही ढूढ निकालता। (यहा पाठ टूट गया है, पर टूटी लिपि से ध्वनि निकलती है कि) वह क्रुद्ध होकर नौका की पाल फाड देता है, मस्तूल उखाड देता है। तब माझी भी उसे मधुबाला की ही भाति मरण को जन्म-सिद्ध मान, लौट जाने को कहता है। परन्तु जब वह लौटने को राज़ी नही होता तब माझी उसे इस शर्त पर ले जाने को उद्यत होता है कि नाव को बढाने के लिए वह बास काट लिया करे। 'मृत्यु का समुद्र' विषाक्त था। इससे नाव खेने के लिए प्रत्येक चोट के बाद बास को फेंक देना पडता था। बावन लग्गियो (चोटो) के बाद, अन्त मे वह मृत्यु का समुद्र पारकैर विस्मित अमर जिउसुद्दू के सामने जा खडा हुआ।

गिल्गमेश ने मानव जाति को मरण-भय से मुक्त करने की अपनी उत्कट महत्त्वाकाक्षा घोषित करते हुए जिउसुद्दू से पूछा कि वह किस प्रकार अपने स्वाभाविक मरण-भाग्य से मुक्त हो सका है ? (ग्यारहवी ईंट) तब जिउसुद्दू उससे जल-प्रलय की कथा कहता है। यही जल-प्रलय की कथा 'गिल्गमेश' एपिक का अन्तरग है। फिर वह कहता है कि "यदि तुम अमर जीवन प्राप्त करना चाहते हो तो पहले सप्ताह भर बिना सोए रहो, जागो।" परन्तु यात्रा के श्रम से थका गिल्गमेश जागने की बजाय सप्ताह भर सोता है। तब जिउसुद्दू उसे माझी के साथ स्नान करके ताजा हो आने को भेजता है। और लौटने पर उसे बताता है कि अमरता समुद्र-तल मे उगने वाली एक ओषधि (पौधा) से प्राप्त होती है।

"उसके कांटे तेरे हाथ में गुलाब की भांति चुभेंगे।
फिर भी यदि तू उस ओषधि को पा ले तो जीवन (अमरता) को पा लेगा।
गिल्गमेश ने यह सुनकर कमरबन्द कसी—और पैरों में भारी पत्थर बांधे।
वे उसे गहरे तल मे खींच ले गए और उसने वह ओषधि देखी।
तब उसने पौधा उखाड़ लिया, और उसके कांटे उसके हाथ में चुभ गए।"

(मोती निकालने वाले पनडुब्बे आज भी फारस की खाडी मे इसी प्रकार अपने पैरो मे पत्थर बाधते है।) अब गिल्गमेश अपने पत्थरो की रस्सी काट मुक्त हो गया। प्रसन्न वदन, ऊपर पहुचने पर माझी उसे मर्त्य जगत् की ओर लौटा ले चला। साठ घटे निरन्तर चलते रहने से गिल्गमेश थककर विश्राम और सरोवर मे स्नान करने के लिए रुका।

"एक सर्प ने ओषधि की गन्ध पा ली।
जल से वह सपद निकला और ओषधि लेकर चम्पत हो गया।
(सरोवर) लौटकर सर्प ने अपनी त्वचा (केंचुल) छोड़ दी, पुनर्जन्मा हुआ।
तब गिल्गमेश बैठकर रुदन करने लगा!

उसके गालों पर आंसू बह चले.........
'किसके लिए मैने अपने हृदय का रक्त सुखाया है ?
मैंने अपने लिए कुछ (भला) नहीं किया;
केवल धूल के नृशंस जीव (सर्प) का भला किया।' "

(प्राय सभी प्राचीन सभ्यताओ के विश्वास मे अमरता का रहस्य सर्प को ज्ञात है। समुद्र-तल का पौधा वस्तुत प्रवाल (मूगा) है जिसे सभी प्रारम्भिक जातिया सजीवनी मानती थी।) काव्य का वस्तुत. यही अन्त हो जाता है। उन्नत, उदात्त, श्रमशील मानव ने अपने साहस द्वारा देवताओ के अमृत-रहस्य को ले लेना चाहा परन्तु विफल-मनोरथ अन्तत मृत्यु का शिकार हो वह उनका हास्यास्पद बना। (बारहवी ईट सम्भवत बाद की है) गिल्गमेश, वृद्ध और व्याकुल, परलोक की व्यवस्था जानने के लिए अपने मित्र के प्रेत से साक्षात्कार के लिए उन सारे 'तपु'ओ (तपस्—विधानो) को तोड देता है जो मानव की प्रेत की छाया से रक्षा करते है। देव नेर्गल, जो यमलोक पहुचकर निकल भागा था, भूमि मे छेदकर देता है और—

"एकिदू का प्रेत वायु की भाति पृथ्वी से निकल पड़ा।
दोनो सपद गले मिले,
क्रन्दन करते वे बात करने लगे।
'बता मेरे मित्र, बता मेरे मित्र,
बता कब्र के विधान, जो तूने देखे है !'
'नहीं बताऊंगा मित्र, तुझे नहीं बताऊंगा,
क्योंकि यदि अपने देखे कब्र के विधान तुझे बता दूं,
तो तू बैठा रोया करेगा !'
तो (कुछ परवाह नहीं) मुझे बैठकर रोया करने दे।"

एकिदू के प्रेत ने तब बताया कि किस भयानक रीति से वस्त्र की भाति शरीर को कीट चाट जाते हैं। केवल वही परलोक में शान्ति पाते है जिनकी समाधि पर जीवित निरन्तर आहार और पेय भेट चढाते रहते है। अन्यथा प्रेत निरन्तर सडकों पर घूमते, मल खाते और नालियो का जल पीते रहते है। यही 'गिल्गमेश' काव्य का नितान्त निराशा मे अन्त हो जाता है। हाल के मिले काव्य की एक दूसरी प्रति से ज्ञात होता है कि गिल्गमेश को भी अन्ततः मरना पडा और मरकर उसने परलोक के दंडधरो (जजो) मे स्थान पाया।

यह काव्य इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके अनुवाद हित्ती, शुबरी आदि भाषाओ मे हुए और ग्रीक पुराणों पर भी इसका प्रभाव पडा। अनेक आर्य, अनार्य, चीन आदि के पुराणो मे भी जलप्रलय की कथा गाई गई। भारतीय शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति पर भी उसकी छाया पडी।

इर्रा-काव्य · एनुमा-एलिश

अक्कादी का दूसरा काव्य 'इर्रा (इरा, इला-सस्कृत) का काव्य' कह लाता है। इसमे प्रधानत देवता इर्रा के मानवजाति के प्रति क्रोध का वर्णन है जिसके परिणाम-स्वरूप निकटपूर्व की सारी जातियो मे दारुण युद्ध होता है। अन्त मे बाबुली (अक्कादी) उस महासमर मे विजयी होते है। परतु इस काव्य से बडा और विशिष्ट महत्त्व का 'एपिक' काव्य-सृष्टि-सम्बन्धी 'एनुमा एलिश' ('जब ऊपर', काव्य के दो आरम्भिक शब्दो के आधार पर उसका नाम रखा गया है) है। असुर और बाबुल मे सृष्टि और देवतत्व के सम्बन्ध मे जो धारणाए प्रचलित थी, उन्ही का इस 'एपिक' से आभास मिलता है। काव्य मे १००० से ऊपर पक्तिया है और अब वे सब की सब मिल गई है। इस काव्य की पक्तिया सात पट्टिकाओ पर खुदी है। सम्भवत· इस काव्य की रचना ई० पू० द्वितीय सहस्राब्दी के पूर्वार्द्ध मे हुई यद्यपि उपलब्ध सारी सामग्री पहली सहस्राब्दी (ई० पू०) के लेखो से ही प्रस्तुत हुई है। इसमे उन घटनाओ का सविस्तार वर्णन है जिनसे मार्दुक अक्कादी देवलोक का प्रधान बन गया। आरम्भ मे इसमे देवताओ की सृष्टि और उनके पारस्परिक युद्धो का वर्णन है जिनमे अन्ततोगत्वा अशाति की परिचायिका जलदेवी तियामत (अथर्ववेद 'तैमात') पर मार्दुक विजयी होता है। मध्य भाग मे मार्दुक के कार्यो का उल्लेख है—तियामत के शव से विश्व का निर्माण, विश्व की व्यवस्था और मनुष्य की अभिसृष्टि, और अन्त मे मार्दुक के पचास नामो की महिमा पर स्तोत्र का उपसहार है।

अन्य काव्य

इनके अतिरिक्त उस साहित्य मे कुछ और काव्य भी मिलते है। हा, इनके खडमात्र आज उपलब्ध है। एक मे दैत्य लब्बू के सहार का वर्णन है। दूसरे मे महादेव एन्लिल की भाग्य-पट्टिकाओ के आहर्ता जु-बिर्द के नाश का। एक तीसरे काव्य-खण्ड मे दानवो की सेना से लडने वाले कुथाह् के राजा का वर्णन है।

पुराण

उस साहित्य मे अनेक पौराणिक आख्यानो का वर्णन मिलता है। 'एनुमा एलिश' और 'गिल्गमेश' की पौराणिक कथाओ का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। दो मानव-सहार की आख्यायिकाओ मे पौराणिक ऋषि उत्नपिश्तिम का उल्लेख हुआ है। दो ख्यातो मे परलोक (पाताल-नरक) का उल्लेख है। इनमे पहले मे देवी इश्तर के नरक-अवतरण के कारण पृथ्वी पर सारे यौन कृत्यो के अन्त और परिणाम का विशद वर्णन है। दूसरे मे उन घटनाओ का उल्लेख है जिनके फलस्वरूप अक्कादी यम (नरक देवता) नेर्गल की पाताल लोक के शासक के रूप मे नियुक्ति होती है।

इनके अतिरिक्त दो और खण्डित ख्याते मिली है जिनका सम्बन्ध दो महत्त्वशाली

व्यक्तियो—अदपा और एतना से है। अदपा वाले प्रसग में मनुष्य के मरण के कारणो की व्याख्या है। एतना वाले मे जन्म सबधी ओषधि की खोज का जिक्र है। दूसरी कथा मनोरंजक है।

एक बार सर्प और गरुड ने परस्पर मित्रता की प्रतिज्ञा की, परन्तु गरुड ने सर्प के बच्चे को खा लिया। इसपर कातर और क्रुद्ध सर्प ने सूर्य देवता से शिकायत की। सूर्य ने राय दी कि वह बैल का अस्थिपजर उठा लाए और जब गरुड उसे खाने आए तब वह उसे पकड ले। सर्प ने ऐसा ही किया और जब गरुड आया तब उसने उसे पकडकर उसके पख काट लिए और उसे गड्ढे मे डाल दिया जहा गरुड कष्ट मे कराहता पडा रहा। अब सूर्य से प्रार्थना करने की बारी उसकी थी। परन्तु उचित बदले को भला देवता कैसे विफल कर सकता था और वह सर्प के विरुद्ध कुछ न कर सका, यद्यपि गरुड पर कृपा वह करना चाहता था। तभी एक घटना घटी। कीश के राजा एतना की पत्नी गर्भवती थी और वह उसकी प्रसव-पीडा कम करने के लिए जादू की 'जन्म-ओषधि' खोजने लगा। उसके लिए उसने सूर्य से पूछा। सूर्य जानता था कि वह ओषधि केवल स्वर्ग मे है और उसने उसे गरुड की सेवा कर स्वस्थ कर देने को कहा। एतना ने गरुड को स्वस्थ कर दिया और कृतज्ञ पक्षिराज उसे स्वर्ग ले जाने को राज़ी हो गया। दोनो उड चले। दो घटे बाद गरुड ने कहा—"देखो मित्र, पृथ्वी कैसी है। उसके चतुर्दिक् सागर देखो, गभीर अबुधि। पृथ्वी कैसी पर्वत मात्र-सी दीखती है और समुद्र कुल्या-सा। पहले वह हर दो घटे बाद इसी प्रकार एतना से पृथ्वी की घटती हुई आकृति का वर्णन करता था। वह अन, एन्लिल और एकी के स्वर्ग-द्वार लाघ गया, पर यात्रा का अभी अन्त न हुआ। अभी उन्हे उस देवी के सिंहासन तक पहुचना था जिसके पास वह 'जन्म-वृक्ष' था। एतना के लिए यह असह्य हो उठा और चीखकर वह दूर नीचे पृथ्वी पर गिर पडा।

देवस्तोत्र : सूक्त

अक्कादी साहित्य मे, देवस्तोत्रो, सूक्तो और राजप्रशस्तियो का अभाव नही, विशेषतः स्तोत्र तो उसमे भरे पडे है। इनमे अधिकतर प्रधान देवता मार्दुक के प्रति कहे गए है। कुछ युद्ध और प्रेम की देवी इश्तर (सुमेरी इनन्ना) के लिए कहे गए है, कुछ सूर्य देवता शमश (सुमेरी उत्तू) और कुछ ज्ञानदेव इआ (सुमेरी एकी) के लिए। कुछ गीत तो प्रायश्चित-रूप मे पाप के स्वीकरण मे गाए गए है जो अत्यन्त हृदयस्पर्शी है। एक उदाहरण इस प्रकार है—

"मै तेरा स्मरण करता हूं (इश्तर), मै तेरा अभागा, व्यथित रुग्ण दास !
मेरी ओर देख, मेरी देवी, मेरी विनय स्वीकार कर,
मुझ पर दया की दृष्टि डाल, मेरी प्रार्थना सुन !
मुझे मुक्ति दे, मेरी रूह को राहत दे ;

मेरे पतित शरीर की मुक्ति, अशान्त शरीर की,
मेरे रुग्ण हृदय की मुक्ति जो आंसुओं, उच्छ्वासो से भरा है,
मेरी अभागी अंतड़ियों की मुक्ति, अशान्त अंतड़ियो की,
मेरे दुःखी गृह (परिवार) की मुक्ति, जो करुण विलाप कर रहा है,
मेरी आत्मा की मुक्ति जो आंसुओ-उच्छ्वासो से आर्द्र है।"

पाताल के देवता नेर्गल के प्रति एक सूक्त इस प्रकार है—

"स्वामिन्, आपानक में प्रवेश न करो, न मधु बेचती
वृद्धा को ही मारो।
स्वामिन्, ससद में प्रवेश न करो, न वहां बैठे धीमान्
जरठ को मारो।
स्वामिन्, खेल के मैदान मे न रुको, न मैदान मे
खेलते बच्चों को भगाओ।
वहा प्रवेश न करो जहां तंत्रीनाद गूंजता है, न तरुण
को भगाओ जो तंत्रीनाद समझता है।"

सम्राट् हम्मुराबी के सम्बन्ध मे एक बडी ओजस्विनी कविता प्राप्त है। यशस्वी विजेता आक्रमण को उद्यत होकर भी आक्रमण मे जैसे देर कर रहा है और अक्कादी कवि ललकार उठता है—

"बाल (एन्लिल) ने तुझे प्रमुखता दी है:
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है?
सिन ने तुझे महत्तम बनाया है:
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है?
निर्नुता ने तुझे शक्तिम शस्त्र दिया है:
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है?
इश्तर ने तुझे युद्ध और समरावसर दिया:
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है?
शमश और अदाप तेरे सहायक मित्र हैं;
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है?
चारों दिशाओ में अपनी शक्ति प्रतिष्ठित कर दे!
तेरे नाम की पुकार ऊंची हो, गूंज उठे!
दूर-दूर के लोग तेरी पूजा करें,
तुझे वे अपना सिर झुकाएं!
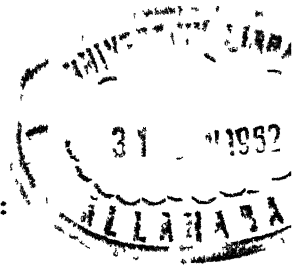
हम्मुराबी, सम्राट्, महावीर,
अमित्रघात, समरझंझावात,
शत्रुजनपदसंहारक, विद्रोहों का आक्रान्ता
विप्लव का शास्ता, सम्मुख समर में खड़े होने वाले को
मिट्टी के पुतले की भांति चूर कर देने वाला,
अभेद्य पर्वतों की अर्गला तोड़ देने वाला (हम्मुराबी) !

यहा हम्मुराबी के शास्त्र (अनुशासन) का उल्लेख समीचीन होगा। जैसे मनु का 'धर्मशास्त्र' महत्व का है उससे प्राय डेढ हज़ार वर्ष पूर्व (२००० ई० पू०) का हम्मुराबी का यह विधान वैसे ही प्राचीन है। ससार का वह प्राचीनतम विधान है। जिसमे वाद-प्रतिवाद, प्रमाण, दड, वैयक्तिक सम्पत्ति, चौरकर्म, पट्टा-अराजी, कृषि, व्यापार, मदिरा का लाइसेस, ऋण-उधार, ट्रस्ट, विवाह, दाय, नारी, पुरोहित, दत्तकपुत्र, फौजदारी, वैद्यचिकित्सक, राज, नदी की राह का उपयोग, नहर के जल का सिचाई के लिए प्रयोग, मवेशी, कृषि, मजूर, दास आदि सभी के लिए अनुशासन है। हम्मूराबी के बाद का अनुशासन मूसा (१६वी सदी ई० पू०) का है, फिर मनु का (पाचवी-दूसरी सदी ई०पू०)।

प्राचीनता को देखते हुए प्रकट है कि सुमेरी, विशेषत: अक्कादी (बाबुली-आसुरी) साहित्य मे गजब की मार्मिकता है। बाबुल ने ससार को बहुत कुछ दिया, लिपि, ज्योतिष, गणना और इन सब से अधिक महत्वपूर्ण जलप्रलय की कथा 'गिल्गमेश', जो ससार का प्राचीनतम 'एपिक' काव्य है।

४. इटैलियन साहित्य

: १ :

मध्य युग

(१२००-१४५०)

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद धीरे-धीरे इटली से लैटिन का बोलबाला उठ गया। उसके स्थान पर जन-भाषा इटैलियन प्रतिष्ठित हुई। रोमन सास्कृतिक परंपरा तो निश्चय ही किसी न किसी रूप मे बनी रही परन्तु लैटिन का ह्रास स्वाभाविक ही शुरू हो गया। वैसे तो १२०० ई० के लगभग ही इटैलियन का आरम्भ माना जाता है, वस्तुत. उस काल से पर्याप्त पूर्व से ही, परन्तु पहले के इटैलियन साहित्य के उदाहरण आज हमे उपलब्ध नही। दसवी-ग्यारहवी सदियो के कुछ धार्मिक प्रवचन अथवा गेय छन्द जब-तब मिल जाते है, परन्तु उनके आधार पर उस काल के साहित्य की प्रगति को प्रकाश मे लाना कठिन है।

तेरहवी सदी के आरम्भ से ही दक्षिणी फ्रास की साहित्यिक परपरा का प्रभाव उत्तरी इटैलियन पर पडने लगा था। वस्तुतः उससे भी अधिक सिसिली के दरबारी कवियो ने उस प्रगतिशील साहित्य के प्रति अपनी चेतना प्रकट की। वहां फ्रैडरिक द्वितीय (१२२५-५०) के दरबार मे दरबारी प्रणय और क्रूसेडो के सम्बन्ध मे कविताए रची गई। उनपर लैटिन का प्रभाव स्पष्ट था। उत्तरी इटली की अधिकतर कविताए उस काल स्थानीय बोलियो मे लिखी गई। विषय वही प्रणय आदि थे। तेरहवी सदी मे फ्रास के वीर-काव्य की शैली का उत्तरी इटली मे प्रादुर्भाव हुआ।

मध्य इटली मे प्राय. तभी साहित्य मे धार्मिक जागरण के नेतृत्व मे एक साहित्यिक आन्दोलन चला। जागरण के उस आन्दोलन का नेतृत्व सेन्ट फ्रासिस ऑफ असीसी ने किया। भगवान् के सिरजे सारे प्राणियो के प्रति प्रेम की धारा कविता के माध्यम से अनायास बह चली।

वास्तविक साहित्यिक आन्दोलन तेरहवी सदी के मध्य टसकनी मे चला। यह प्रावेन्कल के दरबारी प्रणयवाद और उत्तरी फ्रेंच रहस्यवाद की परस्पर समष्टि का परिणाम था। फ्रेंच रहस्यवाद आदर्श नारीत्व और 'मेरियोलेटरी' अर्थात् मरियम की पूजा लेकर चला था। प्रोवेन्कल का प्रणय एक नितान्त सबल भावधारा थी, जिसमे प्रणयी सर्वथा अकिंचन होकर प्रेमिका की कृपा का इच्छुक हो जाता था। प्रतीकतः वह मानव-

प्रणय-भमवान् के प्रति प्रेम-प्रदर्शन था। इस शैली की कविताओ मे शब्द बडी सावधानी से चुने जाते थे और निखरी टेकनीक मे लैटिन तथा मूल प्रोवेन्कल के रहस्यवादी सकेतो का उपयोग होता था। इसकी मधुरता के कारण इस शैली का आरम्भ से ही 'डोल्से स्टिल नुओवो' (मधुर नई शैली) नाम पड गया था।

टस्कनी का पहला महत्वपूर्ण कवि गुइटोने द'अरेज्जो[१] हुआ। परन्तु वह इस 'मधुर नई शैली' का अनुयायी न था, यद्यपि उसने प्रोवेन्कल की काव्यधारा का अनुकरण किया। उस शैली का सही अनुयायी गुइडो गुइनीजेल्ली[२] बोलोन का रहने वाला था। भाव और शैली दोनो के सौंदर्य मे वह गुइटोने तथा सिसिली की दरबारी परपरा से बढ गया। सदी के अन्त मे फ्लोरेन्स के अनेक तरुण कवियो ने उसका अनुकरण किया। इनमे प्रधान इटली का प्रसिद्ध कवि दाते आलीघियेरी[३] था। उसी परपरा मे गुइडो कावालकान्टी[४] डीनो फ्रस्को-बाल्डी[५], सीनो दा पिस्टोइया[६] और लापो जियानी[७] हुए। इनमे प्रणय और धर्म की समष्टि और काव्य-शैली की प्रौढता मे सबसे महान् दाते हुआ।

१३वी सदी के अन्त और १४वी के आरम्भ मे लिखी काव्यधारा उसी 'मधुर नई शैली' से प्रभावित रही। उस काल लिरिक कविता की रचना काफी हुई, यद्यपि नीति और रूपकपरक कविताओ का भी महत्व कुछ कम न था। उसका उदय विशेषतः फ्रास और क्लासिकल साहित्य-चेतना के प्रभाव से हुआ। दाते के गुरु ब्रूनेटो लाटिनी[८] ने अपना बृहत् विश्वकोष तो फ्रेच गद्य मे लिखा, परन्तु नीतिपरक 'इल पेसोरेत्तो' (लघु निधि) नामक कविता इटैलियन मे लिखी। फ्लोरेन्स के सेर दुरान्ते नामक कवि ने 'रोमन दे ला रोज़' का इटैलियन अनुवाद 'इल फिओरे' (कुसुम, १२९०) नाम से किया। फ्रासेस्को दा बारबेरिनो[९] ने आचार सबधी अनेक कविताए लिखी, परंतु दाते की 'कोमेडिया' (ल० १३००-२१, जो बाद मे 'डिवाईन' विशेषण से युक्त हुई)इन सारी कृतियो मे असाधारण थी। दाते का यह प्रयास सर्वथा अनूठा था, उस लोक और काल मे नितान्त अनजाना। इस कृति से वह अपने समकालीनो मे असाधारण ऊंचा उठ गया। उसकी 'कोमेडिया' मे विश्व-कोष स्वप्न, भ्रमण, और रूपक—पहले की सारी साहित्य-प्रवृत्तियो का एकत्र समावेश हुआ।

गद्य की दिशा मे लोक-कथाओ और ख्यातो के अनेक सग्रह प्रस्तुत हुए। साथ ही लैटिन और फ्रेच ग्रथो के अनुवाद भी हुए। इतिहासकारिता तो अपनी दार्शनिक ऊचाई को

---

१ Guittone d'Arezzo (१२२५-९३); २. Guido Guinizelli (१२४०-७६); ३. Dante Alighieri (१२६५-१३२१), ४. Guido Cavalcanti (१२६०-१३००); ५ Dino Frescobaldi (मृ० १३१७); ६. Cino da Pistoia (१२७०-१३३६); ७. Lapo Gianni, ८. Brunetto Latini (१२३०-९५); ९. Francesco da Barberino (१२६४-१३४८)

न छू सकी, परन्तु क्रानाका (क्रॉनिकल, तवारीख, १३१०-१२) मे डीनो कोम्पाग्नी[1] ने अपने व्यक्तिगत वृत्तान्त को सुन्दर कलेवर दिया। भ्रमण के क्षेत्र मे मार्को पोलो[2] का अत्यन्त सुन्दर वृत्तान्त 'विश्राज्जी' (यात्राए, १२९८) है जिसमे उसकी लोमहर्षिणी यात्राओ का वर्णन हुआ है। उसका मूल उस महान् पर्यटक ने फ्रेंच भाषा मे लिखाया था, जिसका रुस्तिसियानो दा पीसा ने इटैलियन मे अनुवाद किया।

१४वी सदी मे साहित्य का केन्द्र फ्लोरेन्स हुआ और टस्कन भाषा इटली की अन्त -प्रातीय भाषा बनी। धीरे-धीरे स्थानीय बोलियो का विकास सुन्दर साहित्यिक शैली मे होने लगा। पहले उसमे लिरिक आए, फिर अन्य कविताए और अन्त मे गद्य। इसका कारण विशेषत आर्थिक था। १२५९ और १३४८ के बीच प्राय. ९० वर्ष फ्लोरेन्स इटली की नई आर्थिक नीति और औद्योगिक सक्रियता का केन्द्र बना रहा। उसके उस साहित्यिक गौरव का निर्माण तीन महाकाय साहित्यकारो ने किया—दाते, पैट्रार्क[3] और बोकाचो[4]।

दाते के युग ने पुरानी 'दोल्से स्तिट नुओवो' की शैली को हटाकर यथार्थ अनुभूति पर अवलम्बित सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को उसका स्थान दिया। इस नई शैली का प्रधान प्रवर्तक पैट्रार्क था। उसने अपने लिरिको मे अन्तर्निविष्ट दृष्टि के साथ ही बाह्य जगत् के उपमानो को भी चित्रित किया। साथ ही रूप की प्राजलता की ओर भी उसका ध्यान गया और उसके लिरिक उस दिशा मे सौदर्य का प्रमाण बन गए। पैट्रार्क के बाद बोकाचो ने साहित्य का नेतृत्व किया।

मध्य १४वी सदी के काव्य-रूपक विशेषत दाते की 'कोमेडिया' से प्रभावित हुए। शुष्क विश्वकोष की परम्परा मे लिखे होने पर भी फाजिओ डेग्ली उबेर्टी[5] को 'दित्तामोन्दो' और फेडेरिगो फ्रेजी[6] का 'क्वाड्रे-रिज्यो' चार राज्य—(१३९४-१४०३) उस शैली की ऊची रचनाए हैं। विश्वकोष काव्य की परम्परा मे ही दाते के प्रबल प्रति-द्वन्द्वी फ्रासिस्को स्टाबिली[7] की रचना 'ल' असेबि' प्रस्तुत हुई। गद्य की दिशा मे उस सदी का सबसे बडा लेखक बोकाचो था। आज के समीक्षको को उसका गद्य कुछ बोझिल लगता है परन्तु इटली मे उसके 'देकामेरान' की बडी ख्याति हुई और पिछली सदियो मे विभिन्न भाषाओ मे निरतर उसके अनुवाद होते रहे। इटैलियन गद्य मे उसकी वह कृति असाधारण महान् मानी जाती है। १४वी सदी की गद्य-रचनाए बहुत सरल होने से आज के पाठको को अधिकाधिक आकृष्ट करती जा रही हैं। उनकी सादगी और ताजगी रोजमर्रा

---

१. Dino Compagni (१२६०-१३२४); २. Marco Polo (१२४५-१३२४); ३. Francesco Petrarca Petrarch (१३०४-७४); ४. Giovanni Boccacio (१३१३-७५); ५. Fazio Degli Uberti (१३००-६७); ६. Federigo Frezzi (मृ० १४१६); ७. Francesco Stabili

की जबान की शक्ति लिए हुए है। यह दृष्टिकोण उन कृतियो के प्रति केवल कुछ आज का ही नही तब का भी है। उन्ही दिनो उन्हीके कारण १४वी सदी को 'भाषा की सुन्दरतम शती' कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस दिशा मे सेट फ्रासिस के कार्यों का वृत्तात-सग्रह 'फियोरेत्ती दी सेन्ट फ्रासिस्को', जो किसी अज्ञातनामा लेखक की रचना है, विशेष प्रसिद्ध हो चुका है। तब की अन्य प्रसिद्ध रचनाए डोमेनिको कावाल्का[1], इयाकोपो पासावान्टी[2] और जियोवानी विल्लानी[3] की है। अनेक लैटिन ग्रन्थो के अनुवाद भी तभी प्रस्तुत हुए।

१४वी सदी के मध्य (१३४८ के प्लेग के बाद) इटैलियन साहित्य का बडा ह्रास हुआ। इसका कारण आर्थिक स्थिति मे परिवर्तन था, जिसका परिणाम, अन्य बातो के अतिरिक्त, एक यह हुआ कि आशिक जनतात्रिक अथवा अभिजातकुलीय नागरिक शासन के स्थान पर वहा उत्तर-मध्यकालीन तानाशाही की प्रतिष्ठा हुई। १४वी सदी के उत्तरार्द्ध के लेखको मे प्रधान दो मध्यवर्गीय साहित्यिक थे, फ्राको साकेट्टी[4] और आन्टोनियो पुसी[5]। पुसी ने अपने सॉनेटो और अन्य छन्दो मे समसामयिक जीवन को अनायास प्रतिबिंबित किया। रोमाटिक और ख्यातिपरक कथानक उसकी कृतियो के विषय बने। उसकी कृतिया 'नोइए', 'ला' रीना द' ओरियन्टे' (पूर्व की रानी), 'गिसमिरान्ते', 'सेन्टिलोकिओ' आदि थी। गद्य के क्षेत्र मे साकेट्टी और जिओवानी विशेष सचेष्ट हुए। साकेट्टी का 'नोवेल' और जिओवानी का 'इल पेकोरोने' (बुद्धू १३७८) जानी हुई कृतिया हैं। परन्तु इनसे कही ऊचा गद्य सेट कैथरीन ऑफ सिएना[6] का था। उसने इटैलियन भाषा मे रहस्य और धार्मिक ओज से भरे कुछ अत्यन्त सुन्दर 'पत्र' लिखे।

ह्रास का काल

१५वी सदी के आरभ मे आर्थिक निश्चितता ने इटली की सास्कृतिक चेतना मे नया उत्साह भरा। रेनेसास ने भी साहित्य के क्षेत्र मे प्रभूत क्रियाशीलता उत्पन्न की, यद्यपि वह स्वय इटैलियन भाषा के विकास मे कुछ कालघातक भी सिद्ध हुआ। लोगो का उत्साह इटैलियन से हटकर ग्रीक और लैटिन की ओर खिच गया था। परिणाम यह हुआ कि १५वी सदी के प्रख्यात मानवतावादी अल्बर्टी[7] ने जब इटैलियन साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए सुदरतम कृति पर पुरस्कार की घोषणा की तब १४४० ई० मे एक भी रचना विचारार्थ ऐसी न आई जिसमे किसी मात्रा की साहित्यिक शालीनता हो। पैट्रार्क के अनुकरण मे कुछ

---

१. Domenico Cavalca (१२७०-१३४२); २. Iacopo Passavanti (१३००-५७), ३. Giovanni Villani (मृ० १३४८); ४. Franco Sacchetti (१३३०-१४००); ५. Antonio Pucci (१३१०-८८); ६. St. Catherine of Siena (१३४७-८०); ७. L. B. Alberti

लिरिक कविताए लिखी गईं, परन्तु उनके रचयिताओ मे प्रतिभा की नितान्त कमी थी। हा, लिओनार्डो जियुस्तीनियन[१] ने निस्सदेह वेनिस के लोकगीतो के आधार पर कुछ हल्की-फुल्की लोकप्रिय कविताए लिखी। १५वी सदी के उत्तरार्द्ध मे नेपल्स के लेखको और कवियो ने टस्कन मॉडलो की अनुकृति मे अपनी रचनाए की, यद्यपि स्थानीयता उन कृतियो मे सर्वत्र प्रतिबिम्बित हुई। मॉशियो[२] ने सालेर्नो मे अपना 'नोव्रेलीनो' (१४७६) लिखकर भाषा के रूप और विषय की दिशा मे कुछ प्रगति की। नेपल्स के कवियो मे सबसे मौलिक और प्रतिभावान इयाकोपो सानाजारो[३] था।

: २ :

पुनर्जागरण युग

(१४५०—१५५०)

१४५० से १५५० तक के १०० वर्ष रेनेसास सम्बन्धी ज्ञान से व्याप्त रहे। क्लासिक्स के प्रति साहित्यिको का विशेष आकर्षण हुआ। उससे ज्ञान का क्षेत्र तो निश्चय ही विस्तृत हुआ, परन्तु इटैलियन साहित्य की अपेक्षाकृत तुच्छता भी स्पष्ट हो गई। हा, उससे एक लाभ अवश्य हुआ कि नगण्य तथा साधारण की ओर भी लोगो की दृष्टि गई। १५वी सदी के उत्तरार्द्ध के इटैलियन साहित्य ने मानवतावादी दार्शनिक सिद्धान्तो का जज्ब कर लिया। फ्लोरेंस अब भी इटली का साहित्यिक मरकज़ था और उस क्षेत्र का नेतृत्व अब लौरेन्ज़ो द' मेडिसी[४] के हाथ था। वहा न्यो-प्लैटोनिक सिद्धान्तो का विशेष प्रतिपादन हुआ। उस दिशा मे क्रिस्टोफोरो लैंडिनो[५] और मार्सीलिओ फिसिनो[६] विशेष सयत्न हुए। उन्होने उस 'न्यो-प्लैटोनिक' दर्शन के साथ ईसाई सिद्धान्तो का भी सामजस्य किया। लौरेंज़ो के ही दल मे विख्यात ऐन्जलो पोलिज़ियानो[७] भी था और साथ ही लुका पुल्सी[८] और लुइज़ी पुल्सी[९] भी। उसी परपरा मे बर्नार्डो पुल्सी[१०] तथा मिरान्डोला[११] ने भी लिखा। यह दल अत्यन्त प्रतिभाशील और बहुमुखी बौद्धिक मेधा वाला था। उनकी काव्य-प्रतिभा नितान्त सरस और असाधारण थी। कम से कम नृत्य-लिरिक और प्रबन्धकाव्य मे तो उनकी प्रेरणा

---

१ Leonardo Giustinian (१३८८-१४४६), २ Mauccio of Salerno; ३. Iacopo Sannazaro (१४५६-१५३०), ४. Lorenzo de' Medici (१४४९-९२); ५. Cristoforo Landino (१४२४-१५०४); ६ Marsilio Ficino (१४३३-९९), ७ Angelo Poliziano (१४५४-९४), ८. Luca Pulci (१४३१-७०), ९. Luigi Pulci (१४३२-८४); १०. Bernardo Pulci (१४३८-८८), ११. Giovanni Pico della Mirandola (१४६३-९४)

के आधार लौकिक स्रोत ही थे। उनकी चेतना निस्सदेह अभिजातवर्गीय थी, परन्तु निचले सामाजिक स्तरो पर अपने गायन का आधार रखना उन्हे बुरा न लगा।

साहस के कार्यो और रोमाटिक यूरोप सबन्धी दृष्टिकोण इटली की साहित्य-परपरा मे फ्रास से कुछ काल पहले ही आ चुका था, इसकी ओर अन्यत्र सकेत किया जा चुका है। उसी परपरा के अनुकूल लौकिक आधार पर खडे होकर लुइगी पुल्सी (१४३२-८४) ने अपना प्रबन्धकाव्य 'मोरगान्टे माजिओरे' रचा। पुल्सी का यह वीर काव्य लोक-परपरा का ही रूमानी शौर्य के माध्यम से विकास करता है। उसमे हास्य और विनोद की भी पर्याप्त मात्रा है। पुल्सी लोकगायको के प्रहसनो का अनुकरण कर अपनी रचना मे स्थान-स्थान पर व्यग्य और हास्य के स्थल उत्पन्न कर देता है। मैटियो मैरिया बोइआर्डो[1] का काव्य 'ओरलैन्डो इन्नामोरेटो' (प्रणयी रौलेंड) भी उसी परपरा मे है, यद्यपि उसकी टेकनीक पुल्सी की शैली से सर्वथा भिन्न है। साहित्य मे एक दूसरी देशी शैली का प्रयोग फिओ बेल्कारी,[2] लोरैन्ज़ो, आदि ने किया। ये अपना विषय आरम्भ मे ईसा के जीवन-मात्र से चुनते थे। फिर धीरे-धीरे अपने चयन का क्षेत्र और व्यापक बना इन्होने पूरी बाइबिल से भी कथानक चुनना प्रारम्भ किया। पोलीजियानो ने तो अपने 'ओर्फिओ' (१४८०) के लिए प्लॉट सर्वथा लौकिक चुना।

दो धाराएं

१५वी सदी के अन्त मे इटली की राजनीतिक और सामाजिक दशा मे क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ, जिससे स्वय इटैलियन साहित्य वचित न रह सका। फ्रेच आक्रमण ने जिस युद्ध का इटली मे सूत्रपात किया वह स्पेन और आस्ट्रिया के प्रादुर्भाव से और भी मारक सिद्ध हुआ। १४६४ से १५५६ तक युद्धो की परपरा किसी न किसी रूप मे बनी रही और विदेशी सत्ता ने देश के आर्थिक जीवन को पगु कर सामाजिक समस्याओ की एक परपरा उपस्थित कर दी। अभिजात-कुलीय लेखको का सम्पर्क निम्नवर्गीय स्तरो से सर्वथा टूट गया और दरबारो का जीवन घोर सिद्धान्तवादी वातावरण मे कुण्ठित होने लगा। कला की टेकनीक सिद्धात रूप मे दर्शन की गभीरता को पहुच गई। परिणाम यह हुआ कि मानव अनुभूति की यथार्थवादी प्रेरणाए अब रचनाओ का आधार न बन सकी। १६वी सदी का दरबारी जीवन नितान्त कृत्रिम हो गया यद्यपि कुछ साहित्यकारो ने दरबारी होते हुए भी जनता की दिशा से अपना मुख सर्वथा न मोडा। इसी कारण इटैलियन साहित्य मे अब दो धाराओं का प्रारम्भ हुआ, एक विचक्षण बौद्धिक अभिजात-कुलीय और दूसरी लौकिक परपरा की वाहिका। यह दूसरी निश्चय ही पहली की सत्ता से मुक्त न थी। उसपर उसका रोब गालिब था और गालिब रहा। फिर भी दूसरी परपरा के साहित्यिक

१. Matteo Maria Boiardo (१४४०-६४); २. Feo Belcari (१४१०-८०)

जन-बोलियो से अपनी प्रेरणा लेते हुए उनके माध्यम से अपना कृतीत्व सार्थक करते रहे। १६वी सदी के मानवतावाद के आदोलन की पृष्ठभूमि यही थी। लैटिन साहित्य के मॉडल इटैलियन साहित्य मे भी रखे जाने लगे और साहित्य को शुद्ध करने की प्रवृत्ति मे भाषा और शैली के क्षेत्र मे एक अत्यन्त सकीर्ण मनोवृत्ति का आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन के नेताओ मे प्रधान पिएट्रो बेम्बो[1] था, जिसने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव के साथ ही लिरिक काव्य और अन्य क्षेत्रो मे अपनी रचनाओ के उदाहरण प्रस्तुत कर उस शुद्ध-शैलीवादी आन्दोलन को शक्ति और सकीर्णता प्रदान की। सरल और अनायास साहित्य-रचना पर यह बुद्धिवाद का फौलादी शिकंजा था।

भाषा

बेम्बो के शुद्ध शैलीवाद ने जब १४वी सदी की टस्कन भाषा-परपरा के अनुकरण पर ज़ोर दिया तो भाषा के प्रश्न पर एक विवाद उठ खडा हुआ क्योकि इधर जो दरबारो के प्रोत्साहन से एक नई भाषा-शैली का उदय हो गया था, उससे बेम्बो के आन्दोलन मे सघर्ष अनिवार्य हो गया। उस काल जो भाषा सबधी समस्या सामने आई उसको इटली के साहित्यिक 'क्वेस्टिओने डेला लिगुआ' (भाषा का प्रश्न) कहते थे। भाषा सबधी वह विवाद प्राय ३०० वर्ष तक चलता रहा। उसने स्टैन्डर्ड इटैलियन की सारी समस्याओ और प्रश्नो को खोलकर रख दिया। प्रधान समस्याए दो थी—(१) साहित्य की भाषा प्राचीन (१४वी सदी की) अथवा समसामयिक हो? (२) वह भाषा टस्कन हो, अथवा टस्कन से भिन्न हो? १६वी सदी मे एक और उदार विचार ने समसामयिक और प्राचीन दृष्टिकोणो के औचित्य को तो स्वीकार किया ही, स्टैन्डर्ड इटैलियन का मूल आधार भी टस्कन को माना। इस उदार-भाषा-सिद्धान्त के प्रवर्तको मे प्रधान प्रसिद्ध राजनीति-दार्शनिक निकोलो मेकिया-वेली[2] था। भाषा सबधी इस विवाद मे अनेक मेधावी चिन्तको और साहित्यिको ने भाग लिया। परिणामस्वरूप पर्याप्त साहित्य इटैलियन मे भाषा के रूप के सबध मे ही प्रस्तुत हो गया। जिस दिशा मे पिएट्रो बेम्बो के शुद्ध शैलीवाद की विजय हुई वह लिरिक काव्य था। उसके अनेक अनुयायियो ने पैट्रार्क के अनुकरण मे नितात प्राजल भाषा मे लिरिक लिखे, यद्यपि उनमे मूल अथवा विषय सबधी ऊचाई तनिक न थी। इस प्रकार के लिरिककारो के कुछ नाम ये है—फ्रासिस्को मेरिया मोल्ज़ा[3], ऐंजलो दि कोस्टान्ज़ा[4], फ्रासिस्को कोपेटा दे बेकूटी[5], बेरार्डिनो रोटा[6], लइजी टान्सिलो[7], गालेज़ो दि टार्सीआ[8] और कवियित्रिया—

---

१ Pietro Bembo, २. Niccolo Machiavelli, ३ Francesco Maria Molza (१४८९-१५४४), ४ Angelo di Constanza (१५०७-९१); ५ Francesco Coppetta dei Beccuti (१५०९-५३), ६. Berardino Rota (१५०९-७५), ७. Luigi Tansillo (१५१०-६८); ८. Galezzo di Tarsia (१५२०-५३)

वेरोनिका गाम्बारा[1] तथा विट्टोरिया कोलोना[2]। परन्तु १६वी सदी के वास्तविक प्रधान लिरिक कवि थे माइकेलैंज्लो बुग्रोनारोटी[3] और वेनिस की प्रसिद्ध वारागना गास्पारा स्टैम्पा (ल० १५२३-५४)। इनमे पहले ने अपनी कृतियो मे न्यो-प्लैटोनिक सिद्धान्तो का पोषण किया और विट्टोरिया कोलोना के प्रति अपने प्रणय के उद्गार मुखरित किए और दूसरी के लिरिको मे काउण्ट कोलालटिनो दि कोलाल्टो के प्रति प्रेम का उद्गीरण हुआ।

इतिहास

कहना न होगा कि शुद्ध शैलीवादी दृष्टिकोण की रचनाए भार-बोझिल और कृत्रिम हुई, क्योकि उनमे प्राय प्राचीनो की नकल करने की प्रवृत्ति विशेष आदर पाती थी। इसी परम्परा मे बैम्बो ने 'इस्टोरिया वेनेटा' (वेनिस का इतिहास), जिआम्बुलारी[4] ने 'इस्टोरिया डेल योरपे' (यूरोप का इतिहास) एज्लो दि कोस्टान्जा ने 'इस्टोरिया डेल रेज्नो दि नापोली' (नेपल्स के राज्य का इतिहास) आदि लिखे। मेकियावेली की ऐतिहासिक और राजनीतिक कृतियो मे भी क्लासिकल अनुसरण हुआ है परन्तु लेखक की वैयक्तिक शैली और दृष्टिकोण उनमे अनुकरण की प्रवृत्ति के ऊपर उठ गए है। यही वक्तव्य फ्रासेस्को गुइसियाडिनी[5] की रचनाओ 'रिकार्डो पोलिटिसी ए सिविली' राजनीतिक और नागरिक सस्मरण (१५२७-३०) और 'स्टोरिया द' इटालिया' (१५३७-४०) के सबध मे भी उपयुक्त है।

जीवन-चरित्र

१६वी सदी मे अनेक जीवन-चरित भी लिखे गए, जिनमे सबसे महत्व का ज्योर्जियो वासारी[6] का चित्रकारो, मूर्तिकारो और वास्तुकारो के चरित (१५४३-५१) है। बेवेनूटो सेलीनी[7] की 'वीटा' (आत्मकथा) १६वी सदी के गद्य की एक सुघड कृति है। उसमे जीवन की ताजगी शैली के चातुर्य से सर्वत्र लक्षित होती है। भाषा और शैली का सौदर्य विशेषत जेली[8] की कृतियो—'आई० काप्रिसी डेल बोटाइयो' और 'सिर्स'—मे भरपूर है। जेली फ्लोरेस का प्रसिद्ध कलावन्त था।

उपन्यास

१६वी सदी के उपन्यास अधिकतर बोकाचो की परम्परा और शैली मे लिखे गए।

---

१. Veronica Gambara (१४८५-१५५०); २. Vittoria Colonna (१४९२-१५४७); ३ Michaelangelo Buonarroti (१४७५-१५६४); ४. Giambullari; ५. Francesco Guicciadini, ६. Georgio Vasari (१५११-७४); ७. Benvenuto Cellini (१५००-७१); ८. G. B. Gelli (१४९८-१५६३)

उनका एक संग्रह मैटियो बाडेलो[1] ने प्रस्तुत किया। इन उपन्यासो के कथानक नितान्त यौन हैं, अनेकार्थ मे घिनौने भी, परन्तु निस्सदेह वे १६वी सदी की इटली के अभिजात-कुलीय समाज और दरबारो का रहन-सहन, आचार-आदर्श प्रकट करते है। आन्टन फ्रासिस्को ग्राज़िनी[2] (इललास्का) ने अपनी कृति 'सेने' (१५४०-४७) मे फ्लोरेस के छिछले जीवन का एक चित्र खीचा। वह स्वय सुन्दर व्यग्यकार और कॉमेडियो का लेखक था। इनके अतिरिक्त कुछ और भी उपन्यास लिखे गए जो शैली और मौलिकता दोनो दृष्टि से नगण्य थे। बोकाचो की परम्परा से भिन्न कुछ स्वतन्त्र उपन्यास भी तब लिखे गए, उनमे लुइज़ी दा पोर्टो[3] का 'रोमियो ए जूलिएटा' शेक्सपियर के 'रोमियो और जूलियट' के आधार पर बना। मेकियावेली ने भी इस प्रकार का एक स्वतन्त्र उपन्यास—'नोवेला दि बैल्फागोर आर्सियाडियावोलो'—लिखा। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, १६वी सदी के उपन्यास सर्वथा दुराचरण और यौन दृश्यो से भरे थे। जिन थोडे उपन्यासकारो ने उस प्रवृत्ति से विद्रोह कर लिखने का प्रयत्न किया, उनके उपन्यास अरोचक सिद्ध हुए। इन उपन्यासकारो मे प्रधान सेबास्टिआनो एरिज़ो[4] था।

नाटक

१६वी सदी की नाटक रचना मे ट्रैजेडी और कॉमेडी का पुनरावर्तन हुआ। अरिस्ट्रॉटल की 'पोएटिक्स' और होरेस की 'आर्स पोएटिका' उस दिशा मे पथ-प्रदर्शक बनी। इसी प्रकार क्लासिकल दृष्टिकोण के अनुसार नाटक सबधी काल, स्थानादि की इकाइया भी स्वीकार कर ली गईं। उस काल की ट्रैजेडी रचनाओ मे विशेष गणना ट्रिसीनो[5] की 'सोफोनिस्बा' (१५१५), जिओवानी रेसेलाई[6] की 'रोज़मुन्डा', ज़िराल्डी[7] के 'ओरबेके' (१५४१), स्पेरोनी[8] के 'कानास' (१५४२) और पिएट्रो आरेटीनो[9] की 'ओराजिया' (१५४६) की है। ये रचनाए अपनी बोझिल शैली और बर्बर भाव निदर्शन, चरित्र-विश्लेषण की कमी के अतिरिक्त भी १६वी सदी के तत्सबधी साहित्य मे सारे यूरोप के अनुसरण के लिए मॉडल बन गईं। कॉमेडी रचनाए भी साधारणत क्लासिकल मॉडलो पर ही अवलबित हुईं। कथानक तथा शैली की दृष्टि से तो ये ट्रैजेडी कृतियो से कही अधिक समसामयिक जीवन के निकट थी। इन्होने उनकी तरह क्लासिकल अनुसरण के उत्साह से मौलिकता और आविष्कार का गला न घोटा। कॉमेडी के क्षेत्र मे दो कृतिया उस काल बडी प्रसिद्ध हुईं, एक तो मेकियावेली की 'माड्रोगोला' (ल० १५१३), दूसरी जिओरडीनो

---

१. Matteo Bandello (१४८५-१५६१); २. Anton Francesco Grazzini (१५०३-८४); ३. Luigi da Porto (१४८६-१५१६); ४. Sebastiano Erizzo; ५. Trissino; ६. Giovanni Recellai (१४७५-१५२५), ७. Giraldi; ८. Speroni; ९. Pietro Aretino (१४९२-१५५६)

कृतिया पिएट्रो आरेटीनो की 'ओरलान्टीनो' और टिओफिलो फोलेगो[1] की 'ओरलान्डीनो' (१५२६) थी। फोलेगो साधु था, कलम का धनी। सुधार-आन्दोलन मे उसने भी परपरागत चर्च का विरोध किया। उसने अपनी कृति 'बाल्डस' मे माकारोनिक-लैटिन का प्रयोग किया, जो स्टैंडर्ड इटैलियन और जनबोली की मिश्रित भाषा थी। उस माध्यम से उसने निम्न-मध्यवर्ग और नितात निचली श्रेणी के लोगो का सुदर चित्रण किया।

१६वी सदी मे मुद्रण-यत्र का प्रयोग होने लगा। उससे पाठको की सख्या मे असाधारण वृद्धि हुई। उसने लेखको पर भी प्रभाव डाला और प्रेस मे हर प्रकार के कार्य करने वाले, जो साकेतिक रूप से 'पोलिग्राफी' कहलाते थे, नई लेखक परपरा के प्रवर्त्तक बने। इनमे प्रधान उल्लेखनीय 'पोलिग्राफी' पिएट्रो आरेटिनो था। प्रतिभा की दृष्टि से तो वह कुछ असाधारण न था, परन्तु लिखा उसने बहुत और उसकी रचनाए काफी प्रभावशाली प्रमाणित हुई। वह द्रव्य लेकर दूसरे व्यक्तियो के विरुद्ध पैनी कलम चलाता था और द्रव्य के ही बदले उनके सबध मे प्रशस्तिया भी लिखता था। अपने लेखो से उसे खासी आमदनी हो गई थी।

क्लासिकल पुनर्जागरण की दृष्टि से ग्रीक और लैटिन के सानिध्य के कारण इटली यूरोप के देशो मे उनका सबसे पहला वारिस बना। ग्रीक और लैटिन सस्कृति पहले पहल उसीके माध्यम से पुन सगठित हुई। इटली की ही तदनुकूल कृतिया अन्य यूरोपियन साहित्यिको की रचनाओ की प्रेरणा और मॉडल बनी। स्वाभाविक ही उसे रेनेसास के आदोलन से पोप का विरोध था और उस विरोध के कारण अनेक प्रसिद्ध कलाकारो तथा रचयिताओ को स्वदेश छोड विदेशी दरबारो की शरण लेनी पडी। रेनेसास के आदोलन मे अग्रणी होने के कारण इन मेधावियो का सर्वत्र असाधारण स्वागत भी हुआ। लिओनार्डो दा विन्सी और अलामन्नी, उदाहरणत', फ्रास पहुचे। काटितग्लिओने स्पेन मे जा डटा। यूरोप के अनेक देशो से लोग धार्मिक (लूथर आदि) अथवा बौद्धिक (इरैस्मस आदि) कारणो से इटली पहुचे और उनके माध्यम से इटैलियन साहित्य के ग्रथ उन देशो मे जा पहुचे। डू बैले ने जो फ्रेंच भाषा और साहित्य का पुनर्निर्माण आरभ किया था, उसके लिए उसे स्पेरोनी के 'डियालोगो टेला लिंगुआ' से सामग्री मिली। स्पेन की लिरिक काव्य-धारा को बेम्बो तथा उसके अनुयायियो के क्लासिकल दृष्टिकोण से प्रेरणा मिली। इसी प्रकार बेबो आदि ने फ्रास और इग्लैंड के कवियो को प्रेरणा दी। स्पेन के जुआन बोस्कान, गार्सिलासोद लावेगा आदि, फ्रास के 'प्लेइयाड' और लियोन के साहित्यिको और इग्लैंड के एलिजाबेथ-युगीय कवियों ने बार-बार इटली की इस नव जागृति की ओर देखा और उसके क्लासिक मॉडलो का अनुकरण किया। स्पेसर का 'फेयरी क्वीन' इटली की ही रोमाटिक कृतियो पर

१· Teofilo Folengo

अवलबित हुआ। इटली की ही, प्राचीन साहित्यिक सिद्धातो की आलोचनात्मक व्याख्या फ्रास आदि के समीक्षा-शास्त्र का आधार बनी।

वैज्ञानिको पर अत्याचार

परंतु इटली का यह गौरव दीर्घकाल तक अक्षुण्ण न बना रह सका। साहित्य और बौद्धिक दिशा मे वह अगली सदियो मे हीन हो गया। क्लासिक प्रवृत्ति की बहुलता ने उसके साहित्यिको मे व्यक्तित्व की ऊचाई न होने दी और आर्थिक ह्रास ने उस दिशा मे और भी कठिनाइया उपस्थित कर दी। यथार्थ धीरे-धीरे उनकी दृष्टि से दूर होता गया और धर्म का दुराग्रह, सुधार-विरोधी आदोलन तथा उसके अत्याचारी एजेटो ने विचार-स्वातत्र्य पर गहरा आघात किया। बौद्धिक स्वतत्रता, मौलिक निर्भीकता और साहित्यिक अभिव्यजना मे ईमानदारी तथा सादर्ग' इटली से उठ गई। जिन थोडे कर्मठ और निर्भीक साहित्यकारो ने अपना दृष्टिकोण न बदला, उनको भयानक दड भुगतने पडे। 'इल काडेलइओ' तथा अन्य अनेक दार्शनिक ग्रथो के रचयिता प्रसिद्ध चिंतक ज्योरडानो ब्रूनो को काफिर कहकर रोम मे जला डाला गया और कालाब्रिआ के दार्शनिक सुधारवादी तथा 'ला चित्तादेल सोले' के रचयिता टोमासो काम्पानेला[१] को लम्बी कैद भुगतनी पडी। इसी प्रकार फ्लोरेस के प्रसिद्ध गणित ज्योतिषी गैलीलिओ गैलीलेई[२] को मजबूर होकर अपने ही सिद्धातो का प्रतिवाद करना पडा और वेनिस का फ्रा पाउलो सार्पी[३] अपने नगर राज्य के सरक्षण से ही धार्मिक सत्ता के अत्याचार का शिकार होते-होते बचा। परिणाम प्रकट ही था। ललित साहित्य मे प्रगति की धारा रुक गई, परतु १६०० ई० के बाद उसमे फिर प्रगति होने लगी। मौलिकता की खोज ने इतना ज़ोर पकडा और अलकरण ने कवियो को इतना आकृष्ट किया कि शैली नितात अस्वाभाविक हो गई और भाषा का प्रवाह सर्वथा बोझिल हो गया। वस्तुत १७वी सदी की इस साहित्यिक कृत्रिमता का प्रभाव यूरोप के सारे देशो पर पडा। स्पेन मे वह कृत्रिम शैली गो गोरिज्म कहलाई। इग्लैड मे यूफूइज्म, फ्रास मे प्रेसिओसीटे और जर्मनी मे बारोक। इटली मे मारिनो के नाम पर उसका नाम मारिनिज्म पडा। मारिनो के अनुयायियो मे क्लाउडिओ आकीलीनी[४], जिरोलामो प्रेटी[५] और मान्सो[६] भी थे। मान्सो ने तो उस मारिनी-बोरोक कृत्रिमता को पराकाष्ठा तक पहुचा दिया।

---

१. Tommaso Campanella (१५६८-१६३०); २. Galileo Galilei (१५६४-१६४२); ३. Fra Paolo Sarpi (१५५३-१६३३); ४. Claudio Achilini (१५७४-१६४०); ५. Girolamo Preti (१५८२-१६२६); ६. G. B- Manso (१५६१-१६५४)

: ३ :

सत्रहवीं-अट्ठारहवीं सदी

१७वी सदी की ऐपिक काव्य-साधना मे १६वी सदी की परपरा ही जाग्रत रही। अनुकरण और नीरस प्रयोग चलते रहे। आरिओस्टो और टैस्सो की कृतियो के विशेष अनुकरण हुए। फ्रान्सेस्को ब्रासियोलीनी[1] ने 'क्रोसे राकिस्टाटा' और जिरोलामा ग्राज़ियानी[2] ने 'काकिस्टो दि ग्रानाटा' टैस्सो के ही अनुकरण मे लिखे। व्यग्य काव्यो का उदय निश्चय ही तत्कालीन मौलिक सूझ का परिणाम था, यद्यपि फोलेगो ने उस परपरा का भी १६वी सदी मे ही प्रारम्भ कर दिया था। उसका विकास ब्रासियोलीनी ने अपने 'शेरनो डेग्ली देई' और आलेसाड्रो टासोनी[3] ने अपनी 'सेकिया-रापिटा' (१६२२) मे किया।

गद्य की दिशा मे भी मारिनी दृष्टिकोण ने अपना प्रभाव डाला। जियानफ्रासिस्को लोरेडानो[4] की 'ला डियानी' (१६२७) और जिओवानी आम्ब्रेजियो मारिनी[5] का 'इल कालोआन्ड्रोफडेले' उसके प्रमाण है। बोकाचो के भी तब कुछ अनुकरण हुए, जिनमे प्रधान जिओवानी साग्रेदो[6] का 'ल' आरकाडिया इन ब्रेन्टा' (१६६७) था। उस काल का दूसरा उल्लेखनीय उपन्यासकार जियामबटिस्टा बासीले[7] था, जिसने 'इल पेन्टामेरोने' लिखा। उसने नेपल्स की बोली मे लोक-कथाओ की प्रभूत सामग्री का उपयोग किया, परन्तु उस काल सुन्दरतम गद्य का प्रयोग ललित साहित्य मे नही, राजनीतिक आदि चिन्तनशील अथवा आलोचना-साहित्य मे हुआ। गैलीलियो और सार्पी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। अन्य प्रधान लेखक ट्रायानो बोकालीनी[8] और पाओलो सेग्नेरी[9] थे। इनमे पहला बडा निर्भीक और शक्तिशाली साहित्यिक तथा राजनीतिक आलोचक था। उसकी 'रागुआग्ली दि पारनासा' और 'पिएट्रा डेल पारागोने पोलीटिको' इस दिशा मे प्रमाण है। बोकालीनी विशेषत स्पेनी अत्याचारो पर अपने निर्भीक प्रहार से प्रसिद्ध हुआ। सेग्नेरी धार्मिक उपदेशक था। उसके प्रवचनो और धार्मिक कृतियो मे गजब की शक्ति है। एक अज्ञातनामा लेखक ने 'फिलीपिके' नामक ग्रथ लिखकर स्पेनी शासको पर गहरी चोट की। अनेक पर्यटको के सुन्दर विवरण भी तब प्रकाशित हुए। सस्मरणो के

---

१. Francesco Bracciolini (१५६०-१६५४); २. Girolama Graziani (१६०४-७५); ३. Alessandro Tassoni (१५६५-१६३५), ४. Gian Francesco Loredano (१६०७-६१); ५. Giovanni Ambrogio Marini (१५९४-१६५०); ६. Giovanni Sagredo (१६१७-८२); ७ Giam Battista Basile (१५७५-१६३२); ८. Traino Boccalini (१५५६-१६१३); ९. Paolo Segneri (१६२४-९४)

रूप मे वे विशेष प्रसिद्ध हुए। उनमे प्रधान पिएट्रो डेला वाले[1] एनरिको काटेरीनो डाविला[2] और गुइडो बेन्टिग्रोग्लिग्रो[3] थे।

१७वी सदी मे भी पहले की ही भाति नाटक क्लासिकल नाटको के अनुकरण मे लिखे गए। कहने की आवश्यकता नही कि रस का परिपाक उनमे न हो सका। कार्लो डोटोरी[4] का 'अरिस्टोडेमो' (१६५७) इसका प्रमाण है। माइकेल ऐन्जलो बुओनारोटी[5] का 'ला फिएरा' निश्चय ही पांच एक्टो मे फ्लोरेस के दृश्यो का यथार्थवादी वर्णन हुआ है। स्पेनी कॉमेडी का प्रभाव भी उस सदी मे धीरे-धीरे इटली के रगमच पर होने लगा और अनेक कृतिया उस प्रभाव के अनुकूल भी प्रस्तुत हुई। जिआसिन्टो आन्ड्रिया चिको-ग्नीनी[6] की 'कोन्वीटाटो दि पिएट्रा' उसी अनुकरण मे लिखी गई। डॉन जुआन सम्बन्धी कथानको का प्रारम्भ भी इटैलियन मे उसी काल हुआ। उस काल की नीरस रचनाओ मे एकमात्र अपवाद गुइडुबाल्डो बोनारेली[7] का 'फिली दि सीरो' है जो पशुचारण परपरा मे प्रस्तुत हुआ। सदी के अन्त मे पशुचारण सम्बन्धी शैली 'मैलोड्रामा' अथवा सगीत-प्रधान 'ओप्रा' मे घुलमिल गई। मैलोड्रामा का आविष्कार वस्तुत १७वी सदी मे ही हुआ। १६वी सदी के अन्त मे ही फ्लोरेस के सगीतकारो के एक गिरोह 'कामेराटा' ने ग्रीक ड्रामा के गायनो के कुछ प्रयोग किए थे। उस दिशा मे 'डाफ्ने' (१५९९) और 'यूरीडाइस' (१६००) की रचना मे कवि ओटेवियो रिनुसिनी[8] ने गीतकार इयाकोपो पेरी[9] की सहायता की, ओप्रा बडी शीघ्रता से लोकप्रिय हो चला। इटली मे उस कला के अद्भुत प्रचार का श्रेय विशेषत: प्रतिभाशाली गायक क्लाउडिओ मोन्टेवेर्डी[10] को है। इटैलियन ओप्रा अपने आवश्यक परिवर्तनो के साथ १७०० ई० तक सारे यूरोप मे फैल गया। १७वी सदी की एक और रगमचीय शैली, जो बडी लोकप्रिय हुई, 'कॉमेडिया डेल आर्टे' कहलाती थी। दृश्यो की एक विशेष 'सेटिंग' की वह कॉमेडी होती थी, जिसे कम्पनिया खेला करती थी। उसका प्रत्येक दृश्य अभिनेताओ की प्रत्युत्पन्न बुद्धि पर निर्भर करता था। ये खेल भारत के गावो की भणैती और नकल से मिलते थे। इनका प्रदर्शन सर्वथा आचारहीन और कुरुचिपूर्ण होता था, परन्तु था यह अत्यन्त लोकप्रिय। ओप्रा की ही भाति इसका प्रचार भी यूरोप मे इटली की कम्पनियो ने किया। ये कम्पनिया अपना ठाठ-बाठ लिए यूरोप के सारे देशो मे प्राय: सर्वत्र घूमा करती थी।

---

१. Pietro Della Valle (१५८६-१६५२), २. Enrico Caterino Davila (१५७६-१६३१); ३. Guido Bentivoglio (१५७९-१६४४), ४. Carlo Dottori (१६१८-८६); ५. Michelangelo Buonarroti (१५६८-१६४०); ६. Giacinto Andrea Cicognini (१६०६-६०); ७. Guidu Baldo Bonarelli (१५६३-१६०८); ८. Ottavio Rinuccini (१५६४-१६२१); ९. Iacopo Peri (१५६१-१६३३), १० Claudio Monteverdi (१५६७-१६४३)

लिरिक

सत्रहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे मारिनी शैली का ह्रास हो चला और उत्तरकालीन लिरिक कवियो ने अपनी कुछ सीमाए और मर्यादाए बाध ली। आरेज़ो के फ्रासिस्को रेडी[1] ने, जो डाक्टर वैज्ञानिक और आरेटाइन बोली का खोजी था, बीस वर्ष मे 'बैको इन टोस्काना' (बैकस टसकनी मे) समाप्त किया। उसमे आपान के देवता बैकस के अमित पान का वर्णन है। उसकी शैली सजीव है। फ्लोरेस के विन्सेन्ज़ो दा फिलिकाइया[2] और पाविया के आलेसाड्रो गुइडी[3] ने मारिनिज्म के बाहुल्य से तो अपनी कविता स्वतत्र कर ली, पर वे उसे कृत्रिम अलकार से मुक्त न रख सके। कार्लो मारिया माज्जी[4] ने इटैलियन मे सुन्दर देश-प्रेम से सनी कविताए और मिलानी बोली मे कॉमेडी लिखी। सदी के प्राय अन्त मे (१६६०) रोम मे एक अकैडेमी—आर्काडिया—की प्रतिष्ठा हुई। इसका प्रधान उद्देश्य इटैलियन कविता को आडम्बर और कुरुचि से मुक्त कर शुद्ध मर्यादा मे प्रतिष्ठित करना था। इसके सदस्यो मे प्रसिद्ध आलोचक जियान विन्सेन्ज़ो ग्राविना[5] और जियोवान मारियो क्रेसिम्बेनी[6] भी थे। इस अकैडेमी की बैठको मे भद्र नर और नारी गडरियो (पशु-पालको और पशु-पालिकाओ) के वेश मे कविताए सुनाते थे। इस विधि से थियोक्रोटस, वर्जिल और सानाजारो की प्राचीन परपरा का पुनर्नवीनीकरण हुआ। अगली सदी मे तो इसकी शाखाए समूचे इटली मे स्थापित हो गई। मधुर लिरिको मे दैनिक जीवन प्रतिबिंबित हुआ। यद्यपि उनकी साहित्यिक ऊचाई का दावा नही किया जा सकता, फिर भी जेनोआ का कवि और अकैडेमी का सदस्य कार्लो इनोसेन्ज़ो फ्रूगोनी[7] अपने सुन्दर लिरिको के लिए विख्यात हुआ।

अकैडेमी की क्रियाशीलता का प्रभाव और क्षेत्रो पर भी पडा। ओप्रा की हेय दशा को सुधारने का भी प्रयत्न हुआ और कविता तथा गायन मे परस्पर निकटतम सामजस्य स्थापित करने का आयोजन हुआ। वेनिस के एक विद्वान् आलोचक आपोस्टोलो ज़ेनो[8] ने उस दिशा मे कुछ अच्छे प्रयोग किए, यद्यपि उसकी कृतियो मे कुछ दम न था। प्रसिद्ध ओप्रा कवि पिएट्रो मेटास्टासियो[9] ने भी भावुकता और वीर कृत्यादि के योग से नई शैली को प्रोत्साहन दिया।

---

१. Francesco Redı (१६२८-६८), २ Vıncenzo da Fılıcaıa (१६४२-१७०७), ३. Allesandro Guıdı (१६५०-१७१२), ४ Carlo Marıa Maggı (१६३०-९९); ५. Gıan Vıncenzo Gravına (१६६४-१७१८), ६ Gıovan Marıo Crescımbeni (१६६३-१७२८), ७. Garlo Innocenzo Frugoni (१६९२-१७६८), ८. Apostolo Zeno (१६६८-१७५०); ९. Pıetro Metastasıo (१६९८-१७८२)

गद्य

गद्य के क्षेत्र मे सुन्दरतम कृतिया शुद्ध साहित्य से इतर थी। रेडी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। भौतिक विज्ञान के पण्डित लोरेंजो मागालोट्टी[1] ने अपने 'प्राकृतिक विज्ञानो मे प्रयोग' मे सुन्दर गद्य रचना की। विज्ञान के क्षेत्र मे मार्सेलो माल्पीघी[2] और आन्टोनियो वालिस्नियेरी[3] की रचनाए भी प्राजल थी। जेसुइट पादरी डानिएलो बर्टोली[4] ने धार्मिक ग्रथो के अतिरिक्त नितान्त सुन्दर गद्य मे साहित्य सम्बन्धी आलोचनात्मक रचनाए की। सामग्री की खोज से सम्पन्न इतिहास सम्बन्धी रचनाए भी अनेक हुईं। इनके प्रणेताओ मे प्रधान लुडोविको आन्टोनियो मुराटोरी[5] क्रेसिम्बेनी, पिएट्रो जियानोने[6] और विको थे। मुराटोरी ने मध्यकालीन इटली के इतिहास पर असाधारण प्रकाश डाला। क्रेसिम्बेनी ने साहित्य का बृहद् इतिहास प्रस्तुत किया। जियान ने धार्मिक विश्वास के विपरीत जो वैज्ञानिक पद्धति से नेपल्स के कानून, रहन-सहन, सस्कृति आदि का निर्भीक इतिहास लिखा, उसके बदले उसे ग्यारह वर्ष स्वदेश से निर्वासित रहना पडा और जीवन के अन्तिम बारह वर्ष कैद भुगतनी पडी। विको ने उससे भी अधिक क्रान्तिकारी विचारो से इतिहास-दर्शन की व्याख्या की, परन्तु कानून का शिकजा उसे न छू सका।

साहित्यिक विद्रोह

अट्ठारहवी सदी के मध्य और उत्तर काल मे इटली के सास्कृतिक और राजनीतिक जीवन मे क्रान्तिकारी जागरण हुआ। अनेक राजनीतिक सधियो के कारण स्पेन का शिकजा इटली से हट गया और इटली पर्याप्त मात्रा मे स्वतत्र हो गया। इटली का जीवन अभिजात-कुलीय यातनाओ से आक्रान्त था। साथ ही उसपर पादरियो की सत्ता का राहु भी सवार था। दोनो मरणोन्मुख होते हुए भी नागरिक और ग्राम्य-जीवन पर काफी हावी थे। अब दोनो के विरुद्ध इटली मे विद्रोह की लहर उठी। फ्रास और इग्लैड की उदारवादी साहित्यिक राजनीतिक-दार्शनिक चेतना से इस विद्रोह को बडी शक्ति मिली। फ्रास की अनेक राजनीतिक-सास्कृतिक क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो ने इटली को अपना गढ बनाया। फिर १७५८-७८ मे प्रसिद्ध विश्वकोष के इटैलियन सस्करण ने तो उसको विशेष प्रोत्साहित किया। फ्रासिस्को अल्गारोट्टी[7] ने विज्ञान आदि की खोजो को लोकप्रिय बनाने मे बडी सहायता की। वह वोल्टेयर और फ्रेडरिक द्वितीय का मित्र था। वह महान् यात्री भी था और महिलाओ के लिए न्यूटनवाद सम्बन्धी उसका ग्रन्थ (१७३७) गुरुत्वाकर्षण पर

---

१. Lorenzo Magalotti (१६३७-१७१२); २. Marcello Malpighi (१६२८-९४); ३ Antonio Vallisnieri (१६६१-१७३०); ४ Daniello Bartoli (१६०८-८५); ५. Lodovico Antonio Muratori (१६७२-१७५०); ६. Pietro Giannone (१६६८-१७४३); ७. Francesco Algarotti (१७१२-६४)

एभ नितान्त सरल और आशुगम्य रचना थी। निर्भीक उदार चेतना के कुछ अन्य अग्रणी नेपल्स मे थे। अर्थशास्त्री आटोनियो जेनोवेसी,[1] अर्थशास्त्री, साहित्यिक और कोषकार फर्डीनान्डो गालियानी[2], कानून के पडित फासिस्को मैरियो पैगानो[3] तथा गीटानो फिलाजेरी[4] के नाम उस दिशा मे विख्यात है। मिलान मे भी तब काफी ज्ञान-विज्ञान की साधना हुई। पिएट्रो वेरी[5] और सेजारे बेकारिया[6] वहा उस दल के सदस्य थे, जिनका पत्र 'इल काफे' (१७६४-६६) आर्थिक, सामाजिक और साहित्यिक सुधार का प्रबल पोषक बना। बेकारिया ने अपराध और दण्ड सम्बन्धी अपने ग्रथ मे यातना और प्राण-दण्ड का घोर विरोध किया।

साहित्यिक क्षेत्र मे क्लासिक-शैली का प्रबल विरोध हुआ, वैयक्तिक चेतना का विशेष विकास हुआ। सावेरियो बेटिनेली[7] ने वर्जिल सम्बन्धी पत्र (१७५७) और अग्रेज़ी पत्र (१७६६) तर्क, रुचि और स्पष्टता के नाम पर दाते और बाद के साहित्य पर प्रबल आघात किया। जिउसेपे बारेट्टी[8] ने अपने साहित्यिक पत्र 'ला फ्रुस्टा लेटेरारिया' (साहित्यिक कोडा—१७६३-६४) मे क्लासिक परपरा का विरोध करते हुए विदेशी साहित्यकारो तथा यथार्थ जीवन से अधिकाधिक परिचय का आन्दोलन शुरू किया। निस्सन्देह पुराण-पन्थी साहित्यिक परपरावादियो ने इस प्रवृत्ति का सबल प्रतिवाद किया। गास्परे गोज़ी[9] ने अपने 'वेनिसियन गजट' और 'वेनसियन ऑब्जर्वर' मे प्राचीनतावाद का समर्थन किया।

सोलहवी सदी से ही भाषा सम्बन्धी वाद-विवाद चल रहे थे, सत्रहवी-अट्ठारहवी सदियो मे भी वे इटली के साहित्यागन मे गूजते रहे। अब एक और भी समस्या आ प्रस्तुत हुई—विदेशी शब्दो की। अनेक भाषाओ—विशेषत फ्रेंच—के शब्द इटैलियन मे प्रभूत मात्रा मे प्रयुक्त होने लगे थे, जिनके पक्ष-विपक्ष दोनो मे प्रवल प्रक्रिया हुई। मेल्कयोरे सेजारोट्टी[10] के-से प्रगतिशील विचारको ने उनके उचित मात्रा मे अपनी भाषा मे प्रवेश का तो स्वागत किया, परन्तु वर्तमान इटैलियन का आधार टसकन ज़बान को ही माना (सेज़ारोट्टी का—'भाषा का दर्शन'—१७८५)। उस दिशा मे भी शुद्धिवादी आलोचको ने अपने गहरे रूढिवादी दृष्टिकोण का विकास किया। जियान फासेस्को गालीनी नापियोने[11] ने इटैलियन भाषा के गुण और प्रयोग सम्बन्धी ग्रन्थ (१७९१) लिखे, जो इस दृष्टिकोण को विशेपत प्रकट करते हैं।

---

१. Antonio Genovesi (१७१२-६९), २ Ferdinando Galiani (१७२८-८७); ३. Mario Pagano (१७४८-९९), ४. Gaetano Filangeri (१७५२-८८); ५ Pietro Verri (१७२८-९७), ६. Casare Beccaria (१७३८-९४), ७. Saverio Bettinelli (१७१८-१८०८), ८. Giuseppe Baretti (१७१९-८९); ९. Gaspare Gozzi (१७१३-८६), १० Melchiorre Cesarotti (१७३०-१८०८); ११. Gian Franeesco Galeani Napione (१८वी सदी)

शुद्ध साहित्य के सुधार मे तीन लेखक विशेष प्रयत्नशील थे—कार्लो गोल्डोनी,[१] जिउसेपे पारीनी[२] और विटोरियो आल्फियेरी[३]। इनमे कोई असाधारण प्रतिभा का व्यक्ति न था, परन्तु इनकी कृतियोकी आचार-चेतना और यथार्थ निरूपण निश्चय ही तब का अनजाना था। पिछले दोनो रचयिताओ की ट्रैजेडी और पहले की कॉमेडी ने तत्कालीन गिरी और निरन्तर गिरती जाती इटली की साहित्यगत सामाजिक आचार-व्यवस्था को प्राय. सभाल लिया। उनकी यह प्रवृत्ति राजनीतिक चेतना के अनुकूल ही थी। वरन् साहित्यिको की आचार-शिला निरन्तर धसती जा रही थी। उसमे अपवाद केवल सुन्दर हास्यकर कविताओ और लोक-नाटको के रचयिता कार्लो गोजी[४] तथा 'बोलने वाले पशु' के व्यग्यकार जी० बी० कास्टी[५] थे।

काव्य

फ्रांसीसी राज्य-क्रान्ति से स्वतत्रता और एकता की आशा हुई, परन्तु नेपोलियन की विजयो और स्वार्थ-नीति ने इटली को निराश कर दिया। अट्ठारहवी सदी मे उसके साहित्य पर विदेशी साहित्यो का प्रभूत प्रभाव पडा। उसमे अनेक अनुवाद भी प्रस्तुत हुए। बेर्टोला ने जैस्नर का अनुवाद किया, सेजारोट्टी ने ओसियन की कविताओ का और आलेसान्ड्रो वेरी[६] ने शेक्सपियर के 'हैमलेट' और 'ओथेलो' के। वेरी ने अपनी रोमन राते सम्बन्धी ग्रथ मे यग के 'नाइट थॉट्स' का अनुकरण किया। इपोलिटो पिन्डेमोन्टे[७] ने 'ओडिसी' का अनुवाद समाप्त कर टामस ग्रे की 'एलेजी' का अनुकरण अपनी अपूर्व कृति 'सेमैट्रीज' (१८०६) मे किया। भग्न मनोरथ अनेक देश-प्रेमी लेखको ने अपनी चेतना तत्कालीन कृतियो मे व्यक्त की। इनमे निरन्तर बदलती हुई राजनीनिक परिस्थितियो ने अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। इनमे प्रधान 'ला बास्विलियाना', 'प्रोमेटियो', 'ला माशेरोनियाना' और 'इल बार्डो डेला सेल्वा नेरा' का रचयिता विन्सेन्ज़ो मोन्टी[८] था, जिसका दृष्टिकोण सत्ता के अनुकूल कभी फ्रेचानुगत, कभी फ्रेच विरोधी, और कभी आस्ट्रिया-साम्राज्यवादी हो जाता था। सम्भवत. उसकी सुन्दरतम रचना 'इलियड' का अनुवाद थी। ऊगो फोस्कोलो[९] का कवित्व निर्भीक और देश-प्रेमपरक था, यद्यपि इसी कारण उसे अनेक बलिदान करने पडे। उसका निजी जीवन अत्यन्त सघर्षमय हो गया और उसे निर्वासित भी होना पडा।

जन-बोली-साहित्य इस काल पर्याप्त फूला-फला। उस क्षेत्र मे अनेक समर्थ कृती

---

१. Carlo Goldoni (१७०७-९३) २. Giuseppe Parini (१७२९-९९)
३. Vittorio Alfieri (१७४९-१८०३) ४. Carlo Gozzi (१७२०-१८०६)
५. G. B. Casti (१७२४-१८०३) ६. Alessandro Verri (१७४१-१८१६)
७. Ippolito Pindemonte (१७५३-१८२८) ८. Vincenzo Monti (१७५४-१८२८)
९. Ugo Foscolo (१७७८-१८२८)

हुए। उनमे प्रधान जियोवानी मेली[1], कार्लो पोर्टा[2] और पिएट्रो बुराट्टी[3] थे। इनमे पहला सिसीलियन मे लिखता था। पहले उसने अरकाडिया की परंपरा मे रचनाए की, फिर वह व्यग्यकार हो गया। उसकी रचनाए 'डोन किस्योटी' (डॉन क्विक्जोट) ससार का आरभ सबन्धी ग्रथ और लोक-जीवन का प्रतीक 'सारुडा' विख्यात हुई। मिलान का पोर्टा सबसे महान् यथार्थवादी कवियो मे है। जीवन से सीधा सम्बन्ध रखने वाली उसकी 'जियोवानिन बोगी' (१८१८), 'दि नेमिंग ऑफ दि चैप्लेन' (१८१९) आदि कविताए बेजोड है। बुराटी ने वेनिस की बोली मे रूमानी कविताए लिखी। उनमे विशेष प्रसिद्ध 'ल' ओमो' (मानव) हुई।

: ४ :

उन्नीसवीं सदी

उन्नीसवी सदी मे काफी नवीनता आई, यद्यपि उसका आरम्भ अट्ठारहवी सदी के ही साहित्यिको ने किया। वस्तुत उनमे से अनेक साहित्यिको के दृष्टिकोण मे तेजी से बदलती राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियो ने प्रभूत अन्तर डाल दिया था। उनमे से कुछ की कृतियो का उल्लेख अभी कर चुके है।

फ्रेंच राज्य-क्राति ने जो 'प्राचीन पद्धति' का राजनीति से लोप कर दिया, तो इटली के इतिहास और विज्ञान सम्बन्धी विचारो मे भी मूलभूत परिवर्तन हुए बिना न रह सका। वह काल विद्वानो की गम्भीर विपुल कृतियो से भरा है। पैडमौट के कार्लो बोटा[4] के अनेक इतिहास-ग्रथ तब प्रकाशित हुए। नेपल्स के दो इतिहासकारो—पिएट्रो कोलेटा[5] और विन्सेन्जो कुओको[6] ने नेपल्स के इतिहास पर अपनी कृतियो द्वारा प्रकाश डाला। कुओको ने तो 'प्लेटो इन इटली' नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा।

रोमाटिक-साहित्य

नेपोलियन के पतन और विएना की काग्रेस ने इटली को फिर अस्ट्रिया का गुलाम बना दिया और इटली मे फिर आधी सदी तक स्वतन्त्रता का सघर्ष चला। नेपोलियन के युद्धो ने जो यूरोप भर मे एक कुण्ठा उत्पन्न कर दी थी, उसको साहित्यिको की प्रतिक्रिया ने रोमाटिक भावसत्ता मे व्यक्त किया। रोमाटिक साहित्य-धारा यूरोप व्यापी थी। इटली को भी उसने आप्लावित किया। पलायनवाद उसकी रचनाओ मे भी विशद रूप से लक्षित हुआ। यथार्थ के ससार पर नितात मिथ्या कल्पना-मरीचिका की छाया पडी। क्लासिकल मर्यादा से वेष्टित साहित्यिक रचनाओ का स्थान स्वतन्त्र साहित्यिक रचनाओ ने लिया।

---

१. Giovanni Meli (१७४०-१८१५), २. Carlo Porta (१७७५-१८२१), ३. Pietro Buratti (१७७२-१८३२); ४. Carlo Botta (१७६६-१८३७); ५. Pietro Colletta (१७७०-१८३१), ६. Vincenzo Cuoco (१७७०-१८२३)

अट्ठारहवी सदी के सन्देहवादी बुद्धिवाद के स्थान पर मुक्त भाव-व्यजना प्रतिष्ठित हुई। परन्तु इटली का तत्कालीन साहित्य नकारात्मक नही हुआ। फ्रास इग्लैड और जर्मनी मे रोमाटिक कृतिकारो और जनता मे एक खाई पड गई थी। इटली का रोमाटिक साहित्य जीवन से इतना निर्वासित न था। वस्तुत· राजनीतिक स्वतन्त्रता और देश की एकता इटली के लेखको के उपास्य विषय बन गए, यद्यपि कुण्ठा और पलायन उनके गले भी अन्य यूरोपियन लेखको की ही भाति पडे।

रोमाटिक दृष्टिकोण की पहली चुनौती १८१६ मे जियोवानी बेरकेट[1] ने दी। उसने 'क्रिसोस्टोम को अर्ध गभीर पत्र' विषयक ग्रन्थ मे कला सबधी स्वतन्त्रता और लोक-साहित्य तथा राष्ट्रीयता की प्रेरणा सबधी रोमाटिक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया। बेरकेट भी अन्य समकालीन साहित्यिको की ही भाति राजनीतिक क्षेत्र मे भी उदारवादी था। उसने अपने निर्वासन काल मे ही पार्गा के शरणार्थी के सबध मे एक प्रसिद्ध कविता लिखी। इटली के रोमाटिक आन्दोलन का केन्द्र मिलान था। बेरकेट भी मिलान का ही था। उसके अतिरिक्त आलेसान्ड्रो मान्जोनी[2], फेडेरिको कान्फालोनिएरी[3], जियोवानी टोर्टी[4], सिल्विओ पेलिको[5] आदि थे। पेलिको प्रसिद्ध रोमाटिक जर्नल 'इल कोन्सिलियाटोरे' का सम्पादक और अत्यन्त लोकप्रिय ट्रैजेडी 'फ्रासिस्का दा रीमिनी' (१८१५) का रचयिता था। उसकी एक कृति—'ले' मी प्रिज्योनी'—ससार-व्यापी ख्याति प्राप्त कर चुकी है। उसमे उसने अपने अनवरत सघर्ष और यातनाओ का वर्णन किया है, जो उसे आस्ट्रियन साम्राज्यवाद के विरोध के कारण १८२० और १८३० के बीच के युगान्त कैद मे भुगतनी पडी थी। कालोपोर्टा और टोमासो ग्रोसी[6] भी उसी रोमाटिक चेतना के मिलानी कवि थे।

उपन्यास

रोमाटिक साहित्यकार ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र मे विशेष सफल हुए। मान्ज़ोनी की 'आई प्रोमेस्सी स्पोसी' (वाग्दत्ता) उस परपरा की पहली और उत्तम कृति है। फ्रासिस्को डोमेनिको गुएराज्ज़ी[7] का 'ला बटेलिया दि बेनेवैन्टो' ग्रोसी का 'मार्को विस्कौन्टी' मासिमो द' अज़ेलिओ[8] का 'एटोरे फिएरामीस्का', गेराज़ी का 'ल' अस्सेडियो दि फिरैंजे' (फ्लोरैंस का घेरा) सिजारेकान्टू[9] का 'मार्घेरिता पुस्टेरला' और ड'अजेलिओका

---

१. Giovanni Berchet (१७८३-१८६१); २. Alessandro Manzoni ३. Federico Confalonieri (१७८५-१८४६): ४. Giovanni Torti (१७७४-१८५२); ५. Silvio Pellico (१७८९-१८५४); ६ Tomasso Grossi (१७९१-१८५३); ७. Francesco Domenico Guerrazzi (१८०४-७३), ८. Massimo d'Azeglio (१७९८-१८६६), ९. Cesare Cantu (१८०४-९५)

'निकोलो दि' लापी' आदि उस दिशा के सुन्दर उपन्यास है। इन उपन्यासो ने राष्ट्रीय भावना का इटली मे पर्याप्त प्रचार किया।

ड्रामा . लिरिक

रोमाटिक ड्रामा उतना सफल न हो सका, जितना रोमाटिक उपन्यास। उस क्षेत्र के कृतिकारो ने अपनी सामग्री इटली के इतिहास और टेकनीक शेक्सपियर, गेटे, शीलर आदि से ली। रोमाटिक नाटको मे प्रधान निम्नलिखित थे—मान्ज़ोनी के 'इल कौन्टे दि कारमाग्नोला' और 'आडेल्की' और निकोलिनी[1] के 'आन्टोनिओ फोस्कारीनी', 'जियोवानी दा प्रोसिडा,' 'लोडोविको स्फोर्जा,' तथा 'आरनाल्डो दा ब्रेसिया'। लिरिक के क्षेत्र मे बडे तबके का कवि मान्ज़ोनी हुआ। उसका उल्लेख उपन्यास तथा नाटक के सबध मे किया जा चुका है। उसके लिरिक—'इन्नी साकरी' काफी प्रसिद्ध हो गए हैं। उस काल का दूसरा महान् लिरिक-कवि जियाकोमो लियोपार्डी[2] था। वह रोमाटिक सिद्धान्तो का विरोधी था, परन्तु शक्तिम भावावेगो से भरा उसका काव्य रोमाटिक चेतना मे ही अनुप्राणित हुआ।

भाषा सबधी जो विवाद सदियो से चल रहा था, वह १९वी सदी मे भी चलता रहा और अनेक भाषाशास्त्र के आचार्यो ने उसमे अपना योग दिया। इटैलिगन स्टैंडर्ड भाषा को उस विचार-विमर्श से पर्याप्त लाभ भी हुआ। इटली की राजनीतिक एकता के भी पूर्व इस भाषा सबधी एकता का वहा प्रचार हुआ। साहित्यिक इटैलियन मे टसकन बोली का प्रभुत्व साधारणत स्थापित हो गया। स्वय मान्जोनी का उसे पढने फ्लोरेंस जाना इस दिशा मे बडे महत्व का कार्य हुआ। जिन लोगो ने टसकन बोली का प्राधान्य अस्वीकार किया था, अब वे भी धीरे-धीरे उस स्थिति को अगीकार कर चले।

काव्य

१९वी सदी के मध्य राजनीतिक आन्दोलन की देश मे व्यापक सत्ता हुई। साहित्य मे भी देश के पुनर्जागरण (रिर्जोगीमेन्टो) का आन्दोलन चला। जिउस्टी[3] की कविताए प्रधानत राजनीतिक चेतना से ही अनुप्राणित थी। उसकी मानवतावादी जनसत्ता के आदर्शो से भरी कविता देश-प्रेम की प्रेरणा देकर देश के लडाको को जगाती रही। उसकी कविताओ मे व्यग्य का प्रचुर पुट था। उस काल का दूसरा महान् व्यग्यकार जिउसेपे जियो कीनो बेली[4] था, जिसने प्राय दो हजार सानेट लिखे। उसका व्यग्य जिउस्टी से भी अपनी चुस्ती और नुकीलेपन मे बढ गया। १९वी सदी के रोम का भ्रष्टाचार उसने अपनी कविताओ मे

१. G. B Niccolini (१७८२-१८६१), २. Giacomo Leopardi (१७९८-१८३७); ३ Giuseppe Giusti (१८०९-५०), ४. Giuseppe Gio Chino (१७९१-१८६३)

खोल कर रख दिया। अन्य राष्ट्रीय कवियो मे प्रधान ग्रब्रिएले रोसेट्टी[१], पिएट्रो जिग्रानोने[२], ऐन्जलो ब्रोफेरियो[३], ग्रालेसान्ड्रो पाएरिग्रो[४], लुइजी मर्कान्टीनी[५] और गोफ्रेडो मामेली[६] थे। इनमे से अनेक ने कैद, निर्वासन और मृत्यु को स्वतन्त्रता के अर्थ गले लगाया।

उस काल की सैद्धान्तिक रचनाओ मे अत्यन्त प्रभावशाली कृतिया कैथोलिक दार्शनिक विन्सेन्ज़ो जिग्रोबर्टी[७] की थी। उसने पोप के तत्वावधान मे व्यापक राष्ट्रीयता का स्वप्न देखा। जिग्रोबर्टी की रचनाए उस विचारधारा की प्रारम्भिक प्रतीक थी, जिनकी पराकाष्ठा फासिज्म मे हुई। सिजारे बाल्वो ने भी अपनी ऐतिहासिक कृतियो मे आस्ट्रिया के साम्राज्यवाद का विरोध किया। तत्कालीन राजनीति की प्रेरणा से युक्त व्यापक राष्ट्रीयता-भरी रचनाए जिउसेपे माज़िनी[८] और मासिमो द'अज़ेलिग्रो की थी। समसामयिक कार्यो का साहित्यिक प्रक्षेपण अधिकतर 'सस्मरणो' मे हुआ। द' अज़ेलिग्रो के 'सस्मरण' उसी दिशा मे प्रस्तुत हुए। उस काल का सबसे सुन्दर उपन्यास इपोलिटो निएवो[९] ने लिखा—'कोनफेसीओनी दे'उन ओट्टूग्राजेन्नेरिग्रो' (१८५७-५८) उपन्यास मनोवैज्ञानिक और सामाजिक था और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर खडा किया गया था।

रोमान्टिक : क्लासिकल

१८६० और ७० के बीच देश का राष्ट्रीय स्वप्न जो चरितार्थ हो गया, तो साहित्य की तत्कालीन सोद्देश्यता कुछ काल के लिए पूरी हो गई। उस क्रान्तिवादी युग की साहित्य-सम्बन्धी सैद्धातिक एकता अब अनावश्यक होने के कारण लुप्त हो गई। रोमाटिक और क्लासिकल की ओर फिर एक बार प्रत्यागमन हुआ। परन्तु हा, यूरोपियन साहित्य की यथार्थवादी धारा से भी इटली तब वचित न रह सका। रोमाटिक परपरा मे ही एमीलिग्रो प्रागा[१०] था। उसी परपरा मे जिउसेपे रोवानी[११] ने अपना ऐतिहासिक उपन्यास 'आई सैन्टो अन्नी' (सौ वर्ष) और आरिगो बोईटो[१२] ने अपने सुन्दरतम ओप्रा 'मेफिस्टफेले' और 'नेरोने' (१६०१) लिखे। तब के रोमाटिक कवि आलीर्डो आलर्डी[१३], जियोवानी प्राटी[१४] और जियाकोमो ज़ानेला[१५] थे। १८७० के बाद के साहित्यिको ने रोमाटिक

---

१. Gabriele Rossetti (१७८३-१८५६), २ Pietro Gianonne (१७६२-१८७२); ३ Angelo Brofferio (१८०२-६६), ४ Allessandro Poerio (१८०२-४८); ५. Luigi Mercantini (१८२१-७२), ६ Goffredo Mameli (१८२७-४६); ७. Vincenzo Gioberti (१८०१-५२), ८. Giuseppe Mazzini (१८०३-७२) ६ Ippolito Nievo (१८३२-६१), १० Emilio Praga (१८३६-७५); ११. Giuseppe Rovani (१८२८-७४); १२. Arrigo Boito (१८४२-१६१८); १३. Aleardo Aleardi (१८१२-७८); १४. Giovanni Prati (१८१४-८४); १५. Giocomo Zanella (१८२०-८८)

परपरा का विरोध करना शुरू किया। एक नये क्लासिकवाद की प्रेरणा ने कुछ लोगो को प्रोत्साहित किया और वे प्राचीन रोमन मॉडलो और आदर्शों से प्रभावित हुए। इनमे प्रधान जिओसुए कार्डूसी[१] था। उसने अपने मधुर काव्य मे रोमन कथानको और लैटिन छन्दो तक का प्रयोग किया। जियोवानी पास्कोली[२] प्राय सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से मुक्त था, यद्यपि जीवन के अन्तिमकाल मे वह भी कार्डूसी और उसके समानधर्मा माराडी[३], फरारी[४] आदि की चेतना से सजग हुआ।

यथार्थवाद

यथार्थवादी आदोलन का सिद्धातकार और प्रवर्त्तक लुइजी कापुआना[५] था, यद्यपि उसके उपन्यास नीरस तथा प्राणहीन थे। सबसे समर्थ यथार्थवादी उपन्यासकार सभवत: आल्फ्रेडो ओरियानी[६] था। उसका उपन्यास 'जैलेसी' (१८९४) उस दिशा मे प्रतीक हो गया है। स्थानीय यथार्थवादी निरूपण मे जिन उपन्यासकारो ने नाम कमाया, उनमे प्रधान सिसिली का जियोवानी वेरगा[७] था। उस क्षेत्र के अन्य उपन्यासकार रेनाटो फूसीनी, माटिल्डे सेराओ और ग्राजिआ डेलेडा थे। डेलेडा के सबल उपन्यास अधिकतर सार्डीनिया से सम्बन्ध रखते है। १९वी सदी के अन्त का प्रधान उपन्यासकार आनटोनिओ फोगाजारो था, जिसकी टेकनीक बडी व्यापक थी और जिसने विनोदात्मक वर्णन के साथ मानव सहानुभूति को अपनी प्रेरणा बनाया। चरित्र-चित्रण मे भी वह असामान्य कलाकार सिद्ध हुआ।

१९वी सदी के ड्रामा साहित्य मे रोमाटिक परपरा का विकास पिएट्रो कोसा[८] और जिरोलामो रोवेट्टा[९] ने किया। परन्तु शीघ्र ही फास नार्वे की यथार्थवादी चेतना सामाजिक और समस्या सम्बन्धी नाटक के रूप मे इटैलियन रगमच पर उतरी। पाओलो फेरारी[१०], जिसने पहले लोक-कॉमेडी और ऐतिहासिक सुखान्त नाटक लिखे, बाद मे अपने 'इल डुएलो' और 'टू लेडीज' लिए उसी रगमच पर उतरा। ज्यूसेपे जियाकोजे[११] ने अन्त मे इब्सन की परपरा मे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक नाटक 'एज़ फॉल दि लीव्ज़' आदि लिखे। रोबर्टो ब्राको[१२] ने यथार्थवादी नाटक भी लिखे और इब्सन तथा हाउप्टमन की

---

१ Giosue Carducci (१८३५-१९०७), २ Giovanni Pascoli (१८५५-१९१२); ३ Giovanni Marradi (१८५२ १९२०), ४. Severino Ferrari (१८५६-१९०५), ५ Luigi Capuana (१८३९-१९१५), ६. Alfredo Oriani (१८५२-१९०९), ७. Giovanni Verga (१८४०-१९२२), ८. Pietro Cossa (१८३०-८१), ९. Girolamo Rovetta (१८५४-१९१०), १०. Paolo Ferrari (१८२२-८९), ११. Giuseppe Giacose (१८४७-१९०६), १२. Roberto Bracco (ज० १८६२)

भाति मनोवैज्ञानिक नाटक भी। पिछली प्रेरणाओ मे लिखा, 'इल पिकोलोसाटो' उसी का परिचायक है।

: ५ :

बीसवीं सदी

बीसवी सदी का आरभ गाब्रिएले दानुन्जिओ द्वारा प्रभावित रहा। यौन और क्रूरता की घोर यथार्थवादी टेकनीक के साथ उसने नीत्शे की आपज्जनक प्रवृत्ति जोडी। अनेक उपन्यासकारो ने उसके नेतृत्व को मान उसके उपन्यासो का अनुकरण किया। वह फासिस्ट दर्शन की प्रेरणा की पृष्ठभूमि बन गया। जो उसके प्रभाव से वचित रह गए, उनमे प्रधान इटालो स्वेवो[1] (साहित्य नाम—एटोरे शिमट्स), ऊगो ओजेट्टी[2] ब्रूनो सीकोग्नानी[3] जिउसेपो आन्टोनिओ बोर्जेसे[4] और फडेरिको तोज़ी[5] थे। आल्फ्रेडो पान्ज़ीनी[6] ने अपने उपन्यासो और निबन्धो मे विनोद का पर्याप्त पुट दिया।

ड्रामा के क्षेत्र मे डारियो निकोडेमी[7] और सेम बेनेली[8] ने क्रमशः भावुक और ऐतिहासिक कृतिया प्रस्तुत की।

शीघ्र ही शक्तिवादी साहित्यिक सिद्धान्तो का भी इटली मे आरभ हुआ। एक नया दल इटली की शक्ति का स्वप्न देखने वाला मारिनेटी[9] की अध्यक्षता मे कला और साहित्य मे प्रतिष्ठित हुआ। आदोलन के रूप मे वह सिद्धान्त इटली मे व्यापक हो चला। उसी परपरा के लेखक आर्डेगो सोफिसी[10] आल्डो बालाजेशी[11] और जियोवानी पापीनी[12] थे। इनमे अन्तिम ने इटली मे बडी ख्याति कमाई और साहित्य मे स्ट्राबिन्स्की तथा पिकासो के यश से विभूषित हुआ। उसकी आत्मकथा, 'उन उओमो फिसिटो' काफी प्रसिद्ध हो गई है। प्राय उसी काल सेर्जिओ कोराजीनी[13] तथा गुइडो गोजानो के नेतृत्व मे क्रेपूस्कोलारी (गोधूलि के कवि) अथवा 'इन्टीमिस्टी' नामक आन्दोलन शुरू हुआ। उसमे कल्पना और व्यग्य विशेष चरितार्थ हुए। साधारण से साधारण स्थिति को लेकर उसे वैयक्तिक विशेषता से अनोखा बना देना, उसकी शैली का मूर्त रूप हुआ। उसमे विनोद और व्यग्य

---

१. Italo Svevo (१८६१-१९२८), २. Ugo Ojetti (ज० १८७१), ३ Bruno Cicognani (ज० १८७९); ४ Giuseppe Antonio Borgese (ज० १८८२), ५. Fredrico Tozzi (१८८३-१९२०), ६ Alfredo Panzini (१८६३-१९३९); ७ Dario Niccodemi (१८७७-१९३४); ८ Sem Benelli (ज० १८७७), ९. F T Marinetti (ज० १८८१), १०. Ardengo Soffici (ज० १८७९) ११. Aldo Balazzeschi (ज० १८८५), १२. Giovanni Papini (ज० १८८१), १३. Sergio Corazzini (१८८७-१९०७)

को विशेष प्रश्रय मिला। उसी परपरा मे लुइजी कियारेली[१] ने अपना 'ला मास्केरा इ इल बिसो' (नकाब और चेहरा) (१६१६) और रोसो दि सेन सेकोन्डो[२] ने 'मारिओनेत के पैशियाने' प्रस्तुत किया। पहला नाटक कॉमेडी था, दूसरा ट्रैजेडी। लुइजी पिरान्डेलो[3] ने व्यक्तित्व और वैयक्तिकता का विशेष दार्शनिक प्रतिनिधि अपने उपन्यासो और नाटको मे डाला।

१६२२ के फासिस्ट आदोलन ने दो परस्पर विरोधी साहित्यिक भावधाराओ का सृजन किया। एक तो उसके अनुकूल थी और दूसरी उसके प्रतिकूल। पहले ने मुसोलिनी, बाल्बो आदि के सम्बन्ध मे प्रशसात्मक साहित्य रचा, यद्यपि उसमे साहित्यिक गुरुता न आ सकी। उस दृष्टिकोण के आदर्शवादियो मे सभवत आल्बर्टो मोराविया[४] ही केवल अपवाद था। फासिज्म के विरोध मे भी सबल साहित्य रचा गया। ट्रिलूसा[५] की कविताए उस दिशा मे विशेष प्रसिद्ध हुई। फासिज्म विरोधी निर्वासितो मे सबसे महान् उपन्यासकार इग्नजिओ सिलोने[६] है। उसका उपनाम 'सेकोन्डो ट्राक्वीली' है। उसके दो उपन्यास—'फन्टामारा' (१६३३) और 'पेने इ विनो' (रोटी और शराब) (१६३७)—विशेष प्रसिद्ध है। 'फन्टामारा' का एकाध भारतीय भाषा मे अनुवाद भी हो गया है। द्वितीय महासमर के बाद की साहित्यिक चेतना शाति और सघर्ष की है, जिसमे नए हाथो द्वारा सर्वहारा सहानुभूति मे पगा साहित्य निरन्तर प्रस्तुत होता जा रहा है।

---

१. Luigi Chiarelli (ज० १८८६); २. R. M. Rosso di Sen Secondo (ज० १८८७), ३. Luigi Pirandello, ४ Alberto Pincherle (Moravia) (ज० १६०७), ५ Carlo Alberto Sallustri (Trilussa) (ज० १८७३); ६. Ignazio Silone (Secondo Tranquili) (ज० १६००)

५. इब्रानी (हिब्रू) साहित्य

: १ :
आरम्भ

इब्रानी, अथवा जिसे यूरोपियन 'हिब्रू' कहते है, आज केवल यहूदियो की भाषा रह गई है, परन्तु ई० पू० दसवी-नवी सदियो के अभिलेखो से पता चलता है कि पहले उसे मध्य पूर्व की अनेक सैमेटिक जातिया बोलती थी ।

इब्रानी साहित्य का आरभ भी अन्य प्राचीन साहित्यो की ही भाति पहले पद्यात्मक था, फिर गद्य लिखा गया और उन्हीकी भाति जो कुछ रचा गया, वह लिखा न जा सका, वरन् मौखिक रूप से ही पिता-पुत्र और गुरु-शिष्य की परपरा से सास्कृतिक अथवा धार्मिक दाय के रूप मे उत्तरोत्तर प्रवाहित होता रहा । उस प्राचीन काल की अनेक कृतियो के सकेत और उद्धरण 'बाइबिल' के 'ओल्ड टैस्टेमेण्ट' मे मिलते है । उन प्रारभिक रचनाओ मे गज़ब की ताजगी है । ये रचनाए अधिकतर युद्ध, सृष्टि अथवा जल सम्बन्धी है । उस दुनिया मे पानी का बडा अभाव था, जिससे कुए, नहर आदि द्वारा उसका प्रादुर्भाव बडे महत्व का माना जाता था ।

बाइबिल मे जो सर्प और ज्ञान-फल, कैन, एबल, नूह की नौका, बाबुल की मीनार, आइजेक का बलिदान, लाल सागर का सतरण आदि की कथाए दी हुई है, वस्तुत वे उसी प्राचीन इब्रानी लोक-साहित्य के उदाहरण है । प्रभु की युद्ध-गाथा वाले डेबोराह के गीत तो अपनी सादगी, ताजगी, भावुकता और शब्द-शालीनता मे प्राचीन साहित्य मे असाधारण है ।

बाइबिल का 'पैन्टाट्यूक' (पाच पोथियो का भाग) इब्रानी साहित्य की प्राचीनतम अग माना जाता है । इनको हज़रत मोज़िज (मूसा) की रचना बताया जाता है । सम्भव है इसका अधिकतर भाग उसी आधार से उठा हो, परन्तु नि सदेह इसके कुछ भाग औरो ने भी रचे ।

सम्भवतः ४४० ई० पू० मे एजरा और नेहेमिया आदि ने 'पैन्टाट्यूक' की पाच पोथियो की संहिता बनाई और उन्हे लिख डाला । मूसा का काल सोलहवी सदी ई० पू० के आसपास माना जाता है । उनके और अन्य नबियो के कलाम इन पोथियो मे सग्रहीत है। नबियो ने यहूदी कुलो को अपने निर्भीक उपदेशो से शक्तिमान् बनाने का प्रयत्न किया ।

उनके कबीलो को उन्होने एक राष्ट्र के रूप मे सगठित किया। इन नबियो की आवाज़ बुलद और जोशीली है, जिनका असर सुनने वालो पर तत्काल पडता होगा। उन्होने पहले पहल मनुष्य की जन्मजात स्वतन्त्रता, सार्वभौम शाति और शुद्ध न्याय के नारे बुलद किए, पहली बार मनुष्य को अनेक देवताओ की गुलामी से आजाद कर एक खुदा की आराधना की बुनियाद डाली। पीढी-दर-पीढी उनकी आवाज उनके जनो मे गूजती रही जो बाद मे 'पैन्टाट्यूक' मे एकत्र कर ली गई। यही पैन्टाट्यूक यहूदियो का शास्त्र, शासन अथवा कानन बना। मूसा का शासन ससार की दूसरी नियम-परपरा है, पहली परपरा बाबुली सम्राट् हम्मुराबी की है, जो ईसा से प्राय दो हजार वर्ष पहले उद्घोषित हुई। यही मूसा आदि के नियम-उपदेशो से भरा पैन्टाट्यूक बाइबिल का आधार बना और बाइबिल मे उस काल के गीत, कहावते, नैतिक कहानिया, पहेलिया, सभी कुछ सग्रहीत हुआ। नबियो की भाषा सरल थी। उनका जोर क्रातिकारी विचारो पर था, साहित्य की दृष्टि से भी उनकी उपमाओ मे शक्ति थी।

तुम्हारे पाप लाल है तो क्या हुआ वे निःसन्देह हिमश्वेत हो उठेंगे,
वे कितने भी रक्तिम हो, वे ऊन के समान सफेद होकर रहेगे।

इसाइयाह १, १८।

ई० पू० ११०० के लगभग इब्रानियो का कनानियो और फिलिस्तीनो से सघर्ष हुआ, जिससे उनकी सस्कृति को आघात पहुचा। हज़रत एलिजाह और उनके शिष्य एलिशा ने तत्काल ललकारा—तुम इस्राइल के प्रभु 'यहोवा' को छोड मूर्तियो के उपासक हो चले! अपनी आचार-पद्धति की रक्षा के लिए वे अपनी जनता को धिक्कार उठे। इसके कुछ ही काल बाद, ८५० ई० पू० के लगभग जजो और सैमुएल प्रथम तथा द्वितीय और पैन्टाट्यूक के कुछ भाग प्रस्तुत हुए। डेविड के गान (साग्ज़) अपने लिरिक सौन्दर्य, सुकुमारता और भावो की शालीनता मे अनुपम माने जाते है। उनका रचनाकाल वस्तुत नौ सौ वर्षो का काल-प्रसार है, जिसमे अनेक रचयिताओ ने भाग लिया। इनमे से कुछ नबियो द्वारा 'बेबीलोनिया की कैद' (छठी सदी ई० पू० मे) रचे गए।

'साग्ज ऑफ साग्ज' ग्रीक-काल (दूसरी सदी ईस्वी के लगभग) मे रचे गए। ये विवाह सम्बन्धी गीत है और इनपर ग्रीक शृगारिकता का प्रभाव स्पष्ट है।

ईसा पूर्व आठवी सदी का बाइबिल-साहित्य साहित्यिक दृष्टिकोण से भी महत्व का है। ओजस्विनी भाव-शृखला के अनुरूप ही वाणी सशक्त हो पुकार उठी, वाक्यावली परागयुक्त पुष्पित हुई। पद क्या थे, फौलादी चोट थे। शब्द-योजना सुनने वालो पर हथौडे की शक्ति-सी टूटी। वाचालता कम्पित, कठोर, करुण, शालीन प्रसगानुकूल होती गई।

यह आमोस[१], होसिया[२] और इसाइयाह[३] का रचनाकाल था। होसिया का-सा करुण शब्द-विन्यास तो साहित्य मे खोजे न मिलेगा।

सातवी सदी ई० पू० के उत्तरार्द्ध मे जेफानियाह[४] नाहूम[५] और हबक्कुक[६] ने अपनी वाणी दी और उसके बाद ही जेरेमियाह[७] ने। छठी सदी ई० पू० का आरभ इस्राइलियो के ह्रास का युग था। उनके नेताओ को धिक्कारती जेरेमियाह की आवाज दिगन्त मे गूज उठी। उसने इस्राइलियो के राजा जोसिया और उसके सलाहकारो को पुकार-पुकार धिक्कारा, जिससे उसे उनके अत्याचार का लक्ष्य बनना पडा। जीवन के अनेक वर्ष उसे कारागृह मे व्यतीत करने पडे। उसके सामने ही जेरूसलेम के मन्दिर और नगर का विध्वस हुआ और स्वय उसे पकडकर मिस्र ले जाया गया। बाइबिल का 'लेमैन्टेशन' अश उसीका रचा बताया जाता है, परन्तु अधिक प्रमाण इस निष्कर्ष के पक्ष मे मिलते है कि पेशेवर मरसिया रचने वालो ने उन्हे बेबीलोनिया की (६०० ई० पू०) या ईरानी (४०० ई० पू०) कैद के समय रचा।

बेबीलोनिया की कैद का नबी इजेकील[८] आवाज की बुलदी मे इतना महान् न था, जितना साहित्यिक कल्पना और वर्णन-शक्ति मे। उसके कुछ ही काल बाद प्राय ५०० ई० पू० गडरिया-जीवन की सुन्दर कविता 'रूथ' रची गई। भावावेगो से अनुप्राणित दार्शनिक कविता 'जॉब' उससे प्राय सौ वर्ष बाद की है। प्राय: साठ वर्ष बाद वह रोमाचक कहानी 'एस्थर' प्रस्तुत हुई, जिसमे राजा का पक्ष रानी के प्रति निवेदित हुआ और रानी का अपनी पीडित प्रजा के प्रति। यदि यह कहानी, जैसा कुछ विद्वानो का मत है, आस्टियोकस एपिफानिज द्वारा यहूदियो पर अत्याचार का रूपक है, तो इसकी रचना १६५ ई० पू० से पहले नही मानी जा सकती। पहली सदी ईस्वी के लगभग राब्बीस ने बाइबिल की सहिता प्रस्तुत की।

बाइबिल के 'ओल्ड टैस्टेमेण्ट' के अतिरिक्त यहूदियो की एक और प्राचीन धर्म-पुस्तक 'ताल्मुद' है। इसमे बाइबिल और उसके पैगम्बरो से सम्बन्धित अनेक कहानियां, गीत और इलहामी और गैर-इलहामी प्रसग है। इनको सम्भवत इतना पवित्र नही समझा गया, जितना बाइबिल के ज्ञान को। इससे ये पृथक् एकत्र किए गए। ताल्मुद के अनेक अश यहूदी प्रच्छन्न या बाह्य (बाइबिल से बाहर) नाम से जानते थे। इनका एक ग्रीक अनुवाद सिकदरिया के यहूदियो के लिए प्राय.२०० ई० पू० 'आपोक्रिफल' नाम से हुआ, जो काएरो

---

१. Amos (७७० ई० पू०); २ Hosea (७५० ई० पू०); ३. Isaiah (७०० ई० पू०), ४. Zephaniah (६३५ ई० पू०), ५. Nahum (६२५ ई० पू०), ६ Habakkuk (६२० ई० पू०), ७ Jeremiah (६२८-५८५ ई० पू०), ८. Ezekiel (६०० ई० पू०)

मे १८६७ मे मिला। इस ग्रथ मे अनेक स्थल बाद के जोडे हुए है, जो ३०० ई० पू० और १२० ई० के बीच रचे गए। ताल्मुद का मूल इब्रानी मे था। इसके अनेक प्रसग धार्मिक विश्वासो के विकास और पौराणिक कल्पना के अनुपम प्रतीक है। 'एनोक' की पोथी मे स्वर्ग-नरक का विशद चित्रण है। उसका इटैलियन महाकवि दाते पर गहरा प्रभाव पडा। 'दि विजन ऑफ बारूक' मे नदियो और बाढो तथा सात स्वर्गो की कल्पना मूर्तिमती हो उठी है। इन पोथियो मे सबसे अधिक प्रशस्य 'दि विजन आफ एज्रा' है, कल्पना और अपार्थिव दृश्यो से पूरित।

उस प्राचीन काल मे लिखे कुछ 'क्रॉनिकल' तो बाइबिल मे ही मिला लिए गए हैं, परन्तु कुछ अलग भी बने रहे। 'सेतेर ओलम रबा' इसी प्रकार का एक इतिहास है, जो सृष्टि से आरम्भ होकर तीसरी सदी ईस्वी मे खत्म होता है। इसके अतिरिक्त कुछ 'दि फास्ट्स' (व्रत) और 'दि जुबिलीज' (त्योहार) की पोथिया भी है। प्राय इसी काल मे बाइबिल की 'न्यू टैस्टेमेन्ट' भी इब्रानी और अरमई मे लिख डाली गई, परन्तु इसका इब्रानी साहित्य पर विशेष प्रभाव नही पडा।

: २ :

ताल्मुद-युग

एज्रा के समय से ही यहूदियो मे (शास्त्र, शासन, कानून) को पढने की रीति चल पडी थी। एज्रा ने उसे और बढाया। वह पैन्टाट्यूक के अश बाजार मे मडी के दिन और रविवार को पढकर सुनाया करता था, साथ ही उनपर टीका-टिप्पणी भी करता जाता था, शब्द-शब्द का रहस्य खोलता। एज्रा की इस रीति का लेखको और इस्राइली सभा के आलिमो ने भी अनुसरण किया। वे पैन्टाट्यूक के अशो की परिभाषा और व्याख्या करने लगे। इसी विश्लेषणात्मक व्याख्या और खोजपूर्ण रहस्योद्घाटन को 'मिदरश' कहते हैं। यह शब्द इब्रानी 'दरश' (खोजना) से बना है।

मिदरश दो प्रकार के थे। विधि के व्याख्यान 'हलाकोथ' कहलाते थे और आचार सबधी साहित्य को लोकप्रिय बनाने वाले 'हग्गडोथ'। मिदरश, इस्राइली-सभा और पश्चात्कालीन सन्हेड्रिन के व्यबहार (कानून) सबधी निर्णय, 'मौखिक' कानून कहलाते थे, क्योकि अभी वे लिखे नही गए थे। लिखी केवल बाइबिल गई थी, जो इसलिए लिखित अनुशासन कहलाती थी। बाद मे मिदरश भी अधिकतर एकत्र कर डाले गए। तीन प्रकार के मिदरश भाष्यो का पता चलता है। १—मोकिल्टा, २—सिफ्रा और ३—सिफ्रेह। इनमे से पहले रब्बी इशमाएल और रब्बी सीमोन बिन योहाई की कृति है। और दूसरे और तीसरे अधिकतर सेट रब्बी अकीबा और उसके शिष्यो की। रब्बी अकीबा ५० ईस्वी

मे जन्मा था और बार कोकबा के विद्रोह के समय १३६ मे शहीद हुआ। रब्बी इशमाएल पहली सदी ई० मे हुआ और रब्बी सीमोन दूसरी मे। भाष्यो और टीकाओ की सख्या निरन्तर बढती गई। उन्हे व्यवस्थापूर्वक सग्रहीत करने के अनेक प्रयत्न हुए। इनमे पहला प्रयत्न रब्बी अकीबा का ही था, जिसने हलाकोथ को विषयानुकूल विभक्त कर दिया।

कालान्तर मे सन्हेड्रिन का प्रधान रब्बी यहूदा हनसी[1] हुआ। इन भाष्यो और टीकाओ के साहित्य को उचित रूप से विभाजित करने का श्रेय उसीको है। उसने उसे लिपिबद्ध कराकर व्यवस्थित शास्त्र यहूदा का रूप दिया। यह पुनरुक्त साहित्य 'मिश्ना' कहलाता है। यहूदी कानून-व्यवस्था का यह प्रामाणिक साहित्य है। यहूदा ने एक समिति की सहायता से हलाकोथ की टीकाओ और भाष्यो को एकत्र कर उनका पाठ शुद्ध किया, फिर मिश्ना छह भागो मे बाट दिए गए। 'जिराएन' (कृषि), 'मोएद' (त्योहार), 'नशीन' (नारी), 'नजीकिन' (कानूने दीवानी और फौजदारी), 'कोदशिम' (यज्ञ-कुरबानिया), और 'तोहरोथ' (शौचाचार)—ये मिश्ना के छह भाग बने। फिर इनके भी अनुस्कन्ध बने, कुल तिरेसठ। मिश्ना का ही एक स्कन्ध 'अब्बोथ' कहलाता है, जिसमे मनीषियो के कलाम सग्रहीत है। मिश्ना की शैली बाइबिल की भाषा-शैली से भिन्न है। कानूनी पद्धति की स्पष्ट, एकार्थक, सक्षिप्त हलाकोथ के जो अश मिश्ना मे सग्रहीत न हो सके, वे 'बेरायथोथ', (बहिरग) कहलाए। कुछ नई सामग्री के सकलन से स्वतत्र मिश्ना भी प्रस्तुत हुए, उनमे से एक 'थो साफता' नाम से प्रसिद्ध है।

१३५ ई० मे बार कोकबा-विद्रोह के बाद फिलस्तीन के अनेक यहूदी विद्वान् भागकर बेबीलोनिया चले गए। वहा उन्होने सुरा, नेहाद्रिया और पुम्पेडिटा मे जो ज्ञान-पीठ स्थापित किए, उनकी प्रतिष्ठा फिलस्तीन के पीठो से भी बढ गई। इनमे सुरा के पीठ का प्रतिष्ठाता अब्बा अरेका[2] यहूदा हनसी का शिष्य था। इन पीठो मे कानून सबधी और धार्मिक साहित्य प्रभूत मात्रा मे प्रस्तुत हुआ। सुरा के अध्यक्ष रब्बी अशी[3] ने उसे एकत्र किया।

तात्मुद के निर्माण मे इन पीठो का बडा हाथ था। साल मे दो बार वहा विद्वानो का अखाड़ा जमता था, जिसे 'कल्ला' कहते थे।

कल्ला (अधिवेशन)

इन कल्ला (अधिवेशन) मे मिश्ना के अनुशासनो पर विचार होता था। कानून का कोई प्रसग पढ दिया जाता था और तब उसपर व्याख्या, वाद-विवाद चल पडते थे। पीछे वह बहस और व्याख्यान एकत्र कर लिए जाते थे। उनको 'गेमरा' कहते थे। मिश्ना और गेमरा का एकत्र सग्रह 'बेबीलोनियन तात्मुद' के नाम से प्रसिद्ध है। जेरुसेलेम का एक

---

१. Rabbi Yahuda Hanasi ; २ Abba Areka ; ३. Rabbi Ashi

'फिलिस्तीनी ताल्मुद' भी उपलब्ध है, पर उसका महत्व 'बेबीलोनियन ताल्मुद' की अपेक्षा कुछ नही है। गमरा की भाषा प्राय जन-बोली है, अरमई और इब्रानी का सम्मिश्रण, जिसमे ग्रीक, रोमन और फारसी शब्द भी जहा-तहा व्यवहृत हुए है। इसकी कोई विशेष शैली नही और न व्याकरण ही इसका विशेष शुद्ध है। ताल्मुद यहूदियो के लोक-साहित्य-इतिहास, रीति-रिवाज और ज्ञान का भडार है। उसने भी बाइबिल की ही भाति उनकी सस्कृति के निर्माण मे बडी सहायता की है।

'सेफेर येजिरा' की रचना भी इसी काल हुई। यह दार्शनिक विवेचन की एक कृति है और अब्राहम द्वारा रचित मानी जाती है। पिछले यहूदी तर्क-विन्यास की नीव इसी रचना पर खडी है।

पाचवी सदी ईस्वी मे सन्हेड्रिन की सभा का अन्त कर दिया गया। यहूदी ज्ञान और समाज की बागडोर अब बेबीलोनियन महात्माओ के हाथ मे आई, परन्तु, जिस अत्याचार से बाध्य होकर यहूदी नेताओ को फिलस्तीन से भागना पडा था, उसका सामना उन्हे बेबीलोनिया मे भी करना पडा। सुरा, नहाड्रिया और पुम्पेडिटा के पीठ टूट गए। नेता और यहूदी जनता भूमध्य सागर के तटवर्ती देशो की ओर भागी। वैसे १०वी सदी तक उन पीठो मे कुछ न कुछ काम होता रहा, पर उनकी किस्म बडी घटिया थी। अगली तीन शताब्दियो मे भी मौलिक साहित्य का सृजन विशेष नही हुआ।

नया युग सरक्षा का था। बाइबिल की अनेक प्रतिया ढूढ निकाली गई। जिससे मूल पाठ शुद्ध किया जा सके। अरमई-इब्रानी की खिचडी भाषा के स्थान पर शुद्ध इब्रानी की प्रतिष्ठा हुई, इब्रानी के पहले वैयाकरण और कोषकार प्रादुर्भूत हुए। महान् 'रेस्पोन्स'-साहित्य का निर्माण प्रारम्भ हुआ। यह युग उन सारे दर्शनो और विचारो के सघर्ष का था, जो यहूदी-आचार से उठे, ईसाई और इस्लाम धर्मो ने वितरित किए। आठवी सदी मे अनान बेन डेविड[१] ने 'करायट' सम्प्रदाय की नीव डाली। इसके अनुयायी ताल्मुद को प्रमाण न मानकर बाइबिल मात्र को प्रमाण मानते थे और उसीके अनुशासन पर अक्षरश चलते थे। उन्होने अपना साहित्य भी प्रचुर मात्रा मे रचा और बाइबिल तथा इब्रानी भाषा के प्रति अपनी निष्ठा से प्राचीन यहूदी-परपरा के नेताओ को करायटो ने अपनी समान प्रतिष्ठा करने को बाध्य किया।

'पैटनिम' (गीतकार) का उदय इस काल बडे महत्व का हुआ। इसने यहूदी कवियो की परपरा की बुनियाद डाल दी। जोज़े बेन जोजे[२] ने सातवी सदी मे अनेक कविताए लिखी, पर इब्रानी भाषा का पहला कवि जानाई[३] था। यह फिलस्तीन मे ६४० ई० मे जन्मा,

१ Anan Ben David (८वी सदी), २. Jose Ben Jose (७वी सदी) ३. Janai (ज० ६४०),

जिसने पहली बार कविता मे तुक का प्रयोग किया। उसके बाद उसीके फिलस्तीनी शिष्य एलिजेर-बे-रब्बी कलीर[1] ने प्रतिभा और चमत्कार से युक्त काव्य-रचना की। उसकी शैली तो बाइबिल की ही थी, परन्तु उसने अनेक नये शब्द और पद गढे और शैली के कुछ रूप भी स्थिर किये। अनेक पैटनिम पीढियो ने उसे काव्य के क्षेत्र मे अपना आदर्श माना।

: ३ :

अरबी-स्पेनी युग

अरबी-स्पेनी काल यहूदी सस्कृति और साहित्य का स्वर्ण-युग है। अरबी मेधा के प्रभाव से इब्रानी साहित्य मे एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। उसका मध्याह्न तो ग्यारहवी सदी मे हुआ परन्तु आरम्भ नवी सदी मे ही हो गया था।

इस नये युग का प्रारम्भ करने वाला साडिया बेन जोजेफ[2] था जो साडिया 'गेओन' नाम से विशेष विख्यात हुआ। अपने पचास वर्ष के अल्प आयु-विस्तार मे जितना इस एक व्यक्ति ने किया, उतना सदियो की सम्मिलित मेधा भी न कर सकी। उसकी प्रतिभा बहु-मुखी थी। इक्कीस वर्ष की आयु मे उसने इब्रानी का पहला कोष प्रस्तुत किया। यह एक प्रकार का तुकात कोष था, जिसके दो भाग थे—एक मे वर्ण-क्रम से शब्दार्थ दिया गया था, दूसरे मे शब्दान्त द्वारा शब्दो की तालिका थी। उसने व्याकरण पर भी बहुत लिखा। उसका प्रधान ग्रथ 'सिड्डूर' है, जिसमे साल भर की प्रार्थनाओ का सग्रह है। प्रार्थनाए कविताओ मे है और कविताए गजब की ताजगी लिए हुए है। उसने 'सेफेर येजिरा' पर अपनी अरबी टीका लिखकर भावी इब्रानी-वैयाकरणो को ऋणी बना दिया। उसने करा-यटो को उन्हीके तर्क से परास्त किया। उसने अरबी मे भाष्य के साथ बाइबिल का अनुवाद किया। परन्तु साडिया का यश उसके प्रमुख ग्रन्थ 'एमुनोथ वे-डे-ओथ' (विश्वास और सिद्धान्त) पर अवलम्बित है। इसका मूल पहले अरबी मे लिखा गया था। यहूदी अनुवृत्तो और भगवान् सबधी सिद्धान्तो पर दर्शन प्रस्तुत करने वाला पहला विद्वान साडिया था। उसके पहले आइजक इस्राइली[3] और डेविड बेन मेरवान[4] ने निस्सदेह दार्शनिक विवेचन किए थे, परतु उनका विवेचन प्लैटोनिक चिन्तन पर अवलबित था, यहूदी दर्शन से उनका कोई सम्पर्क न था। साडिया ने जिस यहूदी दार्शनिक शृखला की पहली कडी प्रस्तुत की, उसका विस्तार बडा था।

---

१ Eliezer Be Rabbi Kalir (ज० ६८०), २. Saadia Ben Joseph (Saadia Gaon) (८९२-९४२), ३ Isaac Israeli, ४. David Ben Merwan

इस काल के वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी मे ही लिखे गए। जैसे मध्य युगीय यूरोप की भाषा विविध राष्ट्रीयताओ के बावजूद लैटिन थी, वैसे ही इस युग मे सर्वत्र वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी मे ही लिखे गए। इसका एक कारण अरबो की राजसत्ता भी था। इब्रानी विद्वान भी अपनी काव्य-रचना तो इब्रानी मे ही करते थे, पर वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी मे लिखते थे। उनमे से अनेक नष्ट हो गए या सग्रहालयो मे आज भी दबे पडे है। कुछ अनूदित भी हुए और काफी ख्याति पाई। इन्हीमे जूडाह हलेवी[1] का 'कुसारी', ममोनाईड्ज[2] का विमूढ-पथ-प्रदर्शक विषयक ग्रन्थ और बह्या इब्न पकूडाह[3] का हृदय के कर्त्तव्य विषयक ग्रन्थ भी थे, जिनके आज तक अनेक भाषाओ मे अनुवाद हो चुके है। इनमे अन्तिम बडा लोकप्रिय हुआ। वह जज था और स्पेन मे ग्यारहवी या बारहवी सदी मे हुआ था। बह्या का दृष्टिकोण न्यो-प्लैटोनिक दर्शन से प्रभावित था। उसने बुद्धि-श्रुति और अनुवृत्त के आधार पर आचारपरक नैतिक दर्शन प्रस्तुत किया। सभाष्य इब्रानी मे अनूदित यह ग्रन्थ 'हृदय के कर्त्तव्य' सैकडो सस्करणो मे प्रकाशित हुआ। उसका अनुवाद अनेक भाषाओ मे हुआ। यहूदी तत्वेक्षण और दार्शनिक विचारो पर इस ग्रथ ने गहरा प्रभाव डाला।

कवि गेओन की मृत्यु के बाद जब बेबीलोनिया के यहूदी ज्ञान-पीठ बन्द कर दिए गए, तब अनेक इब्रानी और यहूदी पडित अफ्रीका, दक्षिणी यूरोप, फ्रास, जर्मनी आदि मे जा बसे और वही वे साहित्य, दशन आदि का मनन करते रहे। वह यूरोप का अन्धयुग था और क्रूसेडी ईसाइयो ने उनपर बडे जुल्म ढाए। फिर तो वे चुपचाप ताल्मुद और बाइबिल के अध्ययन मे जुट गए। उन्होने 'किनोथ' (मरसिया) और 'सेलिकोथ' (प्रायश्चित्त-प्रार्थना) किस्म की कविताए प्रभूत मात्रा मे रची। रबेनू जेरशोम[4] (दसवी सदी) फ्रास मे जन्मा। उसने धार्मिक कविताए बहुत लिखी और वह बहु-विवाह के विरुद्ध अपनी व्यवस्था के लिए विशेष प्रसिद्ध हुआ। रब्बी शेलोमो यिजहाकी[5] भी फ्रास (ट्रोये) मे ही १०४० मे जन्मा था और 'राशी' नाम से साधारणत विख्यात हुआ। उसका प्रधान ग्रन्थ ताल्मुद का भाष्य है, जिससे वह सहिता भावी विद्यार्थियो को प्राप्त हुई। उसकी बाइबिल पर सुन्दर सरल टीका तो प्रत्येक यहूदी-गृह की आवश्यकता और शृगार बन गई। बाइबिल के यूरोपियन अनुवादो मे भी ईसाई विद्वानो ने उससे सहायता ली। इटली के यहूदियो ने भी अपने साहित्य के निर्माण मे काफी योग दिया। वहा नवी सदी के शेफाथिया बर अमिटाई के जमाने से आज तक इब्रानी-साहित्य के निर्माण की वह धारा अविरल रूप से बहती रही है।

---

१. Judah Halevi (१०८८-११४०); २ Maimonides (Moses Ben Maimon) (११३५-१२०४); ३ Bahya Ibn Pakudah (११वी, १२वी सदी), ४. Rabenu Gershom, ५ Rabbi Shelomo Yishaki (Rashi) (ज० १०४०)

स्वर्ण-युग

परन्तु, इस काल की इब्रानी चेतना, साहित्य-निर्माण, वैज्ञानिक खोज का स्वर्ण-युग वास्तव मे स्पेन मे विकसित हुआ, जहा मूर-शासन की छाया मे यहूदियो को तपना न पडा। वहा वे ईसाई-कट्टरता से परे थे। इस्लाम को सदा मजहबी कट्टरता का कुवाच्य मिलता है, परन्तु ईसाइयो के जुल्म के बढते हुए मरु मे स्पेन के अरब-शासन ने यहूदियो के लिए हरी भूमि उपलब्ध कर सरक्षित कर दी और वहा इब्रानी काव्य, दर्शन और विज्ञान के पौधे लहलहा उठे।

साडिया के शिष्य और वैयाकरण डूनाश बेन लबराट[1] ने पहले पहल कविता मे मात्रिक छन्दो का उपयोग किया। परन्तु युग का पहला यथार्थ कवि सैमुअल इब्न नग्डिलाह[2] था। वह कोर्दोवा मे जन्मा था। अपने जीवन-काल मे उसका बडा मान हुआ। उसने तुक और मात्रा का उपयोग किया और सुन्दर प्रवाहमयी इब्रानी शैली मे लिखा। उसने बाइबिल के गीतो के अनुकरण मे प्रार्थनाओ की एक पुस्तक—'बेन थिलिम' (गीतो का पुत्र) लिखा। 'बेन मिश्ले' (कहावतो का बेटा) उसकी दूसरी कृति थी, और 'बेन कोहेलेथ' (धार्मिको का पुत्र) तीसरी। यह तीसरी रचना एक प्रकार का दार्शनिक स्वप्न था।

परन्तु, उस मध्य काल का सबसे महान् और मधुर कवि सोलोमान इब्न गाबिरोल[3] था। वह जन्मा मलागा मे और मरा वालेन्शिया मे। वह विपत्ति और सघर्ष का मारा था। इसीसे वह निराशावादी बन गया। इसीसे उसमे अत्यन्त वेदना और करुणा भी भर गई। उसकी कविता गम्भीर और मधुर है। उसकी प्रधान राजमुकुट विषयक कृति पाच भागो मे विभक्त है। वह स्तुति-प्रधान है, दार्शनिक और गभीर। उसका उपयोग पूजा मे भी होता है। उसकी सासारिक कविताओ मे बडी वेदना है। इसी प्रकार की करुण कविताए उसने अपने मित्र और सरक्षक येकूथील की स्मृति मे भी लिखी। उसने अरबी मे तीन दार्शनिक ग्रथ लिखे। उसका जीवन-स्रोत विषयक ग्रथ तो सदियों ईसाई दार्शनिक द्वारा रचित माना गया था। मध्यकालीन चर्च और राज्य के झगडो मे टॉमस ऐक्विनस ने उसकी इस पुस्तक के उद्धरण भी दिए। इसका अरबी मूल खोया गया, पर इब्रानी 'म'कोर हायिम' खूब चला। इसी प्रकार उसके 'मिब्बहर हा पेनीनिम' (मोतियो का चुनाव) को भी बडी ख्याति मिली।

इब्रानी साहित्य का सबसे बडा कवि जूडा हालेवी था। उसका जन्म तोलेडो (स्पेन) मे हुआ। वह अविराम गायक था। उसकी कविता मधुर और प्रसाद गुण से ओतप्रोत थी।

---

१. Dunash Ben Labarat (९२०-७०); २. Samuel Ibn Nagdilah (८३३-१०५५); ३. Solomon Ibn Gabirol (१०२०-५२)

वह भाषा और शैली का जादूगर था। उसने सभी विषयो पर कविता लिखी। प्रेम, शादी, मृत्यु, जन्म, प्रार्थना सभी पर उसकी अनेक कविताओ का उपयोग यहूदी पूजा मे होने लगा। उसे अपने प्राचीन देश से बडा प्रेम था। वह उसके राग मे मस्त होकर लिखता और गाता था। यहूदियो के पवित्र पर्वत जायन पर तो उनकी अनेक करुण कविताए है। इसीसे वह 'जायन का गायक' भी कहलाने लगा। उसने अरबी मे एक दार्शनिक ग्रन्थ भी लिखा, पर उसमे भी काव्य अधिक और दर्शन कम है। उसका इब्रानी अनुवाद बडा लोकप्रिय हुआ।

अब्राहाम इब्न एज्रा[1] इब्रानी भाषा का बडा गहरा विद्वान् हो गया है। उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वह ज्योतिष, विज्ञान, व्याकरण, दर्शन सभी का प्रकाण्ड पण्डित था। परन्तु इसके साथ ही वह कवि भी था, यद्यपि वह न तो हालेवी की भाति मधुर था, न इब्न गाबिरोल-सा गम्भीर। उसे भी जीवन मे बड़ा सघर्ष करना पडा पर वह गाबिरोल की भाति न निराश हुआ, न उसने अपने भाग्य को कोसा ही। हा, उसका मजाक उसने जरूर उडाया। इब्रानी भाषा पर उसका इतना अधिकार था कि शैली जैसी चाहता लिख लेता। उसकी भाषा मे इसीसे जब-तब कृत्रिमता भी आ जाती थी। उसने अनेक विषयो पर लिखा। गणित, दर्शन, विज्ञान, व्याकरण आदि। बाइबिल का वह पहला वैज्ञानिक आलोचक था। उसका बाइबिल और पैन्टाट्यूक पर भाष्य बडा लोकप्रिय हुआ। उसने ईसाई-यूरोप का भ्रमण किया और चूकि वहा लोग अरबी नही समझते थे, उसने अनेक ग्रन्थ इब्रानी मे ही लिखे। स्पेन-काल का ऐसा करने वाला वह पहला ग्रन्थकार था।

परन्तु इस युग की मेधा का चूडामणि मोजिज बेन मैमोन मैमोनाइड्ज था। उसका प्रताप उस युग के बडे से बडे कृतिकार पर भी हावी हुआ। वह बडा गहरा विद्वान था, और उसका मस्तिष्क तर्क-सिद्ध था। सर्वथा वैज्ञानिक विश्लेषण मे वह असाधारण चतुर था। युवावस्था मे ही बडे-बडे पण्डित कठिन दार्शनिक विवेचन मे उसके मत की अपेक्षा करने लगे थे। 'मिश्ने टोरा' लिखकर उसने ताल्मुद की अव्यवस्था को व्यवस्था दी। मिदरश, गमेरा आदि से सामग्री एकत्र कर उसने कानून की पद्धति दुरुस्त की। उसका प्रधान दार्शनिक ग्रन्थ विमूढो का पथ-प्रदर्शक था, जिसमे उसने अरिस्टॉटल के मत का पोषण कर उसे यहूदी दर्शन से अभिन्न सिद्ध किया था। इससे वह ईसाइयो मे भी लोकप्रिय हो गया। इन दोनो ग्रन्थो के कारण यहूदियो मे बडा मतभेद हुआ और सैद्धान्तिक वादविवाद पीढियो चलता रहा। उसके 'पथ-प्रदर्शक' के उसके जीवन-काल मे ही तीस-तीस इब्रानी अनुवाद हुए। उसपर तीस-तीस टीकाए प्रस्तुत हुईं। मोजिज

---

१. Abraham Ibn Ezra (१०९२-११६७)

की भाषा चुस्त और सरल थी।

मोजिज के अनेक विद्वान अनुयायी हुए। उनमे एक लेवी बेन जेरसन[1] था। उसने धर्म और दर्शन के उन प्रश्नो पर प्रकाश डाला, जिन्हे मोजिज ने अपूर्ण छोड दिया था। जुदाहबेन सालोमॉन अल-हरीजी[2] उस स्वर्ण-युग का अन्तिम महान कवि था। उसका प्रधान काव्य 'मकबरत-तहकीमोनी' व्यग्य है जिसमे अनेक अभिराम कविताओ का सकलन है। हरीजी बडा सुन्दर और मधुर कवि था। उसे मोजिज ने अपना 'पथ-प्रदर्शक' अनुवाद करने को आमन्त्रित किया। अनुवाद सुन्दर हुआ है। हरीजी इब्रानी भाषा के साहित्य की आय पर ही जीवित रहने वाला पहला कवि था।

गद्य की दिशा मे भी इस काल कुछ कार्य हुआ। तुडेला के बेनजामिन ने यात्रा और भूगोल पर एक पुस्तक लिखी और जोसेफ इब्न जबारा[3] ने 'सेफेर शआशुइम' (आनन्द-ग्रन्थ) लिखा।

इटली मे इब्रानी साहित्य

इटली का इब्रानी साहित्य स्पेनी साहित्यिको से प्रभावित था, यद्यपि उसके कवि और लेखक उतने ऊचे न उठ सके। यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि जहा स्पेनियो की भाषा कृत्रिम थी, वहा इनकी सरल और स्वाभाविक थी। इटली के कुछ प्रतिभाशाली कवियो और साहित्यिको के नाम निम्नलिखित है—अमिथाई, सेबाथाई दोनोलो[4] मैशूलूम बेन कालोनिमस,[5] कालोनिमस बेन मेशूलूम[6], अहीमाज बेन पालटील[7] बेन्जामिन डेली मन्सी,[8] सालोमन देल रोस्सी और उसका पुत्र इमानुएल।

इनमे सबसे महान इमानुएल बैन सोलोमॉन हा-रोमी[9] था। उसकी शैली बहुत-कुछ स्पेनियो के समान थी।

सम्भवत वह इटली के प्रसिद्ध महाकवि दाते का मित्र था। उसका एक काव्य 'हा-थोफेट बे-हा-एडेन' (नरक और स्वर्ग) दाते की अमर कृति 'डिवाईन कॉमेडी' से बहुत मिलता है। इमानुएल की कविता अधिकतर लौकिक है और उसमे विनोद की मात्रा प्रचुर है। कामिनी और मदिरा-सम्बन्धी उसकी कविताए युग के अनुकूल ही अश्लील है। वृद्धावस्था मे उसने अपनी सारी कविताओ, व्यग्यो और कहानियों का एकत्र सग्रह किया। इस सग्रह का नाम था 'माहबरोथ इमानुएल'। वह कहा करता था कि काव्य-

१ Levi Ben Gerson (Gersonides) (१२८८-१३४४), २ Judah Ben Solomon Al-Harizi (११६५-१२२५), ३. Joseph Ibn Zabara (ज ११५०), ४ Sabathai Donolo (९१३-८२), ५. Meshulam Ben Kalonymus (११ वीं सदी), ६. Kalonymus Ben Meshulam, ७ Ahimas Ben Paltiel (१०१७-६०), ८ Benjamin Delli Mansi (१३ वी सदी), ९. Immanuel Ben Solomon Ha-Romi (१२६५-१३३०)

सौन्दर्य मे वह अल-हरीजी को लाघ गया। उसका यह वक्तव्य बेजा न था। उसने बाइबिल पर एक टीका भी लिखी और एक इब्रानी व्याकरण भी।

तेरहवी सदी मे मोजिज दि लियोन[1] ने 'जोहार' (जाज्वल्यमान) नाम की एक रहस्यवादी पुस्तक लिखी। इसकी भाषा अरमई-इब्रानी थी और पहले इसे रब्बी सीमोन बर योहाई की कृति कहा गया, परन्तु शीघ्र ही पता चल गया कि इसका रचयिता कौन है। इसका रहस्यवाद 'सेफेर येजीरा' और 'बाहीर' पर अवलम्बित था। 'बाहीर' का लेखक बारहवी सदी का जन्मान्ध आइजक था। 'जोहार' का कुछ अश मिथ्या मसीहा अब्राहाम अबूलाफिया (बारहवी सदी), विद्वान, रहस्यवादी कवि, के सिद्धातो पर आधारित था। ईसाई दुनिया मे इस काल यहूदियो पर भयानक अत्याचार हो रहे थे और यह रहस्यवादी दृष्टिकोण उन्हे बडा मुआफिक पडा। कबालो का जो नया आन्दोलन चला वह जोहार से ही अनुप्राणित था। 'जोहार' इस नये सम्प्रदाय की बाइबिल बन गया। इस आन्दोलन मे गैर-यहूदी भी शामिल थे और इसने प्रभूत साहित्य प्रस्तुत किया। अनेक पीढियो तक इसका बोलबाला रहा और इस आन्दोलन ने अनेक भावी सम्प्रदायो की नीव डाली। पर हा, उसने स्पेन के उस स्वर्णयुग का अन्त भी कर दिया। 'जोहार' शब्द का भारतीय रूपान्तर 'जौहर' है। 'जौहर' राजपूतनियो के युद्ध-काल मे अग्नि-प्रवेश के रूप मे एक धर्मानुशासन बन गया।

धर्म के ढोगियो ने ईसाई शासन का स्पेन पर अधिकार होते ही वहा भी मारकाट मचाई और यहूदी विद्वानो को वहा से भी भागकर अन्यत्र शरण लेनी पडी। प्रोवेन्स मे यहूदियो की एक शाखा कुछ काल से प्रतिष्ठित थी, परन्तु उसका साहित्य कुछ विशिष्ट नही था। इसी प्रकार उत्तर जर्मनी की यहूदी शाखा ने भी विशेष प्रतिभा का साहित्य मे प्रदर्शन नही किया। वहा एक अच्छा कवि हुआ—येडाइया बेडेरसी[2] जिसने पुष्पित शैली मे कविता लिखी। इसीसे वह येडाइया ह-पेनीनी (मुक्तावत) भी कहलाता था। अपने दार्शनिक ग्रन्थ 'बेहिनाथ ओलम' से वह अधिक प्रसिद्ध हुआ। स्पेन मे मेशूलम दा पियरा[3] और विशेषत उसके पुत्र सोलोमन[4] ने मदिरा पर अच्छी कविता की। र्यूबेन बोनफेड[5] उस काल का प्रतिभाशाली कवि था। स्पेन मे ही इस गिरी दशा मे भी कुछ साहित्यिक कार्य हुआ। वही बार्सिलोना मे सबसे मौलिक यहूदी दार्शनिक हस्दई बेन अब्राहाम क्रेस्कास[6] का जन्म हुआ। वह अरिस्टॉटल सम्बन्धी मोजिज के दृष्टिकोण का विरोधी था। दोनो के दर्शन मे उसे कमजोरी दिखाई पडी और अरिस्टॉटल के प्रकृति के शाश्वतवाद का खण्डन कर उसने ईश्वर की अनन्तता का सिद्धात प्रतिपादित किया। उसके ग्रन्थ का

---

१. Moses de Leon (१२५०-१३०५), २ Yedaiah Bedersi (१२८०-१३४०), ३. Meshulam da Piera, ४ Solomon da Piera (१३४०-१४१७); ५. Reuben Bonfed (१३८०-१४५०); ६ Hasdai Ben Abraham Crescas (१३४०-१४१०)

नाम था 'ऑर अडोनाइ'। उसका उत्तर-कालीन दार्शनिको पर गहरा प्रभाव पडा। स्पिनोजा ने अपने दर्शन मे अब्राहाम के 'स्वतन्त्र चेतना' वाले सिद्धात का पोषण किया। अब्राहाम का ग्रथ 'ऑर अडोनाइ' (खुदा का नूर) अनेक भाषाओ मे अनूदित हुआ।

जोज़ेफ अल्बो[1] ने 'सेफ़ेर इक्कारिम' लिखकर काफी नाम कमाया। उसका ग्रन्थ बडा लोकप्रिय हुआ। इसमे मैमोनाइड्ज, जेरसोनाइड्ज, क्रेस्कास आदि के उद्धरण देकर यहूदियो को अपने धर्म और सस्कृति मे जमे रहने का प्रोत्साहन था। इसकी भाषा, इब्रानी, बडी सरल थी। १४९२ मे यहूदी स्पेन से अन्तत निकाल दिए गए। यह फर्डिनेन्ड और इजाबेला के ब्याह और कैस्टिल तथा आरगो के योग से बने नये ईसाई-स्पेन का परिणाम था। इन्ही निष्कासित यहूदियो मे डॉन आइज़क अब्रवानेल[2] और उसका जूडाह[3] भी थे। पिता की ख्याति उसके दार्शनिक ग्रन्थ प्रणय सम्बन्धी डायलॉग (इटैलियन मे लिखा) पर अवलम्बित है। उसने इब्रानी मे सुन्दर कविता भी की। पुत्र जुडा आइज़क बाइबिल का निष्णात पण्डित था। उसने उस धर्म ग्रन्थ पर अनेक टीकाए लिखी। उसके कई दार्शनिक ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं, परन्तु उनकी विशेष ख्याति नही।

आपत्ति काल

अगला युग, प्राय ढाई-तीन सौ वर्षों का, यहूदियो के लिए नितान्त भयानक सिद्ध हुआ। ईसाई मिशनरियो और राजकुलो ने उनपर सत्यानाशी प्रहार किए। एक देश से दूसरे देश मे वे अपने ग्रन्थ लिए सदियो मारे-मारे फिरते रहे। उन्हे कही आश्रय नही मिला। अनेक ने तो सभ्य जगत का आसरा छोड अपनी धार्मिक और साहित्यिक पूजी ले वनो और प्राकृतिक कन्दराओ मे पनाह ली। सभ्य मानव से बर्बर वातावरण उन्हे कही मुआफिक पडा और कम से कम उन्होने अपनी सास्कृतिक निधि की रक्षा कर ली। सदियो बाइबिल और ताल्मुद पर जो इन एकात पनाहो मे विचार किया गया तो प्रभूत मात्रा मे साहित्य प्रस्तुत हो गया, परन्तु नि सदेह उसमे न चिन्तन की गहराई थी न साहित्य का माधुर्य।

हा, इटली मे निश्चय ही कुछ साहित्यिक प्रेरणा रूपायित हुई क्योकि वहा, पोप की सल्तनत के बावजूद, यहूदियो पर जुल्म इतने न हुए जितने अन्यत्र। वहा भी उन्हे विशेष अधिकार तो प्राप्त न थे, परन्तु जिया जा सकता था और जीवन की दयनीय स्थिति मे आखिर वेदना की चीत्कार मे भी साहित्य का स्वर बसता ही है। कुछ प्रतिभाशाली कवियो और ग्रथकारो के नाम यहा दिए जाते है—बेन्जामिन बेन अब्राहाम अनवी (मन्सी) (इमानुएल का समकालीन), मोज़िज़ रिएटी,[4] जैकब और उसका भाई, इमानुएल फ्रासिस

१. Joseph Albo (१३८०-१४४०); २ Don Isaac Abrvanel; ३ Judah Abrvanel; ४. Moses Rieti (१३९३-१४६०)

(दार्शनिक और कवि—ऐतिहासिक काव्य 'जेवी मुदाह' मृगयायित मृग) ; इमानुएल[1] दोनो मे अधिक प्रतिभावान था; मोजिज जाकूटो[2] जन्मा एम्स्टर्डम मे, पर रहता इटली मे था; उसमे अद्भुत कवित्व शक्ति थी। उसीने इब्रानी मे पहले पहल ड्रामा लिखा। लियो मॉडेना[3] की प्रतिभा भी बहुमुखी थी। इटली मे इब्रानी का भी पुनरुत्कर्ष हुआ।

: ४ :

वर्तमान युग

इब्रानी साहित्य का वर्तमान युग मोजिज़ हायिम लुज्ज़ाट्टो[4] से शुरू होता है। लुज्जाट्टो ने इब्रानी काव्य को स्पेनी युग की पुष्पित शैली से मुक्त कर दिया। १७ वर्ष की आयु मे उसने अलकार पर ग्रन्थ लिखकर सहज शैली का गुणगान किया और अपने ही उद्धरणो द्वारा काव्य मे 'सत्य और सुन्दर' की प्रतिष्ठा की। चालीस वर्ष के अपने छोटे जीवन मे उसने तर्क, आचार,अलकार आदि पर तीस पुस्तके लिखी जिनमे प्रत्येक की शैली सरल और प्राजल थी।

लुज्जाट्टो प्रधानत कवि था। बाइबिल के गीतो के आधार पर उसने गीतो का एक सग्रह लिखा। इब्रानी मे उसके तीन सुन्दर नाटक उपलब्ध हैं—'मआसे शिमशोन' (सैमसन और डेलीलाह), 'मिगडाल ओज' (बात्तिटास्टा गुआरीनी के 'पास्टोर फीदो' के आधार पर) और रूपक 'ल-येशरिम थेहिल्लाह' (धार्मिको की प्रशसा)। इन सब काव्य और नाट्य कृतियो मे गजब की ताज़गी थी। भावुकता और प्रेम की तरल धारा इनमे लुज्ज़ाट्टो ने बहा दी। उसका प्रकृति-वर्णन भी बड़ा आकर्षक था। उसके शिष्य डेविड फ्राको मेन्डिज ने भी एक रूपक 'जेमुल अथालियाह' लिखा।

बौद्धिक धाराओ ने सर्वत्र अपना प्रभाव डाला। 'हस्कला' (प्रकाश) नाम का एक आन्दोलन चला। इसका केन्द्र 'मिअस्फिम' नाम का जर्नल था, जिसका आरम्भ प्रगति-चेता यहूदी युवको ने किया था। इसके आरम्भ करने वालो मे ख्यातिलब्ध दार्शनिक मोज़िज़ मेन्डेलस्सोन[5] भी था। उसने स्वय तो इब्रानी मे बहुत कम लिखा, परन्तु उसकी संरक्षा से आन्दोलन को बडा लाभ हुआ।

मेन्डेलस्सोन ने बाइबिल का जर्मन मे अनुवाद किया, जिसके साथ इब्रानी मे एक अर्थयुक्त टिप्पणी भी थी। यह इसी दल का कार्य था। मिअस्फिम ने प्राय २७ वर्ष

---

१. Immanuel (१६१८-१७०३); २. Moses Zacuto (१६२५-९७); ३. Leo Modena; ४. Moses Hayım Luzzatto (१७०७-४७), ५. Moses Mendelssohn (१७२९-८६)

यहूदी लौकिक-सास्कृतिक दृष्टिकोण का प्रचार किया। यहूदियो मे उसने इब्रानी का विशेष शौक भी पैदा किया। इस जर्नल मे अधिकतर लिखने वाले थे—फ्राको मेन्डीज, आइज़क साटोनोव[1], जे० एल० बेन्ज़ेब[2], जोजेफ एफ्राटी[3]। उसका नाटक 'मेलुकाट सौल' विख्यात है, इटली का सैमुएल रोमानेली[4], एफ्राएम लुज्ज़ाटो[5] और मेन्डेलस्सोन के शिष्यो मे सबसे प्रभावशाली नैफटाली हार्टविग वेस्सेली[6] जिसके पैम्फलेट 'डिब्रइ शालोम वो-एमेथ' (शाति और सत्य के शब्द) ने यहूदियो मे पार्थिव सस्कृति-प्रचार मे बडा योग दिया। वेस्सेली का यश उसके प्रसिद्ध वीर काव्य 'शिरेई टिफेरेथ' पर अवलम्बित है। उसने अनेक कवियो को प्रभावित किया।

आस्ट्रिया और गैलीशिया मे भी हस्काला-आन्दोलन बढ चला। गैलीशिया और रूस मे तब हस्सीडी प्रगतिशील यहूदी आन्दोलन चल रहा था। इसका उद्देश्य यहूदियो को एकातवासी यहूदियो की बताई हुई विधियो से मुक्त करना था। हस्सीडियो ने सीधी प्रभु की अर्चना स्वीकार की। इस आदोलन मे कवियो का प्रचुर योग था। इससे प्रभूत लोक-गीत, सगीत, कहानिया आदि रचे गए। परतु इस आदोलन मे भी धीरे-धीरे काबाल की ही भाति अधविश्वास आदि घुस गए। लेखको ने उसे शुद्ध करने का प्रचुर प्रयास किया।

आइज़क पर्ल[7] ने अपने 'मेगालेह ट्मिरिन' (भेद खोलने वाला) मे उस आन्दोलन पर गहरा व्यग्य किया। उसने खेती का विशेष गुण गाया। हस्सीजिज्म पर गहरी व्यग्य-चोट करने वाला आइज़क एरटर[8] था। गैलीशिया मे ही यहूदी-इतिहास लिखने के भी प्रयत्न हुए। सालोमान जुडा रापापोर्ट[9] के इस दिशा मे प्रयत्न सराहनीय थे। उसके दिखाए मार्ग से ग्रीट्ज और जुज ने अनुसधान किए। इसी प्रकार यहूदी-इतिहास के क्षेत्र मे नहमान क्रोकमाल[10] और उसके पुत्र अब्राहाम[11] ने भी प्रयत्न किए। जकारिया फ्राकेल[12] और अब्राहाम जीजर[13] ने नये मार्गो का अनुसन्धान किया, परन्तु उन्होने अपने ग्रन्थ जर्मन मे लिखे। इन सब विद्वानो मे प्रधान इटैलियन सैमुअल डेविड लुज्ज़ाटो[14] था, जिसने विज्ञान और धर्म की एकता की असम्भवता

---

१. Isaac Satonov (१७३२-१८०४), २. J. L Ben-Zeb (१७६४-१८११); ३. Joseph Ephratı (१७७०-१८०४); ४. Samuel Romanellı (१७५७-१८१४); ५. Ephraım Luzzatto (१७२६-९२), ६ Naphtalı Hartwıg Wessely (१७२५-१८०५), ७ Isaac Perl (१७७३-१८३९); ८ Isaac Erter (१७९१-१८५१); ९. Salomon Judah Rappaport (१७९०-१८६७); १० Nahman Krochmal (१७८५-१८४०), ११. Abraham Krochmal (१८१७-८८); १२ Zecharıah Frankel (१८०१-७५); १३ Abraham Geıger (१८१०-७४); १४ Samuel Davıd Luzzatto (१८००-६५)

प्रतिष्ठित करते हुए मैमोनाइड्ज और स्पिनोजा का खण्डन किया। उसने पुरातत्व, भाषाशास्त्र, दर्शन, इतिहास सभी दिशाओ मे गम्भीर कार्य किए और ग्रन्थ लिखे। उसने कविताओ का भी एक सग्रह छापा, परन्तु इस दिशा मे इसीके कुल के राकेल मोरपुरगो[१] की प्रतिभा कही अधिक सम्पन्न थी। इस काल के अधिकतर लेखक 'बिकुरेइ ह-इत्तिम' और 'केरेम हेमेड' मे लिखा करते थे। दोनो पत्रिकाए 'मिश्रासेफ' का ही प्रसार थी। सॉलोमॉन लेविसोन[२] ने इसी काल अपनी कविताए लिखी और मीएर लिटेरिस[३] ने अनेक बैलेडो और महाकाव्यो का अनुवाद किया। 'योनाह् होमाइयाह्' नामक उसका प्रसिद्ध गीत जेरूसेलेम के पवित्र यहूदी पर्वत जायन के सम्बन्ध मे है।

रूस मे भी अट्ठारहवी सदी मे कुछ यहूदी प्रगतिशील लेखक पैदा हो गए थे। मेनाहेन लेपिन[४], एलिजाह्[५], आइजक बेयर लेविन्सान[६] इन्हीमे थे। इनमे से पिछले ने हस्कला-आन्दोलन का रूस मे अच्छा प्रचार किया। अब्राहाम डोव लेबेन्सान[७] प्रतिभाशाली कवि था, जिसके पुत्र मिका जोजेफ लेबेन्सान[८] ने पिता की अन्तर्मुखी प्रवृत्ति से ऊपर उठ वर्तमान को पकडा। उसकी कविताओ मे बडा राग, बडी भावुकता थी। उसकी कविताए इब्रानी साहित्य मे चोटी की मानी जाती है। उसने शिलर का अनुवाद किया, छह ऐतिहासिक काव्य लिखे और लिरिक कविताए लिखी, मधुर और अभिराम।

इस काल का सबसे प्रभावशाली कवि जूडाह लोएब गॉर्डन[९] था। उसने अपनी कविताओ मे एकातवासी यहूदियो पर गहरा व्यग्य किया। उसकी व्यग्य-कृति 'बे-मेजूलोथ याम' (समुद्र की गहराइयो मे) गजब की रचना है। इसमे स्पेन के मारे यहूदियो का जिक्र है। सुन्दरी जहाज के कप्तान से प्रण करती है कि यदि वह यहूदियो को सही-सलामत तट पर उतार दे तो वह उसे आत्मसमर्पण कर देगी। फिर उनके तट पर आ जाने पर वह अपनी मा के साथ समुद्र मे डूब मरती है। गॉर्डन की प्रधान रचना 'कोजोह् शेल यूड' है, जिसमे उस तरुणी की कथा है, जो सभी नैतिक उसूलो के खिलाफ ताल्मुद के एक विद्यार्थी से विवाहित है और इसी कारण सारे अभाग्य झेलती है।

अब्राहाम मापू[१०] ने इब्रानी उपन्यास का आरम्भ किया। उसका उपन्यास 'अहाबाथ

१- Rachel Morpurgo (१७९०-१८७१), २. Solomon Levisohn (१७८९-१८२१), ३ Meir Litteris (१८००-७१), ४. Menahen Lepin (१७४९-१८२६); ५. Elijah, Gaon of Wilna (१७२०-९७); ६ Isaac Bear Levinsohn (१७८८-१८६०), ७ Abraham-Dov Lebensohn (१७९४-१८७८), ८. Micah Joseph Lebensohn (१८२८-५२); ९ Judah Loeb Gordon (१८३०-९२), १०. Abraham Mapu (१८०८-६७)

जायन'(जायन से प्रेम) प्राचीन इतिहास के पृष्ठ खोलता है। उसी बाइबिल-युग को उसका उपन्यास 'अश्माथ शोमरोन' भी अकित करता है। इस उपन्यास का अर्थ है, 'समरिया का पाप'। अपने 'आयित जाबुआ' मे उसने लिथुआनिया के एक छोटे नगर का शुष्क जीवन अकित करते हुए एकातवासियो के रूढिगत आचरणो पर आघात किया।

उन्नीसवी सदी के इब्रानी साहित्य मे एक नई रवानी आई। १८५७ मे एलिजेर सिल्बरमान[1] ने 'ह-मगीद' का प्रकाशन आरम्भ किया और तीन वर्ष बाद इतिहासकार फिन ने 'ह-कारमेल' निकाला। इसी प्रकार 'मेलिट्ज' और 'ह-जेफीरा' का प्रकाशन भी शुरू हुआ।

कलमन शुलमन[2] ने अनेक ग्रन्थ लिखे, जिनमे ससार का इतिहास उल्लेखनीय है। अब्राहाम ए० कोवनेर[3] और जैकब पपेर्ना[4] ने समालोचना शास्त्र की नीव डाली। मध्य उन्नीसवी सदी का विशेष प्रयास दुनियावी ज्ञान के प्रचार मे हुआ। ब्राडस्टाडटर[5] ने अपनी कहानियो मे हस्सीदियो का मजाक उडाया। र्‌यूबेन अशर ब्रोडेस[6] ने 'हा डाथ वेडा हायिम' (धर्म और जीवन) नामक उपन्यास लिखा और अब्रामोविट्स[7] ने सुन्दर कहानिया लिखी, जो इब्रानी मे अपनी शैली के लिए विख्यात हुई। १८६६ मे विल्ना के यहूदी समाज का अकन करने वाला उसका उपन्यास 'हा अब्बोथ वे हा बानिम' (पिता और पुत्र) निकला। पेरेज़ स्मोलेन्स्किन[8] ने साहित्य की धारा तब एक दूसरी दिशा की ओर फेर दी, सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ, समवेदना-युक्त यहूदी-सस्कृति की अलोचना की ओर। उसने विएना मे 'हा-शाहार' नामक पत्र निकाला, जिसमे सालो नये विचार छपते रहे। उसने बहुत लिखा और सर्वत्र यहूदी प्राचीन सस्कृति की रक्षा का प्रचार किया। उसके छह उपन्यास उपलब्ध है। उसका सुन्दरतम उपन्यास 'केबूराट हामोर' है, जिसमे व्यक्ति अपनी परिस्थितियो से सघर्ष करता है। उसके 'जीवन पथ का पथिक' ज़ार के जेल से भागकर लन्दन मे शरण लेता है। स्मोलेन्स्किन ने अनेक साहित्यकारों का उत्साह-वर्द्धन किया। उनमे से कुछ थे— पहला समाजवादी पत्र 'हा-एमेथ' निकालने वाला फ्रीमन-लीबरमन[9], लेविन[10], सोलोमान मान्डेल्कर्न[11], एलिजेर शुलमन[12] जिसने हेइन और बर्न के जीवन-

---

१ Eliezer Silberman; २. Kalman Shulman (१८१९-९९); ३. Abraham A. Kovner (१८४२-१९०९); ४. Jacob Paperna (१८४०-१९१९), ५. M. D. Brandstadter (१८४४-१९२८), ६ Reuben Asher Brodes, ७ S J. Abramowitz (१८३६-१९१८), ८. Perez Smolenskin (१८४०-८५); ९. Freiman Lieberman (१८४५-८०); १०. J L. Levin (१८४५-१९२५), ११. Solomon Mandelkern (१८५५-१९०२); १२ Eliezer Shulman (१८३७-१९०२)

चरित लिखे, मोरडेकाई बेन हिलेर हाक्हेन[1], डा० सोलोमन रुबिन[2], डेविड कहना[3] और इलियाजर बेन यहूदा[4] जिसने फिलिस्तीन मे प्रचार कार्य किया और इब्रानी कोष प्रस्तुत किया। यहूदी-फिलिस्तीनी राष्ट्रीयता को डेविड गॉर्डन[5] और पाइन्स[6] ने भी सहारा दिया। यह वह जमाना था जब रूस मे भी यहूदियो पर अत्याचार होने लगे थे और उनका फिलिस्तीन—अपने मूल देश—लौटने का आन्दोलन सर्वत्र जोर पकड चला। जायनिस्ट आन्दोलन की नई आशाओ से यहूदियो का हृदय भर चला।

इस काल इस राष्ट्रीय भावना और आशा से प्रेरित अनेक कवियो ने रचनाए की। इनमे से कुछ निम्नलिखित थे

मधुर भावुक कवि शपिरो[7], रूस का डोलिट्सकी[8], यहूदी राष्ट्रीय गान, 'हतिक्वा', का लेखक गैलीशिया का इम्बेर[9]। दोनो न्यूयार्क मे रहते थे, वही मरे, और अभिराम कवि मानेह[10]। १८८६ मे कान्तोर ने पहला यहूदी दैनिक पत्र 'हा-योम' स्थापित किया। प्रसिद्ध डेविड फ्रिशमन[11] उसका सहकारी था जिसने इब्रानी साहित्य मे यूरोपियन साहित्य की आत्मा का प्रवेश कराया। वह जायनिस्ट आन्दोलन के विरुद्ध था, ससारवादी था और डरता था कि यहूदियो की यह राष्ट्रवदिता कही जातीय अहम्मन्यता का रूप धारण न कर ले। उसने काफी लिखा। भाषा-शैली पर उसका अधिकार था और उसकी रचनाओ मे सुरुचि अमित मात्रा मे थी।

फ्रिशमान की ही परपरा मे इब्रानी का अद्भुत कहानीकार और कवि आइजक लोएब पेरेज़[12] हुआ। वह यिद्दिश उपन्यासो का जनक था। उसने हस्सीदी साहित्य से काफी सामग्री ली और अपने लघु उपन्यासो मे इस योग्यता से जनसाधारण और बौद्धिक प्रयासियो का अकन किया कि उसके पाठक स्तब्ध रह गए, मुग्ध हो गए। कवि तो वह असाधारण था ही, उसके गद्य मे भी सम्मोहक शैली का जादू उतर आया। उसकी रचनाए सौन्दर्य, सत्य, भावुकता, प्रेरणा, सुरुचि और अनुभूति की खान है। उसने यहूदियो के सघर्ष का मार्मिक और लोमहर्षक चित्र खीचा है।

इस युग मे प्राचीन और अर्वाचीन, यूरोपियन और यहूदी सस्कृतियो के बीच जो जग छिडा, उसमे अनेक साहित्यिको और चिन्तको ने भाग लिया। उनमे थे—

१ Mordecai Ben Hiller Hakohen, २. Dr. Solomon Rubin (१८२३–१९१०), ३. David Kahana (१८३८-१९१५), ४. Eliazar Ben Yahuda (१८५७-१९२२); ५. David Gordon (१८२६-८६), ६ I M Pines (१८४३–१९१३); ७ K. A Shapiro (१८४१-१९००), ८. M. Dolitzki (१८५६–१९३१), ९. N H Imber (१८५६-१९१०), १० M. Z Maneh (१८००-८७), ११. David Fishman (१८६०-१९२२), १२ Isaac Loeb Perez (१८५१-१९१५)

लिलिएन्ब्लूम[१], हुरविट्स[२] और ज़ीब याबेज[३]। इसी काल आइजक हिर्श वीस[४], रॉबिनोविट्स[५], हायिम ब्रोडी[६], इस्राइल डेविडसन[७] और सिमियन बैरेन्फेल्ड[८] आदि ने भी लिखा। इसके प्राचीन और नवीन के समन्वय की बात भी उठी और ब्रोड्स ने उसी दृष्टिकोण से अपना उपन्यास 'श्टेई हाक्जोवोथ' (दो छोर) लिखा। रूबेन ब्रेनिन[९] समालोचक और सुन्दर कहानीकार था तथा बेन अविग्डोर[१०] ने प्राचीन और नवीन मे एक प्रकार का समझौता करा ही दिया। अविग्डोर प्रसिद्ध प्रकाशक था जिसने अनेक प्रधान साहित्यिको की कृतिया छापी। १९वी सदी के अन्त तक इब्रानी मे अनेक प्रबल साहित्यकार तथा मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र के प्रकाशक हो गए थे।

१८१७ मे हेर्ज़ल[११] ने जायनिस्ट काग्रेस बुलाई, जिसमे अनेक विद्वान् और साहित्यकार शामिल हुए थे। हेर्ज़ल का प्रधान प्रतिद्वन्द्वी अहद हाआम[१२] (अशर गिन्सबर्ग) चिन्तक और पण्डित था। उसने फिलिस्तीन को यहूदी सास्कृतिक केन्द्र मात्र माना। उसके दृष्टिकोण के समर्थक अनेक विख्यात साहित्यकार थे। राबिनोविट्स, जिसने अपने यिद्दिश उपन्यासो के सुन्दर इब्रानी रूपान्तर किए, इन्हीमे था। हालेवी के बाद के कवियो मे सबसे महान् हायिम नहमन बियालिक[१३] हुआ, जो राष्ट्रीय लिरिक कवि था। अपनी शरत् कविताए विषयक ग्रन्थ मे उसने वातावरण-चित्रण की पराकाष्ठा कर दी। उसकी कविताओ मे उसकी जाति के सघर्ष का मार्मिक और हृदयस्पर्शी अकन है। अपने 'ज्वालाओ के लेख' मे उसने ऐसी अद्भुत कविता लिखी कि वह बाइबिल का अग लगने लगी। जेरूसेलेम के मन्दिर के विध्वस पर लिखते हुए उसने मागा—

जाओ वीराने की गहराई से गीत बरबादी का ला दो मुझको
हो सियाह फाम तुम्हारी रगेदिल की मानिन्द

अत्यन्त लोमहर्षक हृदय को छू लेने वाली, मन्दिर-विध्वस पर उसकी वह कविता है। रूस के यहूदियो पर अत्याचार के बाद उसने 'हत्याकांड के नगर मे' विषयक कविता लिखकर यहूदियो को अपनी रक्षा न कर सकने के कारण धिक्कार, हत्याकाड का लोमहर्षक चित्रण कर एक क्रान्ति पैदा कर दी। उसकी भाषा ओजस्विनी थी, शैली शक्तिमती, कल्पना स्वस्थ, अभिराम।

---

१ M. L Lilhenblum, २. S. I Hurwitz (१८६२-१९२२); ३ Zeeb Yabez (१८४८-१९२४); ४. Isaac Hirsh Weiss (१८१५-१९०५), ५. S P. Robinowitz (१८४५-१९१०), ६ Hayim Brody, ७ Israel Davidsohn; ८ Simeon Berenfeld (१८६०-१९४०), ९. Ruben Bramin (१८६२-१९३९), १०. A Ben Avigdor; ११ Herzl, १२ Ahad Ha-Am (१८५६-१९२७), १३ Hayim Nahman Bialik (१८७३-१९३४)

अहद-आ-आम ने १८९७ मे जिस पत्र 'ह-शिलोआ' का आरम्भ किया, उसमे अनेक प्रतिभाशाली साहित्यिको ने लिखा। प्रतिभावान लेविन्स्की[1] और फीन्बर्ग[2] ने भी। अहद हा-आम का प्रधान शिष्य जोजेफ क्लाउज्नेर[3] है, जो आज भी जेरूसेलेम की हिब्रू यूनिवर्सिटी मे प्रोफेसर है। क्लाउज्नेर लिथुआनिया मे जन्मा था, पर फिलिस्तीन मे १९१६ में बस गया। वह सुन्दर आलोचक और इतिहासकार है। दर्शन, भाषाशास्त्र आदि मे भी उसकी अद्भुत गति है। उसकी प्रधान रचनाए है—'ईसा से पाल तक', 'नजरथ का ईसा', 'इब्रानी साहित्य का इतिहास'। अहद हा-आम के बाद क्लाउज्नेर ने ही 'ह-शिलोआ' का सपादन भी किया। उसी पत्र मे जोशुआ थॉन[4], मोर्देकाई एह्लेन्प्रीस[5] और तीव्रमेधा बर्डिचेव्स्की[6] ने भी लिखा। तीनो पत्र की नीति के प्रबल विरोधी थे, विशेषकर बर्डिचेव्स्की जिसने कहानियो के अतिरिक्त कुछ उपन्यास भी लिखे।

बर्डिचेव्स्की का अनुयायी साउल चेरनिहोव्स्की[7] असाधारण कवि था, भावुक, सुकुमार, मधुर। वनो, पर्वतो, ऋतुओ का उसने अभिराम अकन किया। उसने भी अपनी जाति के सघर्ष का चित्र खीचा और अन्याय पर रोष प्रकट किया। परतु मधुराकन द्वारा वह सार्वभौम कवि था। उसके विचार मे प्राचीन सस्कृति कुण्ठित हो चुकी थी और अब नई सस्कृति, नये विचारो, नये देवताओ की यहूदियो को आवश्यकता थी। परतु वह बियालिक की लोकप्रियता न प्राप्त कर सका। ज़लमान श्निओर[8] साहित्य मे बागी है। उसने अपने यिद्दिश और इब्रानी उपन्यासो मे देवताओ और पुरानी परपराओ को चुनौती दी। उनका लोप ही उसने मानव उदय का जरिया बताया। चेरनिहोव्स्की और बियालिक के प्रभाव ने अनेक सुघड कवि उत्पन्न किए। इनमे जैकब कोहन[9] लिरिक और उच्च विचारो का सुन्दर कवि हुआ। उसीकी भाति फिलिस्तीन मे डेविड शिमोनोविट्स[10], जेकब फिकमन[11], जेकब स्टीन्बर्ग[12], आइजक काटज़ेनेलेन्सन[13] सभी रचनाशील है।

डेविड न्यूमार्क[14] ने इस्राइली दर्शन का इतिहास लिखा। परन्तु दो खण्ड निकालकर ही मर गया। जेकब क्लाटिज्कन मौलिक गम्भीर दार्शनिक है। व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारो मे प्रधान शोफमन[15] और बेरकोविट्स[16] है। घैटो जीवन के रहस्यभेदी

---

१ E L Levinski (१८५३-१९०९), २. M Z. Feinberg (१८७४-९९), ३. Joseph Klausner (ज० १८७४), ४. Joshua Thon, ५. Mordecai Ehrenpreis, ६. M J Berdichewski (१८६५-१९२१), ७ Saul Tchernihowski (१८७३-१९४४), ८ Zalman Shneor (ज० १८८७), ९ Jacob Cohen (ज० १८८१); १० David Shimonowitz; ११ Jacob Fichman, १२ Jacob Stienberg; १३ Isaac Katzenelenson, १४. David Neumark (१८६६-१९२४), १५ G. Shofman, १६ I D. Berkowitz

उपन्यासकार ब्रेनेर[1] और बेन ज़ॉयन[2] थे। बेरशाडस्की[3] ने अपने दो उपन्यासो मे निम्नमध्यवर्ग का चित्र खीचा। कबक[4] उपन्यासो और अनेक नाटको का रचयिता हो गया है। ग्नेसिन[5] ने दुरूह छायावादी रचना की। उसकी प्रेरणा सर्वथा अन्तर्मुखी थी।

: ५ :

फ़िलिस्तीनी साहित्य

पिछले पचास वर्षो से फिलिस्तीन की भाषा इब्रानी रही है। इससे नई शब्दावली लाक्षणिक-पारिभाषिक भाषा आदि की आवश्यकता पडी और शीघ्र बेन यहूदा[6], येलिनि,[7], ग्राजॉउस्की[8], ट्रोक्जिनर[9] आदि ने भाषाशास्त्र पर अपने अध्ययन प्रकाशित किए। पिछले महासमर के बीच भी वहा दो पुस्तके प्रतिदिन के हिसाब से निकलती रही। आज चिकित्सा, स्वास्थ्य, इजीनियरिंग, शिक्षा, कृषि आदि विषयो पर भी सैकडो पुस्तके है। इधर पौर्वात्य यहूदियो के जीवन का भी अध्ययन हुआ है। यहूदा बर्लो[10] ने फिलिस्तीन मे शरण लेने वाले येमन के यहूदियो के जीवन का अपनी कृतियो मे बडा सफल चित्र खीचा है और आइजक शमी[11] ने उनकी समस्याओ पर अपनी कहानियो मे विचार किया है। इसी प्रकार स्मिलिआन्स्की[12] (हौजा मूसा) ने अरबी दुनिया की कहानियो से इब्रानी-साहित्य को समृद्ध किया है। कवि और आलोचक जेकब फिकमन ने भी अपनी रचनाओ से फिलिस्तीन के नये साहित्य को सनाथ किया है।

आबिग्डोर हा-मिइरी[13] कवि और उपन्यासकार है। उसने सम्प्रति जीवन का सुन्दर अकन किया है। उसकी कहानिया प्रथम महासमर की क्रूर घटनाओ से भरी है। जूडाह कार्नी[14] भी समर्थ कवि है, जिसने फिलिस्तीन को अपना घर बना लिया है। वहा के अन्य प्रधान कवि है, अब्राहाम श्लोम्स्की[15], ग्रीनबर्ग[16], आइजक लम्डन[17], रूसी ईसाई एलिशेबा[18], जो यहूदी आदर्शो से प्रभावित होकर फिलिस्तीन मे बस गया और आशावादी अन्डा पिंकरफेल्ड[19]। कवि राकेल[20] इकतालीस वर्ष की आयु मे ही मर गया।

---

१ J. H Brenner (१८८१-१९२१); २ S Ben-Zion (१८७०-१९३०), ३. I Bershadski (१८७०-१९०८), ४. A A Kabak (१८८३-१९४५), ५. A N Gnessin (१८८०-१९१३); ६. Ben Yehuda, ७. Yellin, ८. Grazowski, ९. Troczyner' १०. Yehuda Burlo; ११. Isaac Shami; १२. M Smilianski (Hawaja Musah), १३. Abigdor Ha-Meiri, १४. Judah Carni; १५ Abraham Shlomsky, १६. U Z Greenberg, १७. Isaac Lamdan; १८. Elisheba, १९. Anda Pinkerfeld, २०. Raehel (१८९०-१९३१)

हजाज[1] ने रूसी क्रान्ति पर अनेक उपन्यास लिखे। स्टाइनमन[2] फ्रायड का अनुयायी मनोवैज्ञानिक है।

फिलिस्तीन के नये साहित्यकारो मे प्रधान है—डोव किम्ही[3], एबर हडनी[4], जूडायारी[5]। 'आधुनिक इब्रानी साहित्य का इतिहास' लेखक फिशेल लाकोवर[6] विद्वान, समालोचक और निबन्धकार है। फिलिस्तीन ने इधर के दिनो मे गोर्डन[7]-सा दार्शनिक भी उत्पन्न किया, जिसने श्रम को धर्म घोषित किया। एम० एच० एमशी[8] ने १९४० मे अपना चिन्तन ग्रन्थ 'विचार और सत्य' प्रकाशित कर दर्शन के क्षेत्र मे नया कदम रखा। इस काल फिलिस्तीन के उस नये इस्राइली राज्य मे सर्वत्र नव निर्माण की धूम है। साहित्य, राजनीति, समाज सर्वत्र। नित्य दूर देशो के यहूदी अपने पूर्वजो के देश को लौट रहे है, रातो-रात बियाबा मे गाव उठ खडे होते है। इसी प्रकार साहित्य मे भी मौलिक कृतियो के अतिरिक्त अन्य भाषाओ से अनुवाद की दिशा में वहा प्रभूत काम हो रहा है।

: ६ :

अमेरिकन इब्रानी साहित्य

उन्नीसवी सदी के चौथे चरण मे ही अमेरिका मे इब्रानी पुस्तको का प्रकाशन शुरू हो गया था। अनेक पत्रिकाओ का प्रकाशन भी उसी सदी मे प्रारम्भ हुआ। रोजनबर्ग[9] ने 'ओजर ह्-शेमोथ' नाम का बाइबिल पर अपना विश्वकोष प्रकाशित किया। आइजेस्टाइन[10] ने भी अनेक कोष और काव्य-सग्रह छापे। गेरशेन रोजन्जवाइग[11] ने कहावते और कविताए प्रकाशित की। जब रूस मे यहूदियो का 'पोग्रम' (हत्याकाण्ड) शुरू हुआ तो अमेरिका मे विशेष रूप से इब्रानी साहित्य का प्रकाशन होने लगा।

१९१० तक इब्रानी भाषा और साहित्य के प्रचार के लिए अनेक सस्थाए चल निकली। इनके प्रधान विद्वान दार्शनिक इस्राइल एफ्रॉस[12] और पण्डित दार्शनिक मेयर वैक्समन[13] थे। १९२० मे जब जर्नलिस्ट और आलोचक कर्मठ मेनहेम रिबालो[14] अमेरिका पहुचा तब इब्रानी साहित्य का प्रचार वहा और जोर पकड गया। न्यूयार्क मे १९२२ मे स्थापित उसका साप्ताहिक 'ह्-दोआर' आज भी चल रहा है। उसके सहकारी कालम्निस्ट (पत्रकार)

१. Hazaz, २ E Stienman, ३. Dov Kimhi, ४. Eber Hadani, ५. Juda Yaari, ६. Fishel Lachower, ७ A. D. Gordon (१८५६-१९२२); ८. M. H Hamshi, ९. A H. Rosenberg (१८३८-१९२३) १० J. D Eisenstein (जन्म १८५४), ११ Gershan Rosenzweig (१८६१-१९१४), १२. Israel Efros; १३ Meyer Waxman, १४ Menahem Ribalow (ज० १८९९)

६. ग्रीक साहित्य

क्लासिकल युग

(६००-३२३ ई० पू०)

: १ :

वीरकाव्य

यूरोप के विविध साहित्यो पर जितना प्रभाव ग्रीस के प्राचीन साहित्य का पडा उतना और किसीका नहीं। ग्रीक साहित्य ने ससार को बहुत कुछ दिया—होमर, सौक्रेटीज़ (सुकरात), एस्चिलस, सोफोक्लीज, युरिपीडीज़, एरिस्टोफेनीज़, प्लेटो (अफलातून), अरिस्टॉटल (अरस्तू), सोफिस्ट-स्टोइक-एपिक्यूरी दर्शन। यूरोप के ऊपर तो निश्चय ही इनका बडा असर पडा, उसके दर्शन पर, साहित्य और आलोचना पर, कला और विज्ञान पर।

उस ग्रीक साहित्य को हम तीन भागो मे विभक्त कर सकते है। ये तीन भाग ग्रीको के तीन राजनीतिक काल-प्रसारो पर अवलम्बित है। इनमे से पहले को लाक्षणिक रूप मे 'क्लासिकल' कहते है, जिसे हम सर्वथा वीरगाथाकाल तो नही कह सकते परतु निश्चय ही वह उसके बहुत समीप है। यह काल-प्रसार ईसा से पूर्व ६०० से ३२३ वर्ष तक है। इस बीच ग्रीको ने अपने प्रख्यात नगर-राज्यो का विकास किया। यह ग्रीक-इतिहास का प्राचीनतम युग था। इस युग का अत पूर्व और मध्यपूर्व मे ग्रीको के साम्राज्य-निर्माण के साथ हुआ।

दूसरा काल-प्रसार चौथी सदी ई० पू० से शुरू होकर ईसा पूर्व दूसरी-पहली सदी तक है, जब व्यक्ति का नगर-राज्यो से सम्बन्ध कमजोर पड गया और ग्रीको की आबादी नये विजित देशो मे फैल चली। उस काल साहित्य का एक नया रूप विकसित हुआ, ऐसा रूप जिसमे विश्व-साहित्य के बीज थे, यद्यपि जिसकी साधना एक अत्यन्त छोटे वर्ग को शिक्षित करने के लिए हुई। उसमे निस्सदेह 'क्लासिकल युग' की कृतियो की ताज़गी नही है। वस्तुत इस काल का आरम्भ ईसा पूर्व ४थी सदी से ही हो जाता है। दूसरी-पहली ईसा पूर्व की सदिया उस काल-शृखला की पिछली कडिया है जब रोम के विजेताओ ने ग्रीस की विजय कर उसे विस्तृत रोमन साम्राज्य का प्रान्त बना लिया। तब से ग्रीक साहित्य के तीसरे और अन्तिम युग का प्रारम्भ होता है जिसे 'ग्रेसो-रोमन युग' कहते है। इस काल प्राचीन क्लासिकल विभूतियो की ओर ग्रीक और रोमन लेखको की दृष्टि लौटी। एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ। फिर भी ईसाई साहित्य धीरे-धीरे उसके ऊपर हावी होता

गया और प्राचीन ग्रीक—देव-बहुल—धर्म साहित्य का आधार अब न रहा। ५२९ ईस्वी मे तो ग्रीक दर्शन के पीठो को रोमन ईसाई सम्राट् जस्टीनियन ने अपनी घोषणा द्वारा सर्वथा बन्द ही कर दिया। तब इस तीसरे युग का अन्त हुआ। इन तीनो को हम क्रमश क्लासिकल, हैलेनिक और रोमन युग ही कहेगे।

यहा हमे यह नही भूलना चाहिए कि भारत की ही भाति काठ और कठमुल्ले मानव के स्वभाव से ग्रीक साहित्य को भी गहरी क्षति पहुची है। काल और मनुष्य दोनो ने उस-पर गहरी विध्वसक चोटे की और उसका बडा भाग विनष्ट कर दिया। अधिकतर यह विध्वस कार्य धार्मिक उत्साह का परिणाम था, जिसने सदियो की साहित्य-साधना अपनी बर्बरता से मिटा दी। उस लम्बे रचनाकाल की सैकडो-हजारो कृतियो मे आज केवल कुछ ही बच रही है, थोडी-सी लिरिक (गेय कविताए) और कुल ४३ नाटक तथा उनके खण्ड। इस साहित्य-विध्वस का जितना श्रेय दीर्घकाल तक विद्वानो की उदासीनता और काल की प्रगति को है, उससे कही बढकर क्रूसेडो और तुर्को के धार्मिक उत्साह को है। अस्तु।

ग्रीक साहित्य के उदय और आधार को हृदयगम करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि समझ ली जाए। ग्रीक साहित्य के निर्माता प्राचीन ग्रीस के मूल निवासी न थे। उनके पहले वहा 'मिनोअन' और 'मिकीनी'[१] सभ्यता के निर्माता निवास करते थे। 'मिनोअन' सभ्यता ग्रीस के दक्षिण, क्रीट के द्वीप मे, जन्मी। उसका नाम क्रीट के उस राजा मिनॉस के नाम पर 'मिनोअन' पडा, जिसकी राजधानी क्नोसस थी और जिसके चित्रित महलो को सर आर्थर ईवान्स ने अब खोद निकाला है। उसकी लिपि अब तक पढी न जा सकी, परन्तु यह सही है कि ढाई हजार वर्ष ईसा पूर्व से लेकर डेढ हजार वर्ष ईसा पूर्व तक उस सभ्यता का क्रीट तथा ग्रीस और एशिया माइनर के नगरो पर विस्तार रहा। १५०० ईस्वी पूर्व के लगभग हिन्दी-यूरोपीय आर्यों की एक शाखा जब ग्रीस की ओर चली तब मिकीनी आदि नगरो की उस प्राचीन सभ्यता से उसका सघर्ष हुआ। नये आगन्तुक आर्य बर्बर लडाके थे और यद्यपि उन्हे पीतल और ताबे के चमकते भालो के विरुद्ध अधिकतर पत्थर के हथियारो से लडना पडा, उनका आतक एशिया माइनर के हत्ती राजाओ और मिस्र के फैरोहो पर जम गया। उन नवागन्तुक बर्बरो ने मिकीनी सभ्यता को तोड डाला। उनकी अन्तिम धारा डोरियन ग्रीको की थी जो १२०० ईस्वी पूर्व के कुछ पहले-पीछे ग्रीस पहुची। इन्हीका ट्रॉय के निवासियो से वह प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसकी महिमा महाकवि होमर ने अपने अमर काव्य 'ईलियड' मे गाई है। अब वे प्राचीन बर्बर डोरियन ग्रीक, जो आर्यों की पहली धाराओ से पहले लड-झगडकर फिर उसमे घुलमिल गए, अपने नागरिक प्रतिद्वन्द्वियो से नगर-जीवन का भेद सीख अपने नगर बना ग्रीस मे बस गए। उनके पास लिपि न होने से कोई लिखित साहित्य भी न था। हा, उनके चारण अपनी जाति के प्राचीन पराक्रमो के गीत शब्दबद्ध रूप मे बस्ती-बस्ती घूमकर गाया करते

थे, उसी प्रकार जैसे महाभारत, रामायण के पहले भारत मे भी प्राचीन गाथाए गाई जाती थी। आठवी सदी ईस्वी पूर्व के आसपास ग्रीको ने अपने पडौसी फिनिशियनो से इब्रानी लिपि सीखी और उसके बाद साहित्य लिखा भी जाने लगा, परन्तु लिखी हुई प्राचीनतम कृति भी ५०० ईस्वी पूर्व के पहले की नही है। वस्तुत तभी से 'क्लासिकल' साहित्य-काल का ग्रीस मे आरम्भ होता है।

वीरकाव्य-युग या क्लासिकल साहित्य का आरम्भ होमर[1] की रचनाओ—'ईलियड' और 'ओडिसी'—से होता है। इसमे सदेह नही कि उनकी रचना उनके लिपि-बद्ध होने से बहुत पूर्व हो चुकी थी और वे चारणो द्वारा बराबर गा-गाकर बचा रखी गई थी। इनमे 'ईलियड' का स्थान बहुत ऊचा है। ईलियड मे ट्राय के नगर के साथ ग्रीको का दशवर्षीय युद्ध वर्णित है, यद्यपि इस काव्य मे केवल अन्तिम दसवे वर्ष का समर प्रतिबिम्बित है। ट्रॉय का घेरा और युद्ध, दोनो का ईलियड मे अनुपम चित्रण हुआ है। वह चित्रण आज के अकनो से सर्वथा भिन्न है। ग्रीक-स्कन्धावरो और शिविरो मे घटने वाले प्रसगो का वर्णन बडा सजीव और लोमहर्षक है। युद्ध अधिकतर द्वन्द्व-युद्ध है, जिनमे योद्धाओ के जोडे लडते और विनष्ट होते है। ईलियड का कथानक बस इतना है कि एकिलिज, जो ग्रीको का अनुपम और आदर्श वीर है, क्रुद्ध होता है और उस क्रोध का बर्बर बदला लेता है। पहले तो वह ग्रीको के प्रधान सेनापति अगामेम्नन से बन्दी तरुणियो के बाट के सम्बन्ध मे (अगामेम्नन उसकी वाछित तरुणी को स्वय ले लेता है) क्षुब्ध होकर युद्ध से हाथ खीच लेता है और ग्रीको के अनुनय तथा अगामेम्नन की क्षमा-प्रार्थना पर भी कुछ ध्यान नही देता। फिर जब उसकी अनुमति और उसका अच्छा कवच लेकर उसका मित्र पाट्रोक्लस युद्ध मे शामिल कर प्रियम के पुत्र हेक्टर द्वारा मारा जाता है तब एकिलिज नितान्त दु खी और क्रुद्ध होकर रण-क्षेत्र मे झपट पडता है। अभिमन्यु-वध से युद्ध मे सूर्यास्त तक जयद्रथ के वध का प्रण किए अर्जुन का जो रूप समर-भूमि मे महाभारत मे मिलता है वही एकिलिज का ईलियड मे है। मैदान मे उसके सामने लाशे बिछ जाती है, जो सामने आता है नष्ट हो जाता है। प्रियम के सभी बेटे बारी-बारी निधन को प्राप्त होते है। सम्भ्रान्त नागरिक सत्रस्त होकर प्रियम के बेटे पैरिस से युद्ध की कारण हेलेन को ग्रीको को लौटा देने की प्रार्थना करते है, परतु वह नही डिगता और अद्भुत पराक्रम दिखाकर रण मे स्वय मारा जाता है। एकिलिज अन्त मे ट्रॉय के शालीन पराक्रमी हैक्टर को मार डालता है। हैक्टर ने उसके मित्र का वध किया था इससे वह उसका निजी शत्रु है। उसे मारकर वह उसकी लाश रथ के चक्रो मे बाध ट्रॉय की दीवारो के चारो ओर दौडता है और अन्त मे उस कुचली लाश के भी टुकडे-टुकडे कर डालना चाहता है। 'ईलियड' पढते समय एकिलिज की यह बर्बरता उस

१. Homer (६वी सदी ई० पू०)

भीम की बर्बरता की याद दिलाती है जो दु शासन को मारकर ही तृप्त न हो सका था, उसकी छाती फाड उसने उसका अजलियो से रक्त भी पी लिया था। ठीक तभी जब एकिलिज हैक्टर के शव का अग-विच्छेद करने को उद्यत है, हैक्टर का पिता वृद्ध प्रियम पहुचकर उससे बेटे की लाश मागता है और उसके हाथ चूम लेता है। परिस्थिति की करुणा तब साकार हो एकिलिज का हृदय छू लेती है, उसे अपने पिता का स्मरण हो आता है और वह हैक्टर की लाश उसके पिता को लौटा देता है। फिर ट्रॉय का विध्वस होता है और उसका राजा स्वय वृद्ध प्रियम तक ग्रीको की सहार-क्रिया से नही बच पाता। यही ईलियड का कथानक है।

युद्ध उसी परपरा मे था जो अक्सर नवागन्तुक ग्रीको और ग्रीस के पुराने निवासियो के बीच हुआ करता था। मिकीनी मिट चुका था, ट्रॉय अभी शेष था, दर्रा दानियाल के पास एशिया माइनर (लघु एशिया) मे अपने पूर्ववर्ती भग्नावशेषो के ऊपर खडा। ग्रीक ट्रॉय को वैसे भी ऐतिहासिक कारणो से नष्ट करना चाहते थे, अब उनकी बर्बर कृति के लिए उन्हे अवसर भी मिल गया। पैरिस प्रियम का पुत्र था, पराक्रम और सौदर्य दोनो मे अनुपम। सुन्दर तो वह इतना था कि ग्रीक पुराण कथाए कहती है, देविया तक उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गईं और उन्होने अपने रूप की होड मे पैरिस से निर्णय मागा। पैरिस ने वह निर्णय प्रेम और काम की देवी अफ्रोडाइटी के पक्ष मे दिया। कृतज्ञ अफ्रोडाइटी ने उसे ग्रीको की सबसे सुन्दर नारी हेलेन के प्रणय का वरदान दिया। हेलेन भी पैरिस को देख उसके रूप पर रीझ गई और एक दिन स्पार्टा के राजा मेनेलास की अनुपस्थिति मे उसके दरबार मे पहुच पैरिस उसकी पत्नी हेलेन को ट्रॉय ले भागा। उसी हेलेन की प्राप्ति के लिए सम्मि-लित ग्रीक सेनाओ ने ट्रॉय पर घेरा डाला। ट्रॉय का विध्वस कर हेलेन को ले अगामेम्नन का भाई मेनेलास स्पार्टा लौट गया।

ईलियट का कथा-निर्वाह कुछ जटिल है परन्तु उसके अकन बडे सजीव, उदात्त और लोमहर्षक है। कवि प्राचीन बर्बर युद्धो का जिक्र समसामयिक ग्रीक बर्बरो मे करता है जो युद्ध के दावपेच भली भाति समझते है और स्वय वीर-दर्प से ऊर्जस्वित नित्य लडाइया लडते रहते हैं। ईलियड के पात्रो का होमर ने बडा तेजस्वी और खुला रूप खीचा है। उसके वर्णन मे रेखाए नही तत्क्षण की उभरी आकृतिया है, स्पष्ट, सबल, कर्मठ। परन्तु उसके चरित्रो मे अन्तर है। ग्रीकपक्ष के अनेक चरित्र लोकोत्तर है, देव-तुल्य, अर्धदेव। किसीकी माता देवी है, किसीका पिता देवता। परतु हैक्टर आदि का वर्णन अद्भुत मानवीय है। एकिलिज देवोपम हैं, हैक्टर सर्वथा मनुष्य। हैक्टर मानव होकर भी देवोत्तर एकिलिज से कही अधिक हमारी सहानुभूति का पात्र हो उठता है और वह अपनी मृत्यु के कारण नही अपनी लोक-चेतना, स्वदेश-प्रेम तथा पराक्रम से। एकिलिज स्वय कम पराक्रमी नही है, परन्तु वह अर्धदेव है और देवता का पराक्रम जन्म-सिद्ध होने से महत्व नही रखता। खतरे

मे साहस के साथ जान को डाल देना मनुष्य की ही अकृत्रिम विशेषता है और हैक्टर उसी का प्रतीक है। होमर के देवता भी प्राचीन कृतियो की तरह मानवीय आचरण करते है, मानव-आवेशो से भरे है, क्रोध, ईर्ष्या, रोग आदि के शिकार है। ईलियड अद्भुत कृति है वीरकाव्य जगत् की यह पहली रचना, आठवी-नवी ईस्वी पूर्व के लगभग रची गई।

होमर का दूसरा काव्य 'ओडिसी' है, ग्रीस की प्राचीन लोक-कथाओ पर आधारित। ट्रॉय-युद्ध के वीरो मे सबसे चतुर इलिसिज़ युद्ध के बाद जहाज़ पर द्वीप-द्वीप फिरता रहता है और दस वर्ष उसकी साध्वी पत्नी पेनिलोप उसके आसरे बैठी रहती है। उस बीच उससे विवाह करने के इच्छुक अनेक श्रीमान उसीके यहा पडे रहते और खाते-पीते है, उसे विवाह करने के लिए परेशान करते हैं। इलिसिज़ का पुत्र पिता की खोज मे द्वीप-द्वीप जहाज़ लिए फिरता है जो साहस का काम है और जिसे सहज साहस से महाकवि होमर ने उस वीर-काव्य मे अकित किया है। इलिसिज़ लौटता है और पत्नी के प्रणय-पीडको का वध कर डालता है।

होमर की भाषा इओलिक और आयोनिक बोलियो का सम्मिश्रण है, जो वीरकाव्य के लिए बडी सशक्त है। इन काव्यो मे ताम्र और लौहयुग की दोनो भिन्न सस्कृतियो का वर्णन हुआ है। वे सस्कृतिया अपने ऐतिहासिक रूप मे पुराविदो को अपनी सचाई से कम से कम ईलियड के स्तर से, उसके कथानक के ट्रॉय सम्बन्धी ऐतिह्य से, प्रभावित पहले न कर पाई थी पर जब श्लीमान ने ट्रॉय नगर के एक पर एक खडे ६ भग्नावशेषो को एशिया माइनर मे दर्रा दानियाल के पास खोद निकाला तब उन्हे ट्रॉय-युद्ध पर विश्वास हुआ। ट्रॉय के भग्नावशेषो की परपरा मे ईलियड वाला नगर छठा है। ट्रॉय-युद्ध की तिथि साधारणत ११८४ ई० पू० मानी जाती है। नवी सदी ईस्वी पूर्व के लगभग होमर ने गाथाओ को एकत्र किया और उनको एक मे घुला-मिलाकर अपनी मेधा से नई अद्भुत काया प्रदान की। उसने उनको अपनी काव्यधारा मे उदरस्थ करके भी प्राचीन गाथाओ की अनेक भाषा सम्बन्धी विशेषताए, विशेषण आदि वैसे के वैसे प्रयुक्त किए।

होमर कौन था, या कहा का था यह कुछ सही-सही ज्ञात नही सिवा इसके कि वह, किंवदन्तियो के अनुसार, जन्माध था और यह कि ग्रीक साहित्य का वह पहला वीरकाव्य-कार था। ऊपर कहा जा चुका है कि गाथाए पहले से प्रस्तुत थी जिनका होमर ने उपयोग किया। फिर तो होमर के पूर्ववर्ती गायको और कवियो का होना भी आवश्यक है और हमे ग्रीक साहित्य मे इस प्रकार के होमर-पूर्व के गडरिया-गीतो के कवियो का निर्देश मिलता है। उन्हीमे से आरफियस और मूसियस थे, पर उनकी कविता का हमे कोई ज्ञान नही।

होमर के काव्यो की सफलता इससे प्रकट है कि उसकी कविताओ के गायको की एक श्रेणी (समुदाय) ही बन गई जिसे 'होमरीडी' कहते थे जिनका काम इजियन सागर

के द्वीपो और ग्रीस की यूरोपियन भूमि पर उन्हे गाते फिरना था। इस प्रकार इन काव्यो का प्रचार पहले गा-गाकर ही हुआ। बाद मे, लगभग छठी सदी ईस्वी पूर्व के या सम्भवत. उसके भी बाद, पहली बार वे लिखे गए। ईलियड और ओडिसी के अनेक अनुकरण भी हुए, यद्यपि वे आज उपलब्ध नही, उनका केवल सकेत हमे साहित्य मे मिलता है।

आठवी सदी ईस्वी पूर्व तक वीरकाव्यो का लिखना तो जैसे समाप्त हो गया, परन्तु उनकी छन्द-परपरा बनी रही। कुछ सूक्त जो उस शैली मे लिखे गए 'होमरीय सूक्त' कहलाते है। वे डेमेटेर, अपोलो, पान की प्रार्थना मे प्रयुक्त होते थे। वीर छन्द का प्रयोग इसी प्रकार नीति-कविताओ के लिए हेसिऑड[1] ने भी किया। हेसिऑड के कुछ अनुकर्ताओ ने भी इस छन्द का उपयोग किया। दार्शनिक और वैज्ञानिक खोजो के सम्बन्ध मे भी इसका व्यवहार हुआ।

धर्म सम्बन्धी विषयो पर दार्शनिक आक्षेप भी इस काल हुए, विशेषत आठवी सदी ईस्वी पूर्व मे। वस्तुत अदार्शनिक रूढिवादी धर्मान्धता के विरुद्ध लोगो मे जिज्ञासा जग गई थी। उस जिज्ञासा और विरोधात्मक चिन्तन का समावेश, हेसिऑड ने अपनी कविता मे किया। पहले की कविताओ की भाषा, भाव-विचार सभी कुछ सम्भ्रान्त और उच्चवर्ग के थे, परन्तु हेसिऑड ने अपनी कविताओ द्वारा निम्नवर्ग के पक्ष मे विद्रोह किया। वह किसान की ओर से बोला। काम और दिन विषयक ग्रथ मे उसने किसान के भाव प्रकट किए। वह स्वय भी बोइओटिया का किसान था, किसान था जिसकी भूमि साजिश द्वारा भाई और जजो ने छीन ली थी। इस कविता मे उसने बोइओटिया के किसानो के कठिन जीवन का चित्र खीचकर रख दिया और सार्वभौम न्याय के पक्ष मे आवाज उठाई। अपनी 'थियोगोनी' मे पहली बार उसने ग्रीक पौराणिक विश्वासो का अध्ययन किया। हेसिऑड की कविताओ के भी अनेक अनुकरण हुए जिससे उनकी लोकप्रियता का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। उसकी कविताओ की ध्वनि भिन्न थी, परन्तु रूप वही वीर छन्द का पुराना ही था।

ई० पू० छठी सदी मे वीर छद का उपयोग दार्शनिक क्षेत्र मे पूर्णत: होने लगा। यवन (आयोनियन) दार्शनिक अपने ससार का जो मनन करने और बौद्धिक व्याख्या ढूढने लगे तो उन्हे इसी छन्द का उपयोग सुकर जान पडा। इसका मुख्य कारण यह था कि गद्य का अभी जन्म नही हुआ था। जैसे भारत मे वैसे ही ग्रीस मे भी साहित्य की पहली कृतिया पद्य मे ही हुई। इसके अतिरिक्त ईस्वी पूर्व छठी सदी मे ऑर्फिक सम्प्रदाय का भी जन्म हुआ जिसने पहली बार आत्मा के आवागमन और आदि पाप का सिद्धान्त निरूपित किया। दोनो विचार वीरकाव्यो के ओलिम्पियन धर्म-परपरा की परिधि के बाहर थे।

---

१. Hesiod (८वी सदी ई० पू०)

इस सम्प्रदाय के दार्शनिको ने अपने विचारो का वाहन वीर छन्द को ही बनाया। इस प्रकार उस सदी तक पहुचते-पहुचते होमर के छद का व्यवहार साहित्य मे सर्वत्र होने लगा।

: २ :

लिरिक काव्य

ई० पू० सातवी सदी तक कबीला और देहाती जीवन का ग्रीस मे अत हो गया था। उसका स्थान अब इतिहास मे सर्वथा नये नगर-राज्य ले चले थे। इस क्राति ने एक नये मध्य वर्ग को जन्म दिया, जिसकी आर्थिक सत्ता कुछ भूमि पर विशेषत वाणिज्य पर, अवलबित हुई। राजनीति मे कही तो सम्भ्रान्तकुलीय गण-शासन स्थापित हुआ, कही व्यक्ति 'टाएरैन्ट' की नि सीम सत्ता और अत मे जनतत्र (डेमोक्रेसी)। इस प्रकार धीरे-धीरे व्यक्ति का महत्व बढा। इस बदली स्थिति मे 'लिरिक' काव्य का जन्म हुआ। आज 'लिरिक' की परिभाषा अधिक व्यापक और उसकी परिधि विस्तृत है। ग्रीस मे उसका मूल उदय तत्री (लीर-लायर) स्वर मे हुआ, इससे गेयता उसकी पहली पहचान हुई और यह गायन दोनो प्रकार का था, वैयक्तिक और कोरस रूप मे समवेत। शोक-विरहादि मे भी उस शैली का उपयोग होने लगा और तब उसकी स्वर-सयुक्त गेयता सीमित हो गई, क्योकि काव्य-वाचन भी अब उसका एक रूप हुआ। शोक-सम्वेदक कविताओ का उदय अधिकतर यवन (आयोनियन) नगरो मे हुआ, यद्यपि आज वे प्राप्य नही है। आज इस प्रकार की जो कविताए उपलब्ध है वे स्पार्टा, एथेस, मेगरा के नागरिको की है—टिरटियस[१], सोलोन[२], थियोग्निस[३] की। इन कविताओ की आवाज राजनैतिक है जो उस काल की राजनीतिक और जिज्ञासु चेतना की परिचायक है। टिरटियस ने अपने गीतो मे मेसेनिया जीतने मे अपने स्पार्टावासियो का उत्साहवर्धन किया, लिकर्गस के नये विधानो की सराहना की। सोलोन ने एथेन्स मे किए अनेक राजनीतिक परिवर्तनो को अपने गीतो से लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न किया। उधर थियोग्निस ने अपने मेगारा की जनसत्ता का विरोध किया। इस प्रकार इन लिरिक कविताओ के विषय दुःख-प्रकाशन, प्रणय-निवेदन, मरसिया, सभी हो गए। आरम्भिक गेय कविताए राजनीति-परक थी।

यासोस के आर्किलोकस[४] ने 'आइएम्बिक' छदो मे भपनी कविताए लिखी और इस प्रकार की कविताओ का आदर्श उसीकी (१७वी सदी ईस्वी पूर्व की) कविताए बनी जो उसने अपने अपमान करने वाली नारी और उसके पिता के विरुद्ध लिखी। ख्यातों मे प्रसिद्ध है कि परिणामत दोनो ने आत्महत्या कर ली। आर्किलोकस की कविताओ मे चाहे वे राजनीतिक हो या प्रेमविषयक, उनकी ध्वनि अपनी थी, वैयक्तिक।

---

१. Tyrtaeus , २. Solon ; ३ Theognis , ४ Archilochus (७वी सदी ई० पू०)

लिरिक कविता ने ग्रीस मे बराबर अपना गेयस्वरूप कायम रखा । उसकी भाषा सरल और सुगम थी, आम लोगो की । उसका छन्द और उसकी शब्द-योजना, सभी सहज थे और उनमे साधारण जनो के हर्ष-विषाद, सयोग-वियोग, प्रणय-क्रोध आदि वर्णित होते थे, सर्वथा निजी रूप से और गेयता उनका आवश्यक गुण था । जिन लिरिको को अकेले गाया जाता था उन्हे 'सोलो' लिरिक कहते थे । उनके प्रारभिक महत्व के कवि अल्किउस[1] और सैफो[2] थे । दोनो ही सम्भ्रान्तकुलीय थे, दोनो मे शब्दलालित्य और भावुकता थी । दोनो लेस्बास द्वीप के रहने वाले थे, ईस्वी पूर्व सातवी सदी के मध्य के। सैफो तो लिरिक की अद्भुत प्रचारिका थी । अफ्रोडाइटी की पूजा के लिए वह नारियो का एक दल साथ ले लेती । उनके सम्पर्क मे उसे एक प्रकार का आध्यात्मिक सुख और प्रेरणा मिलती थी । उसके नाम के साथ अनेक कहानियो और अनुश्रुतियो का सबध हो गया है । उसकी, बस, थोडी ही रचनाए बच रही है, परन्तु उनसे उत्कट नारी-भावुकता का परिचय मिलता है । उसकी सरल, परिमार्जित, स्पष्ट शैली हृदय को छू लेती है । उसकी कविताओ का भाव-प्रवाह सहज है । उसका अनुकरण भी प्राचीन काल मे काफी हुआ । मिस्र से कुछ 'पेपिरस' पर लिखी सामग्री मिली है, जिससे पता चलता है कि सातवी सदी ईस्वी तक उसका यश मलिन नही हुआ था । उसके अनुकर्ताओ मे प्रधान अनाक्रियन[3] और कातुलस[4] थे । इनमे से पहले ने प्रणय और आपानविषयक अनेक अभिराम कविताए लिखी । आयोनिया से वह एथेन्स आया पर वहा के राजनीतिबहुल सामाजिक जीवन से उसे विशेष सहानुभूति न मिली । पाचवी सदी ई० पू० मे तो 'सोलो' लिरिक का लोप हो ही गया ।

डोरियन नगरो मे कोरस लिरिको का प्रचलन हुआ और वही डोरियन बोली की ग्रीक भाषा और साहित्य को देन है । इसका मूल आरम्भ भी सम्भवत· आयोनिया मे ही हुआ था, पर विकास डोरियन नगरो मे हुआ । इसमे वैयक्तिक उद्गार का इतना महत्व न था जितना सामूहिक रूप से धर्म-चेतना का । इनका उपयोग देवपूजा, मरसिया, विवाह, नृत्य आदि के अवसर पर होता था, परन्तु इनका मूल उद्देश्य धर्म से ही अनुप्राणित था । इनकी रचनाए पेचीदी थी, क्योकि इनका गायन नृत्य-वाद्य के साथ होता था । कोरस लिरिक का पहला जाना हुआ रचयिता अल्कमन[5] है । उसकी लिरिक का खडमात्र प्राप्य है । यह लडकियो के लिए कोरस का गान है । छठी सदी ईस्वी पूर्व मे इनका प्रयोग विजय सबधी रचनाओ मे होने लगा । इबिकस[6] और विशेषत पिण्डार[7] ने इसका विकास किया । इस प्रकार की कविताए लिखने मे पिण्डार बडा पारगत था । खेलो के अवसर पर उसकी कविताए गाई जाती थी । उसकी उपमाए, कल्पनाओ की परपरा असाधारण है । उसकी

---

१. Alcaeus ; २. Sapho (६५० ई० पू०) , ३ Anacreon (६ठी ई० पू०) ; ४. Catullus ; ५. Alcman , ६. Ibycus ; ७ Pindar (५१८-४२२ ई० पू०)

भाषा भी उसी प्रकार असामान्य शालीन है। कोरस लिरिको का व्यवहार इतना बढा कि पिन्डार 'आर्डर' पर रचना करने वाला पेशेवर बन गया। इस प्रकार के पेशेवर कवियो मे सिमोनिडीज[1] और बैक्किलिडीज[2] भी थे। पिन्डार का रचनाकाल ५१८-४४२ ई० पू० था। इस प्रकार की लिरिक का स्थान ई० पू० पाचवी सदी मे 'ट्रैजेडी' ने ले लिया।

: ३ :

नाटक

वीरकाव्य और लिरिक का विकास तो इयोलिक, डोरिक और आयोनिक बोलियो मे हुआ परतु ईसा पूर्व पाचवी और चौथी शताब्दियो मे साहित्य-निर्माण विशेषत एथेन्स मे हुआ। एथेन्स छठी सदी से ही राजनीतिक नेतृत्व धारण कर चला था। जितनी राजनीतिक उथल-पुथल वहा हुई उतनी और कही नही हुई। पहले वहा व्यक्ति-प्रधान निरकुश शासन हुआ फिर जनसत्ताक राजनीति की प्रतिष्ठा हुई। ईरानियो के एशिया माइनर की विजय से भी कुछ लेखक और कलाकार भागकर वहा पहुचे और उन्होने साहित्य मे एक क्राति उपस्थित कर दी, फिर ईरानियो की पराजय ने ग्रीको को साहित्य-निर्माण के लिए बडी सामग्री दी।

ई० पू० पाचवी सदी का सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक विकास ड्रामा (नाटक) था। उसके आरम्भ का कुछ पता नही चलता। पहले ग्रीस के देहातो मे देव सबधी कोरस गाए जाते थे, शायद उन्हीसे ग्रीक 'ट्रैजेडी' का विकास हुआ। कोरस के गायन के साथ ही थेस्पिस[3] ने एक अभिनेता का उपयोग करना शुरू किया जिससे एक प्रकार का 'डायलॉग' व्यवहृत होने लगा और नाटक का प्रारभिक रूप खडा हो गया। इसीसे थेस्पिस ट्रैजेडी का निर्माता कहलाता है। डायलॉग ने नाटकीय परिस्थितिया उपस्थित कर दी। ई० पू० ५३५ के लगभग पेइसिस्ट्रेटस[4] ने डायोनिसस के राजकीय व्यवहार पर ट्रैजेडी के कुछ तत्व निर्दशित किए। फिर तो एथेन्स के धार्मिक और सार्वजनिक अवसरो पर नाटकीय प्रदर्शन अनिवार्य हो गए। राज्य स्वय उन प्रदर्शनो का सगठन करता था और स्वय उनका खर्च भी देता था। ई० पू० पाचवी सदी तक जब इस्किलस[5] ने लिखना आरम्भ किया, नाटक अपने आवश्यक लक्षण धारण कर चुका था। इस्किलस ही नाटक, ट्रैजेडी, का प्रवर्तक था। उसीने अपनी सूझ और साहित्यिक सामर्थ्य से ग्रीक साहित्य को ट्रैजेडी का अनुपम रत्न दिया। उसने प्राचीन पौराणिक आख्यानो को जिउस के सार्वभौम न्याय से समन्वित कर नाटको की अभिसृष्टि की। उसने पौराणिक आख्यानो के अतिरिक्त

१. Simonides, २ Bacchylides; ३. Thespis; ४ Peisitratus, ५ Aeschylus (५२५-४५५ ई० पू०)

वीरकाव्यो से भी सामग्री ली। उसनेशायद हीकभी समसामयिक घटनाओ को अपने नाटको का आधार बनाया। एक 'पर्शियन' (ईरानी) मात्र उसका अपवाद है। इसमे उसने नि.-सन्देह ईरानी सम्राट् कसेरेक्स की पराजय को प्लाट बनाया। पहले कोरस का प्राधान्य था और नाटकीय परिस्थितिया बहुत न्यून होती थी, पर इस्किलस ने अपने पिछले नाटको मे यह कमी पूरी कर दी, नाटकीय प्रसगो का विशेष विकास कर दिया। नाटक तीन-तीन प्लाटो का एकत्र उपयोग करते थे, इन्हे 'ट्रिलोजी' कहते थे, जिनके अन्त मे एक प्रहसन जोड दिया जाता था। 'ट्रिलोजी' बाद मे एक ही प्लॉट का प्रयोग करने लगी। इस्किलस ने अपने पात्रो को वीरकाव्यो की सरलता दी। उनके कार्य अधिकतर एक ही शक्तिम मनो-योग अथवा एक ही भावावेग से प्रचलित होते है। उनमे सम्मिलित उद्देश्यो का अभाव होता है।

ट्रैजेडी का अभिराम रूप सोफोक्लीज[१] ने प्रस्तुत किया। उसने कोरस और नाटकीय स्थितियो मे उचित सतुलन रखा। दोनो की मात्राओ की उचित मर्यादा थी। नाटक भी अब ट्रिलोजी के अग न होकर स्वतन्त्र और सपूर्ण रचना बन गए। उनके पात्रो की अनेकता ने विविध भावावेगो का समवेत निदर्शन सभव किया और उसने इस्किलस से सर्वथा भिन्न मानव-प्रकृति और स्थिति विशेष मे उसकी प्रतिक्रिया पर जोर दिया, जहा इस्किलस ने सार्वदेशिक नैतिक सिद्धान्त को अपना आदर्श बनाया था। इसीसे सोफोक्लीज को उस दिशा मे आशातीत सफलता मिली। सोफोक्लीज क्लासिकल ग्रीक ट्रैजेडी का सबसे सच्चा प्रतिनिधि था। उसका समय अधिकतर नाटक लिखने मे बीतता रहा होगा, फिर भी वह उस काल के एथेन्स का सही नागरिक था। औरो की भाति ही वहा के राजनीतिक जीवन मे वह खुलकर भाग लेता था। बौद्धिक क्षेत्र मे अग्रणी था, और उस काल के विलासी जीवन मे भी कुछ पीछे न था। उसने नाटक मे तीसरे पात्र के अभिनय का आरम्भ किया और 'ट्रिलोजी' की परपरा को तोडकर नाटक मे विविध भागो की एकता स्थापित की। परतु नाटक के क्षेत्र मे जो उसका उस काल से आज तक विशेष महत्व माना जाता है, उसके कारण और है। भाषा की सूक्ष्मता, प्लॉट की एकता और असाधारण ग्रथन, और नाटकीय कला के स्वरूप पर उसका पूर्ण अधिकार—उसके पाचवी सदी ईस्वी पूर्व के ग्रन्थ 'क्लासिकल' निरूपण को अभिव्यक्त करते हैं।

इस्किलस और सोफोक्लीज दोनो के नाटक उस ग्रीक परपरा मे लिखे गए जिसमे ट्रैजेडी का उपयोग धार्मिक उत्सवो पर हुआ करता था। जनता आशा करती थी कि ट्रैजेडी का उद्देश्य गम्भीर, नैतिक शिक्षा हो। इसी कारण इस्किलस और सोफोक्लीज के प्रभाव से नाटक के स्वरूप मे कुछ पारपरिक परुषता आ गई। जब यूरिपिडीज[२] ने

१. Sophocles (४६७-४०५ ई० पू०); २. Euripides (४८५-४०६ ई० पू०)

अपने नाटक लिखने शुरू किए तब उसे भी उसी परपरा का पहले अवलम्बन करना पडा जो उसके लिए बडी झल्लाहट की चीज़ हो गई और नतीजा यह हुआ कि चूकि वह सर्वथा नये रूप के नाटक न लिख सका, पुराने नाटको की पद्धति भी पूर्णत कायम न रख सका और दोनो का सन्तुलन बिगड गया। यूरिपिडीज ग्रीक ट्रैजेडीकारो मे सबसे अधिक प्रभावशाली था। उसकी अभिरुचि मानव-विकारो और आवेगो मे थी। इसी कारण उसके नाटको मे एक ऐसी ध्वनि उठी जो इस्किलस और सोफोक्लीज़ की पुरानी पद्धति से भिन्न थी। उसके नाटक वर्तमान काल के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और समस्या नाटको के अनकूल थे। उसके प्रधान नाटक शक्तिमान, भावावेगो से प्रेरित सशक्त व्यक्तित्वो के पारस्परिक सघर्ष को केन्द्रित करते हैं। 'मीडिया' घृणा से प्रेरित है, 'फीड्रा' प्रणय से और 'आगावे' धार्मिक कट्टरता से। मानव-स्वभाव के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति ने यूरिपिडीज को नई 'कॉमेडी' का जनक बना दिया और इसी कारण उसकी कॉमेडी प्राचीनो के बीच सोफोक्लीज की कला की असाधारण कुशलता के बावजूद अधिक लोकप्रिय हो गई। यूरिपिडीज ने १७ ट्रैजेडी (दु खान्त नाटक) और एक व्यग्य नाटक लिखा। वह ग्रीस की पाचवी सदी ईस्वी पूर्व के महान् तीन नाटककारो मे से है। कोरस-गायनो का चलन अब उठने लग गया और उनको वस्तुत विष्कम्भक बना दिया गया। यूरिपिडीज को भी नाटक को धार्मिक शिक्षण का वाहन बनाने मे कुछ विशेष अभिरुचि न थी, यद्यपि उसका उपयोग पारस्परिक धर्म की कमजोरिया प्रदर्शित करने मे वह न चूका। उसकी विशेष अभिरुचि वस्तुत, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, पात्रो की पारस्परिक मनोवृत्तिक प्रतिक्रिया के प्रदर्शन मे थी। नये प्रसग, विनोदपरक डायलॉग, करुण, यथार्थ वस्तुतत्व—यूरिपिडीज की भावश्रृखला की कडिया थे। वह नाटक अपनी अनूभूति और समसामयिक जीवन की आलोचना के रूप मे लिखना चाहता था जो परपरागत ट्रैजेडी की शैली द्वारा सम्पन्न करना सम्भव न था। उसकी इस प्रवृत्ति की उसके समकालीनो ने कटु आलोचना भी की और एरिस्टोफेनीज[1] ने तो उसपर गहरी चोट की, परन्तु यूरिपिडीज ने नाटक के आने वाले रूप का आरम्भ कर ही दिया। चौथी सदी ई० पू० मे भी ट्रैजेडी लिखी गई, परन्तु वह कमजोर थी और केवल दार्शनिक विचारो अथवा व्याख्यानो का वाहन बनकर ही प्रस्तुत हुई।

पाचवी और चौथी सदी ई० पू० के प्रारम्भ की पुरानी कॉमेडी ग्रीक ट्रैजेडी की ही भाति पुरानी परपरा की एक विशिष्ट साहित्यिक शैली थी। उसके विकास का हमे सही अन्दाज नही लग पाता क्योकि उस प्रकार के केवल एक ही नाटककार, एरिस्टोफेनीज़, के ग्यारह नाटक हमे आज उपलब्ध है कॉमेडी भी ट्रैजेडी की ही भाति दियोनिसस की पूजा मे ग्राम्य त्यौहार के प्रदर्शनो के आधार से उठी जान पडती है।

१. Aristophanes (४५० ई० पू०)

एरिस्टोफेनीज एथेन्स की पुरानी कॉमेडी का सबसे प्रधान लेखक था। उसका रचना-काल पेलोपोनेसियन युद्ध-काल था और उसने अपने अनेक नाटको मे उस एथेस स्पार्टा के विध्वसक युद्ध का अन्त कर शाति की स्थापना के पक्ष मे आवाज उठाई। इन नाटको मे युद्धवादी राजनीतिज्ञो और जगबाजो तथा एथेस की नीति की खिल्ली उडाई गई है। उसने अपने नाटक 'मेघ' तथा साहित्यिक आलोचनाओ और प्रहसनो मे सॉक्रेटीज के सोफिस्ट दर्शन पर भी प्रहार किया। पुरानी कॉमेडी को आधार बनाकर अरिस्टोफेनीज ने बडी ईमानदारी के साथ भडैती के माध्यम से ही, सही, लिखा और एथेन्स के सामान्य नागरिक की साधुता मे अपनी आस्था प्रकट की।

इस पुरानी 'कॉमेडी शैली' का ग्रथन 'ट्रैजेडी' से सर्वथा भिन्न था। इसमे उसकी 'यूनिटी' (एकता) न थी। अद्भुत और अजब से आरम्भ कर 'कॉमेडी' उत्तरोत्तर भडैती के स्वतत्र प्रसग—एक के बाद एक फार्स—अपने सूत मे पिरोती जाती थी। इनमे देव-प्रहसन, पौराणिक कथानक सभी स्थान पाते थे। धर्म की तो इसमे बडी भद्द की जाती थी। सार्वजनिक नेता, सस्थाए, राजनीति सभी कुछ नितान्त बेहरमी से इसकी पैरोडी और व्यग्य के प्रसग और शिकार बनते। कहना न होगा कि इस पुरानी कॉमेडी के प्रसग-प्रहसन अनेक बार काफी भद्दे, भोडे, फूहड होते। उनका उदय ही देहाती, सर्वथा ग्राम्य आधारो से हुआ था और चौथी सदी ई० पू० का शिष्ट एथेन्स अब उसे अगीकार नही कर सकता था। धीरे-धीरे भडैती का स्थान समूचे समाज की प्रदर्शित आलोचना ने ले लिया और इस समाज का निदर्शन 'स्टॉक' पात्रों के माध्यम से होने लगा। इस नई साधना के समूचे मॉडल हमे आज उपलब्ध नही, उनके खडमात्र मिले है।

इस 'नई कॉमेडी' का रूप यूरिपिडीज़ की ट्रैजेडी से प्रभावित करुणा, यथार्थ, रागात्मकता आदि के सम्मिश्रण से हुआ। इसका प्रमुख विधायक मिनैण्डर[1] था। उसने अपने आचारवादी नाटकों का सृजन एथेन्स के सामाजिक उपकरणो से किया। उसके नाटको से समकालीन समाज के अनिश्चय और आध्यात्मिक अशाति का परिचय मिलता है। इनके साथ उसके चरित्र चित्रण और डॉयलाग, करुण व्यजनाओ तथा वास्त-विकता की पकड मिलकर जादू का असर पैदा करते है। कुछ अजब नही कि उस प्राचीन काल मे वह साहित्य मे स्तुत्य हो गया हो। उसके कुछ नाटक-खड हमे उपलब्ध है, इनके विषय हैं . 'सामोस की लडकी', 'कटे बालो वाली लडकी', 'मध्यस्थ'।

मिनैण्डर ने जिस 'नई कॉमेडी' का प्रारम्भ किया, वह वस्तुत· हमारे वर्तमान ड्रामा का आरम्भ था। उसके घटनास्थल ग्रीक जगत के नगर हैं और पात्र काल्पनिक परन्तु समसामयिक समाज के स्पष्ट नागरिक। परिस्थितिया तात्कालिक सामाजिक समस्या-प्रश्नो से बनती है—प्रणय, सपत्ति, सामाजिक पद सबधी, जिनके प्रति पात्रो

१. Menander (३४२-२९१ ई० पू०)

की प्रतिक्रिया कथानक के विशिष्ट प्रसगो का रूप धारण कर लेती है। देव समाज का अन्त होकर सहज प्रकृत मानव समाज का उदय होता है। समाज की खामिया, उसके गुण-दोष, उपकार-अपकार इन नाटको मे प्रतिबिम्बित होने लगते है। सही, उनका स्तर टेकनीक की दृष्टि से, अनेक आलोचको की राय मे पाचवी सदी ई० पू० के नाटको से नीचे है, पर निस्सदेह सावधि समाज और पिछले काल मे इनकी लोकप्रियता अक्षुण्ण हुई।

: ४ :

गद्य

वक्तृता

अन्य साहित्यो की ही भाति ग्रीक-साहित्य मे भी गद्य का उदय अपेक्षाकृत पीछे हुआ, पद्य से बहुत पीछे, प्राय चौथी सदी ई० पू० मे, जब तक वीरकाव्यो, लिरिको और ड्रामा की प्रतिभा बृद्ध हो चली थी। गद्य-निबन्ध का प्रारम्भ छठी सदी ई० पू० मे आयोनिया मे हुआ। इसी आयोनिया नाम से भारतीय ग्रीको को 'यवन' रूप मे जानते थे। उस सदी तक, अथवा उसके प्रसार काल मे भी, अधिकतर दार्शनिक विचार पद्य मे ही प्रकट किए जाते थे। परन्तु शीघ्र ही लोगो की समझ मे आ गया कि तर्कयुक्त दार्शनिक विवेचन पद्य की भाषा मे नही हो सकता और उसका समुचित माध्यम गद्य ही होगा। अब तक गद्य का उपयोग कहानियो और सरकारी लेखो मे ही होता था, अब दर्शन के क्षेत्र मे भी होने लगा। आयोनिया के नगरो के ईरानियो द्वारा विध्वस हो जाने पर वह परम्परा एथेन्स मे सोफिस्टो और वक्ताओ ने विशेषत विकसित की। उनके प्रतिमान थे अफलातू (प्लैटो),[१] इसोक्रेटीज़[२] और डैमस्थेनीज़[३]। और यह पाचवी शती ई० पू० के उत्तरार्द्ध मे ही सम्भव हो सका। दार्शनिक विवेचन और ऐतिहासिक साहित्य का निर्माण रैहटॉरिक (वक्तृताओ) के ग्र थन से पूर्व हुआ परन्तु वक्तृताओ की शैली ने साहित्य पर उनसे कही गहरी अपनी छाप डाली। वक्तृताओ का प्राचीन ग्रीस मे सदा से मान रहा है, होमर के समय से ही। परन्तु पाचवी शती ई० पू० से पहले साहित्यिक शैली अथवा कला के रूप मे कभी उसका प्रयोग नही हुआ था। प्राचीनतम वाचालों की कृतिया तो आज प्राप्त नही परतु उनके कुछ नाम पुरानी परपरा मे आज भी अनजाने नही है। जिन प्राचीनतम वक्ताओ के नाम जाने हुए है, उनमे प्रधान सिसिली के कोरक्स[४] और टीसियस[५] के है। ४६५ ई० मे निरकुश शासन का अन्त कर जब जनसत्ताक राज्य

---

१ Plato (४२७-३४७ ई० पू०), २. Isocrates (४३६-३३८ ई० पू०)
३. Demosthenes (३८४-३२२ ई० पू०), ४ Corax, ५. Teisias

की वहा स्थापना हुई, तब स्वाभाविक ही वाक्साधना का उदय हुआ। पेरिक्लियन युग पर तो उनका प्रभाव नही पडा क्योकि असाधारण वक्ता स्वय पेरिक्लीज[१] का गद्य काव्य की प्रवाह शैली से अभिराम बन जाता था और पेलोपोनेसियन युद्ध-काल की उसकी वक्तृताए अपना आदर्श आप है। परन्तु सोफिस्ट दार्शनिको ने जो सिसिली के वक्ताओ को अपने प्रतिमान बनाकर गद्य की एक सम्यगधीत वाक्शैली की नीव डाली वह सिसिली की वाक्सत्ता का ही प्रसार था। इन सोफिस्टो मे इस दिशा मे प्रधान था ल्योन्तिनी का गोर्गियस[२] जिसने परस्पर विरोधी पदो और विचारो की शृखला-शैली का प्रारम्भ किया। साधु और अविकल ग्रीक गद्य-सरणी का विकास थ्रैसीमकस[३] ने किया। इनके अतिरिक्त अनेक सोफिस्टो ने व्याकरण और भाषा का अध्ययन कर न्यायालयों और जनसत्ताक समितियो मे व्यवहृत होने वाली वाक्शक्ति को सम्पन्न किया।

एथेन्स की 'ऑरेटरी' ग्रीक साहित्य और वक्तृता-साहित्य मे अमर हो गई है। तीन प्रकार की वक्तृताओ का उल्लेख हुआ है—न्यायलय सबधी, राजनीतिक और श्राद्ध सम्बन्धी। न्यायालयो मे तो अभियुक्त सम्बद्ध सशक्त भाषा मे अपना पक्ष आप प्रस्तुत करते थे। इसीलिए अनेक बार उन्हे समर्थ शैली के लिए दूसरो का मुह ताकना पडता था। इसी कारण अनेक ऐसे वक्तृता लेखक भी एथेन्स मे थे जो वक्तृता-लेखन का पेशा ही करने लगे थे। अपने इस कार्य से उन्होने ग्रीक गद्य की शैली पर बडा प्रभाव डाला। न्यायालय मे स्वरक्षा मे दिए अन्टिफोन[४] का भाषण उस काल की वक्तृताओ मे प्रसिद्ध हो गया है। पर अभाग्यवश वह आज हमे उपलब्ध नही। उसने अपनी वह वक्तृता ४११ ई० पू० मे दी थी। पेशेवर भाषण-लेखको मे पाचवी सदी ई० पू० के अन्त काल का लिसियस[५] प्रसिद्ध हो गया है। उसका गद्य सरल और सहज है परन्तु भाषण शैली के विकास से पेचीदी वाक्चातुरी की भी आवश्यकता हुई और फलत उस दिशा मे विशेष कृत्रिम परन्तु सफल अतिरिक्त सरणी का विकास हुआ और कुछ लोगो ने अलग-अलग विषयो को अपना विशेष क्षेत्र बना लिया। डैमस्थनीज का गुरु ईसियस[६] दाय सम्बन्धी वाद-प्रतिवादों के लिए ही भाषण लिखा करता था। राजनीतिक वक्तृताओ के क्षेत्र मे डैमस्थनीज़ विशेष स्मरणीय है। मैसेडोन के फिलिप (सिकन्दर के पिता) की ग्रीक नगर-राज्यो पर चोटो ने उसे बडा प्रभावित किया और उसने राष्ट्रीयोज्जागरण मे जिस भाषण-परम्परा को जन्म दिया वह ससार के वक्तृता क्षेत्र मे बेजोड है। वह अपने भाषण लिखकर बडी योग्यता से तैयार

---

१. Periclese, २ Gorgias, ३. Thrasymachus; ४. Antiphon, ५. Lysias, ६. Isaeus

करता था। डैमस्थनीज़ भी पहले अभियोगो के सबध मे ही भाषण लिखा करता था। उसकी शैली समसामयिक ग्रीक भाषा मे प्रस्तुत असाधारण शक्तिशाली है।

परन्तु चौथी सदी ई० पू० का प्रमुख साहित्यिक ईसॉक्रटीज़ है। उसने एथेस मे वक्तृता का एक विद्यापीठ ही खोल लिया। उस पीठ के अपने विद्यार्थी और पैम्फ्लेटो द्वारा उसने समसामयिक ग्रीक गद्य और साहित्य को बडा प्रभावित किया। उसके लेखो ने ग्रीक शैली को उसका प्राजल रूप दिया और राजनीतिक पैम्फ्लेटो ने भावी हैलेनिक सस्कृति की एकता के लिए उचित पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर दी। उसीकी शैली सिसेरो के गद्य मे बोली जिसने कालान्तर मे यूरोपियन साहित्य पर प्रभूत प्रभाव डाला। नगर-राज्यो के विध्वस के बाद एथेस की वाक्प्रणाली का भी अन्त हो गया, यद्यपि उसकी विशेषताओ को वर्गबद्ध कर अरिस्टॉटल ने अपने 'रहैटॉरिक' मे स्थान दिया जिससे वे विधिवत् सरक्षित हुई।

इतिहास

इतिहास-लेखन का भी प्राचीन ग्रीक साहित्य पर प्रचुर प्रभाव पडा। पहली बार आयोनिया मे ख्यातो और पौराणिक परपराओ को क्रमबद्ध करने की प्रेरणा उठी। सरल भाषा मे स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत छठी शती ई० पू० के एक इतिहास-खड का पता चला है। उस काल मे समुद्र-सतरण सबधी भौगोलिक विचारो का भी कुछ निदर्शन तत्सामयिक (पाचवी सदी ई० पू०) साहित्य से होता है। हैरोडोटस[1] ने वैज्ञानिक दृष्टि से इतिहास लिखने का पहला प्रयत्न किया। वह पाचवी शती ई० पू० के तीसरे चरण मे हुआ। वह एशिया माइनर का ग्रीक था और उसने दूर-दूर तक यात्रा की। जहा-जहा वह गया, वहा-वहा से उसने ऐतिहासिक सामग्री एकत्र कर लिपिबद्ध की। वह ईरानी दरबार मे कुछ काल तक ग्रीक दूत के रूप मे भी रहा था। यद्यपि पहली बार उसने इतिहास की घटनाओ को कार्य-कारण के रूप मे रखा, उसके सकलन मे अधिकतर सुनी कहानियो की ही प्रधानता थी। उदाहरणत उसने भारत के दो पूछे सिंहो और सोना निकालने वाली लोमडी के बराबर ऊची दीमको का उल्लेख किया है।

पाचवी सदी ई० पू० के अन्त तक एथेस के गद्य मे विश्लेषणात्मक सरणी का आरभ हो चला था। इस शैली का प्रधान इतिहासकार थ्यूसीडाइड्ज़[2] था। ग्रीक इतिहासकारो मे वह सर्वाधिक वैज्ञानिक और गभीर है। पेलोपोनिसियन युद्ध ने ग्रीक सस्कृति को झकझोर दिया था। उसी काल होने वाले इस इतिहासकार ने उस सस्कृति की मान्यताओ

---

१ Herodotus (४८५-४२५ ई० पू०), २. Thucydides (४६०-४०० ई० पू०)

को समझने के लिए ग्रीक समाज का इतिहास लिख डाला। उसका विश्लेषण, निष्पक्ष मूल्याकन, न्याय, सगति और घटनोल्लेख का असाधारण क्रम उस काल की इतिहास-रचना मे अद्भुत है। उसका इतिहास-निरूपण हैरोडोटस की पद्धति से सर्वथा भिन्न था। उसने उसमे युद्ध नायको की वक्तृताओ का भी काल्पनिक सकलन किया। फिर भी सूत्र शैली से लिखने वाले उस इतिहासकार की सरणी अनेक बार दुरूह हो गई। उसका महत्व वस्तुत उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और कार्य-कारण रूप मे घटनाओ के अनुक्रमिक विकास पर अवलम्बित है।

इतिहास-परपरा के ही लेखक क्सैनोफोन[१] और इसॉक्रेटीज के शिष्य इफोरस[२] और थ्योपॉम्पस[३] भी थे। क्सैनोफोन ने स्पष्ट और सरल भाषा का निश्चय ही उपयोग किया परतु विश्लेषक अथवा समष्टिवादी लेखक के रूप मे वह सफल न हो सका। ईसॉक्रेटीज के शिष्यो ने आदर्शवादी नैतिक दृष्टिकोण का इतिहास मे सहारा लिया परतु प्रतिपाद्य का उचित विश्लेषण और मूल्याकन उनसे न हो सका। इफोरस ने ग्रीस का एक इतिहास निस्सदेह प्रस्तुत किया।

दर्शन

इतिहास की ही भाति दार्शनिक गद्य का प्रारम्भ भी छठी सदी ई० पू० के अन्त और पाचवी सदी ई० पू० के आरम्भ मे आयोनिया मे ही हुआ। इसकी भाषा भी साधारणत नीरस थी। इसी दार्शनिक गद्य की परपरा मे हिपोक्रेटीज[४] की चिकित्सा सबधी लेख-शैली भी है। उसने पाचवी सदी ई० पू० के तृतीय चरण मे लिखा। दार्शनिक विवेचन की गद्य-प्रसूति सौक्रेटीज[५] से हुई। सुकरात ने स्वय कुछ लिखा नही, परन्तु उसके डायलॉग उसके शिष्य प्लेटो ने उसके नाम से पीछे प्रस्तुत किए। प्रश्नोत्तर-रूप मे दार्शनिक विवचन का सुकरात ने जो आरभ किया वह पिछले काल मे परिपाटी ही बन गया। प्लेटो (अफलातू) सुकरात का शिष्य था, ग्रीक गद्य के महान निर्माताओ मे से एक और ग्रीक दार्शनिको मे सबसे गभीर। उसके विचार उसके डायलॉगो मे सुरक्षित है। उसकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'रिपब्लिक' है, एक काल्पनिक जगत् (युटोपिया), जिसमे उसने सामाजिक न्याय पर विचार किया है। 'लाज' उसकी अपेक्षाकृत पार्थिव कृति है। उसकी शैली बडी शक्तिम है और इसी कारण उसके सारे ग्रथ आज सदियो पार भी सुरक्षित और प्राप्य है। प्लेटो की ही भाति अरिस्टॉटल (अरस्तू[६]) के ग्रथ भी व्याख्यापरक ही हैं। अरिस्टॉटल ने सारे ज्ञान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया—राजनीति, विज्ञान, दर्शन, वक्तृता-साहित्य, आलोचना। पाश्चात्य यूरोपियन दार्शनिकों पर जितना उसका प्रभाव पडा उतना और किसीका

---

१. Xenophon; २. Ephorus ; ३. Theopompus, ४ Hyppocrates, ५. Socrates ; ६. Aristotle (३८४-३२२ ई० पू०)

नही। सभी दिशाओ मे वह गुरु माना गया। साहित्य के क्षेत्र मे उसकी 'पोएटिक्स' ने प्रभूत प्रभाव डाला। ड्रामा का वह ग्रीक साहित्य मे पहला अध्ययन था। यूरोपियन आलोचना-शास्त्र का आरभ इसी ग्रथ से होता है। उसने 'रहैटोरिक' वक्तृता-शैली का निरूपण किया। उसने लिखा बहुत, परन्तु वह सारा साहित्य-क्षेत्र के अतर्गत नही रखा जा सकता।

: ५ :

हैल्लेनिक युग

क्लासिकल युग के साहित्य का निर्माण नगर-राज्यो की बदलती परिस्थितियो का अनुवर्ती है। हैल्लेनिक युग का साहित्य राजसत्ताक नगरो की अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुकूल विकसित हुआ। यह पिछला साहित्य अपने समाज का प्रतिबिम्ब न बनकर सार्वभौम परपरा का जनक हुआ। दूर-दूर के देशो मे सिकंदर की विजयो के परिणामस्वरूप ग्रीक केन्द्र प्रतिष्ठित हो गए थे, जो इस काल साहित्य के भी केन्द्र बने। इनमे प्रधान थे—मिस्र का सिकन्दरिया (अलैग्जेन्ड्रिया), सीरिया का अन्टियोक, एशिया माइनर का परेगामम। इन नगरो के राजकुलो ने विद्वानो और साहित्यिको का सम्मान और संरक्षा कर ज्ञान की खोज मे हाथ बटाया। इनमे प्रमुख सिकन्दरिया का टॉलेमी राजकुल था जिसने वहा प्राचीन जगत् का प्रख्यात पुस्तकालय और संग्रहालय स्थापित किया। भोज की ही भाति इस कुल के राजाओ ने भी साहित्य-पण्डितो और ज्ञान-पिपासुओ की वृत्ति बाध दी। एथेन्स की परम्परा अपनी प्राचीनता के कारण अक्षुण्ण बनी रही और प्लेटो और अरिस्टॉटल द्वारा स्थापित वहा का दार्शनिक पीठ भी चलता रहा। दूर के स्वतत्र प्रान्तीय ग्रीक नगरो मे क्लासिकल का ही अनेकार्थ मे अनुकरण हुआ, यद्यपि विज्ञान के क्षेत्र मे 'बर्बर' जगत् की कृतिया भी सर्वथा उपेक्षित न हो सकी।

काव्य

चौथी सदी ई० पू० मे जीवन से सम्पर्क छूटते ही ग्रीक काव्यधारा में शिथिलता आने लगी। कुछ कवियो ने जहा-तहा वीरकाव्य की रूपरेखा बनाए रखी परन्तु लिरिक काव्य की सीमा तो कुछ वैयक्तिक रचनाओ तक ही परिमित हो गई। इनका उपयोग कोरसो मे होता था, जहा अर्थ-गौरव से कही बढकर मर्यादा ध्वनि-गौरव की थी। ड्रामा का सम्बन्ध भी जीवित धार्मिक विश्वासो से टूट गया था और अब उनका स्वरूप कृत्रिम हो गया था।

उस काल के कवियो का अखाडा सिकन्दरिया था। वे अधिकतर वहा के ग्रन्थागार या सग्रहालय के अफसर थे या टॉलेमी राजकुल के दरबारी। जीवन से सम्पर्क टूट जाने से वे प्राचीन को साध्य मान काव्य-साधना करते थे जिससे उनकी कृतिया अस्वाभाविक

और पूर्वपरक हो गई। जो कमी उन्हे समकालीन वर्तमान की अवज्ञा से होती थी उसकी पूर्ति वे अपनी रचना की निखार आदि से करते थे। उनकी रचनाए भी साधारणत इतनी विद्वत्तापूर्ण होती कि मजबूर होकर अपने श्रोतावर्ग के लिए उन्हे अपने-से ही लोगो पर निर्भर करना होता था।

इस काल काव्य-क्षेत्र मे दो दल हो गए। एक का नेता कालीमेकस[1] था, दूसरे का अपोलोनियस[2]। कालीमेकस सिकन्दरिया-काव्य-प्रकार (स्फुट कविताओ) का प्रवर्तक था और होमर आदि की प्राचीन वीर काव्यधारा का विरोधी। उसका रोड्स के अपोलोनियस से काव्यादर्श के सम्बन्ध मे भारी मतभेद रहा। अपोलोनियस वीरकाव्यो का हिमायती था। स्वय अपने काव्य 'आर्गोनौटिका' मे उसने प्राचीन देवोत्तर प्रसगो को काव्याधार बनाया। कालीमेकस का ही दल इस विवाद मे विजयी हुआ और तात्कालिक रोमाटिक स्फुट कविताओ का बोलबाला हुआ। उसका अनुगमन अनेक रोमन कवियो ने किया। कालान्तर मे उसी माध्यम से इस काव्य-परपरा का प्रभाव पाश्चात्य यूरोपियन साहित्य पर भी पडा। इस परपरा के सिकन्दरिया के कवियो मे विख्यात थियोफ्रास्टस[3] था, जिसने गडरिया-गानो से ओत-प्रोत स्फुट कविताओ का विकास किया। उसकी कविताओ का अनुकरण उसके समय मे और पश्चात्काल मे काफी हुआ।

इस काल वैज्ञानिक प्रसगो का भी छदोबद्ध निरूपण हुआ। जैसे भारत मे भी प्राचीन काल मे वैद्यकादि के ग्रथ पद्य मे लिखे गए। सिकन्दरिया के कवियो ने भी अनेक लोकप्रिय वैज्ञानिक और चिकित्सा-ग्रन्थो को पद्य रूप दे दिया। पर सारी इस प्रकार की कविताए जन-रुचि से दूर थी, परे।

नकल और अश्लील के प्रति लोगो का आकर्षण अधिक था और जब हैराडास ने समसामयिक जीवन से खीचकर कुछ नाटकीय स्केच चलती भाषा मे लिखे तो वह बडा लोकप्रिय हो उठा। हैल्लेनिक युग की सुन्दरतम कविताए तीसरी सदी ई० पू० मे लिखी गई जो सग्रहो मे सग्रहीत हुई। इस प्रकार के एक सग्रह का नाम जिसमे बिजेन्टाइन काल तक की कविताए संग्रहीत है 'ग्रीक ऐन्थॉलोजी' है।

गद्य

वस्तुतः इस काल का प्रधान साहित्य गद्य मे प्रस्तुत हुआ। दार्शनिक व्याख्याओ के इस युग मे ऐसा होना स्वाभाविक था। 'स्टोइक', 'सिनिक' और 'एपिक्यूरियन' दर्शनो का आविर्भाव अधिकतर इसी काल हुआ। इनमे से पहले दोनो विचारक प्लेटो के अनुवर्ती ही थे। एपिक्यूरियन लेखको ने साहित्यिक शैली को विशेष प्रश्रय नही दिया। जो

१. Callimachus (३१०-२४० ई० पू०); २. Apolonius (२९५-२१५ ई० पू०);
३. Theophrastus (ज० ३०० ई० पू०)

भी हो, इन दार्शनिक व्याख्याओ का प्रतिपाद्य विषय अधिकतर व्यावहारिक आचार था। इस काल के गद्य-लेखको मे प्रधान थियोफ्रास्टस हुआ। इसी काल जीवन-चरितो का लिखना भी प्रचलित हुआ। जीवन-चरित के लेखको के इस वर्ग को 'पेरिपैटेटिकस' कहते थे। इनके चरित मे गप्पो का पुट काफी होता था।

हैल्लेनिक युग की प्रधान रचनाए इतिहास और विज्ञान के क्षेत्र मे हुई। छोटी-छोटी ग्रीक सेनाओ के बल पर सुदूरपूर्व के विस्तृत प्रदेशो पर शासन करने वाले दुर्द्धर्ष सामरिको की कमी न थी और वे सहज ही इस काल की कृतियो के नायक बन गए। इन देशो मे बस जाने वाले ग्रीको ने इन्ही देशो का इतिहास लिखा और इसी कारण स्थानीय रीति-रिवाजो का विस्तार भी उनमे प्रचुर हुआ। भारतीय विषयो पर भी अनेक ग्रथ तब रचे गए। भारत के पश्चिमी भाग पर अनेक ग्रीक राजाओ ने तब प्राय दो सदियो तक राज किया। इसी इतिहास-परपरा मे मिस्र का इतिहास लिखने वाला मानेथो[१] भी है और बेबीलोनिया का इतिहास लिखने वाला बेरोसस[२] भी। पर, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, इन इतिहासो मे अधिकतर मिश्रण दन्तकथाओ और काल्पनिक गद्यो का ही था। सही इतिहासकार पोलीबियस[३] हुआ जिसने चौथी सदी ई० पू० के वक्तृता-प्रधान इतिहास-शैली को छोड वैज्ञानिक परपरा मे इतिहास लिखा। रोमनो ने दूसरी शती ई० पू० मे भूमध्य सागर के पूर्ववर्ती प्रदेश जीतकर ग्रीस आदि पर एक नया साम्राज्य स्थापित किया। पोलीबियस, जो स्वय सैनिक और राजनीतिज्ञ था, पकडकर रोम ले जाया गया, जहा वह महान् रोमनो के सपर्क मे आया। वहा उसने रोमन साम्राज्य की सभावनाओ पर विचार किया और भूमध्य सागरवर्ती जगत् का २६६ ई० पू० से १४४ ई० पू० तक का इतिहास लिखा।

यहा वैज्ञानिक ग्रन्थो का उल्लेख निरर्थक होगा, चूकि साहित्य के विकास पर उनका विशेष प्रभाव नही पडा। पर इसी दिशा मे भाषाशास्त्र और व्याकरण, तिथिक्रम आदि पर काफी कार्य हुआ। यह विशेषत. भाष्यो और टीकाओ का युग था। प्राचीन हस्तलिपियो को मिलाकर पुराने साहित्यकारो की रचनाओ के पाठ शुद्ध किए गए, भाषा को एक नया रूप दिया गया, लेखको की परिभाषा कर उनको अनेक वर्गो मे बाट दिया गया। होमर से लेकर अरिस्टॉटल तक के लेखको को हम आज जो 'क्लासिकल' कहते है वह नामकरण इसी काल हुआ।

: ६ :

रोमन साम्राज्य कालीन साहित्य

दूसरी पहली सदी ई० पू० मे निकट पूर्व के ग्रीक राज्य रोमन शक्ति के शिकार हो

१ Manetho , २. Berosus ; ३ Polybius (२०१-१२० ई० पू०)

गए, जिन्हे २७ ई० पू० मे अन्तत सम्राट ऑगस्टस ने रोमन प्रान्त बना लिए। फिर भी पूर्व की ग्रीक सस्कृति मरी नहीं, नया साहित्य नित्य रचा जाता रहा, यद्यपि परापेक्षी होने के कारण उसमे मुटाई तो रही पर ताजगी न आ सकी। पहली सदी ईस्वी मे ग्रीक साहित्य मे एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ। तभी उस काल के दो प्रधान ग्रीक साहित्यकार हुए—प्लूटार्क[1] और लूसियन[2]। परन्तु शीघ्र ही वह पहली सदी की समृद्धि भी विलुप्त हो गई जब तीसरी सदी ईस्वी मे साम्राज्य मे गृहयुद्धो का ताता बध गया। सम्राट् डायोक्लेशियन और कॉन्स्टैन्टाइन के सुधारो से कुछ सहारा निश्चय ही मिला परन्तु कॉन्स्टैन्टाइन जब ईसाई हो गया तो बहुदेववादी ग्रीक साहित्य-परपरा को बडी ठेस लगी। यद्यपि इससे इन्कार नही किया जा सकता कि ग्रीक साहित्य के ह्रास के बावजूद ग्रीक भाषा का दबदबा बना रहा और ईसाई ग्रन्थकार उस भाषा और दार्शनिक परपरा का उपयोग करते रहे।

रोमन साम्राज्य-काल मे भी कविताए कम लिखी गईं (उस युग की कविताए जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, 'ग्रीक ऐन्थॉलोजी' मे सग्रहीत है) अधिकतर रचनाए गद्य मे ही हुईं। पहली ईस्वी पूर्व के उत्तरार्द्ध मे जो एक अनुकूल प्रतिक्रिया हुई तो साहित्य पर भी उसका अच्छा प्रभाव पडा और साहित्यालोचन पर कुछ ग्रथ लिखे गए। इन लेखको मे हैलीकर्नासस का डायोनीसियस[3] और लॉन्जाइनस[4] प्रधान हुए। डायोनीसियस ने भाषा, शैली आदि के सम्बन्ध मे अच्छा विचार किया। साथ ही उसने डैमस्थेनीज़ की प्रशसा और थ्यूसीडाइड्ज की खरी आलोचना भी की यद्यपि उसका अपना स्वय का 'रोमन एण्टिक्विटीज' नामक इतिहास कुछ स्तुत्य नही उतरा। हा, लान्जॉइनस के लिए निस्सदेह वही बात नही कही जा सकती क्योकि उसने ग्रीक साहित्य मे मनोवैज्ञानिक आलोचना की सर्वोत्तम कृति प्रस्तुत की।

---

१. Plutarch (४६-१२७); २. Lucian (१२०-१८०), ३. Dionysius; ४. Longinus

७. चीनी साहित्य

: १ :

आरम्भ

चीनी आज ससार की जनता के चौथाई भाग की भाषा है। करोडो-करोडो चीनी उसे बोलते है और प्राय उसी प्रकार बोलते आते है जैसे सहस्राब्दियो पहले उनके पूर्वज बोलते आए थे। इसका अर्थ यह नही कि उस भाषा मे परिवर्तन नही हुए। परिवर्तन हुए और पर्याप्त, जैसा ऐसी भाषा के लिए स्वाभाविक है, जो सहस्राब्दियो से, लाखो वर्ग मील मे फैले विस्तृत देश के निवासियो द्वारा बोली जाती रही हो। चीनी भाषा स्वय चीन मे तो बोली ही जाती है, उसका औपनिवेशिक भाषा-साम्राज्य उसके चतुर्दिक् बसने वाले परवर्ती जनसमूहो पर भी फैला हुआ है। वे जनसमूह अपनी भाषा और साहित्य के लिए चीन के किस मात्रा मे ऋणी है, कहने की आवश्यकता नही, उसका अटकल लगाया जा सकता है।

चीन का साहित्य विपुल और विशद है, जिसका विस्तार ताम्रयुग से आज तक है। आज ४,००० वर्षो से पीढी-दर-पीढी उस पीली भूमि की सतति ने निरतर अपना जीवन शब्दो मे उतारा है। आरम्भ मे ही चीनी जाति अपने हृद्गत भावो को गायन का रूप देने लगी थी :

सुबह होती है तो मै काम में खो जाता हूं
सांझ होती है तो आराम से सो जाता हूं
खोदता हूं मै कुआं प्यास बुझाने के लिए
खेत मै जोतता हूं भूख मिटाने के लिए
राजसत्ता को भला मुझसे सरोकार है क्या ?

इस गीत का शब्द-शब्द चीनी जीवन का रहस्य खोलता है, जो आज भी उतना ही सत्य है, जितना वह तब था, जब रचा गया था। आज भी चीनी अपनी ज़मीन का मालिक है और शोषण के अनवरत प्रयत्नो को लाघ आज फिर उसने अपना यह गान सार्थक किया है। अन्तर बस इतना ही है कि आज उसे उस राजसत्ता को चुनौती नही देनी पड़ती, जिसका सकेत इस गीत मे है क्योकि आज चीनी किसान स्वय एक राजसत्ता है।

जैसे-जैसे जीवन मे प्रगति होती गई, चीनी जाति की आत्मा 'ओडो' और 'बैलेडो' मे प्रकट होती गई। उन्हे उन्होने मुरली और तन्त्री के स्वर से साधा और ध्वनित किया।

उनकी आवाज़ कभी दबाई नही जा सकी और उस आवाज की झकृति अन्तर की प्रेरणा बनकर चीनी आकाश पर छा गई। चाऊ वश के दसवे राजा लिनवाग (८७८-८४२ई०पू०) से शाऊ के अमीर ने कहा था—"नदियो की बाढ रोकने से कही अधिक खतरनाक जनता का मुह बन्द करना है। नदियो की बाढ रोकने का अर्थ है उन्हे फैलने को मजबूर करना और उसका परिणाम होता है उसके स्वाभाविक प्रवाह की अपेक्षा कही अधिक हानि। आकाश के पुत्र (राजा) को ज्ञात है कि तब शासन किस प्रकार किया जाता है, जब अफसर और पंडित आज़ादी से कविता करते है, अधगायक अपने बैलेड गाते है, इतिहासकार अपने इतिवृत्त लिखते हैं, जब सगीत के दीवाने सुर और ताल का विस्तार करते है और सैकडो-सैकडो कलावन्त और अन्य जन यथाकाम कथनीय व्यक्त करते है।"

काश, शाऊ का यह मन्त्र आज की राजसत्ताओ की बुद्धि को छू पाता !

चाऊ-काल से चली आई वक्तव्य की स्वाधीनता चीनी इतिहास की बहुमूल्य प्रेरणा है। इसी कारण गद्य और पद्य मे, इतिहास, दर्शन और राजनीति मे, उपन्यास और नाटक मे चीनी साहित्य इस ऊचाई को पहुच सका। अस्थियो और अभी हाल के मिले शाग वंश के ताम्र भाण्डो पर खुदे अभिलेखो से प्रकट है कि प्राय आज से साढे तीन हजार वर्ष पहले ही चीनियो ने अपनी लिखित भाषा का साहित्यिक विकास कर लिया था।

चीनी लिपि का प्राचीनतम आविष्कार हुआग टी (लगभग २६९७-२५९६ ई० पू०) के शासनकाल मे हुआ। उसकी राजसभा का विचक्षण लेखक चिएह[1] उस लिपि का अनुसन्धाता माना जाता है। वह लिपि अनेक प्रकार की चित्राकृतियो से युक्त है। और 'टज़ू' (अक्षर) कहलाती है। क्रमश अक्षरो की सख्या बढती गई और कालान्तर मे उनका एक जगल-सा खडा हो गया। यहा चीनी लिपि अथवा भाषा के शास्त्रीय निर्माण के सम्बन्ध मे लिखना अभीष्ट नही। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि चित्रवत् होने के कारण चीनी अक्षर भी पहले बास और लकडी की तख्तियो और रेशमी कपडो पर एक प्रकार के फाउन्टेन पेन द्वारा लिखे जाते थे। बाद मे प्राय तीसरी शती ई० पू० मे जनरल मेग ट'ईन ने लेखनी के स्थान पर ऊट के बालो के बने ब्रुश से लिखने की प्रथा चलाई और १०५ ई० मे ट्साईलुन ने कागज का निर्माण कर लेखन-विज्ञान मे क्रांति कर दी। चीनी लिखावट ऊपर से नीचे को होती है, यद्यपि आज चीन मे भी लिखने का तरीका पडी लकीरो मे बाए से दाहिने को हो गया है।

चीनी साहित्य अपने विकास के कालक्रम के अनुसार अनेक भागो मे बाटा जा सकता है, प्रायः नौ भागो मे, जो इस प्रकार हैं—(१) क्लासिकल युग, (२) कन्फ्यूशस युग, (३) टाओ और बौद्ध युग, (४) स्वर्णयुग, (५) समृद्धि-युग, (६) उपन्यास

---

१. Ts' Ang Chieh

श्रौर नाटक-युग, (७) पुनर्जागरण युग, (८) श्राधुनिक युग, (९) समाजवादी वर्तमान युग। नीचे हम इन विविध काल-प्रसारो मे विकसित होने वाले विशद चीनी साहित्य पर प्रकाश डालेगे।

: २ :

क्लासिकल युग

(२०००–२०२ ई० पू०)

चीनी सभ्यता का जन्म पीली नदी की घाटी मे हुश्रा। वही प्राथमिक ऐतिहासिक राजवशो का जन्म हुश्रा श्रौर वही चीनी लिपि की कला का भी प्रादुर्भाव हुश्रा। वहां ई० पू० दूसरी सहस्राब्दि मे हसीया राजकुल ने पहले शासन किया फिर शाग राजकुल ने। पहले शासन-काल मे नदियो की बाढ रोकने के प्रयत्न हुए श्रौर उस दिशा मे प्रयत्नशील सम्राट् यू के प्रयत्न प्रशस्ति के रूप मे लिख डाले गए। हाल के पुरातात्विक प्रयासो ने प्राचीन चीनी नगरो के भग्नावशेष खोद डाले हैं, जिनसे चीनी सस्कृति पर प्रभूत प्रकाश पडा है। उस काल की कुछ कविताश्रो का उल्लेख 'शिह चिंग' (गीतो की पुस्तक) श्रौर 'शू चिग' (इतिहास के ग्रन्थ) मे मिलता है।

शाग वंश के पतन के बाद चाऊ चीन के स्वामी हुए। वैन श्रौर वू ने शासन को एक नया रुख दिया श्रौर देश के तरुणो को शिक्षित करने के लिए स्थान-स्थान पर स्कूल बने। स्वयं युवराज का शिक्षण इन्ही स्कूलो मे से एक मे हुश्रा। स्कूलो की वह परपरा ससार की सभ्यताश्रो मे सभवत. सबसे प्राचीन है। चाऊ राजवश से पूर्वकालीन चीनी साहित्य का ज्ञान 'शिह चिंग', 'शू चिंग' श्रौर 'यी चिंग' श्रादि जिन सग्रहो से होता है, उनका सपादन इसी काल हुश्रा था। ७७१ ई० पू० से चाऊ राजकुल का ह्रास श्रारम्भ हुश्रा, यद्यपि तीसरी शती ई० पू० तक किसी न किसी रूप मे वह बना रहा।

इस पिछले काल मे मध्यदेश का राज्य कई सामन्ती टुकडो मे बट गया श्रौर जनता की स्थिति निरन्तर खराब होती गई। फिर भी सामन्तो ने दार्शनिको श्रौर साहित्यिक सस्कृति को सरक्षण दिया। कम से कम वाणी की स्वतन्त्रता विद्वानो को पूरी तौर से उन दिनो प्राप्त थी। परिणाम यह हुश्रा कि वह काल साहित्यिक श्रौर दार्शनिक क्रियात्मकता का युग बन गया। उस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक लाश्रो-ट्ज़ू[1], कन्फ़यूशस[2], मो-ट्ज़ू[3], मेग-ट्ज़ू (मेन्सियस)[4] श्रौर हसुन-ट्ज़ू (हसन च'इंग)[5] हुए। लाश्रो-ट्ज़ू ने श्रपने गद्यकाव्य

१. Lao Tzu ; २. Confucius (५५१-४७८ ई० पू०); ३. Mo Tzu (५००-४२० ई० पू०); ४. Meng Tzu (Mencius) (३७२-२८९ ई० पू०); ५. Hsun Tzu (Hsun Ch'ing) (२८९-२३८ ई० फ़ू)

'लाओ-ट्ज़ू टाओ-टेह् चिंग' मे उपकार का बदला नेकी से देने का उपदेश किया। कन्फ्यूशस जो उसका कनिष्ठ समकालीन था, परलोक के जीवन को परे रखकर इसी जीवन को उन्नत करने के उपदेश करता रहा और आचार सम्बन्धी अपने शिक्षण द्वारा उसने न केवल सावधि ससार का बल्कि भावी चीनी सन्तानो का भी भला किया। मो-ट्ज़ू उस काल का धार्मिक समाजवादी था, जो विश्व-प्रेम मे विश्वास करता था। उसके उपदेश मे आत्मकलह से उठकर शाति और मानव-प्रेम की पुकार है। मेग-ट्ज़ू, कन्फ्यूशस का अनुयायी और मो-ट्ज़ू का प्रबल आलोचक था। चीन मे उसने पहले पहल जनतान्त्रिक और जनसत्तात्मक प्रवृत्तियो का नारा बुलन्द किया। पहली बार उसने कहा कि जनता शासनवर्ग और राजा से कही महान् है। उसने रूसो की भाति मनुष्य को स्वभाव-सुन्दर माना है। उसने भी लाओ-ट्ज़ू और मो-ट्ज़ू आदि मानववादियो की ही भाति युद्ध के विरुद्ध निरन्तर उपदेश किए परन्तु सामन्तो के विरुद्ध जनता के विद्रोह और क्राति को उसका जन्मसिद्ध अधिकार तथा शाति का ही एक पाया माना। वैसे वह भी अन्य चीनी दार्शनिको की ही भाति शाति का प्रबल उपासक और मानवतावादी था। उसीके नाम पर उसके उपदेशो का सग्रह 'मेग-ट्ज़ू' कहलाया, जो चीन की भावी पीढियो की 'बाइबिल' बन गया। ह् सुन-ट्ज़ू, यथार्थवादी था, परन्तु मनुष्य को 'अशरफ़ुल मखलूकात' मानता हुआ भी होबेस की भाति उसे स्वभावत वह बद मानता है। फिर भी वह निराशावादी नही था, शिक्षा तथा आचार को मानव-स्वभाव का उन्नायक मानता था। वह दार्शनिक के अतिरिक्त कवि भी था और सगीत को मानवीय स्वभाव के सौदर्य का एक अग समझता था। उसने अपने विचारो को मधुर साहित्यिक शैली मे काव्य के पुट द्वारा व्यक्त किया। उसकी कृति भी उसके नाम की सज्ञा से ही प्रसिद्ध हुई।

इसके अतिरिक्त चीन ने अच्छे-बुरे दोनो प्रकार के परन्तु सशक्त चिन्तक उत्पन्न किए। शाग यांग[1] तानाशाही परपरा का पोषक था और राजनीति के क्षेत्र मे उसने कानूनी परंपरा का श्रीगणेश किया। चिन सामन्ती राज के मत्री के अधिकार से उसने नये कानूनो को प्रचलित कर उनका कठोरता से प्रयोग किया और लोगो को नई भूमि जोतने को बाध्य किया। विधान तोडने के अपराधी युवराज तक को उसने कानूनी दण्ड से बरी न किया। राजनीति-दर्शन का गभीर अध्येता और ह्सुन-ट्ज़ू का शिष्य हान फेई[2] उसका प्रशसक था, स्वय तत्कालीन चीन का स्थानीय नेता। शांग-याग की ही भाति उसका साहित्य भी राजनीतिक चिन्तन मे एक मजिल सिद्ध हुआ। ऊपर के दार्शनिक और विचारक प्राय सभी पीली नदी की घाटी के निवासी थे। परन्तु यागट्सी नदी का प्रान्त भी साहित्यिक दृष्टि से सर्वथा अनुर्वर न था। इन दार्शनिको के युग मे ही वहा अनेक लिरिक कवि हुए,

१. Shang Yang (मृ० ३३८ ई० पू०), २. Han Fei (मृ० २३३ ई० पू०)

जिन्होने काव्य की एक नई शैली को जन्म देकर लोकगाथा और गान तथा जनपद सबधी अनन्त सामग्री की बाढ से, साहित्य-भूमि आप्लावित कर दी। काव्य की यह नई धारा गद्य-काव्य की थी, जो 'फू' कहलाई। इसकी शैली 'शिह' से अनेकधा भिन्न थी। पहले तो यह कविता लम्बी २०० से ४०० असम पक्तियो की होती थी, जिसका छन्द भी असम होता था ; दूसरे इसमे सन्दर्भों और रूपको की भरमार होती थी, और तीसरे यह पढने के लिए होती थी, गाने के लिए नही।

यागट्सी प्रान्त के कवियो मे सबसे प्रसिद्ध चू यूआन[1] हुआ। कुछ काल तो चू सामन्त राज्य का मत्री था परन्तु वहा के निकृष्ट जीवन से क्षुब्ध होकर वह मिलो नदी मे डूब मरा। यह खेदजनक घटना सारे चीन मे प्रति वर्ष त्योहार के रूप मे मनाई जाती है। चू यूआन मरकर भी साहित्य मे अमर हो गया। उसकी कविताए आज भी जीवित है, विशेषकर सैनिक का मर्सिया सबधी कृति और 'ली साओ' (शोक अवसर पर मर्सिया) राजनीति के क्षेत्र मे वह काल नितान्त रक्तिम था, जिसके विरुद्ध लाओ-ट्जू के वाचाल अनुयायी चुआग चाऊ[2] ने अपनी आवाज़ ऊची की। उसे उच्चपदीय और अभिजात जनो से स्वाभाविक घृणा थी और उसने उनकी वचकता का ढूढ-ढूढकर भडाफोड किया। कन्फ्यूनस और मो-ट्जू के अनुयायियो पर उसने भीषण आघात किए। उसकी कथाए और कहानिया आत्मसमीक्षा की असाधारण प्रेरक सिद्ध हुई। उसका प्रसिद्ध ग्रथ 'चुआग ट्जू' कल्पना, विनोद, व्यग्य और सत्य की खोज का प्रतीक है। उसकी शैली चीनी साहित्य की एक मजिल उपस्थित करती है।

२२० ई० पू० चिन वश शक्तिमान होकर चीन मे साम्राज्य-पद पर आरूढ हुआ। उसके प्रतिष्ठाता शीह वाग टी (प्रथम साम्राट्) ने प्रसिद्ध चीनी दीवार खडी की, परन्तु साहित्य का वह शत्रु प्रमाणित हुआ। उसने कन्फ्यूशस के अनेक विद्वान् अनुयायियो को जीवित जला डाला और बहुमूल्य साहित्यराशि से सम्पन्न हजारो ग्रथागारो को अग्नि की भेट कर दिया। राष्ट्र की आवश्यकताओ से आख मीचकर निरतर बाल की खाल निकालने वाले विद्वानो से झल्लाकर उसने इस सहारक नीति का अवलम्बन किया था। २१० ई० पू० मे उसकी मृत्यु के बाद साम्राज्य की चूले हिल गई और लिऊ पाग नाम के एक सामान्य व्यक्ति ने निरन्तर वर्षो के सघर्ष के बाद २०२ ई० पू० साम्राज्य के सिंहासन पर आसीन हो प्रसिद्ध हन राजवश की स्थापना की। एक गौरव-युग का प्रारम्भ हुआ।

---

१. Chu Yuan (३२८-२८५ ई० पू०), २. Chuang Chou (मृ० २७५ ई० पू०)

: ३ :

कन्फ्यूशस युग

(२२० ई० पू०—२२० ई०)

हन साम्राज्यकाल अपनी विविध अर्जित ऊचाइयो के कारण चीनी इतिहास मे विख्यात हो गया है। उसका राजनीतिक विस्तार तो बडा था ही, सास्कृतिक, बौद्धिक, साहित्यिक और कला सम्बन्धी अपनी प्रेरणाओ तथा क्रियाशीलता मे भी वह इतिहास मे अग्रणी हुआ।

साहित्य के लिए वह काल स्वर्णयुग कहलाया। विध्वसक चिन सम्राट् के भय से विद्यानुरागियो ने जिन ग्रथो को इधर-उधर छिपा दिया था, उनको प्रकाश मे लाना और उनके अध्ययन का नये सिरे से प्रबन्ध करना हनो का ही काम था। इसके अतिरिक्त साहित्यिक और ऐतिहासिक सामग्री विपुल मात्रा मे उस युग मे प्रसूत हुई। साहित्यिक गद्य-पद्य अनेक शैलियो में विविध मात्राओ मे भावो से ओतप्रोत रचे गए। १३६ ई० पू० मे अनेक विद्वान् खोजे हुए ग्रथो के अध्ययन मे लगे, जिसका परिणाम पाच विशिष्ट साहित्य-वर्गो का प्रकाशन हुआ—(१)'यी चिग' (परिवर्तनो की पुस्तक),(२)'शू चिग' (इतिहास के ग्रन्थ), (३) 'शिह् चिंग' (गीतो का सग्रह), (४) 'ली ची' (क्रियाओ का ग्रन्थ) और (५) 'चून चीऊ' (वसन्त और पतझड़ के वृत्त)। उस कन्फ्यूशस समुदाय के यह ग्रन्थ धार्मिक सिद्धान्त माने गए, जिसे सम्राट् वू (१४०-८७ ई० पू०) ने राजधर्म बना दिया। १५७ ई० मे इन ग्रन्थो को शुद्ध कर ४६ विशाल प्रस्तर पट्टो पर खोद डाला गया। बाद मे इनपर अनेक भाष्य प्रस्तुत हुए, जिनकी ज्ञान-सम्पदा अपूर्व थी।

जहा प्राचीन साहित्य के अध्ययन और सग्रह मे अनेक विद्वान् लगे थे, वहा कुछ पडितो ने इतिहास-निर्माण भी प्रारभ किया। हन वश के इतिहासकारो मे सबसे प्रतिभावान् और विचक्षण स्सू-मा चीएन[१] था, जिसने 'शिह् ची' नामक विशद ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा। 'शिह्-ची' प्राचीनतम काल से लिखा १३० अध्यायो मे विभक्त चीन का इतिहास है। पिछले काल के इतिहासकारो के लिए यह ग्रन्थ असाधारण आकर सिद्ध हुआ। प्रसिद्ध आलोचक-इतिहासकार पान पिआऊ[२] ने उस ग्रथ की भरपूर समीक्षा की और स्वय भी इतिहास की एक विशिष्ट शैली के लिए विख्यात हुआ। उसके पुत्र पान कू[३] ने ईसा की पहली दो शताब्दियों का चीनी इतिहास लिखना प्रारम्भ किया जिसे उसकी मेधाविनी विधवा भगिनी टस' आओ[४] (कुमारी नाम-पान चाओ) ने समाप्त किया। पहली बार

१. Ssu-Ma Chien (१४५-८७ ई० पू०) ; २. Pan Piao (३-४५ ई०), ३. Pan Ku (३२-९२), ४. Ts' ao (Pan Chao) (प्रथम सदी ई०)

नारी की मेधा विचक्षण रूप मे पुरुष की सहायता को आई। ग्रन्थ 'चिएन हन शू' (पूर्व हन वश का इतिहास) के नाम से प्रकाशित हुआ।

उस काल के साहित्यिको की गणना वस्तुत कठिन है, यद्यपि कुछ के नाम यहा गिना देना समीचीन होगा।—सम्राट् वू के मन्त्री चिया यी[१] ने 'हिसन शू' लिखकर राजशास्त्र के क्षेत्र मे एक मजिल तय की। हन राजवश के प्रतिष्ठाता का पोता लिऊ आन[२] स्वय पडित था और उसने टाओ-वाद के दर्शन पर 'हुवाई नान ट्जू' नामक ग्रथ लिखकर उसका प्रचार किया। टुग-चुग शू'[३] नामक दार्शनिक ने टाओ-वाद और कन्फ्यूशस के ऐतिहासिक सिद्धातो को सम्मिलित कर अपने ग्रन्थ 'चून चिऊ फान लू' की रचना की। मनुष्य के स्वभाव को उसके नेक-बद द्विविध और ज्ञान से सयत माना। कन्फ्यूशियन धर्म को राजपदीय बनाने मे टुग का भी हाथ था। सम्राट् वू की सभा के सम्मान्य रोमाटिक कवि स्सू मा हिसयाग-ज़ू[४] ने अपने प्रसिद्ध गद्यकाव्यो मे दरबारी जीवन, आखेटो, जल-विहारो और ससदीय-सुन्दरियो के नृत्यो का अभिराम चित्रण किया। उसके समकालीन मेई-शेग[५] ने सप्त प्रेरणाए विषयक ग्रन्थ लिखकर गद्यकाव्यो की एक सुन्दर परम्परा उद्घाटित की। इन कविताओ मे युवराज च'ऊ के आमोदो का वर्णन है। प्रसिद्ध '१९ प्राचीन कविताए' का एक अश शेग का भी रचा गया माना जाता है। इन कविताओ ने उत्तर काल की चीनी कविताओ पर बडा प्रभाव डाला। उस काल की अत्यन्त सुन्दर अनेक फुटकल कविताएं अज्ञातनामा कवियो की कृति के रूप मे आज भी उपलब्ध है।

हन वश की सरक्षा ने न केवल इतिहास, दर्शन, काव्य सम्बन्धी रचनाए प्रजनित की भरन् उसके प्रोत्साहन से चिकित्सा, ज्योतिष, युद्ध विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, फलित ज्योतिष, स्वप्न विज्ञान आदि पर भी ग्रन्थो की रचना हुई। इन सारे विविध ग्रथो की एक सूची बना ली गई। इस प्रकार की पहली सूची ६ ई० पू० मे प्रकाशित हुई। चीन का पहला जीवनीकार ल्यू हिसयाग[६] हुआ। उसकी दो बडी दिलचस्प पुस्तके 'लिएह नू चुआन' और 'शूओ युआन' नाम से प्रसिद्ध है। इनमे से पहली मे सम्भ्रान्त महिलाओ का चरित उद्गीरित है, दूसरी मे सामन्तो, दार्शनिको आदि के चरित सग्रहीत है। चीन का पहला शब्दकोष 'शुओ-वेन' नाम से १२० ई० मे प्रकाशित हुआ। इसमे १० हज़ार सकेतो की बडी सूक्ष्मता से व्याख्या की गई थी। इसका सग्रहकर्ता ह् सू शेन[७] था।

: ४ :

टाओ युग और बौद्ध युग

२२० ई० मे साम्राज्य तीन राज्यो मे विभक्त हो गया। तीनो का इतिहास चेन

१. Chia Yi, २ Liu An, ३ Tung Chung Shu, ४ Ssu-ma Hsiang-ju, ५ Mei Sheng, ६. Liu Hsiang, ७ Hsu Shen

शाऊ[1] ने 'सान कुओ ची' नाम से लिखा। इसमे वर्णित अधिनायको के चरित इतनी खूबी और स्पष्ट रेखाओ से उभारे गए है कि ग्रथ पढकर प्ल्यूटार्क का स्मरण हो आता है। २६५ ई० मे ट्सिन राजवश ने फिर तीनो राज्यो को जीतकर नये साम्राज्य की नीव डाली। यह साम्राज्य भी बहुत काल न टिक सका और, यद्यपि अन्तरकलह से बाध्य होकर इसने अपनी राजधानी नानकिंग मे स्थापित की, ४४० ई० मे उसका अत हो गया। उस राजधानी मे एक के बाद एक चार राजवश स्थापित हुए। ३९६ और ५५१ के बीच विवध तुर्क जातियो ने चीन पर शासन किया।

इस अधिकार-युग मे भी साहित्य का निर्माण अथवा दर्शन का चिन्तन बन्द न हो सका तथा टाओ-वाद और बौद्ध धर्म अपने ज्ञान की लौ से चीन को तब भी प्रकाशित करते रहे। टाओ-वाद के गहन अध्ययन से उसके उदार दर्शन का आरम्भ हुआ। उसने एलान किया कि प्रकृति और रूप नश्य है, उनको छोडो, जीवन और मृत्यु को दिन और रात समझो, लाभ और हानि समृद्धि और निर्धनता दोनो को समान जानो, उनसे ऊपर उठो। उस अध्ययन ने टाओवादियो को बौद्ध धर्म की ओर खीचा और उन्होने उन सूत्रो का अध्ययन आरम्भ किया, जिनका सस्कृत से चीनी अनुवाद कुमार जीव[2] और चिह-हिसएन[3] आदि भारतीय तथा मध्य एशियाई विद्वानो ने किया था। बौद्ध दर्शन और साहित्य की सम्पदा ने चीनी पडितो के विचारो मे एक क्राति उपस्थित कर दी और उसका अध्ययन सरगर्मी से होने लगा। हन काल के अन्तिम युग मे ही बौद्ध विचारो की छाया चीनी चिन्तन पर पडने लगी थी। अनेक पडित परिणामत प्रव्रजित हो गए और बौद्ध धर्म तीव्र गति से चीन मे व्यापक हो चला।

इस राजनीतिक अधयुग मे अनेक साहित्य-रत्नो, कई साहित्यिक शैलियो का विकास हुआ। जिन कवियो ने तत्कालीन साहित्य पर अपनी गहरी छाप डाली, उनमे प्रधान प्रकृतिवादी थे। टाओ-चिएन[4] उनमे अग्रणी हुआ। उसका दूसरा नाम टाओ युआन मिंग था। उसने चीनी साहित्य को कुछ अनमोल काव्य-रत्न प्रदान किए। उस महाकवि ने फूलो, वृक्षो, पक्षियो और पर्वतो मे जीवन का गहरा अर्थ पाया। प्रकृति सम्बन्धी उसके उद्गार नितान्त सरल, कोमल, कमनीय और तरल है। चीनी काव्य-धारा पर टाओ चिएन की कविता का प्रभाव बहुत गहरा पडा।

उस काल साहित्य-समीक्षा भी खूब हुई और निर्भीक आलोचक वाग चुग[5] ने उस दिशा मे एक नया मानदण्ड उपस्थित किया। साहित्यिक सक्रियता के उस युग मे कुछ ने दार्शनिक ग्रन्थो पर भाष्य लिखे, कुछ ने ज्ञान-विज्ञान पर नया साहित्य प्रस्तुत किया।

---

१. Chen Shou (२३३-२९७); २. Kumara Jıva; ३. Chıh-hsıen, ४. Tao Chıeng (Tao Yuan-mıng) (३७२-४२७), ५. Wang Chung (२७-९७)

वनस्पति शास्त्र, भूगोल, जल विज्ञान आदि पर अनेक ग्रन्थ रचे गए, साथ ही प्राचीन और नवीन काव्य-धाराओ पर भी नये ग्रन्थ प्रकाशित हुए। 'चिएन ट्ज़ू वेन' हजार सकेतो की पुस्तक है परन्तु उसके कोई दो सकेत एक-से नही। उसका रचयिता चाऊ ह्सिंग ट्ज़ू[1] था। एक अद्भुत काव्य कृति 'हुई वेन ट्' नाम से चौथी सदी ईस्वी मे प्रकाशित हुई, जिसकी रचना सू वेई[2] नाम की महिला ने की थी। ८४१ चित्र-चिह्नो से बनी सैकड़ो कविताए इस प्रकार उसमे गूथी गई है कि उनसे एक वर्ग-चित्र बन गया है, जिसमे कविताए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तथा आगे से पीछे और पीछे से आगे को पढी जा सकती है। उस काल के पिछले युग मे एक बडी सख्या मे चौथी सदी ई० पू० से चौथी सदी ई० तक के कवियो और निबन्धकारो की कविताए पहली बार सग्रहीत हुई। सग्रह का सपादक नानकिग के लिआग राजवश का एक पडित राजकुमार हिसयाओ ट'अग[3] था। उसने अपने सग्रह को कई भागो मे बाटा और साहित्य के अनेक स्कन्ध बनाए—एक मे वर्णनात्मक गद्य-पद्य (फू) थे, दूसरे मे प्राचीन कविताए, तीसरे मे ओड, चौथे मे प्रशस्तिया, पाचवे मे सस्मरण, छठे मे पत्र-व्यवहार, सातवे मे निबन्ध आदि। ट'अग के बाद भी चीनी साहित्य के अनेक सग्रह इसी प्रकार रचे जाते रहे।

: ५ :

स्वर्ण युग

अन्तरकलह के बाद चीनियो मे फिर राजनीतिक एकता की प्रेरणा हुई। पहले सुई राजवश ने वह एकता उपस्थित कर अनेक प्रशस्य जनकार्य किए। साथ ही साहित्य के क्षेत्र मे भी प्रकाण्ड पडितो का एक दल कार्य करने लगा, जिसका परिणाम प्रसिद्ध चीनी विश्वकोष का सम्पादन था। अभिजात अफसर-वर्ग के स्थान पर परीक्षा द्वारा चुने गए 'सिविल सर्विस' का आरम्भ हुआ। सुई राजवश के बाद प्रसिद्ध ट'आग वश (६१८-९०६) ने चीनी राजशक्ति की बागडोर सभाली। साम्राज्य फूला-फला और फैला। सुदूर के राजकुलो के साथ उसकी राजनीतिक मैत्री तथा आदान-प्रदान हुआ। महान् चीनी सम्राट् ट'आई ट्सुग (६२७-६६४ ई०) ने साहित्य और कला का विशेष सरक्षण किया और कन्फ्यूशियन मत, टाओ मत और बौद्ध मत के सिद्धातो को एक साथ उदारतापूर्वक उसने स्वीकार किया। साथ ही जरथुस्त,मनी, नस्टोरियस और मुहम्मद की विचारधाराओ के चीन मे प्रचार की भी उदार अनुमति दी। ससार का वह तब सबसे अधिक उदारचेता सम्राट् था। अशोक की उदार भावना उसमे सक्रिय रूप से अवतरित

---

१ Chou Hsing-tzu (मृ० ५५१), २ Su Wei (४थी सदी ई०); ३ Hsiao T'ng (५०१-५३१)

हुई। यह कुछ कम आश्चर्य की बात नही कि मुहम्मद का अनुयायी न होने पर भी, आज सम्भवत: उसीके काल मे बनी मस्जिद इस्लाम की सबसे प्राचीन मस्जिद है।

ट'अग सरक्षण मे जिस सभ्यता का विकास हुआ वह उस काल की सभ्यताओ मे सबसे मजिलो मे आगे थी। चीनी जाति ने तब अनेक दिशाओ मे अद्भुत सक्रिय क्षमता और क्रियात्मक तत्परता का परिचय दिया। ठप्पो मे छपाई का काम, आतशी अस्त्रो के लिए बारूद, 'एअर कण्डीशनिग' के अनेक उपाय और औद्योगिक तथा ललित कलाओ मे अनेक नई टेकनीको का अविष्कार तब की चीनी मेधा के अद्भुत प्रमाण थे। शिक्षा का तो प्राय सर्वत्र प्रचार था। चीनियो के लिए यह कुछ कम गौरव की बात नही कि ससार को उन्होने ही पहला समाचारपत्र दिया। चीनी सभ्यता कोरिया और जापान तक फैल गई। पूर्व मे उसकी साहित्यिक सुरुचि और सामाजिक आचार ने वही पद प्राप्त किया जो पिछले काल के यूरोप मे फ्रास ने किया। अन्तर फिर भी एक महत्व का था, और वह यह कि जहा फ्रास और समकालीन यूरोप का ज्ञान दसो दसियो बाद पुरुष-परक थी, चीन मे अनेक विचक्षणबुद्धि नारी-मेधाओ का उदय हो चुका था। ज्ञान और साहित्य के अनेक क्षेत्रो मे महिलाए अग्रणी बन गई थी।

ट'अग का युग सबसे अधिक विस्मयजनक साहित्यिक विकास काव्य के क्षेत्र मे हुआ। उस युग के पहले ही सैकडो उत्कृष्ट कवियो का प्रादुर्भाव हो चुका था। उनके अध्ययन से ट'अग-कवियो ने अपनी विशिष्ट और स्वतन्त्र शैली का आरम्भ किया। उनकी गाई आनन्द और विषाद की कविताए नवीन ध्वनि से नादवती हुई, मेधा और अनुभूति, ओज और शक्ति से समृद्ध हो सुकुमार व्यजना से मुखरित हो उठी। तब की साहित्य-चेतना मे चीनियो ने जो साका चलाया, कालिदास के बाद सदियो वह जातियो के साहित्य के इतिहास मे चलता रहा। अपनी कल्पना, व्यजना, शब्द-लालित्य और अर्थ-भावना के कारण वह काल चीनी साहित्य का सत्य ही स्वर्ण-युग कहलाता है। उस काल के कवियो मे न केवल साहित्यिक शैलियो के विभिन्न टेकनीक उभर पडे वरन् उनकी मानववादी क्षितिजगामी पुकार मे सहवेदना सचेत हुई। परिणामत लिरिक काव्य अनेक रूप मे मुखरित हुआ।

लिरिक काव्य के अनेक प्रकार तब के चीन मे सिरजे गए। इनमे एक मे चार पक्तिया होती थी, पक्ति मे पाच शब्द होते थे, दूसरे मे पाच शब्दो की पक्ति और आठ पक्तिया होती थी, तीसरे मे सात शब्द और चार पक्तिया और चौथे मे सात शब्द और आठ पक्तिया।

स्वर्ण युग के उन छोटे-बड़े कवियो की सख्या, जिन्होने उस काल के अद्भुत काव्य का सृजन किया, दो हज़ार से ऊपर है, और उनकी कविताओ की सख्या प्राय: ४८ हजार है। १८वी सदी मे उनकी कृतिया सग्रहीत कर प्रकाशित कर दी गईं। उस

सग्रह से सुन्दरतम ७७ कवियो की ३११ कविताए एकत्र कर बालको की पुस्तक मे प्रकाशित हुईं। यह पुस्तक आज तक चीन मे अद्भुत प्रेरणा की आधार बनी हुई हैं। 'रामचरितमानस' की भाति विद्वान् और अपढ, दोनो की जबान पर इसकी पक्तिया रहती है, वाग वेई[1], ली पो[2], टू फू[3] और पो चू यी[4] जो उस साहित्य के महारथी हो गए हैं, चीन की जनता की आज सपदा बन गए है और उनका यहा कुछ विस्तार से उल्लेख अनुचित न होगा।

वाग वेई धार्मिक और चिन्तनशील था। शिष्ट और भावुक। उसमे कन्फ्यूशस, टाओ और बौद्ध—तीनो सपदाए सूक्ष्म रूप से प्रवेश पा चुकी थी, यद्यपि इस अर्थ मे अपने काल मे यह अकेला न था। वस्तुतः वह उस युग का समुचित प्रतिनिधि था। तरुणाई मे उसे दर-दर की ठोकर खानी पडी थी और दरिद्रता उसकी सहचरी थी। वह सरकारी नौकर था परन्तु अपने कार्यभार को ईमानदारी से निभाता हुआ भी कविता करने और चित्र लिखने से न चूकता था। उसकी कविताए और चित्र प्रकृति के अकनो से मुखरित होते। दोनो मे भौतिक और आध्यात्मिक, स्थूल और सूक्ष्म का अद्भुत समन्वय होता।

ली पो रोमाण्टिक कवि था। सौदर्य और प्रकृति के प्रसग उसके पदो मे अनायास अभिराम उतर आते थे। वह जन्मसिद्ध कवि था। उसका जीवन लेखक का जीवन था, वह किसीका नौकर न था और कन्फ्यूशियन सिद्धान्तो का पडित होते हुए भी उसके भावो का उद्गम टाओवाद था। प्राचीन टेकनीक का आचार्य होते हुए भी उसने अपने को उसके बन्धन मे न रखा। उसके लिरिक भाव और व्यजना के लिए प्रसिद्ध है। उसके रूप की रमणीयता और ध्वनि का माधुर्य बेजोड है। ली पो पर्यटक था और उसकी अनेक काव्य-कृतिया रात्रि के एकाकी पर्यटन के आनन्द को उद्-बुद्ध करती है। वह चीन का महान् गायक था।

टू फू यथार्थवादी था। उसने विषाद की धारा अपने काव्यस्रोत से बहाई। समाज टूक-टूक हो रहा था, किसान कगाल हो चुके थे, देश सहारक युद्ध की चोटो से बेदम पडा था—टू फू का काव्य-स्वर इनके विषाद से मुखरित हुआ। साहस और निर्भीकतापूर्वक उसने अपने देश की स्थिति पर अपनी कविताओ मे प्रकाश डाला और आज जब हम उसकी कविताए पढते है, तब तत्कालीन चीनी जगत् का विषाद-बोझिल चित्र आखो के सामने घूम जाता है। गिरे, व्यापक कष्ट से जर्जर, नगे-भूखो के प्रति उसकी एकात सवेदना उसकी कविताओ के शब्द-शब्द से पुकार उठती है। उसकी सहानुभूतिभरी कविताओ ने चीनियो का हृदय छू लिया और उन्होने अपनी

१ Wang Wei (६९९-७५९), २. Li Po (७०१-६२); ३ Tu Fu (७१२-७०), ४. Po Chu-yi (७७२-८४८)

कृतज्ञता मे उसे 'मनीषी कवि' कहकर पुकारा। स्वय टू फू स्वभावत. असाधारण भावुक था। उसे अपनी कविता की शक्ति पर इतना भरोसा था कि उसने उसे ज्वर की ओषधि तक बना डाला। न उसने टाओ धर्म की ओर देखा न बौद्ध धर्म की ओर। वह कन्फ्यूशियन विचार का कवि था और अपने चारो ओर घटने वाली घटनाओ से विमुख न हो पाता था। आत्मावलबन, आत्मसयम और आत्मानुभूति पर वह निर्भर करता था। शाति उसकी शाश्वत चेतना थी।

पो च-यी राजनीतिज्ञ था, परन्तु उसकी राजनीतिज्ञता उसे लोकप्रिय बनने से न रोक सकी। उसकी ख्याति उसके जीवन-काल मे ही चीन की सीमाओ को पार कर कोरिया और जापान तक जा पहुची और उसकी कविताए जितनी ही राजकुमारो तथा महिलाओ की जबान पर थी, उतनी ही किसानो और रईसो की जबान पर, उतनी ही बूढो और बच्चो की जिह्वा पर। उसकी कविता मे प्रसाद का सौरभ था और भावो की सूक्ष्मता मे गजब की ताजगी थी। परन्तु इन दोनो से बढकर उनके प्रति लोगो के आकर्षण का कारण था कवि के विषयो का साधारणी-करण। उसके काव्यो के विषय घर के, गाव के, नगर के थे, जो बरबस अपनी व्याव-हारिक नित्यता द्वारा पढने और सुनने वालो को अपनी ओर खीच लेते थे। उसकी वर्णना-त्मक शैली असामान्य थी और उसकी रूमानी कविताओ के शब्द-चित्र लोगो के अतर मे पैठ जाते थे। इन्ही द्वारा वह नित्य की सासारिक मूर्खताओ और रोजमर्रा के पाप-पुण्य, काव्य की अभिराम आकृति मे सिरज कर रख देता है। उसके अपने ही सम्पादन से पता चलता है कि उसने ७० खडो मे प्राय तीन हज़ार विषयो का चित्रण किया।

यह बात बराबर याद रखने की है कि इन ट'अग-कवियो की अद्भुत रचनाओ का आधार तत्कालीन और प्राचीन लोकगीत थे। चाऊ-शासनकाल से ही ग्रामीण और गाव के प्रेमी, अपने हर्ष-विषाद, प्रणय-विरह आदि का गान करने लगे थे। यद्यपि उनकी कृतियो मे सस्कृत काव्य की शिष्टता न होती थी, निस्सदेह जीवन उसमे अग-डाता था और उनकी सादगी अपनी अकृत्रिम सुघराई मे हृदय पर चोट करती थी। उस सम्पदा की कवि अवहेलना न कर सकता था और हन कुल के गायको ने 'योफ़ू' नाम से उस लोक-सगीत-सपत्ति का सग्रह और चयन कर लिया था। उन लोकगीतो के ऊपर वे पिछले लोकगीत बने, जिनपर ट'अग-कवियो ने अपने-अपने काव्य का निर्माण किया।

ट'अग-काल के काव्य के अनुकूल ही उस काल का गद्य और अन्य गद्यात्मक साहित्य भी था। तब प'इन टी शैली का गद्य प्रचलित था जो गानमधुर था और जिसकी इबारत कानो और नेत्रो—दोनो को सुख देती थी। परतु निस्सदेह उसमे शैली की शक्ति नही आ सकती थी, उसके लिए दूसरे टेकनीक की आवश्यकता थी। उस टेकनीक का

गठन आठवी और नवी सदियो मे हुआ । नई शैली के प्रवर्तक हान-यू[1] और ल्यू-ट्सूग-युआन[2] थे । दोनो कवि निबन्धकार और दार्शनिक थे, जो विशेषतया दार्शनिक विषयो पर भी लिखते थे । हान-यू तो बौद्ध संप्रदाय की पश्चात्कालीन नीचता का प्रहर्त्ता भी हो गया है । ल्यू-युआन उसका मित्र और सुन्दर लिपिकार था । दोनो की गद्य-शैली शक्तिमती, स्पष्ट और व्यग्यात्मक थी । उनकी कृतियो मे रूप की सादगी और भावो की सपदा अक्षुण्ण है । हान-यू ने लाओ ट्ज़ू और बुद्ध के सप्रदायो के अन्धविश्वासो पर प्रहार किया और ल्यू-ट्सूग ने बौद्ध धर्म के मूल तथा अविकृत सिद्धातो का प्रकाश किया । ट'अग-काल के गद्य के एक रूप मे दार्शनिक टीकाओ और भाष्यो का विकास हुआ और दूसरे मे इतिहासो का प्रकाशन । उस काल का सबसे महान् इतिहासकार ल्यू-चिह्-ची[3] था, जो अपनी ऐतिहासिक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध हुआ । अपने 'इतिहास की समझ' मे उसने प्राचीन इतिहासकारों की कमजोरी और राजनीतिक पक्षपात के लिए धिक्कारते हुए इतिहास-दर्शन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया । साथ ही उसने ज्योतिष, गणित, चिकित्सा-शास्त्र आदि पर भी ग्रन्थ लिखे । परन्तु उस काल का सबसे महान् ज्योतिषी और गणितज्ञ ली-चुन-फेग[4] है । ली-चुन-फेग जिसने गणित पर अनेक ग्रन्थ लिखने के अतिरिक्त नक्षत्रो और ग्रहो को पहचानने का यन्त्र बनाया । तब का प्रसिद्ध चिकित्सक सुन-स्सु-माओ[5] था । उसके सहस्रस्वर्ण-निदान आज भी चीन मे प्राचीन पद्धति के चिकित्सको द्वारा काम मे लाए जाते है । उसी काल लू यू[6] ने चाय पीने की कला और उसमे प्रयुक्त होने वाली विविध प्यालियो का सविस्तार उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'च'आ-चिंग' मे किया । प्राय तभी कहानी का नया साहित्य भी उस देश मे लिखा गया । इनमे से कुछ गद्य मे है, कुछ पद्य मे और कुछ दोनो की मिली-जुली शैली मे । भारत मे उस काल के बहुत पहले ही कहानी-शैली का विकास हो चुका था । जातको, अवदानो और पचतत्र आदि की सैकडो कहानिया तब तक पहलवी और अरबी मे अनूदित हो चुकी थी । कुछ आश्चर्य नही कि चीनी कहानियो का अध्ययन, जो अब तक नही हुआ है, भारत और चीन के तत्सबधी कहानी साहित्य के आदान-प्रदान पर प्रकाश डाले ।

: ६ :

समृद्धि-युग

(९६०-११८० ई०)

८०६ ई० मे ट'अंग शासन का अन्त हो गया । अगली आधी शती मे पीली

---

१ Han Yu (७६८-८२४), २ Liu Tsung-yuan (७७३-८१९); ३. Liu-chih-chi (६६१-७१२); ४ Li Chun-feng (६०२-६७०), ५. Sun Ssu-mao (मृ० ६८२); ६. Lu Yu (मृ० ८०४)

नदी की घाटी मे अनेक राजकुलो ने राज्य किया। ९६० मे सुग राजकुल ने एक नये साम्राज्य की बुनियाद डाली, जिसकी राजधानी आज के होनान प्रात की राजधानी काइफेग थी। प्रचुर शक्तिमान् न होता हुआ भी सुगकुल लोकप्रिय था। तातार आदि जातियो ने अपने आक्रमणो से चीन को भू-लुण्ठित कर दिया, परन्तु चीनी सस्कृति धीरे-धीरे उन्हे निगल गई और वे पीपिंग (पेकिंग) मे बस गए। सुंग शासको ने कुछ काल बाद अपनी राजधानी हागचोव मे स्थापित की, परन्तु वे तातारो को परास्त न कर सके।

राज्यशक्ति मे क्षीण होता हुआ भी सुग-काल सास्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र मे शक्तिमान प्रमाणित हुआ। तब अनेक विशाल विश्व-कोषो और ऐतिहासिक ग्रन्थो की रचना हुई। अनेक पाडित्यपूर्ण गद्य ग्रन्थ लिखे गए और अनेक असाधारण काव्य कृतिया प्रसूत हुईं। तभी 'क्लासिकल' ज्ञान के अध्ययन के लिए अध्ययन-पीठ स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त चित्रकला की एक राष्ट्रीय सस्था स्थापित हुई और स्थापत्य पर एक विशाल ग्रन्थ लिखा गया। इसी काल विविध विषयो पर हज़ारो पुस्तको की रचना हुई और इसी काल ठप्पो से छापने का भी श्रीगणेश हुआ। मुद्रण के निर्माण के अतिरिक्त उस काल ही कम्पास का भी आविष्कार हुआ और तभी सख्या जोडने वाली एक मशीन भी चीनी मेधा द्वारा आविष्कृत हुई। सुगो का काल वाग आन शिह[1] के राजकीय समाजवाद, चू हसी[2] के नये कन्फ्यूशियन दर्शन और ल्यू च्यू युआन[3] के चित्रो के लिए भी बडा प्रसिद्ध हुआ और साथ ही अत्यन्त सुकुमार और सुन्दर चीनी भाण्डो के लिए भी। वाग अपने समय का प्रख्यात राजनीतिज्ञ, निबन्धकार और कवि भी था। कला, दर्शन और साहित्य मेधावियो की प्रतिभा से प्रभूत मात्रा मे सेवित हुए। साहित्य के तत्कालीन दिग्गजो मे अग्रणी कवि, निबधकार, इतिहासकार और राजनीतिज्ञ आऊ-याग हिसऊ[4] था। उसने ट्'अग राजवश का एक नया इतिहास लिखा। सुमा कुआग[5] प्रख्यात इतिहासकार ने चाऊ राजवंश से लेकर ट्'अग वश तक देश का इतिहास लिखा जो 'टजू जी ट्' उग चिएन' नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसका अर्थ है, इतिहास-दर्पण राजकीय शासन का सहायक ग्रथ। इसी इतिहास के क्षेत्र मे प्रधान निर्माता वस्तुत. मा टुआन-लिन[6] हुआ, जिसने तेरहवी सदी मे अपना प्रसिद्ध 'वेन हिसियेन ट'उग काओ' (ऐतिहासिक अभिलेख और सख्याए) लिखकर चीन के सर्वतोमुखी सामाजिक जीवन पर प्रभूत प्रकाश डाला। यह महान् ग्रन्थ १६२१ मे प्रकाशित हुआ।

सू शिह अथवा सू टुग पो[7] विपुल निबधकार, लिरिक कवि और अद्‌भुत लिपिकार

---

१. Wang An Shih (१०२१-८६), २. Chu Hsu (११२९-१२००); ३. Lu Chiu Y'uan (११३९-९२); ४. Ou-yang Hsi (१०००-७२), ५. Ssuma Kuang (१०१९-८६); ६. MaTuan-lin; ७. SuTung-po (Su Shih) (१०३६-११०१)

हुआ। वह राजनीतिज्ञ भी था और कवि तथा कलाकार के रूप मे उसने टाओइज़्म और बौद्ध धर्म से प्रेरणा पाई। उन दोनो के साथ कन्फ्यूशियन सिद्धांतो की समष्टि कर उसने एक प्रख्यात ग्रथ लिखा। बारहवी सदी का सबसे महान कवि लू यौ[1] हुआ। वह असाधारण देशभक्त था। तातारो की चोट से कराहती पीली नदी की घाटी उसके तरल स्वरो मे उतर पडी। उसने उनको धिक्कारा जिन्होने तातारो के प्रति आत्मसमर्पण कर दिया था, पर जो देश के शासक थे। ली-यी-यान[2] (ली चिंग-चाऊ) वह चीनी महिला थी जो प्रख्यात कवियित्री और विदुषी के रूप मे चीनी साहित्य मे अमर होगई। काव्य क्षेत्र मे उसकी प्रतिभा प्रथम श्रेणी की मानी जाती है। अपने पति चाओ-मिंग-चेग की उसने चीनी पुरातत्व पर ग्रथ लिखने मे सहायता की और उस ग्रथ की भूमिका भी स्वय उसीने लिखी। ट्जू छद मे उसने अनेक कविताए लिखी, परतु आज उसकी कविताओ का केवल एक खड उपलब्ध है।

: ७ :

उपन्यास और नाटक युग

(१२८०-१३६८)

सुग शासन का अन्त मगोलो ने किया, जब १२७७ मे कुबले खा ने अपने को चीन का सम्राट् घोषित कर अपनी राजधानी पीकिंग मे स्थापित की और युआन नाम के नये राजकुल का आरम्भ किया। चीनी ज्ञान और सस्थाओ मे उसकी अतीव श्रद्धा थी और उसकी उदारता की छाया मे अनेक यूरोपियन पर्यटको ने भ्रमण किया। वेनिस का मार्कोपोलो भी उन्हीमे था।

परन्तु अनेक आत्माभिमानी चीनी पण्डित एकान्तवास करने लगे और अपने उस एकान्तवास मे उन्होने उपन्यास लिखना आरम्भ किया। उपन्यास लेखन का आरम्भ ट'अग काल मे ही हो गया था, जब पो चू-यी के अभिन्न मित्र यू आन चिग ने 'सूई पिंग यिंग की कहानी' और पो चू यी के अनुज पो हि सग चिएन ने 'सुन्दर तरुणी की कहानी' लिखी। ट'अग-काल के बाद सुग युग मे भी कहानिया लिखी जाती रही परन्तु युआन काल की कहानियो का एक उद्देश्य था—अपना सुख और मित्रो का मनोरजन। उस क्षेत्र मे भी काव्य की ही भाति लोक साहित्य ही आधार बना। लोक कथाओ को कुशल साहित्यिक माज-कर अपनी प्रतिभा से साहित्य के ज्वलत रत्न बना देते। उस काल के प्रधान उपन्यासो में 'सान कुओ ची' (तीन राज्यो की कहानी) और शुई हु चुआन (मनुष्य मात्र परस्पर भाई हैं),

---

१ Lu you (११२५-१२१०); २. Li Yi-an (Li Ching-chao) (ज० १०८१)

प्रधान थे। उपन्यासो की भाषा सरल थी और उनका उद्देश्य लोककल्याण था। प्रत्येक अध्याय छद से आरभ होकर छद ही से समाप्त होता था और अनेक बार उसका वर्णन भी छदप्राय होता। भारतीय साहित्यकारो की भाति चीन की अधिकतर उपन्यासकृतिया अज्ञातनामा है। उनके रचयिताओ का पता नही। उपन्यासो और कहानियो को चीन के साहित्य मे हेय समझा जाता था।

मगोल शासनकाल मे नाट्य-लेखन का भी प्रचलन हुआ। सुग काल से ही चीन मे कठपुतलियो के खेल का प्रचलन था। परन्तु खानो को उससे सतोष न हुआ और उनकी सरक्षा मे ५० वर्ष के भीतर ५०० से ऊपर नाटक लिखे गए। इनमे प्राय १०० की गणना अव्वल दर्जे की साहित्यिक कृतियो मे है। वोल्तेयर ने इनमे से एक पर अपनी एक रचना अवलम्बित की। वाग शिह फू का 'हू सियाग ची' (पश्चिमी कक्ष का रोमास) विशेष विख्यात है। इसमे एक तरुण विद्वान् और सुदर तरुणी का प्रणय निरूपित है। इसमे सदेह नही कि उस काल के चीनी नाटको मे आज की शैली प्रस्फुटित न हुई, परतु भाषा की दृष्टि से वे फिर भी बेजोड है।

युआन के काल के बाद प्राय ४ सदियो मे उपन्यास और नाट्य साहित्य ने अपेक्षाकृत आधुनिक रूप धारण किया। तब के उपन्यासो को हम पाच निम्न प्रकारो मे बाट सकते है—(१) ऐतिहासिक उपन्यास, (२) धार्मिक और दार्शनिक उपन्यास, (३) शिष्टता सम्बन्धी उपन्यास, (४) प्रणय सम्बन्धी उपन्यास और (५) वीरता सबधी उपन्यास।

इसी प्रकार ११वी और १८वी सदी के बीच लिखे नाटक भी दो भागो मे विभक्त हो सकते है—उत्तरी और दक्षिणी। उत्तरी नाटको के विषय ऐतिहासिक और अलौकिक है और दक्षिणी नाटको के रोमाटिक। दोनो मे लिरिक कविता का बाहुल्य है। कुछ समीक्षको का विश्वास है कि अपनी लिरिक शक्ति और सौन्दर्य मे यह ट'अग-काल के लिरिको से कही बढ कर है।

: ८ :

पुनर्जीवन काल

(१३६८-१८८०)

मिंग ने १३६८ मे मगोलो को भगाकर चीन मे मिग साम्राज्य (१३६८–१६४४) का आरम्भ किया। बीच मे राजधानी नानकिग चली गई थी, १४०६ मे वह फिर पेकिग आई। यह काल उत्तर व दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व के देशो के साथ चीन के समृद्ध व्यापार का था। पाश्चात्य नाविक भी यूरोप से चीन पहुचे और उस दिशा से

ज्योतिष, गणित, भूगोल तथा यन्त्राविष्कार के ज्ञान पर काफी प्रकाश पडा। देश मे धातु और चीनी मिट्टी के सुन्दर भाण्डे बने और कसीदे तथा जडाई का काम मिंग काल के अभिमान बन गए। साहित्य की दिशा मे निस्सदेह नव निर्माण की प्रेरणा न हुई, यद्यपि पुराने 'क्लासिक्स' को फिर से मनन करने मे उस काल की चीनी मेधा निश्चय ही प्रवीण सिद्ध हुई। १४०३ ई० मे दो हजार विद्वानो ने विश्वकोष प्रस्तुत किया, जिसमे चीन का समस्त क्लासिकल, ऐतिहासिक और दार्शनिक साहित्य सग्रहीत हुआ। पाच वर्ष के निरतर साहित्यिक श्रम के परिणामस्वरूप 'युग लो ट टिएन' प्रस्तुत हुआ, जो ससार का आज भी प्राचीनता सबधी सबसे बडा विश्वकोष है। इसमे २२,८०० चीनी ग्रथो का सग्रह है। द्रव्याभाव के कारण इतना बडा ग्रथ उस काल प्रकाशित न हो सका और बाद की शताब्दियो मे उसके अधिकतर खड अग्नि मे नष्ट हो गए अथवा काल की क्रूरता से लुप्त।

उस काल के दो महापुरुष वाग-याग-मिग[1] (वाग-शाऊ-जेन) और ह्सु क्वाग चि[2] थे। इनमे से पहला सैनिक, राजनीतिज्ञ, मनीषी, दार्शनिक और कवि था, जिसका जापान के साहित्य पर बडा गहरा प्रभाव पडा। उसने मानव-चित्त को सर्वोपरि माना, विश्व से भिन्न और स्वतत्र, इसीसे उसने उसे अपने मूल रूप मे सर्वथा निर्दोष स्वीकार किया। ह् सू क्वाग-ची १६०३ ई० मे ईसाई हो गया और उसके धर्म, भूगोल, ज्योतिष तथा गणित सम्बन्धी विचारो की सहायता से प्रसिद्ध जेसुइट पादरी माटिओ रिकी[3] ने अपने तत्सम्बन्धी ग्रथ लिखे। क्वाग-ची का ६० खडो मे प्रस्तुत कृषि सम्बन्धी ग्रन्थ विख्यात है। यह पहले पहल १६४० मे अनेक अद्भुत उत्कट उदाहरणो के साथ प्रकाशित हुआ।

माचूरिया के माचुओ ने चार वर्ष बाद मिंग वश का अन्त कर चिंग (ट्सिंग) राजकुल का चीन मे आरम्भ किया। चीनियो ने अपने नये शासको के विरुद्ध १५ वर्ष तक निरन्तर सघर्ष किया, परन्तु अन्त मे इन्हे उनकी सत्ता स्वीकार करनी पडी। धीरे-धीरे माचुओ की शक्ति माचूरिया से तिब्बत तथा मगोलिया से फारमोसा और हेनान द्वीप तक प्रतिष्ठित हुई। अनाम, स्याम, बर्मा, नेपाल, भूटान और सिक्कम तक उस सत्ता की गहरी छाया पडी और यूरोप तक चीन की सभ्यता का प्रभाव पहुचा। जेसुइट पादरियो ने चीन के साहित्य का जो यूरोपियन भाषाओ मे अनुवाद किया तो वहा के साहित्यिको ने उनका सहृदय स्वागत किया। लीबिनिज़, वोल्तेयर, गेटे और क्वेज्ने ने उस चीनी साहित्य की प्रेरणा को माना। साथ ही चीनी पोर्सलेन और अन्य कलाकृतियो ने १७वी-१८वी सदी के यूरोपियन 'रोकोको' को क्षति पहुचाई।

---

१ Wang-Yang-Ming (१४७२-१५२८), २ Hsu-Kuang-Chi (१५६२-१६३३); ३. Mateo Ricci

शिष्याएं बनाईं, जिनमे से १८ प्रसिद्ध कवियित्रियां हुईं। उसकी कविताओ के साथ ही उसके भाई और शिष्याओ की कविताए भी 'सुई-युआन-सान शिह् चुग' नाम से सग्रहीत हुईं। टाई चेन[1] १८वी सदी का सबसे बडा दार्शनिक था। च्याग महान्[2] नाटककार और तीन प्रमुख कवियो मे से था। उसने अनेक नाटक लिखे जिनमे से ६ सर्वोत्कृष्ट मानकर विविध शीर्षको से छापे गए। उसकी कविताए ३१ खडो मे प्रकाशित हुईं। ट्'आसो[3] १८वी सदी का प्रख्यात चीनी उपन्यासकार था जिसका उच्चकोटि का प्रसिद्ध 'हुग लाऊ मेग' नाम का उपन्यास अनेक भाषाओ मे अनूदित हुआ। इसकी भाषा सरल है और घटना रोजमर्रा की है। बीच-बीच मे छोटी-छोटी कविताए भी गुथी हुई हैं। ली हु-चेन[4] ने १०० अध्यायो मे समाप्त 'चिन हुआ युआन' (दर्पण का कुसुम) नाम का अद्भुत उपन्यास लिखा। उसने भी मेई की भाति नारी के प्रति बडी समवेदना प्रकट की और अपने उपन्यास मे बडी कर्मठता और प्रतिभा का बखान किया।

१८०० और १८६० के बीच का चीन प्राय निष्क्रिय रहा। कम से कम जगत विख्यात चीनी साहित्यकार प्रसव करने का श्रेय तब के चीन को नही है। हा, दो कवियो के नाम निश्चय ही फिर भी लिए जा सकते है, जिनमे एक तो चिन हूओ[5] था दूसरा हुआग ट्सुन ह्सीयेन[6]। १९वी सदी मे लिखे चीनी उपन्यासो मे सबसे अधिक लोकप्रिय वान काग[7] का वीर बालक विषयक उपन्यास था। तभी का लिखा ली पो युआन[8] का चीनी अफसर विषयक उपन्यास भी काफी ख्याति पा चुका है।

: ६ :

आधुनिक युग

१९वी सदी के अन्त मे चीन मे एक नई क्राति की लहर उठी। वह क्राति जितनी ही राजनीतिक थी, उतनी ही सामाजिक भी थी। विविध पश्चिमी राजशक्तियो ने एशिया के अन्य देशो के साथ ही चीन पर भी साम्राज्यवादी छापा मारा था। १९वी सदी के अन्तिम दशक मे चीन मे एक सुधारवादी आदोलन चल पडा। इसने साहित्य पर भी स्वाभाविक ही गहरा प्रभाव डाला। सुधारवादी आन्दोलन के विशिष्ट निर्माताओ मे

---

१. Tai Chen (१७२४-७७); २ Chiang Shih-Chuan (१७२५-८५), ३ Tsao Hsuen-Chin (१७१९-६६), ४ Li Hu-Chen (१७६२-१८३०), ५ Chin Huo (१८१८-८५); ६. Huang Tsun Hsien (१८४१-१९०५); ७. Wan Kang; ८. Li Po Yuan

क'आग यू-वेई[1] और लिआग ची-चाओ[2] थे। दोनो ही प्रकाण्ड पडित और धुरन्धर लेखक थे। दोनो ने राजनीति, दर्शन और साहित्य पर लिखा और समकालीन विचारधारा को प्रबल रूप से झकझोर दिया। इस सुधारवादी आन्दोलन के पहले ही डाक्टर सनयात सेन' सुनवेन[3] का चलाया राजनीतिक क्राति का आन्दोलन देश मे जड पकड चुका था। डाक्टर सनयात सेन ने विदेशी सत्ता का राजनीति से लोप कर चीनी प्रजातन्त्र का आरम्भ किया और स्वय राजनैतिक चीनी साहित्य को अपनी लेखनी द्वारा कुछ अमूल्य भेंट दी।

१९१७ मे डा० हू शिह[4] और प्रोफेसर चेन तू ह् सीऊ[5] ने एक व्यापक साहित्यिक आदोलन चलाया। जिसका प्रधान उद्देश्य 'पाई हुआ' अर्थात् जन-बोली को साहिय मे प्रतिष्ठा देकर उसीको शिक्षा और साहित्यिक कृतियो का आधार बनाना था। यह आन्दोलन खूब फूला-फला और साहित्यिक धारा मे इसने गहरे परिवर्तन किए। इसके उपयोग से साहित्य से प्राचीन क्लासिकल सदर्भो की सत्ता उठ गई और अब शैली इतनी बोझिल न रही। साथ ही उसमे एक वैयक्तिक अपनत्व का स्वर गूज उठा। पश्चिमी लाक्षणिक शब्दो, विराम चिह्नो और शैली का भी इस आदोलन के परिणामस्वरूप चीनी भाषा मे उपयोग होने लगा।

१९१७ और १९३७ के मध्य चीनी साहित्य के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण युग का आरभ हुआ। पूर्व मे उन दिनो चीन नये राष्ट्र के रूप मे उदित हुआ और एशिया स्वाभाविक ही उसकी ओर बडी आशा से देखने लगा। परन्तु शीघ्र ही उसके नेता अमरीकी डालर के शिकार हो गए और डाक्टर सनयात सेन की मृत्यु के बाद तो राष्ट्रीय चेतना भी जाती रही। धीरे-धीरे समाजवादी चेतना भी वहा जगी और शुद्ध समाजवादी चेतना का तथाकथित राष्ट्रीय तानाशाही से सघर्ष अनिवार्य हो गया। इसी बीच इस काल के अन्त मे जापान की साम्राज्यवादी सत्ता चीन को निगल जाने के लिए उसकी ओर बढी। दोनो सघर्षशील चीनी दलो ने एक होकर समान शत्रु से लोहा लेने का निश्चय किया और सफल लोहा लिया भी। जापानी साम्राज्यवादी आक्रमण के पहले दशक का साहित्य फिर भी ओजस्वी था। नई राष्ट्रीय भावना ने नये लेखकों के भीतर नई चेतना जगा दी थी। नये उपन्यास, नये काव्य, नया गद्य, नये नाटक, नये इतिहास राष्ट्र की साहित्य-निधि को भरने लगे। तीन प्रमुख विचारधाराओ ने उस साहित्य को अनुप्राणित किया—उदारचेता, राष्ट्रीय, समाजवादी (कम्यूनिस्त)। जिन लेखको की सक्रियता ने साहित्य पर अपनी गहरी छाप डाली

१. K'ang Yu-Wei (१८५२-१९२७); २. Liang chi-Chao (१८७३-१९२९); ३. SunYat-Sen (१८६६-१९२५); ४. Dr Hu Shih; ५ Prof Chen Tu Hsiu

उनमे चाऊ श-जेन[1], कुओ मो-जो[2], हू शिह[3], लिन युताग[4] और लाओ शेह[5] अग्रणी थे। चाऊ श-जेन का दूसरा नाम लू हुसुन[6] (लूसिन) था। वह चीन का मैक्सिम गोर्की और बर्नार्ड शॉ दोनो कहा जाता है। उसमे गोर्की की समवेदनशील मानववादिता और शॉ के जीवन के प्रति व्यग्य समान रूप से विद्यमान है। उसके प्रधान ग्रथ 'आह-क्यू की आत्मकथा' और 'चीनी उपन्यासो का एक सक्षिप्त इतिहास' है। मो-जो ने दस सुन्दर उपन्यास, प्राय एक दर्जन अद्भुत नाटक, पाच खड कविता और छह खड निबध लिखे है। इनके अतिरिक्त जर्मन और रूसी साहित्य की अनेक कृतियो के चीनी अनुवाद भी उसने किए है। मो-जो वर्तमान चीन के महान् ग्रथकारो मे है जिसकी रचनाओ का विस्तार बडा व्यापक है, हू शिह दार्शनिक निबन्धकार, कवि और पडित है, जिसने चीनी और अग्रेज़ी दोनो मे लिखा है। उसकी साहित्यिक ईमानदारी की विशेष प्रशसा की गई है। लिन-युताग ने विदेशो मे भी बडा नाम कमाया है। इस देश मे भी उसका प्रसिद्ध ग्रथ 'चीन और भारत का ज्ञान' पर्याप्त प्रसिद्धि पा चुका है। पाश्चात्य देशो मे उसकी जिन कृतियो ने उसके लिए ख्याति अर्जित की उनमे विशिष्ट 'मेरा देश,मेरे लोग' और 'जीवन का महत्व' है। चीनी मे उसकी महत्व की रचना 'वो ती हुआ' (मेरे वचन) है। लिन युताग समर्थ कृतिकार होता हुआ भी आज के क्रातिकारी निर्माता अभिनव चीन से अभाग्यवश दूर है, फ्रास मे। लाओ शेह (लाओ शा) की प्रतिभा भी बहुमुखी है और उसने अनेक व्यग्य नाटक लिखे है। उपन्यास और कविताओ मे प्रयुक्त उसकी बुद्धि चातुरी की तुलना मार्क ट्वेन से और साफ-सुथरी भाषा की अर्नेस्ट हेमिंग्वे से की जाती है।

१९३७ से चीनियो का जापानियो के विरुद्ध जीवन-मरण का सघर्ष शुरू हुआ और उसके बाद का साहित्य कम से कम युद्धकालीन उपन्यास, नाटक, कविताए, निबन्ध और लेख सभी उस संघर्ष को ही रूपायित करते रहे। उनमे सबसे महत्व का उपन्यास चेन शाऊ-चू[7] का 'वसन्त की गरज' है जिसमे आक्राताओ के विरुद्ध किसानो के सगठन और सघर्ष का अद्भुत चित्रण किया गया है। इसी प्रकार याओ ह्सुएह यिंग[8] का 'लाल शलजम' भी किसानो की निर्भीकता और उनकी निरीह स्थिति से सघर्षशील सैनिक बन जाना निरूपित करता है। उस काल जो कविताए लिखी गई उनमे त्साग केह चिआ[9] की 'प्राचीन वृक्ष की कलिया' पाच हजार पक्तियो मे सपन्न हुई। वह काव्योचित उपकरणो द्वारा शानतुग के गोरिल्ला युद्ध और वहा के एक नगर की रक्षा का वर्णन करती है। उसी काल त्साओ-

---

१. Chou Shu-jen (१८८१-१९३६). २ Kuo Mo-jo (जन्म १८९२), ३. Hu Shih (जन्म १८९१); ४ Lin Yutang (जन्म १८९५), ५. Lao Sheh ६. Lu Hsun; ७ Chen Shou-Chu; ८. Yao Hsueh-Ying; ९ Tsang Keh-Chia

यू[1] ने 'शुक्ल वसना महिला' नामक नाटक लिखकर उस नारी डाक्टर का अभिराम चित्रण किया जो अनुपम लगन से घायल सैनिको की सेवा करती रही थी।

: १० :

समाजवादी (कम्यूनिस्त) वर्तमान काल

१९१९ मे 'चौथी मई का आन्दोलन' चला था। तब से आज ३२ वर्ष हुए, चीनी प्रगतिशील लेखक 'कला के लिए कला' का दृष्टिकोण छोड 'जीवन के लिए कला' अपनाकर निरन्तर सृजन करते रहे है। इस साहित्यिक क्राति का अग्रदूत महान् कृतिकार लू ह् सुन[2] था। उस आन्दोलन के बाद से साहित्यकार वहा साम्राज्यवादी, सामन्तवादी और थैलीशाही शक्तियो और प्रवृत्तियो से लडते रहे है। जापानी युद्धकाल (१९३७-४५) और मुक्ति युग मे उन्होने प्रचार और शिक्षण आदि मे प्रभूत योग दिया है। उनमे से अनेक बारी-बारी कलम और हथियार धारण करते रहे है। अनेक उस सघर्ष मे शाति लाभ कर चुके हैं। उस दिशा मे विशेष प्रयत्नशील कुओ मो-जो[3] (विख्यात लेखक और इतिहासकार), माओ तुन[4] (प्रसिद्ध उपन्यासकार) और चाऊ याग[5] (गतिमान साहित्य-समीक्षक) रहे हैं। आज भी चीन के प्रगतिशील साहित्य की बागडोर इन्हीके हाथ है।

१९४२ की येनान साहित्यिक कान्फ्रेस के बाद साहित्य के रूप और विषय के दृष्टिकोण मे विशेष परिवर्तन हुआ। साहित्य जन-प्रसार की पृष्ठभूमि पर खडा हुआ। उसका कर्तव्य किसान, मजदूर और सैनिक का हितचिन्तन माना गया। साहित्य इसी दृष्टि से प्रस्तुत होने लगा। उस दिशा मे निम्नलिखित कृतिया उल्लेखनीय है—माफेग[6] और ह् सी जुग[7] का 'लु लियाग के वीरो के वृत्तात', चाओ शूली[8] का 'ली चिया गाव मे परिवर्तन', युआन चिग[9] और कुग चुएह[10] का 'नए वीरो के वृत्तात', शाओ त्जून्नान[11] का 'बारूदी खेत' (उपन्यास), हु तान-फू[12] का 'अपनी दृष्टि को उदार करो' (ड्रामा), मा-चिएन लिग[13] के 'प्रतिशोध के रक्ताश्रु' और 'कगाल की घृणा' (नया शेसी ड्रामा), के चुग-

---

१ Tsao Yu ; २. Lu Hsun ; ३ Kuo Mo-Jo ; ४. Mao Tun ; ५ Chou Yang ; ६. Mafeng ; ७. Hsi Jung ; ८. Chao Shuli , ९. Yuan Ching ; १० Kung Chueh ; ११ Shao Tjunnan ; १२. Hu Tan Fu ; १३. Machien Ling

पिग[1] का 'अनुपम सेना' (सगीत नाट्), 'हिरोइन लिउ हु-लान' (सगीत नाट्य) आदि । ये सभी सेना, किसानो अथवा लेखको का सघर्ष चित्रित करते है ।

इसी प्रकार लिउ पाइ-यू[2] का 'तीन बाके सिपाही' और 'राजनीति-कमिसर' हुआग-शेग[3] का 'वीर अक्तूबर', ली-वेन-पो[4] का 'आस्तीन पर लहू', हान ह्सी-लियाग[5] का 'यिमेग पहाडो का उडाकू बेडा' (उपन्यास और रिपोर्ताज) आदि भी सेना के वीर कृत्यो को साहित्य मे प्रतिबिम्बित करते है । किसानो के सघर्ष को व्यक्त करने वाली कुछ कृतिया ये है—चाओ-शू लाइ[6] का 'ली यु-त्साई की पक्तिया', वागली[7] का 'उज्ज्वल दिवस', वाग ह्सी-चिएन[8] की 'विपत्ति', तिंग लिंग[9] का 'सागकाग नद पर सूरज चमकता है', ली-पो[10] का 'तूफान', मा चिया[11] का 'चियाग शान गाव मे दस दिन' (उपन्यास) और ली चिह्-हुआ[12] का 'प्रतिक्रियावादी सघर्ष का प्रतिसघर्ष' (नाटक) ।

उस काल के लिखे सगीत नाट्य 'शुक्ल केशा नारी' की बडी ख्याति हुई । युवान चाग-चिंग[13] का 'जाल', चाओ शू-ली[14] का 'हिसआओ एर-हेइ का विवाह', हानत्सू[15] का 'घबडाहट', कुग चु-एह[16] का नारी के मोक्ष की कहानी', हुग लिन[17] का 'लीहसऊ लान', और काग चाओ[18] का 'मेरे दो मालिक' (उपन्यास) नारी का सघर्ष व्यक्त करते है ।

श्रमिको के जीवन को व्यक्त करने मे सगीत नाट्य 'भाई बहन', 'वाग हिसउ लुआन' सफल हुए । काओ कानता[19] 'बावग की कहानी', 'प्रेरक शक्ति' आदि उपन्यास भी उसी क्षेत्र के है । 'लाल झडे का गान' भी शक्तिम् नाट्य कृति है । ऐतिहासिक विषयो की कृतिया 'वागक्वेइ और ली हिसयाग-हिसयाग' (काव्य) और 'चाऊ त्जू शान' है जो उत्तरी शेसी के भू-सुधार आन्दोलन को प्रतिबिम्बित करते है ।

चीनी साहित्य की वर्तमान प्रेरक शक्ति वहा की निर्माण-योजनाए है । जनता और जनाध्यवसाय वहा के साहित्य और कला के आराध्य बन गए है । साहित्य का योग मानव को उसके उत्कर्ष-प्रयास मे वहा मिला है । प्रमादजन्य शृगारिक घिनौनी चेतना चीन के साहित्यकारो की कल्पना को अब दूषित नही करती ।

---

१. Chung Ping, २. Liu Pai Yu; ३ Hung Sheng, ४. Lie Wan Po, ५. Han hsi Liyang, ६ Chao Shu Lie; ७. Wang Li, ८ Wang Hsi Chien; ९. Ting Ling, १० Li Po, ११ Ma Chia, १२ Li Chih Hua, १३ Juan Chang Ching; १४ Chao Shuli, १५ Han Tsu, १६. Kung Chu-Eah; १७ Hung Lin; १८. Kang Cho; १९. Kao Kanta

८. चेक साहित्य

चेक और स्लावो का देश चैकोस्लोवेकिया बडा अभागा रहा है। सदियो उस पर विदेशी हुकूमत रही है और बराबर उसे अपनी आजादी के लिए सघर्ष करना पडा है। परन्तु जब-जब उसने आजादी हासिल की है और उसे शातिपूर्ण अवकाश मिला है, तब-तब उसने साहित्य मे प्रगति की है। चेक साहित्य का इतिहास यहा दिया जा रहा है। स्लाव साहित्य वहा उतना विकसित नही हुआ जितना अन्यत्र। रूस, पोलैण्ड, यूगोस्लाविया, बल्गेरिया, रूमानिया सर्वत्र उसकी बेले अनश्वर रूप धारण कर चुकी है। इससे स्लाव साहित्य का जहा सर्वोत्कृष्ट रूप निखरा है, वही उसपर विचार समीचीन होगा।

११वी सदी के पहले का चेक साहित्य नही के बराबर है। एक-आध गीत के सिवा और कुछ वहा नही मिलता। हा, लैटिन मे निश्चय ही कुछ धार्मिक साहित्य प्रस्तुत हुआ। चेक भाषा का विकास १४वी सदी मे शुरू हुआ। कुछ वीर चरित्र वर्णन (Epics), कुछ लोक साहित्य तब लिख डाले गए। उस सदी के सारे साहित्य का कुछ अनुमान दालिमिल का इतिहास[१] से, जो चेक पद्य मे है, लगाया जा सकता है। उस काल रोज़मबर्क के पीटर[२] की 'रोजमबर्क की पुस्तक' लिखी गई जिसमे तत्कालीन बोहेमिया की सामाजिक दशा और कानूनो पर प्रकाश डाला गया है। उस काल के एक-आध नाटकीय दृश्यो का भी पता चलता है।

१३४८ मे प्राग मे चार्ल्स यूनीवर्सिटी की स्थापना के बाद पद्य से अधिक गद्य मे रचनाए होने लगी और उसी माध्यम से समसामयिक समाज तथा राजनीति की आलोचना शुरू हुई। बाइबिल के चेक अनुवाद हुए और तोमास[३] ने ईसाई विषयो पर अपनी पुस्तक लिखी, जिसमे ईसाइयो के दुराचरण की शिकायत की।

यूनीवर्सिटी के 'रेक्टर' मिस्टर जान हस[४] ने एक प्रबल राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ प्राग मे किया। उसने चेक भाषा को बहुत कुछ सुधारकर साहित्यिक बनाया। हस का प्रधान शिष्य पीटर चेचिकी[५] था, जिसने चेक मे कई धार्मिक निबन्ध लिखे। अनेक बार तो उसने टॉल्स्टॉय[६] के विचार उसके जन्म से सदियो पहले अपने निबधो मे उतारकर रख दिए। उसने चर्च के सगठन की कड़ी आलोचना की।

---

१. Chronicle of Dalimil; २ Petr of Rozmberk (१३१२-४६); ३. Tomás of Stítné (१३३१-१४०१); ४ Mistr Jan Hus (१३६४-१४१५); ५. Petr Checicky (१३९०-१४६०); ६. Leo Tolstoy

चेक साहित्य के अगले डेढ सौ वर्ष धार्मिक कृतियो का युग उपस्थित करते हैं। कैथोलिक नेताओ मे प्रसिद्ध ब्लाहोस्लाव[१] था, जिसने शिक्षा पर विशेष जोर दिया। उसने बाइबिल की नई पोथी का अनुवाद किया जो सदियो चेक प्रोटेस्टैण्टो का स्टैण्डर्ड धर्म-ग्रथ बना रहा। मार्टिन कबातनिक[२] ने अपनी यात्राओ का विवरण भी चेक मे उसी काल प्रकाशित किया। वाक्लाव हाजेक[३] का इतिहास और दानिएल आदम (१५४५-९९) का 'ऐतिहासिक कलैडर' उस काल की रचनाओ मे उल्लेखनीय है।

तीस वर्षीय युद्ध बोहेमिया के लिए नितान्त मारक सिद्ध हुआ। कैथोलिको ने चेक साहित्य की बहुत-सी कृतिया जलाकर भस्म कर डाली। चेक-चिन्तक देश से निर्वासित कर दिए गए। प्रमुख चेक-चिन्तक जान आमोस कोमेन्स्की[४] (कोमेनियस) को अपना जीवन पोलैण्ड, हालैण्ड, और स्वीडन के प्रवास मे बिताना पडा। उसने अनेक काव्य-रूपक लिखे और पहली सचित्र 'टेक्स्ट बुक' प्रस्तुत की। वह उस काल का सबसे बडा शिक्षा प्रचारक था और उसने उस सम्बन्ध मे लिखा भी काफी। इसके बाद चेक साहित्य पर जैसे पाला पड गया। १८वी सदी तक कोई महत्वपूर्ण कार्य उस देश के साहित्य की दिशा मे नही किया जा सका। प्राग की यूनीवर्सिटी चेसुइट एकेडेमी मे बदल दी गई। ऑस्ट्रिया नरेशो ने चेक का तो अपकार किया ही, लैटिन को भी हटाकर वहा जर्मन भाषा प्रतिष्ठित की।

जोसेफ दोब्रोव्स्की[५] स्लाव भाषाशास्त्र का प्रवर्तक था। उसने एक नये आन्दोलन का आरम्भ किया, जिसके परिणामस्वरूप चेक भाषा अपने वर्तमान-भविष्य के मार्ग पर जा खडी हुई। दोब्रोव्स्की का काम रोमाण्टिक तरुणो ने अपने हाथ मे ले लिया। अगली पीढी का नेता जोसेफ जैकब जगमान[६] रोमाण्टिक प्रवृत्ति से सराबोर था और उसने उस धारा को चेक साहित्य मे बहाया। मिल्टन और अन्य विदेशी साहित्यरथियो की रचनाओ का उसने चेक मे अनुवाद किया। उसने अपनी भाषा के व्याकरण और कोष भी प्रस्तुत किए। चेक भाषा अब सर्वथा साहित्यिक हो चली। जगमान के उत्साह ने अनेक साहित्यकारों को उत्साहित किया। वाक्लाव हाका[७] ने शीघ्र ही दो प्राचीन हस्तलिपियो—'क्र लूव द्वर' और 'जेलेना होरा'—को शुद्ध कर प्रकाशित किया। रोमाण्टिको ने उन्हे प्राचीन चेक काव्य-धारा का शुद्ध नमूना माना। कुछ लोगो ने उनकी वास्तविकता मे शका भी की। स्वय टामस मजारिक[८] ने १९वी सदी के अन्त मे उनपर शका प्रकट की।

---

१ Jan Blahoslav (१५२३-७१), २ Martin Kabatnik, ३ Vaclav Hajek of Libocane (मृत्यु १५५८), ४ Jan Amos Komensky (१५९२-१६७०), ५ Josef Dobrovsky (१७५५-१८२९), ६ Josef Jakob Jungmann (१७७५-१८४७), ७ Václav Hanka (१७९१-१८६१), ८ Thomas G Masaryk.

चेक भाषा का पहला विशिष्ट कवि जान कोलार[१] था। जना की यूनीवर्सिटी मे पढते समय ही रोमाण्टिक आन्दोलन से प्रभावित होकर उसने उसी प्रकार का आन्दोलन स्लावो मे भी शुरू किया। अपने सॉनेटो—स्लाव कन्या—मे स्लावो का प्राचीन गौरव प्रकट किया। उसने अपनी कविताओ मे स्लावो की पुरानी परपराओ को फिर से रूपायित किया। उसकी शैली आज भी उस देश मे जीती है। पावेल जोसेफ सफरिक[२] ने भी उसी पथ का अनुसरण किया। उसके विशिष्ट ग्रन्थ विज्ञान सबधी थे और अधिकतर जर्मन मे लिखे गए, परन्तु 'स्लाव पुरातत्व' उसने चेक मे लिखा। उसका मित्र फ्रातिसेक पालाकी[३] चेक इतिहास का पडित था। उसने अपनी जनता का प्राय आधी सदी तक नेतृत्व किया। दोनो का प्रभाव देश की जनता और साहित्य दोनो पर पडा।

लोकगीतो के सग्रह फ्रातिसेक लादिस्लाव चेलैकोव्स्की[४] और कारेल जारोमीर एरबेन[५] ने किया।

रोमान्टिक स्कूल का विशिष्ट कवि कारेल हीनेक माचा[६] था। वह बडी कम आयु मे मरा परन्तु उसने साहित्य पर अपनी कविताओ से गहरा प्रभाव डाला। उसने काव्य-क्षेत्र मे एक नया पथ खोज निकाला, जिसका महत्व लोगो ने तब पूरा-पूरा न समझा। उसकी कविता 'मई' मानवीय प्रारब्ध और पाप से सम्बन्ध रखती है। उसमे प्रकृति का वर्णन अद्भुत हुआ है। बोजेना निम्कोवा[७] ने लोक-कथाओ के अतिरिक्त चेक-किसान जीवन पर अपना सुन्दर उपन्यास 'बाबिच्का' लिखा। उसी पीढी का व्यग्यकार जर्नलिस्ट कारेल हेवलीचेक बोरोव्स्की[८] भी था जिसने डेढ साल रूस मे बिताया था और जिसे वहा की निरकुश व्यवस्था असह्य हो गई थी। गोगोल का उसपर गहरा प्रभाव पडा था और स्वदेश लौटकर उसने नितान्त निर्भीकता से अपने विचार प्रकाशित करना शुरू किया। वह शीघ्र निर्वासित कर दिया गया परन्तु उसकी कविताओ ने उसका नाम देश मे अमर कर दिया।

अगली पीढी के साहित्य का नेतृत्व जान नेरूदा[९] के हाथ मे आया। उसने चेक साहित्य को भली प्रकार सगठित किया। अपनी कविताओ और कहानियो मे प्राग के पुराने मुहल्लो का जीवन खोलकर उसने रख दिया। उसकी कृतिया अपनी सादगी और स्पष्टता के कारण विशेष लोकप्रिय हुई। वितेज्स्लाव हालेक[१०] ने 'साध्य-गीत' और एडोल्फ हेदुक[११]

---

१. Slovak Jan Kollar (१७९३-१८५२), २ Pavel Josef Safarık (१७९५-१८६१); ३ Frantısek Palack'y (१७९८-१८७६), ४. Frantısek Ladıslav Celakovsky (१७९९-१८५२), ५. Karel Jaromır Erben (१८११-७०); ६ Karel Hynek Mácha (१८१०-३६); ७ Bozena Nemcov'a (१८२०-६४); ८. Karel Havlıcek Borovsky (१८२१-५६), ९ Jan Neruda (१८३४-९१); १० Víte Zslav Hálek (१८३५-७४); ११. Adolf Heyduk (१८३५-१९२३)

ने लिरिक तथा एपिक लिखे । कैरोलिना स्वेत्ला का जन्म नाम जोहाना मुज़ाकोवा[1] था । उसने भी चेक साहित्य मे अच्छी रचनाए की ।

१८७० के बाद चेक साहित्य मे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दो परस्पर विरोधी चेतनाओ का विकास हुआ । दूसरी चेतना का माना हुआ नेता जारोस्लाव व्रचलिकी (एमिल फ्रीदा)[2] था । जारोस्लाव ससार के विशिष्ट लेखको मे गिना जाता है । उसने अनेक भाषाओ की प्रधान कृतियो का चेक मे अनुवाद किया और काव्य के क्षेत्र मे अनेक मौलिक रचनाए की । जूलियस ज़ेयर[3] भी अधिकतर उसीके विचारो का था । वह जीवन और रचना दोनो मे अन्तर्राष्ट्रीय विधि का पालन करता था । जोसेफ वी० स्लादेक[4] भी उसी दल का था । वह अमेरिका मे कुछ काल रहा और उसने शेक्सपियर के नाटको के चेक-रूपान्तर किए ।

राष्ट्रीय दल की सहानुभूति अपने स्लाव देशो से थी, विशेषकर रूस से । स्वातोप्लुक चेक[5] ने चेक और स्लाव विषयो को अपनी कृतियो का आधार बनाया । उसने अपने 'गुलाम के गीत' मे जर्मनो का विरोध किया । उसकी अनेक कविताए, व्यग्य, कहानिया बड़ी लोकप्रिय हुई। उसी दल मे चेको की प्रधान कवियित्री एलिस्का क्रास्नोहोर्स्का (एलिस्का पेचोवा)[6] भी थी और फ्रान्तिसेक प्रोचाज्का[7] भी । उसी दल के कुछ साहित्यकारो ने ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे । इसमे प्रधान वाक्लाव बेनिस त्रेविज्स्की[8] और जिकमुन्द विन्टर[9] थे । उस दल का सबसे बडा नेता आलोइस जिरासेक[10] था जिसकी रचनाओ ने सारे चेक इतिहास का स्पर्श किया । उसके उपन्यासो ने चेक राष्ट्रीय भावना को पहले महासमर के समय बहुत जाग्रत किया और वे बडे लोकप्रिय हुए । किसान जनता का चित्रण उस दल के कारेल रईस[11], कारेल क्लोस्टरमान[12], जान हर्बेन[13] और जोसेफ होलचेक[14] ने किए । इग्नात हर्मान[15] ने प्राग जीवन सबधी अपनी कहानियो द्वारा नरूदा की परपरा कायम रखी । १८८० के बाद चेकोस्लोवेक प्रजातन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति टामस मज़ारिक[16]

---

१. Karolına Svetla Johanna Muzakova (१८३०-९९), २. Jaroslav Vrchlıcky' (Emıl Frıda १८५३-१९१२), ३ Julıus Zeyer (१८४१-१९०१); ४. Josef V. Sladek (१८४५-१९१२); ५. Svatopluk Cech (१८४६-१९०८), ६. Elıska Kr'asnohorsk'a (Elıska Pechov'á) (जन्म १८४७); ७. Frantısek S. Procházká (जन्म १८६१), ८ Vaclav Benes Trebızsky (१८४९-८४); ९ Zıkmund Wınter (१८४६-१९१२), १० Aloıs Jırásek (१८५१-१९३०); ११ Karel V. Raıs (जन्म १८५९), १२ Karel Klostermann (१८४८-१९२३), १३ Jan Herben (१८५७-१९३६), १४ Josef Holecek (१८५३-१९२९), १५. Ignát Herrmann (जन्म १८५४), १६ Thomas G Masaryk (१८५०-१९३७)

का प्रभाव साहित्य पर वेग से पडने लगा। उसने नई जनसत्ता की प्रवृत्तियो का तरुणो मे प्रचार किया। फ्रान्तिसेक जेवियर साल्दा[1] आलोचक था और उसने स्वतत्र आलोचनाओ द्वारा कला सबन्धी चेतना जगाई। रूसी और फ्रेंच प्रकृतिवादियो और यथार्थवादियो का देश मे अध्ययन शुरू हुआ। रूज़ेना स्वोबोदोवा[2] ने नारियो और तरुणियो का प्रभाववादी चित्रण किया। मातेज अनास्तासिया सिमाचेक[3] ने कारखानो पर अपनी कृतियो मे प्रकाश डाला और कारेल चापेक चोड[4] ने प्राग के मध्यवर्गियो का ह्रासोन्मुख चित्र खीचा। फ्राना स्रामेक[5] ने भावनाओ के सघर्ष का विश्लेषण किया और अपने 'रजत पख' तथा 'तीलो' (शरीर) मे प्रभाववादी प्रकृति को रूपायित किया। अन्ना मेरी तिल्शोवा[6] ने अच्छे सामाजिक उपन्यास लिखे।

जोसेफ स्वातोप्लुक माचर[7] पिछली १९वी और २०वी सदी के विशिष्ट सामाजिक कवियो और लेखको मे से है। उसने अपने 'युगो की प्रेरणा' मे धर्म और परपराओ की कडी आलोचना की। इस 'एपिक' के अतिरिक्त भी उसने अनेक रचनाए की। पीटर बेजरुच[8] ने साइलेशिया के चेको का उनके सघर्ष मे अपनी कृतियो द्वारा योग दिया। अतोनिन सोवा[9] भी उसी काल का साहित्यकार था। ओताकार ब्रेजिना[10] विशिष्ट रहस्यवादी कवि था। और उसने सारे जगत् को मानवीयता के दृष्टिकोण से अपना माना।

उस काल के लिरिक कवियो मे प्रधान ओतोकर थीर[11] और कारेल तोमान[12] थे। जिरी कारासेक[13] नव रोमान्टिक प्रवृत्तियो से प्रभावित था। विक्टर डीक[14] व्यग्यकार राष्ट्रीयतावादी था। उस प्रवृत्ति के अन्य लेखक स्तानीस्लाव न्यूमान[15] और फ्रान्तिसेक गेलनर[16] है।

वर्तमान चेक साहित्य का सबसे महान् व्यक्ति कारेल चापेक[17] था। उसने विदेश सबधी अपने स्केचो मे सुदर व्यग्य चित्र उपस्थित किए है। उसने मशीनो के विरोध मे लिखे

---

१. Frantısek Xavıer Salda (१८६७-१९३६), २ Ruzena Svobodov'a (१८६८-१९२०); ३. Matej Anastasıa Sım'acek (१८६०-१९१३), ४ Karel Capek-Chod (१८६०-१९२७), ५. Frana Sramek (जन्म १८७७); ६. Anna Marıe Tılschov'a (ज० १८७३), ७ Josef Svatopluk Machar (१८६४-१९४२), ८. Petr Bezruc (जन्म १८६७), ९. Antonın Sova (१८६४-१९२८), १० Otakar Brezına (१८६८-१९२९); ११. Otokar Theer (१८८०-१९१७); १२ Karel Toman (जन्म १८७७), १३ Jırı Karasekze Lvovıc (जन्म १८७१); १४ Vıktor Dyk (१८७७-१९३१), १५ Stanıslav K. Neumann (जन्म १८७५), १६ Frantısek Gellner (१८८०-१९१४), १७ Karel Capek (१८९०-१९३८),

अपने नाटको और उपन्यासो से विदेशो मे पर्याप्त ख्याति अर्जित की। उसकी कृतियो मे प्रसिद्ध निम्नलिखित है—'स्रष्टा आदम', 'माक्रोपुलोस रहस्य', 'सर्वशक्तिमान का कारखाना', 'सफेद कोढा'। अपने भाई जोसेफ के सहयोग से उसने 'कीडो का जीवन' लिखा। मजारिक से उसकी 'बातचीत' राष्ट्रपति के व्यक्तित्व को खोलकर रख देती है।

उस काल का प्रतिभाशाली नाट्यकार फ्रान्तिसेक लागर[1] है। उसने 'सूई के सुराख से'—लिखा। प्रथम महासमर के बाद के साहित्यिको मे प्रधान रूडोल्फ मेदक[2], जोसेफ कोप्ता[3] और फ्रान्तिसेक कुबका[4] है। उस काल की सुन्दरतम कृति 'नेक सैनिक स्वेजक' है, जिसे जारोस्लाव हासेक[5] ने रचा। उस उपन्यास का, उसकी खामियो के बावजूद वर्तमान चेक साहित्य मे अपना स्थान है। उस युद्ध के बाद सामाजिक और आचार सबधी प्रश्नो पर विचार करने का भी साहित्य मे प्रयत्न हुआ। जोसेफ होरा[6] और जीरी वोल्कर[7] ने उस दिशा मे प्रयत्न किए। वितेस्लाव[8] ने काव्य मे अमूर्त शैली का विकास किया। नये उपन्यासकारो मे व्लादिस्लाव वचुरा[9] है, जिसने नई शैली का प्रयोग किया है। इधर के तरुण लेखको मे प्रधान जान वाइस[10], इगोन होस्तोव्स्की[11] और व्लादिमीर नेफ[12] है।

१९३९ मे दूसरा महासमर शुरू हुआ और नात्सी साम्राज्यवादी क्रूरता का पहला शिकार चैकोस्लोवाकिया हुआ। कारेल चापेक का निधन म्यूनिख सुलहनामे के समय ही हो गया था और अब सहसा शत्रु के घर पर सर्वथा अधिकार कर लेने पर साहित्य की धारा रुक गई। अधिकतर राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, प्रगतिशील साहित्यकार तलवार के घाट उतार दिए गए, अथवा आक्रमण की अन्य क्रूरताओ के परिणामस्वरूप विनष्ट हो गए। कुछ जो स्वदेश से भागकर विदेशो मे पहुचे, उन्होने अपने साहित्य का अध्ययन और विकास जारी रखा। युद्धोत्तर की नई सरकार ने चेक और स्लोवक साहित्यकारो को नया जीवन प्रदान किया है और उस सरक्षा से चेक-भारती एक बार फिर चमक उठी है। अभी हाल मे अनेक भारतीय कृतियो के अनुवाद चेक मे प्रस्तुत हुए हैं। कई हिन्दी रचनाए भी चेक मे अनूदित हुई है। वस्तुत भारतीय कृतियो के जितने अनुवाद चेक भाषा मे हुए है, उतने रूसी को छोड और किसी विदेशी भाषा मे नही हुए।

---

१ Frantısek Langer (जन्म १८८७); २. Rudolf Medek (१८९०-१९३८); ३ Josef Kopta (जन्म १८९४), ४ Frantısek Kubka (जन्म १८९४), ५. Jaroslav Hásek (१८८४-१९२३), ६ Josef Hora (जन्म १८९१), ७ Jırı Wolker (१९००-२४), ८ Vıtezslav Nezval (जन्म १९००), ९. Vladıslav Vancura (१८९१-१९४३), १० Jan Weıss, ११. Egon Hostovsky, १२ Vladımır Neff,

९. जर्मन साहित्य

जर्मन साहित्य ससार के प्रौढतम साहित्यो मे गिना जाता है । उसकी वैज्ञानिकता तो सिद्ध है ही, विज्ञान सबधी चर्चा भी उस साहित्य मे काफी हुई है । वस्तुत विज्ञान-साहित्य जितना जर्मन भाषा मे है, उतना ससार की किसी अन्य भाषा मे नही ।

जर्मन साहित्य के अध्ययन के लिए हमे उसे अनेक काल-स्तरो मे बाटना होगा । इनमे पहला प्राचीन काल ८०० ई० के लगभग प्रौढता को प्राप्त हुआ, दूसरा मध्यकाल प्राय: १२०० के लगभग । तीसरा, वर्तमान युग, गेटे के जीवन-काल मे १८०० के लगभग शुरू हुआ, जो अपनी विविध साहित्यिक चेतनाओ द्वारा स्वय अनेक स्कधो मे बट गया है ।

: १ :

प्राचीन युग

प्राचीन जर्मन साहित्य निस्सदेह अग्रेजी समसामयिक साहित्य की अपेक्षा कम और नि सत्व है । वीर बैलेडो का अभाव तो उस काल जर्मन मे नही था परन्तु निश्चय आगल सैक्सन 'बोवुल्फ' की-सी कोई कृति तब नही रची गई । 'डास हिल्डे-ब्रान्डस्लिड' निश्चय ही उस महान् अग्रेज़ी कृति की समता नही कर सकता । फिर भी यह जर्मन कृति उस काल के बैलेड साहित्य की एक मजिल प्रस्तुत करती है । उसकी कहानी पिता-पुत्र के बीच मरणान्तक युद्ध की है । उपलब्ध खण्ड कहानी को अपूर्ण प्रस्तुत करता है, जिसमे युद्ध मात्र प्रदर्शित है, यद्यपि उसके प्रमाणो से सिद्ध है कि पिता विजयी हुआ और उसे अपने मान की रक्षा के लिए पुत्र का वध करना पडा । सोहराब और रुस्तम की कहानी जैसे जर्मन आधार से फिर उठ खडी हुई है ।

जर्मनी मे वीर बैलेडो का जनता मे उस काल पर्याप्त प्रचार था । फ्रेंच 'त्रूबेदूरो' की तरह वहा भी पेशेवर गायक वीर कृत्यो से मुखरित बैलेड नगर-नगर, गाव-गाव जाकर गाया करते थे । जर्मन कबीलो का निरन्तर इधर-उधर भटकते फिरना, राज्यो का उत्थान-पतन, राजाओ के परस्पर सघर्ष निस्सदेह अत्यन्त शक्तिम् बैलेड रचनाओ के आधार बन सकते थे और बने । आस्त्रोगोथ जाति के राजा थियोडोरिक (डीत्रीच फान बेर्न)[१], हूणो के राजा अत्तिला (एतजेल)[२] और बरगडी के राजा गुन्थर[३] के वीर कृत्यो पर अनेक बैलेड रचे गए जिनका प्रभाव उस काल के जर्मन साहित्य पर गहरा

१ Dietrich Von Bern—Theodoric, २. Etzel (Attila), ३. Gunther

पडा। फिर धीरे-धीरे जब अनेक बैलेड एक साथ मिलकर आकृति को विस्तार देने लगे तब वीर काव्य[1] का बोध भी लोगो को होने लगा और लोकप्रिय वीरकाव्य की रचना शुरू हुई।

: २ :

मध्य युग

लोककाव्य

वीरकाव्यो का उदय मध्य काल का अग्रदूत है। तेरहवी सदी ईस्वी के आरम्भ मे रचित 'निबेलुगेनलीड'[2] (निबेलुगो का गीत) वीरकाव्यो मे प्रधान है। इसकी रचना अनेक स्रोतो से सामग्री एकत्र कर दक्षिण जर्मनी अथवा आस्ट्रिया के किसी चारण ने की। इस काव्य के कथानक राजा गुन्थर और एतजेल (अत्तिला) के दरबार से सम्बन्धित है। आरम्भ के सर्गो मे हागेन और सीगफ्रिड प्रतिद्वन्द्वी हैं और पिछले सर्गों मे हागेन और क्रीमहिल्ड। गुन्थर का सामन्त हागेन त्यूतन स्वामिभक्ति का आदर्श उपस्थित करता है। सीगफ्रिड क्रीमहिल्ड के भाई गुन्थर की सहायता कर उसके प्रेम को जीत लेता है और साथ ही वीर नायिका ब्रूनहिल्ड के विरोध पर भी हावी हो जाता है। दोनो पत्निया जब एक दूसरे से अपने पतियो के गुणो का बखान करती हैं, तब पति से सहायता का रहस्य जान लेने के कारण क्रीमहिल्ड ब्रूनहिल्ड पर वास्तविक सत्य का व्यग्य करती है। ब्रूनहिल्ड को जब पता चलता है कि सीगफ्रिड वस्तुत. उसका विजेता है, तब वह क्रोध से जल उठती है और उस वीर की मृत्यु को अपनी लज्जा और मान की रक्षा का एकमात्र साधन मान लेती है। यह अनीति दरबार के और वीरो को स्वीकार नही होती परन्तु हागेन जो जर्मन शौर्य और स्वामिभक्ति का मूर्तिमान प्रतीक है, रानी की मान-रक्षा के लिए सीगफ्रिड से सघर्ष करने को उद्यत हो जाता है और शिकार के समय उसे छुरा भोक देता है। विधवा क्रीमहिल्ड का मधुर सौदर्य अब प्रतिशोध की भावना से विकृत हो उठता है और वह पथ के हन्ताओ के नाश मे सलग्न हो जाती है। इस अर्थ वह हूणो के राजा एतलेज से विवाह तक कर लेती है और उसकी रानी के अधिकार से अपने दरबार मे बरगण्डी से अपने बन्धुओ को आमन्त्रित करती है।। हागेन गुन्थर को अनागत भय की ओर सकेत कर आमन्त्रण के सबध मे सचेत कर देता है परन्तु जब गुन्थर जाना निश्चय ही कर लेता है तब हागेन भी स्वामिभक्ति से प्रेरित होकर अवश्य मरण परिणामत जानता हुआ भी उसका अनुकरण करता है। परिणाम वही होता है, जिसका

१ Epics; २ Das Nibelungenlied

भय था और कष्टमय सघर्ष के बाद वह स्वय मारा जाता है यद्यपि यह क्रीमहिल्ड के सामने सिर नही झुकाता।

दरबारी वीर काव्य

इस प्रकार के काव्य वस्तुत लोककाव्य थे जिनके रचयिताओ का सही पता नही चलता, यद्यपि यह सदेह रहित है कि इनकी रचना चारणो ने ही की। भारत मे भी चारण साहित्य की कमी नही, राजस्थानीय डिगल उससे भरा पडा है। जगनिक का 'आल्हा' उसी प्रकार का एक चारण काव्य है, यद्यपि उसके साथ एक दरबारी कवि का नाम जुडा हुआ है। अति प्राचीन काल मे भारत मे भी सस्कृत महाकाव्यो के उदय के पहले चारण ही रामायण-महाभारत आदि की कथाए सर्वत्र फिर-फिरकर सस्वर गाया करते थे। पश्चात्, वाल्मीकि, व्यास आदि-से समर्थ कवियो ने रामायण-महाभारत के-से वीर काव्यो की रचना की। यद्यपि वाल्मीकि और व्यास को दरबार विशेष से सम्बन्धित करना आसान न होगा, उनकी कृतियो को दरबारी वीरकाव्य की सज्ञा देना शायद अनुचित न होगा। उसी परपरा मे पिछले काल कवि चन्द ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की। जर्मनी मे भी मध्यकाल के अज्ञातनामा शिथिलबन्ध लोक-वीरकाव्यो की रचना के बाद दरबारी वीर काव्यो की रचना हुई।

१२वी सदी के प्राय अन्त मे दरबारी चारणो ने लोकप्रिय वीरगाथाओ के आधार पर फ्रेंच त्रूबेदूर परम्परा से प्रभावित 'एपिक काव्यो' की रचना प्रारम्भ की। इनमे जर्मन कुलो के पारस्परिक सघर्ष, खूनी बदलो और शौर्य कृत्यो का अभिनिवेश हुआ। इस प्रकार के जर्मन काव्यो की रचना मध्यकाल मे होहेन्स्टाफेन[१] सम्राटो के शासनकाल मे हुई। उस काल के तीन विशिष्ट कवि हार्तमान फॉन ओई[२], वुलफ्राम फॉन एशेनबाख[३] और गॉटफ्रीड फॉन स्ट्रासबुर्ग[४] थे। हार्तमान आर्थर सम्बन्धी अपनी कथाओ से काफी विख्यात हो गया है परन्तु उसकी उस काल की विशिष्ट रचना 'डेर आर्म हीनरिख' (अभागा हेनरी) थी। उसमे एक पवित्र हृदया कुमारी के त्यागशील प्रणय के प्रभाव से महाकाय वीर का कुष्ठ दूर हो जाता है। मध्यकालीन जर्मनी की सबसे महान् काव्य-कृति 'पार्जीवाल' वुलफ्राम ने प्रस्तुत की। 'पार्जीवाल' धार्मिक वीर है, आर्थर के वीरो मे से एक, और सर्वथा सरल होने के कारण उसे निरन्तर अनृत से सघर्ष कर बार-बार पराजित होना पड़ता है। परन्तु अन्त मे वह विजयी होकर शाति लाभ करता है। गॉटफ्रीड 'त्रिस्तान उन्ड इसोल्ड' का रचयिता है। इस काव्य मे

---

१. Hohenstaufen, २. Hartmann Von Aue, ३. Wolfram Von Eschenbach, ४. Gottfried Von Strassburg

वीर नायक और नायिका एक दूसरे के प्रति प्रणय से प्रेरित अपने जीवन की प्रेम पर आहुति चढा देते हैं।

प्रणय काव्य

वीरकाव्यो के अतिरिक्त उस मध्यकाल मे वीरो और उनकी नायिकाओ के परस्पर प्रणय पर भी एक प्रकार की पृथक् काव्य रचना हुई, जिसे जर्मन मे 'मिनेसागर'[1] साहित्य की संज्ञा मिली। इस पद्धति का आरम्भ वस्तुत. प्रोवास मे हुआ था परन्तु उसकी सीमा का प्रसार जर्मन साहित्यिक प्रवृत्तियो को भी प्रभावित किए बिना न रहा। वस्तुत उसकी प्रेरणा सारे मध्य यूरोपीय साहित्य के मधुर रूपायन का आधार बनी। उस प्रणय की सामग्री पर जर्मनी के देहातो मे असख्य लिरिक लिखे गए और इन्ही लिरिको के रचयिताओ का नाम 'मिनेसागर' पडा। उनका प्रधान प्रतिनिधि वाल्थर फॉन डेर फोगलवाइड[2] था। इस महान् गायक ने वियना के दरबार मे राइनमार से अपनी कला सीखी। राइनमार फॉन हागेनो[3] तब के गायको का नेता था। वाल्थर अन्य चारणो की ही भाति दरबा -दरबार घूमा करता था। जिन दरबारो को उसने अपनी उपस्थिति से सनाथ किया, उनमे प्रधान थुरिंगिया के लैंडग्रेव हरमान[4] और होहेनस्टाफेन राजकुल के सम्राट् फ्रेडरिक द्वितीय के थे। वाल्थर ने होहेनस्टाफेन सम्राट् के पक्ष का पोप के विरुद्ध समर्थन किया और उस निमित्त हृदयग्राही उद्देश्य-परक कविताए रची। उसके 'मिनेसाग' अत्यन्त सरल और शालीन हैं। उसने भी त्रूबेदूर परपरा मे लिरिक लिखे परन्तु उनकी ताजगी आज भी पूर्ववत् बनी है। जिस प्रकार विद्यापति की वाग्धारा अपने सरक्षक राजा शिवसिंह की रानी लखिमादाई सम्बन्धी अभिराम पदो मे फूट पडी थी, उसी प्रकार प्रायः उन्ही दिनो जर्मनी के उस प्रधान गायक के गीत गढ की रानी के प्रति बह चले, यद्यपि वाल्थर विद्यापति के समान प्रणय मे कृतार्थ न हो सका। तब उसकी स्वर-लहरी भोली ग्रामीण कुमारियो के लावण्य के बखान मे गूज उठी। उसने दरबारी लिरिक को चरम प्रौढता प्रदान की।

मध्यकालीन दरबारी कवियो मे एक प्रसिद्ध गायक तानहाउसेर[5] हो गया है। उसके सम्बन्ध मे यह पुराण-प्रसिद्ध हो गया था कि वह प्रणय की देवी वीनस के दरबार मे भी रह चुका था। १५वी सदी के एक लोकगीत का कथन है कि साल भर वीनस के साथ विलास कर लेने के बाद एक दिन तानहाउसेर की ज्ञान-चेतना सहसा जाग्रत हो उठी और वह अनुशोचना का शिकार हुआ। अपनी आत्मा की नरक से

---

१. Minnesanger, २ Walther Von der Vogelweide, ३. Reinmar Von Hagenau; ४ Landgrave Hermann, ५. Tannhauser

रक्षा के लिए तब वह पोप के पास रोम भागा। परन्तु जब वहा उसे निराशा के सिवा कुछ हाथ न लगा, तब वह फिर वीनस के दरबार को लौट गया। भगवान् के चमत्कार से उसे सद्गति की भी सूचना दी गई परन्तु प्रायश्चित्त के बदले उसने अब तक वीनस के साथ विलास ही स्वीकार कर लिया था। तानहाउसेर को अपने गायनो की प्रेरणा वाल्थर से मिली थी और उसके लिरिको मे ग्रामीण किसान तरुणियो का अधिकाधिक चित्रण मिलता है। अधिकतर उन्हीके प्रति नाइडहार्ट की ही भाति उसका स्वर भी ध्वनित हुआ है।

लोकगीत

१५वी सदी को तानहाउसेर ने अपनी कृतियो से सनाथ किया। उसके अतिरिक्त भी लोकगीतो का प्राबल्य रहा। असख्य लोकगीत उस काल मे रचे गए। उनकी गेयता और माधुर्य इतने आकर्षक हैं कि आज भी वे बासी न पड सके और उसी प्राचीन उत्साह से गाए जाते है। मानव-जाति के हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, मैत्री-वैर आदि उन गीतो के आधार बने। साहस के कार्य, सयोग-वियोग की अनुभूतिया, ऋतुओ के विविध व्यापार उन गीतो के स्वर मे मूर्त हुए। भाषा वस्तुत जनबोली थी परन्तु उसके गीतो का स्वर व्यापक सिद्ध हुआ। दो राजसन्तानो का प्रणय एक प्रसिद्ध गीत मे अभिराम मुखरित हुआ है। दूसरे मे प्रेमी अपनी समाधि से, रात मे उठकर प्रेयसी को खोजने निकल पडता है। इसी गीत ने गॉटफ्रीड आगुस्ट बीरगर[1] को उसके सुन्दरतम बैलेड 'लेनोरे' (१७७४) लिखने को प्रेरित किया। स्कॉट[2] और रोसेट्टी[3] दोनो ने 'लेनोरे' का अनुवाद अग्रेजी मे किया। अज्ञातनामा अनेक कवियो के अनेक अन्य गीत माझियो, पहाड के निवासियो और छात्रो के सम्बन्ध मे लिखे गए, अनेक निम्नवर्गीय शठो के सम्बन्ध मे भी।

मिनेसागेर का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उस परम्परा के गीत लोक-गीत थे, चारणो द्वारा गाए और लिखे गए। गीतो की एक और परम्परा १५वी-१६वी सदी मे जगी, जिसका नाम उसके गीतो और कविताओ की अलकृत तथा पेचीदी शैली के कारण 'माइस्तेरसिंगेर' साहित्य पडा। माइस्तेरसिंगेर उन गीतो का नाम नही, उनके गायको और रचयिताओ की सज्ञा है। नगरो के उदय से शिल्पाचार्यों और सौदागरो मे प्राचीन लोकगीतो की परम्परा को बचा रखने और जीवित रखने की प्रेरणा हुई। नूर्नबर्ग, मेन्त्स और स्ट्रासबुर्ग मे काव्यकला के शिक्षण के लिए अनेक पीठ स्थापित हो गए। कवि बनने की इच्छा करने वाला व्यक्ति अपरेन्टिस के रूप मे वहा पहले भर्ती होता था। यदि उसने छदो की रचना मे कुछ प्रतिभा दिखाई तो

१. Gottfried August Beirger; २. Scott; ३. Dante Gabriel Rossetti

उसकी सज्ञा 'काव्यपथिक' (जर्नीमैन) होती थी और यदि उसने एक नया स्वर, ध्वनि अथवा छद गढ डाला तब वह गायनाचार्य अथवा 'माइस्तेरसिंगेर' कहलाता था। १५वी-१६वी सदियो मे नगरो मे श्रेणीबद्ध सौदागरो का प्राधान्य था। श्रेणी अथवा 'गिल्ड' जीवन मे सर्वत्र प्राधान्य धारण कर चुके थे। यहा तक कि छात्रो और आचार्यों तक के अपने-अपने गिल्ड बन गए थे। स्वय वहा की यूनीवर्सिटियो का आरम्भ भी 'यूनीवर्सिटास' के जरिए उसी 'गिल्ड' के आधार पर हुआ। नूर्नबर्ग मे माइस्तेरसिंगेर अर्थात् मास्टर गायको की एक श्रेणी ही बन गई। उस दल का मुख्य, पेशे से मोची, कवि हान्स साख्स[1] था। साख्स ने चार हज़ार से ऊपर पूर्ण गीत लिखे। स्वय उसे अपने इन गीतो पर बडा अभिमान था परन्तु उत्तरकालीन पीढियो ने उसे बहुत महत्व न दिया। हा, अपने गीतो के अतिरिक्त उसने जो प्रहसन और नाटक लिखे, उनका आदर निश्चय ही पीछे भी काफी हुआ। उसके हास्यमय नाटक साकेतिक रूप से 'फास्तनाक्तस्पीले'[2] कहलाते है। हान्स प्रसिद्ध प्रोटेस्टेट धार्मिक नेता मार्टिन लूथर[3] का समकालीन था और सुधारवादी आन्दोलन मे भाग लेने वाले पहले कवियो मे से था।

यहा पर उस महान् सुधारवादी नेता मार्टिन लूथर का भी उल्लेख कर देना समीचीन होगा। लूथर स्वय कोई विशिष्ट साहित्यिक न था परन्तु 'बाइबिल' के उसके अद्भुत अनुवाद ने निश्चय ही जर्मन साहित्य के इतिहास मे एक मजिल स्थापित कर दी। उस साहित्य के लिए यह अनुवाद अत्यन्त महत्व का था। इस अनुवाद से जर्मन भाषा को अपनी सीमाओ मे व्यापक बनने मे बड़ी सहायता मिली। कारण यह था कि उसे वृद्ध और तरुण, पुरुष और नारी, धनी और कगाल सभी पढते थे। आगे की अनेक पीढियो मे लेखको ने अपनी शब्द-योजना उसी अनुवाद के आधार पर प्रस्तुत की। सुधारवादी आदोलन ने जर्मन इतिहास के मध्ययुग का अन्त कर दिया और वर्तमान युग का वह अग्रदूत बनकर आया। उस आदोलन के परिणामस्वरूप जो सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल हुई, उसने अगली दो सदियो के साहित्य को गति, चेतना और दिशा दी।

: ३ :

पुनर्जागरण और सुधार-आन्दोलन

जर्मन इतिहास मे पुनर्जागरण और धार्मिक सुधार के आदोलन बडी महत्व-पूर्ण और दूरगामी प्रेरणाए सिद्ध हुए। १६वी सदी मे इन दोनों प्रेरणाओ ने जर्मन

---

१. Hans Sachs (१४९४-१५७६), २ Fastnachtspiele; ३. Martin Luther

इतिहास और साहित्य मे विशेष प्रगति पाई। कैथोलिक चर्च की प्रभुता के विरुद्ध सघर्ष और प्राचीन क्लासिकल ग्रीक और लैटिन साहित्य तथा ज्ञान का पुनरुज्जीवन जर्मन साहित्य के ऊपर अपनी अमिट छाप छोडे बिना न रह सके। रेनेसा और सुधार-वादी आन्दोलन को कुछ लोगो ने दो विरोधी विचारधाराए माना है। इनमे पहली वैयक्तिक स्वाधीनता और स्वतन्त्र चिन्तन तथा निर्बाध जीवन की प्रेरक है और दूसरी प्राय: प्रतिक्रियावादी है जिसने व्यक्ति को पोप की सत्ता से हटाकर बाइबिल की शृङ्खला मे बाधा और जो इस प्रकार चर्च सबधी उन धार्मिक प्रेरणाओ से व्यक्ति को स्वतन्त्र न कर सकी। मूलत वास्तव मे वह रूढिवादी ही थी। फिर भी दोनो का जर्मन इतिहास और साहित्य के निर्माण मे जोरदार हाथ रहा है। जहा एक ने जर्मनी के मानव को एक नया दृष्टिकोण तथा जीवन और साहित्य के मूल्याकन के लिए एक नया मानदण्ड दिया, दूसरी ने एक प्राचीन रूढिवादी अप्रगतिशील तथा प्रतिगामी सस्था के विरुद्ध विद्रोह कर एक नई चेतना को जन्म दिया। लोगो को ऐसा लगा कि उनको प्रतिगामी असमाजवादी सत्ता के विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार है। और यह प्रवृत्ति तब केवल धर्म के क्षेत्र तक ही सीमित न रह सकी, ऐसा सम्भव भी न था। नई चेतना पुराने मूल्यो को पुराने रूप और परिणाम मे अङ्गीकार करने को प्रस्तुत न थी। विद्रोह की भावना ने जो भित्ति के सहारे नीव तक पहुचकर रूढियो की अट्टालिका को हिला दिया तो उसने अपनी शक्ति पहचानी और वह सर्वत्र सामाजिक औचित्य के नाम पर सघर्ष करने लगी। इस दिशा मे समाज और साहित्य की दृष्टि से अग्रगामी जर्मन मानवता-वादियो का एक दल था।

मानवतावादी

जर्मन मानवतावादी—जोहान्स रूखलिन[1], डेसिडेरियस इरैस्मस[2] और उलिरख फॉन हुट्टेन[3]—यद्यपि जर्मनी मे उत्पन्न जर्मन थे, परन्तु उनके ज्ञान का विस्तार यूरोप-व्यापी था। उन्होने शीघ्र यूरोप की प्रगतिशील विचारधारा का नेतृत्व अपने हाथ मे ले लिया। इरैस्मस ऑक्सफोर्ड मे ग्रीक का प्रोफेसर था। उसकी प्रतिभा का बडा गहरा प्रभाव इग्लैण्ड की तत्कालीन चेतना पर पडा। मानवतावादी नेताओ के आदोलन की पद्धति पुरानी रूढिगत सस्थाओ पर लेखनी से प्रबल प्रहार थी। पादरियो, मठो, चर्च और उसके विशेषाधिकारो पर उन्होने प्रबल आघात किया और चर्च के अधिकारियो तथा उनके हथकडो की शिकार जनता, दोनो को उन्होने 'मूर्ख' कहकर पुकारा। मूर्खो और मूर्खता के ऊपर उन्होने जो विशद साहित्य रचा, उसकी मात्रा और शैली दोनो असाधारण थे। सुधारवादी आन्दोलन के प्रवर्तक लूथर को अधिकतर उस दिशा

१. Johannes Reuchlin; २. Desiderius Erasmus; ३. Ulrich von Hutten

मे प्रगति का नेता कहा जाता है, परन्तु वस्तुत और मूलत लूथर प्रतिगामी ही था। उसने पोप की सत्ता पर कुछ आघात तो किया, परतु किसी मात्रा मे उसका उच्छेद उसे सह्य न था। हमारा मतव्य यहा लूथर के आदोलन को नगण्य करार देना नही, केवल इतना कहना अभीष्ट हे कि स्वतन्त्र और आलोचक—चेतना मे प्राण फूकने वाले दूसरे थे—वे प्राचीन क्लासिक पडित जो पुनर्जागरण के पुजारी थे और जिनके पास तर्क की शक्ति तथा मानवता की प्रेरणा थी—इरैस्मस आदि।

स्वय लूथर ने मानवतावादियो के प्रयास का विरोध नही किया। उसने रोमन कॉमेडियो का अध्ययन और रगमच पर अभिनय सराहा भी यद्यपि उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि धार्मिक क्षेत्र मे थी। लूथर के आदोलन के प्राय साथ ही जर्मनी मे राजनीतिक उथल-पुथल भी मच गई और उसने देश को, उसके नगर-नगर, गाव-गाव को बरबाद कर दिया। जर्मन जनसख्या का एक बडा अश नष्ट हो गया। परिणाम यह हुआ कि वहा साहित्य और कला के क्षेत्र मे पुनर्जागरण का आदोलन उस मात्रा मे सफल न हो सका जिस मात्रा मे वह यूरोप के अन्य देशो—इटली, फ्रास, स्पेन, हालैण्ड और इग्लैड—मे हुआ था।

जर्मन मानवतावादियो ने सिद्धातो द्वारा आदोलन के रूप मे तो निश्चय ही काफी प्रगति की और उस दिशा मे विपुल मात्रा मे साहित्य रचा। परन्तु जर्मन साहित्य और भाषा का कल्याण वे तत्काल न कर सके क्योकि उस साहित्य और भाषा को उन्होने अपनी लेखनी से सनाथ न किया। वे अपने विचार लैटिन (लातिनी) मे ही प्रकट करते रहे। उनका लिखना-पढना तो लैटिन मे होता ही था, उनके व्याख्यान भी सदा उसी जबान मे होते थे। हा, उल्रिख फॉन हुट्टन और टॉमस मूरनेर[1] के-से कुछ मानवतावादी पडित इसके अपवाद भी थे। उन्होने यूनीवर्सिटियो का आरभ किया और वहा क्लासिकल ज्ञान का गढ कायम कर दिया परतु उनकी धारा बराबर ग्रीक और लैटिन मे ही बहती रही। एकाध ग्रन्थ जो आम जनता के लिए जर्मन मे लिखे भी गए उनका भी प्रचार के अर्थ शीघ्र लैटिन मे अनुवाद कर लिया गया क्योकि तभी उनमे प्रकटित विचारो का प्रचार हो सकता था और हो सका। उदाहरणत. सेबैस्टियन ब्रैंट[2] की पुस्तक 'नारेन्शिफ'[3] (मूर्खो की नौका, १४९४) जो इस दिशा मे जर्मन भाषा की पहली पुस्तक थी, यूरोप-व्यापी ख्याति तभी प्राप्त कर सकी जब उसका लैटिन सस्करण प्रकाशित हुआ। यह जर्मन काव्य १५वी सदी के अन्तिम चरण के साहित्य पर एक रत्न है, जिसमे तात्कालिक जीवन व्यग्य के रूप मे चित्रित हुआ है। अनेक मूर्ख एक साथ नौका-विहार करते है, प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र मे पारंगत

१. Thomas Murner; २ Sebastian Brant; ३. Narrenschiff

है और उस दिशा मे अपनी विशेष मूर्खता का प्रदर्शन करता है। इस व्यग्य काव्य का अनुकरण, इरैस्मस, मूरनेर तथा अन्य मानवतावादियो ने किया। काव्य अनेक बार अग्रेज़ी और फ्रेच मे अनूदित हुआ।

१६वी सदी जर्मन साहित्य के लिए कुछ अच्छी न सिद्ध हुई क्योकि जहा लैटिन ड्रामा, गद्य और पद्य का एक नये सिरे से विकास हुआ, वहा जर्मन साहित्य उन पण्डितो की मेधा से सर्वथा अछूता रहा। कुछ काल पहले, १९वी सदी के अन्त और बीसवी सदी के आरम्भ मे, जैसे हिन्दुस्तान मे भी विद्वानो और साहित्यकारो को अपनी भाषा के प्रति उदासीनता थी, वैसे ही जर्मनी मे भी तब जनसाधारण, साहित्यिक और पण्डित सभी अपनी भाषा से उदासीन थे और निरन्तर लैटिन का उपयोग करते थे। यह स्थिति वस्तुत इतनी भयानक हो उठी कि जो लोग जर्मन के सिवा और कोई भाषा नही जानते थे, वे तक विदेशी शब्द और मुहावरे सीख अपनी भाषा उनके योग से सुधारने और बढाने का प्रयास करने लगे थे। १७वी सदी के आरम्भ मे तो जर्मन भाषा के प्रति यह घृणा इतनी बढी और सारे देश मे इस कदर व्यापक हो गई कि जब साइलेशिया के कवि और विद्वान मार्टिन ओपित्स[१] ने १६१७ मे मातृभाषा के पक्ष मे आन्दोलन आरम्भ किया, तब उसे अपना सारा प्रचार-साहित्य लैटिन मे ही प्रस्तुत करना पडा, व्याख्यान तक। इस प्रकार जर्मन भाषा के पक्ष मे एक पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर चुकने पर उसने उसमे अपनी कविताओ का सग्रह प्रकाशित किया। उसके भी सात वर्ष बाद उस सदी की आलोचना सबधी सर्वोत्तम पुस्तक 'बुख फॉन डेर ड्वैत्शेन पोएतरी'[२] (जर्मन कविता का ग्रन्थ) उसने प्रकाशित की। यद्यपि वह ग्रन्थ सर्वथा मौलिक न था परन्तु जर्मन भाषा मे साहित्य प्रस्तुत करने की प्रेरणा देने और उस भाषा को शुद्ध करने की आवाज उठाने के कारण उस ग्रन्थ का महत्व कल्पनातीत हुआ। उसकी प्रधान पुकार भाषा को विदेशी शब्दो के भार और यातना से मुक्त करने की थी। परन्तु खेद कि निरन्तर होते रहने वाले धार्मिक सघर्षों ने उस दिशा मे विशेष प्रगति न होने दी और ३० वर्षीय युद्ध (१६१८-४८) ने तो देश को सर्वथा वीरान ही बना दिया। १७वी सदी के पूरे दौरान मे बस एक ही साहित्यिक 'मास्टर पीस' प्रस्तुत हो सकी—ग्रीमेल्सहाउसेन[३] का युद्ध-उपन्यास 'सिम्पलीसिसिमस'।[४]

'सिम्पलीसिसिमस' के रचियता ग्रिमेल्सहाउसेन का चरित्र स्वय एक रोचक रोमांस है। वह भी साधारण जर्मन जनता की ही भाति जमाने के तूफान का निरन्तर शिकार होता रहा। १३-१४ साल की आयु मे ही हस्सी लुटेरे उसे पकड ले गए थे।

---

१. Martin Opitz; २. Buch Von der deutschen Poeterey; ३ Grimmelshausen; ४. Simplicissimus

सैनिक के रूप मे फिर वह गाव-गाव, नगर-नगर फिरता और लोगो के भयकर अभाग्य को अपनी आखो सालो देखता रहा। शाति स्थापित होने पर 'श्यामवन' मे जाकर एक छोटे कस्बे मे रहने लगा। वहा उसने अपने झेले सस्मरणो को ही कहानियो के रूप मे लिखना शुरू किया। १६६८ मे उसकी प्रसिद्ध कृति 'सिम्पलीसिसिमस' जो उसकी अपनी ही अनुभूतियो की परिचायक थी, प्रस्तुत हुई। स्पेन से एक प्रकार के रोमास उपन्यासो का जर्मनी मे अवतरण हुआ था। 'सिम्पलीसिसिमस' उन्हीकी परपरा मे लिखा उपन्यास था, जिसमे चरित्रो का विकास पुण्य से पाप की ओर और पाप से पुण्य की ओर हुआ। उस क्रम मे समसामयिक समाज अपने विविध चित्रो के साथ उपन्यास मे उतर पडा। ३० वर्षीय युद्ध के भयकर रक्तपात, बर्बादी और अमानुषिकता का जितना सच्चा और विस्तृत विवरण ग्रिमेल्स हाउसेन की इस कृति मे मिलता है, उतना किसी अन्य रचना मे नही। समाज की अयथार्थ, अनुचित वर्ग-सम्मत व्यवस्था से भाग किसी दूर के द्वीप मे अपने मनचीते वर्गहीन और पुण्य-प्राण समाज की प्रतिष्ठा उस काल अपनी काल्पनिक चेतना मे प्राय 'यूटोपिया' के रूप मे उपन्यासो मे कलेवर धारण कर चली थी। ग्रिमेल्सहाउसेन की प्रेरणा उससे भिन्न न थी, यद्यपि उसका विशेष रूप प्राय. आधी सदी बाद जर्मन साहित्य मे प्रकट हुआ। डिफो[1] के 'रोबिन्सन क्रूसो' के आधार पर जर्मन मे 'रोबिन्सोनोडेन' नामधारी अनेक तदनुकूल रचनाए हुईं जिन्हे जनता ने अपने चतुर्दिक् घटने वाली असह्य परिस्थितियो से पलायन की चेष्टा मे, अत्यन्त उत्साह से स्वीकार किया। वेस्टफालिया की सन्धि ने जर्मनी को खड-खड कर दिया और स्वय पवित्र रोमन साम्राज्य की सत्ता प्राय नही के बराबर थी। उधर फ्रास मे चौदहवे लुई का सूर्य प्रखर तेज से तप रहा था। जर्मनो के लिए स्वभावत ही फ्रेच आचार, वेषभूषा और साहित्य मॉडल बन गए, उसी मात्रा मे जिस मात्रा मे यूरोप के छोटे-बडे राज्यो मे अनुकूल दरबारो की अभिसृष्टि हो चली थी। वर्साई सब प्रकार से यूरोप का आलोक-केन्द्र बन गया था और यह सम्भव न था कि जर्मनी पर उसका प्रकाश न पडे। जर्मन शिष्ट समुदाय पर तो फ्रेच साहित्य ने ही नही, भाषा तक ने अपना जादू फेका। जर्मन शासक, प्रशा का फ्रेडरिक महान् तक, फ्रेच बोलते थे। १८वी सदी मे जो लाइजिग जर्मन साहित्य का सबसे बडा केन्द्र बना, वह तब छोटा-बडा पेरिस ही था, और वह अपनी उस निष्ठा पर कुछ कम अभिमान भी न करता था।

---

१. Defoe

: ४ :

अठाहरवीं सदी

१८वी सदी का आरम्भ जर्मन साहित्य मे गॉटशेड के आविर्भाव से होता है। जोहान क्रिस्टोफ गॉटशेड[१] सदी के प्रारम्भिक वर्ष १७०० मे ही पैदा हुआ था और एक जमाने तक वह लाइजिग मे साहित्य के क्षेत्र मे सर्वसत्ता का अग्रणी बना रहा। उसने फ्रेंच लेखको के अनुकरण करने की अपने साहित्यिको को सम्मति दी। उसका कहना था कि उसके साहित्य मे न तो मोलिए[२] के-से कॉमेडीकार है और न कारनेल[३] अथवा रसीन[४] के-से ट्रेजेडीकार। फिर वह ब्वालो[५] का भी अनुयायी था और जर्मन साहित्य क्षेत्र मे फ्रेच क्लासिक धारा का उसीकी भाति प्रवाह पसद करता था। ब्वालो के अनुकरण की ही उसने अपने समकालीनो मे प्रवृत्ति भरी। गॉटशेड ने साहित्य-साधना मे मर्यादा को बहुत महत्व दिया और रचना के प्रयोगो मे कुछ नियमो को नितान्त अनुल्लघनीय माना। साथ ही उसने जर्मन रगमच और नाट्यलेखन मे भी अनेक आवश्यक परिवर्तन किए। पहले ट्रैजेडी-नाटको मे भी बीच-बीच मे प्रहसन और भणौती के प्रसग गुथे रहते थे, उनको उसने सर्वथा गम्भीर ट्रैजेडी नाटको से अलग कर दिया। उसने काव्य की कला मे तर्कपूर्ण बौद्धिकता का उपयोग आवश्यक समझा और इस दिशा मे लाइबनित्स[६] तथा क्रिश्चियन वुल्फ[७] के सिद्धातो को अपना आदर्श बनाया। ओपित्स[८] के बाद जर्मन साहित्य पर किसीने इतना गहरा प्रभाव न डाला था जितना गॉटशेड ने डाला। उसके समालोचनात्मक सिद्धातो ने जर्मन साहित्यिक कृतियो का स्तर तो निश्चय ही पर्याप्त ऊचा उठा दिया, परन्तु अपने स्वाभाविक दोष से भी वे उस साहित्य को मुक्त न रख सके। इस प्रकार के सिद्धातो का साहित्य मे उपयोग एक प्रकार की यान्त्रिक चेतना अथवा टेकनीक उत्पन्न करता है जो प्रतिभा को ग्रस लेती है। जर्मनी मे भी उसका परिणाम वही हुआ और सदी के मध्य तक पहुचते-पहुचते साहित्य के आलोचना-क्षेत्र मे गॉटशेड के सिद्धातो के विरुद्ध देशव्यापी विद्रोह शुरू हो गया। प्रधान विद्रोही क्लापस्टॉक[९] था।

फ्रीड्रिख गॉटलिव क्लापस्टॉक ने गॉटशेड के काव्य-सिद्धातो की आवश्यकता न समझी और अपना एपिक 'मेसिया'[१०] (मसीहा) उन सिद्धातो की अवहेलना करते हुए रचा। अपना आवेगो और भावनाओ के अविरल प्रवाह तथा शालीन 'ओडो'

---

१. Johann Christoph Gottsched (१७००-६६); २ Moliere, ३ Corneille, ४. Racine; ५. Boileau, ६ Leibnitz, ७ Christian Wolff; ८ Opitz; ९ Friedrich Gottlieb Klopstock; (१७२४-१८०३), १० Messias (Messiah)

की अनर्गल कल्पनाओ से उसने अपने पाठको को चकित कर दिया। जनसाधारण उसके उन्मादक काव्य-रस से उन्मत्त हो उठा। आज भी उसकी कृति बडे सम्मान और स्नेह से जर्मनी मे पढी जाती है। परन्तु गॉटशेड के सिद्धातो का सबसे प्रबल प्रतिवादी लेसिंग हुआ।

गॉटहोल्ड एफ्रेम लेसिंग[1] ने जर्मन साहित्यिक रगमच उतरते ही देखा कि वह फ्रेच सस्कारो से सर्वथा बोझिल हो गया है और उसे उनसे मुक्त करना आवश्यक ही नही, उसका पहला काम होगा। उसने तत्काल शेक्सपियर और ग्रीको की ओर सकेत कर जर्मन नाट्यकारो को फ्रेच प्रेरणा से मुक्त हो उनको अपना आदर्श बनाने के लिए उत्साहित किया। अपने 'हाम्बुर्गिशे ड्रामाटुर्गी'[2] मे उसने जर्मन साहित्य के आलोचन-सिद्धात के वास्तविक पाये खडे किए। १७६७ और' ६६ के बीच उसने अपना ग्रन्थ रचा था। उससे भी पहले १७६६ मे ही उसने 'लाओकून' मे उन सिद्धातो का विवेचन किया था, जो गेटे[3] और शिलर[4] के जर्मनी साहित्यिक सिद्धातो का मूल आधार बने। जार्ज लिलो[5] के 'दि लडन मर्चेण्ट' के आधार पर उसने 'मिस सारा सैम्पसन' नाम की पहली जर्मन घरेलू ट्रैजेडी लिखी (१७५५)। बारह वर्ष बाद १८वीं सदी की सबसे महान् कॉमेडी 'मिना फॉन बार्नहेल्म' (१७६७) प्रस्तुत हुई। १७७२ मे लेसिंग ने अपनी प्रसिद्ध सामाजिक ट्रैजेडी 'एमीलिया गालोटी' और १७७६ मे पहला आध्यात्मिक ड्रामा 'नाथान डेर वाइज' लिखा। यह ड्रामा धार्मिक सहिष्णुता और विश्वबन्धुत्व के समर्थन मे लिखा गया था। यह एक प्रकार का रूपक है, जिसे सुल्तान सालादीन को यहूदी नाथान सुनाता है—किसी आदमी के पास एक अमूल्य अगूठी थी। अगूठी जादू की थी जिसे पहनने वाला भगवान् और मनुष्य दोनो का प्रिय बन जाता था। मरने के समय अगूठी का स्वामी अपने सबसे प्यारे बेटे को जब वह अगूठी देता तब बेटा परिवार का प्रधान बन जाता। पीढी दर पीढी इसी तरह फिरती हुई अगूठी एक बार ऐसे पिता के पास पहुची जिसके तीन बेटे थे और तीनो जिसे अत्यन्त तथा समान रूप से प्यारे थे। एक दिन उसने सुनार को बुलाकर उसी-की भाति की दो अगूठिया और बनवा ली और प्रत्येक पुत्र को एक-एक अगूठी दे दी। पिता के मरने पर परिवार की प्रधानता के लिए बेटो मे लडाई हुई और मामला न्यायालय मे पहुचा। जज ने मामले की बात अलग कर उनको सलाह देते हुए कहा कि तुममे से प्रत्येक अपने को अगूठी का स्वामी माने और उसकी परम्परा के अनुकूल आचरण करता हुआ भगवान् और मनुष्य का प्रिय पात्र बनने का प्रयत्न करे। फिर

---

१ Gotthold Ephraim Lessing; २ Hamburgische Dramaturgie, ३ Goethe, ४ Schiller ५ George Lillo

लाख वर्ष बाद एक महान् जज पृथ्वी पर अवतार लेगा, जो अगूठी के स्वामित्व का निर्णय करेगा। भावार्थ यह है कि धर्म अगूठियो की ही भाति विविध है और प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुकूल सुन्दर आचरण करना चाहिए। लेसिंग का यह दृष्टिकोण उस काल का महान् उदारवादी दृष्टिकोण था और जर्मन सास्कृतिक आन्दोलनो पर उसका प्रभाव पडे बिना न रहा। जिन उदारवादी यूरोपीय चेतनाओ ने मध्यकालीन रूढियो का अन्त किया, उन्हीमे लेसिग का यह जर्मन दृष्टिकोण भी था। आधुनिक युग की प्रवर्तक प्रवृत्तियो मे वह भी एक है।

: ५ :

आधुनिक युग

१८वी सदी के ही तीसरे चरण से जर्मन साहित्य मे आधुनिक युग का आरम्भ होता है। चारो ओर जो तर्क की प्रतिष्ठा हो गई थी, उसने साहित्य की सुकुमार प्रेरणाओ पर गहरा आघात किया। भावुकता, कल्पना, मानव-व्यक्तित्व सबके ऊपर उसने साहित्य की दृष्टि से घातक प्रभाव डाला था। अब उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया ने एक नया रूप धारण किया, तर्क रहित भावुकता का। इस तर्क-विरोधी प्रतिक्रिया का विद्रोह १८वी सदी के सातवे-आठवे दशको मे विशेषत दृष्टिगोचर हुआ। एक प्रबल साहित्यिक आदोलन ही तब चल पडा, जो 'स्तूर्म उण्ड ड्राग'[१] (तूफान और आग्रह) कहलाया। उस आदोलन का प्रधान प्रेरक जोहान गॉटफ्रीड हर्डर[२] था। तरुण गेटे और तरुणतर शिलर उसके मुख्य स्तम्भ बने।

हर्डर ने बुद्धिवादी यात्रिक दृष्टिकोण पर प्रबल आघ.त किया। उसका कहना था कि विश्व सर्वदा विकसित होता रहा है और उसके विकास के साथ ही उसमे महार की भी आग छिपी रही है। बुद्धिवादी विश्व को स्थिर मानकर उसे एक बौद्धिक चेतना तथा व्यवस्था के अधीन मानते है, जो गलत है। निरन्तर परिवर्तनशील विश्व की इस प्रेरणा से सचेत हर्डर जर्मनी का रूसो[३] बन गया और डार्विन के विकासवादी सिद्धात तथा रोमाटिक दृष्टिकोण दोनो का वह अग्रदूत बना। उसने राष्ट्रो के अपने-अपने लोकगीतो के खरे सौंदर्य की ओर साहित्यिको का ध्यान आकृष्ट किया। साथ ही उसने विदेशी साहित्य के अनेक रत्नो का जर्मन मे अनुवाद और व्याख्या भी की। उसका प्रभाव जर्मनी के साहित्य पर अत्यन्त दूरगामी सिद्ध हुआ। जर्मन साहित्य की अप्रतिम प्रतिभा गेटे स्वय उसका असाधारण ऋणी था।

जर्मनी के साहित्याकाश मे सबसे देदीप्यमान नक्षत्र गेटे[४] है—जोहान वोलगैग

---

१. Sturm Und Drang; २ Johann Gottfried Herder, ३ Rousseau, ४. Goethe

गेटे[1]। १७४९ मे उसका जन्म हुआ। १८३२ मे वह मरा। कानून के विद्यार्थी के रूप मे लाइजिग मे वह हर्डर से मिला। हर्डर था तो उससे केवल पाच वर्ष बड़ा परन्तु उसकी मेधा जर्मनी के आकाश पर घनी छा गई थी और साहित्य के क्षेत्र मे वह एकाधिराट् माना जाने लगा था। हर्डर के सम्पर्क मे आकर गेटे ने 'तूफान और आग्रह' के साहित्यिक नारे सीखे और उसी आन्दोलन की दिशा मे डग भरे। सारे परम्परागत साहित्यिक बन्धनो को तोड उसने अपने आन्तरिक भावुक वेदनाजन्य काव्य-स्रोत को खोल दिया। कविता की अविरल मधुर धारा बह चली, जैसी जर्मन जनता ने कभी न सुनी थी। एक ओर तो उसने लोकगीतो की परम्परा मे, परन्तु एकाकी भावोद्गम से ऋद्ध, अपना प्रसिद्ध लिरिक 'हाइडेन रोस्लाइन' लिखा जो आज भी प्राय प्रत्येक जर्मन की ज़बान पर है, और दूसरी ओर 'प्रोमेथियस' द्वारा अपने उद्गार को वाणी दी। इनमे पहला १७७१ मे प्रकाशित हुआ, दूसरा तीन वर्ष बाद, १७७४ मे। 'प्रोमेथियस' वैयक्तिक चेतना का, ग्रीक प्रोमेथियस की ही भाति, प्रतीक था और उसीकी भाति गेटे भी, अपने विचारो अथवा व्यक्तित्व के प्रसार मे किसीका अनुशासन नही मानता था। शृखला की कडिया उसने साहित्य की दिशा मे तोड दी जैसे प्रोमेथियस ने अपने ऊपर कोई सीमा स्वीकृत न की थी, गेटे ने भी किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार न किया। होमर[2], शेक्सपियर[3], ओसियन[4] अब उसके आदर्श बने। वस्तुत· यह आदर्श-सम्पदा हर्डर की ही देन थी। होमर और ओसियन का प्रभाव १७७४ के उसके उपन्यास 'तरुण वर्दर के विषाद' (डी लाइडेन डेस जुगैन वर्दर्स) पर पडा और शेक्सपियर का उसके प्रारम्भिक ड्रामा 'गोत्स फॉन बर्लिखिंगेन' (१७७३) पर। उपन्यास के माध्यम से उसने अपनी वैयक्तिक विच्छृ-खलता प्रकट की। नायक वर्दर अपनी एकान्त भावुकता के कारण अपने को यथार्थ की दुनिया मे घुला-मिला नही पाता। जीवन को वह यथार्थ रूप मे देख ही नही पाता। उसमे सतोष की सर्वथा कमी है। ससार को या तो वह नितान्त भय से भरा हुआ देखता है अथवा स्वर्ग का पृथ्वी पर अवतरण के रूप मे। उसे मध्यम मार्ग अथवा व्यावहारिक जगत् से उदासीनता है। उसे निरकुश स्वतन्त्रता और उन्माद चाहिए। ऋतुओ के साथ उसके मन की भावनाएं बदलती रहती है। वसन्त मे उसके आनन्दाश्रु निकल पडते है और होमर की मधुसिचित पक्तिया वह गुनगुना उठता है। बच्चो के साथ तब वह खेलता है, साधारण जनो से मैत्री करता है। फिर नृत्य के समय जब वह लोट्टी से मिलता है, तब उसकी भावधारा का बाध टूट जाता है। और वह उसके प्रति सर्वथा विजित हो जाता है। वह कुमारी दूसरे की वाग्दत्ता हो चुकी है

१ Johann Wolegang Goethe; २ Homer. ३ Shakespeare; ४ Ossian

परन्तु उपन्यास का तरुण नायक उसकी परवाह न कर निरन्तर उससे मिलता रहता है। फिर उसके प्रणयी अल्बर्ट से मिलने पर धीरे-धीरे जब यथार्थ की भयावह स्थिति उसके सामने स्पष्ट हो उठती है, वह सर्वथा उद्विग्न हो उठता है और भाग चलता है। फिर विविध स्थितियो मे मानसिक सघर्ष के बाद लोट्टी की ओर लौट पडता है। पर अल्बर्ट और लोट्टी का तब तक विवाह हो चुका होता है। अल्बर्ट व्यावहारिक जगत् की यथार्थता से अभिज्ञ है और वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियो को समझता है। है भी वह व्यवहारचतुर, शान्त और यथार्थवादी। लोट्टी उसमे वर्दर की आत्मा की ऊचाई तो नही पाती, परन्तु उसके प्रति सच्ची बनी रहती है। वर्दर की मन.स्थिति ऋतुओ के परिवर्तन के अनुकूल बदल चलती है। पतझड के बाद जाडा आता है और होमर उसका चित्त हल्का नही कर पाता, हा, ओसियन निश्चय उसके घाव पर कुछ मरहम करता है। दिल निरन्तर बैठता जाता है और एक दिन कुछ ऐसा लगता है कि उसके मर्ज की एकमात्र दवा आत्महत्या है। आत्महत्या वह कर भी लेता है। गेटे का यह उपन्यास स्वय उसके एक असफल प्रणय का परिणाम था। साहित्य के क्षेत्र मे उसकी यह कृति अनोखी थी और उसने अनेक हृदयो को अभितृप्ति प्रदान की। उसके अनेक अनुवाद और अनुकरण विविध साहित्यो मे शीघ्र प्रकाशित हुए। तूफान और आग्रह के आन्दोलन को एक और अस्त्र मिला, उसकी प्रगति मे एक मजिल तय हुई। इस कृति ने गेटे को उसकी प्रौढ साहित्यिकता के राजमार्ग पर ला खडा किया।

१७७५ मे वह तरुण ड्यूक कार्ल ऑगस्ट[१] का वाइमर मे मेहमान बना। प्राय आधी सदी के बाद वह अपने व्यक्तित्व से वहा की राजनीतिक, साहित्यिक और सास्कृतिक चेतना की प्रतिमा बना रहा। कुछ काल बाद इटली का भ्रमण कर उसने प्राचीन क्लासिकल कला के प्रतिमानो से साक्षात्कार किया और १७८७ मे अपने काव्यपरक नाटक 'टारिस मे इफिजेनी' और 'एग्माट' लिखे। एक साल बाद उसका 'तारक्वातो तास्सो' प्रकाशित हुआ। इटली से लौटने के दो वर्ष बाद उसने अपने उस विश्वविश्रुत नाटक 'फॉस्ट'[२] को पूरा किया जिसका आरम्भ वह युवावस्था मे ही कर चुका था। ऐतिहासिक फॉस्ट १६वी सदी का भाण और रासायनिक था। उसके समसामयिक उसे नट और शैतान को इष्ट किया हुआ जादूगर मानते थे। कुछ काल बाद उसके सम्बन्ध मे अनेक जादूभरी कहानिया प्रचलित हो गई। १५८६ मे उन्ही कहानियो के ऊपर क्रिस्टोफर मार्लो[३] ने अग्रेजी मे अपना प्रसिद्ध नाटक 'डॉक्टर फॉस्टस' लिखा। यह नाटक जर्मनी में भी अनेक बार खेला गया। गेटे पर उसका प्रभाव पडे बिना न रहा और उसने फॉस्ट को अपने ही असतोष के प्रतीक के रूप मे देखा। फॉस्ट ज्ञान और

---

१ Duke Karl August; २. Faust ३. Christopher Marlowe

अनुभव के अतृप्त पिपासु के रूप मे दानव का व्यक्तित्व लिए उसके मानसचक्षु के सम्मुख उतरा। पहले उसने उसे उस प्रोमेथियस के रूप मे सिरजा जो व्यवस्था और विधान का विरोधी था, अपराध और पाप करने मे हिचकता न था। नितान्त संघर्ष का भी वह शिकार था, फिर भी वह गेटे की दृष्टि मे मोक्ष का अधिकारी था। १७६० मे गेटे ने 'फॉस्ट' के केवल कुछ दृश्य प्रकाशित किए। उसके बाद कुछ काल वह उस कृति के प्रति निश्चेष्ट रहा, फिर १७६७ मे उसने 'फॉस्ट' को पूरा करना शुरू किया। अब तक जीवन मे काफी परिवर्तन हो जाने के कारण नायक के प्रति उसके दृष्टिकोण मे भी सापेक्ष्य परिवर्तन हो चुका थ। अब उसका फॉस्ट ज्ञान से निराश होकर पाप को गले लगाने वाला फॉस्ट न था, वरन् श्रद्धालु फॉस्ट था, जो अपने साधारण काम से सन्तोष करता हुआ जन-साधारण का हितू हो गया था। इस 'फॉस्ट' के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का जर्मन जनता पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि वह अपने को फॉस्ट की जनता मानने लगी। 'फॉस्ट' पर, गेटे ने स्वय स्वीकार किया है, कालिदास की 'शकुन्तला' का गहरा प्रभाव पडा था। कुछ ही साल पहले सर विलियम जोन्स ने 'शकुन्तला' का एक अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था, जिसने यूरोप के साहित्यिको मे उथल-पुथल मचा दी थी। गेटे की जागरूकता उस अद्भुत भारतीय कृति के प्रभाव से वचित न रह सकी।

गेटे का प्रसिद्ध उपन्यास 'विलहेम मेइस्तर' १७६७ और १८२६ के बीच लिखा गया, जिसमे उसने एक भावुक रसज्ञ को यथार्थवादी, व्यावहारिक, सक्रिय व्यक्तित्व मे बदला। उपन्यास के क्षेत्र मे 'विलहेम मेइस्तर' का वही स्थान है जो ड्रामा के क्षेत्र मे 'फॉस्ट' का। १८३२ के पहले के ५० वर्ष गेटे के नेतृत्व, प्रेरणाओ, कृतियो से इतने प्रभावित रहे कि उन्हे उचित ही गेटे का काल कहा जाता है। परन्तु निश्चय ही जर्मनी मे उसकी यह सत्ता केवल उस देश की सीमाओ तक ही परिमित न रह सकी और शीघ्र ही उसने विश्व के समर्थ कृतिकारो दाते और शेक्सपियर की पक्ति मे स्थान पाया।

कार्ल ऑगस्ट का वह नगर वाइमर तब के जर्मनी का एथेन्स था। कला और सस्कृति अपने प्रतीको के साथ वही उदय और विकसित होती रही। हर्डर, गेटे, शिलर ने वही अपने साहित्यिक प्रयोग किए, वही उनकी कृतियो ने प्रौढता पाई। क्रिस्टोफर मार्टिन व्हीलैड[1] उस काल का बडा प्रतिभाशाली साहित्यिक था। वह ड्यूक का शिक्षक भी रह चुका था और स्वय हर्डर पर उसकी मेधा का प्रभाव पडा था। उसकी सुनहरी धूप मे स्वय गेटे का साहित्य भी सिका था। वह स्वय उच्च कोटि का उपन्यासकार

१. Christopher Martin Wieland

श्रौर कवि था। उसका उपन्यास 'श्रागाथान' १७६७ श्रौर रोमाटिक कविता 'श्रोवेरान' (१७८०) जानी हुई कृतिया है।

वाइमर के उसी नगर मे, प्रगतिशील श्रौर तरुण उसी ड्यूक कार्ल श्रॉगस्ट की सरक्षा मे, हर्डर श्रौर गेटे की प्रेरणा की छाया मे जर्मनी की एक श्रौर असाधारण मेधा, जिसने ससार के साहित्य पर अपना प्रभाव डाला, धीरे-धीरे उभरती श्रा रही थी। वह मेधा शिलर की थी। हर्डर श्रौर गेटे की ही भाति फ्रीड्रिख शिलर[1] 'तूफान श्रौर श्राग्रह' की मान्यताश्रो का कायल था। गेटे का 'तूफान श्रौर श्राग्रह' अब कुछ नरम पडने लगा था, जब क्षितिज पर उस दिशा मे नये तेज के साथ शिलर रूपी नक्षत्र का उदय हुश्रा। अनेको ने उस दिशा मे साभिमान दृष्टि-विक्षेप किया। स्वय गेटे ने बरबस उधर अपनी दृष्टि डाली। परन्तु शीघ्र ही उस नक्षत्र का प्रताप प्रखर किरणों से फूट पडा श्रौर अब वह श्राखो के लिए असह्य हो चला।

१७८० मे शिलर ने अपना पहला प्रसिद्ध ड्रामा 'डी राउबर' (डाकू) लिखा। कृति पर रूसो का प्रभाव स्पष्ट था, विशेषत उसकी सभ्यता के ऊपर चोट मे शिलर भी रूसो की ही भाति प्रकृतिवादिता का कायल था। उसकी इस रचना का नायक कार्लमूर अपने श्राचारभ्रष्ट समाज को चुनौती देकर बोहेमिया के जगलो मे चला जाता है श्रौर वहा डाकुश्रो का सरदार बन निरकुश जमीदारो श्रौर समृद्ध घृणित पादरियों-मठाधीशो का भय बन जाता है। धीरे-धीरे उसे लगता है कि श्राखिर पाप का प्रतिशोध पाप द्वारा नही होना चाहिए श्रौर वह श्रात्मबलिदान के लिए प्रस्तुत हो जाता है। १७८३ मे शिलर का दूसरा नाटक 'फिएस्को' प्रकाशित हुश्रा जो ट्रैजेडी था। वह भी 'डी राउबर' की ही भाति अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष का परिचायक था। 'काबाले उण्ड लीबे' (षड्यन्त्र श्रौर प्रणय) (१७८४) मे उसने वैयक्तिक स्वाधीनता का नारा बुलन्द किया। इसमे उसने उस बुर्जुश्रा परपरा का निर्वाह किया था, जिसकी चेतना १८वी सदी मे लिलो[2] ने इग्लैण्ड मे, दिदरो[3] ने फ्रास मे श्रौर लेसिग[4] ने स्वय जर्मनी मे स्थापित की थी। हा, उस दिशा मे यह ट्रैजेडी श्रौर श्रागे बढ जाती है। उसमे अभिजात श्रौर मध्य वर्ग के बीच की गहरी खाई स्पष्ट की गई है। प्रेसिडेण्ट जालसाजी, झूठ श्रादि से अपना पद प्राप्त करता है श्रौर धोखे तथा षड्यन्त्र से अपनी सत्ता कायम रखता है। वह शासक वर्ग का प्रतिनिधि है। गायक शिलर की वाग्धारा मे 'पॉलिश' नही परन्तु उसकी ईमानदारी कभी शकित नही होती। वह जनता का प्रतिनिधि है जो शासित होती है। दोनो की सन्ताने उस खाई को पाटना चाहती हैं, परन्तु स्वेच्छाचारिता श्रौर स्वार्थ का वातावरण उन्हे सफल नही होने देता। प्रणय

---

१. Friedrich Schiller (१७५९-१८०५), २. Lillo, ३. Diderot, ४ Lessing

और बलिदान ही उस दिशा मे विजय प्राप्त कर सकते हैं । १७८७ तक शिलर गेटे की ही भाति 'तूफान और आग्रह' की दिशा से हटकर शुद्ध साहित्यिक प्रौढता की ओर बढ गया था । 'डान कार्ल्स' उसकी इसी प्रवृत्ति का परिचायक है, जिसमे उसकी आस्था चित्त-शक्ति मे हो आती है । यह रचना स्पेन के फिलिप द्वितीय और उसके पुत्र डॉन कार्ल्स के परस्पर सघर्ष के रूप मे वस्तुत दो युगो के सघर्ष को रूपायित करती है । दो युग—राजनीतिक स्वेच्छाचारिता और धार्मिक असहिष्णुता का परिचायक एक युग, राजनैतिक उदारता और धार्मिक स्वतन्त्रता का दूसरा । नायक मार्क्विस पोजा, डॉन कार्ल्स का मित्र, उस आरमाडा से युग मे मानवता का मित्र सिद्ध होता है । अपने मित्र के लिए जीवन को उत्सर्ग कर वह जर्मन तरुणो का आदर्श बन जाता है । जिस फ्रासिसी राज्यक्राति ने स्वाधीनता, भ्रातृभाव और समता के पायो पर शृखलाओ को तोड मानवशालीनता को आरूढ किया, उसके दो वर्ष ही पहले शिलर की यह अद्भुत कृति प्रकाशित हुई थी ।

शिलर केवल नाट्यकार ही न था, वह इतिहासकार भी था। १७८८ मे जेना यूनीवर्सिटी मे वह इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हुआ । गेटे तूफानी और क्रातिकारी जीवन से अलग अभिजात राजनीतिज्ञ का रूप धारण कर चुका था । पर शिलर उस तूफानी आन्दोलन का केन्द्र बना । अपनी रचनाओ और व्याख्यानो से तरुणो में वह उत्साह भर रहा था । गेटे ने स्वय अपना तारुण्य शिलर मे पुनर्जाग्रत होते देखा और उधर से मुह फेर लिया । परन्तु शिलर की वेगवान चेतना तब उसकी प्रतिभा का सचालन कर रही थी और शीघ्र ही वह फ्रासीसी राज्यक्राति का मित्र तथा अग्रदूत घोषित हुआ । जो आन्दोलन फ्रास मे राजा की सत्ता पर आघात कर रहा था, उसका अग्ररूप तरुण शिलर के हृदय मे भी उठकर उसकी रचनाओ का आकाश विस्तृत कर सहारक चोट का रूप धारण करता जा रहा था । गेटे ने उसे भली प्रकार देखा और अपने स्वामी ड्यूक के मूलाधिकारो का उसे प्रहर्ता समझ उसकी रक्षा के लिए सन्नद्ध हो गया । ऐसी स्थिति मे यह सम्भव न था कि दोनो प्रतिभाओ मे किसी प्रकार का एका हो सके । यही कारण था कि एक जमाने तक नितान्त निकट रहते हुए भी गेटे और शिलर १७९४ मे एक दूसरे से घने परिचित हुए । तब तक स्वय शिलर का तरुण आग्रह नरम पड गया था और दोनो एक दूसरे की ओर खिचे यद्यपि अन्त तक उन्होने जीवन की समस्याओ के सम्बन्ध मे अपनी परस्पर विरोधी मान्यताओ को न छोडा । गेटे और शिलर का यह परस्पर मित्रभाव जर्मन साहित्य के लिए निस्सदेह बडे काम का सिद्ध हुआ । शिलर की प्रेरणा से गेटे ने 'फॉस्ट' को पूरा किया और गेटे की प्रेरणा से तीस वर्षीय युद्ध सम्बन्धी 'वालेन्स्टाइन' नामक नाटक शिलर ने १७९९ मे प्रस्तुत किया । १८०० ई० मे उसने 'मार्या स्टूअर्ट' लिखा और साल भर बाद

आर्क की जोन पर 'डि जुगफ्राउ फॉन आरलीन्स' । १८०३ मे 'डि ब्राऊट फॉन मेसिना' (मेसिना की वधू) लिखकर उसने ग्रीक परपरा के कोरस का विकास किया और साल भर बाद 'विलहेम टेल' नामक ड्रामा की रचना कर ऑस्ट्रिया के शासन से स्विट्ज़रलैंड की स्वाधीनता के सघर्ष के परिचायक साहित्य का अग्रदूत बना ।

: ६ :

रोमांटिक युग

१९वी सदी मे 'रोमाटिक' और 'यथार्थवादी' दो परस्परविरोधी चेतनाओ का जर्मन साहित्य मे विकास हुआ । रोमाटिक चेतना भावावेगो और कल्पना के पक्ष मे अधिक प्रयत्नशील थी । मानव व्यक्तित्व उस प्रेरणा मे बौद्धिक यथार्थता से मुक्त भावुकता और भाव-सपदा को अपना आधार बनाता था । कालक्रम मे वह रोमाटिक चेतना, धार्मिक रहस्यमय और उन्मादी भावनाओ का भी गढ बन गई । फिर धीरे-धीरे उस चेतना ने सर्वथा रूमानी प्रेरणा को अपना आदर्श बना डाला । यथार्थ से अपनी इन्द्रियो को खीच वह अन्तर्निविष्ट हुई । सर्वथा काल्पनिक, स्वप्निल, मायाविनी, आभासगर्भित परिस्थितिया विगत अतीत अथवा सुदूर भविष्य के घूमिल वातावरण निर्मित करने लगी । अलौकिक मे उसकी आस्था जगी, अप्रत्याशित निर्जन एकान्त और वैयक्तिक कुण्ठा, अभिराम अनस्तित्व भी उसके आधार बने । उस प्रेरणा का एक कारण और था । जर्मनी मे फ्रासीसी राज्यक्राति को रूप देने की शक्ति न थी और यथार्थ उस प्रकार के आन्दोलन के लिए चीख रहा था । जब चतुर्दिक् का बर्बर सत्य बर्दाश्त के बाहर हो उठा और निष्क्रियता सघर्ष से विमुख होकर बौद्धिक प्रतिभाओ को कुण्ठा से भरने लगी, तब कुण्ठित मेधा अलौकिक और असत्य को महाकाय कर उसका भीतर ही भीतर एक स्वप्निल ससार रचने लगी । वह कुण्ठा स्वाभाविक ही पहले दर्शन के क्षेत्र मे उतरी । जोहान गोटलिब फिख्ते[१], शेलिंग[२] और विलहेम श्लेगेल[३] तथा फ्रीड्रिख श्लेगेल[४] उसके अग्रणी हुए । उस रोमाटिक आन्दोलन ने फ्रीड्रिख श्लाइएरमाखर[५] और कवि विलहेम वाकेनरोडर[६], लुडविक टीक[७] तथा नोवालिस[८] को आकृष्ट किया । यह उस दिशा के प्रारम्भिक रोमाटिक कृतिकार थे । आन्दोलन के आरम्भ होने के पहले जर्मनी मे दो साहित्यिको का प्रादुर्भाव हुआ—जीन पॉल फ्रीड्रिख रीख्तर[९] और फ्रीड्रिख होल्डरलिन[१०] का । इनमे पहले ने जीन पॉल के नाम से लिखा

---

१ Johann Gottlieb Fichte, २. F W. J. Schelling, ३. August Wilhelm Schlegel, ४ Friedrich Schlegel ; ५ Friedrich Schleiermacher , ६ Wilhelm Wackenroder; ७. Ludwig Tieck, ८ Novalis; ९. Jean Paul Friedrich Richter ; १०. Friedrich Holderlin

'हेस्पेरस' (१७९४) और 'तीतन' (१८००) उसके प्रसिद्ध उपन्यास थे, जिनमे उसने रूसो की भावुकता और व्यग्य का अनुकरण किया। परन्तु वह सर्वथा रोमाटिक नही था। जनसाधारण की कष्ट-चेतना भी काफी मात्रा मे उसकी कृतियो मे उतरी, जिससे उसको यथार्थवादियो का भी आदर मिला, होल्डरलिन नितान्त निर्धनता मे जन्मा था और वह उसकी सारी चोटो और साथ ही निराशा का भी शिकार हुआ था। चालीस वर्ष तक वह अज्ञात पागल के रूप मे सभ्यता से अलग पडा रहा. परन्तु उसी बीच उसने कुछ ऐसे 'ओड' लिखे, जो उनके आचार्य क्लापस्टॉक की कृनियो को भी लाघ गए। लिरिक के क्षेत्र मे स्वय गेटे की सर्वोत्तम रचनाओ से होल्डरलिन के लिरिको ने लोहा लिया। उसने अपने 'हाइपीरियन' नामक नाटक मे भावो की गहरी व्यजना की और 'इम्पेडोक्लीज' (१७९९) मे प्राचीन ग्रीको को पुकारा। यह पुकार वस्तुतः १८वी सदी की आवाज थी।

विलहेम श्लेगेल और फ्रीड्रिख श्लेगेल भाई-भाई थे। उन्होने रोमाटिक आन्दोलन का मुख्य तत्व 'आथेनाउम' १७९८ मे निकाला। उस नये आन्दोलन की प्रेरणाए उसी पत्र के कॉलमो मे रूप धारण करने लगी। ऑगस्ट विलहेम श्लेगेल आज अपने शेक्स-पियर के अनुवादो के लिए विशेष विख्यात है। उसका उपन्यास 'लुकिन्दे' (१७९९) प्रणय, कला, बौद्धिक निष्क्रियता से पूर्ण कृति है जिसमे एकाग्रता का सर्वथा अभाव है। परन्तु उसने जो उच्छृखलता, स्वतत्र प्रेम, प्रमाद आदि का गुण गाया तो अपने-से साहित्यिको का वह वन्द्य हो गया। नोवालिस, फ्रीड्रिख फॉन हार्डेनबर्ग[१] का साहित्य-नाम था। नोवालिस सभ्रातकुलीय था और जर्मन रोमाटिक आन्दोलन का शुद्ध प्रतिनिधि माना जाता है। २९ वर्ष की उम्र मे ही वह मर गया। इसी बीच उसका तेरह वर्ष की एक कुमारी के साथ प्रेम हो गया पर उस कुमारी को उसने नारी के सारे आदर्शों का प्रतीक माना। लडकी भी जल्दी ही मर गई और उसके मरने पर विषाद ने जो नोवालिस को सर्वथा आक्रात कर लिया, तो उसने अन्धकार और मृत्यु की प्रशसा मे अपना शालीन गद्यकाव्य 'हिम्नेन आन डी नाख्त' (रात्रि के प्रति सूक्ति) रचा। भगवान् मे शान्ति खोजता हुआ नोवालिस अब धार्मिक गीत रचने लगा जिसमे रूमानी रहस्य और आन्तरिक भक्ति पक्ति-पक्ति मे उतरी। उन गीतो ने १९वी सदी के जर्मन धार्मिक लिरिको को बडा प्रभावित किया। उसका अपूर्ण उपन्यास 'हाइन्रिख फॉन ओफ्टर्डिंगेन' (१७९९-१८००) गेटे के 'विलहेम मेइस्तर' का विरोधाभास माना जाता है। वह उपन्यास रूमानी कविता की प्रशसा मे लिखा गया है। उसका हीरो काल्पनिक 'मिनेसिगर' था, जो रूमानी आदर्श के गुह्य प्रतीक नील कुसुम की खोज मे निकल पडता

१. Friedrich Von Hardenberg

है। लुडविग टीक प्रारम्भिक रोमान्टिको मे असाधारण था। उसकी रचना का विस्तार बडा था। उसने लिरिक, उपन्यास, ड्रामा आदि सभी लिखे और विदेशी भाषाओ से अनुवाद भी अनेक किए। उसकी विख्यात लघुकथा 'डेर ब्लोन्द एकबर्ट' (१७६७) थी जिसमे असत्य और अर्द्ध काल्पनिक ससार की एक अद्भुत गोधूलि सिरजी गई। उसमे भय, अन्धकार, रहस्य, जादू, नीरवता, स्वप्न और अनोखी ध्वनियो का वातावरण प्रस्तुत है। रोमाटिक व्यंग्य का एक असामान्य उदाहरण उसकी कॉमेडी 'डेर गेस्टिफेल्टे कार्टर' (१७६७) है।

रूमानी व्यग्य और उच्छृंखलता अपने अशेष रूप मे हाफमान की कृतियो मे फूटी। अर्नस्ट थिओडोर अमाडियस हॉफमान[1] गायक, गीतकार, कलाकार और इन सबसे बढकर कहानीकार था। उसकी कहानियो की एडगर एलन पो[2] की कहानियो से अक्सर तुलना की जाती है। हॉफमान का उपन्यास 'डी एलेग्जीर डेस तुफेल्स' (१८१५-१६) मे भयानक आकृतियो, छायाओ, भीषण स्वप्नो और समान शक्लवाले व्यक्तियो की भरमार है। उसकी दूसरी कहानी 'सुनहरा बर्तन' (डरे गोल्डने तोफ—१८१३) पहले उपन्यास से कम भीषण है। हॉफमान का रोमाटिक कवियो ने काफी अनुकरण किया है। मानव-योनियो का जो उसने अपनी कृतियो मे विकास किया उनका अनेक कवियो ने अपनी रचनाओ मे काफी उपयोग किया। अनेक अप्सराओ, भूत-प्रेतो आदि के जो नाम उसने रखे वे अपूर्व थे। उससे नाटकीय बैलेड मे हॉफमान के अपार्थिव चरित्रो का विकास हुआ। स्वय हाइन्रिख हाइने[3] को अपने लिरिको मे उससे प्रेरणा मिली। हाइने का वह लिरिक जिसमे उसने लोरेली नामक हॉफमान द्वारा प्रयुक्त यक्षिणी को अमर किया वह आज लाखो जर्मनो की जबान पर है। जेकब ग्रिम[4] और विलहेम ग्रिम[5] दोनो भाइयो की कहानियो मे वह अलौकिक और अपार्थिव जगत् विशेष विकसित हुआ। १८१२ का उनका कहानी-सग्रह 'किन्डर-उन्ड हाउस-मार्खेन' (घरेलू कहानिया) शीघ्र ही जर्मन बच्चो का उपास्य बन गया।

इस प्रकार की रूमानी रचनाओ के लिए लोकगीत और कहानियां स्वाभाविक ही ऋद्ध आकर सिद्ध हुईं। जर्मन के लोकगीतो का सुन्दरतम सग्रह तरुण रोमाटिक आखिम फॉन आर्निम[6] और क्लेमेन्स ब्रेन्टानो[7] ने दिया। सग्रह का नाम था 'बालको का जादू-बिगुल'। कहानिया छन्दोबद्ध थी और एक अद्भुत सम्मोहक जादूभरे ससार का निर्माण करती थी। उस दिशा के लिरिककारो मे प्रधान जोज़ेफ फॉन आइखेनडोर्फ[8] और लुडविग

---

१. Ernst Theodor Amadeus Hoffmann ; २. Edgar Allan Poe , ३. Heinrich Heine ; ४. Jakob Grimm , ५. Wilhelm Grimm ; ६. Achim Von Arnim ; ७. Klemens Brentano , ८. Josef Von Eichendorff

ओहलाड[1] थे। पहले ने जर्मन वन-प्रातर, ग्राम, नदियो आदि के सम्बन्ध के लिरिक लिखे, दूसरे ने ऐतिहासिक बैलेड। इस प्राचीन की पुनरावृत्ति ने जर्मन-चेतना को भी कुछ कम उद्बुद्ध किया। अर्नस्ट मोरिट्स आर्न्ट[2] तथा थियोडोर कोरनेर[3] ने अपनी कविताओ द्वारा नेपोलियन-विरोधी जर्मन सघर्ष को प्रचुर शक्ति दी। परन्तु धीरे-धीरे अतीत की पूजा रोमान्टिक कवियो की चेतना का आधार बन गई जो उनकी प्रतिगामिता का कारण बनी। शीघ्र ही नेपोलियन के पतन के बाद गृह-सघर्ष से जब एक दिशा मे निष्क्रियता और पलायन का विकास हुआ तब नितान्त निराशावादी धारा साहित्य मे फूट पडी। उस निराशावादी वातावरण की सज्ञा 'वेल्शमेर्त्स' पडी। ग्राफ फॉन प्लातेन[4], निकोलॉस लेनो[5] और अदाल्बर्ट फान चामिस्सो[6] उसी रोमान्टिक प्रवृत्ति के लिरिककार थे। हा, उन्होने एक उदारवादी दृष्टिकोण का जो अपने सम्भ्रान्त वर्ग के विरुद्ध विकास किया तो मेटरनिक विरोधी सघर्ष को उससे पर्याप्त बल भी मिला। शीघ्र ही मध्यवर्गीय क्रान्तिकारियो ने उस सघर्ष की बागडोर अपने हाथ मे ले ली और साहित्य को समाज तथा राजनीति सम्बन्धी विचारो का प्रकाशन-आधार बनाया। यह एक नये जर्मनी का आरम्भ था। जो जितना मेटरनिक का विरोधी था उतना ही अपने विकास के अन्त मे रोमान्टिक परपरा का भी विरोधी था। यथार्थवाद उसका आधार बना, भविष्य और वर्तमान को बदल देने की आशा उसकी प्रेरणा बनी और कालान्तर मे मार्क्स उसका पथप्रदर्शक हुआ। जर्मनी के क्षुद्र वातावरण मे मार्क्स के आने के पहले ही वहा 'तरुण जर्मन' आन्दोलन आरम्भ हो गया था। १८३० को दूसरी फ्रासीसी राज्य-क्राति से प्रेरणा पाकर जर्मनी के लेखको के एक दल ने मध्य यूरोप को जनतन्त्र बनाने का बीडा उठाया। उस दल का नाम 'तरुण जर्मन' पडा। अभी वह अपने आदर्श की ओर बढ ही रहा था कि जर्मन फैडरल डीट (पार्लमेन्ट) ने उस दल के सदस्यो की भूत, वर्तमान और भविष्य की सारी रचनाओ को जब्त कर लिया (१८३५)। मेटरनिक का शासन चल रहा था। ऐलान कर दिया गया कि लेखको का वह दल समाज और धर्म विरोधी साहित्य प्रस्तुत कर रहा है। हाइन्रिख हाइने[7], कार्ल गुत्सको[8], हाइन्रिख लाउबे[9], लुडोल्फ विन्बार्ज[10] और थ्योडोर मुन्ट[11] की सारी रचनाए जब्त कर पुलिस ने उनका प्रकाशन और प्रचार बन्द कर दिया। जनतान्त्रिक शासन, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समता, नारी के अधिकारो आदि उदारवादी उसूलो के लिए साहित्य के माध्यम से लडने वाले इन साहित्य-सेवियो की

---

१. Ludwig Uhland ; २. Ernst Moritz Arndt , ३ Theodor Korner ; ४. Graf Von Platen , ५ Nikolaus Lenau , ६ Adalbert Von Chamisso ; ७ Heinrich Heine , ८. Carl Gutzkow , ९ Heinrich Laube , १०. Ludolf Wienbarg , ११. Theodor Mundt

रचनाओ को खतरनाक करार दे दिया गया, फिर भी कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, आलोचना के माध्यम से अधिकारो की माग होती ही रही, उदारवादी आन्दोलन का प्रचार होता ही रहा, साहित्यिको की प्रतिभा सघर्ष करती ही रही। इस दिशा मे लुडविग बोर्न[1] और हाइन्रिख हाइने विशेष प्रयत्नशील हुए। १८३० और '३२ के बीच लिखे बोर्न के 'पेरिस के पत्र' (बीफे औस पेरिस) जर्मनी की सीमा मे गोलो की भाति गिरने और पाठको को स्थानीय विषमताओ के विरुद्ध उभाडने लगे। कार्ल गुत्सको उस आन्दोलन का केन्द्र बन गया। उसके ड्रामा 'उरिएल अकोस्ता' (१८४७) ने वैयक्तिक अधिकारो, धार्मिक सहिष्णुता और विचारो की स्वतन्त्रता की माग अपने प्रत्येक पाठक के हृदय से उठाई। हाइन्रिख हाइने जर्मनी के सबसे महान् कवियो मे हो गया है। पहले उसने अत्यन्त मधुर प्रणय-लिरिक लिखे, रूमानी और भावुक। परन्तु शीघ्र ही उसकी मेधा उस सीमा को पार कर सघर्ष के क्षेत्र मे अग्रसर हो गई। उसका 'बुख डर लीडर' (गीतो का सग्रह, १८२७) शीघ्र तरुण-प्रेम की मूर्खता का उपहास कर उठा। प्रकृति के अवयव उसकी मनस्थितियो का उसकी कृतियो मे अनुकरण करने लगे। हाइने अपने को रोमाटिक साहित्यिको मे अन्तिम मानता है। वह अपनी शैली मे निस्सन्देह रोमान्टिक था परन्तु यथार्थवादी साहित्यकारो मे भी वह पहला था और इस प्रकार उस वर्ग की रचनाओ का जर्मनी मे वह प्रवर्तक था। वह पहला जर्मन कवि था जिसने देश मे नित्य उठते हुए कारखानो मे झाककर समाज की भावी विषमता को देखा और शीघ्र ही गहरी-चौडी होती धनी-गरीब के बीच की खाई की ओर उगली उठाई। कुछ आश्चर्य नही कि मार्क्स उसकी कविताए पढकर आनन्द से नाच उठा हो। अपनी इग्लैड की यात्रा मे उसने पूजीवाद की बढती हुई सीमाओ को देखा और यूरोप के आकाश मे तूफान के मेघो को उमडते देख भावी सघर्ष का अनुमान किया। अपनी कृति 'एग्लिशे फ्रागमेण्टे' (१८२८) मे उसने थैलीशाहो और धनियो के विरुद्ध तथा भरे जीवन के मुकाबले कगाल मजूरो के रिक्त और आवश्यकताओ भरे जीवन का चित्र खीचा। लन्दन का जीवन कगाल के लिए उसे असह्य जान पडा। फिर हाइने पेरिस पहुचा और वहा से समाजवादी दार्शनिक सेन्ट-सिमो[2] के राजनीतिक सिद्धान्तो का वह जर्मनी मे प्रचार करने लगा। उसने कगालो की पूजा की पर कगालपन की नही। दरिद्रनारायण का देवत्व उसके लिए पैशाचिकता से बढकर था। उसने जनसत्ता के समाज मे मानव के देवता बनकर साधनसर्वस्व होने की कल्पना की और उसे महान् तथा शालीन बनते देखा। अपने 'ड्वायत्शलैंड—आइन विन्टरमार्खेन ('जर्मनी-जाडो की एक कहानी' १८४४) मे

---

१. Ludwig Borne, २. Saint-Simon

उसने स्वर्ग को पृथ्वी पर उतारने का स्वप्न देखा। उसका वह गीत एक प्रकार का 'यूटोपिया' था, जिसमे अनुकूल भावी समाज का रेखाचित्र था। १८४८ की क्रान्ति से उसके विचारो को बडा धक्का लगा। उसने समाजवादी क्रान्तियो, विश्वप्रभुता के लिए जर्मन प्रयास और देश-देश मे साम्यवादी प्रयोगो की भविष्यवाणी की, जिससे वह परस्पर विरोधी आलोचको का आलोच्य बन गया। स्वय वह अपने को मानवता के पक्ष मे सघर्ष करने वाला सैनिक मानता था।

राजनीतिक कविताए

हाइने ने कवियो की उस श्रृखला का आरम्भ किया, जिसके कवि केवल अपनी गेय भावुकता के लिए ही नही विशेषत अपने राजनीतिक दृष्टिकोण और सघर्षात्मक साहित्य के लिए विख्यात हुए। कवि की वाणी अब राजस्थान के चारणो की भाति सघर्षशील समाज की शक्ति-सम्पदा बनी। पैम्फ्लेटो अथवा एकाकी पत्रो पर कविताओ के माध्यम से कवि नये युग के सन्देश भेजता और जनता उसे शीघ्र ही पी जाती। उस काल के कवियो मे प्रधान जार्ज हर्वे[१], फर्डिनेन्ड फ्रेलीग्राथ[२] (वाल्ट ह्विटमान का पहला जर्मनी अनुवादक) और होफमान फॉन फालेर्स्लेबेन[३] थे। होफमान की कविता 'ड्वायत्स्लैड, ड्वायत्स्लैड ऊबेर अलेस' तब के जर्मनी मे देशद्रोही समझी गई पर एक ही पीढी बाद राष्ट्रीय गान बन गई। ग्राब और बुखनेर[४] ने उसी परम्परा का नाटक द्वारा विकास किया। क्रिश्चियन दीत्रिख ग्राबे[५] ने अपनी ट्रैजेडी 'नेपोलियन' (१८३१) द्वारा सर्वहारा जनता की शक्ति का निदर्शन किया। वह नाटक नेपोलियन के एल्बा से लौटने के बाद के सौ दिनो का चित्र, जिसमे निम्नतम स्तर की जनता का स्रोत बार-बार फूट पडता है, खीचा है। उसका कथानक सर्वथा समसामयिक है। बुखनेर ने अपने 'दातोज तोद' (दातो की मृत्यु, १८३५) मे पहली राज्यक्रान्ति की एक घटना को अपना कथानक बनाया जिसमे जनता की शीघ्र परिवर्तनशील प्रवृत्ति व्यक्त हुई है। दोनो के दृष्टिकोण मे अन्तर है। जहा ग्राबे निम्नवर्गीय जनता पर निम्न व्यग्य करते नही चूकता, बुखनेर उसके प्रति सहृदय है।

हेन्रिख फॉन क्लाइस्त[६] क्लासिकल परम्परा का एकान्त विरोधी था। उसने गेटे की स्पर्धा मे अपनी ट्रैजेडी 'रॉबर्ट गिस्कार्ड' लिखी, परन्तु असफल होने के कारण ही उसने अपनी यह रचना जला डाली। उसका प्रारम्भिक अश ही केवल बच रहा। उससे पता चलता है कि क्लाइस्त ने ग्रीक और शेक्सपियर दोनो की नाटकीय पद्धति

१ Ceorg Herwegh ; २. Ferdinand Freiligrath ; ३. Hofmann Von Fallersleben ; ४. Buchner , ५ Christian Dietrich Grabbe , ६ Heinrich Von Kleist

अपनी शैली मे एकत्र करनी चाही थी। उसके नाटको मे प्रधान 'पेन्थेसीलिया' (१८०८), 'काथखेन फॉन हाइलब्रान' (१८१०), और 'डेर प्रिन्स फॉन हाम्बुर्ग' (१८१०) थे। इन सभी मे हीरो साधारण सीमाओ को लाघ जाते है। क्लाइस्त प्रशा की अनुपम प्रतिभा था। उसकी वह प्रतिभा सक्रिय थी। उसके विपरीत ग्रिलपार्त्सेर[1] की निष्क्रिय थी यद्यपि उसके विषाद का स्वाद बडा मधुर था। क्लाइस्त शक्तिम जनता का प्रतिनिधि है, ग्रिलपार्त्सेर अधोमुखी साम्राज्य का। ग्रिलपार्त्सेर की 'डी आन्फ्राउ' (पूर्वजा—१८१७) रोमाटिक शैली की रचना मानी गई है परन्तु 'सैफो' (१८१८) के प्रकाशन ने उसे क्लासिकल कवियो की पक्ति मे ला खडा किया। उसकी कृति 'डास गेल्डेन फ्लीस' भी उसी परपरा मे प्रस्तुत हुई। अपने 'सागर और प्रणय की वीचिया' (१८३१) मे उसने एक ग्रीक कथानक (हीरो और लीन्डर) का निर्वाह किया। उसका 'राजा ओत्तोकार का उत्थानपतन' (१८२५)ऐतिहासिक नाटक था। कॉमेडी उसने केवल 'एक झूठे को अभि-शाप' लिखी (१८३८), जिसमे दिखाया कि सत्य कभी-कभी कितना भयानक हो सकता है। ग्रिलपार्त्सेर आस्ट्रिया का रहने वाला था और एक अश मे यथार्थवादी था।

ग्रिलपार्त्सेर की भाति फ्रीड्रिख हेबेल[2] भी पारस्परिक सामाजिक मूल्यो का विरोधी था। अपने नाट्य सिद्धान्त मे उसने सिद्ध किया कि ये मूल्य अथवा आदर्श केवल सामयिक है और निरन्तर प्रगतिशील और परिवर्तनशील जगत मे प्राचीन से जकडे रहने से ही मनुष्य मारा जाता है। इसी प्रकार उदीयमान परपरा के पेशवा भी अपनी नवीनता के शिकार होते है, क्योकि दोनो ही समसामयिक के विपरीत होते है। उनमे आचार या व्यवस्था की कमी नही होती केवल परिस्थिति के प्रति उनकी प्रतिकूलता खतरनाक हो जाती है। उसकी सुन्दर कृति 'गीगेस एण्ड साइन रिंग'(गीगस और उसकी अगूठी—१८५४)मे लीडिया का राजा अपनी अन्धविश्वासी प्रजा को ग्रीक आदर्शो के अनुकूल ले चलना चाहता है और परिणामस्वरूप प्राण खो बैठता है। नाटककार के अनुसार सोते जगत् को छेडना, सोते सिह को छेडना है, जिसका दण्ड भोगना पडता है। वैसे सोता जगत् भी अपने आप अपनी सुषुप्तावस्था मे भी पौष्टिक आहार निरन्तर खाता रहता है। 'मारिया मादालेना' (१८४४) हेबेल ने पहले लिखा। उसमे उसने परिवार के भीतर ही युग-परिवर्तन के कारण पुराने और नये के सघर्ष को व्यक्त किया। 'हिरोदिज उण्ड मारियाम्ने' (१८४८) मे नाटककार ने उसी विरोध का परिचय दिया। यहूदी रानी अपने व्यक्तित्व के गौरव का अधिकार मागती है, पर नारी को केवल गुड़िया और गुलाम समझने वाला प्राचीन जगत् उसे मार डालता है।

इस प्रकार क्लाइस्त के समय से ही नाटक मे यथार्थवाद की ओर प्रगति हो

---

१. Franz Grillparzer; २. Friedrich Hebbel

चली थी। रिचार्ड वागनर[१] ने निश्चयपूर्वक इस यथार्थवादी प्रगति का विरोध किया क्योकि उसने साहित्य को मानव-आचार तथा शालीनता का निर्माता माना। वागनर ने अपने नाटको और ओपेरो (गायनो मे नाटक) मे प्राचीन जर्मनी का गौरव बखान राष्ट्रीयता का प्रचार किया। इस दिशा मे उसका 'डर फ्लिगेन्डे हालैण्डर' (उडाकू डचमैन—१८४१) प्रमाण है। अपने रोमाटिक ओपेरा 'तानहाउसेर' (१८४५) मे उसने अपने उस मिनेसिंगर का वीनस के दरबार मे आचरण प्रदर्शित करते हुए प्राचीन कवियो के दगलो के भी दृश्य उपस्थित किए। 'लोहैंग्रिन' (१८४७) मे एक मध्यकालीन ख्यात-कथानक नाट्याकित हुआ। 'त्रीस्तन उण्ड इसोल्डे' (१८५६) गॉटफ्रीड[२] के १३वी सदी के एपिक 'डी मेइस्तर सिगेर फॉन नूरेम्बर्ग' पर अवलम्बित था। उसने १६वी सदी के कवियो पर प्रकाश डाला। १८७७ मे वागनर ने 'पार्सीफाल' लिखा। उसे उसने वोल्फ्राम[३] के एपिक के आधार पर रचा था। उसने अपना 'डेररिंग डेस निबेलुगेन' (निबेलुग की अगूठी) १८५३ और १८७६ के बीच प्राय २३ वर्षो मे समाप्त किया। उसमे उसने उत्तरी देवताओ और जननायको—सीगफ्रिड[४], गुन्थर[५] और हागेन[६]—को अमर कर दिया। वागनर नाटक को समाज को बेहतर बनाने का एक जरिया समझता था। शोपेनहावर[७] के दार्शनिक विचारो का अनुयायी होने के कारण उसने ससार की विपत्तियो से छुटकारे के लिए कला के क्षेत्र मे शरण लेना आवश्यक समझा। कला की दिशा मे वह नोवालिस[८] और श्लेगेल[९] का समर्थक था। १६वी सदी के मध्य वागनर रोमान्टिक आन्दोलन का सबसे बडा समर्थक था, परन्तु परिस्थिति बदल चुकी थी और यथार्थवादी साहित्य की ओर उसकी प्रगति निरन्तर होती जा रही थी। उस प्रगति को स्वय वागनर का विशाल व्यक्तित्व भी न रोक सका।

यथार्थवादी उपन्यास

जब साहित्य-क्षेत्र मे परिवर्तन होता है तब उसकी सीमाए उसके अग विशेषो तक ही परिमित न रहकर सारे क्षेत्र मे फैल जाती है। नाटक के क्षेत्र मे रोमाटिक चेतना से यथार्थवादी दृष्टिकोण की ओर जो प्रगति हुई तो वह उपन्यास, लिरिक आदि की दिशा मे भी समान चेतना की पोषिका हुई। कार्ल इमरमान[१०] और गुस्ताफ फ्रेताग[११] ने अपने उपन्यासो से, जरेमिया गॉटहेल्फ[१२] और बर्थोल्ड आवरबाख[१३] ने अपनी ग्रामीण कहानियो द्वारा तथा फ्रीड्रिख स्पीलहॉगेन[१४], ओटो लुडविग[१५] और विलेहम-

१. Richard Wagner, २ Gottfried Von Strassburg, ३ Wolfram Von Eschenbach, ४. Siegfried, ५ Gunther, ६ Hagen, ७. Schopenhauer, ८. Novalis, ९. Schlegal, १०. Karl Immermann, ११. Gustav Freytag, १२ Jeremias Gotthelf, १३. Berthold Auerbach, १४. Friedrich Spielhagen, १५ Otto Ludwig

उसने उद्देश्यपरक साहित्य के सिद्धान्त पर आघात किया। उसके लिए ग्रीक पेरिक्लीज का युग रसात्मक आदर्श की चरम परिणति थी। बवेरिया की राजधानी मे राजा मैक्समीलियन द्वितीय का दरबार गीबेल के विचारो का गढ बन गया। वर्णनात्मक शैली, लिरिक और ड्रामा के टेकनीक का आचार्य पॉल हीसे[1] भी उसी दल का एक प्रधान सदस्य था। उसकी गद्य-कहानियो मे 'लारबिआता' (१८५३) उसकी सबसे अधिक जानी हुई कृति है। उसके लघु लिरिक सुन्दर और मधुर है।

एडुअर्ड मोरिके[2] और थ्योडोर स्टोर्म[3] जीवन के हर्ष-विषाद के मधुर गायक थे। मोरिके अपने लिरिको मे देश के झरनो और नदियो, जगलो और पहाडो, फूलो और पक्षियो, गोधूलि और प्रभात के गीत गाता है। स्टॉर्म उसके विपरीत प्रकृति के अनुदार दृश्य का चित्रण करता है। स्विस लिरिककारो मे सबसे महान कोनराड फर्डिनेड मेयर[4] हुआ। उसने कविताओ के रूप को भाषा और शैली की दृष्टि से नितान्त प्राजल बना डाला। एक शब्द, एक मात्रा तक कही उसकी कविताओ मे अधिक न हो सकती थी। उसने अनेक कविताओ की प्रेरणा रेनेसा से ली। इतिहास के असम कथानक उसके हाथ मे पडकर मूर्तिकार की कृति की भाति सर्वथा कमनीय बन गए है।

यथार्थवादी कविता

परन्तु इसका यह मतलब नही कि काव्य के क्षेत्र मे प्रगति की प्रेरणा सर्वथा नगण्य थी। जैसा ऊपर कहा जा चुका है ऐसा होना था भी असभव। जीवन अपनी जटिल समस्याओ के साथ मानव चेतना पर हावी होता जा रहा था और यह सम्भव न था कि साहित्यकार मे उसके प्रति प्रतिक्रिया न हो। यह सही है कि उस क्षेत्र मे प्रगति ड्रामा और उपन्यास के मुकाबले मे कम हुई परन्तु हुई निस्सन्देह। देत्लेफ फॉन लिलिनक्रॉन[5] और रिचार्ड देहमेल[6] ने अपनी कृतियो मे यथार्थवादी ध्वनि भरी। लिलिनक्रान होल्स्टाइन का सभ्रान्तकुलीय सैनिक था और विलहेम प्रथम तथा द्वितीय के शासनकाल मे जर्मनी का प्राय एकान्त कवि हुआ। उसकी शक्तिम पक्तियो मे प्रशा की शालीन विजयो की छाया पडी। उसने अपनी कृतियो द्वारा मोटर आदि की सवारियो का स्वागत किया। वह रोमान्टिक भावुकता और निष्क्रिय कल्पना का प्रबल विरोधी था और उसने प्रकृतिवादी युवको को प्रोत्साहित किया। देहमेल ने सेक्स विरोधी रूढ़ियो का प्रतिवाद किया और अपने कविता-चक्र 'ज्वाई मेन्शेन' (दो जीवन—१६०३) मे उसने परिवार के पुनस्सगठन की सम्मति दी। उसकी सामाजिक कविताओ मे सबसे प्रसिद्ध 'डेर आर्बाइत्समान' (श्रमिक) है।

१. Paul Heyse, २. Eduard Morike ३ Theodor Storm ४ Conrad Ferdinand Meyer, ५ Detlev Von Liliencron, ६ Richard Dehmel

उसमे उसने मजदूर की आत्मा को समझने का अच्छा प्रयत्न किया, जिससे जर्मनी के समाजवादियो ने उसे अपने पक्ष का गायक माना।

प्रकृतिवादी साहित्य

कला और साहित्य के क्षेत्र मे १९वी सदी के अन्तिम चरण मे एक प्रकृतिवादी आन्दोलन का आरम्भ हुआ। इसका अभिप्राय इस सिद्धान्त का प्रचार करना था कि कला और साहित्य का उद्देश्य केवल प्रकृति का पुनर्जनन है। उनकी सीमाए प्राकृतिक वस्तुओ के यथातथ्य निरूपण तक ही परिमित रहेगी। आर्नोहोल्त्स[१] उस विचारधारा का अग्रणी था। होल्त्स ने स्वय अपनी एक कविता मे वर्षाजल की बूदो का एक पत्ती से दूसरी पर गिरना प्रदर्शित किया। 'पापा हामलेत' (१८८९) और 'डी फामिली सेलिके' (१८९०) मे उसने बर्लिन के झोपडो की ध्वनियो और श्रमिको के चेहरो के भावो तक को प्रतिबिम्बित किया। जोहान्स श्लाफ[२] और गेरहार्ट हाउप्तमान[३] उसके अनुयायी बने।

हाउप्तमान उस काल मानवता का सबसे बडा समर्थक हुआ। उसने अपनी सुन्दरतम प्रकृतिवादी ट्रैजेडी 'डि वेवर' (जुलाहे, १८९२) मे साइलेशिया के जुलाहो का सघर्ष अमर कर दिया। वह स्वय एक श्रमिक का पोता था। बचपन से ही मज़दूरो की कठिनाइयो और संघर्षों की कहानिया वह बहुत सुनता आया था और स्वय उसने अपने चारो ओर पिचके गालो वाले कमज़ोर श्रमिको को देखा था। उनकी शहादत उसके लिए असह्य हो उठी और उसने अपनी कृतियो को उनके जीवन पर साधना शुरू किया। उसकी ट्रैजेडी मे एकान्त हीरो का प्रदर्शन नही है, अनेक स्वर एक साथ प्राय एक ही ऊचाई मे हीरो का स्थान ग्रहण करते है और वे स्वर जुलाहो के है। व्यक्तियो की एक बडी परम्परा, समाज का एक बडा स्तर, सामाजिक अन्याय का शिकार है और उसका परिणाम स्वय असामाजिक रूप धारण कर लेता है। हाउप्तमान अक्सर अपने चरित्रो को कठिन परिस्थितियो मे डालकर नियति का शिकार बना देता है। उसके 'आइन्सामे मेन्शेन' (एकाकी जीवन—१८९१) मे हीरो पत्नी के प्रेम और एक अन्य कुमारी की कृपा के बीच घुटता जाता है क्योकि वह एक को स्वीकार कर दूसरी का परित्याग नही कर पाता। इसी प्रकार उसके 'डी वर्संकेन ब्लोके' (पिचकी घण्टी—१८९६) मे हीरो विरोधी कर्तव्यो के बीच कुचला जा रहा है। 'फुह्रमान हेन्शेल' (१८९८) मे ईमानदार व्यक्ति निराशा से प्रेरित होकर अपने ही अधविश्वासो के कारण आत्महत्या को प्रस्तुत होता है। हाउप्तमान की सहृदयता चोरो पर भी समान रूप से मुस्कराती है, जैसा उसकी सुन्दरतम कॉमेडी 'डेर बीबेरपेल्त्स' (१८९३)

---

१. Arno Holz २ Johannes Schlaf ३. Gerhart Hauptmann

से प्रमाणित है। हाउप्तमान की ही भाति हरमान सुडरमान[1] भी प्रकृतिवादी था। उसने प्रकृतिवादी सिद्धान्त का पोषण अपने उपन्यास और नाटको मे किया। 'फ्राऊ सोर्गे' (१८८७) उसका जाना हुआ उपन्यास है। 'इज्जत' (डी एह्रे—१८८६) भी उसकी सुन्दर नाटक कृति है, यद्यपि नाटक के क्षेत्र मे 'हाईमात' (१८९३) मे उसने विशेष सफलता पाई। उसकी इस कृति के अनेक अनुवाद हुए, और यह रगमच पर प्रदर्शित भी बार-बार होती रही।

रसवादी परंपरा

बर्लिन मे जिस प्रकार प्रकृतिवाद का वोलबाला था उसी प्रकार वियना मे कलात्मक रसवादिता का महत्व बढा। वियेनी लेखको का एक दल प्रथम महायुद्ध के पहले ही उस क्षेत्र मे सक्रिय हो चला था। उसके अग्रणी हरमान बाह्र[2], आर्थर श्नित्स्लर[3], ह्यूगो फान हाफमान्स्थल[4] और रिचार्ड बीर हॉफमान[5] थे। श्नित्स्लर प्राचीन वियना का समृद्ध गायक था। उसने उसके गौरव की बेल को अपनी कला से सीचा। वियना का अनिवार्य पतन उसके चरित्रो के आचरण मे भी स्वाभाविक ही प्रतिबिम्बित हुआ। उसके पतन की अनिवार्यता उसके प्रत्येक विचार और कार्य मे दृष्टिगोचर हुई। चरित्र रसवादी थे और जीवन के बचे क्षणो को आनन्द की अनुभूति से सार्थक कर लेना चाहते थे। श्नित्स्लर के नायक नारी को भी अपनी उसी आनन्दपरक प्रवृत्ति से केवल भोग्य और कामसाधन की वस्तु मात्र मानते थे। नाटककार ने अपने नाटको, विशेषत 'मार्शेन' (१८९१) और 'लिवेलाइ' (१८९४) मे नारी की ओर से प्रणय की क्रीडा अभिव्यक्त की, और पुरुष की आनन्द-चेतना मे नारी के बलिदान का भीषण विरोधाभास प्रस्तुत किया। जीवन की समस्याओ पर विचार उसके 'पारासेल्सस' (१८९७), 'डेर आइन्सामेवेग' (१९०३), 'ज्विशेनस्पील' (१९०४) और 'डास वाइड लैण्ड' (१९०८) मे हुआ। नये आचारो की खोज करता हुआ नाटककार इस निष्कर्ष पर पहुचा कि आचार की व्यवस्था ही, चाहे वह पुरानी हो चाहे नई, अपूर्ण है।

ह्यूगो फॉन हॉफमान्स्थल वियना के आनन्दवादियो मे शुद्धतम प्रभाववादी था। उसके लिरिक और नाटक-कहानिया सभी प्रभावो की चेतना प्रदर्शित करते थे। ह्यूगो अत्यन्त अल्पायु मे प्राय. २० वर्ष से भी कम अवस्था मे, अपने यश की चोटी पर

---

१. Hermann Sudermann; २. Hermann Bahr; ३ Arthur Schnitzler; ४ Hugo Von Hofmannsthal, ५ Richard Beer Hofmann

पहुच गया। १८ वर्ष की आयु मे उसने 'टीटियन की मृत्यु' लिखा और १९ वर्ष की आयु मे 'मृत्यु और मूर्ख'।

इन लिरिक-दृश्यो मे हॉफमॉन्स्थल ने मृत्यु और पतन के उन्मादक गीत गाए। वह रजीदा, पीला, सुकुमार और सौदर्य के प्रति शीघ्र आकृष्ट होने वाला व्यक्ति था। ऐतिहासिक और साहित्यिक सस्मरण उसकी चेतना को बरबस आक्रान्त कर लेते थे और वह अनुभव की ओर यथार्थवादी रूप से कभी झुक न पाता था। उसकी अनेक नाट्य कृतिया रिचर्ड स्ट्रास के ओपेरा का आधार बनी। इन कृतियो मे सबसे लोकप्रिय 'रोजेनकावालिर' (१९११), 'एलेक्त्रा' (१९०३) और 'मिस्री हेलेन' (१९२८) थी। आस्ट्रिया के कवियो मे रेनर मारिया रिल्के[1] हाफमान्स्थल से बहुत मिलता है। पतन के प्रति उसीका-सा मोह, कला के प्रति उसीकी-सी सवेदना, अर्धलुप्त परंपरा के प्रति उसीका-सा आकर्षण रिल्के मे भी था। रिल्के प्राग का रहने वाला था परन्तु परिवारहीन, पेशाहीन, शब्द, विचार और प्रभाव की पूजा मे वह जीवन भर इधर-उधर घूमता फिरा। 'माल्ते लौन्दिज-ब्रिगे' (१९१०) मे उसकी कला विशेष विकसित हुई। स्विट्जरलैण्ड मे १९२६ मे दरवेश की दशा मे रिल्के की मृत्यु हुई। ओर्फियस के प्रति उसके सॉनेट और दुइनीज की एलेजी मे उसने अपने गम्भीरतम रहस्यवादी दृष्टिकोण को प्रकाशित किया। रिल्के की ही धर्मदृष्टि रिचार्ड बीर हाफमान[2] की कविताओ मे भी विकसित हुई। 'श्लाफ लीड फीर मिरियम' (१८९७) उस दार्शनिक दृष्टिकोण की सुन्दरतम कविता है। बीर हॉफमान की ख्याति उसकी ट्रैजेडी 'डेर ग्राफ फॉन चारोलेस' (१९०४) और धार्मिक नाटक 'याकोव त्राउम' (१९१८) तथा 'डेर जुग डाविड' से हुई। स्टीफैन ज्वाइग[3] आस्ट्रिया के प्रभाववादियो मे सबसे अल्पायु था। उसकी कहानिया सुन्दर है और मर्म को छू लेती है यद्यपि उनमे अवचेतन की सज्ञा भी अधिक होती है। वह भावुक आलोचक और निबन्धकार भी है। चरित्रकार भी वह काफी ऊचा है।

टॉमस मान[4] जर्मन मध्यवर्ग का सबसे महान् व्याख्याता था। वह भी आस्ट्रिया का ही साहित्यकार था। उस शासन के पतन की छाया उसकी कृतियो पर भी पडी। वह लीबेक का निवासी था और साहित्य के क्षेत्र मे तब उतरा जब मध्यवर्ग शक्ति और प्रभाव की चरम चोटी पर पहुच एक ओर थैलीशाहो और दूसरी ओर राजनीति मे सचेत और सक्रिय मजदूरो से सघर्ष कर रहा था। मान ने अपना साहित्यिक जीवन लघु कथाओ से आरम्भ किया। उसके प्रारम्भिक उपन्यास 'बूडेनब्रुक्स्' (१९०१)

---

१. Rainer Maria Rilke; २ Richard Beer-Hofmann; ३. Stefan Zweig; ४. Thomas Mann

मे उसने अपने ही वणिक् परिवार के अध पतन का चित्र खीचा। मान स्वयं अपने को पतन के युग का इतिहासकार कहता है। अपने 'डर जौबर्बर्ग' (जादू का पहाड—१९२४) मे उसने युद्ध और पतन की ओर उन्मुख यूरोपीय समाज का अकन किया। यह कृति एक प्रकार का रूपक है जिसमे आल्प्स पहाड के एक सेनेटोरियम मे यूरोप के सारे देशो से आने वाले रोगियो का रोग अकित हुआ है। स्पष्टत: सकेत यूरोप के देशो की पतनोन्मुख युद्धवादी प्रवृत्ति की ओर है। मान शोपेनहॉवर, नीत्शे और वागनर के विचारो से बडा प्रभावित हुआ। मृत्यु के प्रति उसका आकर्षण शोपेनहॉवर से मिला। नीत्शे ने उसे पतन सम्बन्धी मनोवृत्ति की गहरी चेतना दी। वागनर की शैली ने उसे साहित्यिक टेकनीक दी जिसमे यथार्थ के विषाद से भागकर सगीत के स्वरो मे शरण देने की प्रवृत्ति थी। 'जोजेफ और उसके भाई' (१९३३-४४) नाम से कई खण्डो मे मान ने एक उपन्यास लिखा जिसमे शोक की छाया कम है, प्रसन्नता की अधिक। उसमे बाइबिल की पुरानी पोथी का परिवार फिर से मनोवैज्ञानिक रीति से रूप धारण करता है।

: ७ :

वर्तमान युग

जर्मन साहित्य के वर्तमान युग का आरम्भ, जैसा पिछले प्रसगो से प्रकट है सदी के आरम्भ के काफी पहले से हो जाता है। प्रथम महायुद्ध के काफी पूर्व ही साहित्य की आधुनिक प्रवृत्तियो का प्रारम्भ हो चुका था। इससे अनेक साहित्यकार जो पिछली सदी से ही उन प्रवृत्तियो से प्रभावित रचनाए करते रहे हैं वर्तमानकाल के ही निर्माता है। टॉमस मान स्वय वर्तमान युग की प्रेरक शक्तियो मे था। इस कारण यदि कुछ साहित्यिको का उल्लेख पहले हो जाने के कारण इस प्रसग मे नही हुआ तो उन्हे अनाधुनिक नही मानना चाहिए। स्वय प्रभाववादी (इम्प्रेशनिस्ट) प्रवृत्ति आधुनिक साहित्य-चेतना की ही एक मजिल है जैसे अभिव्यजनावाद उससे कुछ पीछे की। प्रभाववाद प्रथम महासमर के पहले साहित्य मे पूजा गया और अभिव्यजनावाद (एक्सप्रेशनिज्म) उसके बाद के दशको मे।

अभिव्यजनावाद

वस्तुत अभिव्यजनावाद का आरम्भ साहित्यिक सिद्धान्त और टेकनीक के रूप मे प्रथम महासमर के पहले ही हो चुका था। हाउप्तमान[1], श्नित्सलर[2] और टॉमस मान[3] के प्रकृतिवाद और नवरोमान्टिकवाद उसी परपरा की कडिया निर्मित करते हैं। परन्तु शुद्ध साहित्यिक सिद्धान्त और शैली के रूप मे अभिव्यजनावाद उस महासमर के बाद के

१. Hauptmann, २ Schnitzler; ३. Thomas Mann

दशको मे ही विकसित हुआ। इस सिद्धान्त के प्रवर्तको ने अपने वातावरण के प्रभाव का अकन करने से इन्कार कर दिया। उनके विचारानुसार कवि का कार्य अन्त सत्य को प्रकाशित करना था, सत्य जो उसकी अन्तश्चेतना और अन्तर की प्रेरणा का प्रतीक था। उसे अपने वातावरण को भी बदलकर अन्तर की रहस्य दृष्टि के अनुकूल बना लेना था। उसे काव्य के रूप पर भी अधिक ध्यान नही देना था क्योकि सत्य का सरल पक्तियो, विद्रूप अथवा अरूप शब्दावली मे भी उतर पडना स्वाभाविक है। बाह्य वस्तुओ के निरीक्षण और सविस्तार वर्णन को त्याग कवि उस मूल सत्य का उद्घाटन करे जो सामग्री की बहुलता से विकृत और आच्छन्न हो जाता है। यह विचार-धारा स्वाभाविक ही पर्याप्त विपज्जनक थी। खूनखराबी के उन दिनो मे इसका सहारा प्रतिभाशील मनीषियो ने भी लिया और भाडो ने भी। अनेक प्रकार के स्वप्निल 'यूटोपिया'-ससार फिर से सिरज दिए गए। यद्यपि अभिव्यजनावाद के समर्थन मे अनेक घोषणाए हुई, वस्तुत: स्थायी मूल्य की साहित्य रचना स्वल्प ही हुई। इन स्वल्प रचनाओ मे ही फ्रात्स वेर्फेल[१] के लिरिक, फ्राक वेडेकिड[२], जॉर्ज कैसर[३] और अर्नस्ट टॉलर[४] के नाटक तथा हाइन्रिख मान[५], जाकोब वासरमान[६] और आल्फ्रेड दोब्लिन[७] के उपन्यास थे।

वासरमान जर्मन साहित्य का दोस्तोएव्स्की[८] था। उसने पतनोन्मुख जगत् और उदीयमान मानव आत्मा दोनो का द्रष्टा होना चाहा। उसने गद्य-एपिको की एक परपरा ही सिरज दी। इनमे सबसे सुन्दर उसका 'क्रिश्चियन वानशाफे' (जगत् की माया १९१९) था। इसके सभी चरित्र जीवन मे आधार खोए हुए थे, ऐसे मानव, नर, नारी, बालक जो भीषण परिस्थितियो और मनोवैज्ञानिक भय से त्रस्त भगवान् को खोजते और अविराम गति से चलते रहने के कारण शिथिल होकर ही उसे पाते हैं। वेडेकिंड का इस दिशा मे बडा नाम हुआ, नाम दोनों प्रकार का, घृणा से तिरस्कृत और साथ ही अभिराम स्रष्टा के रूप मे। आलोचको के एक दल ने उसे भाड और अतृप्त कामुक कहा, दूसरे ने उसे स्वतन्त्र जगत का निर्माता, जिसमे रूढियो और परपराओ के आघात से सौन्दर्य विकृत नही हो जाता, जहा शरीर और आत्मा की सर्जनशील सक्रियता सामाजिक आचरण के व्याघात से कुण्ठित नही हो जाती। वेडेकिंड ने गतिमान भाषा मे जीवन के तूफानी आवेगो और अदम्य भूखो की अभिव्यक्ति की। उसके चरित्र जैसे ज्वालामुखी गर्त की ढाल पर खडे है, स्वयं जैसे ज्वालामुखी है और आन्तरिक प्रेरणा के वशीभूत बाह्य की तात्विक शक्ति के स्पर्शमात्र से फट पडते हैं। इस प्रकार के विस्फोट परिस्थिति के अनुकूल सर्वत्र और सर्वदा होते हैं। उसके 'इर्दगाइस्त' (पृथ्वी—१८९५)

---

१. Franz Werfel ; २. Frank Wedekind ; ३. Georg Kaiser , ४ Ernst Toller ; ५. Heinrich Mann ; ६. Jakob wassermann ; ७. Alfred Doblin ; ८. Dostoevsky

तथा 'डी बिख्से डेर पडोरा' (१६०१) की 'लूलू' कन्या-विशेष नही वरन् नारी जाति की प्रतीक है। स्वय सेक्स की भूख जो अभितृप्ति मागती है, उसकी अभिव्यक्ति की बस वही एक मात्र प्रेरणा है। अभिव्यजनावाद की टेकनीक और समस्या का रूप उसने १८६१ मे ही अपने नाटक 'फ्रुहलिंग्स एरवाखेन' (वसत का जागरण) मे रख दिया था। उस नाटक मे उन किशोर-किशोरियो के आनन्द-विषाद का अकन है जिनको प्रौढो के आचार-बन्ध से मजबूर होकर जीवन की पुकार को तृप्त करने के लिए प्राकृतिक राहो को छोड़ बाध्यत. अस्वाभाविक उपायो का सहारा लेना पडता है।

प्रेम, बलिदान और व्यापक भ्रातृभाव द्वारा यूरोप को पुन सज्जीवित करने का प्रयास फ्रान्त्स वेर्फेल[1] ने अपनी कलाकृतियो द्वारा किया। उसने बौद्धिक सत्ता से आत्मा को मुक्त करने का नारा उठाया। १६१४ के पहले के ही उसके लिरिको मे तर्क और दर्शन को फेक चैतन्यवत् धार्मिक उन्माद ग्रस्त हो जाने की भावना थी। १६१४ के बाद के उसके लिरिको मे व्यापक वेदान्त की प्रेरणा पुकार उठी है। मृत्यु और पुनर्जन्म, प्रलय और मोक्ष उसकी वाणी की सतत प्रेरणा बन जाते है। चराचर जगत् मे ब्रह्म (गॉड) का निवास मान उसके कण-कण से मैत्री भाव स्थापित करने को वह कहता है। उसके 'बर्नादेत्ते का गीत' (१६४३) मे भगवान् की ओर लौट चलने की प्रेरणा उपन्यास-कला मे उभर पडी है। अपनी प्रौढतर कृतियो मे वेर्फेल अभिव्यजनावादी शैली से विरत हो जाता है जिससे उसकी दृष्टि अम्लान हो जाती है और अभिव्यक्ति मे यथार्थ रूप धारण कर लेता है। फिर वह अपने कथानको के लिए इतिहास की ओर देखता है। वहा विजेता और सभ्रान्तकुलीय उसे आकृष्ट नही करते, उसके आकर्षण का केन्द्र सर्वहारा और नि सत्व बनते है। 'वर्दी' (१६२४) उसका इसी प्रकार का उपन्यास है। इसी प्रकार 'मूसा दाग के चालीस दिन' (डी वीरत्सिग तागे डेस मूसा दाग, १६३३) मे तुर्की सत्ता से सघर्ष करते आमनियनो के लिए उसका हृदय रो पडता है।

नव यथार्थवाद

यह सर्वथा अमूर्त दर्शन स्वाभाविक ही साहित्य मे चिरकाल तक नही चल सकता था। अभिव्यजनावाद के अग्रणी आखिर अहकार की सत्ता से भी विरत होगए, थक गए। बाह्य दर्शन साहित्य को आलम्बन और टिकाव देता है। अन्त. की प्रेरणा साधक को थकाती मात्र है। अभिव्यजनावाद के अग्रदूत और पेशवा भी उस परा-कल्पना से थक गए। वेर्फेल की उससे विरक्ति की बात ऊपर लिखी जा चुकी है। जो उसकी दशा हुई वही उसके अन्य अनुयायियो की भी हुई। इस शती के दूसरे दशक के अन्त मे एक नई यथार्थ प्रेरणा साहित्यिको मे मूर्तिमती हुई। उनकी गति अब सूक्ष्म से स्थूल की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर, अव्यक्त से व्यक्त की ओर हुई। इस नवयथार्थवाद का नाम जर्मनी मे 'निवे-साख्लि-

---

१. Franz werfel

रूकाइत' पडा और नात्सी जर्मनी की सास्कृतिक तानाशाही के आरम्भ काल मे यही जर्मन-साहित्य का आलोक बिंदु बना। इस दिशा के लेखकोने भारी-भरकम शब्दो को त्याग दिया। शात उत्पादन, सक्रिय उद्योग, उत्तरदायित्व का चुपचाप निर्वाह उनके आलोक शब्द बने। क्रान्ति और पुनरुज्जीवन के नारे अब निरस्त हो गए। सामान्य मानव पर उनकी दृष्टि केन्द्रित हुई। कुछ अकारण न था कि १९३२ मे हान्स फलादा[1] ने अपना 'क्लाइनेर मान, वास नुन ?' (लघु मानव, आगे क्या ?) लिखा। इसी प्रकार हान्स कारोसा[2] ने अपने उपन्यास मे जन साधारण, पशु आदि का सविस्तार चित्रण किया। आर्नल्ड ज्वाइग[3] के उपन्यास 'डेर स्ट्राइट उम डेन सेरग्यान्टेन ग्रीशा' (१९२८) मे कथानक का केन्द्र वह अकेला रूसी सैनिक है जिसका नगण्य जीवन प्रशा की सारी शासन तथा न्याय-सत्ता को चुनौती देता है। एरिख मारिया रिमार्क[4] अपने उपन्यास 'इम वेस्टेन निख्त्स निवेस' (पश्चिमी मोर्चे की शान्ति–१९२९) मे प्रथम महासमर के भीषण परिणाम का यथार्थ रूप से आकलन करता है। परन्तु यह साहित्यिक प्रवृत्ति भी जर्मनी मे दीर्घकाल तक न चल सकी। उसका स्थान नात्सी रोमान्टिकवाद ने लिया।

नात्सी-रोमान्टिकवाद

जर्मनी मे १९३३ मे राष्ट्रीय-समाजवाद की विजय हुई और वहा तत्काल नात्सी नादिरशाही का बोलबाला हुआ। साहित्य के प्रोपेगैण्डा का साधन बनते ही नव यथार्थवादी दृष्टिकोण का स्थान नात्सी-रोमाटिकवाद ने लिया। नीत्शे[5] और स्टीफैन जॉर्ज[6] के अनुयायी इस नई साहित्य-चेतना के नेता बने। नीत्शे को नात्सी जर्मनी ने जर्मन सत्ता और सस्कृति का प्रतिनिधि माना। नीत्शे अभिजातीय व्यक्तिवाद का प्रवर्तक था। तृतीय राइख उसे अपना पैगम्बर मानने लगा। जर्मनी की दृष्टि मे वह एक नई राजनीतिक और सामाजिक सत्ता का प्रचेतक था जिसकी बागडोर सेठो-साहुकारो के हाथ मे न होकर अतिमानवो के हाथ मे होगी। उदात्त 'सुपरमैन' राज्य सस्था का सचालन करेगा। नीत्शे मानव जाति मे भी महान् से महत्तर के विकास मे विश्वास रखता था। जीवन कष्टप्रद है पर उसे स्वीकार कर सक्रिय बने रहना आवश्यक है। उसने ईसाई धर्म का विरोध इसलिए किया कि उसमे कमज़ोर और निराश की सराहना है, सबल और विजयी की नही, क्योकि वह शरीर की आवश्यकताओ को हटाकर एक काल्पनिक मरीचिका का विधान करता है। नीत्शे के विचार से पाप, अन्तरप्रेरणा और विनय गुलामो और अकिंचनो की पतनोन्मुख आचार-सपदा है। उसका आदर्श वह महामानव है जो पाप-पुण्य से परे है और जिसके कार्यों की प्रेरणा आचारावस्था से नही शक्ति-सचार के आग्रह से होती है। इन विचारो को नीत्शे ने अपने निबधो

---

१. Hans Fallada; २. Hans Carossa, ३ Arnold Zweig, ४. Erich Maria Remarque, ५. Nietzsche; ६. Stefan George

मे प्रकट किया। 'जेन्साइत्स फान गुत उण्ड बोस' (पुण्य और पाप से परे-१८८५), 'डेर विले-जुर माख्त' (शक्ति के लिए आग्रह-१८८६), और 'आल्सो सप्नाख जरथुस्त्र' (जरथुश्त ने ऐसा कहा १८८३-९१) मे नीत्शे के वे उद्‌गार भरे है जिनसे नात्सी जर्मनी ने अपनी प्रेरणा पाई। स्टेफॉन जॉर्ज आदि ने नीत्शे के दार्शनिक आदर्शो को साहित्य के क्षेत्र मे भी घसीट लिया। इनका कहना है कि भगवान् असाधारण शक्तिम महापुरुषो मे साकार होता है। वे पूजनीय है और वे ही मानव जाति को मानवता का सही मूल्य प्रदान करते है। उन्हे शका या सोच नही होता, न उन्हे मोक्ष की आवश्यकता होती है। उनमे बस एक भावना होती है, अपने अनुरूप ससार के पुनर्निर्माण की। वे शब्द और कर्म दोनो रूप से श्रेष्ठ होते है। दाते और शेक्सपियर, गेटे और होल्डरलिन, सीजर और नेपोलियन उन्हीकी परपरा मे है। उसी महान को जीवन मे खोजना है। नीत्शे ने उसके आगमन की घोषणा भी कर दी थी। स्टेफान जॉर्ज आदि के विचारो ने एक धार्मिक सम्प्रदाय को जन्म दिया। भारत मे भी इस चेतना का अभाव नही है। अरविन्द के 'सुपरमाइण्ड' (अतिमानव) की स्थापना बहुत कुछ ऐसी ही है। स्टेफान के सम्प्रदाय मे काव्यकारिता सर्वोत्तम प्रकार की आध्यात्मिक सक्रियता है और कवि आत्मा को स्थूल रूप देता है। जार्ज की कविताओ के सग्रह १८९० से ही प्रकाशित होते रहे है। लिरिक सुन्दर है पर उनमे समझी-बूझी अस्पष्टता सिरजी गई है। 'डेर सिवेन्ते रिग' (१९०७) और 'डास निवे राइख' (१९२८) मे भी नीत्शे का वही दृष्टिकोण व्यवस्थित है। जार्ज ने उस साम्राज्य के गीत गाए है जहा 'फीरर' (नेता) का शब्द अनुल्लघनीय शासन (कानून) होगा और जहा उसके निर्देश का असयत पालन होगा। यह सममानवो की सत्ता का परिचायक या बौद्धिको के तर्क का प्रतीक न होकर उन तरुणो का गढ होगा—चुने असामान्य तरुणो का— जो अपनी प्रेरणा उस महा नेता से पाएगे। और वह महानेता भाग्य के विधान से प्रतिष्ठित होगा। उसके अनुशासन के प्रति उसके सभी अनुयायी सानन्द नत शिर होगे। वे उससे प्रेम करेगे, इससे उसकी आज्ञा का जूआ वहन करने मे न हिचकेगे। जॉर्ज के विचार से यह फीरर साधारण राजनीतिज्ञ न होकर विराट और प्रेरित महाकवि होगा। फिर स्वय जॉर्ज ने अपने को वह फीरर एक बार घोषित किया जिससे उसके अनुयायी उसे शासक, मास्टर, पैगम्बर आदि नामो से पुकारने लगे। उसके इन अनुयायियो मे लिरिककार कार्ल उल्फस्केल[१], चरितकार फ्रीड्रिख वोल्टर्स[२], साहित्य-इतिहासकार अर्नस्ट बर्ट्राम[३] और इन सबसे प्रभावशाली फ्रीड्रिख गुन्डोल्फ[४] थे। गुन्डोल्फ हिटलर-कालीन जर्मनी के प्रख्यात प्रचार मन्त्री जोजेफ गोबेल्स[५] का गुरु था।

इस फीररवाद का सबसे बडा सास्कृतिक पुजारी सम्भवत गोबेल्स था। सारे साहित्य

---

१ Karl Wolfskehl, २ Friedrich Wolters, ३ Ernst Bertram, ४. Friedrich Gundolf, ५. Josef Goebbels

को इस दृष्टिकोण के अनुकूल राष्ट्र की तानाशाही वृत्ति का एकान्त उपासक होना चाहिए। नात्सी जर्मनी मे शीघ्र ही ऐसे साहित्यिको की कृतिया जला दी गई जिन्होने उस भावधारा के विरुद्ध कलम उठाई। नात्सीवाद के समर्थक साहित्यिको मे प्रधान थे पाल अर्न्स्ट[१], हान्स ग्रिम[२], अर्विन गीदो कोल्बेन्हेयर[३], हरमान स्तेह्र[४], विल वेस्पर[५], हान्स फ्रीड्रिख ब्लुक[६], जोजेफ पोन्तेन[७] और हान्स जोस्त[८]। १९३३ और ४५ के बीच जर्मन साहित्य इसी दृष्टि-कोण का पोषक रहा। शक्ति और युद्धवाद ने साहित्य का गला घोट दिया। फिर भी जर्मन सीमाओ के बाहर नात्सी विरोधी विचारो का आकलन जर्मन साहित्यकार करते रहे। पेरिस, एम्स्टर्डम, स्टाकहोल्म और प्राग नात्सी विरोधी साहित्य के केन्द्र बन गए, फिर इन स्थानो के नात्सी सेनाओ द्वारा आक्रान्त हो जाने पर लन्दन और न्यूयार्क निर्वासित जर्मन साहित्य के केन्द्र बने। स्वय जर्मनी मे चुपके-चुपके नात्सी विरोधी साहित्य बनता रहा और सन् ४५ मे उसके स्वतत्र होने पर तो एक बार फिर जर्मन साहित्यिक मेधा जगी, विशेषकर पूर्वी भाग मे जहा जन-सत्ता का दृष्टिकोण उसकी प्रेरणा बना।

---

१ Paul Ernst ; २. Hans Grimm ; ३. Erwin Guido Kolbenheyer , ४. Hermann Stehr , ५. Will Vesper , ६ Hans Friedrich Blunck , ७ Josef Ponten; ८. Hans Johst

१०. जापानी साहित्य

जापानी साहित्य का काल-प्रसार काफी बडा है, प्राय १५०० वर्षों का। उसका आरम्भ पांचवी सदी ईस्वी के पहले से ही हो जाता है। उस साहित्य का अध्ययन युगतः करना होगा। प्राय सात युगो के क्रम मे उस साहित्य की प्रगति अद्यावधि हुई है। उन्ही युगो के अनुकूल जापानी साहित्य का अध्ययन समीचीन होगा। उनका साधारणत नाम-करण निम्न प्रकार से किया जा सकता है

१ आरम्भ युग (७०० ई० पू०), २ नारा युग (७००-७९४), ३. हेइयन युग (७९४-११९२), ४ कामाकुरा युग (११९२-१३३२), ५ नान्बोकुचो और मुरोमाची युग (१३३२-१६०३), ६. इदो युग (१६०३-१८६८) और ७. वर्तमान युग (१८६८-१९४१)।

: १ :

आरम्भ युग

(७०० ई० के पू०)

प्राचीन कालीन विनोदप्रिय भावुक और सरल जापानियो का प्रारभिक साहित्य उनके सृष्टि सम्बन्धी पौराणिक आख्यानो से होता है। जापान प्रकृति का क्रीडा-स्थल रहा है। वहा उसके सृजन और सहार दोनो रूपो का खुलकर प्रकाश हुआ है। प्रकृति के सम्पर्क से ही जापानियो ने अपने 'शिन्तो' धर्म का प्रारम्भ किया। पाचवी सदी मे चीनियो ने जापान मे लिपि का प्रचार किया। उसके पहले जापानी साहित्य कहानी, गीतो और धार्मिक मन्त्रो के रूप मे केवल अलिखित था जो कानो कान प्रवाहित होता रहता था। उस साहित्य के प्रवक्ता को 'कातारिबे' कहते थे। वे बहुत कुछ भारतीय पुराण कथावाचक 'सूतो' से मिलते है।

उस प्रारम्भिक काल के जापानी साहित्य के तीन अगो की ओर ऊपर सकेत किया गया है। वे अग थे—कथाए, गीत और नोरिती (मत्र)। पाचवी सदी के आरभ (४०५ ई०) मे चीनी लिपि का प्रचार पहले पहल एक चीनी राजकुमार के कोरियन शिक्षक वागिन[1] (जापानी मे वानी) ने किया। उसका स्वाभाविक ही साहित्य के समुदय पर बडा प्रभाव पडा। ५५२ ई० मे जो जापान मे बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, उससे भी वहा के साहित्य को

---

१ Wangın

बडा बल मिला। इन दो घटनाओ ने जापानी साहित्य मे दूरगामी परिवर्तन किए।

: २ :

नारा युग

(७००-७९४)

इस काल का सम्बन्ध नारा मे जापानी राजधानी की स्थापना से है। यह सारा काल-प्रसार वस्तुत नारा की राजकीय स्थिति से सम्पर्क रखता है। नारा ७१० ई० मे राजधानी बनी और ७९४ मे वर्तमान क्योटो को हटा दी गई। क्योटो का प्राचीन नाम हेइयन-क्यो था। ७०० ई० के आसपास काकिनोमोतो नो हितोमारो[१] की काव्य-कृतिया रूपायित हुईं। साथ ही जापानी चिन्तको ने चीनी भाषा और साहित्य का अध्ययन आरभ किया। चीन मे बौद्ध धर्म का प्रचार पहले ही हो चुका था और उस दिशा से साहित्य और कला का भी प्रादुर्भाव हुआ, जिसने जापानी विचारो तथा कला आदि मे आधारभूत परिवर्तन किए। चीनी लिपि जापानियो के अनुकूल तो न पडी किन्तु लिपि के अभाव मे उन्हे उसीको स्वीकार करना पडा। परन्तु अपनी भाषा चीनी लिपि मे लिखने मे बडी कठिनाई पडती थी। धीरे-धीरे 'काना' नाम की एक व्यवस्था हुई जिससे जापानी शब्दो का उस लिपि मे उल्लेख होने लगा। 'काना' पद्धति का प्रयोग वस्तुत अगले युग मे हुआ।

नारा युग की साहित्यिक अभिव्यक्ति विशेषत कविता मे हुई। प्राचीनतम काल से प्राञ्जल शैली मे काव्य-रचना होती आई थी। नारा युग का काव्य अनेक अधिकारी समीक्षको के मतानुसार अप्रतिम है। विशेषत ताका (बाका) शैली की छोटी कविता का प्रयोग उस काल के पद्य मे हुआ। उसमे १२ से २० तक के शब्दो का प्रयोग होता था। उस कविता मे तुको की आवश्यकता नही होती थी। कारण यह है कि प्रत्येक जापानी शब्द स्वरान्त होता है। इससे पिंगल की टेकनीको के प्रयोग बिना ही काव्य मे गेय ध्वनियो का विस्तार हो जाता है। ताका शैली की कविताए सक्षिप्त होती थी। कवि का काम शब्दो द्वारा दृश्य को प्रस्तुत मात्र कर देना था, अलिखित को मूर्तिमान कर लेना पाठको की कल्पना पर निर्भर करता था। तब की कविताए प्राय सभी लिरिक है जो भावो की अभिव्यक्ति करती हैं। मनुष्य, प्रकृति, मरण, जीवन, दर्शन उसके विषय है।

जापानी भाषा मे लिपि का प्रयोग होने के बाद ही अलिखित कविताओ का सग्रह आरम्भ हो गया था। प्राचीनतम सग्रह ८वी सदी के प्राय अन्त मे प्रस्तुत हुआ। उसमे लगभग ४५० कवियो की रचनाए सगृहीत हुईं। कवियो मे प्रधान काकिनोमोतो

---

१. Kakınomoto no Hıtomaro

नो हितोमारो और यामाबे नो अकाहितो[१] थे। इस सग्रह की लिपि चीनी थी, 'काना' लिपि-व्यवस्था अभी भविष्य के गर्भ मे थी अथवा कम से कम अभी विकसित हो रही थी। कहना न होगा कि यह सग्रह चीन के साहित्यिक स्वर्ण युग, तागकाल (६१८-९०६) की समान कृतियों का परिणाम था। यद्यपि उस सग्रह की नब्बे प्रतिशत कविताए ताका शैली मे है, अनेक 'चोका' (लम्बी कविताए) शैली मे भी लिखी गई है। उस काल के बाद 'चोका' प्रकार की कविताए देश मे अप्रिय हो गईं और फिर वे जापानी काव्यक्षेत्र मे न लौट सकी। 'मान्यो' पद्धति मे कविताओ के लिखे होने के कारण वह सग्रह 'मान्योशू' कहलाया।

नारा युग का साहित्य यद्यपि साधारणत काव्य मे है, कुछ कृतिया गद्य मे भी रची गई। 'कोजिकी' (प्राचीन विषयो का रेकॅर्ड) पहला जापानी इतिहास है जो ७१२ ई० मे प्राय तभी समाप्त हुआ जब अरबो ने सिन्ध और स्पेन मे अपनी शक्ति के नये पाये खडे किए। जापान के इतिहास 'निहोन्शोकी' की रचना ७२० मे समाप्त हुई। इसे जिन अनेक लेखको ने रचा उनमे राजकुमार तोनेरी[२] और यासुमारो[३] भी थे। सग्रह चीनी मे लिखे अनेक इतिहासो का है। उसमे पुराणो, ख्यातो, कविताओ और सातवी सदी तक के इतिहास का सग्रह हुआ है। उस कृति का साहित्यिक मूल्य तो अधिक नही है परन्तु जापानी जीवन और धार्मिक विश्वास, ख्यातो और भाषा आदि के अध्ययन के लिए निश्चय ही वह अनुपम ग्रन्थ है। ७३३ मे मियाके नो ओमी कानातारी[४] और इजुमो नो ओमी हिरोशिमा[५] द्वारा सगृहीत जापान का सबसे पहला भौगोलिक ग्रन्थ 'इजुमोफूदौकी' है।

: ३ :

हेइयन युग

(७९४-११९२)

हेइयन युग हेइयन-क्यो मे ७९४ मे राजधानी स्थापित होने से लेकर ११९२ मे कामाकुरा सैनिक सरकार कायम होने तक है। इस बीच यह राजधानी जापानी अभिजातीय सस्कृति का केन्द्र थी।

हेइयन युग जापानी साहित्य का 'क्लासिकल' युग है। आरम्भ मे तो जापानी साहित्य की प्रगति चीनी परपरा के अनुसार हुई, फिर देशी रचनाओ का आरम्भ हुआ। चीनी भाषा के बोझिल होते हुए भी जापानियो ने उसे सीखा और पढा। ८९४ मे विद्वान राजनीतिज्ञ सुगावारा नो मिचिजाने[६] ने सरकार से कहकर जापानी दूत मण्डलो का चीन

---

१ Yamabe no Akahito, २ Toneri, ३ Yasumaro ४ Miyake no Omi Kanatari, ५ Izumo no Omi Hiroshima, ६ Sugawara no Michizane

जाना रोक दिया जिससे चीन से विमुख होकर जापानी अपनी भाषा और साहित्य का स्वतत्र विकास करने लगे।

नारा युग से शक्तिमान फुजिवारा कुल के हाथ मे धीरे-धीरे सारी राजशक्ति केन्द्रित होती आई थी। सम्राट् बरायनाम जापान का स्वामी था। इसी फुजिवारा कुल ने हेइयन-काल का प्राय सारा साहित्य प्रस्तुत किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि उस प्राचीन काल मे भी जापानी नारी का साहित्य-निर्माण असाधारण था। दरबारियो का एक नारी-दल उस दिशा मे विशेष सयत्न था। उसमे एक का नाम मुरासाकी शिकिबू[1] था। उसने 'गेजी की कथा' नाम की एक कहानी लिखी जिसे अनेक समालोचक जापानी-साहित्य की एक अनुपम कृति मानते है। सम्भवत किसी देश की नारी को इतने अधिकार इतने प्राचीन काल मे नही मिले जितने जापानी नारी को उपलब्ध थे। वह शि क्षा और आजादी की अधिकारिणी तो थी ही,साहित्य-सृजन की भी उसमे योग्यता थी और अक्सर उसने शासन के कार्य मे योग भी दिया।

जापानी जनता स्वभाव से ही कलाप्रिय है। जीवन के प्रति उसका आकर्षण ही उसी माध्यम से होता है। रसप्रिय होने के कारण उनके सामाजिक जीवन मे भी कुछ आचरण का ढीलापन है। जो भी हो, जापानी जाति सदा कला की उपासिका रही है। यह उसके इतिहास की प्रगति से प्रकट है। इसी कारण उसने अपनी लिपि अत्यन्त सुन्दर बना ली। लिखावट तो एक धार्मिक क्रिया बन गई। स्वय पद्य ने वह शक्ति धारण कर ली कि उसका उपयोग किसी स्थिति अथवा भाव के प्रकाशन मे हो सकता था।

मुरासाकी शिकिबू ने अपना 'गेजी मोनोगातारी' ग्यारहवी सदी मे कभी लिखा। यह कृति उपन्यास है जिसमे राजकुमार गेजी, उसके पुत्र और पौत्र का जीवन चित्रित हुआ है। काना शैली मे लिखी यह रचना जापानी भाषा का पहला उपन्यास है। साथ ही यह ससार का पहला मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी है जो यूरोपीय तत्सम उपन्यासो के सदियो पहले लिखा गया। उसकी शैली कुछ अलकार-बोझिल जरूर है परन्तु मुरासाकी अपने भावो को बडी खूबी और सरलता से व्यक्त करती है। उसकी शैली मे प्रवाह है और उसका वर्णन हृदयग्राही है। हेइयन युग के जापानी दरबार का चित्र उसने इस सचाई से खीचा है कि विगत भूत एक बार फिर सजीव हो उठा है। मुरासाकी ने जमाने की यौन आजादी तक को नही छिपाया है। इस कृति ने स्वय प्राचीन कृतियो की विशेषताए अगीकृत की और अपना प्रभाव उत्तरकालीन रचनाओ पर गहरा डाला।

उस काल की अनेक अन्य रचनाओ मे प्रधान 'ताकेतोरी मोनोगातारी'(बसफोड की कहानी)थी। उसे भी कुछ लोगो ने जापान का पहला उपन्यास कहा है। इसी प्रकार की

---

१. Murasaki Shikibu

एक दूसरी कृति ईसे की कहानी (ईसे मोनोगातारी) है। परन्तु वस्तुत. ये अप्सरालोक की कहानिया मात्र है।

मुरासाकी की समकालीना एक और प्रतिभाशालिनी नारी थी सेई शोनागोन[१], जिसने दसवी सदी के उत्तरार्द्ध मे अपना 'माकरा नो सोशी' (तकिया-स्केच) लिखा। इस प्रकार के स्केच को जापानी 'जुइहित्सु' कहते थे। उसमे शोनागोन ने दरबारी जीवन का प्रत्यक्ष चित्र खीचा। 'तकिया-स्केच' उसकी इस कृति को इसलिए कहते थे कि लेखिका अपनी हस्तलिपि तकिए के नीचे रखती थी और विचार सोने के पहले या बाद मे लिख लिया करती थी।

प्राचीन और समकालीन (अर्वाचीन) कविताओ का सग्रह 'कोकिशू' (९२२) के लगभग प्रस्तुत हुआ। उसे तत्कालीन चार महान् कवियो—कि नो त्सुरायुकी[२], कि नो तोमोनारी[३], ओचीकोची नो मित्सूने[४] और मीबू नो तादामीने[५]—ने सगृहीत किया। सग्रहकर्ताओ मे प्रधान कि नो त्सुरायुकी था। 'मान्योशू' के बाद उस प्रकार के सग्रहो मे यह सबसे उत्तम था। उसमे बाका (छोटी कविताए) शैली की प्राय १००० कविताए है। लम्बी कविताए उसमे कुल पाच हैं। उसमे पिछली दो सदियो की कविताए सगृहीत हुईं।

त्सुरायुकी ही 'तोसा-निक्की' (तोसा-डायरी) (९३५) का भी रचयिता था, वह तोसा का शासक था और यह रचना उसने क्योटो लौटते समय राह मे की थी। उस काल के पर्यटको का जीवन उस कृति मे सरल विनोदप्रिय शैली मे अकित हुआ है। सम्राट् के दरबार मे स्वाभाविक ही विविध रस्म-रिवाजो का प्रचलन था। उसकी एक अपनी आचार-व्यवस्था थी, अपने कानून-कायदे थे। वे एकत्र कर 'ऐनिशिया' (एगी की व्यवस्था, ९०५–२७) नाम से सगृहीत हुए। उसमे दरबार, शासन, उसके विविध विभागो के नियमो-उपनियमो का सग्रह हुआ। ग्रन्थ चीनी मे था।

: ४ :

कामाकुरा युग

(११९२-१३३२)

गृहयुद्ध मे मीनामोतो विजयी हुए। उनके नेता मीनामोत नो योरितोमो[६] ने अपनी राजधानी क्योटो से प्राय ३०० मील पूरब कामाकुरा मे स्थापित की। अगले डेढ सौ वर्ष उसीके नाम पर कामाकुरा-युग कहलाए। उसी युग-देश मे सैनिको आदि के रूप मे मध्यवर्ग का उदय हुआ। साथ ही सामन्तवादी परपरा का जो विकास हुआ तो सम्राट्

---

१ Sei Shonagon, २ Ki no Tsurayuki, ३ Ki no Tomonari, ४ Ochikochi no Mitsune, ५ Mibu no Tadamine, ६ Minamoto no Yoritomo

का वैभव और दरबार के अमीरो का दबदबा कम हो चला। सैनिक-सत्ता की अब प्रतिष्ठा हुई। साम्राज्य का दरबार अब भी क्योटो मे लगता था। परतु स्थिति निरन्तर नाजुक होती जा रही थी, शक्ति के साथ ही उत्साह क्षीरण होता जा रहा था और मन का विषाद बढता जा रहा था। दरबारी कृतियो पर उस विषाद की छाया पडी और काव्यधारा मे करुरणा उमड पडी।

परन्तु कामाकुरा मे वैभव लहरे ले रहा था, मन्दिर बन रहे थे, धार्मिक सम्प्रदाय खडे हो रहे थे, धार्मिक व्याख्यान और रचनाए प्रस्तुत होने लगी। चीनी बौद्ध सम्प्रदाय 'जैन दर्शन' के रूप मे जापानी सेनानायको और उनके अनुयायियो को बहुत प्रिय हो चला। फिर धीरे-धीरे यही सम्प्रदाय जापान मे सास्कृतिक शक्ति बन गया और साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला सभी क्षेत्रो मे मूलभूत प्रेरणा बना। अभिव्यक्ति के सारे साधन उसी आधार से मुखरित हुए।

अब तक सस्कृत समाज का जीवन स्वच्छन्द रोमाटिक और दार्शनिक था। फिर वही आन्तर्निविष्ट, यथार्थवादी और सीमाबद्ध हो गया। कामाकुरा युग मे कई प्रकार की रचनाए हुई—प्रबन्ध काव्य, ताका-कविताए, जुनहित्सु, बौद्ध निबन्ध, सूक्त। देशी-विदेशी समन्वय से उसी काल एक राष्ट्रीय लिपिबद्ध भाषा का भी उदय हुआ जिससे साहित्य के विकास मे आसानी हुई। प्राचीन कृतियो और 'क्लासिक' पढने की भी लोगो मे प्रवृत्ति हुई। काव्य-सग्रहो की अनेक नकल प्रस्तुत हुई। उत्तरकालीन विद्वानो को अपनी खोज मे इनसे बडी सहायता मिली। 'क्लासिक' मे लोगो की रुचि ने 'शिन्ती' धर्म के प्रति आसक्ति उत्पन्न की, फिर राष्ट्रीय राज्य की चेतना हुई। कामाकुरा साहित्य मूलत अनुकरणशील और नीतिपरक था, व्यक्तित्वहीन मौलिकता रहित। वातावरण विषादपूर्ण था। विषाद का कारण अन्य घटनाओ के अतिरिक्त बौद्ध धर्म की करुण पुकार थी। उसके अनुसार यह युग भी विषाद का था।

कामाकुरा युग की दो प्रसिद्ध कृतिया 'हेइके मोनोगातारी' और 'गेनपेई सेइसुइकी' (गेजी और हेइके का उत्थान-पतन) है। दोनों सभवत समान आधार से उठी। पहले के निर्माण-काल अथवा रचयिता का पता नही। रचना युद्ध सबधी है, जापानी साहित्य मे असाधारण। इसका गायन 'बीवा' के तारो के स्वर के साथ होता था। उस काल की अन्य कृतियो मे बौद्ध नैराश्य की धारा प्रवाहित है। उस युग की अन्य महत्वपूर्ण कहानिया निम्नलिखित थी—हामुरो तोकीनागा[1] की 'हेइजी मोनोगातारी' और 'होगेन मोनोगातारी' तथा अज्ञातनामा रचयिता की 'मीजू कागामी' (जल-दर्पण)। ताका कविताओ की रचना क्योटो मे जारी रही यद्यपि उनमे मौलिकता का अभाव पर्याप्त मात्रा

१. Hamuro Tokinaga

मे था। 'ह्यकुनिन इस्शू' (सौ कवियो की एक-एक कविताओ का सग्रह) क्योटो का प्रतिनिधि सग्रह है। इसे फूजीवारा नो सदाइए[1] नामा एक पडित कवि ने १२३५ के लगभग प्रस्तुत किया।

उस काल की करुण चेतना का नैराश्यपूर्ण चित्र 'होजीकी' (दस वर्ग फुट झोपडी के नोट) मे मिलता है। उसे कामो नो चोमेई[2] ने १२१२ मे लिखा था। यह भी वैयक्तिक अनुभूति का निबन्ध स्केच है जिसमे उस युद्धकालीन जगत मे बौद्धधर्म का आकर्षण निरूपित हुआ है। कामो की अन्य रचनाए 'मुक्योशो' (अज्ञात चयन) और शीकी मोनोगातारी (चार ऋतुओ की कहानी)। 'तन्नीशो' सम्भवत यूइन-बो[3] की कृति है। यह बौद्धधर्म के शिन सम्प्रदाय के प्रवर्तक शिनरन शोनिन[4] का शिष्य था। इस ग्रन्थ मे दार्शनिक विवेचन और शका-समाधान है। १२६० मे बौद्ध निचिरेन सप्रदाय के प्रतिष्ठाता निचिरेन शोनिन[5] ने 'रिस्शो अकोक रोन' (राष्ट्रीय रक्षा) की रचना की। उसमे होजनो सरकार की आलोचना और धार्मिक अनुराग की प्रगसा है।

: ५ :

नाम्बोकुचो और मुरोमाची युग

(१३३२-१६०३)

१३३२ से १३९२ तक का काल नाम्बोकुचो युग कहलाता था। इस बीच दो सम्राट् कुलो ने जापान पर शासन किया। साठ वर्ष बाद फिर क्योटो मे एकात साम्राज्य की स्थापना हुई और अगला युग मुरोमाची कहलाया। गृहयुद्धो का अभाग्य काफी अरसे तक देश को घेरे रहा। किसानो की स्थिति दिन-ब-दिन खराव होती गई, उनके विद्रोह भी चलते रहे। मुरोमाची युग तो इसी कारण जापान का अन्धकार युग कहलाता है।

नाम्बोकुचो युग की प्राय: आधी सदी कला और साहित्य की दृष्टि से काफी सम्पन्न हुई। चित्रकला तो अपने चरम विकास को पहुच गई। नो (लिरिक ड्रामा) अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ। देश की अराजक दशा का प्रतिबिम्ब समसामयिक साहित्य पर पडा। अधकार युग होते हुए भी जिस सामत परपरा का जापान मे विकास हुआ, उससे सास्कृतिक चेतना केवल सम्राट्-दरवार मे केन्द्रित न रहकर देश के अनेक स्थानो मे फैली, अनेक केन्द्र उठ खडे हुए। वस्तुत उसी सघर्ष का परिणाम था, पुराने रेकॅर्ड, ख्याते आदि पटे जाने लगे और उनपर भाष्य लिखे जाने लगे।

---

१ Fujiwara no Sadaie ; २ Kamo no Chomei ; (११५४-१२१६)
३ Yuien-Bo ; ४ Shinran Shonin (११७३-१२६२) ; ५ Nichiren Shonin

किताबाताके चिकाफुसा[1] ने 'जिन्नो शोता-की' (दैवी राजाओ के सही उत्तराधिकार का इतिहास), गो-मुराकामी[2] के शासन-काल मे लिखा। उसने दक्षिणी साम्राज्य के पक्ष का समर्थन किया। साथ ही उसने आरम्भ से लेकर १२८८ तक जापानी इतिहास पर राजनीतिक विचार प्रकट किए। यह मूलत राष्ट्रीय ग्रथ है, जिसमे ग्रथकार ने सारे विदेशी प्रभावो से जापान की सास्कृतिक चेतना को अपने मूल्याकन से पृथक् रखने का प्रयत्न किया है। स्वाभाविक ही इसका साहित्यिक महत्व इतना नही, जितना ऐतिहासिक है। अक्षरकालीन लेखको को इस ग्रन्थ ने बडा प्रभावित किया।

'ताइहेइकी' (शाति का रेकॉर्ड लगभग १३६९) कोजिमा[3]—एक पुरोहित की रचना बताई जाती है। उसमे ११९२ और १३६८ के बीच की देश की अराजक स्थिति और सामन्ती सरकारो के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। इसकी भाषा बडी सरल और चीनी मिश्रित है। वस्तुत इसीसे आधुनिक साहित्यिक शैली का जापान मे आरम्भ होता है। पुरोहित केको[4] ने नाम्बोकुचो युग मे 'त्सरेजरे-गुस्सा' की रचना की। इसमे जीवन के विविध २४० विषयो पर विचार एकत्र किए गए है। विचार एक ही व्यक्ति के है। यह भी जूईहित्सू परम्परा की ही कृति है, इसे अप्रयास पढा जा सकता है।

लिरिकल ड्रामा को जापानी मे 'नो' कहते थे। उसका विशेष विकास १४वी सदी मे हुआ। प्राचीन ड्रामा का धर्म से अविच्छिन्न सबध था। उसमे अधिकतर नृत्यो का सगम होता था। कागुरा, बुगाक, देगाक् और सारूगाकू नाम के नृत्य उस ड्रामा के विशिष्ट अग थे। 'नो' किस्म का ड्रामा उनके समन्वय से प्रस्तुत हुआ। उसमे अब आत्मगत भाव-प्रकाशन और डायलागो का भी समावेश हुआ। पहले यह शिन्तो त्योहारो पर ही खेला जाता था, परन्तु धीरे-धीरे उसने लौकिक रूप भी धारण किया। कानामी[5] और सियाम[6] पिता-पुत्र ने उसे पूर्ण बनाया। ड्रामा के चार मूल सिद्धात कान्जे, कोन्याकू, कोगो और होशो थे। ये 'नो' ड्रामा सम्बन्धी विरोधी विचार प्रस्तुत करते है; विशेषत उसके साहित्यिक मूल्याकन पर।

नो के गीतो को 'यौक्योकू' कहते थे। वे गद्य मिश्रित पद्य है। गद्य भाग मे कामाकुरा की दरबारी भाषा मे प्रशस्तिवादी शब्दावली का जो उपयोग हुआ हे, उससे शैली बोझिल हो गई है। पद्य भाग मे प्राचीन सुभाषित-सग्रहो की ताका कविताए अगीकृत कर ली गई है। नौ प्रकार के नाटको को खेलते समय चेहरो का इस्तेमाल किया जाता था। १३, प्राय १४ विविध प्रकार के चेहरे रगमच पर प्रदर्शित होते थे। ये विभिन्न भावो के प्रतीक माने जाते

---

१. Kitabatake Chikafusa (१२९३-१३५४); २ Go-Murakami (१३२८-६८); ३. Kojima, ४ Priest Kenko, ५ Kan'ami (१३३३-८४), ६. Seami (१३६३-१४४३)

थे । इस प्रकार के नाटको के कुछ नाम ये है

ताकासागो, ओइमात्सू, नानिवा, दोजोजी और तोसेन ।

'नो' ड्रामा खेलते समय बीच-बीच मे विनोद के लिए फार्स होता था। उसे 'क्योगेन' कहते थे । हलके-फुलके वजन पर बोलचाल की भाषा अथवा सर्वथा जन-बोली मे ये प्रस्तुत किए जाते थे । इनमे कोरस आदि की व्यवस्था नही थी। पिछले जापानी ड्रामा का विकास 'नो' और 'क्योगेन' के समन्वय से हुआ ।

: ६ :

इदो युग

(१६०३-१८६८)

सोलहवी सदी के अन्त मे गृहयुद्धो का अन्त हुआ और शोगुल राजकुल इदो (टोकियो) मे प्रतिष्ठित हुआ । यद्यपि क्योटो मे सम्राट् का दरबार किसी न किसी रूप मे बना रहा । १६वी सदी के मध्य जापान का सबध पश्चिम से हुआ । पुर्तगाली, डच और अग्रेज सौदागर पादरियो के साथ-साथ वहा जा पहुचे । ईसाई धर्म का प्रचार हो चला । परन्तु सत्रहवी सदी के मध्य तक फिर जापान का सबध उधर से टूट गया क्योकि नई नीति ने विदेशियो को देश से सर्वथा बाहर किया था । ईसाई धर्म पर भी गहरे आघात हुए । तोकूगावा सामन्तवादिता १९वी सदी के मध्य तक देश को अपने फौलादी शिकजे से जकडे रही । उसी बीच सौदागरो का एक नया वर्ग उठ खडा हुआ—जिसने राष्ट्र का बाज़ार अपने हाथ मे कर लिया । अपेक्षाकृत शाति के कारण इदो काल मे सस्कृति का विकास हुआ और इदो साहित्य का केन्द्र बन गया ।

इदो काल मे शिक्षा का पर्याप्त प्रचार हुआ । पुरोहित चीनी और जापानी ग्रथो की नकल के लिए नियुक्त हुए और शिक्षा के धनी प्रेमियो ने बहुत-से स्कूल खोले । अब जापानी इतिहास मे पहली बार सैनिक के गुणो मे साहित्यिक ज्ञान भी गिना जाने लगा । मुद्रण का आरम्भ नारा काल मे ही हो चुका था, परन्तु उसका भी विशेष व्यवहार इसी काल मे हुआ जिससे साहित्य के प्रचार मे विशेष सहायता मिली । इदो साहित्यिक विषयो की विविधता मे पिछले युगो की अपेक्षा अधिक समृद्ध हो गया । जापानी भाषा मे फिर एक बार मूलभूत परिवर्तन हुआ । अनेक सास्कृतिक प्रवृत्तियो की आवश्यकता के लिए चीनी शब्द बडी सख्या मे ले लिए गए, जिससे जापानी भाषा की लाक्षणिक निधि बढी । व्याकरण की व्यवस्था और सरल कर ली गई और साहित्यिक शैलियो का अभूतपूर्व गठन हुआ ।

इदो काल मे चीनी ज्ञान के प्रति भी लोगो का विशेष आकर्षण हुआ । उसने धीरे-धीरे आन्दोलन का रूप धारण कर लिया । उस आन्दोलन का प्रारम्भ करनेवाला फूजीवारा

सेईका[1] था जिसने कन्फ्यूशस सबधी नई चेतना का देश मे प्रचार किया। उसके ग्रन्थो ने इदो के साहित्यिक और राजनीतिक आदर्श निश्चित कर दिए। कामाकुरा काल से ही जनता के ऊपर एक कठोर आचार-व्यवस्था लग चली थी। उसकी परपरा इदो काल तक अपनी चरम पूर्णता को प्राप्त हो गई और स्वाभाविक तथा कृत्रिम जीवन के पारस्परिक सघर्ष शुरू हो गए। इसी सघर्ष ने अनेक करुण नाटक, यौन उपन्यास और अन्य विविध साहित्यिक रचनाए प्रस्तुत की, जो इतिहास, कल्पना, हास्य और भावुकता का अद्भुत मिश्रण थी। इदो काल का सबसे महान् चीनी ज्ञान का विद्वान् आराई हाकुसेकी[2] था। उसने १७वी सदी के सामन्तो पर एक बृहद् ग्रन्थ 'हाकान्यू' (१७०१) रचा। उसमे उसने उस सामन्ती युग का खासा भण्डाफोड किया। सेईका के शिष्य हायाशी राजान[3] ने अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रथ लिखे और चीनी कविताए रची। नाकाइ तोजू[4] भी उस काल मे अच्छा पडित हुआ। तब का एक प्रकाण्ड पडित कैबारा एक्किन[5] था, जिसने प्राय १०० ग्रन्थ लिखे। किनोशिता जुनान[6] उस काल के 'चू ह् सी' परपरा के विद्वानो मे सबसे महान् था और उसके पास सबसे अधिक सख्या मे विद्यार्थी थे। उस काल के अन्य चीनी ज्ञान के पडित कुमाज़ावा बान्ज़ान,[7] यामागा सोको,[8] इतो जिन्साई[9] और ओग्यू सोराई[10] थे। चीनी ज्ञान का आदोलन निश्चय ही दीर्घकालीन नही हो सकता था और शीघ्र ही उसके विरुद्ध एक आदोलन उठ खडा हुआ। उस आदोलन का प्रधान उद्देश्य जापानी साहित्य का अध्ययन था।

इस नये जापानी दृष्टिकोण का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ जापान का इतिहास 'दाई-निहोन-शी' था जिसे तोकूगावा मित्सुकुनी[11] ने शुरू किया था। १६५७ मे प्रारम्भ होकर यह ग्रथ उसके जीवन-काल मे ही प्राय. समाप्त हो गया था। परतु उसके अतिम भाग मेइजी-काल (१८६८-१९१२) मे लिखे गए। ग्रन्थ प्राचीनतम काल्पनिक जिन्मू के शासनकाल से १४१३ मे सम्राट गो-कोमात्सू के राज्यकाल तक है। भाषा उसकी चीनी है। इधर के जापानी इतिहास मे इतिहासकार, कवि और भाषाशास्त्री मोतूरी नोरिनागा[12] एक महान् व्यक्ति हो गया है। उसका सबसे महत्वपूर्ण ग्रथ 'कोजिकी देन' (कोजिकी का भाष्य) है जो ४९ खडो मे १७९८ मे समाप्त हुआ। उसमे चीनी आचार और दर्शन के विपरीत प्रतिक्रिया स्पष्टत प्रकट की गई है। उस परम्परा के अन्य विद्वानो मे कामो नो माबूची[13],

---

१ Fujiwara Seika (१५६१-१६१९), २. Arai Hakuseki (१६५७-१७२५), ३ Hayashi Razan (१५८३-१६५७) ४. Nakae Toju (१६०८-१६४८), ५ Kaibara Ekken (१६३०-१७१४), ६. Kinoshita Jun'an (१६२२-९८), ७ Kumazawa Banzan, ८ Yamaga Soko, ९ Ito Jinsai, १०. Ogyu Sorai, ११. Tokugawa Mitsukuni (१६२८-१७००); १२ Motoori Norinaga (१७३०-१८०१), १३ Kamo no Mabuchi (१६९७-१७६९)

हिराता आत्सूताने[1] और 'निहोन गाइशी' का रचयिता राय सान्यो[2] थे।

चीनी पाण्डित्य और विचारधारा के विपरीत इस प्रतिक्रिया ने एक बडे राष्ट्रीय सास्कृतिक आन्दोलन का रूप धारण किया, जिसका एक परिणाम १८६८ मे मेइजी कुल की प्रतिष्ठा हुई। उस काल की साहित्यिक रचनाओ मे विशेष विकास 'काबुकी' ऐतिहासिक ड्रामा का हुआ। उसने अपना रूप केड्चो-युग (१५९६-१६१४) मे पाया। वह जापान का लोकप्रिय ड्रामा था। मजे की बात तो उस सबन्ध मे यह है कि यद्यपि उसके सारे पात्र पुरुष होते है, उस प्रकार के नाटको का आरम्भ एक नारी ने किया। वह शिन्तो मन्दिर की नर्तकी ओकूनी[3] थी जिसने १५९६ मे क्योटो मे उसका पहला अभिनय किया। उस ड्रामा का विकास तीन ऐतिहासिक कालो मे हुआ। (१) ओन्ना काबुकी (नारी-रगमच), (२) वाकाशू काबुकी (तरुण-रगमच) और (३) यारो काबुकी (पुरुष-रगमच)। नारी-रगमच काल मे, जैसा नाम से ही प्रकट है, केवल नारिया ही अभिनय करती थी। रगमच का प्रबन्ध तब नितात साधारण था। उसके सगीत, अभिनय आदि सभी कुछ साधारण थे। शोगुनी शासन ने अभिनेत्रियो का भावुक जीवन सार्वजनिक सदाचार के विपरीत समझ एक घोषणा द्वारा नारी-रगमच का १६२९ मे अत कर दिया। इसका परिणाम एक तो यह हुआ कि अभिनेत्रिया रगमच से प्राय सर्वथा अलग कर दी गईं, और दूसरा यह कि नारी पात्र का पार्ट अल्पायु तरुण करने लगे। इस नई योजना को 'अन्नागाता' कहते थे। तरुण-रगमच जो १६१७ से ही चला आ रहा था, अब पृष्ठभूमि से सामने आ गया और जनता का प्रिय पात्र बना। सुन्दर अल्पायु युवक उसमे नारी का पार्ट अदा करते थे। १६५२ मे एक दूसरी शोगुनी घोषणा से यह रगमच भी बन्द कर दिया गया। कारण यह बताया गया कि उसके अभिनेताओ का नारी दर्शको और सरक्षिकाओ से अनुचित सबध होने लगा है। इसके बाद पुरुष-रगमच का आरम्भ हुआ, जिसमे नारी पार्ट का ही लोप कर दिया गया। धीरे-धीरे इस पिछले रग-मच की परिस्थितियो मे काफी परिवर्तन हुए और यद्यपि तोकुगावा शासन के बाद नाटकीय रगमच का जापान मे पर्याप्त ह्रास हो चला।

साहित्य की शुद्धवादी दृष्टि से काबुकी ड्रामा को विशेष महत्व नही दिया जा सकता यद्यपि उसमे कुछ अपवाद भी थे। साहित्यिक गुणो की इस कमी के प्रभाव का कारण यह था कि उन नाटको मे प्रदर्शन को जितना महत्व दिया जाता था, उतना विषय तथा प्लाट को नही। धीरे-धीरे जब उस परम्परा का और विकास हुआ तो यथार्थवाद के स्थान पर प्रतीकवाद प्रतिष्ठित हो गया जिसमे मुद्राओ का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा। इस प्रकार के नाटको की उत्तरोत्तर रचना हुई।

---

१ Hırata Atsutane (१७७६-१८४३), २ Raı Sanyo (१७८०-१८३२),
३. Okunı

इदो काल का सबसे बडा नाटककार चिकामात्सू मोन्जाएमोन[१] था। उसने ऐतिहासिक और गार्हस्थ्य दो प्रकार के पाच-पाच अको वाले बडे-बडे नाटक लिखे। मनोरजन को उसने नाटकीयता की रीढ मानी। उसके नाटको मे प्रधान थे—'कोक्कुसेन्या कास्सेन' (कोकुसेन्या के युद्ध), 'सोनेजाकी शिन्जू' (सोनेजाकी का दोहरा आत्मघात), 'मेइदो नो हिक्याकू' और 'हाकाता कोजोरो नामोमाकूरा'। तब के अन्य जाने हुए नाटककार ताकेदा इजुमो[२], नामिकी शोजो[३] और कावाताके मोकुआमी[४] थे।

इदो युग की काव्यधारा मे ताका से भी छोटी कविताओ का विकास हुआ। उनका नाम 'हाइकू' अथवा 'होक्कू' था। पिछले ही काल मे उस काव्य रूप का प्रारम्भ हो गया था और धीरे-धीरे उसका विकास होने लगा था। इनमे ऋतु की ओर कवि का सकेत करना आवश्यक था। वर्णन वस्तुवादी था परन्तु कवि से आशा की जाती थी कि वह अपने चित्रो द्वारा पाठको के मन मे आत्मानुभूति के समानान्तर चित्र उत्पन्न कर दे। अन्य बातो मे ये अधिकतर 'ताका' के अनुरूप थी। इन कविताओ मे प्रकृति का वर्णन खासा रहता था। इनमे और ताका कविताओ मे जापानी-साहित्य का सौदर्य निखर आया। हाइकू कविताओ को विशेषकर मात्सूओबाशो[५] और उसके शिष्यो ने अपने प्रचार द्वारा लोकप्रिय बनाया। उस परपरा के अन्य कवि इनोमोतो कीकाकू[६], कागा नो चिओ[७], तानीगुची बुसोन[८], कोबायाशी इस्सा[९] थे।

इदो युग मे पहली बार जनता का दृष्टिकोण उपस्थित करने वाले उपन्यासकार हुए। ईबारा सैकाकू[१०] ने समकालिक जीवन सबधी उपन्यासो का आरम्भ किया। उसके उपन्यासो मे यौन आनन्द का चित्रण नितान्त अमर्यादित मात्रा मे हुआ। इसीसे उसकी कई रचनाए सेसर के क्रोध का भी शिकार हुई, यद्यपि उसके यथार्थवाद मे इधर फिर बडी रुचि दिखाई जाने लगी है। उसकी कुछ कृतियो के नाम है 'फूदोकोरो ना सुजूरो', 'कोशोकू इचिदाई ओतोको' (एक कामुक का जीवन), 'कोशोकू इचिदाई ओन्ना' (एक कामुकी का जीवन), 'कोशोकू गोनिन ओन्ना' (कामुकी नारियो की पाच कहानिया)।

जिपेन्शा इक्कू[११] ने पर्यटन सबंधी हास्यपरक उपन्यास 'हिजा कुरीगे' लिखा जो जापानी साहित्य मे बहुत ऊचा स्थान रखता है। जन-जीवन का यथार्थवादी चित्रण शिकितेई सान्बा[१२] की कृतियो मे हुआ है। 'उकियो बूरो' (ससार का स्नानगृह), 'उकियो देको' (ससार

---

१ Chikamatsu Monzaemon (१६५३-१७२४), २ Takeda Izumo (१६९१-१७५६), ३. Namiki Shozo (१६३०-९३), ४ Kawatake Mokuami (१८१६-९३), ५. Matsuo Basho (१६४४-१६९४), ६ Enomoto Kikaku (१६६१-१७०७); ७ Kaga no Chiyo (१७०३-७५), ८ Taniguchi Buson (१७१६-८३), ९. Kobayashi Issa (१७६३-१८२८), १०. Ibara Saikaku (१६४२-९३); ११ Jippensha Ikku (१७६६-१८३१), १२. Shikitei Sanba (१७७५-१८२२)

की नाई की दूकान), 'शिजहानी कसे' (४८ आदतें), और 'कोकोन हियाकुनिन बाका' (प्राचीन और अर्वाचीन १०० मूर्ख) इसी प्रकार की उसकी यथार्थवादी कृतिया है। उस काल का एक प्रकाण्ड लेखक क्योकुतेई बाकिन[१] था जिसने चीनी परम्परा के रोमाटिक उपन्यास लिखे। उनमे से कुछ निम्नलिखित है

'यूमीबारा जुकी' (नया चाद), 'सेइयू की' (पश्चिम की यात्रा), 'सातोमी हाकेन्देन' (आठ कुत्तो की कहानी) और 'सुइको देन'। अन्तिम कृति चीनी 'शुई हू चुआन' का अनुवाद था।

: ७ :

वर्तमान युग

(१८६८-१९४१)

वर्तमान काल के वस्तुत दो भाग हैं, एक १८६८ से १९१२ तक मेइजी युग और दूसरा १९१२ से १९४१ तक का ताइशो-शोवा युग।

१८६८ मे तोकुगावा शोगुन काल के बाद देश की राजनीतिक व्यवस्था फिर से हुई। जब राजधानी क्योटो से हटाकर इदो मे स्थापित की गई। बाद मे इदो का नाम टोकियो पडा। सम्राट् फिर से अभिषिक्त हुआ। व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र मे एक नया प्रगतिशील युग आया। विज्ञान, राष्ट्रीयता और मानवतावादी सिद्धातो का प्रचार हुआ। पश्चिम ने इस बार जापान पर गहरा प्रभाव डाला। साहित्यिक दृष्टिकोण से इदो काल की परम्परा कुछ हद तक बनी रही। उसी परम्परा मे कानाजावा रोबुन[२] ने १५ खडो मे अपना ग्रन्थ 'सेइयो हिजाकुरीगे' लिखा।

इन दिनो पश्चिमी भाषाओ का अध्ययन शुरू हुआ और उनके ग्रथो के अनुवाद प्रभूत मात्रा मे प्रस्तुत हुए। राजनीति के क्षेत्र मे इस दृष्टिकोण का और अधिक विकास हुआ और पश्चिमी 'आइडियोलॉजी' के अनुकूल ही शासन की नई व्यवस्था सोची जाने लगी। रूसो[३], वोल्तेयर[४], मोन्तेस्क[५] और मिल[६] की रचनाओ ने जापानी पाठको पर गहरा प्रभाव डाला। जनसाधारण के लिए फिर राजनीतिक उपन्यासो की रचना शुरू हुई। यानो फूमिओ[७] ने १८८३ मे अपना राजनीतिक उपन्यास 'केइकोकू विदान' लिखा। फुकुज़ावा युकीची[८] ने भी स्वतन्त्र रचनाओ और विदेशी ग्रन्थरत्नो के अनुवाद से जापानी भाषा का भडार भरा।

---

१. Kyokutei Bakin (१७६७-१८४८), २ Kanazawa Robun (१८२९-९४); ३ Rousseau, ४ Voltaire, ५ Montesquieu; ६ Mill, ७ Yano Fumio (१८५०-१९३१); ८. Fukuzawa Yukichi (१८३४-१९०१)

१८८५ से राष्ट्रीय चेतना ने जोर पकडा और पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध जोरदार प्रतिक्रिया हुई। प्राचीन साहित्य और कला विशेष आदर के पात्र बने। समीक्षा शास्त्र का भी उदय हुआ। त्सूबूची शोयो[1] ने 'शोसेत्सू शिन्जुई' लिखकर उपन्यास के तत्व पर प्रकाश डाला। १८८६ का यह प्रकाशन मेइजी-साहित्य के इतिहास मे बडे महत्व का था। उसने साहित्य और कला को अपने ही स्तर पर अपने ही लिए विशिष्ट माना। उसने कला को आचार के बन्धन से नितान्त मुक्त कर दिया। उस दिशा मे यह दृष्टिकोण जापान के लिए नया था और उसका जापानी संस्कृति पर गहरा प्रभाव पडा। त्सूबूची ने उपन्यास और नाटक दोनो लिखे। नाटक उसके काफी प्रसिद्ध हुए। उनमे प्रधान 'किरीहितोहा', 'होतोतोगीसू कोजो राकूगेत्सू' (उषाकाल का अधकार) और 'माकिनोकाता' (महिला माकी) है। उसने काबूकी को सर्वथा काल्पनिक और नये युग के अनुपयुक्त कह उसपर कठोर आघात किया और उसके स्थान पर ऐतिहासिक नाटको को प्रतिष्ठित किया। उसने चरित्र को विशेष महत्व दिया। शेक्सपियर का उसपर काफी प्रभाव पडा था। जापानी रगमच उसके सहयोग से बदल चला।

अन्य यथार्थवादी साहित्यकारो मे अग्रणी फूताबातेई शिमेई[2], यामादा बिम्यो[3] और ओजाकी कोयो[4] थे। इनकी कृतियो ने बोलचाल की भाषा को साहित्य मे विशेष महत्व दिया।

मेइजी युग की सबसे महान् लेखिका हिगूची इचियो[5] थी। उसका उपन्यास 'ताके-कुरावे' काफी प्रसिद्ध हो गया है। तोकुतोमी रोका[6] ने आत्मकथापरक ग्रन्थ लिखे। उस दिशा मे 'शिजेन तो जिन्सेई' (प्रकृति और मानव) उसकी सुघड कृति थी। उसके उपन्यासो मे सर्वोत्तम 'हतोतोगीसू' है। यथार्थवादी आन्दोलन के विरुद्ध तभी एक आदर्शवादी तथा रोमाटिक प्रतिक्रिया भी हुई। कोदा रोहान[7], आदर्शवाद का प्रमुख व्याख्याता था। उसने 'गोज नो तो' की रचना की। रोमाटिक कृतिकारो मे उल्लेखनीय मोरी ओगाई[8], कितामूरा तोकोकू[9] और इजूमी क्योका[10] है।

मेइजी युग के प्राय अत मे प्रकृतिवाद पराकाष्ठा को पहुच गया और शीघ्र ही उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। इसका एक कारण तो (१८९४-९५) का चीन-जापानी युद्ध था,

---

१ Tsubouchi Shoyo (१८५९-१९३५), २ Futabatei Shimei (१८६४-१९०८); ३ Yamada Bimyo (१८६८-१९१०), ४ Ozaki Koyo (१८६७-१९०३), ५. Higuhi Ichiyo (१८७२-९६); ६ Tokutomi Roka (१८६८-१९२७) ७ Koda Rohan (जन्म १८६७), ८ Mori Ogai (१८६२-१९२२); ९. Kitamura Tokoku (१८६८-९४); १०. Izumi Kyoka (जन्म १८७३)

जिसके परिणामस्वरूप जापानियो ने अपनी परपरागत सामाजिक व्यवस्था और रहने के तरीको मे क्रातिकारी परिवर्तन आवश्यक समझा। दूसरा कारण स्वय यूरोपीय प्रकृतिवाद का प्रभाव था। टॉल्सटॉय[1], इब्सन[2], ज़ोला[3], मोपासा[4] और अन्य प्रकृतिवादी बडी रुचि से पढे जाने लगे और देश मे उनकी-सी कृतियो की माग हुई। यथार्थवादी उपन्यासो की आलोचना काफी सख्त होने लगी। तीसरा कारण नीत्शे[5] के प्रभाव से व्यक्तिवाद का उदय था। प्रकृतिवादियो ने रोमाटिको की 'कला के लिए कला' का आदर्श छोड दिया और वे जीवन की ओर झुके। उनके लिए नर-नारी का पारस्परिक प्रेम सेक्स प्रवृत्ति की अभिव्यजना मात्र था। उनकी कृतियों मे यौन जीवन खुले रूप से चित्रित हुआ। प्रकृतिवादी क्षेत्र मे शिमामुरा होगेत्सु[6] और हासेगावा तिनकेई[7] का योग खूब मिला। दोनो उच्चकोटि के समीक्षक थे। जापान के अन्य प्रकृतिवादी निम्नलिखित थे—कोसुगी तेगाई[8], कुनिकीता दोप्पो,[9] शीमाजाकी तोसोन[10], तायामा काताई[11]। इनमे शीमाजाकी का स्थान अत्यन्त ऊचा है। इस युग मे साहित्य के क्षेत्र मे जितना काम उसने किया उतना किसी और ने नही। उसके प्रधान प्रकृतिवादी उपन्यास 'हाकाई' (धर्मद्रोहिता), 'हारू' (वसन्त) और 'इए' है। 'हाकाई' मे उसने जापान की वर्ग-व्यवस्था पर गहरी चोट की। 'हारू' का तरुणो पर गहरा प्रभाव पडा। शीमाजाकी ने डेढ हज़ार पृष्ठ के दो खडो मे अपना महान् उपन्यास 'योआके माए' (प्रभात के पूर्व—१९३५) लिखा जो जापानी साहित्य मे बहुत ऊचा स्थान रखता है। वह कृति निश्चय ही बडी प्रौढ है। उसमे लेखक का व्यक्तित्व और उसकी कला बहुत ऊचे उठ गए है। साधारण सजीव शैली मे जनता के जीवन का चित्रण हुआ है। यह कृति वस्तुत तत्कालीन जापानी समाज का प्रतिबिम्ब है।

नात्सूमे सोसेकी[12] ने प्रकृतिवाद के विरुद्ध पहली आवाज उठाई। उसने अपने नये आन्दोलन (अवकाश-आन्दोलन) द्वारा लोगो को बताया कि यदि अवकाश का आनन्द वे ले सके तो उनका जीवन सुखी और उज्ज्वल हो सकता है। रुचि और आचार उसके दर्शन के मूल आधार थे। उन्हे उसने अपनी अनेक कृतियो मे प्रदर्शित किया। 'मै बिल्ली हू' और 'बोटचान' उसकी दो कृतिया है जिनका जापान मे बडा आदर हुआ है। आज के अनेक जापानी साहित्यकार नात्सूमे के ऋणी है। प्रथम महासमर के लगभग

---

१. Tolstoy, २. Ibsen, ३ Zola, ४ Maupassant, ५. Nietzsche, ६ Shimamura Hogetsu (१८७१-१९१९); ७ Hasegawa Tenkei (जन्म १८७६), ८ Kosugi Tengai (जन्म १८६५), ९ Kunikita Doppo (१८७१-१९०८); १०. Shimazaki Toson (जन्म १८७२), ११ Tayama Katai (१८७१-१९३०); १२ Natsume Soseki (१८६७-१९१६)

जापान मे धार्मिक साहित्य सहसा लोकप्रिय हो उठा। कागावा तोयोहीको[१] के दो उपन्यास 'मृत्यु के बाद' और 'सूर्य का निशानाबाज'—काफी पढे गए। वे धार्मिक दृष्टि-कोण से ही लिखे गए थे। कुराता मोमोजो[२] उस क्षेत्र का सबसे बडा नाटककार है। 'पुरोहित और उसके चेले' (१९१७) उसकी सुन्दरतम कृति है।

नव रोमाटिक तानिजाकी जुनिचिरो[३] और नागाई काफू[४] ने भी प्रकृतिवाद पर बडी चोटे की और सौंदर्यवाद का एक नया रूप अपनी रचनाओ मे रखा। उस दिशा के अन्य लेखक योशी ईसामू[५] नागाता मिकिहीको[६] और तामूरा तोशीको[७] है। नव रोमाटिको से कही अधिक प्रकृतिवाद को व्याघात नव आदर्शवादियो से पहुचा। इनमे प्रधान मुशाकोजी सानेआत्सू,[८] आरिशीमा ताकेओ[८] और सातोमी तोन[१०] है। मानवतावाद के विशेष निरूपण का भी उदय हुआ। इसके प्रवर्तको ने प्रकृतिवादी यथार्थवाद पर विशेष जोर दिया। किकुची कान,[११] आकुतागावा राइनोसूके[१२] और कूमे मासाओ[१३] इस दृष्टिकोण के है।

किकुची कान ताइशो युग के प्रधान साहित्यिको मे है। उसने लोकप्रियता को साहित्यिक रचनात्मक सफलता का प्रमाण माना है। पहले तो उसने एकाकी लिखे, पीछे उपन्यास। वर्तमान लोकप्रिय शैली के उपन्यासो की नीव वस्तुत. उसीने डाली। वह जापान के सर्वोत्तम साहित्यिक मासिक पत्र 'बुगेई शुजू' का प्रकाशक और सम्पादक है। उसके प्रधान उपन्यास 'शिन्जू फूजिन', 'सान कातेई' और 'शोहाई' है। आकुतागावा ने वर्तमान जापान की सभवत. सर्वोत्तम कहानिया लिखी है। 'राशोमोन' और 'हाना' उसकी इस दिशा की सुन्दरतम कृतिया है।

ताइशो युग के उत्तरार्द्ध मे जनवादी साहित्य का उदय हुआ। जनवादी साहित्य से तात्पर्य सर्वहारा साहित्य से है। इस क्षेत्र के साहित्यिको को अपने सिद्धान्त के प्रचार के कारण जिस अत्याचार और अप्रतिष्ठा का सर्वत्र शिकार होना पडा है, जापानी कृतिकार भी उसके शिकार है। सर्वहारा साहित्य के कुछ नमूने निम्नलिखित है . 'कानीकोसेन' (लेखक, कोवायासी ताकिजी[१४]) 'तेस्सो नो हाना' और 'तोकाई सोक्योकुसेन' (ले०,

---

१ Kagawa Toyohiko (जन्म १८८८), २. Kurata Momozo (जन्म १८९१), ३. Tanizaki Junichiro (जन्म १८८६) ; ४ Nagai Kafu (जन्म १८७९) ; ५. Yoshii Isamu (जन्म १८८६), ६. Nagata Mikihiko (जन्म १८९०), ७. Tamura Toshiko (जन्म १८८४), ८. Mushakoji Saneatsu, ९ Arishima Takeo ; १० Satomi Ton ; ११. Kikuchi Kan ; १२ Akutagawa Ryunosuke ; १३. Kume Masao; १४. Kobayashi Takiji (१९०३-३३)

हयाशी फुसाओ[1]) और 'दोशीभाई' (ले० किशी सान्जी[2])। इस क्षेत्र के कुछ और अग्रणी ताकेदा रिन्तारो,[3] तोकुनागा नाओशी,[4]हायामा योशिकी[5] और माएदाको कोई-चीरो[6] हैं।

उसी काल 'अल्ट्रा' प्रभाववादी प्रवृत्ति का भी विकास हुआ। उसका जापानी नाम 'शिव-काकाकू-हा' है। उसमे टेकनीक अनोखे प्रकार से प्रभाव का विकास करती है। उस दिशा की एक कृति योकोमित्सू रिईची[7] की 'काकई' (यन्त्र) है। मेइजी युग मे ताका परपरा के कवि निम्नलिखित हुए—सम्राट मेइजी[8], सासाकी[9], योसानो[10], वाकायामा[11], इशिकावा[12], कीताहारा[13] और कूजोताकेको[14]। हाइकू परपरा के कवि थे—मासाओका[15], नात्सूमे[16], ताकाहामा[17], ओगिवारा[18], मूराकामी[19], ओनो[20] और शिमादा[21]। यूरोपीय परपरा की कविताए 'शिन्ताईशी' कहलाती है। इस दृष्टिकोण के कवि निम्नलिखित है .

कुनीकीता[22], मासाओका[23], शिमाज़ाकी[24], दोई[25], मिकी[26], किताहारा[27], साइजो[28] और नोगुची[29]।

नाटको के क्षेत्र मे प्रधान कावाताके[30], फ़ुकुची[31], त्सुबूची[32], ओकामोतो[33], यामामोतो[34] और कुराता[35] हुए। 'नो' के अतिरिक्त तीन और प्रकार के नाटक भी जापान में प्रचलित है—'शिन्पा' जिसका आरम्भ मेइजी-युग मे हुआ, सामाजिक जीवन प्रस्तुत करता है। उसी युग के अन्त मे 'शिगेकी' नाट्य-आन्दोलन उठ खडा हुआ जिसने

१ Hayashi Fusao (जन्म १९०६), २ Kishi Sanji (जन्म १८९९), ३ Takeda Rintaro (जन्म १९०४), ४ Tokunaga Naoshi (जन्म १८९९), ५. Hayama Yoshiki (जन्म १८९४), ६ Maedako Koichiro (जन्म १८८८); ७. Yokomitsu Riichi (जन्म १८९८), ८. Emperor Meiji (१८५२-१९१२); ९. Sasaki Nobutsuna (जन्म १८७२); १० Yosano Hiroshi (१८७३-१९३५); ११ Wakayama Bokushi (१८८५-१९२८), १२ Ishikawa Takuboku (१८८६-१९१४); १३ Kitahara Hakushu (जन्म १८८६), १४ Kujo Takeko (१८८७-१९२८); १५. Masaoka Shiki (१८६६-१९०२), १६. Natsume Soseki (१८६७-१९१६); १७. Takahama Kyoshi (जन्म १८७४), १८ Ogiwara Seisensui (जन्म १८८४), १९ Murakami Kijo (जन्म १८७०), २०. Ono Bushi (जन्म १८८८), २१. Shimada Seiho (जन्म १८८२), २२ Kunikita Doppo (१८७१-१९०८), २३ Masaoka Shiki (१८६६-१९०२); २४ Shimazaki Toson (जन्म १८७२); २५. Doi Bansui (जन्म १८७१), २६. Miki Rofu (जन्म १८८९), २७ Kitahara Hakushu (जन्म १८८६), २८ Snijo Yaso (जन्म १८९२), २९ Noguchi Yonejiro (जन्म १८७५), ३० Kawatake Mosuami (१८१६-१८९३), ३१. Fukuchi Ochi (१८४१-१९०६), ३२ Tsubouchi shoyo (१८५९-१९३५); ३३. Okamoto Kido (जन्म १८७३); ३४ Yamamoto Yuzo (जन्म १८८७), ३५ Kurata Momozo (जन्म १८९१)

पश्चिमी ढग के नाटको का जापानी रगमच पर प्रादुर्भाव किया। 'काबुकी' प्रकार के नाटको का उल्लेख पहले किया ही जा चुका है। वह भी आज अपने भाव व आकार मे काफी बदला जा चुका है। फिर भी जापान मे जीवित है और राष्ट्रीयता के योग से जीवित रहेगा।

१९३७ मे चीन के साथ युद्ध छिडने के बाद युद्ध सबधी साहित्य का प्रकाशन अमित मात्रा मे हुआ और युद्धवादी उपन्यास, नाटक तथा कविताए लिखी जाने लगी। दूसरे महा समर के मध्य तक निरन्तर उस साहित्य की आकृति और शक्ति बढती रही। शीघ्र ही जापान की पराजय ने सिद्ध कर दिया कि साम्राज्यवादी साहित्य, जनवाद का विरोधी है। आज के जापानी साहित्यकारो मे काफी कुण्ठा है यद्यपि आशावादी जनहितैषी साहित्य का निर्माण भी सतत गति से वहा, अमरीकी सत्ता के बावजूद, होता जा रहा है।

११. डच साहित्य

डच सस्कृति की परपरा डच साहित्य का आरम्भ अन्धकवि बर्नलेफ[१] से मानती है। परन्तु लिखित अथवा अलिखित किसी प्रकार का उससे सम्पर्क रखने वाला साहित्य आज उपलब्ध नही। इससे डच साहित्य का इतिहास लिखते समय उस आकर्षक प्रसग को हमे छोड ही देना पडता हे।

डच साहित्य का पहला ऐतिहासिक कवि हेनरिक वॉन वेल्देके[२] था जो बारहवी सदी के अन्त मे हुआ। उसने उस मध्यकाल (गोथिक) का आरम्भ किया जो नेदरलैण्ड्स के साहित्यिक इतिहास मे समृद्धतम युग है। मध्यकाल का साहित्य एपिक, लिरिक, नीति-परक, वर्णनात्मक, नाटकीय सभी प्रकार की कृतियो से सम्पन्न है।

'वान डेन बोस राइनार्डे' नेदरलैण्ड्स मे गोथिक साहित्य की चोटी का काव्य माना जाता है। उस काल की कुछ और कृतिया लिरिक 'बटिस', नाटकीय काव्य 'लान्सेलाट वाट डेनेमार्केन' और नाट्य रूपक 'एल्कर्लिक' है। उस काल की लिरिक सम्पदा असीम और विशेष ऋद्ध है। उसमे अलकारो का भी इतना उपयोग होने लगता है कि अगली 'बारोक' परपरा की प्राय· तभी बुनियाद पड जाती है। पन्द्रहवी सदी मे डच साहित्य मे एक प्रकार की अस्पष्टता दिखाई पडने लगी परन्तु अलकार शास्त्रियो के साथ ही उन सुन्दर कवियो का भी प्रादुर्भाव हुआ जो स्वर्णयुग के अग्रदूत बने। १६वी सदी के अन्त मे नेदरलैण्ड्स पृथक् हो गया जिससे उसके साहित्य पर भी राजनीति की ही भाति गहरा प्रभाव पडा। उत्तर और दक्षिण का विभाजन भी उस दिशा मे गहरा अर्थ रखता था। दक्षिण मे 'गोथिक' परपरा का विकास हुआ और उत्तर मे 'बारोक' का और अन्त मे दोनो का सामजस्य और समन्वय रोमाटिक आधार से हुआ। रोमाटिकवाद ने उत्तर और दक्षिण दोनो की 'बारोक' और 'गोथिक' परपराओ को एकत्र कर दिया। पहले तो इसमे कठिनाइया हुई परन्तु धीरे-धीरे भाषा और साहित्य दोनो की एक प्रकार से एकता स्थापित हो गई। नेदरलैण्ड्स 'नीचे की भूमि' का नाम है। नीचे की भूमि से तात्पर्य समुद्र के धरातल के नीचे से है। उस भूमि के दो भाग थे, उत्तर और दक्षिण और दोनो का एकत्र नाम नेदरलैड्स पडा।

गोथिक परपरा मे चार विशिष्ट डच कवि हुए—हूफ्ट[३] गरब्राड एड्रियान्सून ब्रेदेरो[४],

---

१ Bernlef, २ Henric Von Veldeke, ३. P C. Hooft (१५८१-१६४७),
४ Gerbrand Adriaanszoon Bredero (१५८५-१६१८)

जुस्टवान डेन वोन्डेल[1] और कान्स्टेन्टिन हुइगन्स[2] चारो प्राय समकालीन थे। उनमे सबसे महान् वोन्डेल था। यद्यपि उसमे न तो हूफ्ट की-सी लिरिक-प्रतिभा थी और न हुइगेन्स की-सी मेधा। परन्तु उसमे एक बौद्धिक तत्परता थी और निस्सीम आविष्कार-प्रेरणा, और इन दोनो से बढकर असीम कल्पना। उसकी कला नितान्त स्वाभाविक, सर्वथा अकृत्रिम, बिल्कुल सरल और सीधी थी। वह अपने विचारो के लिए देश की बडी से बडी शक्ति से लोहा लेने को तत्पर रहता था। इस रूप मे वह केवल विशिष्ट कवि ही न था बल्कि एक बहुमुखी सबल व्यक्तित्व था जिसकी निर्भीकता और साहस सदेह के परे थे। लगता है उसमे 'गोथिक' और 'बारोक' दोनो एकत्र हो उठे थे। वह अपने सिद्धातो और विचारो का इतना कायल था कि आदर्शों के सबध मे कभी समझौता नही कर सकता था। हूफ्ट और हुइगेन्स, इसके विपरीत, दुनियादार थे और साथ ही असाधारण आकर्षण के केन्द्र थे। वोन्डेल के लिरिक नेदरलैड्स के साहित्य के सुन्दरतम लिरिको मे है। उनका रूप तो सुन्दर है ही, सत्य और मानवीय भावनाओ की गहराई भी उनमे खासी है। चाहे जितना भी पुराना उसका लिरिक साहित्य होता जाए वह कभी उपेक्षित नही हो सकता। साथ ही वह डच साहित्य का पहला गद्य-कलाकार भी है। हुइगेन्स और हूफ्ट दोनो शासक-वर्ग के थे और इनमे पहला तो प्रतिभाशाली कवि और असाधारण बुद्धि का व्यक्ति था।

ब्रेदेरो वोन्डेल के निकट औरो से अधिक था। उसकी शैली स्वाभाविक सद्योजात और सीधी है। वह किसी प्रकार की परपरा को स्वीकार नही करता था और आचारो तक के प्रतिबन्ध उसने न माने यद्यपि जब-तब वह अनुशोचना का शिकार नि सदेह हो जाया करता था। यही कारण है कि उसके गीतो मे दोनो छोर मिलते है—प्रेम-प्रजनित आनद के और साथ ही अत्यत भावुक धर्म-प्रेरणा के। इन चारो कवियो के अतिरिक्त अन्य भी अनेक छोटे-बडे कवि नेदरलैड्स मे उस काल हुए जिनका उल्लेख यहा समीचीन न होगा। केवल एक जैकब कैट्स[3] की ओर सकेत कर देना काफी होगा। कैट्स जनता का कवि था और वह उसमे इतना लोकप्रिय हुआ कि लोग उसे 'पिता कैट्स' कहने लगे थे। १९वी सदी तक 'बाइबल' के साथ-साथ उसकी कविताओ के सग्रह भी लोग पास रखते थे।

जान लुइकेन[4] पिछले युग और १८वी सदी की सधि पर खडा है। वह उच्चकोटि का कवि था। पार्थिव प्रेम की प्रशसा मे उसने तरुणावस्था मे अपने 'जर्मन लिरिक' लिखे। जर्मन रहस्यवादियो के प्रभाव से वह बाद मे विशेष धार्मिक भी हो गया। परिणामस्वरूप उसने डच-साहित्य की उच्चतम और सुन्दरतम कविताए लिखी। उसने अपनी कविताओ के संग्रहो को अपनी ही कला से चित्रित भी किया। उस काल के तीन और कवि उल्लेखनीय

---

१. Joost Van den Vondel (१५८७-१६७९); २ Constantijn Huygens (१५९६-१६८७), ३ Jacob Cats; ४ Jan Luiken (१६४९-१७१२),

है—जान वॉन ब्रोइखुइजेन[1], जान बैप्टिस्टा वेलेकेन्स[2] और हूबर्ट कार्नोलिस पूट[3]। १८वी सदी के विशिष्ट साहित्यकार नाटक और गद्य के क्षेत्र मे हुए। पीटर लागेन्डिक[4] ने आचार सबधी नाटक और कॉमेडिया लिखी जो आज भी खेली जाती है। उसके प्रधान नाटक निम्नलिखित थे—'पारस्परिक वैवाहिक कपट', 'राष्ट्रीय साहित्य का दर्पण', 'कामाच के विवाह मे डॉन क्विकजोट' और 'क्रेलिस का लाउरेन'।

१८वी सदी का पहला डच निबधकार जुस्टस वान एफेन[5] था। उसने कुछ अत्यत सुन्दर वर्णनात्मक और नैतिक निबध लिखे। उसकी मृत्यु के क्रमश तीन और छह वर्ष बाद साहित्य के पहले उपन्यासकार बेत्जे उल्फ[6] और आग्ये डेकेन[7] हुए। उन्होने दो अलकृत उपन्यास पत्रो के रूप मे लिखे—'सारा बरगेरहार्ट' और 'लेम लीवेन्ड'।

उस काल के अन्य गद्यकारो मे कुछ दार्शनिक भी थे, जैसे हिरोनिमस वान आलफेन[8] जिसने 'ईस्थेटिका' लिखी और फ्रास हेमस्टरहिस[9] जिसने दर्शन और कला पर फ्रेच भाषा मे लिखा। इनके अतिरिक्त पॉलस वॉन हेमर्ट[10] और जोहानिज किकर[11] भी गद्य के क्षेत्र मे काफी प्रसिद्ध हुए।

लिरिक-कविता का उदय एक बार फिर विलेम बिल्डरडिक[12] के हाथो हुआ। रोमाटिक परपरा ने नेदरलैड्स के बौद्धिक जीवन को एक नयी शक्ति दी। जर्मन, फ्रेच और अग्रेजी रोमाटिक परपरा उस देश पर भी हावी हुई, फिर १८३० के बाद बाइरन[13] का वहा प्रभाव पडा। विलेम बिल्डरडिक की कविताओ मे, कुछ आलोचको का विचार है, बहुत कुछ ऐसा है जो हमे सन्तुष्ट करता है, परतु शायद कुछ भी ऐसा नही जो हमे हिला सके। कुछ थोडे लिरिक जो निश्चय ही छोटे और हल्के है परतु अधिकतर अलकार से बोझिल होकर हास्यास्पद हो गए है। फिर भी उन कविताओ का महत्व दूसरी दिशा मे है। उसकी कविताए तत्कालीन घटनाओ का दर्पण है। १७६५ के फ्रेच आक्रमण के बाद वह देश छोडकर बाहर चला गया और १८०६ मे लदन आदि घूमकर स्वदेश लौटा। विजेताओ के प्रति आत्मसमर्पण करने से उसकी कमजोरी का पता चलता है। स्वदेश लौटने पर उसे स्वन्त्रता के बाद नये शासन ने पेशन दी जिसे स्वीकार करते उसे तनिक भी आपत्ति नही हुई। तब वह लाइडेन मे रहकर अपने चतुर्दिक एकत्र हुए तरुणो के हृदय

---

१ Jan von Broekhuizen २ Jan Baptista Wellekens, ३ Hubert Cornelis Poott, ४ Pieter Langendijk (१६८३-१७५६); ५ Justus von Effen (१६८४-१७३५); ६. Betje Wolff (१७३८-१८०४) ७ Aagje Deken (१७४१-१८०४); ८ Hieronymus von Alphen (१७४६-१८०३), ९ Frans Hemsterhuis (१७२१-९०), १० Paulus von Hemert, ११ Johannes Kinker १२ Willem Bilderdijk (१७५६-१८३१); १३ Byron

मे प्रतिक्रियावादी ईसाई विचारो को भरने लगा।नेदरलैड्स की राजनीति मे क्रातिविरोधी दल का बीज उसीकी अध्यक्षता मे लाइडेन मे ही वृक्षाकार हुआ। बिल्डरडिक कवि से अधिक नैतिक व्यक्तित्व था। उससे सुन्दर लिरिक कविताए शुद्ध काव्य शैली मे उसके समकालीन स्टारिग[1] ने लिखी।

रोमाटिक उपन्यास उस काल जेकब वान लेनेप[2] और गीरट्रीडा बोस्बूम-टूसेन्ट[3] ने लिखे। पहला स्कॉट से प्रभावित था और यद्यपि उसमे भाषा का सौदर्य अथवा चरित्र-चित्रण विशेष न था फिर भी अपनी वर्णनात्मक शक्ति के कारण वह काफी लोकप्रिय हुआ। गीरट्रीडा की शैली बहुत अच्छी मानी जाती है। फिर भी उसमे विचारोकीपरपरा घटना के क्रम को बोझिल और अस्पष्ट कर देती है, यद्यपि वह मानव प्रकृति और ऐतिहासिक घटनाओ की अच्छी अध्येता है। रोमाटिक परपरा का नेदरलैड्स मे विकास विशेषतः मासिक पत्र 'डि गिड्स' के १८३७ मे प्रकाशन से हुआ। वह पत्र आज भी जीवित है। उसे तीन तरुणो—अर्नीउट ड्रॉस्ट[4], राईनीर बाखीजन वॉन डेन ब्रिंक[5] और ई० जे० पोटगीटर[6] ने निकाला था। पोटगीटर डच साहित्य का पहला विशिष्ट आलोचक था। उसने कुछ कहानिया और दार्शनिक तथा ऐतिहासिक कविताए भी लिखी परन्तु इनसे ऊपर वह उस काल का बौद्धिक नेता था। प्राय १९वी सदी के समूचे बौद्धिक जीवन पर पोटगीटर छाया रहा। वह पेशे से सौदागर था और कला और जीवन के प्रति अपने ऊचे विचारो द्वारा उसने उस साहित्य मे अपने लिए ऊचा स्थान बना लिया। उसमे कल्पना और उत्साह की कमी थी परन्तु सतुलन और मर्यादा का उसे गहरा बोध था तथा पुराने और नये साहित्यो का उसे असामान्य ज्ञान था। उसके बाद आलोचना के क्षेत्र मे विशिष्ट कोनराड बुस्केन हुएट[7] हुआ। वह पादरी था और जावा आदि की यात्रा करने के बाद लेखक के रूप मे पेरिस मे प्रतिष्ठित हुआ। उसने अनेक निबध और आलोचनात्मक लेख लिखे और साथ ही कई सास्कृतिक इतिहास सबधी बडे ग्रथ भी, जिनमे 'हेट लाड वान रेम्ब्राट' अधिक महत्वपूर्ण है। उस काल का तीसरा प्रसिद्ध समीक्षक जैकब गील[8] था जिसने डच गद्य को रोमाटिक अलंकृत लफ्फाजी से मुक्त कर प्रसाद गुण से विभूषित किया।

निकोलस बीट्स[9] लाइडेन मे धर्मशास्त्र का अध्यापक था। पता चलता है कि उसने हज़ारो कविताएँ लिखी यद्यपि उसकी केवल एक कविता सुभाषितो मे सगृहीत है। कवि के

१. A. C W. Staring ; २. Jacob von Lennep (१८०२-६८), ३. Geertruida Bosboom Toussaint (१८१२-८६), ४. Aernout Drost ; ५. Reinier Bakhuizen van den Brink ; ६ E. J Potgieter (१८०८-७५), ७ Conrad Busken Huet (१८२६-८६), ८ Jacob Geel (१७८९-१८६२), ९. Nicolass Beets (१८१४-१९०३)

रूप मे तो इस प्रकार बीट्स उपेक्षणीय हो गया परन्तु मध्यवर्गीय जीवन पर स्केच-लेखक के रूप मे वह काफी प्रसिद्ध है। उस दिशा मे उसका 'कामेरा ऑब्सक्यूरा' आज भी लोकप्रिय है जो यथार्थवादी साहित्य का पहला डच नमूना माना जाता है। पोटगीटर ने अपनी रोमाटिक प्रवृत्तियो के वशीभूत उन स्केचो के प्रति 'रोजमर्रा जीवन की नकल की तृष्णा' कहकर घृणा प्रगट की थी, परन्तु बीट्स के स्केच इतने यथार्थवादी हास्यपरक शैली पर अवलबित हैं कि उनकी उपेक्षा नही की जा सकती। हा, उस यथार्थवाद का विस्तार प्रतिभा की दृष्टि से उस काल विशेष न हो सका और उसे शक्तिम कृतिकारिता का योग १६०० के बाद ही मिला।

१६वी सदी का न केवल डच साहित्य का वरन् सारे यूरोप का एक महान् साहित्यकार एडुअर्ड डूवेस डेक्कर[1] था जो अधिकतर अपने उपनाम 'मुल्तातुली' से जाना जाता है। उसके जीवनकाल मे और बाद मे भी उसपर विचार होते रहे और उसकी कृतियो को गहरी चोटे सहनी पडी। १६३० और ४० के बीच नात्सी आक्रमण के पहले तो उसके विचार डच तरुणो का बौद्धिक केन्द्र ही बन गए थे। उसके दो प्रधान अनुयायी मेनो टेर ब्राक[2] और ई० डू पेरोन[3] थे। डेकर पहले १८३८ मे सिविल सर्विस का अफसर होकर 'इण्डीज' (इण्डोनेशिया) गया। परन्तु कुछ काल बाद शासन से उसका विरोध हो जाने के कारण वह बर्खास्त कर दिया गया। फिर वह ब्रसेलस मे रहकर उपन्यास लिखने लगा। उसकी पहली कृति 'मैक्स हावेलार' डच साहित्य और गद्य की चोटी की रचना मानी जाती है। उसमे मानव-आवेगो का बडा ऋद्ध चित्रण हुआ है। उसका दूसरा उपन्यास 'वूतरत्जे पीटर्स' बाल-मनोविज्ञान का असामान्य परिचायक है। मुल्तातूली का प्रभाव कई दिशाओ मे बडा गहरा पडा। उसने डच गद्य शैली का बोझिलपन हटाकर उसे सजीवता और प्रवाह से मुक्त किया। उसने साधारण से साधारण शब्दो का स्वाभाविक रूप मे प्रयोग किया। साथ ही उसने सत्य और स्वाधीनता के पक्ष मे सर्वत्र लडाई ठान ली। उसके समकालीन उसे उदारता और सहिष्णुता का मूर्तिमान आदर्श मानते थे। यह मुल्तातूली के ही विचारो का प्रभाव था कि इण्डोनेशियनो की शिक्षा उनकी अपनी सास्कृतिक परपरा मे होने लगी और वे शासन के क्षेत्र मे नियुक्त किए जाने लगे। डेक्कर बीच-बीच मे स्वदेश लौटकर व्याख्यान दिया करता था। उसमे गजब की वाग्मिता थी और वह डच जीवन मे महान् प्रेरणाओ से साथ प्रादुर्भूत हुआ। १६वी सदी के चौथे चरण मे जिस आदोलन का आरम्भ हुआ वह '८० वर्षो का आदोलन' कहलाता है। उसका प्रवर्तक तरुणो का एक दल था। जिसका मुख पत्र 'डि नूबे गिड्स' (१८८५) था। यह बौद्धिक

---

१ Eduard Douwes Dekker (Multatuli) (१८२०-८७) २ Menno ter Braak ३ E. du Perron

जीवन, चित्रकला, वास्तुकला, सगीत और राजनीति मे एक प्रकार का पुनर्जागरण-आन्दोलन था। उसी काल समाजवाद का भी उस देश मे विशेष प्रचार हुआ। साहित्य मे उस विचार के अग्रणी विशेषत विलेम क्लूस[१], वास्तुकला मे बर्लाज[२], चित्रकला मे ब्राइट्नर[३], सगीत मे अल्फोन्ज डिपेनब्रॉक[४], दर्शन मे बोलान्ड[५] और राजनीति मे डोमेला निवेनहिस[६] थे।

नेदरलैण्डस के इतिहास के १८७० और १९०० के बीच के ३० साल साहित्य आदि सभी क्षेत्रो मे विशेष महत्व के थे। उस बीच उस देश के विविध क्षेत्रो मे कल्पनातीत उन्नति हुई। जिन लोगो ने 'डि नूबे गिड्स' की क्रियाशीलता को सफल बनाया, अथवा उसके लिए पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर दी, उनमे प्रधान थे—विलेम वार्नर वान लेनेप[७] कारेल वोज्मीर[८], सीमन गोर्टर[९], जैकब विक्लर प्रिन्स[१०], पेनिग[११], मार्सेलस इमान्ट्स[१२], जैक्स पर्क[१३]। इनमे से जैक्स पर्क का प्रभाव बडे काम का हुआ। मरा तो वह केवल २२ वर्ष की अल्पायु मे परतु इसी बीच कुछ असाधारण कविताए छोड गया, जिनकी उस काल के समीक्षको ने बहुत सराहना की। इमान्ट्स ने दो एपिक-दार्शनिक कविताओ के सग्रह—'लिलिथ' और 'देवताओ की गोधूलि' प्रकाशित किए। उसकी विचार-पद्धति, कवित्व-शक्ति और रूप ने साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। उसने उपन्यास, नाटक और यात्रा वृत्तान्त भी लिखे। मुल्तातूली को छोड उस समय के सारे साहित्यिक व्यक्तियो से वह ऊचा था। उसकी समाज और मनुष्य की आलोचना ने वस्तुतः प्रकृतिवाद को सफल बनाया।

पेनिग[१४] बडा मौलिक है। उसने उच्चकोटि के प्रबन्ध और लिरिक काव्य लिखे। उसकी बडी कविताए 'बेजामिन बर्टेलिगेन' और छोटी 'कामेरमुजीक' और 'लेबेन्साबोन्द' है। पिछले काल की उसकी कविताओ मे बडी गहराई है। वह काफी कम आयु मे ही अधा हो गया था। उस काल विलेमक्लूज तो ऊचा साहित्यकार था ही, अल्बर्ट वर्वी[१५] भी उससे कुछ कम न था। पर दोनो दो स्तरो पर थे। एक ज्वालामुखी था तो दूसरा जीवन-गर्भित प्रशात झील, एक योगी था तो दूसरा सासारिक। दोनो समसामयिक तो थे ही, प्राय. एक ही बौद्धिक और सामाजिक वृत्त से उठे थे। इन दोनो के अतिरिक्त उस काल एक और

---

१ Willem Kloos (१८५९-१९३०), २ H. P Berlage, ३ W Breitner, ४ Alphons Diepenbrock; ५ G T. P J Bolland, ६. Domela Nieuwenhuis, ७ Willem Warner Van Lennep; ८ Carel Vosmaer ९ Simon Gorter, १०. Jacob Winkler Prins, ११ W L Penning; १२ Marcellus Emants (१८४८-१९२३); १३ Jacques Perk (१८५९-८१), १४ W L Penning (१८४०-१९२४), १५. Albert Verwey (१८६५-१९३६)

विशिष्ट साहित्यकार भी था जिसकी प्रेरणा साम्यवादी थी। हरमान गोर्टर[1] इन्ही की भाति साहित्य मे स्तभाकार यद्यपि दृष्टिकोण मे इनसे सर्वथा भिन्न कम्युनिज्म का पुजारी था। इसी प्रकार गद्यकार लोडविक वान दीसेल[2] और जैकोबस वान लुई भी एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न है।

'अस्सी का आन्दोलन' साहित्य मे मिथ्या अलकरण, आचार तथा रस के सिद्धातो के अस्पष्ट उलझनो आदि के विरुद्ध लडा और अनुभूति की ईमानदारी, भावो की गहराई, विचारो की स्पष्टता और रूप तथा उद्देश्य की एकता की माग की। क्लूज उस आन्दोलन के प्रवल प्रवर्तको मे था, वर्वी उसका ऊचा साहित्यकार। परतु उस दल का सबसे महान लिरिककार और समूचे डच साहित्य के चोटी के कवियो मे एक गोर्टर था। उसका लिरिक 'माई' प्रतीक काव्य है और डच साहित्य की उच्चतम चोटियो मे है। जैकोबस वान लूई[3] उस काल का सबसे महत्वपूर्ण गद्य-लेखक है। वह शब्दो का अद्भुत चित्रकार है। अन्त मे उसने यथार्थवादी दृष्टिकोण छोड व्यग्यात्मक कल्पना को अपनी रचनाओ का प्रेरक आधार बनाया। फ्रेड्रिक वान ईडेन[4] वैद्य, सुधारक, कवि, नाट्यकार, उपन्यासकार, आलोचक और जर्नलिस्ट था। नीवे गिड्स के किसी सदस्य ने इतना कथोपकथन नही किया, और न इतने विवादास्पद विषयो को उठाया। स्वय उसके पुराने साहित्यिक मित्र उसके विरुद्ध हो गए। तरुण और प्रौढ सभी उसके दुश्मन हो गए। फिर भी ईडेन साधारण कोटि का साहित्यकार न था। उसकी अनेक कृतियो का डच साहित्य मे चिर-कालिक स्थान रहेगा। उनमे प्रधान है—लिरिक—दार्शनिक नाटक 'डि ब्रीडर्स' मनो-वैज्ञानिक उपन्यास 'वान ड केले मीरेन डे ड्ड्स' गद्य-रूपक 'ड क्लाइने जोहानिज।'

यथार्थवाद की चरम परिणति प्रकृतिवाद मे होती है। वस्तुत दोनो का एकत्र विकास नेदरलैण्ड्स के कृतिकारो मे हुआ है। डच साहित्यकार रोजमर्रा के जीवन के अद्भुत चित्र-कार रहे है। नीवे गिड्स के समकालीन और शीघ्र बाद के उस दृष्टिकोण के उपन्यासकार फ्रास कोनेन[5], हरमान रावर्स[6], जेरार्ड वान इकेरेन[7] और तीन प्रतिभाशालिनी महिलाए—टाप नीफ[8], मार्गोट शार्तेन अन्टिक[9] और कारी वान ब्रुग्रेन[10]—थी। युग का विशिष्टतम उपन्यासकार लुइस काउपेरस[11] प्राय स्वतन्त्र कृतिकार था। उसके कुछ उपन्यास यथार्थवादी भी है, जैसे 'एलिने वेरे'। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'वान ऊडे मेन्शेन' डे

---

१ Herman Gorter (१८६४-१९२७), २ Lodewijk Van Deyssel, ३. Jacobus Van Looy (१८५५-१९३०); ४ Frederik Van Eeden (१८६०-१९३२), ५ Frans Coenen, ६ Herman Robbers, ७ Gerard Van Eckeren, ८ Top Naeff, ९ Margot Scharten-Antink, १० Cairy Van Bruggen ११. Louis Couperus (१८६३-१९२३),

डिन्जेन डी वूर विगान' है। जिसमे अन्तर्द्वन्द्वो का चित्रण हुआ है और जो यथार्थवादी नही कही जा सकती। काउपेरस ने अनेक ऐतिहासिक और घोर काल्पनिक उपन्यास लिखे। उसकी कहानियो और काल्पनिक स्वप्नो की सख्या भी कुछ कम नही।

१९०० के बाद नीवे गिड्स का महत्व कम हो गया था, अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियो का भी नेदरलैड्स मे प्रसार हुआ, तभी तीन महत्त्व के कवि और एक विशिष्ट गद्यकार हुए। उनके नाम थे—हेनरिएट रोलाण्ड[1], पी० सी० बाउटेन्स[2], टी० एच० लियोपोल्ड[3] और उपन्यासकार आर्थर वान शेन्डेल[4]। गोर्टर के प्रभाव से होल्स्ट प्रारम्भ मे ही समाजवादी हो गई थी और उसने अनेक ग्रन्थ समाज शास्त्र पर लिखे। परन्तु उनसे कही बढकर उसकी कविताए थी। मुक्त और उद्दाम काव्य धारा से उसने जनवादी आन्दोलन का हित किया। करोडो सर्वहाराओ की आशाओ को उसने अपनी कविताओ मे रूपायित किया। उसकी प्रत्येक रचना के पीछे मानव-हित और सुख की कामना छिपी है। सारे डच साहित्य मे कही इतनी भावुकता से विश्वबन्धुत्व के आदर्शो का आकलन नही हुआ है। उसके सग्रह–'ड ब्राउ इन हैट वूड' मे साम्यवाद का समुन्दर लहराता है। 'वर्जोकिन ग्रेन्जेन' मे भी उसी प्रकार मानवीय चेतनाओ का विकास हुआ है, यद्यपि इस पिछली कृति मे उसकी कमजोर आत्मा भगवान की ओर भी हाथ उठा देती है। उसकी कविताए—राजनीतिक और धार्मिक दोनो–प्रणय-लिरिक है। बाउटेन्स उसके सामने अभिजात रूपवादी लगता है। परन्तु गहरे अध्ययन से उसकी गहराइयो की थाह मिलती है। जहा हेनरिएट समाज को अपना इष्ट मानती है, बाउटेन्स आशिक रहस्यवाद को। उसकी कविताओ का सग्रह 'स्टेमेन' सम्भवत उसकी रचनाओ मे विशिष्ट है। इन कविताओ मे 'वर्गेटेन लीड्येस' सर्वोत्तम है। नात्सी-शासनकाल मे वह मरा। लियोपोल्ड का पहला कविता-सग्रह १९१३ मे निकला। उसकी अन्य कविताए उसकी मृत्यु के बाद वानआइक ने छपवाई।

आर्थरवान शेन्डेल केवल उसी युग का नही सम्भवत समूचे डच साहित्य का सर्वोत्तम गद्यकार है। उसने प्रभाववाद और प्रकृतिवाद दोनो प्रवृत्तियो के विरुद्ध लिखा। १९०० और १९३० तक की कृतियो के लिए तो उसने काल्पनिक इटालियन रेनेसा से सामग्री चुनी। प्रारब्ध और एकान्त उसकी दो प्रधान समस्याए थी। उसकी मुख्य रचना 'ईन ज्वर्वर' (दो खण्डो मे) है। बाद की रचनाओ के लिए उसने नेदरलैडस के जीवन और इतिहास से अपने कथानक और विषय चुने। उसका उत्कृष्ट उपन्यास—ट्रिलोजी 'ईन हालैण्ड्श ड्रामा', 'डि रिजकेमान', 'ग्रावे फोगेल्स' है। उसने प्राय. तीस उपन्यास लिखे जिनमे से एक भी साधारण कोटि का नही है। उसने अनेक कहानिया भी लिखी।

---

१ Henriette Roland Holst (जन्म १८६९), २ P C. Boutens (१८७०-१९४३), ३. T H Leopold (१८६५-१९२५); ४. Arthur Van Schendel (जन्म १८७२)

उसकी दो कृतिया अत्यन्त लोकप्रिय हुई। एक तो 'ईन ज्वर्वर' और दूसरी 'ड वाटर-मान।' दूसरी डच-गद्य मे अनुपम रचना है।

१६०५ और १६०८ के बीच एक नई पीढी के लिरिक कवियो का उदय हुआ जिनमे प्रधान निम्न तीन है—ए०रोलाण्ड हॉल्स्ट[1], जे०सी०ब्लोम[2] और पी०एन० वान० आइक[3]। होल्स्ट की कविताए पहले पहल १६११ मे प्रकाशित हुईं, जिनसे शीघ्र पता चल गया कि उनका रचयिता साधारण ऊचाई का व्यक्ति नही। वह समुद्र, वायु, स्वप्न-द्वीपो और वायवीय भावो का कवि है। परन्तु उनमे भी मानवता के प्रति आग्रह छिपा है। ब्लोम की कविताओ की सख्या अत्यन्त न्यून है परन्तु उसकी एक-एक कविता सुथरी-निखरी सर्वथा दोषरहित है। उसकी कविताओ मे करुणा और निराशा है। पराजय की अनुशोचना है। उसके चार सग्रह है—'हेट वेर्लांगेन', 'मेडिया वीटा', 'ड निडरलाग', 'सिन्टेल्स'। मानवीय कमजोरियो की ये कविताए प्रतिबिम्ब है। आइक लाइडन मे वर्वी के स्थान पर अध्यापक नियुक्त हो चुका था। उसने नात्सी आक्रमण के कुछ ही पूर्व कुछ अत्यन्त विचार प्रधान निबन्ध लिखे। उसकी कविताओ का सग्रह कर्मठ जीवन और हृदय तथा मेधा का एकत्र प्रकाश करता है। कविताए दार्शनिक काव्य-कला और बौद्धिक भावनाओ की प्रतीक है।

उत्कृष्ट गद्यकार जे० ग्रोन्लोह[4] और राइनीर वान गेन्डेरेन स्टोर्ट[5] है। पहले ने तीन उपन्यास लिखे जिनमे दो ऊची कोटि के है। दूसरे ने भी 'क्लाइने ईनेज' नाम का एक सुन्दर उपन्यास लिखा, फिर वह प्रतीको मे फस गया।

वर्तमानवादी और अभिव्यजनावादी साहित्यकारो के शीघ्र पूर्व के कवियो मे प्रमुख है—वेरूमियस बूनिग[6], विक्टरवान व्रीसलेन्ड[7], हरमान वान डेन बर्ग[8] और एम० निझोफ[9]। इनमे निझोफ विशिष्ट है। उसने डच लिरिको मे एक नये स्वर, नई भावना का योग दिया, आनन्दपरक वस्तुवाद का। उसके तरुण समसामयिको पर उसका गहरा प्रभाव पडा और आज भी वह नेदरलैड्स के युद्धोत्तर साहित्य मे एक हस्ती है।

दोनो महायुद्धो के बीच का युग ऋद्ध बौद्धिक जीवन का है। उसकी पहली दशाब्दी लिरिक कवि एच० मार्समान[10] द्वारा अभिभूत रही और दूसरी समीक्षक मेनो तेर ब्राक[11] द्वारा। उसके बाद सुरियलिज्म (कल्पनात्मक स्वप्निल सत्य) का महत्व बढा। यह

१ A. Roland Holst (जन्म १८८८); २. J. C. Bloem (जन्म १८८७), ३. P N Von Eyck (जन्म १८८७), ४. J Gronloh, ५ Reinier Van Genderen Stort, ६. J. W F. Werumeus Buning (जन्म १८९१), ७ Victor Van Vriesland (जन्म १८९२), ८. Herman Van den Bergh (जन्म १८९७), ९. M Nijhoff (जन्म १८९९), १० H Marsman (१८९९-१९४०), ११. Menno Ter Braak (१९०२-४०)

मे डुबा दिया गया। तेरब्राक ने आत्महत्या कर ली। दु पेरो आक्रमण के परिणाम-स्वरूप ही मरा। ओटेन मार डाला गया। जॉन कैम्पर्ट[१], वाल्टर ब्राडलाइट, विलेम आरोन्दियस और अनेक-अनेक शत्रु की गोली के शिकार हुए। नेदरलैंड्स के साहित्य-कारो का यह सघर्ष, त्याग और बलिदान निस्सदेह उसके साहित्य के इतिहास मे अमर रहेगा।

उससे एक लाभ हुआ—साहित्यकार अपने दायित्व की ओर विशेषत आकृष्ट तो हुए ही, काल्पनिक स्वप्रदेश से लौटकर उनकी प्रतिमा यथार्थ की ओर लगी। उप-चेतना की व्याख्या करने वाला सुरियलिज्म वहा अब प्राय. समाप्त हो गया और उसके स्थान पर स्वस्थ और सद्य यथार्थ प्रतिष्ठित हो गया है। इस अग्निस्नान से काव्य-क्षेत्र मे एक नये प्रकार का आरम्भ हुआ—युद्ध काव्य का। और इसी बीच एक नये कवि बर्तुस आफ्जेज[२] ने अपनी शक्ति और मेधा लिए साहित्य क्षेत्र मे पदार्पण किया। नेदरलैंड्स का साहित्य समाजवादी यथार्थवाद की ओर इधर पर्याप्त अग्रसर हुआ है।

१. Jan Campert, २. Bertus Aafjes

११. डेनी साहित्य

डेन्मार्क का प्राचीनतम साहित्य अभिलेखो के रूप मे चट्टानो पर खुदा मिलता है। उसका अधिक भाग लोक साहित्य है जो उस काल की पौराणिक ख्यातो, जन्तर-मन्तर, ऐतिहासिक घटनाओ और वीर-कृत्यो पर प्रकाश डालता है। कुछ चट्टानो पर तत्कालीन कानूनो का उल्लेख भी मिलता है।

डेन्मार्क का बहुत-सा साहित्य मध्य-युग मे लैटिन मे लिखा गया। लैटिन का सास्कृतिक भाषा के रूप मे वहा १२वी सदी मे प्रवेश हुआ था। उस काल का सबसे बडा लैटिन ग्रन्थ 'गेस्तादानीरुम' (डेनो के वीर कृत्य) १६ खण्डो मे साक्से[१] ने लिखा था। उसका डैनी भाषा मे शीघ्र अनुवाद हो गया।

सुधारवादी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के देश मे प्रवेश से डेनी भाषा और साहित्य दोनो पर गहरा प्रभाव पडा। भाषा प्राचीन 'नौर्दिक' से बदलकर वर्तमान डैनी हो ही चली थी। अब उसे लिखने मे लैटिन अक्षरो का भी उपयोग होने लगा। स्वाभाविक ही उस काल की रचनाए धर्म-प्रधान है और अनेक लैटिन भाषा मे ही लिखी गई हैं। क्रिस्तियर्न पैडरसन[२] ने अधिकतर डेनी भाषा मे ही अपने ग्रन्थ लिखे जिनमे 'डेन्मार्क का इतिहास' विशिष्ट था। बाइबिल के उसके आशिक अनुवाद ने डेनी भाषा पर दूरगामी प्रभाव डाला। पैडरसन का समसामयिक ही वाइवोर्ग का प्रभावशाली बिशप हान्स ताउसेन[३] था जिसने इब्रानी से 'पेन्तातुख' का अनुवाद किया और काव्य रूपक की शैली मे 'झूठ और सच' लिखा। पेडर प्लादे[४], नील्स हेमिग्सन[५] और जैस्पर ब्रौकमाण्ड[६] ने भी अपनी कृतियो से उस काल का प्रारभिक डेनी साहित्य भरा। नील्स असाधारण पडित था। वह डेन्मार्क का गुरु कहलाता है। 'जीवन की राह' उसकी सुन्दरतम कृति है जिसका डेनी भाषा पर गहरा प्रभाव पडा। एन्डर्स सौरेन्सन वेडेल[७] जैस्पर का समकालीन और बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्ति था। वह उपदेशक, कवि, वैज्ञानिक, पुराविद् और इतिहासकार था। उसने नौर्दिक लोक गीतो का सग्रह किया। उसीने साक्से के बृहद् ग्रथ 'गेस्ता दानोरम' का डैनी मे अनुवाद भी किया। डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन चतुर्थ की पुत्री लियोनोरा क्रिस्टाइन[८] का देशद्रोह के लिए

---

१ Sakse (११६०-१२२०), २ Christiern Pedersen (१४८०-१५५४); ३. Hans Tausen (१४९४-१५५४), ४ Peder Plade (Petrus Pladius) (१५०५-६०), ५ Niels Hemmingsen (१५१३-१६००), ६ Jesper Brochmand (१५८५-१६५२), ७ Anders Sorensen Vedel (१५४२-१६१६), ८ Leonora Christine (१६२१-९८)

पति के साथ ही १७वी सदी मे विचार हुआ था। फलत' वह २२ वर्ष तक कैद में रखी गई थी। उसी बीच उसने यातना और धीरज पर अत्यन्त 'करुण सस्मरण' लिखे।

१५६९ के बाद डेनी भाषा मे प्रार्थना के लिए स्तोत्र लिखे जाने लगे। १७वी सदी का प्रधान स्त्रोत्रकार टाम्स किंगो[१] था। उसके स्तोत्रो मे सबसे प्रसिद्ध 'ससार के अहकार से विदा' था। उसके अनेक स्तोत्र आज भी डेनमार्क के गिरजाघरो मे गाए जाते है। वह डेनी भाषा का पहला लिरिक कवि था।

१७वी सदी मे ही धर्मेतर साहित्य का भी आरम्भ हो गया था। काउन्ट मोगेन्स स्कील[२] पहला डैनी नाटककार था। उसने मोलिए[३] से प्रेरणा ली और अपने नाटको मे दरबार के अभिजातवर्गीय कुलो पर व्यग्य किया। उस काल का सबसे बडा नाट्यकार होलबर्ग[४] था। उसकी कॉमेडियो ने जनता का मर्म छू लिया। लुडविग होल्वर्ग बर्गिन मे पैदा हुआ था और कोपेनहागेन मे पढा-लिखा था। उसने यूरोप का भ्रमण भी खूब किया। पहले उसने यूरोप और डेनमार्क के इतिहास पर ग्रन्थ लिखे जिसके परिणामस्वरूप वह यूनीवर्सिटी का असाधारण प्रोफेसर नियुक्त हुआ। फिर उसने अपनी कॉमेडियो मे व्यग्यकार की असामान्य प्रतिभा विकसित की। उन दिनो डेनमार्क मे होमर[५] और वर्जिल[६] की बडी धूम थी। होल्वर्ग ने अपना 'पेडरपार्स' लिखकर उनपर गहरे व्यग्य किए। उसीकी प्रेरणा और योग से १७२२ मे 'राजकीय थिएटर' का कोपेनहागेन मे आरम्भ हुआ। होमर और वर्जिल के साथ ही होलबर्ग ने उन सारी विदेशी प्रवृतियो और प्रभावो पर अपनी कॉमेडियो मे मार्मिक व्यग्य किए जो डेनी सस्कृति और साहित्य मे घुन की तरह लगते आ रहे थे। होल्बर्ग की सुन्दरतम कॉमेडियॉ निम्नलिखित है —'राजनीतिक भूत', 'प्रहसन', 'लडखडानेवाला', 'जाद-फ्रास', 'गर्ट वैस्टफालेर', 'जैकब वान थीबी', 'सूम'।

हान्स अडोल्फे ब्रोर्सन[७] किंगो के बाद दूसरा प्रसिद्ध स्तोत्रकार था। उसके स्तोत्रो मे बडी सादगी और सौदर्य था। वह व्यक्तिगत भावनाओ, अनुभूतियो तथा प्रतिक्रियाओ का उद्बोधक था। फिर भी उसके स्तोत्रो मे करुणा, विषाद और निराशा का स्वर मुखरित हुआ। उसके जीवनकाल मे धर्म की 'असाधारण निधि' (१७३९) मे और मृत्यु के बाद 'हस-गान' (१७६५) प्रकाशित हुए।

डेन्मार्क का एक किसान एम्ब्रोसिय स्टब[८] की कविताए बडी मधुर मानी जाती है। उसने भी अनेक स्तोत्र लिखे। जोहान हर्मान वैसेल[९] भी होल्बर्ग की ही भाति विदेशी प्रभावो

---

१ Thomas Kingo (१६३४-१७०३), २. Count Mogens Skeel (मृत्यु १६९४), ३. Moliere, ४ Holberg (Ludvig) (१६८४-१७५४); ५ Homer; ६ Virgil; ७ Hans Adolphe Brorson (१६९४-१७६४), ८ Ambrosius Stub (१७०५-५८); ९ Johan Herman Wessel (१७४२-८५)

का विरोधी था। उसने फ्रेंच और इटैलियन प्रभावो का प्रबल विरोध किया। १७७२ मे उसने फ्रेंच ट्रैजेडी की 'पैरोडी' मे अपनी पहली और सर्वोत्कृष्ट रचना 'मौजे बिना मुहब्बत' प्रकाशित की। जोहान्स इवाल्ड[१] वैसेल का गहरा दोस्त था और दोनो का जीवन सर्वथा अभिन्न था। इवाल्ड के असफल प्रणय ने उसे अत्यन्त विषण्ण बना दिया जिससे उसकी कविता अत्यन्त मार्मिक हो उठी। परन्तु उसमे उसने दु ख की छाया न पडने दी। उसकी अनेक कविताए बडी प्रसिद्ध है। यद्यपि ख्याति उसे फ्रैडरिक पचम की मृत्यु सबधी कविता से ही मिली। 'बाल्डर की मृत्यु' लिखकर उसने नाट्यकला की चोटी छू ली। उसकी माली हालत बडी खराब थी। प्रेम और निर्धनता का मारा वह अक्सर चुपचाप फिरा करता था। परन्तु उसकी सहृदयता बडी आकर्षक थी और उसने उसे काफी लोकप्रिय बनाया। बाद मे भी उसने अनेक रचनाए की जिनमे सबसे सुन्दर 'मछुआ' थी।

उस काल के दूसरे साहित्यकार ओले जोहान साम्से[२] और टॉमस थारूप[३] थे। इनमे से पहले की प्रसिद्ध कृति 'दिवेकी' और दूसरे की 'कटिया मडली' थी।

उस काल डेन्मार्क मे दो आदोलन प्रकट हुए। एक तो फ्रेंच राज्य-क्राति ने जीवन के आधार को हिला दिया, दूसरे जर्मन और अग्रेजी रहन-सहन के विरुद्ध एक विद्रोह उठ खडा हुआ। दोनो आदोलनो का नेता पीटर ऐन्ड्रीज हाइबर्ग[४] था। अपनी अनेक कृतियो द्वारा उसने देश की सस्थाओ पर उत्कट व्यग्य किए। स्वतत्र कृतियो के अतिरिक्त हाइबर्ग ने राहबैक[५] द्वारा प्रकाशित 'दर्शक' को अपने व्यग्यो का साधन बनाया। उसने उसमे लगातार अग्रेज राजदूत पर प्रहार किए। उसकी राजनीतिक वामपक्षीय रचनाओ के कारण उसे स्वदेश छोडना पडा (१८००)। शेष जीवन उसने पेरिस मे बिताया। राहबैक का उल्लेख ऊपर हो चुका है। क्नुड लिन राहबैक का, उसके मौलिक प्रकाशनो के कारण इतना नही, जितना पुरानी लुप्त कृतियो के अनुसधान और आलोचनात्मक प्रकाशन से, डेनी साहित्य पर गहरा प्रभाव पडा, उसका घर, जिसका नाम पर्वत का गृह पड गया था, डेनी चितन साहित्य और कला के उदीयमान कृतिकारो का गढ बन गया। वही नये विचारो पर कथोपकथन होते। वही नई प्रवृत्तियो को रूप मिलता। राहबैक 'दर्शक' नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशक और सम्पादक था और उसीमे उसकी आलोचनाए रूप धारण करती थी। उसके संस्मरण १८०० ई० पूर्व के डेनी साहित्य और सस्कृति पर प्रभूत प्रकाश डालते है।

---

१. Johannes Ewald (१७४३-८१), २ Ole Johan Samsoe (१७५९-९६); ३. Thomas Thaarup (१७४८-१८२१); ४. Peter Andreas Heiberg (१७५८-१८४१), ५. Rahbeck (Knud Lyne Rahbeck) (१७६०-१८३०)

जेन्स बागेसन[1] स्वाभाविक कवि था और साथ ही नितान्त भावुक भी। उसके ओप्रा 'होल्गर दान्स्के' की जब कटु आलोचना हुई, तब वह खिन्न होकर देश से बाहर चला गया और जब लौटा तो उसने अपनी यात्राओ के सुन्दर सस्मरण प्रकाशित किए। उसने कविताए भी काफी लिखी।

जैकब पीटर मीन्स्टर[2] बिशप था और उसने अपनी गभीर रचनाओ द्वारा देश मे बढते बुद्धिवाद का विरोध किया। राजनैतिक और राष्ट्रीय तथा धार्मिक क्षेत्रो मे उसकी रचनाओ का खासा प्रभाव पडा। हान्स क्रिश्चियन ऑर्स्टेड[3] एलेक्ट्रो-चुम्बक के अनुसधान से विज्ञान के क्षेत्र मे काफी प्रसिद्ध हो चुका है। उसकी वैज्ञानिक रचनाओ मे साहित्यिक शैली का विकास हुआ। वह अपने देश, इतिहास और भाषा से बडा प्रेम करता था और उसने अनेक सास्कृतिक विषयो पर भी लगातार व्याख्यान दिए। उसके भाई ऐण्डर्स सैण्डो ऑर्स्टेड[4] ने 'मेरा जीवन' और 'मेरा युग' लिखकर डेनी साहित्य का भडार भरा।

एडम गोटलाब इहलेन्स्लीगर[5] डेनमार्क के साहित्य और सस्कृति का शेक्सपियर है। नौ वर्ष की आयु मे ही उसने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय 'प्रभात का स्तोत्र' लिखकर दिया। स्कूल मे उसकी शिक्षा तो नही हुई, परन्तु निजी तौर पर उसने प्राचीन नॉर्दिक पुराणो तथा अन्य साहित्य का बडा गहरा और विस्तृत अध्ययन किया। वह भी राह-बैक के मित्रो मे से था और उसके घर मे निरतर चलने वाले विचारो मे बराबर भाग लेता था, उसकी पहली काव्य कृति 'सुनहरे सीग' थी जिसके क्रातिकारी स्वर ने देश मे राष्ट्रीयता की एक लहर बहा दी। फिर तो वह लगातार अपने नये दृष्टिकोण की कविताए लिखता ही गया। 'सिहवीर', 'हाकोन जार्ल की मृत्यु', 'सन्त जान की सध्या', 'लाग द्वीप की यात्रा', 'साल का गीत' आदि एक के बाद एक प्रकाशित हुए। 'अलाद्दीन' उसकी सर्वोत्तम कृति है, जिसपर उसकी आत्मकथा की छाप है। उसने अनेक देशो की यात्रा भी की। गेटे आदि से मिला। उस यात्रा के क्रम मे उसकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुईं। स्वदेश लौटने पर उसकी बडी इज्जत हुई। पिछले काल की उसकी कृतियो मे महान् 'हेल्गे' (१८१४) और 'दीना' (१८४२) है। हेल्गे 'ट्रिलोजी' है और काफी ख्याति पा चुका है। ऐडम साहित्य की अनेक दिशाओ मे स्तम्भाकार ऊचा था।

स्टीन स्टीन्सन ब्लिखेर[6] डेनमार्क का पहला यथार्थवादी था। उसने अपने उपन्यासो मे जटलैड के लोक जीवन के विविध चित्र खीचे। उसके अनेक उपन्यासो मे किसान जीवन

१ Jens Baggesen (१७६४-१८२६), २ Jakob Peter Mvnster (१७७५-१८५४), ३ Hans Chtıstıan Orsted (१७७७-१८५१), ४ Anders Sando Orsted, ५. Adam Gottlob Oehlenslaeger (१७७९-१८५०), ६ Steen Steensen Blıcher (१७८२-१८४८)

अकित हुआ। उसमे उसने जटलैड की किसानी बोली का भी जहा-तहा उपयोग किया। उसके कुछ उपन्यासो के आधार पर अतीत के चित्र भी है। स्टीन कवि भी था। उसके अनेक लिरिक जाने हुए है। वह 'उत्तरी प्रकाश' नामक पत्र का सपादन भी करता था।

इह्लेन्स्लीगर ने जिस राष्ट्रीय भावना से प्रेरित पुरानी ख्यातो का पुनरुद्धार किया था उसकी परिणति निकोलाज फ्रैडरिक सेवरिन ग्रुन्ट्विग[1] की ऐतिहासिक और सास्कृतिक कृतियो मे हुई। ग्रुन्ट्विग डेनमार्क का महान् लेखक हो गया है। उसने इतिहास के क्षेत्र मे नितान्त नई भावनाओ से प्रेरित अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किए जिनकी घटनाओ और नायको के प्रति उसके दृष्टिकोण का रूढिवादी विद्वानोद्वारा प्रतिवाद भी हुआ। धर्म और दर्शन के क्षेत्र मे भी उसने अनेक रचनाए की। साथ ही उसकी राष्ट्रीय कविताए और गान भी लोगो की नजरो मे ऊचे उठने लगे। उसका प्रभाव इतना बहुमुखी था कि उसने देश के सास्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रो को प्रभावित किया। लोक-वादी हाई स्कूल का देश मे जो आन्दोलन चला, वह भी बहुत कुछ उसीके प्रभाव और सहयोग का परिणाम था। कहते है कि विद्वत्ता के क्षेत्र मे तो उसके ग्रन्थो की उत्तमता प्रमाणित ही है, यदि उसके स्तोत्रो और धार्मिक गीतो का सही अनुवाद हो तो वे ससार की तद्विषयक सुन्दरतम रचनाओ मे गिने जाएगे।

ग्रुन्ट्विग के अनेक समकालीन साहित्य और दूसरे क्षेत्रो मे प्रसिद्ध हो चुके है। क्रिश्चियन मॉलबेख[2] ने पुरानी साहित्य-कृतियो को ढूंढकर प्रकाशित किया। वह उच्चकोटि का आलोचक और कोषकार था। क्रिश्चियन ह्विड ब्रेदाल[3] ने गाव मे रहकर अपना प्रसिद्ध नाटकीय दृश्य छह भागो मे लिखा। रास्मस क्रिश्चियन रास्क[4] ससार का सबसे बडा भाषा-शास्त्री माना जाता है। अपने अध्ययन द्वारा उसने डेनमार्क की भाषा और साहित्य का बडा उपकार किया। उसने आइसलैड के 'हेम्सक्रिगला' का अनुवाद किया और साथ ही उसके लिए एक व्याकरण और कोष भी रचा। लैटिन, ग्रीक, इब्रानी और सस्कृत का वह पडित था। साथ ही उसने नोर्दिक, रूनिक, स्लाव और सारी यूरोपीय भाषाओ पर अधिकार कर लिया था। अरबी और तिब्बती, चीनी और हिंद चीनी तथा हिंदुस्तान की अनेक भाषाए उसने भली प्रकार सीख ली थी। प्रायः ५५ भाषाए वह मादरी जबान की तरह बोल सकता था। साथ ही उनके इतिहास और विकास का भी उसने अध्ययन किया। अनेक भाषाओ के व्याकरण भी उसने प्रस्तुत किए। उसके दृष्टिकोण ने भाषा विज्ञान

---

१. Nikolaj Frederik Severin Grundtvig (१७८३-१८७२), २ Christian Molbech (१७८३-१८५७); ३. Christian Hvid Bredahl (१७८४-१८६०), ४ Rasmus Kristian Rask (१७८७-१८३२)

के सिद्धातो मे आमूल क्रान्ति उपस्थित कर दी। वह स्वय भाषा-विज्ञान का जनक था। सस्कृत और लिथुएनियन का अन्यतम साम्य प्राय उसीने पहले पहल प्रमाणित किया।

वर्नहार्ड सेवेरिन इगमान[1] रोमाटिक आन्दोलन का नेता और प्रकाण्ड साहित्यकार था। उसने १८११ मे अपना 'एपिक' और 'लिरिक' कविता मे प्रकाशित किया। उनका दूसरा भाग अगले वर्ष मे निकला। परन्तु उसकी प्रतिभा का सिक्का उसकी विशिष्ट कृति 'कृष्ण वीर' से जमा। उसके बाद उसने अनेक नाटक लिखे। 'मासिनिएलो', 'ब्लाका' 'पूरब की आवाज', 'अनोखा शिशु राइनाल्ड' 'सिह वीर', 'तोलोसा का गडरिया', 'तासो की मुक्ति'। फिर भी उसने लिरिको का लिखना बन्द न किया। उसके राष्ट्रीय गीत और स्तोत्र अन्यन्त सुन्दर माने जाते है। इगमान ने पुराने राष्ट्रीय नायको की घटनाओ पर कुछ सुन्दर उपन्यास भी लिखे।

जोहान्स कार्स्टेन होख[2] वैज्ञानिक और कवि था। उसने कविता मे 'हामाद्रियाद' और मेलोड्रामा 'बाराजत' लिखा। रोम मे उसने 'टाइबेरियस' और 'ग्रेगोरियस' सप्तम, नामक नाटक लिखे। रोम से लौटने पर उसने कुछ और नाटक लिखे और कुछ उपन्यास भी। जोहान लुडविग हाइबर्ग[3] का प्रसिद्ध पिता पी० ए० हाइबर्ग[4] अपनी साहित्यिक व्यग्य रचनाओ के कारण देश से निकाल दिया गया था। उसकी मा भी साहित्यकार थी। जोहान्स स्वाभाविक ही साहित्यिक दाय का अधिकारी हुआ और राहबैक के साहित्यिक और सास्कृतिक और परिवार मे उसकी खूब रसाई भी थी। उसे अपने नाना काउट गिलेनबोर्ग[5] के घर विदेशी राजनीतिज्ञो से मिलने का भी सयोग मिला। इससे उसे स्वतत्र व्यक्तित्व मिला। उसकी यात्राओ ने भी उसे अनुभूति प्रदान की। उसकी प्रारभिक कृतिया 'मार्यो नेत थियेटर' आदि थी। जर्मनी मे उसने हीगेल के दर्शन का अध्ययन किया जिससे उसने स्वदेश लौटकर 'मानव स्वाधीनता' पर अपने विचार प्रकट किए। उसकी अनेक रचनाओ मे प्रधान 'सोलोमन और जोगैन', 'अभिन्न', 'अप्रैल का मूर्ख' आदि है। क्रिश्चियन चतुर्थ सबधी राष्ट्रीय नाटक 'एल्फ हिल' (१८२८) उसकी सर्वोत्तम रचना है। अगले बीस वर्ष वह डेनी साहित्य का एकमात्र नेता रहा। उसने अपनी मा थामसिन क्रिस्टाइन गिलेनबोर्ग[6] के भी अनेक उपन्यास प्रकाशित किए जिनमे 'रोजमर्रा की कहानिया' प्रसिद्ध है। १९वी सदी के अन्य कवियो मे पौल मार्टिन मोलर[7], एस० एस० ब्लिखर[8] और क्रिश्चियन विन्थर[9]

---

१ Beinhard Severin Ingemann (१७८९-१८६२), २. Johannes Carsten Hauch (१७९०-१८७२), ३ Johan Ludvig Heiberg (१७९१-१८६०), ४ P A Heiberg, ५. Count Gyllenborg, ६ Thomasine Christine Gyllenborg (१७७३-१८५६); ७. Poul Martin Moller (१७९४-१८३८), ८ S S Blicher, ९ Christian Winther (१७९६-१८७६)

थे। ब्लिखर जटलैण्ड का कवि था और विन्थर जीलैण्ड का। विन्थर का प्रसिद्ध कविता-सग्रह 'काष्ठ तक्षण' प्रसिद्ध कृति है। उसने उसके अतिरिक्त उत्तरी जीलैण्ड के प्राकृतिक सौदर्य को भी अनेक कविताओ और गीतो मे प्रतिबिम्बित किया। उसकी सर्वोत्तम रचना 'मृग का पलायन' है।

हाइबर्ग का प्रधान शिष्य हेन्रिक हर्त्स[1] था, जिसने रोमाटिक प्रवृत्तियो से यथार्थवाद की ओर प्रगति पूरी कर दी। उसे उसके 'प्रेत-पत्र' से ख्याति मिली। उसने अनेक नाटक लिखे, 'रुवेन्द्र डीरिग का घर', 'राजा रेनी की पुत्री', 'निनोन', 'सेविग्स बैक', 'कोपेन-हागेन की यादगार', और 'चगा होने का तरीका'। उसके लिरिको मे सबसे सुन्दर 'तट का युद्ध' और 'हिरशोल्म' कविताए है। कार्ल बर्नहार्ड[2] का जन्म-नाम एन्डर्स निकोलाई द सेन्त आबेन था। उसकी कृतिया डेनमार्क के लोक साहित्य के क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। उनमे प्रसिद्ध निम्नलिखित कहानिया है—'कमिश्नर', 'बच्चो का नृत्य', 'भाग्य का प्रिय', 'सस्मरण' आदि। एमिल अरस्ट्रुप[3] और लुडविग बोडखर[4] ने भी सुन्दर कविताए प्रकाशित की। पहला पेशे से डाक्टर था, दूसरे ने इटली से अपनी प्रेरणा पाई।

फ्रेडरिक पालुदान-मुलर[5] को ख्याति अपनी कविता 'नर्तकी' से मिली। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'एडेमहोमो' है जिसमे समकालीन मानव पर व्यग्य है। उसने कुछ धार्मिक कविताए भी लिखी। उसकी कुछ कविताओ के विषय ग्रीक कथानक है। उसकी कृति 'कलानस' भारतीय आधार पर आधारित है। उसने कुछ उपन्यास भी लिखे। उसका एक उपन्यास 'यौवन का स्रोत' है।

हान्स क्रिस्टियन ऐन्डर्सन[6] का जीवन जादू की कहानी है। ओडेन्स से वह कोपेनहागेन पहुचा। कालिन[7] की सहायता से उसने अपनी पहली कविता 'मरणासन्न शिशु' प्रकाशित की। इसके बाद ही उसकी पहली पुस्तक 'पैदल यात्रा' (१८२९) निकली। उसे आरम्भ मे भी असफल नही कहा जा सकता किन्तु उसकी कृतियो की बडी खरी और हृदयहीन आलोचना हुई। वह इटली चला गया और जब लौटा तो देखा कि लोगो की सहानुभूति उसकी ओर हो गई है। उसके 'गायक' का परिणामत डेनमार्क और जर्मनी दोनो देशो मे बडा स्वागत हुआ। उसी साल उसने बच्चो के लिए 'परियो की कहानिया' लिखी और सालो साल क्रिसमस के अवसर पर लिखता गया।

---

१. Henrik Hertz (१७९७-१८७०), २ Carl Bernhard (Anders Nicolai de Saint-Aubain) (१७९८-१८६५); ३ Emil Aarestrup (१८००-५६), ४ Ludvig Boedtcher (१७९३-१८७४), ५ Frederik Paludan-Muller (१८०९-७६), ६ Hans Christian Andersen (१८०५-७५), ७ Collin (Well'nownk Philanthropist)

ऐन्डर्सन ने अनेक उपन्यास भी लिखे। परन्तु विशेष सफल उसकी कॉमेडिया हुई, 'बालू का आदमी', 'मोती और सोने से भी बढकर' आदि। होल्बर्ग ने 'सोने का स्थान' लिखा। परियो की कहानियो से मिलती-जुलती ही उसकी 'बिना चित्रो की सचित्र पुस्तक' है। उसने अनेक गीत भी लिखे जो सारे डेनमार्क मे आज भी गाए जाते है। उसकी 'लोरी' तो उस देश के साहित्य मे अमर हो गई है। उसने अनेक यात्राए की और उन यात्राओ के सुन्दर वृत्तात प्रकाशित किए। ऐन्डर्सन ने सारे योरोप के रगमच पर प्रभाव डाला और उसकी रचनाए शीघ्र ही डेनमार्क की सीमाए पार कर गई। उसका स्थान ससार के सुन्दरतम साहित्यकारो मे है।

पार्मो कार्ल प्लूग[1] असाधारण वाग्मी और राजनीतिक था। उसने विद्यार्थियो के लिए अनेक गीत लिखे जिनका सग्रह प्रकाशित हुआ। अपने सॉनेटो मे उसने पारिवारिक चित्र खीचे। जर्मन युद्ध ने उसे दु खी कर दिया। उसकी कविताए समसामयिक घटनाओ की ही अधिकतर प्रतिविम्ब है। उसी काल का कवि जान्स क्रिस्टियन हास्ट्रुप[2] भी था जिसके गीत पर्याप्त लोकप्रिय हुए। उसने विद्यार्थियो के लिए कुछ कॉमेडिया भी लिखी। माइर आरो गोल्डश्मिट[3] रूढियो का स्वाभाविक शत्रु था। आरम्भ मे ही उसने सरकार और रूढिवादी राष्ट्रीय सस्थाओ की सख्त आलोचना की। उसने अनेक उपन्यास लिखे। उनकी शैली भाषा की दृष्टि से अप्रतिम है। उनमे कुछ है—'यहूदी', 'वारिस', 'गृहहीन', 'काग , 'चाचा के घर की कहानिया', 'कहानिया और यथार्थ'।

क्रिश्चियन रिचर्ड[4] अत्यत मधुर लिरिककार था। 'घोषणाए' उसने अपने विद्यार्थी-जीवन मे ही लिखा था। शीघ्र उसने 'सक्षिप्त कविताए' प्रकाशित की और तदनन्तर अनेक कविता-सग्रह। उनमे से कुछ 'कोलबस', 'बोनेवाला', 'नजरथ' थे। उसकी विशिष्ट कृतियो मे एक ओप्रा 'द्रोत और मास्कें' और दूसरी भौगोलिक कविता 'हमारा देश' है। उसने अनेक सुन्दर गीत और स्तोत्र भी लिखे। हान्स विलहेल्म कालून्ड[5] ने भी कुछ कविताए और एक 'एपिक' लिखा। उसे ख्याति उसके 'बसन्त और पतझड' से मिली। उसका नाटक 'फुल्विया' बडी सफलतापूर्वक खेला गया। आदर्शवाद और यथार्थवाद की कशमकश मे वह यथार्थवाद के पक्ष मे था और अपनी सुन्दरतम कविताए उसने उसी पक्ष मे लिखी।

क्रिस्टियन क्नुड फ्रेडरिक मोल्बेख[6] ने अनेक कविताए लिखी पर सफलता नही मिली।

---

१ Parmo Garl Ploug (१८१३-९४), २ Jans Christian Hostrup (१८१८-९२), ३. Meir Aaron Goldschmidt (१८१९-८७), ४ Christian Richardt (१८३१-९२), ५ Hans Vilhelm Kaalund (१८१८-८५), ६ Christian Knud Frederik Molbech (१८२१-८८)

तब उसने अपना नाटक 'अम्ब्रोसियस' लिखा। वह उसी नाम के डेनी कवि के जीवन के आधार पर था। उसका वह नाटक बडा सफल हुआ। हान्स पीटर होल्स[१] ने कुछ अत्यत मधुर कविताए छोडी है। उसने कुछ नाटक भी लिखे, पर वे असफल रहे। जोर्गेन विलहेल्म ओटो बर्गसी[२] प्राण-विज्ञान का पडित था परतु आखे खराब हो जाने के कारण वह साहित्य मे आया। उसने कुछ उपन्यास और लिरिक लिखे। कई खडो मे प्रकाशित उसके सस्मरण सुन्दर है।

जोहान क्रिस्टियन ब्रास्बोल[३] ने अपनी सारी कृतिया कारित एटलर[४] नाम से प्रकाशित की। उसने बडे लोकप्रिय उपन्यास लिखे। उसने ऐतिहासिक उपन्यासो मे विशेष सफलता पाई। उसकी वर्णन शक्ति बडी ही प्रभावोत्पादक थी। उसके कुछ उपन्यास निम्न-लिखित है—'कबीले का सरदार', 'क्वीन्स गार्ड का नायक', 'गढो की कहानिया', 'काले का कैदी'। इनके अतिरिक्त उसने कुछ कॉमेडी नाटक भी लिखे। हरमान फ्रेडरिक इवाल्ड[५] अपने पहले ही उपन्यास से विख्यात हो गया। उसने भी अधिकतर ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। उनमे मुख्य ये थे—'वाल्डेमार का हमला', 'क्राम्बोर्ग मे स्वीड', 'क्रुड गिल्डेन्स्ट्यर्न', 'नील्स ब्राहे।'

क्रिस्टियन लुडविग एडवर्ड लेम्बके[६] लिरिककार था और उसने कुछ सुन्दर राष्ट्रीय गीत लिखे। परतु वह प्रसिद्ध शेक्सपियर के नाटको के अपने अनुवाद से हुआ। एरिक बोग[७] नाटककार था। १८५० मे उसने अपना पहला नाटक 'नये दिन की रात' प्रकाशित किया। 'जनता का पत्र' मे उसने सशक्त सम्पादकीय लिखा, जिनका प्रकाशन 'यह और वह' नाम से हुआ। उसके नाटको मे प्रसिद्ध 'लैन्टेन पार्टी' है। उसने अनेक हास्य कहानिया लिखी, जिनमे 'बेर्तेल और गधा' बडी सुन्दर है। उसने उपन्यास और सस्मरण भी लिखे।

हान्स इगेड शैक[८] राष्ट्रवादी था और डेन्मार्क के राजनीतिक सघर्ष मे भाग ले चुका था। बहुत दिनो तक उसके विचार कल्पना और यथार्थ के बीच मडराते रहे। अन्त मे उसने यथार्थ को स्वीकार किया और अध्यात्म का खोखलापन प्रमाणित करने के लिए अपना उपन्यास 'काल्पनिक' लिखा। यह डेन साहित्य का सभवत पहला यथार्थवादी उपन्यास था। निकोलाज के नाम से कार्ल हेन्रिक शार्लिग[९] ने भी हास्यात्मक उपन्यास लिखे।

---

१. Hans Peter Holst (१८११-९३), २ Jorgen Vilhelm Otto Bergsoe (१८३५-१९११); ३ Johan Christian Brosboll (१८१६-१९००), ४. Carit Etlar, ५. Herman Frederik Ewald (१८२१-१९०८), ६ Cristian Ludvig Edward Lembeke (१८१५-९७), ७. Erik Bogh (१८२२-९९), ८ Hans Egede Schack (१८२०-५९); ९. Carl Henrik Scharling (जन्म १८३६)

विलहेल्म टोप्सो[1] पत्र सम्पादक था। उसकी कलम मे बडा तीखापन था। वह साधारण शैलीकार माना जाता है। उस देश के साहित्य मे वही यथार्थवाद का प्रचारक हुआ। उसकी कहानियो के पाच सग्रह उसकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुए।

कुछ काल से डैनी साहित्य मे शिथिलता आ गई थी। जार्ज ब्रैडिज[2] ने उसे पुनरुज्जीवित करने का प्रण कर लिया। भावो की स्वतत्रता की प्रेरणा उसे दार्शनिक ब्रोश्नर[3] से मिली थी। डेन्मार्क मे उस काल हीगल आदि दार्शनिको के दृष्टिकोण के अनुकूल और प्रतिकूल अनेक विचारधाराए एक दूसरे के विरुद्ध टकरा रही थी। ब्रेडिज को भी पहले उस कशमकश मे पडना पडा। अन्त मे उसने केवल तर्क और बुद्धि को स्वीकार किया। हाइबर्ग, पालुदान-मीलर, इब्सन सभी पर उसने आघात किया। इन विचारो के परिणामस्वरूप उसकी दो प्रखर कृतियो का प्रकाशन हुआ—'रसो का अध्ययन', 'आलोचनाए और चित्र' (१८७०)। उसने अपने यूरोपीय भ्रमण मे जर्मनी के रोमाटिक आन्दोलन, फ्रास की प्रतिक्रियात्मक प्रवृत्ति और इग्लैड के प्रकृतिकवाद का सैद्धातिक विस्तृत विवेचन अपने विशद ग्रथ 'उन्नीसवी सदी की प्रधान साहित्यिक प्रवृत्तियो' मे किया। उसके आलोचना-चित्र 'सोरेन की एर्कगार्द' डेन्मार्क के कवि, इसाइया तेग्नर, डिजरेली, लासाल आदि पर प्रस्तुत हुए। अनेक साहित्यिक विषयो पर दिए उसके व्याख्यानो के सग्रह पुस्तक रूप मे प्रकाशित हुए। ब्रेडिज ने तत्काल अपने साहित्य और समाज पर अपने विचारो का प्रभाव डाला और अनेक युवा चितक और साहित्यकार और आलोचक उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए। उसने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। परतु उसका कार्य उसके अनुयायियो की शक्ति के परे था।

होल्गर हेन्रिक हरहोल्ट द्राकमान[4] चित्रकला के क्षेत्र से साहित्य मे आया। उसने पहले अपनी कविताए प्रकाशित की। जिनकी ब्रेडिज ने प्रशसा की। उसने साहित्य के सभी अगो का अपनी प्रतिभा से गठन किया। उसकी कृतियो मे प्रधान थे—'तानहाउसेर' (उपन्यास), 'सीमा के दक्षिण से' (स्कैच) और 'सागर के गीत'। उसकी रचनाओ का विस्तार बहुत बडा है। उसके नाटको मे मुख्य 'एक समय' है। भाषा पर उसका असाधारण अधिकार था। वह उन्नीसवी सदी के पिछले काल के प्रधान कवियो मे है।

लियोपोल्ड बुडे[5] जनता का साहित्यकार था। उसने जन हिताय लिखा। जन विषयक लिखा। 'क्रिस्मस की शाम के चित्र' और 'तरुण काल से' की शैली बडी सुघड है। जकारिया निलसन[6] ने भी अपनी स्वतत्र शैली विकसित कर ली थी। वह मुर्दारिस था

---

१ Vilhelm Topsoe (१८४०-८१), २ Georg Morris Cohen Brandes (१८४२-१९२७), ३ Brochner, ४ Holger Henrik Herholt Drachmann (१८४६-१९०८), ५ Leopold Budde (१८३६-१९०२), ६ Zakarias Nielsen (जन्म १८४४)

और उसकी कविताए आज भी स्कूलो मे पढी जाती है। 'मिलन' उसका ऐसा ही लिरिक है। उसकी कविताए बडी ही सरल होती थी। वह स्वय बडा सहृदय था।

रोजेन्बर्ग[1] मुख्यत साहित्यिक और नाटकीय आलोचक था। अपने लेखो और 'नई सदी' द्वारा उसने ब्रैंडिज और उसके क्रातिकारी विचारो का विरोध किया। 'नई सदी' नाट्य कृति थी। उसके अन्य नाटक थे—'हनिग तोन्डोर्फ,' 'समुद्री नगर' आदि। उसने दर्शन और जीवन चरित सबधी पुस्तके भी लिखी। वह कोपेनहागेन के राजकीय थियेटर का डायरेक्टर था। उस अधिकार से और नाट्यालोचक के नाते उसने डेन्मार्क के नाटको और नाट्यकारो पर पर्याप्त अनुशासन रखा। अल्फ्रेड इप्सेन[2] पहले ब्रैंडिज के शिष्यो मे था फिर उनसे अलग होकर उसने अपने गुरु पर ही प्रहार किया। वह कवि था और उसका 'हरे पथ के बराबर' कविताओ का सग्रह था। उसका दूसरा सग्रह 'सॉनेट और गीत था। उसका नाटक 'मैफिस्टोफेलिज' नितान्त गम्भीर कृति है। 'कल्पना देश की कहानिया' भी उसकी बडी उत्कृष्ट रचना है। और यात्रा-वृत्तात के क्षेत्र मे उसका 'हालैंड' अनुपम है।

जाकब्सन[3] वनस्पति शास्त्र का विद्वान था और डारविन का शिष्य था। उसने उसके ग्रथो का डेनी भाषा मे अनुवाद किया। वह भाषा का जादूगर था और ब्रैंडिज के अनुयायियो मे था। उसके उपन्यासो—'मारी ग्रुबे' और 'नील्स लिह्ने' मे उसकी भाषा खुल पडी है। उसने कहानिया और सुन्दर कविताए भी लिखी। कार्ल ग्येलेरुप[4] भी ब्रैंडिज के शिष्यो मे था। उसकी पहली कृति 'आदर्शवादी' थी। डार्विन की मृत्यु पर उसने एक अतीव सुन्दर कविता (मरसिया) लिखी। ग्रीस से लौटकर वह ब्रैंडिज के दल का विरोधी हो गया। धीरे-धीरे वह बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुआ और उसकी पिछली रचनाओ पर इस नई चेतना का खासा असर पडा। उसकी सुन्दरतम कृतियो के विषय नोर्दिक कथानको से चुने गए थे। जैसे 'ब्रिनहिल्ड' 'हागबार्ट' और 'सिगने बुथहोर्न'। 'बुथहोर्न' उसका उत्कृष्ट नाटक था।

हेन्रिकपोन्टोपिदान[5] सर्वथा डेनी है। उसकी प्रधान कृतियो के नाम है—'सस्मरण', 'पृथ्वी', 'प्रतिश्रुत देश', 'कयामत का दिन', 'भाग्यवान पर'। सोफस शैन्डोर्फ[6] ब्रैंडिज के शिष्यो मे था और खरा यथार्थवादी था। उसने उपन्यास और कहानिया लिखी। सोफस बॉदित्स[7] ने भी सुन्दर कहानिया लिखी। हरमान जोखिम बाग[8] कोपेनहागेन के अनेक

---

१ P A Rosenberg (जन्म १८५८), २ Alfred Ipsen (जन्म १८५२), ३ I P Jacobsen (१८४७-८५), ४ Karl A Gjellerup (जन्म १८५७), ५ Henrik Pontoppidan (जन्म १८५७), ६ Sophus Sehandorph (१८३६-१९०१), ७ Sophus Bauditz (जन्म १८५०), ८. Herman Joachim Bang (जन्म १८५७)

दैनिक पत्रो मे लिखता था जिससे उसकी शैली मज गई थी। उसके पहले नाटक 'निराश पीढिया' ने लोगो मे उथल-पुथल मचा दी। उसने अनेक कहानिया और उपन्यास लिखे। उनमे प्रधान है—'एकाकी निवासी', 'जुए के नीचे'। वह रोजमर्रा का जीवन बिना छिपाए खोलकर रख देता था जिससे समाज मे हलचल मच जाती थी। उसने वह देखा जो किसीने नही देखा था। उसने वह कहा जो किसीने नही कहा था। उसपर बाल्जाक[1], जोला[2] और ब्रैंडिज[3] के प्रकृतिवाद का गहरा प्रभाव पडा था।

कार्ल ईवाल्ड[4] ने अनेक कहानिया, यात्रा-वृत्तान्त आदि लिखे। उसकी सुन्दरतम कृतिया 'परियो की कहानिया' है। कार्ल लार्सेन[5] की आरम्भिक कृतिया दो नाटक—'इज्जत' और 'नारिया' थी। फिर उसने कहानिया और ख्याते लिखी। उसने विवाह सबधी कहानिया भी लिखी। वह भाषा और मनोवैज्ञानिक चित्रण का माहिर था। गुस्ताव जोहान्स वीड[6] की पहली ही पुस्तक 'छाया चित्र' काफी सफल हुई। फिर तो उसने अनेक कहानिया, उपन्यास और नाटक लिखे। उसका उत्कृष्ट उपन्यास 'बालवत् आत्माए' है। और सफल नाटक 'पीढी' और 'जीवन की शठता'। उसने अभिजातकुलीयो, पादरियो, मध्यवर्गियो और किसानो पर चार 'व्यग्य' लिखे। वीड हास्यकार है, समर्थ और प्रखर व्यग्यकार।

जोहान्स जोर्गेन्सन[7] ने 'कविताए' प्रकाशित कर उनके अभिराम सौंदर्य द्वारा लोगो का ध्यान तत्काल आकृष्ट किया। उसने अपनी कहानिया 'ग्रीष्म' और 'जीवन तरु' मे फ्रेंच प्रतीकवाद की शैली प्रस्तुत की। प्रतीकवाद की परिणति उसके कविता-सग्रह 'भाव' और पत्रिका 'स्तम्भ' मे हुई। बाद मे वह रोमन कैथोलिक हो गया और उस चेतना से अनुप्राणित कविताए लिखने लगा। 'जीवन का झूठ-सच', 'आखिरी दिन' 'कविताए', 'आसमान का सूत' 'कवि' आदि उसी दिशा मे रचे गये। जेपे आकजीर[8] जटलैण्ड के विशिष्ट कवियो मे था। उसने लिखा भी अनेक बार जूटो की ही भाषा मे। वह ब्लिखर और राबर्ट बर्न्स से प्रभावित है। उसकी कविताए प्रकृतिपरक है। उसने कुछ उपन्यास भी लिखे।

जोहान्स क्नुडसेन[9] ने अधिकतर उपन्यास लिखे। उसके उपन्यास 'बूढा पादरी' को समाज विरोधी कहकर कटु आलोचना की गई। इससे उसने और प्रौढ कृयिया प्रस्तुत की। 'बोना', 'काटना', 'मन', 'उरूप', 'शिक्षक'। वह डेनी साहित्य मे अपना स्थान रखता है। उसने समाज की रूढियो और परम्परागत आचारो का अपनी कृतियो मे भडाफोड

---

१. Balzac, २. Zola, ३ Brandes, ४ Carl Ewald (१८५६-१९०८), ५ Karl Larsen (जन्म १८६०), ६ Gustav Johannes Wied (जन्म १८५८), ७ Johannes Jorgensen (जन्म १८६६), ८ Jeppe Aakjaer (जन्म १८६६); ९ Johannes Knudsen (जन्म १८७८)

किया। उसकी भाषा सुन्दर और शैली शक्तिम है। जेहान्स वी० जेन्सेन[1] साहित्य के क्षेत्र मे अपना उपन्यास 'डेन' लेकर उतरा। परन्तु आलोचको का ध्यान आकृष्ट न कर सका। फिर उसने अन्य उपन्यास लिखे—'आइनर एल्कजीर', 'हिमरलैड के लोग', फिर ऐतिहासिक उपन्यास—तीन एक ही जिल्द मे—'बादशाह का पतन', (क्रिश्चियन द्वितीय सबधी)। फिर उसने हिमरलैड की 'नई कहानिया', 'पहिया' आदि लिखे। उसके 'अमरीकी महाद्वीप' और उसका 'उपनिवेशीकरण' पर उसे नोबुल पुरस्कार मिला। डेनी साहित्य के अपने युग का वह विशिष्ट प्रतिनिधि माना जाता है।

हान्स लासेन मार्तेन्सन[2] न केवल धर्म के क्षेत्र मे प्रत्युत विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र मे भी असामान्य कोटि का रचयिता हो गया है। वह पहले हीगेल आदि जर्मन दार्शनिको के प्रभाव मे आया। उसका नाम सुनकर यूरोप के दूर देशो से विद्यार्थी कोपेनहागेन आने लगे। जहा मार्तेन्सन धर्म का दर्शन पढाता था। उसका ग्रथ 'एथिक्स' उसके पाण्डित्य का प्रमाण है। उसकी अन्तिम कृति उसके सस्मरण 'मेरे जीवन' से थी। विल्हेल्म बेक[3] ने भी अपने सस्मरण लिखे। उसके उपदेश और प्रवचन उसके काल के धार्मिक आन्दोलन के प्राण बन गए। वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए। ऑल्फर्ट रेकॉर्ड[4] के प्रकाशन भी उसी दिशा मे हुए। उसके राष्ट्रीय और आध्यात्मिक गीत कविता की दृष्टि से बडे मधुर और प्रभावोत्पादक है। उसकी विशिष्ट कृति 'शका और श्रद्धा' है।

बीसवी सदी मे मार्क्सवादी प्रेरणा से प्रभावित अनेक साहित्यकारो ने अपनी प्रतिभा से डेनी साहित्य का नया विकास किया है। उनमे से कुछ निम्नलिखित है—मार्टिन ऐण्डर्सन निकसो, हान्स कर्क, हान्स शेरफिग, ओटो गेल्स्टेड, हिल्मर वुल्फ, विलियम हाइनेसेन। ये सभी पिछले युद्धकाल मे हिटलर के बदी रहे है। पर नात्सी इनका स्पिरिट तोड न सके। इन्होने निरतर यातनाए सही परतु उनकी आवाज उनके ऊपर उठ-उठकर आक्राताओ को धिक्कारती ही रही। ये विदेशी सत्ता से अपनी आजादी के लिए सघर्ष करते रहे। इनमे सबसे महान् ८४ वर्ष का निकसो है। शाति के पक्ष मे उसकी आवाज यूरोप मे सबसे ऊची उभर रही है। वह विश्वशाति काउन्सिल का सदस्य है, स्तालिन पुरस्कार की 'जूरी' का भी सदस्य है, निकसो डेनी साहित्य का आज प्रधान व्यक्ति है। नात्सी शासन मे उसे भी 'कान्सेन्ट्रेशन कैम्प' मे रहना पडा था। वह उस देश का आज सर्वप्रिय साहित्यकार है। वह मजूरवर्ग से उठा है, उसने कारखानो मे काम किया है। उसका बृहद् उपन्यास 'जीवन के गान' अभी हाल ही मे प्रकाशित हुआ है। वह लिखता है कि मेरे उपन्यास का उद्देश्य, आजादी, शाति और जनतत्र के लिए सघर्ष करने वाली जनता का चित्रण करना है।

---

१. Johannes V Jensen (जन्म १८७३), २ Hans Lassen Martensen (१८०८-८४), ३. Vilhelm Beck (१८२९-१९०१), ४. Olfert Ricard (जन्म १८७२)

हान्स कर्क ने अपना बडा उपन्यास 'गुलाम' द्वितीय महासमर के पहले लिखा था। उसे नात्सियो ने पाडुलिपि की अवस्था मे पाकर जला डाला। कर्क 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' मे डाल दिया गया। उसने वह उपन्यास फिर लिख डाला। फिर हस्तलिपि नात्सियो ने नष्ट कर दी। उसने उसे फिर लिखा। वह उस साहित्य का प्रधान यथार्थवादी है। वह अपनी कैद से निकल भागा था। हान्स शेरफिग ने अपना उपन्यास 'अफसर जो अन्तर्धान हो गया' लिखकर निम्न मध्य वर्ग पर गहरा व्यग्य किया। उसका दूसरा उपन्यास 'आदर्शवादी' आदर्शवादियो का कच्चा चिट्ठा उपस्थित करता है। ऑटो गेल्स्टेड बडा समर्थ कवि है। उसकी अत्यत शक्तिम कविताओ का सग्रह 'उठो दीप जला दो' है। उसने अपनी कविता 'हमारी चेतना का चोर नात्सीवाद' लिखकर अनेक डेनी फासिस्टो का चोर बाहर निकालकर रख दिया। हिल्मर वुल्फ सुन्दर प्रगतिशील कहानिया लिखता है। उसकी एक कहानी 'तुम भूले नही जा सकते' अत्यन्त मार्मिक है। विलियम हाइनेसेन उपन्यासकार है। उसका उपन्यास 'काली कढाई' मध्यवर्गीय समाज के आचारो पर उत्कट व्यग्य है। वह युद्ध विरोधी है। उसका यह उपन्यास भी युद्धवाद मे विरुद्ध अपना नारा बुलन्द करता है।

उपर्युक्त दो पैरो मे उल्लिखित साहित्यकार सभी जीवित है। सभी प्रगतिशील। इनसे डेनी साहित्य का क्षेत्र प्रकाशित है।

१३. तुर्की साहित्य

भाषा की दृष्टि से तुर्की अल्ताई विभाग का अग है और उसकी गणना मगोली तथा तुगुसी जवानो के साथ होती है। तुर्की का उल्लेख पाचवी सदी के चीनी साहित्य मे मिलता है। तब से तुर्की भाषा की अनेक बोलिया मध्य एशिया और बाल्कन के देशो मे बोली जाती रही है।

प्राचीनतम तुर्की साहित्य का उदाहरण मध्य एशिया के कुछ अभिलेखो से मिलता है। उनमे से एक सस्मरणात्मक है जो खान बिलगा[१] के भाई शाहजादा कुल तेगिन[२] की यादगार मे ७३२ ई० मे चीनी सम्राट् द्वारा खुदवाया गया था। मध्य एशिया के तुर्की साहित्य की एक मजिल महमूद काशगरी[३] के कोष 'दीवाने लुगति-त-तुर्क' (१०७३) है। उस कोष मे शब्दो के अर्थ के साथ ही अरबी मे उनकी परिभाषा और उनके प्रयोग के उदाहरण दिए गए है।

उस काल की साहित्यिक भाषा 'उइगुर' तुर्को की भाषा है। और उसका विशिष्ट उदाहरण यूसुफ खास हाजिब[४] का ग्रन्थ 'कुदात्कू विलिक' है। ग्रन्थ १०७० मे लिखा गया था और ६५०० पक्तियो के काव्य रूपक मे आचार और राजनीति का विवेचन करता है। उसपर फारसी का प्रभाव स्पष्ट है। उइगुर साहित्य का दूसरा उदाहरण 'बहतियारनामा' (बख्तियार चरित) है। उसमे १० वजीरो की कहानिया सगृहीत है जिनका उद्गम हिन्दुस्तान है। 'मीराजनामा' उसी प्रकार की एक अन्य कृति है, जिसमे मुहम्मद की सातवे बहिश्त की यात्रा का वर्णन हुआ है।

तुर्की की चग़ताई बोली मे 'बाबरनामा' और 'शेजेरेई-तुर्क' जाने हुए ग्रन्थ है। इनमे पहला तो मुगल विजेता बाबर के अपने सस्मरण प्रस्तुत करता हे और दूसरा अबुल गाजी बहादुर खा[५] का लिखा तुर्की का इतिहास है।

पश्चिमी तुर्की साहित्य 'उस्मानली' अथवा 'उत्तमान' तुर्को से सबन्ध रखता है। उसका पहला युग १३०० ई० से १४५० ई० तक है। इस बीच उस्मानली-राष्ट्र की शक्ति बढी और प्रतिष्ठित हुई थी। सेल्जुक तुर्को के साहित्य पर फारसी की गहरी छाया पडी थी। इसीसे जलालुद्दीन रूमी तक ने अपना 'मस्नवी' फारसी मे लिखा। उसके बाद उस्मानली-

---

१ Khan Bılga , २. Kul Tegın ; ३ Mahmud Kashgarı ; ४. Yusuf Khas Hajıb (Khass Hadjıb) , ५ Abul Gazı Behadur Han (Aboul-Ghazı Behadour Khan.)

तुर्को ने जनता की बोली तुर्की मे लिखना शुरू कर दिया था। यूनुस एम्रे[1] ने अपना 'मस्नवी' तुर्की मे ही लिखा। वह आज तुर्की का पहला महान् राष्ट्रीय कवि माना जाता है। उस भाषा मे दूसरा महत्व का ग्रन्थ सुलेमान चेलेबी[2] ने लिखा। ग्रन्थ हज़रत मुहम्मद की प्रशस्ति के रूप मे है और 'मौलीदी-शरीफ' कहलाता है। इसकी लोकप्रियता रचना के दिन ही प्रतिष्ठित हो गई थी—जो आजतक अक्षुण्ण बनी है।

इन दो विशिष्ट कृतियो के बावजूद भी तुर्की साहित्यकार बराबर अपने मॉडलों के लिए फारसी और अरबी की ओर देखा करते थे। तुर्की साहित्य का सबसे सक्रिय युग मुराद द्वितीय का शासनकाल (१४२१-५१) है। मनीसा के अपने दरबार मे मुराद ने दूर-दूर के कवियो, दार्शनिको और विद्वानो को एकत्र कर लिया था। अपनी अध्यक्षता मे ही उसने तुर्की मे अनेक अरबी और फारसी ग्रन्थो का अनुवाद कराया। वस्तुत. यही कारण था कि तुर्की प्राय चार सदियो तक फारसी और अरबी की चेरी बनी रही।

१४५० और १८५९ का काल तुर्की साहित्य का दूसरा युग है। १४५३ मे फतह मुहम्मद ने कुस्तुन्तुनिया जीत कर पूर्वी रोमन साम्राज्य का अन्त कर दिया। तबसे तुर्की साहित्य विशेषत काव्य के रूप मे विकसित हुआ और फारसी की मदद से जन-बोली को साहित्यिक अलकृत भाषा की प्रतिष्ठा मिली। इस काल चार कवि विशेष विख्यात हुए—फजली[3], बाकी[4], नफी[5] और नदीम[6]।

अपनी शायरी मे इन कवियो ने अधिकतर 'गजल' का प्रयोग किया है। 'कसीदा' का उपयोग भी उसी मात्रा मे हुआ है जिस मात्रा मे 'गजल' का। 'मस्नवी' वस्तुत प्रबन्ध अथवा वीर-काव्य (एपिक) का नाम है।

उस युग का सबसे बडा कवि शेख गालिब[7] था जिसने 'हुस्न इश्क' (सौन्दर्य और प्रणय) लिखा। वह कविता खुदा की मुहब्बत का रूपक है जिसमे मानव प्रेम को अतत उद्देश्य माना गया है। गालिब ने यह मस्नवी केवल २१ वर्ष की आयु मे लिखा था।

उस युग का साहित्य विशेषत काव्य मे है, फिर भी इति हासो का उसमे काफी निर्माण हुआ है। सैदुद्दीन[8] ने अपने ग्रन्थ 'ताकूत तवारीख' मे उत्तमन तुर्को का इतिहास प्राचीनतम से १७वी सदी के अपने युग तक लिखा है। उसमे तवारीख-नवीसो की एक सूची दी गई है। नाइमा[9] उस काल का सबसे बडा इतिहासकार है जिसने अपना इतिहास 'तवारीख' कई खडो मे लिखा था। फिर भी वह केवल १५९१ और १६५९ के बीच की घटनाए ही व्यक्त कर सका। जेवदेत[10] का 'तवारीख' जो १२ खडो मे प्रस्तुत

---

१ Yunus Emre, २ Syleyman Chelebı, ३. Fuzulı (मृ० ल० १५६२); ४ Bakı (१५२६-१६००), ५ Nefi (मृ० ल० १६३५) ६ Nedım (मृ० १७३०), ७ Shekh Galıb (१७५७-९९), ८ Saduddın, ९ Naıma; १०. Jevdet

हुआ, १९वी सदी के केवल २६ वर्षो की घटनाए क्रमबद्ध कर सका। इन तवारीखो के गद्य की एक अपनी शैली है और अधिकतर वह उसी 'सैज' शैली मे लिखे गए है।

१९वी सदी के मध्य तुर्की मे नई क्रातिकारी प्रवृत्तियो का उदय हुआ। तुर्की साम्राज्य तेजी से लुप्त हो चला। फ्रेंच साहित्यिक प्रभाव भी तुर्की साहित्य पर पडा। उस प्रभाव के प्रवर्तक विशेषत शिनासी एफेदी,[१] जिया पाशा[२] और नामिक कमाल[३] थे। फ्रेंच क्रान्तिकारी भावनाए धीरे-धीरे तुर्की मे भी राष्ट्रीयता, देश-प्रेम और आजादी के प्रेरक बनी। नये लेखको मे विशिष्ट नामिक कमाल था। उसने 'वतन' नाम का नाटक लिखा। जब वह स्तम्बूल के थिएटर मे खेला गया तब सुल्तान को उसके दृश्यो से इतना डर लगा कि उसने अपनी रक्षा के लिए थिएटर बद करवा दिया। नाटक जब्त कर लिया और उसके रचयिता कमाल को निर्वासित कर दिया। अब तुर्की साहित्य अपने को फारसी और अरबी की शृखला से मुक्त कर चला था और यूरोपीय विद्रोही विचारो का अनुगत हो चला था।

ओत्तमान साम्राज्य के उस अन्तिम युग के तुर्की साहित्य मे उपन्यास, आधुनिक ड्रामा, निबन्ध और अन्य विविध यूरोपीय साहित्यिक रूपो की रचना हुई। नामिक कमाल विद्रोही कवि था और जब उसकी कविताए जब्त कर ली गई तब सालो लोग हाथ से उनकी नकल कर छिपे तौर से उनका प्रचार करते रहे। अहमद मिधात[४] का प्रभाव भी तुर्की साहित्य पर बडा था परन्तु उसने सुलतान से राजनीतिक समझौता कर लिया। इससे एक लाभ जरूर हुआ कि उसकी बीसियो कृतिया आम जनता मे चलती रही और उदीयमान लेखक उनसे अपनी प्रेरणा जन साधारण की भाति ही लेते रहे।

'नया साहित्य' (अदीबियाते जदीद) आन्दोलन उस युग के महत्त्वपूर्ण अदबी-आदोलनो मे था। उसका नेता तौफीक फिकरत[५] था। वह असाधारण देशभक्त और आदर्शवादी था। उसने तुर्की मे अनेक शैलियो का प्रयोग किया। उसने फारसी से लेकर असामान्य शब्दो का इस्तेमाल किया है। उसकी कविताओ के सग्रह का नाम 'रुबाबे शिकस्त' (टूटी तत्री) है। उस युग का दूसरा कवि प्रसिद्ध अब्दुलहक हमीद[६] था जिसकी पत्नी की स्मृति मे लिखी कविता 'मकबर', तुर्की साहित्य मे 'क्लासिक' मानी जाती है।

हालिद जिया[७] तुर्की का पहला विशिष्ट उपन्यासकार है। उसकी कृति 'मै वे सियाह' के कई सस्करण हो चुके है।

पहले पहल उसी युग मे पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन शुरू हुआ। जिया गोक आल्प[८] ने अपने अध्ययन और सूझ से देश की शिक्षा मे क्रातिकारी परिवर्तन किए। प्राचीन तुर्की

---

१ Shınası Efendı, २. Zıya Pasha, ३ Namık Kemal, ४ Ahmed Mıdhat, ५. Tovfik Fıslıet (१८६७-१९१५), ६ Abdul Hak Hamıd, ७. Halıd Zıya, ८. Zıya Gok Alp

समाज का उसका अध्ययन अप्रतिम था। इसी काल जाति का पुराना नाम 'ओस्मानली' बदलकर तुर्क कर दिया गया। पहले 'तुर्क' शब्द का उपयोग अशिष्ट, खानाबदोश के अर्थ मे होता था। उसका अच्छे अर्थ मे प्रयोग पहली बार १८७५ के लगभग सुलेमान पाशा[१] ने अपने ससार के इतिहास (तारीख-ए-आलम) मे किया।

१९२३ से तुर्की साहित्य मे वर्तमान काल का आरभ होता है। उस काल 'खिलाफत' का अत कर तुर्की प्रजातत्र का सूत्रपात हुआ, और एक नई राष्ट्रीयता का श्रीगणेश हुआ। इस युग मे दो आदोलन चले। एक तो तुर्क जाति की महत्ता मे विश्वास था, दूसरे ससार के क्लासिकल साहित्य मे विशेष रुचि का आविर्भाव। मुस्तफा कमाल अतातुर्क[२] के नेतृत्व मे तुर्कों ने अपने प्रागिस्लामी इतिहास का सिहावलोकन किया और तुर्की भाषा को सारी भाषाओ का मूल तथा तुर्की सभ्यता को सारी सभ्यताओ का आधार माना। इस अर्थ मे एक सस्था 'तुर्कियात एन्स्तितूसू' कायम हुई और मुहम्मद फुआद कोपरूलू[३] की अध्यक्षता मे तुर्की सस्कृति पर अनेक जिल्दे प्रकाशित हुईं। साथ ही लोक साहित्य मे भी लोगो की रुचि बढी। उस दिशा मे भी पर्याप्त कार्य हो चुका है। साथ ही ससार के सारे साहित्यो से उत्कृष्ट ग्रन्थो के अनुवाद भी हो रहे है।

तुर्की के वर्तमान साहित्य मे उपन्यास ने विशेष प्रगति की है। जीवन को प्रतिबिंबित करने और विचारो का प्रचार करने वाले दोनो प्रकार के उपन्यास वहा लिखे गए है। आधुनिक उपन्यास का उदाहरण हलीदा अदीब के 'विदूषक' और 'उसकी कन्या' है।

इधर हाल मे लोक साहित्य को एकत्र और प्रकाशित करने का प्रयत्न हो रहा है। इस दिशा मे काम हुआ भी पर्याप्त है। लोगो ने उस काम मे रुचि भी काफी दिखाई है। उस साहित्य का प्रधान अग उसकी कथाए (मसल) है। ये दो प्रकार की है—एक तो वे जो हजरत अली और सैयद गाजी बत्ताल[४] के वीर कृत्य प्रगट करती है। दूसरी वे जो काव्यबद्ध है और अनेक प्रकार से 'कौर ओग्लू' (अन्धे के बेटे) की कहानी प्रस्तुत करते है। जनसाधारण को इन कहानियो से इतना प्रेम है कि इनके सस्करण उस देश के उपन्यासो से सख्या मे प्राय दस गुना होते है। तुर्की मे ये कथाए सदियो लोकप्रिय रही है, पर इनका लोप होता गया है। अब प्रकाशन के कार्य ने फिर इन्हे लम्बी आयु दी है।

तुर्की साहित्य मे विनोद और हास्य भी पर्याप्त है, अनेक कहानियो मे मर्द और औरत की बुद्धिमानी या धूर्तता का चित्र खीचा गया है। हास्य का बहुत-सा जाना हुआ साहित्य तो गाव के मौलवी नासिरुद्दीन खोजा[५] के नाम से सबद्ध है। वह इतना लोकप्रिय है कि लेखो

---

१ Suleyman Pasha ; २ President Mustafa Kemal Ataturk ; ३. Mehmed Fuad Koprulu ; ४ Seyid Gazi Battal ५ Nasreddin Khoja

और व्याख्यानो को स्पष्ट करने के लिए अक्सर लोग उसकी 'मसलो' से मिसाल दिया करते है। एक मजे की कहानी यह है कि नासिरुद्दीन खोजा को हर जुम्मा को मस्जिद मे व्याख्यान देना पडता था। वह उससे बचना चाहता था। उसने एक उपाय ढूढ निकाला। अपने सुनने वालो से वह पूछता—क्या तुम्हे मालूम है मैं किस विषय पर आज उपदेश दूगा ? उनके 'नही' कहने पर वह कहता—फिर उस विषय पर क्या बोलना जिसे तुम-हम जानते ही नही ! और चला जाता। दूसरी बार वह वही प्रश्न करता और स्वाभाविक ही उत्तर मिलता—हा ! तब वह कहता—फिर ऐसे विषय पर क्या उपदेश देना जो तुम जानते ही हो ! अब उसके सुनने वालो मे से (उसे परास्त करने के विचार से तीसरी बार जब प्रश्न करता) उत्तर मे कुछ कहते हा और कुछ कहते न, तब वह कहता, फिर उसके कुछ कहने की आवश्यकता नही। बस जो जानते है वे नही जानने वालो को बता दें।

ड्रामा मे आज के तुर्की ने खास दिलचस्पी दिखाई है। पिछली सदी मे मोलिए[1], शेक्सपियर आदि के नाटको के तुर्की भाषा मे अनुवाद हो गए थे। धीरे-धीरे अन्य भाषाओ से भी नाटको के अनुवाद हुए और अब प्राय ससार के सभी साहित्यो के प्रधान नाटक वहा के रगमच पर खेले जाते है, कम से कम पढे तो जाते ही है।

तुर्की-साहित्य को समृद्ध नही कहा जा सकता। उसमे न तो अरबी-फारसी की काव्य-सपदा या दार्शनिक चिन्तन राशि है न यूरोपीय साहित्यो की विचार-प्रतीकता। उसका जो कुछ दार्शनिक साहित्य है अधिकतर अरबी-फारसी से आया है। यूरोपीय दृष्टिकोण का वितत्वन पश्चिमी आधार से उठा है। इन क्षेत्रो मे तुर्की साहित्य की अपनी देन नही के बराबर है। परन्तु उसका लोकसाहित्य, विशेषत हास्यपरक, असाधारण है और कम से कम हास्यपरक लोकसाहित्य के क्षेत्र मे तो एक मात्रा मे अरबी और फारसी भी उसके ऋणी है।

---

१. Molière

१४. नार्वे का साहित्य

नार्वे को प्रकृति ने अपने हाथो सवारा है। यूरोप का वह प्राय उत्तरतम देश है। आधी रात को वहा सूर्य चमकता हे और उषाकाल मे उत्तरी क्षितिज पर लघुतम अग्नि-पिण्ड उछलते है, अनन्त तारिकाए ज्वलन्त स्वर्णमयी नीहारिकाओ के रूप मे निरन्तर उछलती, टूटकर बिखरती रहती है। ऐसा नार्वे स्वाभाविक ही कवि की चेतना को जाग्रत करेगा। नार्वे के साहित्य का प्रारभिक काल इसी कारण अपने अनूठे प्राकृतिक वातावरण मे गायन का अभिराम स्वर लिए उतरा।

३३० ई० पू० जब ग्रीक पीथियस् इग्लैड और स्कॉटलैड के समुद्रतट से नार्वे पहुचा तब उस देश मे आवादी का नाम न था। वर्फीले प्रसार पर प्रकृति जैसे सोती थी, जो जब-तव बनैले जानवरो की उछल-कूद मे अगडाती, फिर सो जाती। नार्वे मे मनुष्य की बस्तियो का विशेष विकास ईसा की प्रारभिक सदियो मे हुआ, और तब से उसकी आवादी निरन्तर वढती गई, यद्यपि जीने के साधन नार्वे के उन निवासियो के पास कम थे। यही कारण है कि उन्होने आसपास के देशो पर हमले शुरू किए। पास कुछ खाने को न था और समुद्र-तट का जीवन उनके लिए ऐसा स्वाभाविक था जैसा मछलियो का होता है। इससे माझी बनने मे उन्हे किसी प्रकार की अडचन न पडी।

नार्वे का आकार-प्रकार बडा है पर आवादी थोडी है। वह आबादी भी अन्य देशो मे एक बडी सख्या मे बिखरी हुई है। इग्लैड और अमेरिका मे उसकी एक पर्याप्त सख्या है, और प्रचुर सख्या समुद्र पर है। समुद्र-पर्वत और 'फ्योर्द' नार्वे-निवासियो के जीवन मे रम गए है 'स्कीइग और स्केटिग' के लिए जितना नार्वे के बर्फ से ढके पहाड और जमे पानी से दर्पण की भाति चमकती झीले उपयुक्त है उतना दुनिया का कोई स्थल नही। सौदर्य वहा सर्वत्र लहराता है और वह न केवल मानवेतर प्राकृतिक विभूतियो का ही एकान्त रूप है वरन् स्वय मानव का भी। और मानव तथा प्रकृति की यह अनन्य एकता मानव मे एकान्त गायन की रति अनायास भर देती है।

ईसा की दूसरी और छठी सदियो के बीच मनुष्य ने वहा अपने सास्कृतिक जीवन का आरभ किया। १५ सदियो तक फिर लगातार, वहा, वह अपने विविध स्वरो मे सगीत भरता रहा जिसका एक भाग 'वाइकिग' कहलाता है। दूसरा अभिजातवर्गीय अमर कृतियो का गान हे और तीसरा 'एद्दा' नाम की धार्मिक कविताए। इनमे अधिकतर सभ्रान्त जमीदारो का ही सगीत मुखरित हुआ।

वाइकिंग काव्य

'वाइकिग' कविता का युग साधारणत. दूसरी से सातवी सदी के बीच माना जाता है। वह साहित्य अधिकतर हमलावर अभिजात कुलो का 'था, प्राय सारा का सारा अलिखित, जिसे लोग गा-सुनाकर सुरक्षित रखते थे। वाइकिग काव्य स्वाभाविक ही चारण काव्य है, जो लाक्षणिक रूप से 'स्काल्दिक' कहलाता है। त्योहारो के अवसर पर मत्र के रूप मे यह गाए जाते थे और इनको गाने तथा गाकर सुरक्षित रखने वाले चारण सरदारो के दरबार मे रहते थे। वे दरबार-दरबार घूमते रहते थे। उनके प्रति लोगो की श्रद्धा थी और स्केण्डिनेविया (नार्वे, स्विडन और डेनमार्क) तथा ब्रिटिश द्वीपो मे जहा भी वे पहुच जाते उनको आदर और सत्कार की कमी न रहती। वाइकिग-अभिजात कुलो का जीवन आक्रान्ता का जीवन था, निरन्तर हमलो और युद्धो का जीवन, जिससे उनके सबध की कविताओ का भी ओजस्वी होना स्वाभाविक ही था, यद्यपि इसी कारण उनमे करुणा और दया का भी प्राय. अभाव है। वाइकिग काव्य गर्वीले मानव की गर्वोक्ति है। सेनाओ के अभियान की धमक और अस्त्रो की झकार उनका प्राण है। उस काव्यधारा मे वीरो की हुकार देवताओ के साहचर्य की निष्ठा रखती है और पूजा मे भी दासत्व-प्रकाश का कही नाम नही होता। स्वय चारण सरदारो के प्रसाद पर जीने वाले अकिंचन गायक नही, अनेक बार तो स्वय हमलावर कबीलो के सरदार थे और सदा अभिजात वशधर। वे उन प्रशस्तियो को उद्गीरित करते थे जिनके भौतिक निर्माण मे स्वय उनका भी हाथ रहा था। प्रगट है कि उन काव्यो की ओजस्विता सार्थक होगी, क्योकि उनके गायक स्वय उनके निर्माता भी थे। नार्वे के साहित्य के इस प्रारभिक काव्य का यह रूप सभवत. ससार के साहित्य मे अनूठा है। यह 'स्काल्दिक' काव्य अलकरण मे बडा ऋद्ध है। उसकी प्रभूत उपमाए दृश्य के साक्षात्करण मे अत्यन्त सहायक होती है, और उसकी सादगी स्थिति को स्पष्ट करने मे शक्तिम। अलकार के होते हुए भी उसमे कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है। जीवन जैसे उसमे उबला पडता है।

अनेक बार उस 'स्काल्दिक' काव्य मे वशावलियो का उल्लेख हुआ है। क्वाइन के कवि त्योदोल्फ[1] ने इस प्रकार की एक 'इगलिंग की वशावली' रची जिसमे उसके राजा सुकेशी हेराल्द के 'जन' का कुर्सीनामा प्रस्तुत हुआ। 'हालोगालैड के श्रीमानो की वशावलि' गाकर आइविन्द स्काल्दास्पिलिर[2] ने भी उसी प्रकार प्रशस्तियो को इतिहासपरक बनाया। इन प्रशस्तियो से नार्वे के इतिहास लेखन को बडी सहायता मिली है।

उस काल के विख्यात चारण कवि त्योदोल्फ और आइविन्द थे, जिन्होने क्रमश हेराल्द और हाकन के दरबारो और सुकृत्यो का बखान किया। त्योदोल्फ की कविता

---

१. Agder Poet Tjodolf of Kvine, २. Eyvind Skaldaspillir

'पतझड का गान' जितनी मधुर थी, आइविन्द की 'राजा हाकन की स्मृति' उतनी ही शालीन। उनके समकालीन चारण कवि थोब्योर्न हॉर्नक्लोवी[१] ने भी कल्पना और ओज से प्रौढ काव्य रचा। वाइकिग के जमाने मे ही नार्वे निवासियो ने जो आइसलैड को जीतकर वहा अपनी बस्तिया बसा ली थी उससे वहा के दसवी-ग्यारहवी सदियो के कवियो ने भी नार्वे के दृश्यो को ही अपनी कविता मे चित्रित किया।

वाईकिग काल मे अनन्त ख्यातो और पौराणिक आख्यानो का भी एक विपुल समुदाय प्रस्तुत हुआ। लोक साहित्य खूब फूला-फला जिसमे पहाड और समुद्र, परियो और दानवो की कहानिया असीम मात्रा मे प्रस्तुत हुईं। उस काल का धर्म वह अभिजात्य धर्म था जो बाहर के आक्रमणो, समुद्र के वीर कृत्यो तथा भू-स्वामिता से सबंध रखता है। समुद्री राजाओ की कमी न थी और न उत्तरी तथा बाल्टिक समुद्रो की सतह पर वीर-कृत्यो की कमी थी। काव्य एक नई दिशा की ओर चल पडा, धार्मिक गायन की ओर। परिणाम हुआ 'एद्दा' काव्यधारा का उदय। 'एद्दा' कविताओ का स्वर बहुत कुछ होमर के स्वर से मिलता-जुलता है और राइनलैड तथा बर्गण्डी जीतने वाले वीर कृत्यो से अनुप्राणित है। 'एद्दा' कविताओ का एक दल 'वीरो के गीत' नाम से सगृहीत है जिसका एक भाग 'देवताओ के गान' है। 'देवताओ के गान' का आधार 'वोलुस्पो' नवी या दसवी सदी मे लिखा वह सबल काव्य है जिसमे भविष्यवादिनी, 'वोल्वेन', सृष्टि की कहानी कहती है। कहानी व्याख्यात्मक है। उसमे सृष्टि का उदय, देवासुर सग्राम, मानव जाति के मूल और भाग्यो का बखान है। इनके बाद वह दैवी भविष्य के उन दिनो का काल्पनिक रूप अकित करती है जब अनाचार और क्रूरता, भ्रातृ-विनाश और नर-सहार ससार की एकमात्र क्रिया-शक्ति हो जाएगे और पाप और पुण्य की शक्तियो के अतिम सघर्ष मे उसका विराम होगा। उस सघर्ष का नाम भविष्यवादिनी ने 'राग्नारोक' दिया है। उस सघर्ष के बाद उसका कहना है, 'एक नये और सुन्दर ससार की अभिसृष्टि होगी।' 'एद्दा' के गीतो मे देवताओ के कृत्य और समस्याए भी अपना भाग पाती है। उनकी रचना ७०० से ११०० ई० के बीच हुई और उनका सग्रह १२०० ई० के लगभग हुआ। इन कविताओ का नाम तेरहवी सदी मे 'एद्दा' पडा जिसका अर्थ है 'ओद्दी'—पुस्तक। ओद्दी आइसलैड मे एक स्थान का नाम था जहा ये कविताए नाव से ले जाकर एकत्र की गई। 'एद्दा' कविताओ का प्रवाह और सादगी वाइकिग चारणो की कविताओ से कही अधिक है। विशेष कर 'वोलुस्पो' के दृश्य बडे शालीन हैं और उनके वर्णन दृश्यो को मूर्तिमान कर देने मे नितान्त समर्थ।

---

१ Thobjorn Hornklovi

यहा पर 'एद्दा' और 'स्काल्दिक' गीतो को स्पष्ट कर देना समीचीन होगा । 'एद्दा' कविताए वाइकिग-काल की सर्वोत्तम साहित्य-कृतिया है । नार्वे के मानुषिक जीवन के कल्पना-चित्र, उनके पुराणो, देवताओ, वीरो और तत्सबधी आख्यानो के साथ उनमे काव्यबद्ध हुए । उनकी शैली सक्षिप्त और मत्रवत् है, उनमे नाटकीय शक्ति है और असाधारण सादगी । सुनने वालो पर निस्सदेह उनका प्रभाव गहरा पडता होगा । उनके विपरीत 'स्काल्दिक' गीत जो राजाओ-सरदारो के सस्मरण अथवा प्रशस्तियो का अकन करते है, जाने हुए कवियो की रचनाए है । यह कवि नार्वे के प्राचीनतम काल के कवि है, इनमे से कुछ आइसलैड के भी है, बारहवी-तेरहवी सदियो के । स्काल्दिक कविताओ की शैली अलकार-बोझिल और उपमाओ के पेच से कसी है ।

आइसलैड के साहित्यिको मे सबसे महान् स्नोरे स्तर्लासोन[१] था जो १२४१ मे मरा । उसका प्रधान ग्रन्थ 'हाइम्स्क्रिगला' है । उसमे ११७७ तक के नार्वे के राजाओ का इतिहास अद्भुत क्षमता से अकित हुआ है । नार्वे की साधारण जनता उसे आज भी बडे चाव से पढती है । जब-जब नार्वे की राष्ट्रीयता को चोट पहुची है तब-तब इसी ग्रन्थ के स्वर जानता की आवाज मे बुलन्द हुए है । १८१४,१९०५ और १९४० का राजनीतिक इतिहास इस नार्वेई ग्रथ का दम भरता है ।

तेरहवी सदी मे नार्व का सबध यूरोप के इग्लैड और फ्रास आदि देशो से सास्कृतिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र मे पर्याप्त घना हुआ । उससे उन देशो के साहित्य की नार्वे पर छाया पडनी अनिवार्य थी । 'कागेस्पाइलेत' (राजा का दर्पण), जो एक सुन्दर सास्कृतिक सग्रह है, अनूदित साहित्य के रूप मे इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है । इस सग्रह मे पश्चिमी यूरोप के वीर-काल की कविताए नार्वे की भाषा मे सगृहीत हुई । नार्वे की १४वी सदी साहित्य निर्माण की दिशा मे कगाल सिद्ध हुई । इसका कारण काल-मृत्यु का वह परिणाम था जिसने यूरोप के अनेक भू-भागो को वीरान कर दिया । उसमे अधिक क्षति उस काल की सस्कृति के अग्रणी पादरियो को हुई जिससे साहित्य के क्षेत्र पर तुषारा-पात हो गया । हा, मध्ययुग की पिछली सदियो मे निश्चय ही नार्वे मे पर्याप्त काव्य-रचना हुई, यद्यपि मौलिक कविताओ का ही साहित्य मे प्राधान्य रहा । उनका लिखित सग्रह १९वी सदी के मध्य पहली बार प्रस्तुत हुआ ।

नार्वे के उत्तर-मध्यकालीन लोकगीतो का सबध डेनी, अग्रेजी और स्काटी 'बैलेड' कविता से है । इससे यह ध्वनि निकालने की आवश्यकता नही कि नार्वे के अपने 'बैलेडो' की कोई अपनी सत्ता नही । वस्तुत' उनका अपना सौदर्य है और उनकी शक्ति लिरिक अथवा वीर काव्यो में कम ही पाई जाती है । उनकी मनोवैज्ञानिक और नाटकीय प्रौढता

---

१ Snore Sturlason

वैयक्तिक दृश्यो मे उन कविताओ मे प्राय सर्वत्र लक्षित होती है। उन लोकप्रिय काव्य-कृतियो मे मूल रूप से उन पौराणिक आख्यानो, विश्वासो और कथाओ का समावेश है जो नार्वे के पर्वत और समुद्र-प्रधान जीवन को व्यक्त करती हैं। नार्वे के बौद्धिक इतिहास की १४वी, १५वी और १६वी सदिया साहित्य की दृष्टि से अनुर्वर कही गई हैं। परन्तु यह न भूलना चाहिए कि उसी काल विशेषत उन लोक-कहानियो का साहित्य मे आरम्भ हुआ था जो उस काल के लोक-विश्वास को प्रगट करती है। वे कथाए पीढी दर पीढी १८४० तक कही जाती रही और तब उनको सग्रह के रूप मे एकत्र कर लिया गया। उस पर्वतीय देश मे घाटियो का बाहुल्य है और इन्ही घाटियो मे नार्वे की किसान जनता एक लबे काल तक अपना अविकृत जीवन बिताती रही थी, जब धीरे-धीरे यूरोपीय बौद्धिक धारा और साहित्यिक शैलियो का आन्दोलन वहा पहुचा। परन्तु यद्यपि, यूरोपीय साहित्य-चेतना ने नार्वे की भाषा तथा साहित्य को समृद्ध किया, वह उसकी मूलभूत प्रेरणाओ को विकृत न कर सकी। इसी कारण नार्वे की कला और साहित्य दोनो स्थानीय विशेषताओ से युक्त और अपनी आधारभूत प्रेरणाओ से अनुप्राणित हुए। उस साहित्य की लोक-कथाओ मे जब एरिक बेरेन्सकिओल्ड[1] और थ्योडोर किटल्सन[2] ने उनको चित्राकित कर दिया तब वे नार्वे मे घर-घर की निधि बन गई। तब उनका अनुवाद अग्रेजी और फ्रेंच मे भी हुआ और लोक-साहित्य के अध्येताओ की वे मनन की वस्तु बन गई।

धार्मिक सुधारवादी आदोलन ने नार्वे के इतिहास को भी प्रगति दी। वहा उसके प्रभाव से साहित्यिक चेतना सजग हो उठी। उस देश के पादरियो ने बौद्धिक जीवन की बागडोर तब अपने हाथ मे ली। उनमे से अनेक कोपेनहागेन के विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रह चुके थे और वहा वे नये विचारो और विदेशी बौद्धिक प्रवृत्तियो के सपर्क मे आए थे। १६वी और १७वी सदियो से उनके द्वारा नार्वे के साहित्य मे मानवतावादी ज्ञान की रजित काव्यधारा का प्रवेश हुआ। फिर भी १८वी सदी मे ही आधुनिक परपरा की प्रतिभा का उस देश मे विकास हुआ। उसकी पहली मजिल लुडविग होल्बर्ग[3] ने तय की। उसके प्रादुर्भाव से देश के साहित्य मे एक नई चेतना का आरम्भ हुआ। उसका स्थान समसामयिक यूरोप के प्रधान मेधावियो मे था। होल्बर्ग का जन्म बर्लिन मे हुआ था। और अपनी तरुणावस्था मे उसने हालैंड, इग्लैंड, जर्मनी, फ्रास तथा इटली का भ्रमण किया था। इग्लैंड के अपने ढाई वर्ष के प्रवास मे उसने क्वीन ऐन-कालीन बौद्धिक वातावरण से गहरा सम्पर्क स्थापित किया। परिणामस्वरूप जो उसने कॉमेडी नाटको की एक लम्बी परपरा रच दी वह डेनी और नार्वे साहित्य के प्रबल पाये सिद्ध हुए। जीवन के

---

१ Erik Werenskiold, २ Theodore Kittelsen, ३ Ludvig Holberg (१६८४-१७५४).

उत्तरकाल मे होल्बर्ग ने आचारवादी और दार्शनिक निबन्धकार के रूप मे देश के साहित्य पर अपना प्रभाव डाला। उसमे वोल्तेयर, मोलिए और एडिसन की विविध प्रतिभाए अपने-अपने अश और मात्रा मे एकत्र हुई। इसी कारण डेन्मार्क और नार्वे दोनो के साहित्यिक समान रूप से उसे अपने साहित्य का जनक मानते है। होल्बर्ग अपने काल का केवल सबसे बडा नाटककार ही न था, उस युग का प्रधान प्रतिनिधि भी था।

डेन्मार्क और नार्वे दोनो देश पहले सदियो मे समान शासन मे रहे। एक राजा दोनो का स्वामी था। और होल्बर्ग समान रूप से दोनो जातियो का प्रतिनिधि था। उसकी मृत्यु के बाद ही नार्वे और डेनमार्क के निवासियो मे खटक शुरू हुई और नार्वे की जनता डेनी प्रतियोगिता मे अपना विकास कुठित मान एक नई राष्ट्रीय चेतना से गतिमती हुई। यह चेतना राजनीति की ही भाति साहित्य के क्षेत्र मे भी फूली-फली। छन्द मे नार्वे के नैसर्गिक दृश्यो का 'रोमाटिक सौंदर्य' मुखरित हो उठा। पोप, टामसन और यग का अनुकरण होने लगा। १७७० के बाद ही साहित्य मे जिस विद्रोह और क्राति ने रूप धारण किया १८१४ के आदोलन मे वही राजनीतिक सक्रियता मे रूपायित हुए और तब नार्वे डेन्मार्क का पिछलग्गू न रह सका। उसने अपने को डेन्मार्क की छाया से स्वतत्र कर लिया। एक सविधान-सभा का निर्माण कर उसने स्वतन्त्र सविधान अपनी जनता को दिया।

यह राजनीतिक परिवर्तन सामाजिक और सास्कृतिक प्रगति मे अलक्षित न रह सका। उसपर उसका गहरा प्रभाव पडा। परिवर्तन भी असाधारण था और शीघ्र उससे प्रेरणा पाकर नार्वे के सबसे महान् लिरिक कवि हेन्रिक वर्गलैण्ड[1] ने अपनी रचनाए शुरू की।

वर्गलैड केवल ३७ वर्ष जीवित रहा परन्तु उसने उसी अल्पकाल मे महती प्रतिभा का विकास किया। वह लार्ड बाइरन का भक्त था यद्यपि अपने विचारो और शैली मे वह शेली के अधिक निकट था। उसकी कल्पना का ससार तो अनेक बार शेक्सपियर की ऊचाइयो को छू लेता है। वह फूलो और तितलियो से, तरुओ और शशको से नितान्त स्वाभाविक आत्मीयता से बात कर सकता था और उसकी कल्पना मेघो के परीदेश तथा आकाश-गगा की नीहारिकाओ मे रम जाती थी। उसने विचारो के क्षेत्र मे तो काव्यबद्ध गीत गाए ही, राजनीति के क्षेत्र मे भी उसकी काव्य-कल्पना पर्याप्त गतिमती हुई। घर और बाहर दोनो के स्वाधीनता के लडाको के पक्ष मे उसकी वाणी मुखरित हुई और उसने यहूदियो तथा अन्य अत्याचार पीडित मानवो की रक्षा मे अपना काव्य-कवच प्रस्तुत किया। वर्गलैड मध्यममार्गीय चेतना का व्यक्ति न था। ससार की वर्तमान वर्ग-परपरा मे सही और ईमानदारी के साथ सोचने वाला कर्मठ व्यक्ति मध्यमपदीय हो भी नही सकता।

---

१ Henrik Weigeland (१८०८-४५)

यदि वह आत्मरत नही तो निश्चय ही अन्यायपूर्ण परिस्थितिया उसे उसकी शात पृष्ठभूमि से विप्रस्थित कर देगी और वह ऐकान्तिक शक्तिम शब्दो मे स्थिति-विशेष के पक्ष अथवा विरोध मे बोल उठेगा। वर्गलैड भी उसी प्रकार सबल और स्पष्ट विचारो का प्रतिपादक था। अनेक बार तो उसकी वाणी ऐसा रूप और आवाज धारण कर लेती थी कि लोगो को उससे घबडाहट हो जाती थी। वर्गलैड सब प्रकार से अतिकाय था। विचारो मे, साहित्य की शैली मे, शब्दो के चयन और प्रयोग मे, और वैसे ही शरीर के आकार मे भी। उसका विशाल शरीर अन्त मे राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, फिर भी अपनी रोग-शय्या से वह मधुर काव्यधारा प्रवाहित करता रहा यद्यपि उसके शब्दो मे अब अधिक सयम आ गया था। उसकी भावनिधि तथा काव्य-सपदा ने साहित्य की दिशा मे उसे राष्ट्रीय सन्त का पद प्रदान किया।

वेल्हावेन[1] वर्गलैड का साहित्य मे प्रधान प्रतिद्वन्द्वी था। उसके साथ ही उसने कोपेनहागेन की यूनिवर्सिटी मे शिक्षा पाई थी। जान सेबेस्टियन वेल्हावेन की प्रतिभा कुछ खास क्रियात्मक न थी, परन्तु उसके व्यक्तित्व मे अद्भुत शिष्टता थी और कला के मूल्या-कन मे उसकी गति बडी सूक्ष्म थी। शैली मे वह नितान्त सूत्रवादी था। काव्य की रचना मे वह अन्तर्निविष्ट चेतना से क्रियाशील होता था। समसामयिक बाह्य वातावरण से उसकी कविता को कोई सरोकार न था परतु स्वभाव की करुणा जैसे उसकी काव्य-चेतना मे नितात मार्मिक आवाज उठाती थी। वर्गलैड के जीवन को झकझोर देने वाली और नार्वे के साहित्य मे अनुपम गति उत्पन्न करने वाली एक घटना वेल्हावेन के जीवन से घना सबध रखती है। वर्गलैड की नितान्त भावुक असाधारण मेधाविनी और मधुर अनुरागिणी भगिनी कामिला कोलेट युवावस्था मे वेल्हावेन के प्रति आकृष्ट हुई। आकर्षण उस प्रेम का था जो भाई और पिता के मित्र अथवा शत्रु का विचार नही करता। वर्गलैड कामिला के भाई और पिता दोनो का सबसे बडा प्रतिद्वद्वी था। शेक्सपियर की जूलियट की भाति वह अपने रोमियो की ओर तीव्र गति से आकृष्ट हुई। परन्तु रोमियो की भाति उसका इष्ट वेल्हावेन उसके प्रति प्रेमासक्त न हुआ। सात वर्ष तक निरतर प्रणय की आग मे जलते रहने के बाद कामिला ने अनुराग के सफल होने की आशा छोड दी। परतु उसका इस प्रकार घुलना बेकार न हुआ। ऋग्वेद की शशीयसी की भाति उसकी वाणी ने कपन और कराह धारण की जिससे करुणा का प्रवाह प्रसूत होकर चराचर को सीच चला। उसकी डायरी और सस्मरण करुणा के सतत् उद्गम प्रमाणित हुए। उसका उपन्यास 'अम्त्मान्देन्स् दोत्रे' (देहाती सर्राफ की कन्याए) उस काल की अत्यन्त सफल कृति थी। उसने साहित्य मे नारी की स्वतत्रता का भी अपने निबन्धो द्वारा आन्दोलन शुरू कर दिया। उस आन्दोलन का मूल उसकी अन्य

१ John Sebastian Welhaven

कृतियो के आधार की ही भाति उसके विजित अनुराग मे ही ढूढा जाता है।

कामिला कोलेट ने सुन्दर निसर्ग-वर्णन मे भी पर्याप्त साहित्य रचा है। १८५० के लगभग नार्वे के प्राकृतिक सौन्दर्य ने अनेक साहित्यकारो को आकृष्ट किया था, और उस दिशा मे उन्होने प्रचुर काव्य-रचना की थी। इन प्रकृतिवादी रचयिताओ मे अधिकतर कामिला के मित्र थे। उन्ही दिनो लोक कथाए, लोक गीत आदि एकत्र कर प्रकाशित किए गए थे। उन्ही दिनो जनता के इतिहास, भाषा और सास्कृतिक गवेषणा को नई प्रेरणा मिली थी। किसानो के प्रति तब एक नये उत्साह का जन्म हुआ था। प्रकृति-सबधी लिरिक और विनोदशील व्यग्य का ऋद्ध विकास विन्ये की कृतियो मे हुआ। ए० ओ० विन्ये बोलियो पर अवलम्बित भाषा का १८५० और ६० के बीच नार्वे का सबसे महान् कृतिकार था। उन्ही दिनो विन्ये के दो सहपाठियो—हेन्रिक इब्सेन[1] और ब्योर्नस्त्येर्ने ब्योर्न्सन[2] ने साहित्य-क्षेत्र मे पदार्पण किया। होल्बर्ग के बाद इन्ही दोनो ने साहित्य मे विश्वव्यापी यश लाभ किया।

युवावस्था मे इब्सेन और ब्योर्न्सन दोनो राष्ट्रीय आन्दोलन मे बहे थे। और दोनो ने नार्वे के इतिहास और लोकप्रिय काव्यधारा से प्रेरणा पाई थी। परन्तु जैसे-जैसे वे आयु मे बढते गए उनकी पारस्परिक रुचियो की दिशा भी बदलती गई। उनमे अन्तर भी बढता गया। प्राय आधी सदी तक उन्होने अपनी साहित्यिक सक्रियता जारी रखी और पिछली सदी के अत तक वे दोनो नार्वे के साहित्य और बौद्धिक जीवन मे अग्रणी बने रहे। आरभ मे हेन्रिक इब्सेन ने अनेक लिरिक कविताए लिखी जिनकी प्राञ्जल शैली और विचार-सौदर्य ने अधिकारी आलोचको को मोह लिया। परन्तु इब्सेन प्रथमतः और मूलतः नाटककार था उस दिशा मे उसकी प्रतिभा धीरे ही धीरे निखरी और १८५०-६० के बीच इतिहास और लोक गीतो पर लिखे उसके नाटक नाटकीय लेखन मे अभ्यास मात्र है। पर कुछ ही काल बाद उसने अपने रुचि-वैचित्र्य और प्रेरक सिद्धान्तो—लेखक का दृष्टिकोण—को पकड लिया। शीघ्र ही उसकी प्रक्रिया-शैली बदल गई।

शेक्सपियर से इब्सेन की अपनी प्रथम उज्ज्वल कृति 'कोग्सेन्मेर्ने' के लिए आकृति मिली। यह रचना सदेहवादी स्कूल बार्दसोन के ऊपर एक ऐतिहासिक नाटक थी जो १८६३ मे प्रकाशित हुई। उसके उपरान्त उसने छन्द मे अपने दो काव्य-दर्शन प्रौढ नाटक 'ब्रान्ड' और 'पियर गिन्ट' लिखे। इनमे दो विरोधी विचारो का रूपायन हुआ। पहले का हीरो पादरी विचारो और दृढता का प्रतीक है। उन्ही कारणो से वह सबसे, अपने परिवार से भी, अकृत्रिम आचरण चाहता है और अपने सिद्धान्तो के व्यावहारिक आचरण मे अपनी माता, पत्नी और पुत्र की दशा तक का विचार नही करता। अन्त मे उसका एकान्त आदर्शवाद

---

१. Henrik Ibsen (१८२८-१९०६),　　२ Bjornson (१८३२-१९१०)

ही उसका सर्वनाश कर डालता है। मानवजीवन की सीमाओ को वह तोड देता है। उसकी निष्ठा असाधारण है परन्तु उसके आदर्श की एकदेशीयता इतनी आशिक है कि वह स्नेह के अधिकारो की भी परवाह नही करती। 'पियर गिन्ट' का प्रधान प्रसग नार्वेई लोक कथा से लिया गया है। परन्तु उसके हीरो का आचरण सर्वथा अपना है। उसका अह अपनी सीमाए आप बनाता है। वह अपनी कायरता के कारण सारे विघ्नो से मुह मोड लेता है और सिवा एक अन्त काल के, जीवन मे कभी कोई स्पष्ट निर्णय नही कर पाता, कोई दृष्टिकोण निश्चय नही कर पाता। परन्तु अपनी अनेक नीचताओ के बावजूद पियरगिन्ट कल्पना, विनोद और मानवीय आकर्षण मे असाधारण है। वस्तुत इतना असाधारण कि पाठक की सहानुभूति सदा उसके साथ रहती है। 'पियर गिन्ट' आज यूरोप और अमेरिका के देशो मे अपनी रगमचीय सफलता मे बेजोड है। साथ ही 'हैम्लेट' की ही भाति वह भी रगमच से पृथक् अपना साहित्यिक मूल्य भी पर्याप्त रखता है। वस्तुत उसके हास्य और विनोद, मानवीयता और कमजोरी, विचार-गाभीर्य और कल्पना-वैभव का पता तो अध्ययन से ही लगता है। जिस मात्रा मे कवि अथवा कृतिकार अपनी शब्दावली को अपनी भाषा मे चलाता है, उसी मात्रा मे वह साहित्य मे महान् होता है। हिन्दी मे तुलसीदास और अग्रेजी मे शेक्सपियर इस दृष्टि से असाधारण महान् है। हिन्दी और अग्रेजी मे इन महाकवियो को जो स्थान प्राप्त है वही इब्सेन को नार्वे की भाषा और साहित्य मे प्राप्त है। यदि सारे नार्वेई साहित्य की सर्वोत्तम काव्य-कृति का उल्लेख करना हो तो किसीको 'पियर गिन्ट' का नाम लेने मे प्रयास न करना होगा। यह नाम लेखनी अनायास ही लिख जाएगी।

स्वय इब्सेन 'सम्राट और गैलीलियन' (१८७३) को अपनी रचनाओ मे सबसे सुन्दर मानता था। परन्तु धर्म-विद्रोही जूलियन और ग्रीक-रोमन तथा ईसाई धर्मो के सघर्ष पर अवलबित वह विश्व-इतिहास का नाटक दार्शनिक रूप से महान् होता हुआ भी 'ब्रान्ड' अथवा 'पियर गिन्ट' की बराबरी नही कर सकता। पिछले दिनो नाटक, प्रयुक्त दृश्य अथवा मनोवैज्ञानिक अध्ययन दोनो दृष्टियो से 'सम्राट् और गेलीलियन' से सुन्दर हे। 'सम्राट और गैलीलियन' के प्रकाशन के बाद चार वर्ष इब्सेन चुप रहा, चुपचाप एक नई दिशा मे प्रयोग की तैयारी करता रहा—गद्य मे यथार्थवादी, घरेलू, आधुनिक ड्रामा की दिशा मे। १८७७ और ९९ के बीच प्राय २२ वर्षो मे उसने बारह नाटक लिखे। इन नाटको ने विश्व-साहित्य मे इब्सेन का नाम अमर कर दिया। अब वह केवल नार्वे का ही न था, ससार के अनेक तरुण और प्रौढ साहित्यिक अपनी अगली रचनाओ की टेकनीक इब्सेन के आधार पर टेकने लगे थे। इन बारह नाटको मे से पहले चार उद्देश्य-परक थे। सामाजिक समस्याओ पर अवलबित। दूसरे चार शुद्ध मनोवैज्ञानिक अध्ययन थे। और अतिम चार एक प्रकार के आत्मस्वीकरण-से थे जिनमे 'स्फिक्स' प्राय. 'ब्राड'

और 'पियर गिन्ट' की परपरा मे है । 'गुडिए का घर', 'भूत', 'जनता का शत्रु', 'वन्य हस' और 'रोस्मरशोल्म' के बाद एक प्रकाशित हुए और नाटकीय तथा मानव-अध्ययन के दृष्टिकोण से अत्युत्तम है । परन्तु जिन समीक्षको और सहृदयो ने इब्सेन की कविताओ को जीवन का अश बना लिया है, वे उसकी अन्तिम कृति 'जब हम मरकर जी उठते है' मे एक अद्‌भुत आकर्षण पाते है । उसमे कवि जैसे पीछे देखते हुए पूछता है, क्या जीवन के बदले कला का चुनना उचित हुआ ?

जीवन भर इब्सेन आदर्शो के निर्वाह के लिए आवश्यकताओ से सघर्ष करता रहा था । एक बार उसने अपने प्रतिस्पर्धी और मित्र ब्योन्स्त्येर्ने ब्योर्न्सन को कृतज्ञता के एक क्षण मे लिखा कि ब्योर्न्सन के स्मारक-पट का उचित अभिलेख होगा—'उसका जीवन ही उसकी सुन्दरतम कविता थी ।' व्यक्तिगत व्याख्या के रूप मे इब्सेन ने कुछ और लिखा —"नित्य के आचरण मे अपने आदर्शो की परिणति—बस यही, मेरे विचार से, मानव का अनन्यतम इष्ट है ।"

इब्सेन के एकागी-केन्द्रीकरण के सामने ब्योर्न्सन की बहुमुखी प्रतिभा असाधारण लगती है । उसका कृतित्व इब्सेन से नितान्त भिन्न है, असम, ऊबड-खाबड । परन्तु निस्सदेह उसके कवि रूप मे प्रथम दर्शन से ही उसकी अप्रतिम मेधा का प्रमाण मिल गया था । ड्रामा और कहानी दोनो क्षेत्रो मे ब्योर्न्सन ने अनुपम रत्न उत्पन्न किए है । लिरिक काव्य की तो उसने एक अभिराम राशि अपने देशवासियो को भेट दी है । इसके अतिरिक्त वह अनुपम वाग्मी था, अद्‌भुत रगमचीय सूत्रधार, मधुर और आकर्षक पत्र-लेखक, और इन सबसे ऊपर पत्र-पत्रिकाओ मे अनन्त-विविध विषयो पर जीवन पर लेख लिखते रहने वाला अथक और अप्रतिम निबन्धकार । कितने प्रश्न, कितनी समस्याए उसकी लेखनी के नीचे थी—कला और राजनीति, धर्म और शिक्षा, सामाजिक और सास्कृतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय । उसका स्थान वस्तुत' दिदरो, आदि विश्वकोष-प्रणेताओ की पक्ति मे है । कालान्तर मे उसके विचार ससार के सुदूर प्रदेशो तक जा पहुचे और वृद्धावस्था मे वह आक्रान्त राष्ट्रो का 'चैम्पियन' बन गया । दक्षिण जटलैड के निवासी, चेक और स्लोवक, फिन, पोल, रूथेनी, सभी उसकी ओर प्रेरणा के लिए देखने लगे । व्यक्ति के रूप मे इतनी महान् विभूति नार्वे ने अपने इतिहास मे दूसरी नही उत्पन्न की ।

तरुणावस्था मे ब्योर्न्सन ने लिरिक, कहानिया और ऐतिहासिक नाटक लिखे । इनसे राष्ट्रीय आन्दोलन से उसका सपर्क व्यक्त होता है । नाटको मे उसकी 'ट्रिलोजी' 'सिगुर्द स्लोम्बे' विशेष मनोरम है, शेक्सपियर की परपरा मे प्रस्तुत बाद मे उसीने स्कैडिनेविया के देशो मे पहले पहल आधुनिक यथार्थवादी नाटको का प्रचलन किया । उसीके बनाए मार्ग पर इब्सेन और स्ट्रिन्डबर्ग आरूढ हुए । रगमच के लिए प्रस्तुत उसकी रचनाओ मे प्रधान 'पाल लागे' और तोरा पार्सबर्ग है । 'ओवेर ईव्ने' नाम के दो

नाटको मे से प्रथम यह नाटक ससार के साहित्य मे अपना असाधारण स्थान रखता है।

उपन्यासकार और नाट्यकार के रूप मे ब्योर्न्सन ने ससार मे बडी ख्याति पाई। उसके पाठको की एक बडी सख्या यूरोप और अमेरिका दोनो महाद्वीपो मे थी। अनेक स्कैडिनेविया निवासी कवियो को उसकी कविताओ ने प्रेरणा और दृष्टि दी है। कन्सर्ट-हाल उसके गीतो की ध्वनि से गूँजते रहते है, साथ ही जन-साधारण मे भी उनका असीम राज है। आज भी उसके व्यक्तित्व की याद नार्वे निवासियो मे उत्साह का सचार करती है।

इब्सेन की कृतियो—'ब्राड' 'भूत' 'रोस्मरशोल्म' की पृष्ठभूमि मे नार्वे की प्रकृति अगडाती है। उसके जगल और पहाडी पठार अपनी लम्बी छाया फेकते है। झरने गरजते है, बर्फीली चोटिया निस्पन्द खडी है। ब्योर्न्सन की कला भिन्न है—उसकी प्रकृति के विस्तार मे मानव क्रियाशील है, घने जगलो से ढके देहात—हजारो घरो के प्रदेश—जागते-सोते है, विस्तृत फ्योर्द (समुद्र के थल से घिरे भाग) मानव-चित्त के विकारो को प्रतिबिंबित करते है। दोनो के लिए प्रकृति और मानव की यह अविराम लुका-छिपी निरन्तर अकन का केन्द्र है।

यह प्रवृत्ति १८७० के बाद वाले उपन्यासकारो मे भी लक्षित होती है। नार्वे के साहित्य-प्रकाशन पर भी यूरोपीय साहित्यिक आन्दोलनो का प्रभाव निरन्तर पडता जा रहा था। धीरे-धीरे यथार्थवादी उपन्यासो का स्थान १८८० के बाद, एकान्तत प्रकृति-वादी उपन्यास ले लेते है जिनमे घटनाए साधारणत बडे नगर मे घटती हैं और लिरिक के प्रति सारी चेतना दबा दी जाती है। कारण कि मनुष्य, परवश मानव गा नही पाता, केवल चीत्कार करता है और उसके विशृखलित करने के लिए साहित्य भी अब कटिबद्ध होता है। स्वाभाविक ही तब सामाजिक और राजनीतिक उपन्यास समस्याओ के समाधान मे लिखे जाते है और अनेकधा क्राति के गीत गाते है, इन्कलाब के नारे बुलन्द करते है।

इस पिछली परपरा मे अधिकतर तरुण साहित्यकार दीक्षित हुए। उससे पहले की पीढी—इब्सेन और ब्योर्न्सन के मित्रों—ने यह प्रतिबन्ध न माना और योनास ली[१] तथा अलेक्जान्डर कीलान्ड[२] पुराने सिद्धान्तो का ही साहित्य मे निर्वाह करते रहे। १८८० के बाद अनेक उपन्यासो की रचना हुई। इनमे समसामयिक समाज लहरे मारता था और समकालीन साहित्यिक सिद्धान्त रूपायित होते थे। ड्रामा के क्षेत्र मे तो नार्वे इब्सेन तथा ब्योर्न्सन के नेतृत्व मे ससार मे कब का अग्रणी हो चुका था, उपन्यास की दिशा मे भी वह अब देशो की अगली पक्ति मे जा खडा हुआ।

---

१ Jonas Lie, २ Alexander Kielland

उस काल ही फ्रास और जर्मनी मे नव रोमाटिक प्रतिक्रिया ने यथार्थवादी साहित्य का प्रतिवाद करना आरभ किया था। नार्वे मे भी १८६० के लगभग उसकी लहर उठी। उद्देश्यवादी उपन्यासो पर गहरा आघात हुआ। व्यक्तियो के महान् यथार्थवादी चित्रकार योनास ली ने कुछ काल उपन्यास लिखना छोडकर परियो की कहानिया लिखनी शुरू की। उसकी मेधा कुछ काल प्रकृति की शक्ति, चन्द्रिका के सम्मोहन और रहस्यवाद के पेच मे पडी ऐंठती रही। गर्बोर्ग[1] उस काल प्रादेशिक बोलियो के क्षेत्र मे सबसे महान् लेखक था। उसने आन्दोलन प्रेरित प्रतिबन्धो को अस्वीकार कर काव्य को अपनी मधु-वर्षिणी मेधा का चमत्कार अर्पित किया। वह अब अपने मूलस्थान को लौटा गया था और बचपन के दृश्य उसकी स्मृतियो मे उभर-उभर कर रूप धारण करने लगे। लिरिक और प्रबन्ध काव्य उसकी राष्ट्रीय भावनाओ और धार्मिक प्रेरणाओ के वाहन बने। काव्य की सीमाए अधिकाधिक व्यापक होती गई। काव्य-कली देहात के सौरभ से मत्त होकर चिटक रही थी। उसी देहाती काव्यबन्ध की परम्परा आज भी नार्वे मे पूर्ववत् जाग रही है। विविध साहित्यिको ने नार्वे के विविध प्रदेशो और मडलो को उनकी निसर्ग-विभूति और किसान-जीवन को अपनी लेखनी से चित्रित किया है और आज भौगोलिक मानचित्र की ही भाति नार्वे का एक साहित्यिक मानचित्र भी अपने विभिन्न धरातलो और दृश्य-परपराओ के साथ प्रस्तुत हो गया है।

बीसवी सदी के प्राय आरम्भ मे ही इब्सेन, ब्योर्न्सन और उनके अनेक समकालीनो का निधन हो गया। उनकी मृत्यु से एक युग का अन्त हो गया। परन्तु नये युग के आने मे देर न लगी। क्नुत हाम्सन[2] और योहन बोयेर[3] अब यूरोपीय यश के भागी हुए। उपन्यास के क्षेत्र मे फिर नार्वे का साहित्य एक बार यूरोप की दृष्टि मे चमका। १६०७ के साल मे अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तियो का प्रादुर्भाव हुआ। इन्हीमे सीग्रिद उन्डसेत[4] भी थी जिसका प्रभाव युगप्रवर्तक प्रमाणित हुआ।

श्रीमती सीग्रिद उन्डसेत की ख्याति विशेषत' अपने वर्तमान युगीय उपन्यासो से हुई परन्तु अपने ऐतिहासिक ज्ञान और कल्पना के वैभव के लिए वह स्वदेश मे बहुत पहले से ही विख्यात थी। क्रिस्तिन लाव्रान्स्दातेर पर उसकी ट्रिलोजी (१६२०-२२) बीसवी सदी के नार्वे की सबसे महान् साहित्यिक कृति है। इस कृति से अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, ऐतिहासिक उपन्यासो का साहित्य मे पुनरागमन भी होता है। कुछ काल से उनका नार्वे के साहित्य मे अभाव हो गया था। अब जो सीग्रिद की प्रेरणा और कृतिमत्ता से उनका पुनरावर्त्तन हुआ तो ऐतिहासिक उपन्यास लिखना फैशन ही हो गया। श्रीमती उन्डसेत (जन्म १८८२)

---

१ Arne Garborg, २ Knut Hamsun, ३ Johan Bojer, ४ Sigrid Undset

नार्वे के एक अत्यन्त प्रतिभाशाली पुराविद् की कन्या है। पिता की अकाल-मृत्यु हो गई पर उसके गम्भीर ज्ञान की विरासत पुत्री को मिली। वह विरासत इतनी ज्ञानसम्पन्न है कि पडितो की पैनी खोज के बावजूद भी सीग्रिद के चौदहवी सदी सम्बन्धी उपन्यास मे एक दोष भी न मिला। क्रिस्तिन वस्तुत १४वी सदी की होकर भी आज की नारी है। सीग्रिद अपने ज्ञान और व्यक्तित्व दोनो अधिकार से आज 'नार्वे की माता' है। देश उसकी कृतियो मे सास लेता है। उसकी जनता, उसके नगर-देहात, जगल-पहाड, ऋतु-वर्ष सभी उनमे अमर हो गए है। इस कथन की सार्थकता सीग्रिद के दो समकालीन साहित्यिको के उपन्यासो मे भी है। ओलाव दून[1], और जोहान फाल्कबेर्गेत[2] इस युग के दो ख्यातिलब्ध कृतिकार है।

१९२० से आरम्भ होने वाला दशक उपन्यास लेखन मे काफी सफल सिद्ध हुआ। पिछली पीढी के साहित्यिक नार्वे का साहित्य भडार भरते रहे है। नाटको का सृजन इतनी मात्रा मे निस्सदेह नही हुआ जितनी मात्रा मे उपन्यासो का। परन्तु केवल यही दो क्षेत्र साहित्यिक सक्रियता से सनाथ न हुए। वैज्ञानिक विषयो पर भी ऊचे तबके के निबन्धकारो ने प्रभूत साहित्य रचा। उनसे बौद्धिक जीवन पर्याप्त समृद्ध हुआ।

नार्वे के साहित्यिको ने भी डेनमार्क आदि के साहित्यिको की भाति नात्सी ताना-शाही का साहित्यत विरोध किया। नात्सी शासन-काल मे ऋद्ध लिरिक कविता की धारा बह चली और वह समर्थ कवियो के साथ स्वाधीनता के सघर्ष मे अमोघ अस्त्र बन गए। वह सोद्देश्य काव्य साधना सफल हुई। उन अगणित कवियो मे, जो देश के लिए तपे, दो विशेष उल्लेखनीय है, आर्नुल्फ ओवरलैड[3] और नार्दाहल ग्रीग[4]। आर्नुल्फ जर्मन कैद मे चार साल रहा। उसने अपनी अमर कृति—'वी ओवर्लिवर आल्त' (सबके बावजूद हम जीवित है) मे सहनशीलता और दृढता को क्लासिकल मूर्तिकारो के जादू से रूपायित किया। कितनी साधना और तप उस काल क्रूर सहर्ता से सघर्ष मे अपेक्षित थी, यह आर्नूल्फ का जीवन प्रमाणित करता है और वह जीवन इस कृति की पक्तियो से साकार हो उठा है, जीवन जो मृत्यु को ललकार उठा है। ग्रिग ने बर्लिन की गोलाबारी मे वीरगति पाई। परन्तु उसकी अमर पुकार आज भी उसकी ओजस्वी कविता सग्रह 'फ्रिहेतेन' (स्वाधीनता) मे गूज रही है। नार्वे के स्वतत्र होने के शीघ्र ही बाद वह सग्रह प्रकाशित हुआ और देखते ही देखते उसकी ७०,००० प्रतियो का सस्करण बिक गया जो नार्वे की तीस लाख की आबादी को देखते हुए निस्सदेह विस्मयकारक है।

---

१ Olaf duun, २ Johan Falkbeiget, ३ Arnulf Overland, ४ Nordahl Grieg

१५. पोल साहित्य

पोल साहित्य भी रूसी साहित्य की ही भाति स्लाव साहित्य है। परन्तु यद्यपि वह अन्य स्लाव साहित्यो मे सबसे महत्वपूर्ण है, रूसी की अपेक्षा वह साधारण है। उसमे उस पूर्वी साहित्य की न तो ताजगी है, न उसमे साहस है, न सौदर्य। उसका सम्बन्ध पूर्व की अपेक्षा पश्चिम से अधिक रहा है। इसीसे उसके साहित्य की परपराए भी पश्चिमी यूरोप के साहित्यो की रही है।

पोलैड का दसवी सदी मे ईसाई हो जाना उसकी सस्कृति मे बडा महत्व रखता है। वह इससे यकायक पश्चिमी देशो की पक्तियो मे जा खडा होता है। उसकी भाषा और साहित्य लैटिन प्रवृत्तियो और रूपो मे प्रभावित होते है और उन्हीकी प्रवृत्तिया सोतो की तरह उनमे फूटती है। यही कारण है कि उसका पहला लिखित साहित्य लैटिन मे मिलता है और उसका पहला लेखक लैटिन का प्रयोग करता है।

१३वी सदी मे पहली बार पोल भाषा साहित्य मे प्रयुक्त हुई जब उसमे 'बुगुरो-दृजिका' (खुदा की मा) लिखी गई। वह पोलैड का पहला राष्ट्रीय स्तोत्र था जिसका गिरजाघर और युद्धभूमि दोनो मे समान रूप से व्यवहार हुआ। १४वी सदी मे उस भाषा मे काफी लिखा गया। बाइबिल का एक अनुवाद हुआ और कुछ अन्य प्रयोग भी हुए। उसी सदी (१३६४) मे क्रैको यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई और लिथुएनिया के मिला लिए जाने से पोलैड की सास्कृतिक चेतना मे तो अभिवृद्धि हुई ही साहित्यिक प्रयास को भी शक्ति मिली। उस काल का सबसे महान् नाम निकोलस कोपरनिकस[१] का है जिसने आधुनिक ज्योतिष विज्ञान की नीव डाली, यद्यपि उसकी रचनाए भी अधिकतर लैटिन मे ही हुई।

क्रैको यूनिवर्सिटी के रेक्टर जैकब पारकोज[२] ने १५वी सदी के आरभ मे लिपि का सुधार किया और उसीकी बनाई मात्राओ का प्रयोग आज की पोल मे भी होता है। उससे भाषा के प्रयोग मे कुछ सुविधा तो हुई परन्तु लिखने का प्राय सारा कार्य लैटिन मे ही होता रहा। फिर १६वी सदी के आरम्भ मे ही इटैलियन रेनेसास का प्रभाव पोल साहित्य पर भी गहरा पडा।

पोलैड शीघ्र ही सुधारवादी धार्मिक प्रेरणाओ से भी प्रभावित हुआ। उस आदोलन का वहा समर्थक नाग्लोविस का मिकोलज रेज[३] था जिसने भाषा मे प्रभूत सुधार कर

१ Nicholas Copernicus (१४७३-१५४३), २ Jako'b Parkosz, ३ Mikolaj Rej (१५०५-६९)

उसे १६वी सदी के साहित्यिक स्वर्णयुग के लायक बनाया। उस सदी का सबसे सुन्दर व्यग्य, 'लार्ड, मजिस्ट्रेट और पादरी मे सक्षिप्त वार्तालाप', उसीने लिखा। उसने कुछ नैतिक और आचार सम्बन्धी कविताए और धार्मिक नाटक भी लिखे। उसकी प्रधान कृतिया 'चिडियाघर', 'दर्पण' और 'ईमानदार का जीवन' है। उस काल का दूसरा गद्य-कार स्तानिस्ला ओर्जेकोव्स्की[1] नामक एक पादरी था जिसने पादरियो के विवाह के लिए चर्च के अधिकारियो से काफी लडाइया लडी। उसके राजनीतिक लेखो का पोलैंड के इतिहास पर दूरगामी प्रभाव पडा।

उस युग का विशिष्ट कवि जान कोचानोव्स्की[2] था। इटली मे शिक्षा-दीक्षा होने के कारण वह रेनेसास के प्रभाव मे पर्याप्त आया था और लैटिन के अतिरिक्त इटैलियन के समकालीन कवियो को भी पढने-समझने लगा था। स्वदेश लौटने के कुछ काल बाद उसने अपनी भाषा मे कविताए लिखनी शुरू की और उसे उसका उचित पद दिया। १५७० मे उसने बाइबिल के स्तोत्रो का पोल छन्द मे रूपान्तर किया और ग्रीक परपरा मे एक मौलिक ट्रैजेडी (दु खान्त नाटक)—'ग्रीक दूतमडल का प्रत्यागमन' (१५७७)—लिखी। फिर उसने 'सन्त जान की सध्या के गीत' और अपनी कन्या उर्सुला की मृत्यु (१५७९) पर 'रौदस' (मरसिया) लिखी। उसकी ट्रैजेडी समूचे रेनेसास साहित्य मे अपना स्थान रखती है। कोचानोव्स्की पोलैंड के रेनेसास-युग का सबसे महान् कृति-कार था। उसका अपने देश के साहित्य पर खासा असर पडा। साइमन सिमोनोविच[3] उसके अनेक अनुयायियो मे से एक था। उसने थियोक्रिट्स के 'इदिल्स' के अनुकरण मे अपना 'गाववाले' प्रस्तुत किया।

सोलहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे विशेषकर जेसुइत मिशनरियो के आगमन से देश से सुधारवादी आन्दोलन का अन्त हो गया। पोलैंड के सबसे प्रसिद्ध जेसुइत पियोत्र स्कार्गा[4] ने राजनीति और धर्मक्षेत्र मे असाधारण प्रभावोत्पादक अपने उपदेशो और प्रवचनो को पोल मे ही लिखा।

परन्तु १७वी सदी मे पोल भाषा और साहित्य का ह्रास हुआ। अनवरत युद्धो ने देश की काया क्षीण कर दी और शिक्षा की भी वर्णनातीत हानि हुई। केवल जब-तब साहित्य निर्माण की दिशा मे प्रयास हुए। वाक्ला पोतोकी[5] ने तभी अपने एपिक और कविताए—विशेषकर चोकिम-युद्ध की कविता (१६२१)—लिखी और सामुएल जे स्कर्जिप्नी त्वार्दोव्स्की[6] ने अपनी प्रशस्तिया और व्यग्य लिखे।

---

१. Stanislaw Orzechkowski (१५१३-६६), २ Jan Kochanowski (१५३०-८४); ३ Szymon Szymonowicz (१५५८-१६२९) ४ Piotr Skarga (१५३६-१६१२), ५. Waclaw Potocki (१६२३-९६); ६ Samuel-ze-Skrzypny Twardowski (१६००-६०)

देश और साहित्य का पुनरुदय स्तानिस्ला कोनार्स्की[1] ने किया। इटली और फ्रास से पढकर लौटने के बाद ही उसने स्वदेश की स्थिति सम्हालनी शुरू की। नये स्कूल खोले और उनमे प्राकृतिक विज्ञानो को पढाने का प्रबन्ध किया। साथ ही उसने 'सफल शासन का रूप' लिखकर राजनीति पर भी अपना प्रभाव डाला। राजा स्तानिस्ला आगुस्त पोनियातोव्स्की[2] के अनेक साहित्यिक तरुण दरबारियो मे कोनार्स्की के विचारो की प्रतिध्वनि उठी। स्तानिस्ला रूसी साम्राज्य का कमजोर अनुचर था, परन्तु उसकी सास्कृतिक चेतना और उदारता ने देश मे साहित्य और कला का सम्मान किया। ह्यूगो कोलाताज[3] ने शिक्षा कमीशन द्वारा कोनार्स्की के विचारो का प्रसार किया और स्तानिस्ला स्ताजिक[4] ने अपनी योजनाओ—'वक्तव्य' और 'नसीहत' द्वारा देश का कल्याण किया। आदम नारूजेविक्ज[5] ने उसी काल अपना 'पोल जाति का इतिहास' लिखा।

इग्नासी क्रासिकी[6] भी स्तानिस्ला का समसामयिक था जिसने लिरिक कविताए और एक वीरकाव्य 'चोकिम का युद्ध' लिखे। उसकी 'मोनाचोमाचिया' और 'आन्ती-मोनाचोमाचिया' पोल भाषा की स्पष्टाकृति कृतिया है। निस्सन्देह तब का पोल साहित्य फ्रेच क्लासिकल प्रवृत्तियो का शिकार था। उसी काल स्तानिस्ला त्रेम्बकी[7] और तोमास काजेतन वेगिएर्स्की[8] ने अपनी कथाए, फ्रासिजेक कार्पिन्स्की[9] ने अपने लिरिक और कथाए तथा फ्रासिज़ेक दियोनिज़ क्नियाज्निन[10] ने अपनी कथाए लिखी।

शीघ्र ही अभागा पोलैड यूरोपीय साम्राज्यवादी लोलुपता का शिकार हो गया। रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया ने उसका बन्दर-बाट कर लिया। इससे पोल साहित्य की बडी हानि हुई। जो कुछ साहित्य प्रस्तुत हुआ वह अधिकतर उन्हीकी लेखनी से जो उस उथल-पुथल के समय पोलैड से भाग गए थे। ऐसा एक सिपाही जोज़ेफ विबिकी[11] था जो नेपोलियन की नौकरी मे था और जिसने १७९८ मे पोल राष्ट्रीय गीत 'जेजेज़े पोल्स्का निए ज्गिनेला' लिखा। इसी प्रकार पश्चिमी यूरोप मे अनेक पोल कवि यकायक प्रादुर्भूत हुए।

परन्तु वास्तविक साहित्यिक प्रगति देश मे ही हुई जब पोलैड के साहित्यकारो ने फ्रेच 'क्लासिकल' प्रवृत्ति को त्याग अग्रेजी या जर्मन प्रकार की रोमाटिक परम्परा को

---

१. Stanislaw Konarski (१७००-७३); २. Stanislaw August Poniatowski, ३. Hugo Kollataj (१७५०-१८१२), ४. Stanislaw Staszic (१७५५-१८२६), ५. Adam Naruszewicz (१७३३-९६), ६. Ignacy Krasicki (१७३५-१८०१), ७ Stanislaw Trembecki (१७३५-१८१२), ८. Tomasz Kajetan Wegierski (१७५५-८७), ९. Franciszek Karpinski (१७४१-१८२५); १० Franciszek Dionyz Kniaznin (१७५०-१८०७), ११. Jozef Wybicki

अपनाया। जुलियन उर्सिन-नीमसीविक्स[1] ने अपने लबे अमरीकी प्रवास से लौटकर अपनी कॉमेडी 'दूत का प्रत्यागमन' लिखी। फिर स्कॉट द्वारा प्रभावित होकर उसने ऐतिहासिक उपन्यास और रोमाटिक बैलेड भी लिखे। जॉन पावेल वोरोनिक्ज[2] ने देश-प्रेम की कविताए लिखकर राष्ट्रीय चेतना जगाई। कुछ पोल साहित्यकार अब भी ग्रीस और रोम की विगत सत्ता की ओर देख रहे थे। इनमे उल्लेखनीय काजेतन कोज्मिया[3] है।

युग रोमाटिक प्रवृत्तियो का था। नये युग का आरम्भ काजिमिर्ज ब्रोदजिन्स्की[4] ने किया। उसने हर्डर[5], गेटे[6] और शिलर[7] के बैलेडो का पोल मे अनुवाद किया। वह जर्मन विचारधारा से काफी प्रभावित था और उसके आलोचनात्मक ग्रन्थ उसी प्रेरणा मे लिखे गए। उसने फिर भी अपनी स्वतत्र चेतना को विस्मृत न होने दिया। रोमाटिक चेतना ने पोलो को उनके गौरवमय अतीत की ओर आकृष्ट किया और उनमे राष्ट्रीय भावना जगाई। १८०० मे वारसा मे 'विज्ञान के मित्रो का सघ' बना। विल्नो का विश्व-विद्यालय राष्ट्र-प्रेमी युवको का केन्द्र बन गया। अनेक साहित्यिक सस्थाओ का आरम्भ हुआ जिनका उद्देश्य गुप्त रूप से राष्ट्रीयता का प्रतिपादन करना भी था। इन सस्थाओ मे मुख्य 'फिलोमाती' और 'फिलारेती' थे। उसी काल दक्षिण पूर्व मे एक रोमाटिक पोल-उक्रेनी लेखक दल का प्रादुर्भाव हुआ। उन्हीमे रोमाटिक कवि आन्तोनी माल्चेव्स्की[8] भी था। उसने तुर्को के विरुद्ध पोलो और उक्रेनियो के सम्मिलित सघर्ष को अपने काव्य 'मार्जा' का विषय बनाया। उसमे सारी उदात्त भावनाए, प्रेम और घृणा के आदर्श, राष्ट्री-यता की समग्र सक्रियता, अतीत का गौरव, शील और वीरता रूपायित हुई। उसी काव्य-परपरा के उपासक कवि जोज़ेफ बोह्दान ज़ालेस्की[9] और सेवेरिन गोज़ेकोजिन्स्की[10] हुए।

उस आदोलन और साहित्यिक पुनर्जागरण को विशेष बल विल्नो के विश्वविद्यालय से मिला। वही नये कवियो और लेखको के दल साहित्य और राष्ट्र के नवनिर्माण मे दीक्षित होते थे। आदम मिकीविक्स[11] सबसे महान् पोल रोमाटिक कवि था। विल्नो यूनिवर्सिटी मे उसने बडी तत्परता से साहित्य का अध्ययन किया था और आरम्भ मे क्लासिकल परपरा का भक्त था। परन्तु शीघ्र ही कोनो मे प्रोफेसर होने के बाद उसकी विचारधारा बदल गई और जर्मन रोमाटिक कवि उसे रुचने लगे। १८२२ और २३ मे उसने अपनी कविताओ की पहली दो जिल्दे प्रकाशित की। साथ ही 'पूर्वज' नाम के बैलेडो के भी अनेक

१. Juljan Ursyn Niemciewicz (१७५७-१८४१); २. Jan Pawel Woronicz (१७५७-१८२९), ३. Kajetan Kozmian (१७७१-१८५६); ४ Kazimierz Brodzinski (१७९१-१८३५); ५ Herder; ६ Goethe; ७ Schiller; ८ Antoni Malczewski (१७९३-१८२६), ९ Jozef Bohdan Zaleski (१८०२-८६); १० Seweryn Goszczozynski (१८०१-७६), ११ Adam Mickiewicz (१७९८-१८५६)

मे अट्ठारहवी सदी की एक कथा है। 'बालादिना' और 'लिलावेनेदा' प्रागैतिहासकालीन स्लावो की कथाए नाटक के रूप मे आई है। 'प्लेगपीडितो का पिता' भी पौर्वात्यकथानक का एक नाटक ही है। वह भी एक बार मिकीविक्स की ही भाति तोविआन्स्की के चक्कर मे पड गया था और तब नितान्त दार्शनिक कविताए लिखने लगा था। 'आत्मा की उत्पत्ति' और विशेषत. 'क्रोल दूच' उसी सम्बन्ध के द्योतक है। स्लोवाकी अल्पायु मे ही मर गया।

उस दल का तीसरा विशिष्ट कवि ज़िगमुन्ट क्रासिन्स्को[१] था। वह भी प्रवासी पोल था। पेरिस मे पैदा हुआ था, वारसॉ मे बडा हुआ और पोल विप्लव के पहले स्विट्जरलैड भेज दिया गया यद्यपि वह आन्दोलन मे भाग लेना चाहता था। उसने 'अदैवी कॉमेडी' (१८३५) द्वारा ख्याति अर्जित की। उसमे उसने आन्दोलन के कुछ पहलुओ पर साहित्य के माध्यम से प्रकाश डाला। 'इरीडियन' मे ग्रीक कथानक का उपयोग हुआ। इन दोनो कृतियो मे पोलैड के सम्बन्ध मे उसने निराशाजनक भावनाए चित्रित की है। आशात्मक सभावनाओ का उद्रेक उसकी अन्य कविताओ—जैसे, 'उषा' 'भविष्य के स्तोत्र' और 'सहानुभूति के स्तोत्र'—मे हुआ है।

पोल अभिनिष्क्रमण ने छोटे-बडे अनेक अन्य कवि उत्पन्न किए। इनमे प्रधान सिप्रियन कामिल नॉविद[२] और अलेक्सान्दर चोदस्को[३] थे। इनके अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विवेचक भी थे जिन्होने साहित्य को अपने दर्शन का आधार बनाया, उनमे प्रधान जोज़ेफ होइने रोन्स्की[४], जोजेफ क्रेमर[५], कारोल लीबेल्त[६], ब्रोनिस्ला फर्दिनान्द त्रेन्तावस्की[७] और आगुस्त सीजकाउस्की[८] थे।

पोलैड पर विदेशी सत्ता का अधिकार हो तो गया था पर वहा भी साहित्य-निर्माण का कार्य किसी न किसी रूप और मात्रा मे चलता रहा। स्तेफा जेरोम्स्की[९] ने निराशात्मक प्रवृत्ति का अपने 'गृहविहीन लोग' और 'भस्म' मे परिचय दिया। उसने प्रणय और मानवी समस्याओ पर 'पाप का इतिहास' मे अपने विचार प्रगट किए। उसके उपन्यास और नाटक दोनो मे उसी निराशावादी प्रवृत्ति का अकन हुआ परन्तु प्रथम महायुद्ध और पोलैड की स्वतन्त्रता ने उसे अपना 'समुद्र की हवा' लिखने को प्रोत्साहित किया।

१९वी सदी के अन्त मे पोलैड मे 'तरुण पोलैड' नाम का एक आन्दोलन शुरू हुआ। मिकीविक्स को आदर्श मानकर पोल कला को पुनरुज्जीवित करना ही उसका

---

१ Zygmunt Krasinski (१८१२-५९), २ Cyprjan Kamil Norwid (१८२१-८३); ३ Aleksander Chodzko (१८०४-९१), ४ Jozef Hoehne Wronski (१७७८-१८५३); ५. Jozef Kremer (१८०६-७५), ६ Karol Libelt (१८०७-७५), ७. Bronislaw Ferdynand Trentowski (१८०७-६९), ८ August Cieszkowski (१८१४-९४), ९. Stefan Zeromski (१८६४-१९२५)

उद्देश्य था। पोलैंड का साहित्य भी उस नये मूल्याकन का लक्ष्य बना। उस दल का सबसे विशिष्ट लेखक स्तानिस्ला विस्पियान्स्की[१] चित्रकार, कवि और नाट्यकार था। उसके विचारो मे न्यायप्रियता और आजादी का प्राधान्य था। वह पोल दृष्टिकोण रखता हुआ भी मानव दृष्टिकोण का पक्षपाती था और सर्वत्र उसने उसे अपने विचारो का आधार बनाया। 'विवाह' और 'वारसा की लडकी' (१८३१ का एक गीत) दोनो मे उसका यह दृष्टिकोण समुचित रूप से स्थापित हुआ है। प्रथम महायुद्ध के साथ ही पोल साहित्य का सभी दिशाओ मे विकास हुआ। ल्योपोल्ड स्टाफ[२] ने काव्य मे रसवाद का प्रसार किया, जोजेफ वेसेनहाफ[३] ने भावुक कृतिया प्रस्तुत की, जाफ्जा रिगीर-नाल्कोवस्का[४] ने 'नारी दर्शन' का चिन्तन किया, स्तानिस्ला ब्रजोजुस्की[५] ने क्रान्तिकारी आलोचना का सूत्रपात किया और स्त्रुग तादुस गालेकी[६] ने रोमान्टिक प्रवृत्तियो को सभाला। इस प्रकार चेतना चाहे जैसी रही हो, थी वह प्राय. सर्वतोमुखी।

राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, आजाद विचारो का प्रकाशन बडी तन्मयता और आसानी से होने लगा। 'स्कामान्दर' प्रधान साहित्यिक पत्र था जिसके कॉलम जूलियन तूविम[७] के लेखो से भरे रहते थे। उसने शब्द की व्याख्या विशेष रूप से करनी शुरू की और आन्तोनी स्लोनिम्स्की[८] तथा जान लेचोन[९] ने अलकारो का विशेष उपयोग किया। इनके योग से पोल भाषा और काव्य-शैली निखर चली। इला काजीमीरा इलाकोविचोवना (इलाकोविच)[१०] ने मानवी हृदय की यातनाओ को व्यक्त किया और मार्जा पोलिकोव्स्का[११] ने सक्षिप्त शैली का अपनी कृतियो मे विकास किया। व्लादिस्लाव ब्रोन्यूवस्की[१२] इनके विपरीत, जनता का साहित्यकार था और उसने अपनी रचनाओ मे सर्वहारा वर्ग के पक्ष का समर्थन किया।

गद्य के क्षेत्र मे पुराने लेखको को भी युद्धोत्तर ससार ने एक नई दृष्टि दी। रेमोन्ट,[१३] कासप्रोविक्स[१४] और जेरोम्स्की[१५] तो बहुत दिनो जिन्दा न रहे परन्तु व्लोदीमीर्ज़ परजिस्की[१६], वाकला बेरेन्ट[१७] आदि ने अपने उपन्यासो मे विविध विचारो का प्रकाश किया। तरुण लेखको ने उनसे अधिक अपनी प्रवृत्तियो को रूपायित किया। उगेन्जुज कोर्रविन-

---

१. Stanıslaw Wxspıanskı (१८६९-१९०७), २. Leopold Staff, ३. Jozef Wejssenhaf (१८६०-१९३२), ४ Zafja Rıgıer Nalkowska (जन्म १८८५), ५. Stanıslaw Brzozowskı (१८७८-१९११), ६ Strug Tsadeusz Galeckı (जन्म १८७३); ७. Juljan Tuwım (जन्म १८९४), ८. Antonı Slonımskı (जन्म १८९५), ९. Jan Lechon (जन्म १८९९), १०. Illa Kazımıera Illakowiczowna (Illakowıcz) (जन्म १८९२), ११ Maraja Pawlıkowska १२. Wladyslaw Bronıewskı (जन्म १८९८), १३. Reymont; १४ Kasprowıcz, १५ Zeromskı, १६. Wlodzımıerz Perzynskı (१८७८-१९३०), १७. Waclaw Berent (१८७३-१९४०)

मालाकचेव्स्की[1] ने अपने उपन्यासो का आधार युद्ध की अनुभूतियो को बनाया। फर्दिनान्द गेतेल[2] ने अपने उपन्यास 'दिन ब दिन' मे तुर्किस्तान का जीवन अकित किया। जोफिया कोसाक जुका[3] ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे।

कम्युनिस्ट लेखको मे सबसे महत्व का सभवत वान्दा वासिलेव्स्का[4] है। उसी प्रकार के विचारो का लिओन क्रुस्कॉव्स्की[5] भी है। जूलियस काद्रेन बन्द्रांवस्की[6], मार्शल पिल्सुदस्की[7] का प्रबल अनुयायी है और उसीकी भाति उसने भी पोल जीवन की आलोचना की है। जारोस्ला इवास्कीविक्स[8] और मिचाल चोरोमान्स्की[9] वातावरण का सुन्दरतम अकन करते है। जोजेफ विटलिन[10] ने प्रथम महायुद्ध पर सुन्दर उपन्यास 'जमीन का नमक' लिखा। साहित्यालोचन के क्षेत्र मे तादूज ब्वाय-जेलेन्स्की[11] प्रधान है।

दूसरे महायुद्ध मे पोलैड चेकोस्लोवेकिया के बाद ही नात्सी साम्राज्यवाद का शिकार हुआ था। अत्यन्त क्रूरता से उस देश की आजादी का गला घोट डाला गया। लाखो की तादाद मे लोग वहा मारे गए। पोलैड सदा का अभागा देश रहा है परन्तु जिस क्रूरता से नात्सीवाद ने उस युद्ध के आरभ मे पोलैड की जनता का सहार किया वह इतिहास मे अन्यत्र उपलब्ध नही। वहा के 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' नरक की नितान्त काल्पनिक यातनाओ को भी अपनी यथार्थता से सच कर देते है। 'पोग्रम' (जनदल का आयोजित सहार) इतने भयकर उदाहरण और कही नही मिलते जितने नात्सी अधिकृत तब के पोलैड मे। यहूदियो की वहा सख्या अधिक होने के कारण उनका विनाश भी उसी मात्रा मे हुआ। उसी मात्रा मे पोलैड के साहित्यकारो का भी सहार हुआ। अनेक मार डाले गए। अनेक आक्रमण के शिकार हो गए, अनेक निर्वासित कर दिए गए, अनेक अपने आप बडी कठिनाई से देश छोडकर बाहर चले गए। अब नात्सियो से आजाद होने के बाद पोलैड की भारती एक बार फिर मुखरित हुई है और साहित्य का निर्माण जनहिताय होने लगा है। अपने बलिदानो और साम्राज्यवादी महात्वाकाक्षा का आहार बनने की भयकर अनुभूति से पोलैड का साहित्यकार भावो का सबसे बडा धनी है, निस्सन्देह उसकी अनुभूति-सम्पदा उसके साहित्य का प्रशस्य विषय बनेगी।

---

१ Eugenjusz Korwin-Malaczewski (१८९५-१९२२), २ Ferdynand Goetel (जन्म १८९०), ३ Zofja Kossak-Szczucka, ४. Wanda Wasilewska, ५ Leon Kruchkowski, ६ Juljusz Kadren-Bandrowski (जन्म १८८५), ७. Marshal Pilsudski, ८. Jaroslaw Iwaskiewicz (जन्म १८९४), ९. Michal Choromanski (जन्म १९०४), १० Jozef Wittlin (जन्म १८९६), ११. Tadeusz Boy-Zelenski (जन्म १८७४)

१६. फारसी साहित्य

: १ :

इस्लाम से पूर्व

ईरानी हिन्द-यूरोपीय आर्यो की ही एक शाखा माने जाते है। 'ईरानी' शब्द भी व्युत्पत्तिक रूप मे 'आर्य' शब्द के बहुत पास है। फारस या पार्स ईरान के एक विशिष्ट प्रान्त का नाम था जिससे वह फारस, पार्स या फार्स कहलाया। सस्कृत मे ईरानियो को 'पारसीक' कहा गया है। फारसी भाषा का सबध एक ओर तो प्राचीन भारतीय सस्कृत से है दूसरी ओर यूरोप की 'क्लासिकल' भाषाओ से। प्राचीन काल मे ईरानी मूल आर्य जाति से सभवत कास्पियन सागर के समीप पृथक् हुए और दक्षिण-पूर्व की ओर घूमते हुए ईरानी, मीडी आदि अनेक नामो से सीर, आमू (वक्षु) आदि नदियो की घाटी मे बस गए। इन्ही दिनो वे ईरान मे भी बसे और अपनी भाषा का विकास किया।

ईरानी जाति का उत्कर्ष नवी सदी ई० पू० के मध्य मे हुआ। तब उस दिशा मे और पश्चिमी एशिया मे, मिस्र तक, असुरो का प्रभुत्व था। कुरुष् महान् के राज्यकाल (५५८-५३०) ई० पू० मे ईरान अपनी शक्ति के लिए विख्यात हुआ। कुरुष् (साइरस) ने मीडी कुल को उखाड फेका और बाबुल (बावेरू) तथा उसके अनुवर्ती देशो को जीतकर इतिहास प्रसिद्ध हखमनी वश की नीव डाली। इस वश का उत्कर्ष पहले पार्स प्रात मे ही हुआ और जैसे-जैसे समूचे ईरान पर उस राजवश का प्रभुत्व फैला पार्स भी वैसे ही वैसे उस देश की सज्ञा बन गया। ग्रीको ने उसे 'पर्सिस' कहा जिसका लेटिन रूप 'पर्जिया' या 'पर्शिया' आज भी प्रचलित है।

कुरूष् के बाद उसके राज्य का स्वामी उसका पुत्र काम्बुजीय हुआ। उसने मिस्र तक भूमि जीत ली। परन्तु घर का विद्रोह दबाने जब वह शीघ्रता से लौटा तो सीरिया मे राह मे ही उसकी मृत्यु हो गई (५२१ ई० पू०)। उसके बाद हखमनी राजकुल की गद्दी का हिस्तास्प हकदार हुआ परन्तु वह काम्बुजीय के शत्रु से राजदण्ड न छीन सका। वह कार्य उसके पुत्र दारायवौष प्रथम (दारा) ने किया। दारा ने ५२१ ई० पू० मे ही राज्य शत्रु से छीन लिया और अपने शासन की सीमाए दूर-दूर तक फैला दी। फारसी साहित्य का आरम्भ उसी नृपति के शासन काल मे हुआ। उसके अनेक विजयलेख आज भी चट्टानो और प्रस्तर-पट्टो पर सुरक्षित है। इनमे प्रसिद्ध बहिस्तून और नक्श-ए-रुस्तम के अभिलेख है। पिछले अभिलेख से, जो उस शक्तिशाली सम्राट् की कब्र पर खुदा है,

स्पष्ट है कि उसने सिन्ध और पश्चिमी पजाब जीतकर बीसवी क्षत्रपी (सूबा) अपने साम्राज्य मे मिला लिया था। उसी लेख मे पहले पहल हिन्दू (हिंदु) शब्द का प्रयोग हुआ। जिससे कालान्तर मे हिन्दी भाषा का नाम पडा। बहिस्तून खुरासान-वणिक्पथ पर किरमानशाह से पन्द्रह कोस पूर्व है। इस लेख मे सम्राट ने अपने पूर्वजो, विरुदो और विजयो का उल्लेख किया है और उस आहूरमज्दा का भी, जिसकी कृपा से उसे युद्धो मे विजय मिली। उस के अभिलेखो का भारतीय लेख-प्रथा पर बडा प्रभाव पडा। मौर्य-कला ने तो उसकी कला-कृतियो को अपना प्रतीक बनाया ही, अशोक ने उसीके अभिलेखो को सामने रख भारत मे पहली बार विस्तृत रूप से चट्टानो और स्तम्भो पर अपने विचार खुदवाए। पश्चिमी पजाब मे तो उसने हखमनी लिपि (दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जानेवाली खरोष्टी) मे ही अपने अभिलेख खुदवाए और खोदने वाले को ईरानी भाषा की ही 'दिबिर' (लेखक) सज्ञा मिली।

लेख गद्य की एक शैली प्रस्तुत करते है। भाषा सस्कृत से मिलती है। दारायवौष् अपने को आर्यो मे 'आर्य' (आर्याणा आर्य.), क्षत्रियो मे 'क्षत्रिय' (क्षत्रियाणाम् क्षत्रिय) कहता है। दारायवौष् और उसके उत्तराधिकारी क्षयाषी(४८५-४६५ ई० पू०) ज़रक्सीज़ और आर्तक्षयाषी (ऋतज्ञ-याषी-४६५-२४) के नक्शा-ए-रुस्तम और पर्सिपोलिस के लेख ईरानी राष्ट्रीय साहित्य का आरम्भ करते है। क्षयाषी का उल्लेख ग्रीक साहित्य मे प्रचुर हुआ है क्योकि उसने अपनी राज्यसीमा भूमध्य सागर तक बढाकर एथेन्स को जला डाला था। उसकी ओर से भारतीय भी ग्रीस मे लडे थे। इन लेखो मे जो आहूरमज्दा का उल्लेख हुआ है उससे प्रगट है कि छठी सदी ई० पू० तक जरतुश्ती (पारसी) धर्म ईरान मे पूर्णतया प्रचलित हो चुका था।

जरतुश्त (जरथुश्त) के काल के सबध मे विद्वानो मे बडा विरोध है। उसका जीवन-काल ६००० से ६०० ई० पू० तक रखा गया है। वैज्ञानिक विद्वानो ने उस महापुरुष का समय सातवी सदी ई० पू० का उत्तरार्द्ध माना है। वह सम्भवत अजरबैजान का रहने वाला था। पारसियो का होमपरक धर्म ग्रन्थ 'अवेस्ता' उसीकी कृति माना जाता है। कमसे कम उस ग्रथ का गाथा भाग जरतुश्त द्वारा प्रस्तुत माननेमे कम विद्वानो को आपत्ति है। 'अवेस्ता' मे स्थान-स्थान पर सुन्दर कविता का परिचय मिलता है। 'अवेस्ता' प्राचीन ईरानियो (भारतीय पारसियो) का धर्मग्रन्थ तो है ही, उस काल की बोली का भी नाम है। उसकी भाषा अभिलेखो की भाषा से अनेकार्थ मे भिन्न और वैदिक सस्कृत के अनुरूप है। कुछ ध्वनियो को बदलकर पढने से लगता है कि हम ऋग्वेद के उच्चरित मत्र सुन रहे हो। वर्तमान 'अवेस्ता' केवल खड रूप मे ही उपलब्ध है। पारसियो का कहना है कि ससानी काल (छठी सदी ईस्वी) मे उसके इक्कीस खड थे। उसके दो भाग है—अवेस्ता और प्रार्थनाओ का खुर्द अवेस्ता। अवेस्ता तीन भागो मे विभक्त है—(१) गाथापरक

'वेन्दीदाद' (२) यज्ञमत्रो का सग्रह 'विस्पेरद' और पूजापरक 'यस्त'। अवेस्ता का महत्व वस्तुत साहित्य के क्षेत्र मे इतना नही जितना भाषा-विज्ञान के क्षेत्र मे है।

चौथी सदी ईस्वी पूर्व मे ईरान का स्वामी दारायवौष् तृतीय था। उसीको मकदूनिया के सिकदरने ३३१ ई० पू० मे गागामेला मे परास्त किया। उस पराजय से जो ईरानी साम्राज्य का पतन हुआ तो सदियो ईरान की सत्ता भूलुण्ठित रही। फिर २२४ ईस्वी मे ससानी राजकुल का आरम्भ हुआ और एक बार फिर धर्म और साहित्य का उत्कर्ष हुआ। इन पाच सौ वर्षों के अधकार-युग मे ईरान पर पहले ग्रीक सेल्यूकस के राजवश का, फिर अर्सक राजकुल का शासन रहा। अर्सक ने सेल्यूकस के साम्राज्य से विद्रोह कर जिस शासन का आरभ किया था वह भी ईरानी ही था, परन्तु जरतुश्ती धर्म वास्तविक राष्ट्रीय आदोलन के साथ फिर से ईरानी धरा पर ससानी राजकुल के साथ ही आविर्भूत हुआ। इसका पहला राजा आर्दशीर अथवा आर्दक्षीर (ऋतक्षीर) था जो अपने को हखमनी कुल का ही वशधर मानता था।

उस काल ईरान मे जिस भाषा का प्रचलन हुआ वह पहलवी थी, 'पार्थवी'। पहलवी का पूर्वतम रूप हमे प्राचीनतम ससानी अभिलेखो मे मिलता है। इस भाषा मे जरतुश्ती धर्म के ऊपर इस्लाम की विजय के पहले काफी साहित्य प्रस्तुत हुआ होगा। परन्तु इस्लाम की सहारक चोट ने प्राय. सबका अन्त कर दिया। पहलवी के स्थान पर अरबी लिपि का व्यवहार आरम्भ हुआ और पहलवी जरतुश्ती पुरोहितो मात्र की भाषा रह गई। नवी सदी ईस्वी के बाद तो पहलवी का सर्वथा अन्त ही हो गया और उस काल की जो कुछ रचना बच रही है उसकी रक्षा का श्रेय बम्बई के पारसियो को है जिनके पूर्वज धार्मिक असहिष्णुता के कारण ईरान छोडकर आठवी सदी मे हिन्दुस्तान चले आए थे।

जो कुछ बच रहा है वह सारा धार्मिक साहित्य है, अवेस्ता से सम्बन्धित। अवेस्ता की व्याख्या को जन्द कहते है और प्राय दोनो का एक साथ जन्दावेस्ता नाम लिया जाता है। जन्द साहित्य की भाषा पहलवी है। अवेस्ता सम्बन्धी अन्य धार्मिक रचनाओ के नाम है 'बुन्दहिश' 'दीन्कर्त' 'मैन्यो इ खिरद'। इन्हीके साथ कुछ लौकिक साहित्य का भी प्रादुर्भाव हुआ जिसमे ऐतिहासिक ख्याते, कथाए आदि सुरक्षित हुई। ये ही ख्याते मुस्लिम ईरान के कवियो के लिए विचार भण्डार सिद्ध हुई। इस दृष्टि से इस काल की लौकिक रचनाए बडे महत्व की है। उनमे बडी विविधता है। इनमे ससानी काल का पारसियो के सामाजिक आचार का एक शास्त्र भी है जिसमे विवाह, सम्पत्ति, गुलामो आदि के सम्बन्ध मे विधान दिए हुए है। इसी प्रकार पत्र-लेखन की कुछ शैलिया भी एक सग्रह मे प्रस्तुत है जिनमे पत्रो के आरम्भ-अन्त करने की पद्धति दी हुई है। साथ ही उसमे प्राचीन पहलवी की एक शब्दावली भी पाज़न्द जबान मे दी हुई है। उस साहित्य की एक रचना शतरंज सम्बन्धी एक काल्पनिक कहानी है, दूसरी खुसरो-ए-कवातान् और उसके अनुचर

की कथा है। परन्तु साहित्य की सबसे महत्व की कृतिया है—'यात्कार-ए-जरीरान' (जरीरो के सस्मरण) जिसका दूसरा नाम 'शाहना-ए-गुश्तास्प' (गुश्तास्प का वीर काव्य) है, और 'कार-नामक-ए-अर्तख्शीर-ए-पापकान' (बाबकपुत्र अर्दशीर के वीरकृत्यो की पुस्तक)। इनमे पौराणिक और अर्धैतिहासिक व्यक्तियो की कथाए है और इनकी सामग्री बहुत कुछ फिरदौसी के शाहनामा से मिलती है।

'यात्कार' मे अर्जास्प और गुश्तास्प नामक दो राजाओ के युद्ध का वर्णन है। अर्जास्प के दूत गुश्तास्प को अपना जरतुश्ती धर्म छोड देने को कहते है और उसके इन्कार करने पर लडाई छिड जाती है। गुश्तास्प का भाई जरीर बडे पराक्रम के बाद वीरगति को प्राप्त होता है। कार-नामक-ए-अर्तख्शीर मे अर्दशीर की कथा है जो वस्तुत दारा का वशधर है, पर अनजान मे भेड चराता है। बडे होने पर उसे ईरान का बादशाह बुला लेता है पर शाहजादे से लडने के कारण वह महल से निकाल दिया जाता है। वह फिर लौटता है और बादशाह को हराकर उसकी कन्या से विवाह करता है। इन कृतियो का सही रचना-काल तो ज्ञात नही परन्तु नि सदेह वे किसी पश्चात्कालीन ससानी राजा की सरक्षा मे प्रस्तुत हुई। फिरदौसी को अपने शाहनामा के लिए इससे बडी सामग्री मिली।

उस काल के काव्य का कोई रूप हमे आज उपलब्ध नही, यद्यपि यह विश्वास करना कठिन है कि नौशेरवा और खुसरो परवेज के-से बादशाहो के अपने कवि और गायक न थे। अरबो ने यज्दगिर्द को परास्त कर ससानी राजकुल का अन्त कर दिया। इस्लाम ने जरतुश्ती धर्म का स्थान लिया और ईरान विशाल अरब साम्राज्य का एक प्रात बन गया। इस्लाम अपने विचार और जीवन के प्रति अपना दर्शन लेकर आया था, नित्य के आचार तक, और उसने ईरानी आचार-विचारो, धर्म-विश्वासो मे आमूल परिवर्तन कर दिए।

साहित्य के क्षेत्र मे भी उसका दूरगामी प्रभाव पडा। पहलवी लिपि के स्थान पर अरबी प्रतिष्ठित हुई और प्रत्येक नव-मुस्लिम का अरबी जुबान जानना अनिवार्य हो गया क्योकि उसके बिना नमाज़ या कुरान पढना सम्भव न था। जरतुश्ती धर्म का सर्वथा नाश न हुआ और उस काल की ख्याते, कथाए और लोक साहित्य निश्चय ही बचे रहे जो भावी साहित्य का आधार बने। स्वय इस्लाम को ईरानियो ने अपने रग मे रग दिया, जिससे अली की हत्या के बाद शिया सम्प्रदाय का आरम्भ हुआ। जिस कट्टरता से ईरानियो की रहन-सहन पर अरबो ने शासन रखा उससे सम्भव न था कि वहा किसी प्रकार के इस्लाम-विरोधी जातीय साहित्य का निर्माण हो। ईरान के पतन के सौ-दो सौ वर्षो बाद का काल साहित्य की दिशा मे प्राय सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ।

: २ :

अब्बासी खिलाफत-काल

(७५०–१२५८ ई०)

धीरे-धीरे रूढिवादी इस्लाम का पलडा भारी होता गया, उसकी शक्ति बढती गई। उसके नेताओ ने ईरानी असतोष से लाभ उठा ईरानियो मे बगावत फैला दी। बगावत सफल हुई और खलीफो की परपरा शक्तिमती हुई और मुस्लिम साम्राज्य की राजधानी दमिश्क से उठकर बगदाद चली गई और तभी ईरानियो को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। उनकी सूझ और शासन-कुशलता का अरबो की दुनिया मे साका चलता था। शीघ्र वे खलीफो के साम्राज्य मे सर्वत्र ऊचे अफसर नियुक्त होने लगे।

'अरबी' धर्म, विज्ञान और राजकीय पत्रव्यवहार की भाषा बनी रही जिसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि इस काल के विख्यात धर्मशास्त्री और वैज्ञानिक ईरानी थे, उनकी कृतिया अरबी मे प्रस्तुत हुईं और अरबी साहित्य की निधि बनी। इस प्रकार के प्रधान लेखको मे अग्रणी इतिहासकार तबरी, चिकित्सक और दार्शनिक अविचेन्ना, तवारीखनवीस अल्बेरूनी, और कुरान का व्याख्याता अल्बेजावी थे। ईरानी इब्न खुर्दादबिह ने अरबी का प्राचीनतम भूगोल—किताबुल मसालिक व ममालिक (सडको और मुल्को की किताब) लिखी (८४४ ई०)। अपनी भाषा मे ईरानी केवल कविता करते रहे। इस दिशा मे भी पहले उन्होने अरबी पद्य की शैलिया अपनाई। आधुनिक फारसी साहित्य के उद्गम खुरासान और ट्रान्साक्सियाना के अरबो द्वारा प्राय तीन सदियो तक शासित होने से ऐसा होना स्वाभाविक ही था। परन्तु ईरानियो ने अरबो से जो-जो लिया पचा डाला और शीघ्र ही उनकी काव्य-प्रतिभा अरबो को लाघ चली।

परन्तु फारस मे काव्य परम्परा का विस्तार तब हुआ जब बगदाद के खलीफो की दुर्बलता का लाभ उठा, साम्राज्य के दूरस्थ प्रान्तो ने अपने-अपने स्वतन्त्र राजवश खड़े कर लिए, ईरान मे भी ऐसा ही हुआ और ८२०ई० मे ताहिर इब्नहुसैन ने वहा स्वतन्त्र शासन की बुनियाद डाली। उसने हारूँ अलरशीद के बेटे की लडाई मे मदद की थी और बदले मे खुरासान की गवर्नरी मिली थी। अपने आचार-विचारो मे सर्वथा अरबी होने के कारण इस राजकुल के राजाओ से स्थानीय कवियो के प्रति हमदर्दी विशेष तो नही हो सकती थी, फिर भी प्रमाणत उस काल कुछ फारसी साहित्य प्रस्तुत हुआ। उस काल के दो फारसी कवियो के नाम सुरक्षित है जिन्होने उस सफ्फारी राजकुल के शासनकाल मे कविताए लिखी जो ताहिरियो के बाद ईरान का स्वामी बना (८६७-९०३ ई०)। ये थे बगदाद का हन्जला और हेरात के महमूदी वर्राक।

इस दिशा मे वास्तविक प्रगति सामानी राजाओ के शासन (८७४-९९९ ई०) मे हुई। ये सम्भवत ससानी राजाओ के ही वशधर थे। उन्होने सफ्फारियो को परास्त कर ट्रान्साक्सियाना, खुरासान और उत्तरपूर्वी फारस का एक बडा भाग जीत लिया (९०० ई०)। युद्धकाल मे भी वे कवियो और इतिहासकारो से घिरे रहते थे। इनमे एक बलख का अबूशकूर था जिसने पहले पहल रुबाइया लिखी। रूबाइयो की शैली आगे आने वाली सदियो मे रहस्यवादी क्षेत्र मे विशेष रुचिकर हुई। कोषो मे उसकी कविताओ की सादगी आज भी सुरक्षित है। फारसी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास लिखने मे इनकी सामग्री अमूल्य सिद्ध होगी। जीवनचरितो मे कवियो की कविताओ के उद्धरण दिए गए। उसी प्रकार कोषो मे भी शब्दो के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए काव्य कृतियो से उदाहरण दिए गए है।

फारस का पहला महान् 'क्लासिकल' कवि रूदागी था। ईरान की दरबारी कविता का आरम्भ उसीसे हुआ। रूदागी प्रशस्तिकार था। प्रशस्तियो की तब परिपाटी चल पडी और कवियो को दरबार मे सरक्षा मिलने लगी। 'रूदागी' कवि का तखल्लुस मात्र है। उसका असल नाम अबू अब्दुल्ला जाफर इब्न मुहम्मद था। वह खुरासानी था। कहते है कि रूदागी जन्मान्ध था फिर भी अपनी प्रतिभा के बल पर वह सामानी नृपति नस्र इब्न अहमद (९१४-४३ ई०) का दरबारी कवि बन गया। उसका वर्णन अतिरजित है, शैली भी कृत्रिम है पर काव्य उसका सुगम है। उसमे प्रसाद गुण की कमी नही। उसकी कविता मे ही पिछली काव्यधारा का अन्तर्विरोध प्रगट हो गया है। ईरानी जीवन मे निसर्ग की प्रेरणा बडी थी, उससे जनित आनन्द का उल्लास भी अदम्य था पर इनसे कही बढकर इस्लाम के तपाचरण का भय भी उसपर हावी था। नारी, मदिरा और सगीत का आकर्षण धर्म के अनुशासन से नही दबाया जा सकता था और उन तीनो की प्रशसा मे धर्मानुशासन के बावजूद ईरानी कवियो का भावस्रोत उमड पडा। स्वय रूदागी इस प्रभाव से वचित न रह सका और उसका भावोद्रेक धर्म की प्राचीरे तोड अनिर्वचनीय की स्तुति मे बह चला। उसने तीन ऐतिहासिक काव्य लिखे जिनमे प्रधान 'वामिक और अज्रा' पहलवी सामग्री से प्रस्तुत है। उसके ये काव्य तो अब नही मिलते परन्तु जीवन-चरितो और दीवानो मे उसकी अनेक प्रशस्तिया और कविताए सुरक्षित है।

सामानियो की ही सरक्षा मे दकीकी भी फूला-फला। दकीकी का उल्लेख पहलवी 'यात्कार' (यादगार) के सम्बन्ध मे किया जा चुका है। उसने ससार की चार नियामते—रक्ताधर, तन्त्रीनाद, जरतुश्त के प्रवचन और लाल मदिरा-मानी है जिससे कुछ विद्वानो ने उसे जरतुश्ती धर्म का अनुयायी भी माना है। प्राचीन पहलवी सामग्री के आधार पर फिरदौसी का प्रसिद्ध 'शाहनामा' उसीने आरभ किया। वह उसके हजार शेर लिख चुका था कि एक गुलाम ने उसकी हत्या कर दी। उस 'शाहनामा' को फिर फिरदौसी ने पूरा किया।

शाहनामा फिरदौसी की कृति के नाम से ही विख्यात है। फिरदौसी की प्रतिभा, उसका वर्णन-चातुर्य, उसके मनोरम दृश्याकन इस अद्भुत रचना का कवि होने का उसका दावा अगीकार करते है। उसकी और दकीकी की शैली तथा शब्दचयन मे कोई अन्तर नही। यदि उसने दकीकी की रचना अपने 'शाहनामा' मे मिला लेने की बात न लिख दी होती तो हमे उसका गुमान भी न होता और न दकीकी की हत्या का ही। शाहनामा सामानी राजाओ की सरक्षा का ही परिणाम था। परतु इन राजाओ की सरक्षा कवियो तक ही सीमित न थी। सामानी राजा मसूर इब्न नूह के वजीर अल् बलामी ने तबरी के 'विश्व इतिहास' का अरबी से फारसी मे अनुवाद किया। यह सक्षिप्त अनुवाद फारसी गद्य का प्राय पहला रूप है। दो ईरानी चिकित्सको और दार्शनिको—राजिस और अविचेन्ना—ने भी सामानी राजाओ के तत्वावधान मे ही अपनी कृतिया प्रस्तुत की। राजिस ने अपना चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ 'किताब-ए-मन्सूरी' खुरासान के सामानी गवर्नर अबू सालिह मन्सूर को समर्पित की।

अली (८६४-६२० ई०) और जियारी (६२८-१०४२ ई०) घरानो ने भी उस काल मे साहित्य की काफी उन्नति की। जियारियो मे से एक काबूस इब्न वश्मगीर (१०१२ ई०) कवियो का मित्र और स्वय असामान्य कवि था। उसकी प्रसिद्धि इस कारण भी हुई कि गजनी के सुलतान महमूद के क्रोध से भागे विख्यात अविचेन्ना को उसने शरण दी थी। महमूद का नाम भारत के इतिहास मे अपनी धार्मिक कट्टरता और लूटो से अमर हो गया है। महमूद का साम्राज्य लाहौर से बगदाद तक फैला हुआ था और लूटमार तो उसने सोमनाथ और बनारस से बगदाद और पश्चिमी ईरान तक की।

महमूद ने गजनी मे उन कवियो, लेखको और वैज्ञानिको को एकत्र किया जो फारसी साहित्य के इतिहास मे विख्यात हो गए है। उसके राजकवि बलख के उन्सूरी (ल० १०५०) का दीवान आज भी उपलब्ध है। उसकी कविताए सुलतान की विजयो की प्रशस्ति मे लिखी गई है, शैली से शब्दबहुल और बोझिल है। प्रगटत उस पर भी औरो की ही भाति रूदागी की शैली की छाप है। उसके अतिरिक्त मसूद के दरबार मे अन्य कवि भी थे। फरूखी और आजादी दोनो उसी परपरा के कवि थे यद्यपि फरूखी की काव्यप्रतिभा उससे अधिक मुखरित है। मिनुचिही मसूद के अतिरिक्त उसके उत्तराधिकारियो का भी राजकवि रहा था। १०४१ ई० के शीघ्र ही बाद वह मरा। उसका 'दीवान', प्रशस्तिवाचक सीधी और फुटकर कविताओ से भरा है। ईरानी काव्य परपरा के अनुसार ही उसमे भी मदिरा और शृगार की प्रभूत स्तुति है।

ऊपर लिखे कवियो की विशेषता काव्यसौदर्य का अकन नही वरन् सामन्ती परपरा का प्रशस्तिमय निर्वाह है। परन्तु महमूद की सभा मे कुछ ऐसे कवि भी थे जिनकी भारती आज भी काव्य-क्षेत्र मे प्रतीक मानी जाती है और जो इन कवियो से अपनी काव्यमेधा मे सर्वथा भिन्न थे। वे है असदी और उसका शिष्य फिरदौसी। असदी, जो अपने शिष्य की

मृत्यु के बाद १०३० और १०४१ ई० के बीच कभी मरा, 'मुनाजरा' नाम की एक प्रकार की कविताओ का स्रष्टा है। इस प्रकार की कविताए प्रशस्तियो की भूमिका के रूप मे प्रयुक्त होती है जिनमे काल्पनिक पात्र नायक के गुणगायन मे एक दूसरे से होड करते है। इस प्रकार की कविताओ मे पीछे रहस्यवादी विषय भी अकित होने लगे। आरिफी की 'गूय उ चौगान' (गेद और पोलो का डडा) उसी प्रकार की कविता है।

फिरदौसी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। वह फारसी साहित्याकाश का उज्ज्वलतम नक्षत्र है। मुस्लिम ससार के सबसे महान् बादशाह महमूद के पास वह पैंतीस वर्षो के परिश्रम से प्रसूत अपना शाहनामा लेकर पुरस्कार की आशा से गया। उसकी निराशा, महमूद पर व्यग्य और अत मे पलायन की कहानी बार-बार कही गई है। महमूद ने शायद उसको नियत सख्या मे अशर्फिया भेज दी, पर कहते है, वे उसके पास तब पहुची जब उसका शरीर कब्र मे डाला जा रहा था। शाहनामा की काव्यधारा से उसका प्रतिपाद्य विषय फिर भी महत्तर है। उसमे जो प्राचीनतम काल के ईरानी पराक्रम का वर्णन है, उससे वह कृति ईरानी जाति की राष्ट्रीय रचना हो गई है। पचास राजाओ की यह कीर्तिगाथा अद्भुत क्षमता से प्रस्तुत हुई है। इसीमे सुहराब और रुस्तम का साहित्य-प्रसिद्ध द्वन्द्वयुद्ध है। फिरदौसी अपने प्राचीन ईरानी गौरव के चित्रण के लिए समसामयिको मे निन्दा का पात्र भी बना और यदि उसने अली की प्रशस्ति लिखकर उसमे जोड दी होती तो उसकी कृति मुस्लिम जगत् मे इतनी लोकप्रिय न हो पाती। शाहनामा मे ऐतिहासिक भ्रातिया है, पर वह अपनी विषय गरिमा से पिछले कवियो की प्रतीक बन गई।

फिरदौसी ने मस्नवी शैली मे 'यूसुफ और जुलेखा' नाम का एक और खण्ड काव्य लिखा। इसमे सौदर्यादि के प्रतीक यूसुफ और जुलेखा के पारस्परिक सम्बन्ध का चित्रण है। काव्य सौदर्य मे यह कृति शाहनामा से बहुत घटकर है। फिर भी फारसी साहित्य मे इसके अनेक अनुकरण हुए।

महमूद के दरबारियो मे विख्यात तवारीखनवीस अलबेरूनी ही था जिसकी अरबी की कृतियो मे प्रधान 'असरुल बाकिया' (अवशिष्ट इमारते) और 'तारीखुल हिन्द' है। महमूद ने प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री और दार्शनिक अविचेन्ना (अबू अलि इब्न सिना) को भी बलपूर्वक अपने दरबार मे लाना चाहा पर वह भागकर जियारी राजा काबूस इब्न वश्मगीर की शरण मे चला गया। अविचेन्ना ने अरबी मे कसीदे लिखे। उसके फारसी के अनेक कसीदे और गजल उमर खय्याम के मान लिए गए है। उसने 'दानिशनाम-ए-अलाई' नाम से विज्ञान का एक विश्वकोष तैयार किया। ग्रथ इस्फहान के अलाउद्दौला के लिए लिखा गया था और ग्रन्थ के नाम मे 'अला' उसीकी सज्ञा है। उसका यश अरबी गद्य मे लिखे चिकित्सा और दर्शन ग्रन्थो पर अवलम्बित है। इनमे अरस्तू आदि यूनानी दार्शनिको का ज्ञान सग्रहीत है। ईरानी चिकित्सा का भी उनमे समावेश है। उसकी पुस्तको ने यूरोपीय

सभ्यता को प्रभावित किया है। जिन पुस्तको ने ग्रीक ज्ञान की रक्षा की है अविचेन्ना की कृतिया उन्हीमे से है। यूरोप मे मुद्रणयत्र का प्रयोग होते ही अविचेन्ना की पुस्तको की धूम मच गई थी। वह १०३७ मे हमदान मे मरा और उसकी कब्र ज्वरपीडितो के लिए तीर्थ बन गई है।

फारसी पद्य का धरातल तो ऊचा था पर उसके गद्य की मात्रा थोडी थी। महमूद के ही दरबार मे रहकर उतबी ने अपना प्रसिद्ध इतिहास 'तारीखे यमीनी' (अरबी मे) लिखा। उसी दरबार के अबुल फज्ल अहमद (बदी अलजमान—जमाने का अचरज) ने अरबी पद्य-गद्य की सम्मिलित शैली की 'मकामात' नाम की एक नई रीति चलाई। वह भी प्रशस्तिकार था।

ग्यारहवी सदी के पूर्वार्द्ध मे सेल्जुक तुर्को ने एशिया मे अपना आतक जमाया और तुगरिलबेग ने ईरान, एक ओर भारत की सीमा और दूसरी ओर बगदाद तक जीत लिया। वह साम्राज्य फिर मिस्र तक जा पहुचा। उन दिनो विद्वान दरबार-दरबार फिरा करते थे। सेल्जुक तुर्को के दरबार मे भी उनकी रसाई थी। उनके दरबार का प्रधान साहित्यकार निजामुलमुल्क अबू अली अल हसन था। वह तुगरिल के भतीजे अल्प अस्लनि का वजीर था। वह बगदाद के प्रसिद्ध निजामिया कॉलेज का निर्माता था। उसने 'सियासतनामा' नाम का राजनीतिक ग्रथ लिखा। १०९३ मे उस गिरोह के एक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर दी जिसको अपने ग्रथ मे उसने राज्य-शत्रु-सस्थाओ मे गणना की थी।

इस काल कुछ रहस्यवादी कवियो का भी प्रादुर्भाव हुआ जो तत्सामयिक धार्मिक प्रेरणा का परिणाम था। शिया सम्प्रदाय की एक शाखा इस्माइलिया ने इस दिशा मे विशेष प्रगति की। इस काल के कवियो मे नासिर का स्थान काफी ऊचा है। उसने अपने 'सआदतनामा' मे राजाओ की कमजोरियो को धिक्कारा। 'जादुल मुसाफिरीन' मे उसके दार्शनिक सिद्धातो का निरूपण है। नासिर ने अपनी कविता मे व्यावहारिक और रहस्यमय सत्य का समन्वय किया है। वास्तव मे वह पश्चात्कालीन नीतिपरक कविता का आरभ करनेवाला है। उसका 'रौशना-ए-नामा' भी उसके रहस्यवाद को ही प्रस्तुत करता है।

इस्माइली सिद्धातो से कही अधिक प्रबल सूफीवाद का आदोलन था। इसका उदय इस्लाम द्वारा ईरान की विजय के प्राय साथ ही हुआ। सभवत इस रहस्यवादी आदोलन का कारण इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध आर्य विद्रोह था। परतु यह महत्व की बात है कि इसके प्रारभिक प्रवर्तक अरब और दरवेश थे जो ऊन के कपडे पहनते थे। अरबी मे उनको सूफ कहते थे जिससे उन्हे पहनने वालो का नाम सूफी पडा। इस आदोलन का आरभ चाहे जैसे हुआ हो, इसमे सदेह नही कि इसका विकास और विस्तार ईरान मे विशेषत तब हुआ जब अब्बासी खलीफाओ के शासन काल मे ईरान अपेक्षाकृत स्वतत्र हुआ और उसने दिमागी आजादी का आनन्द फिर से पाया। इसके सिद्धान्तो पर अफलातू के साथ-साथ ही भारतीय विचारो का भी प्रभाव था। इस्माइलियन सम्प्रदाय ने तो अवतारो की सत्ता

स्वीकार की ही, सूफीवाद ने वेदान्त का देशव्यापी प्रचार किया था। वस्तुत रहस्यवाद केवल ईरान की ही दार्शनिक खोज या सम्पत्ति न थी। मध्ययुग मे सर्वत्र अज्ञात के भीतर झाककर देखने की प्रवृत्ति हो गई थी, भारत मे तो उससे भी बहुत पहले।

ईरान मे इस रहस्यवाद को इस्लाम से समझौता करना पडा। सूफी सिद्धान्तानुसार खुदा बस एक सत्य है। इस सिद्धात को मानने मे भला किसी मुसलमान को क्या आपत्ति हो सकती थी। खुदा और उसके बदे आदमी मे एक छिपा प्रेम है और चूकि खुदामात्र यथार्थ है, प्रत्येक मनुष्य मे उसका एक अश होना आवश्यक है जो पूर्ण (खुदा) से मिलने को सदा लालायित रहता है। आनन्द क्षणभर जब-तब पुर्नमिलन का सुख प्राप्त कर लेता है परन्तु अनन्त मिलन के लिए शरीर रूपी अवगुठन और बाधा का नष्ट हो जाना आवश्यक है। अनत मिलन के लिए शरीर का अत करने के पीरो ने अनेक मार्ग बताए। खुदा और मानव की प्राकृत एकता के सिद्धात ने स्वाभाविक ही इस्लाम के प्रति सूफियो के मन मे शका उपस्थित कर दी। इस सिद्धान्त की अद्भुत उपज सूफीवाद का परम साधु मन्सूरी हलाज था जिसने उपनिषदो की 'सोऽहम्' भाषा मे नारा बुलन्द किया—मै ही सत्य हू—मैं ही खुदा हू, और फलत प्राणदण्ड पाया।

जलालुद्दीन रूमी का 'मस्नवी-ए-मानवी' भी सूफीवादी कविता की एक सुघड कृति है। फारसी साहित्य मे सूफीवाद का महत्त्व यह है कि उसने समूची काव्यधारा को अपनी प्रेरणा दी। फिरदौसी को छोड सभी बडे कवियो ने अपने विचारो मे सूफीवाद का ही सहारा लिया। अधिकतर लिरिक-कवियो ने सूफीवाद की उपमाओ से अपनी कृतियो को सनाथ किया। अनेक ने तो अपनी कविताओ मे सूफीवाद को ही साध्य बनाया जिससे हमे उसके सिद्धातो के अध्ययन के लिए इन कविताओ का ही अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है। गद्यकृतिया इसका विश्लेषण तो करती है पर भेद नही खोल पाती।

सूफी आदोलन का पहला समर्थ कवि अबूसैद इब्न अबुल खैर (९६८-१०४९ ई०) था जिसने शैली के रूप मे रुबाइयो को लोकप्रिय बनाया। फिर तो रहस्यवादी विचारो के वाहक रूप मे एक मात्र रुबाई ही प्रचलित हुई। भगवान् के प्रेम के सम्बन्ध मे शारीरिक और पार्थिव भोगो की उपमाए भी सूफी साहित्य मे पहले पहल उसने ही प्रचलित की। सूफीवादी काव्यधारा मे प्रतीक रूप से सौदर्य, प्रणय, मदिरा, सभी प्रयुक्त हुए है। अबूसैद के बाद ही हेरात का अन्सारी हुआ। वह नासिर खुसरो का समकालीन था। उसने भी नासिर की ही भाति अपनी गद्य-पद्य दोनो कृतियो मे पार्थिव आचार और सार्वभौमिकता का सम्मिलित उपयोग किया। उसने 'रुबाइयो' और 'मुनाजात' का प्रचुर व्यवहार किया। मुनाजात खुदा के प्रति प्रार्थनाए, दुआए और सूफीवाद के पक्ष मे प्रचारक कविताए है। सनाई ने सूफी कविता मे मस्नवी शैली का व्यवहार सबसे पहले किया। हदीकतुल हकीका उसका प्रसिद्ध मस्नवी है। यह मस्नवी फरीदुद्दीन अत्तार के रूपक काव्य 'मन्तिकुल तैर'

और जलालुद्दीन रूमी के रहस्यपरक 'मस्नवी' का प्रेरक पूर्ववर्ती माना जाता है। 'हदीक' मे सिद्धान्त अधिक है, काव्यत्व कम, पर सनाई के 'दीवान' से वह कमी पूरी हो जाती है।

सूफीवाद के आनन्दपरक अध्यात्म के साथ ही उमर खय्याम के निराशावादी राग का उल्लेख उचित होगा। उमर इब्न-इब्राहीम अल-खय्याम नैशापुर के एक खेमा बनानेवाले का पुत्र था। अपने देश मे वह ज्योतिषी, गणितज्ञ और स्वतत्र विचारक के रूप में कवि से अधिक विख्यात है। निस्सदेह वह निर्भीक स्वतन्त्र विचारक था। उसकी कविता मे कही प्रशस्ति, वाचन या चाटुकारिता का नाम तक नही है। अपनी कविता की प्रेरणा मे वह नि.सन्देह सर्वथा ईरानी है। वह उन लोगो मे अग्रणी था जिन्होने सिद्धातवाद की सकीर्णता और पुण्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाई, उनपर व्यग्य किए। उस वर्ग के कवियो का विश्वास था कि खुदा सारी मानवीय मुसीबतो का कारण है और भाग्य ही ससार का विधायक है। दर्शन और ज्ञान रिक्त है, कोरी जल्पना;जीवन का क्षणिक आनद भी सार्थक है। प्रगट है कि उमर सकीर्ण विचार-पथियो को प्रिय नही हो सकता था। उसे अपने विचारो के कारण बडा सघर्ष भी करना पडा। उसकी रुबाइयो मे से अधिकाश तो उसकी है पर उसके नाम से चलने वाली सभी नही। उसने मदिरा की प्रभूत स्तुति की है।

उमरखय्याम ने अरबी मे एक बीजगणित और यूबिलद की कुछ परिभाषाए भी प्रस्तुत की। ज्योतिष ग्रथ जीफ-ए-मलिकशाही के एक भाग का वह रचयिता माना जाता है। उसका मृत्युकाल ११२३ ई० बताया जाता है पर तिथि सदिग्ध है।

सूफीवाद ने साहित्य को विशेष प्रभावित किया, परन्तु इसका मतलब यह नही कि दूसरे प्रकार की कृतियो का सर्वथा अभाव था। काल्पनिक रोमानी कहानिया भी बराबर लिखी जाती रही। इसी प्रकार की एक कृति 'वीस और रामिन' है जिसे तुगरिल बेग के दरबारी अल जुरजानी ने लिखा। फिर भी साधारणत पद्य की अपेक्षा गद्य का सृजन उस काल बहुत कम हुआ। अधिकतर गद्यात्मक कृतिया विज्ञान के क्षेत्र मे ही प्रसूत हुईं। इस प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी एक रचना—'जखीर-ए-ख्वारज्मशाही'—जैनुद्दीन अलजुरजानी ने बारहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे प्रस्तुत की। तभी जियारी राज काबूस के पौत्र कै-कौस इब्न इस्कन्दर ने राजनीति सम्बन्धी अपना 'काबूस-नामा' लिखा। इसमे ईरान के पौराणिक महात्माओ हुशग, जमशेद और लुकमान आदि का हवाला देकर ग्रन्थकार ने अपने पुत्र और भावी सुल्तान को नीति समझाइ है।

बारहवी सदी मे ही (सम्भवत पूर्वार्द्ध मे) प्रसिद्ध महात्मा अल गजाली हुआ। उसने अधिकतर अरबी मे लिखा परन्तु अल्केमी के अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'इह्या उलुमुल्दीन' का उसने फारसी मे एक सक्षिप्त रूपान्तर रचा जो 'कीमिया-ए-सआदत' नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह इस्लाम धर्म का सूफीपरक विवेचन है। उसीने सूफी कवियो के प्रतीको, प्रव-

चनो और रूपको की व्याख्या की। फिर भी रूढिवादी इस्लाम के अनुयायियो पर उसका इतना प्रभाव था कि उसे 'हुज्जातुल इस्लाम' का खिताब मिला।

इस काल फारसी मे कुछ अनुवाद भी हुए। विदपाई की कहानियो का अनुवाद नसरुल्ला इब्नुल हमीद ने किया। इन कहानियो का मूल सस्कृत पचतत्र मे था जिसका पहला अनुवाद ससानी नृपति खुसरो नौशेरवा (५३१-७९ ई०) की सरक्षा मे बरजुए नामक वैद्य ने 'करटक दमनक' नाम से पह्लवी मे किया था। यह पह्लवी मूल अनुवाद तो लुप्त हो गया परन्तु उसका पता हमे दो सीरियक और अरबी अनुवादो से चलता है। ५७० ई० मे बूद ने एक अनुवाद प्राचीन सीरियक भाषा मे प्रस्तुत किया था, दूसरा ७५० ई० के लगभग अरबी मे अब्दुल्ला इब्न मुकफ्फा ने 'कलीला वा दम्ना' नाम से किया। इसी पाठ से नसरुल्ला ने भी अपना अनुवाद किया और उससे पहले पद्य मे रूदागी ने 'मस्नवी' अनुवाद किया था जो आज उपलब्ध नही। पचतत्र की कहानियो का सोलहवी सदी मे प्रस्तुत हुसेन वैज काशिफी का अनुवाद 'अनवारे सुहेली' बडा लोकप्रिय हुआ।

सेल्जुक सुल्तानो के मध्यकाल मे लिखे 'चहारमकाल' की फारसी मे बडी प्रतिष्ठा है। इसका लेखक निजामी-ए-अरूज़ी-ए-समरकन्दी बदख्शा मे गूर के सुल्तानो का दरबारी कवि था। 'चहारमकाल' मे चार स्कन्ध है, साम्प्रदायिक, काव्य, ज्योतिष और चिकित्सा पर। इसमे इतने उदाहरण है कि ग्रन्थ कोष का रूप धारण कर लेता है। जहा-तहा प्रशस्तिवादी चाटुकारिता का भी पुट है। जीवनचरितो के लिए इसमे बडी सामग्री है।

सेल्जुक काल की प्रशस्तिया और कसीदे फारसी साहित्य मे अपना सानी नही रखते। इस प्रकार के कवियो मे अनवरी अग्रणी है। मालिकशाह के पौत्र खुरासान के सुल्तान सन्जर (१११७-५७) का प्रिय प्रशस्तिकार अनवरी फारसी साहित्य मे सबसे प्रवीण कसीदाकार हो गया है। उसके कसीदो मे प्रचुर व्यग्य भी है। ११५४ के खुरासन के सहार पर उसने 'खुरासान के आसू' लिखा जो अपने करुण राग के लिए विख्यात है।

अनवरी की ही भाति खाकानी भी प्रशस्ति-लेखन मे प्रसिद्ध हो गया है। परन्तु उसके कसीदो की शैली अनवरी की शैली से भी अधिक बोझिल और दुरूह है। उसका शब्दजाल उसकी खूबियों को कमजोर कर देता है। उसकी एक जानी हुई मस्नवी कविता 'तुहफोतुल इरा कैन' है। मक्का की यात्रा करते समय उसने ईरानी और अरबी दोनो ईराको पर यह कविता लिखी। अपने स्वामी के सामने अहकार प्रदर्शित करने के कारण वह कैद मे डाल दिया गया जहा उसे अपनी कविता 'हबाशिया' (जेल की कविता) की सामग्री मिली।

वह युग वस्तुतः प्रशस्तियो का था। उस असाधारण सामन्ती युग ने दरबारी परपरा बांध दी। सभी दरबारो मे कवि और लेखक होते थे और उनका काम अपने स्वामियो की

कृपा और इनाम के बदले उनकी प्रशस्ति लिखना था। वह परपरा निश्चय ही जीवन की आलोचना के रूप मे काव्य-रचना का पोषक नही हो सकती थी। जीवन की आलोचना मे काव्याकन रहस्यवादी और लिरिक कवियो ने ही किया। जमाने का कुछ हाल फिर भी इन प्रशस्तियो मे मिल जाता है जहा हम प्रशसात्मक वाग्जाल के भीतर झाक पाते है। कुछ अपेक्षाकृत साधारण कवियो ने भी इस काल कसीदे लिखे। असीरुद्दीन अख्सीकती इन्ही मे से थे। उसके कसीदे अनवरी के कसीदो की ही भाति विख्यात है। सजर के राजकवि अमीर मुइज्जी (११४७-४८) ने भी पठनीय कविताओ का एक दीवान छोडा है। रशीदी वतवात विशेषत. अपनी सुन्दर कृति 'हदाकुल-सिहर' (सम्मोहन की वाटिका) से प्रसिद्ध हुआ। सूजनी ने उस काल के सिद्धातवादी कवियो का बडा मजाक उडाया। उसके व्यग्य ने किसीको न छोडा। बाद मे रहस्यवादी सनाई का शिष्य होकर उसने इमामो की प्रशस्ति पर कसीदे लिखे। पर वह अपनी व्यग्यात्मक कविताओ के लिए विख्यात है। उसने समकालीन कवियो की अच्छी पैरोडी की। इन्ही दिनो तिरमिज के अदीब साबिर ने अपनी कविताए लिखी। सजर ने उसे अपना भेदिया बनाकर अपने बागी सामन्त अत्सिज के पास भेजा। भेद खुल गया और साविर वक्षुनद मे डुबा दिया गया।

सेल्जुक काल मे भी प्राचीन ईरानी ख्यातो पर आधारित प्रणय सम्बन्धी रोमैटिक कविताएं लिखी गईं। इस दिशा मे गजा के निवासी ने पहला डग भरा। वह विशेषत शृगारिक कवि है। निजामी ११४१ के लगभग कुम मे जन्मा। उसका शिक्षण सुन्नी सम्प्रदाय के आधार पर हुआ था जिससे उसका कवि-हृदय दीर्घकाल तक निस्पन्द पडा रहा। चालीस वर्ष की आयु मे उसने अपना 'मखजनुल असार' (रहस्यो का कोष) लिखा। धार्मिक प्रसगो से भरा यह ग्रथ मस्नवी शैली मे लिखा गया था, परतु इसकी आख्यानराशि ने अगले रोमासो के लिए प्रचुर सामग्री उपस्थित कर दी। अपनी साहित्यिक गुणो से उचित ही निजामी फारसी भाषा का प्रसिद्ध कवि माना गया है। उस साहित्य मे उसका स्थान कवियो मे दूसरा है। 'खुसले उशिरी' उसका पहला रोमास है। उसमे ससानी राजा खुसरो परवेज का आर्मिनी शाहजादी शीरी के प्रति प्रणय वर्णित है। फरहाद का प्रसग उसी कृति मे आया है जिससे शीरी-फरहाद का जोडा अमर हो गया है। निजामी की दूसरी प्रसिद्ध रचना 'लैला-उ-मजनू' है। घटना अरब की है। जहा शत्रु घरानो के तरुण-तरुणियो का परस्पर प्रेम अनेक साहित्यकारो का आधार बना। निजामी का 'हफ्त पैकर' मस्नवी शैली मे लिखा सात कहानियो का सग्रह है। ससानी सुल्तान बहराम की सातो रानियो मे से प्रत्येक एक कहानी सुल्तान से कहती है। कवि का अतिम मस्नवी 'इस्कदुरनामा' है, सिकदर के जीवन से सम्बद्ध। निजामी की पाचो कृतिया एकत्र 'खम्स' या 'पजगज' कहलाती है। उन्होने पश्चात्कालीन साहित्य पर प्रभूत प्रभाव डाला। निजामी १२०३ के लगभग मरा। उसकी रचनाए बडी मधुर है और ईरान मे वे बहुत लोकप्रिय हुईं।

सूफी परपरा को फारसी के एक असामान्य कवि फरीदुद्दीन अत्तार (१११९-१२३०) ने जारी रखा। वह इत्र बेचने वाला था। उसने दरवेश के रूप मे काफी भ्रमण किया और उस बीच अनेक सूफी नेताओ से मिला। उसने सूफी सिद्धातो को अपने चिन्तन का योग दिया। प्रसिद्ध है कि जब चगेज खा ने नैशापुर का विध्वस किया तब यह फारसी का निष्णात कवि भी मार डाला गया। मस्नवी शैली मे लिखे सुन्दर रूपक ग्रन्थ 'मतिकुल तैर' (पक्षियो की वाणी) मे उसने पक्षियो (सूफियो) के सातमजिलो से होकर सुल्तान सीमुर्ग (सत्य) तक पहुचने का रूपक बाधा है। सूफी सिद्धात की तीन मज़िलो मे उसने चार और जोडी। अत्तार की रचनाओ मे सबसे प्रसिद्ध 'मन्तिकुल तैर' है, परन्तु ईरान मे उसकी सबसे अधिक लोकप्रिय कृति 'पदनामा' है। उसके 'तज्किरातुल औलिया' मे सूफी सन्तो के चरित है जिससे सूफी सम्प्रदाय के अध्ययन मे उससे बडी सहायता मिलती है। अत्तार की अनेक प्रकाशित रहस्यवादी रचनाए ऑक्स्फोर्ड के बोडलेन पुस्तकालय मे और अन्यत्र सुरक्षित है। 'गुल उ हुरमुज़', 'मुसीबतनामा', 'शुतुरनामा', 'बुलबुलनामा' इसी प्रकार की अप्रकाशित रहस्यवादी कृतिया है।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अत्तार की हत्या सम्भवत चगेजखा के हमले मे हुई थी। तब मध्य एशिया मे मगोलो का उदय हो रहा था जो पूर्व मे प्रबल होकर सहसा पश्चिम की ओर दौड पडे थे। चगेज खा ने प्रशात सागर से डैन्यूब नद तक सारा महाद्वीप जीत लिया और वह जहा-जहा गया विध्वस मूर्तिमान हो उठा। ईरान मे ख्वरिज्म शाहो के खीव के प्रातो और खुरासान पर चगेज ने पहली चोट की। उनके निवासी तलवार के घाट उतार दिए गए। उनके नगर लूटकर जला दिए गए, उनकी सभ्यता विनष्ट हो गई। १७२७ मे चगेज तो मर गया पर उसके क्रूर हमलो की परपरा उसके उत्तराधिकारियो ने जीवित रखी। १२५१ मे मगोल सरदारो ने दो आक्रमण किए। एक कुबले खा के नेतृत्व मे चीन पर हुआ, दूसरा हुलागू खा के नेतृत्व मे ईरान, मेसोपोतामिया, लघु एशिया और सीरिया पर। सीरिया ने कुछ काल लडाई जारी रखी पर फारस और मेसोपोतामिया तो कुचल गए। पश्चिम की अपनी चढाई मे हुलागू ने इस्मायली-हशीशियो के गढ अलामूत को बरबाद कर दिया, फिर १२५८ मे बगदाद का सत्यानाश कर उसने उस अब्बासी खिलाफत का अन्त कर दिया जिसने फारस पर प्राय पाच सौ वर्ष अपना दबदबा रखा था।

: ३ :

मंगोल युग

मगोल हमलो का एक प्रबल प्रभाव तो यह हुआ कि कुछ समय के लिए मुस्लिम-ससार का कोई सरपरस्त न रहा और फारस से अरबो की सत्ता उठ जाने से वहा की राज-

कीय भाषा बजाय अरबी के अब फारसी हो गई। इसके अतिरिक्त हुलागू खा ने ईरान की वश-बहुल सत्ता का अत कर सारे देश को एकाधिकार मे रखा। धीरे-धीरे उसके खानो ने चीन की सत्ता से भी स्वतन्त्र होकर अपना सबध ईरानी जनता के साथ अधिकाधिक जोडा। और जब गाजा खा ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तब तो उसके ईरानी बनने मे कोई कोर-कसर न रही। खानो ने फारस मे अपनी शक्ति प्रतिष्ठित कर शाति स्थापित की यद्यपि यह शाति भीतरी न थी। देश मे आतरिक युद्ध फिर भी होते रहे। खानो के बाद ईरान पचास वर्ष तक अराजकता का केन्द्र बना रहा। अत मे तातार की शक्ति बढी और समरकन्द से निकलकर तैमूर लग ने भारत के गगातट से भूमध्य सागर तक के सारे देश—फारस, मेसोपोतामिया, तुर्किस्तान, लघुएशिया (एशिया माइनर) सब जीत लिए। चगेज की भाति तैमूर भी विध्वसक था। १४०५ मे चीन विजय को जाते समय राह मे ही उसकी मृत्यु हो गई।

तैमूर के बाद भी कुछ काल तक मार-काट मची रही। उस बरबादी से दो सूफी-कवि, जिनकी रचनाए हम तक पहुची है, बच रहे, एक तो जलालुद्दीन रूमी दूसरा सादी। जलालुद्दीन रूमी का जन्म १२०७ ई० मे बलख मे हुआ। उसके पैदा होते ही उसके पिता को मालिक के भय से भागना पडा और अन्त मे एशिया माइनर कोनिया मे उसने पनाह ली। स्थान रूम कहलाता था जिससे वह स्वय रूमी कहलाया।

जलालुद्दीन विज्ञान का पडित था। उसकी शुष्कता से ऊबकर उसने सूफी रहस्यवाद का अध्ययन किया जिसमे उसे बुरहानुद्दीन तिरमीजी और शम्श-ए-तब्रीज से बडी सहायता मिली। शम्श का उसपर इतना गहरा प्रभाव पडा कि उसकी लिरिक कविताओ का सग्रह सदियो 'दीवान-ए-शम्श-ए-तब्रीज' नाम से प्रसिद्ध रहा। अपने इस गुरु के मरने पर जलालुद्दीन ने दरवेशो की एक नई जमात मौलवी (मेवलेवी) चलाई। ये मौलवी नाचते रहते है और इनका नाचना रहस्यवादी अर्थ मे ब्रह्माण्डो का नाचना है। उस नाच को लाक्षणिक रूप से समा कहते है।

जलालुद्दीन ने जमाने के अनुसार अपने गजलो, रूबाइयो और तर्जीबन्दो का एक दीवान प्रस्तुत किया। उसकी कविताओ मे 'सत्य' मे लय हो जाने की उत्कट इच्छा दरसाई गई है। उसके बाद उसने अपनी प्रसिद्ध 'मस्नवी-ए-मानवी' लिखा जो 'पह्लवी जबान का कुरान' माना जाता है। मस्नवी बडी कृति है जिसमे सूफी सिद्धातो, परम्परा, ख्यातो आदि का रूपक उपमाओ मे काव्यबद्ध सग्रह है। भगवान का मनुष्य पर अटूट प्रेम है और मनुष्य को उसमे मिल जाने के लिए अपने को नष्ट कर देना चाहिए यही अधिकतर उसका मन्तव्य है। उसकी अरबी भूमिका मे कवि ने उसे 'कुरान की व्याख्या' और 'फकीरो का मार्ग' कहा है। रूमी १२७३ मे कोनिया मे मरा।

शीराज का सादी (लगभग ११८४-१२९१) जलालुद्दीन से सर्वथा भिन्न था।

उसका दर्शन आम-फहम था। उसने आचार के मूल सहज सिद्धातो—नम्रता, विनय, दान—का प्रचार किया। वह पार्थिव भोगो को त्याज्य नही बताता था। और सम्भवत स्वय उनसे दूर न था। शीराज मे जन्म लेकर फार्स के अपाबेग साद इब्न जगी की कृपा से उसने बगदाद के निजामिया कालेज मे शिक्षा पाई। उसने भारत, अरब और उत्तरी अफ्रीका का भ्रमण किया। कुछ काल वह सन्त की भाति जेरूसेलम मे भी रहा जहा से उसे कैदकर सीरिया ले गए और त्रिपोली के गढ-निर्माण मे मजूर बना दिया। वहा स्वामी की कन्या से विवाह करने पर छुटकारा मिला परतु वह सबध इतना कष्टकर हुआ कि वह फिर यात्रा के लिए निकल पडा। घूम-फिरकर जब वह शीराज पहुचा तो मालूम हुआ कि दक्षिणी ईरान मगोलो के विध्वस से बच गया है। उसने अपने पुराने सरक्षक के पुत्र के दरबार मे शरण ली और जगत मे शेखसादी नाम से विख्यात हुआ। वही उसने अपनी प्रसिद्ध रचनाए की जो फारसी साहित्य की निधि है। सादी की विख्यात रचनाए 'बूस्ता' (बाग) और 'गुलिस्ता' (गुलाब-वाटिका) है। दोनो नीति-प्रधान कृतिया हैं, पहली पद्य मे है दूसरी गद्य-पद्य दोनो मे। बूस्ता (बोस्ता) गुलिस्ता से कुछ अधिक गभीर है। गुलिस्ता सरल और मधुर है। उसमे विनोद का भी पुट प्रचुर है। व्यवहार-कुशलता उन दोनो का प्रिय विषय है। उनकी भाषा मे गजब की मिठास है, अनूठी सादगी और भावो मे अनोखी ताजगी। उसके 'दीवान' से प्रमाणित है कि मधुरतम शैली मे वह 'लिरिक' आदि लिख सकता था। उसके कुछ लिरिक तो हाफिज के लिरिको के बराबर माने गए है। हाफिज फारसी जुबान का सुन्दरतम लिरिककार है।

सादी ने यात्राए भी लबी की। वह दरवेश के वेश मे भ्रमण करता था। वह दरवेश भी हो गया था। उसकी कृतिया ससार की अनेक भाषाओ मे अनूदित हो गई है और रहस्यवाद की शैली से मुक्त होने के कारण सुगम है। उसने अपनी रचनाए वृद्धावस्था मे की जिससे उनमे उसकी परिपक्व मेधा झलक पडी। अपने सरक्षको के लिए सादी ने कसीदे और मुतायबात (मज़ाक) भी लिखे। मुतायबात 'खबीसात' (अनिर्वचनीय शृगार) भी कहलाते है। इन कृतियो का तथ्य इनके नाम से ही प्रगट है। सादी ने अपने सरक्षको के प्रसादन के लिए इन्हे लिखा था परतु शुक्र है कि उसका यश इनपर नही उसकी अन्य रचनाओ पर अवलबित है।

मगोलो के आक्रमण के पहले जिनकी ख्याति स्थापित हो चुकी थी उन्हीमे तूस का नासिरुद्दीन (१२७४) था। वह दार्शनिक, ज्योतिषी और गणितज्ञ था। जब हुलागू ने अलमूत का विध्वस किया तब उसके ज्योतिष से लाभ उठाने की आशा से उसे छोड़ दिया। बगदाद के विध्वस मे वह हुलागू के साथ था। जब विजेता ने अजरबैजान के नगर मरागा मे अपनी अल्पकालीन राजधानी कायम की तो नासिरुद्दीन के कहने से उसने वहा एक वेधशाला बनवाई। कालातर मे उसकी बडी ख्याति हुई। उसकी अधिकतर रचनाए

अरबी मे है। परन्तु अपनी प्रसिद्ध कृति 'अखलाक-ए-नासिर' उसने फारसी मे लिखी। हुलागू के लिए उसने 'जीजी ईलखानी' (ज्योतिष की पट्टिकाए) मरागा मे लिखी। 'मियारूल अशआर' (काव्य का पारस) भी उसीकी रचना मानी जाती है। नासिरुद्दीन ने अपनी कौम के साथ स्वार्थ के लिए दगा किया। अलमूत मे अपने हशीशी स्वामी को तो उसने पकडवा ही दिया, खलीफा भी उसीकी वचकता से मगोलो की नृशसता का शिकार हुआ। अखलाक-ए-नसिरी इस्लाम-साहित्य मे आचार के क्षेत्र मे सुन्दरतम ग्रन्थ है। ग्रन्थ की शैली दुरूह है। यह तीन भागो मे विभक्त है। इसका अन्तिम भाग राजनीति पर है।

कुतुबुद्दीन (१३१०) नासिरुद्दीन का शिष्य था, शीराज के वैद्यकुल मे जन्मा था। वह भी मगोलो के ही दरबार मे रहा और अपने गुरु की ही भाति उसने भी दर्शन, चिकित्सा और ज्योतिष पर अरबी मे अनेक ग्रथ लिखे। परतु उसका यश विज्ञानो के एक विश्वकोष पर अवलम्बित है। हुलागू ने नासिरुद्दीन के साथ ही शामपुर से इतिहासकार अतामलिक (१२८३) को भी अपने साथ ले लिया था। वह हुलागू का सेक्रेटरी बन गया और उसकी कृपा से फिर बगदाद का गवर्नर हुआ। अपने 'तारीख-ए-जहागुशा' (दिग्विजयी का इतिहास) मे उसने प्राचीन मगोल इतिहास, चगेज और हुलागू की विजयो और शासन का इस्माइलियो की बरबादी तक इतिहास लिखा है जो तत्कालीन घटनाओ का समसामयिक होने से विशेष महत्व का है। अतामलिक ने राजनीति मे अपना दबदबा बना लिया था और बगदाद की राजनीतिक बागडोर उसीके हाथ मे थी।

हुलागू के बाद सालो साहित्यिक क्षेत्र अनुर्वर रहा परन्तु उसके प्रपौत्र गाजान खा के वजीर रशीदुद्दीन फजलुल्ला ने जो असामान्य राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था, 'जामिउल तवारीख' लिखकर उस दिशा मे कुछ प्रयत्न किए। यह ससार का इतिहास दो भागो मे विभक्त है। पहले भाग मे तुर्को और मगोलो का इतिहास है, दूसरे मे सृष्टि के आरम्भ से गजानखा के भाई उल्जैतू खा के शासन के पहले वर्ष की घटनाओ तक। साथ ही इसमे खलीफो, सल्जको, गजनवियो, ख्वारिज्मशाहो और इस्माइलियो के भी वृत्तान्त है, फिर चीनियो, इस्रायलियो, फ्रैको और हिन्दुस्तानियो के भी। अपनी भूमिका मे ही इतिहासकार स्पष्ट लिख देता है कि उसके इतिहास उसकी दृष्टिकोण से नही देश-विशेष के दृष्टिकोण से लिखा गया है जिससे वह दोषी न ठहराया जाए। यह इतिहास १३०५ मे समाप्त होता है यद्यपि ग्रथकार १३१८ तक जीवित रहा। उस वर्ष उसके स्वामी उल्जैतू खा का पुत्र अबू सैद गद्दी पर बैठा और उसने रशीदुद्दीन को अपने पिता का हत्यारा घोषित कर उसे बर्खास्त कर दिया और उसकी जायदाद जब्त कर उसे मरवा डाला। रशीदुद्दीन के इतिहास का एक सक्षिप्त रूप फक्री बनाकिती ने 'तारीखे बनाकिती' नाम से लिखा जिसमे घटनाए अबूसैद के शासनकाल तक की शामिल कर ली गई थी। फक्री शायर भी था पर उसका पद्य उपलब्ध नही है। उसी काल वस्साफ ने 'तारीखे वस्साफ'

लिखा। उसमे मगोलो का इतिहास है पर भाषा इसकी प्रशस्तिवाचक और शब्द-बहुल है, जिससे इतिहास का विषय गौण हो गया है। ग्रथ का दूसरा नाम 'तज्जियतुल अम्सार' है। रशीदुद्दीन की प्रेरणा से ही अपना इतिहास 'तारीख-ए-गुजीद' लिखकर हमदुल्लाह मुस्तोफी ने उसे रशीदुद्दीन के बेटे गयासुद्दीन को समर्पित किया। उसमे सृष्टि से लेकर १३३० ई० तक के ईरानी राजकुलो, इस्लाम, उसके प्रचारको आदि का इतिहास है। जफरनामा मे उसने 'शाहनामा' के ही अनुकरण मे तुकान्त पद्य मे मुहम्मद से अपने काल तक की घटनाए लिखी। हम-दुल्लाह का 'नुज्हातुल कुलाब' (हृदयो का आनन्द) विश्व के निर्माण और फारस तथा पडोसी देशो के भूगोल पर समसामयिक परपरा के अनुसार प्रकाश डालता है। 'शाहनामा' का एक और अनुकरण चगेज खा और उसके उत्तराधिकारियो के इतिहास पर 'शाहन्शाहनाम' नाम से अहमद तब्रीजी ने प्रस्तुत किया। इस प्रकार के छन्दोबद्ध अनुकरणो मे यह कृति काफी सुन्दर है। फारसी कृतियो का हिन्दुस्तानी मुसलमान कवियो पर भी प्रभाव पडा। अमीर खुसरो ने निजामी की प्रेरणा से निजामी की ही भाति सुन्दर रोमाटिक कविताओ का 'खम्स' लिखा। वह वीर काव्य और लिरिक का समर्थ कवि था। वह भारत मे ही जन्मा और मरा (१३२५ ई०) था। उसने हिन्दी मे भी रचनाए की और खडी बोली के प्रारभिक कवियो मे से है। निजामी का अनुकरण करने वालो मे सबसे सफल किरमान का ख्वाजू (१२८१-१३५२) हुआ उसका खम्स निजामी की असामान्य अनुकृति है। उसमे कुछ प्रेम-कहानिया भी छन्दोबद्ध की है, जैसे 'हुमै और हुमायू', 'गुल और नौरोज', 'रोजतुल अनवार'। अपने आकाओ के प्रसादन मे उसने कुछ प्रशस्तिया और कसीदे भी लिखे। उसके दीवान मे अनेक अच्छी कविताओ का सग्रह है।

तैमूर लग के शीघ्र पहले के दो सूफी कवि ईराकी (मृत्यु ल० १२८८) और महमूद (मृ० १३२०) है। पहले ने 'लमआत' लिखा, दूसरे ने 'गुलशने राज'। इसमे रहस्यवादी प्रेम की मजिलो का वर्णन है। डेढ सौ वर्षो बाद इसपर प्रसिद्ध फारसी कवि ने एक भाष्य लिखा। इसके कवि ने सुन्दर गजल और दूसरी कविताए भी की जो उसके दीवान मे सगृहीत हुई। ईराकी अपने रहस्यवादी प्रणय मे काफी शृगारिक हो गया है। सूफी कवियो की यह प्रणय-लिप्सा भारत के कृष्णभक्त सूर, बेनीमाधव आदि कवियो मे भी जगी। ईराकी ने भारत, एशिया माइनर, सीरिया, मिस्र आदि भी भ्रमण किया था। सूफियो मे सिद्धात परिचायक ग्रथ के रूप मे 'गुलशने राज' का बडा मान है। यह मस्नवी शैली मे प्रश्नोत्तरी है। एक रहस्यवादी काव्य 'जामेजम', 'सनाई के', 'हदीकुतल हकीक' के अनुकरण मे मराग के औहदी (मृ० १३३७) द्वारा लिखा गया। इसके बाद ईराक मे जलाइर और शीराज मे मुजफ्फरी राजकुलो का दबदबा हुआ जिन्होने फारसी के तीन महान् कवियो को सरक्षण दिया।

जलाइर खानदान की नीव डालने वाले शेख हसनी बुजुग के पुत्र शेख उवेस ने उबदी जाकानी (मृ० १३७०-१) को आश्रय दिया। जाकानी व्यग्य पद्य रचना मे सूजनी का उत्तराधिकारी था। उसने अपने 'अखलाकुल अशराफ' मे 'अखलाके नासिरी' से नीति काव्यो की पैरोडी की। 'तारीफात' मे उसने समसामयिक आचार-विचार, धर्मादि का खूब मजाक उडाया। उसके 'रिसाल-ए-रीश' मे दाढी आदि के प्रसगो पर व्यग्यात्मक रचनाएं है। उसका 'हजलियात', अरबी-फारसी मे गद्य-पद्य दोनो मे लिखा, अश्लील विनोद का प्रतीक है। वह सर्वथा मौलिक है। और जहा उसे विषय के प्राचीनो से लेना पडता है, वहा भी वह विषय का नितात मौलिक रूप मे निर्वाह करता हे। उसका 'मूश उगुर्बा' इसी प्रकार का चूहे और बिल्ली की कहानी पर अवलम्बित व्यग्यात्मक विनोद है।

जिस मात्रा मे उबैद को व्यग्यात्मक साहित्य मे ख्याति मिली, उसी मात्रा मे प्रशस्ति के क्षेत्र मे साव के सलमान (मृ० १३७६-७७) को मिली। वह पिता-पुत्र दोनो शेखो का दरबारी कवि था। उसने उबैद के लिए फिराकनामा लिखा और अपना 'जयशीद-खुर्शीद' नामक मस्नवी भी उसीको समर्पित किया। कसीदे लिखने मे वह बडा कुशल था परन्तु इनकी शैली मे बडी कृत्रिमता थी। फिर भी उसकी कविता मे माधुर्य और प्रवाह है।

हाफिज फारसी का सबसे महान् कवि था। उसका पूरा नाम था मुहम्मद शम्सुद्दीन हाफिज। कुछ काल उसका सरक्षक राजकुल का शाहशुजा था। उसके जीवन सम्बन्धी घटनाए बहुत कम जानी हुई है। उसके 'हाफिज' नाम से ज्ञात होता है कि कुरान का वह पडित था जो उसकी कृतियो से भी प्रमाणित है। जीवन का अधिकतर काल उसने अपनी जन्मभूमि शीराज मे ही बिताया और अपने खुतबे के अनुसार वह १३८९ या १३९० मे मरा। उसकी मृत्यु के दो वर्ष पहले तैमूर ने शीराज जीता और तभी, किम्वदन्ती है, वह उस विख्यात कवि से मिला भी। सूफ की गहराई, जबान की बहार, कल्पना की सुघराई और ध्वनि के माधुर्य मे हाफिज सर्वथा बेजोड है। उसने कसीदे और रुबाइयात दोनो लिखे। पर रुबाइयात लिखने मे तो उसे कमाल हासिल है। उसकी रचनाओ के विषय पुराने ही है—शराब, प्रेम, प्राकृतिक सौदर्य—परन्तु उनका रूपायन, वर्णाकिन, ताजगी सर्वथा नई है। प्रेम का आधार सुन्दर तरुण युवा है। उसने प्रशस्तिवाचन या समसामयिक को त्याग दिया है। हाफिज महान् सूफी कवि-श्रृखला की अन्तिम कडी है। उसकी नितान्त भावुक और श्रृगारिक कविताओ मे भी लोगो ने रहस्य का ही स्वाद पाया है और फलत उसे 'लिसानुल गैब' (प्रच्छन्न की जिह्वा) की उपाधि दी है। उमर खय्याम की ही भाति हाफिज ने भी अपनी प्रणय-कल्पनाओ और परिस्थितियो का अकन सूफी उपमाओ से ही किया है। उसकी मृत्यु के बाद उसकी कविताओ का सग्रह उसके मित्र मुहम्मद गुलन्दाम

ने किया और तत्काल उसकी कविताओ का फारसी साहित्य पर साका चल गया। इनमे दो तो 'साकीनाम' नाम के मस्नवी है, बाकी लघु कविताए है।

इसके बाद तैमूरिया ज़माना आया, जब लोगो ने अधिकतर इतिहास ही लिखे, यद्यपि काफी घटिया। तैमूर और उसके बेटे शाहरूख के दरबारी कवि हाफिज अब्रू ने 'जुब्दतुल तवारीख' नामक एक विश्व-इतिहास और फारस का एक भूगोल लिखा, इनमे से आज कोई समूचा उपलब्ध नही है। उस काल के अन्य इतिहासकार निजामि शामी और शर्फुद्दीन अली यज्दी थे। दोनो ने 'जफरनामा' लिखा। शर्फुद्दीन ने शामी का प्रचुर अनुकरण किया। कवि की मेधा मे समरकन्द का अब्दुल रज्जाक (मृ० १४८२) और हैरात का मीरख्वाद (मृ० १४९८) इनसे कही ऊचे थे। रज्जाक का 'मतलउल सादैन' (दो मगलग्रहो का उदय) हाफिजी अब्रू के 'जुब्दातुल तवारीख' पर आधारित है। इसमे हुलागू के प्रपौत्र अबू सैद से लेकर तैमूर के उत्तराधिकारियो का १४७० ई० तक का इतिहास दिया हुआ है। मीरख्वाद का 'राजतुल सफा' विश्व का इतिहास है। अपनी बोझिल शैली के बावजूद यह ग्रन्थ फारसी साहित्य मे अत्यधिक उद्धृत हुआ है। तैमूरिया काल के भी अपने रहस्यवादी कवि थे यद्यपि जामी को छोडकर उनमे कोई अव्वल दर्जे का कवि नही था। खुजाद के कमाल (मृ० १४००) और तब्रीज़ के मुल्ला मुहम्मद शिरी मगरिबी (मृ० १४०६ या ७) लिरिक कविता मे हाफिज के अनुयायी थे। कातिबी तैमूर और शाहरूख के शासन-काल मे प्रशस्तिकार के रूप मे हरात मे रहा था। उसे ख्याति शीरवा और अस्तराबाद के दरबारो मे मिली। उसने वहा कसीदो के अलावा मस्नवी भी लिखे जो निजामी परम्परा के खम्स के अपूर्ण भाग थे। उसकी मृत्यु १४३४ और १४३६ के बीच कभी हुई।

हेरात के दरबार मे कातिबी के साथ ही एक और कवि था, मुईनुद्दीन कासिमी अनवार जो शायद १४३४ मे मरा। कासिम शिया सन्त भी माना जाता है। उसने अपने ग्रन्थ 'अनीसुल आरिफीन' मे अनेक सूफी लाक्षणिक शब्दो का प्रयोग किया है जिससे कुछ लोगो ने उसे भी सूफी माना है। उसे अपने शत्रुओ के कारण हेरात छोडकर खुरासान भागना पडा। ऊपर लिखे मस्नवी के अतिरिक्त उसका एक दीवान भी उपलब्ध है जिसमे अनेक धार्मिक कविताए सगृहीत है।

उबैद-ए-जाकानी की परम्परा के दो पैरोडीकार अबू इसहाक (बूशाक) और महमूद कारी थे। इनमे से पहला 'भोजन का कवि' और उसका अनुयायी दूसरा 'कपडे का कवि' कहा गया है। पहले ने अपने रुबाइयो के सग्रह 'कजुल इश्तिहा' मे भूख की निधि मे स्वाद और भोजन के गुण गाए है। 'दीवाने अल्बिस' का रचयिता 'कारी' इस काल के प्राय डेढ सौ वर्ष बाद हुआ परन्तु अपनी शैली और प्रतिपाद्य विषय के चुनाव मे वह इसहाक का ऋणी है। दोनो पुरमज़ाक कविताए लिखने मे सिद्धहस्त हैं।

अन्तिम तैमूरिया सुल्तान हुसेन का मत्री मीर अलीशीर नवाई विद्वानो का बडा आदर करता था। उसने अपने दरबार मे दूर-दूर से साहित्यकार बुला रखे थे। इन्हीमे से एक दौलतशाह ने कवियो का जीवनचरित 'तजिकरातुल शुअरा' लिखा। सुल्तान हुसेन ने स्वय 'मजालिसुल उश्शाक' नामक प्रशस्तिपरक ग्रन्थ लिखा। उसका मत्री मीर अली शीर भी कवि था और उसने तुर्की जबान की चगतई बोली और फारसी दोनो मे कविता की। उसके 'मजालिसुल नफाएस' मे समकालीन कवियो के चरित गाए गए है। इसका तुर्की से फारसी मे 'लताएफनाम' नाम से अनुवाद हुआ। 'अनवारे सुहेली' का प्रसिद्ध रचयिता हुसेन वाइजी काशिफी भी इसी काल हुआ जिसने पचतत्र की कहानियो के अरबी अनुवाद 'कलील व दिमन' (करटक-दमनक) का फारसी अनुवाद 'अनवारे सुहेली' नाम से प्रस्तुत किया। 'अहलाक-ए-मुहसिनी' उसकी मौलिक रचना है जो मुहम्मद इब्न असद दूवानी (मृ० १५०६) के 'अखलाक-ए-जलाली' की शैली मे लिखी गई। दवानी ने अपनी कृति मे नासिरुद्दीन तूसी के 'अखलाक-ए-नासिरी' का अनुकरण किया था।

मीर अली शीर के कवियो मे प्रधान, वस्तुत समूचे तैमूरी काल का प्रधान कवि मुल्ला नूरुद्दीन अब्दुल रहमान जामी १४१४ मे खुरासान के जामी नामक गाव मे जन्मा था। उसका तखल्लुस 'जामी' फारसी साहित्य के प्रसिद्ध नामो मे है। ईरानियो के प्रधान सात कवियो मे वह गिना जाता है। ईरानियो के दानिश मे फिरदौसी वीरकाव्य मे बेजोड है, निजामी रोमास मे, रूसी रहस्यवादी काव्याकन मे, सादी नीति-आचार के प्रसगो मे, हाफिज 'लिरिक' मे, पर जामी की महारत इन सारी विशेषताओ मे एक-सी है। पिछले खेवे के फारसी कवियो मे जामी प्रमुख माना जाता है। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। उसका गद्य उतना ही प्रभावशाली है जितना अभिराम उसका पद्य है। लिरिक कविता के उसके तीन-तीन 'दीवान' है। उसकी सात मस्नवी कविताओ का सग्रह (खम्स) अरबी मे 'सब' और फारसी मे 'हफ्त औरग' कहलाता है। इनपर निजामी की स्पष्ट छाप है यद्यपि इनमे से अनेक कविताए नैतिक, काल्पनिक, रूमानी आधार पर मौलिक और अभिराम चित्र उपस्थित करती है। उसकी भाषा और वर्णन की ताजगी सम्मोहक है। उसके मनस्वी सग्रह की कहानी 'यूसुफ व जुलेखा' अभिराम है।

जामी की गद्य कृतियो मे एक 'अशीअतुल लमाआत' ईराकी की 'लैमाआत' नामक रचना का भाष्य है। उसकी प्रधान कृति सूफी सन्तो के चरित पर लि त्रा एक कोष 'नफहातुल उन्स' है। उसके 'लवाइह' मे भी सूफी सिद्धातो का उल्लेख है। 'बहारिस्तान' उसकी गद्य रचनाओ मे सबसे अधिक लोकप्रिय है। यह सादी के 'गुलिस्ता' से प्रभावित है परन्तु उस अमर कृति की सादगी इसमे नही। तैमूरी काल की शैली अधिकतर शब्दा-डम्बर से बोझिल है, अलकरण से भरी। जामी स्वय उसी परपरा का कवि है। यद्यपि

उसकी शैली मे निखार प्रचुर है।

तैमूर की मृत्यु के बाद दक्षिण-पश्चिमी ईरान उसके वशधरो के हाथ से निकलकर उन तुर्क सरदारो मे बट गया जिनमे शक्ति के लिए निरन्तर कशमकश चलती रही। तैमूरवशीय हेरात का अन्तिम सुल्तान हुसेन था जिसके बाद ईरान के उस भाग मे भी अराजकता फैल गई। उस अराजकता का अन्त शियो के सातवे इमाम के वशधर इस्माइल ने किया। इस्माइल ईरानी था और उसने ईरानी इतिहास मे सफवी राजकुल की नीव डाली।

: ४ :

आधुनिक ईरान

पहली बार ईरान वैधानिक तौर से शिया हुकूमत मे आया। इसका प्रभूत राजनीतिक महत्व तो है ही, साहित्य पर भी इसका बडा दूरगामी प्रभाव पडा। एक राष्ट्रीय चेतना का इस राजकुल के साथ आरम्भ होता है।

धीरे-धीरे ईरान का सम्बन्ध भारत और यूरोप के देशो से बढा। इन सम्पर्को का प्रतिबिम्ब उन्नीसवी सदी के साहित्य पर पडा। इससे पहले का साहित्य अधिकतर प्राचीन फारसी साहित्यकारो का अनुकरण है। पिछले साहित्य के निर्माण मे जामी के प्रभाव और प्रेरणा का भी अपना स्थान है।

मीर अली शीर के प्राय: सौ वर्ष बाद सफवी शाह अब्बास महान् ने भी अपने दरबार मे उस काल की सारी प्रतिभाओ को एकत्र किया। भारत मे तैमूर और चगेज के वशधर मुगल बाबर ने मगोल-प्रभुता का विस्तार किया और साहित्य का ईरान से भी अधिक वहा पोषण हुआ। स्वय बाबर ने तुर्की मे अपने अनूठे सस्मरण लिखे जिनमे अमानवीय कर्मठता के साथ साहित्य के मलयानिल का मृदु स्पर्श है। उसके चचेरे भाई मिर्जा हैदर दुगलात ने मध्यएशिया के मगोलो का इतिहास अपने 'तारीख-ए-रशीदी' मे प्रस्तुत किया।

फारस मे भी जामी के बाद सुल्तानो की उदासीनता के बावजूद काव्य मर न सका। जामी के भतीजे स्वय हातिफी (मृ० १५२१) ने 'लैला व मजनू', 'खुसरो व शीरी' आदि लिखकर रोमाटिक क्षेत्र मे बडा नाम कमाया। वीरकाव्य के रूप मे अपने 'तिमूरनाम' मे जो उसने तैमूर का जीवन प्रतिबिबित किया वह फिरदौसी के अनुयायी कवियो के नि शक्त कृतित्व के बहुत ऊपर उठ गया। हातिफी आर्थिक सघर्ष का शिकार था। उसने लिखा भी है कि यदि वह आर्थिक परेशानियो से मुक्त हो जाता तो कला के क्षेत्र मे अधिक लगन से काम कर सकता। कला और साहित्य के क्षेत्र मे सघर्ष करने वालो मे

हातिफी निस्सदेह प्रथम नही और न अतिम ही था। उस क्षेत्र के साधको को प्राय जो सघर्ष करना पडा है वह भारत मे अनजाना नही। सरस्वती और लक्ष्मी की विषमता के सम्बन्ध मे यहा अनेक कहावते बन गई है।

हातिफी का एक समकालीन फिगानी था। वह जामी की ही भाति सुल्तान हुस्सैन का दरबारी था, परन्तु ईर्ष्यालु शत्रुओ के कारण उसे हेरात से भागकर तब्रीज के आक कुयुन्लु के दरबार मे शरण लेनी पडी। वहा उसकी काफी इज्जत हुई। वहा उसे बाबा-ए-शूअरा (कवियो का पिता) का खिताब मिला। फिगानी ने काव्य के पुराने अलकरणो को छोड सर्वथा नई और मौलिक उपमाओ का व्यवहार किया। काव्याकन मे वह इतना प्रवीण था कि उसे लोग 'लघु हाफिज' कहा करते थे। वह १५१६ और १५१९ के बीच कभी मरा।

जामी का शिष्य आसफी भी अपने गुरु की ही भाति मीर अली शीर का दरबारी था। उसका समकालीन शीराज का अहली (१५३३) निष्णात विद्वान् तो था ही कसीदा लिखने मे भी वह असाधारण था। अपने अधिकतर कसीदे उसने शाह इस्माइल पर लिखे। 'सिह्-ए-हलाल' मे उसने फारसी काव्य के क्षेत्र मे टेकनीक को विशेष महत्व दिया। वह वस्तुत परपरागत था। परन्तु निश्चय है कि यह काव्य का गुण नही, उसका चित्राकन है, कलम की कलाबाजी दिखाते हुए उसने 'शमा व परवाना' लिखकर रहस्यवाद की दिशा मे भी कदम उठाया। अस्त्राबाद का हिलाली उसी काल का सूफी कवि था जिसे हेरात के उजबक विजेता ने प्राणदड दे दिया। उसकी विविध कविताए उसके 'दीवान' मे सगृहीत हुई। 'शाह व गदा' नाम का एक मस्नवी भी उसने लिखा और उसके रूपक 'सिफातुल आशिकीन' ने विश्व भ्रातृत्व के राग गाए। अहली के 'शाह व गदा' पर शाहरूख के दरबारी कवि आरिफी (मृत्यु १४४९) की रहस्यवादी कविता 'गूय व चौगान' का स्पष्ट प्रभाव पडा।

शाह इस्माइल के पुत्र साम मिर्जा ने भी 'तुहफा-ए-सामी' लिखकर दौलतशाह के कवियो के जीवन सबधी घटना-लेखन को आगे बढाया। शाह तहमास्प का प्रधान कवि हैराती १५५४ मे मरा और कासिमी ने 'शाहनाम' लिखकर शाह इस्लाम और उसके उत्तराधिकारी का यश काव्यबद्ध किया। इस काल के कवियो मे प्रधान मुहतशम काशी था जो १५८८ मे मरा और हुसैन की शहादत पर उसकी प्रशस्ति फारसी साहित्य मे मरसिया के रूप मे अपना सानी नही रखती।

१५८७ ईस्वी मे शाह अब्बास महान् ने ईरान के सिंहासन पर आरूढ होकर ईरानी इतिहास मे एक नये अध्याय का आरभ किया, यूरोप से सपर्क के रूप मे उसके दरबार मे यूरोपीय राज्यो के अनेक दूत आए और एक अग्रेज सर एन्थनी शरले उसके मन्त्रियो मे से था। साहित्य की दिशा मे भी उसने प्रभूत उत्साह दिखाया और उसका दरबार इस्पहान

मे साहित्यिको का अखाडा बन गया। इन्हीमे वह तेहरान का शानी (मृत्यु १६१४) था जिसकी कृतियो का पुरस्कार शाह ने उसे तौलकर सोने से दिया। अब्बास का दूसरा प्रशस्तिकार कवि हेरात का फसीही (१६३९) था जो पहले खुरासान के गवर्नर का दरबारी रह चुका था। मिर्ज़ा जलालअसीर भी जो दरबार का प्रधान पियक्कड और शाह का विशेष विश्वासभाजन था, कवि था। अब्बास का चिकित्सक शिफाई (मृ० १६२८) व्यग्यकार था और उसने कुछ मस्नवी और मौलिक रचनाए की। उसकी जानी हुई रचनाए 'मिहओ मुहब्बत', 'नमकदान-ए-हकीकत,' 'किस्सए इराकैन' और 'दीद-ए-विदार' हैं। इनमे पहली रचना भगवान की सर्वज्ञता तथा सर्वशक्तिमत्ता के विषय मे है।

शाह अब्बास के दरबारी साहित्यकारो मे एक और जुलाली (मृ० १६१५-१६) भी था जिसने कुछ मस्नवी लिखे। उसकी सात कविताओ के सग्रह मे 'महमूद व अयाज़' की प्रसिद्ध कहानी है। यह सग्रह 'सब तैयार' (सात ग्रह) के नाम से प्रसिद्ध है। इसी सग्रह मे 'शेबा की मलका' और 'हसन' की भी कहानिया है। 'महमूद व अयाज' की कविता अभिराम है। जुलाली ख्वान्सार का रहने वाला था। प्रगट है कि अब्बास का दरबार शियाओ का अखाडा था। प्रसिद्ध बहाउद्दीन आ मुली (मृ० १६२१) को अब्बास की सरक्षा प्राप्त थी। बहाउद्दीन शिया कानून का अधिकारी विद्वान माना जाता है। उस विषय पर उसने 'जाम-ए-अब्बासी' नामक प्रसिद्ध ग्रथ लिखा। उसने दरबार के प्रभावशाली जीवन को छोड तप का जीवन अपनाया और अपने इस नये जीवन की प्रशसा मे 'नान व हलवा' नामक कविता लिखी। अब्बास १६२९ मे मरा। उसके जीवन और कार्यो पर सब्जवार के कमाली ने अपना 'शाहनाम' लिखा। उसी विषय पर गद्य मे इस्कन्दर बेग मुन्शी ने अपना बृहत् इतिहास 'तारीख-ए-जहानाराए-अब्बासी' लिखा।

भारत मे उन दिनो साहित्य-निर्माण मे जो प्रगति हो रही थी उसकी ओर सकेत किया जा चुका है। वहा जिन ईरानी लेखको ने साहित्य-रचना की उनमे इतिहासकार ख्वान्दमीर भी था। वह 'रौजातुल सफा' के लेखक मीररब्वान्द का पोता था और हेरात मे जन्मा था। बाबर का निमत्रण पाकर वह हिन्दुस्तान आया और वहा उसने अपने बृहद् ग्रथ 'हबीबुल सियर' की रचना की। यह ग्रन्थ आदिकाल से लेकर शाह इस्माइल सफवी की मृत्यु तक का इतिहास है। इसमे भूगोल पर भी एक परिशिष्ट जुडा हुआ है। इसे उसने शरफुद्दीन के 'जफरनाम' का सक्षिप्त सस्करण कहा है। उसके अन्य ग्रथ 'खुला-सतुल-अखबार', 'दस्तूरुल वुजरा' और 'हुमायूनामा' है जिनमे अलकृत शैली का व्यवहार हुआ है। अकबर के ज़माने मे 'तारीख-ए-अलफी' नामक एक ऐतिहासिक ग्रथ की रचना का आरम्भ हुआ जिसमे मुहम्मद के बाद की घटनाओ का उल्लेख था।

अकबर केवल राजनीति का ही निर्माता न था, साहित्य के क्षेत्र को भी उससे बडा

प्रोत्साहन मिला। बुखारा का लिरिककार मुश्फिकी (मृ० १५८६) को उस सम्राट से बडी मदद मिली। दरबार के प्रधान कवि शीराज के उर्फी (मृ० १५६५) थे। फैजी की 'नल दमन' नाम की एक रचना थी जिसमे नल-दमयन्ती की प्रसिद्ध कहानी छदोबद्ध हुई। तेहरान के जुहूरी (मृ० १६१६) ने भी इसी काल अपना 'साकीनामा' लिखा जो हाफिज की इसी नाम की एक कृति का मस्नवी अनुकरण है। अब्बास महान् की मृत्यु के बाद भी साहित्य मे निर्माण-कार्य होता रहा। उस काल के इस्पहान का कवि साइब तो जामी के बाद के कवियो मे प्रमुख माना जाता है। उसने कुछ समय शाहजहा के दरबार मे भी बिताया था। फिर जब वह स्वदेश लौटा तो शाह अब्बास द्वितीय (१६४२-६७) ने उसे 'मलिकुल शअरा' का खिताब देकर अपना राजकवि बना लिया। उसने काव्य के रूपायन मे, उसके रूप और शैली में, नये प्रयोग किए जो अगली सदियो के लिए प्रतीक बन गए। उसका 'दीवान' अभिराम कविताओ और रुबाइयो से भरा है। साइब १६७७ मे मरा।

फय्याज उसका समकालीन था और इमामो की प्रशस्ति मे उसने सुदर राष्ट्रीय 'कसीदे' लिखे। हसन और हुसेन पर उसके मरसिये तो बहुत ही करुण है। उसने शिया सप्रदाय के सिद्धातो पर अरबी मे भी एक ग्रथ लिखा और मूर रहस्यवादी इब्नुल अरबी के 'फुसूसुल हिकम' पर फारसी मे एक भाष्य लिखा। अब्बास द्वितीय का वजीर ताहिर वहीद पत्र-लेखन की साहित्यिक कला मे निपुण था। उसने 'तारीख-ए-शाह अब्बासे शानी' लिखकर इतिहास के क्षेत्र मे नाम कमाया। सफवी शासन के अन्त मे इस्पहान का कवि मीर अब्दुल अल नजात (मृ० १७१४) हुआ जिसके 'दीवान' की उसके समसामयिको मे ही खासी चर्चा हुई। उसकी शैली को भद्दा कहा गया। उसने पहलवानी पर 'गुल-ए-कुश्ती' नाम का एक मस्नवी लिखा जो लोकप्रिय हुआ और जिसपर अनेक टीकाए लिखी गईं। कुश्ती सम्बन्धी कृति होने पर भी यह रचना अधिकतर शृगारिक है।

सफवी काल के बाद यूरोपीय प्रभाव साहित्य के क्षेत्र मे दृष्टिगोचर होने लगे फिर भी अनेक कवि पुरानी शैली मे ही लिखते रहे। उन्हीमे इस्पहान का शेख अली हजी भी था। जिसे राजनीतिक षड्यन्त्र के कारण हिन्दुस्तान भागना पडा। उसने बहुत लिखा और अपने समसामयिक तथा अन्य कवियो पर उसने ग्रन्थ लिखे। उसका 'तज्किरातुल मुआसिरी' पुराने विद्वानो और कवियो का वर्णन करता है और अपने आत्मचरित 'तज्किरातुल अह्वाल' मे अपने समकालीनो का। इन्हीमे ईरानी शाहो के हिन्दुस्तान से सम्बन्ध का भी वर्णन है। उसने सात मस्नवी लिखे और चार दीवान। अली हजी १७६६ ईस्वी मे बनारस मे मरा। 'आतशकदा' का इस्पहानी कवि लुत्फ अली आजुर, हजी से कही समर्थ कवि था और कुछ काल वह अफशारिदशाह (१७३६-६६) के दरबार मे रहा। बाद मे वह दरवेश हो गया। उसका चरितकोष १७६०-७७ मे लिखा

गया जिसमे ८०० से अधिक कवियो का उल्लेख है। उसके दीवान मे विविध कविताएं सगृहीत हुई और मस्नवी मे 'यूसुफ और जुलेखा' की रोमाचक कहानी उसने प्रस्तुत की। यज्द का फौकी उसका समकालीन था और उसने भी प्रेम, शराब आदि पर कविताए और प्रशस्तिवाचक कसीदे लिखे परन्तु अली आजुर के काव्यस्तर को वह न छू सका। उसके वर्णन नितान्त यौन है।

१६वी सदी मे (१७६७-१८३६) फतह अलीशाह ने भी गजनी के महमूद की भाति अपने दरबार मे अनेक साहित्यकार एकत्र किए। वह स्वय पद्यकार था। और उसके राजकवि फतह अलीखा सबा ने एक 'दीवान' और एक 'शाहशाहनाम' लिखा परन्तु काव्य-रचना मे वस्तुत शाह का परराष्ट्र सचिव अब्दुल वहाबू नशात उससे बाजी ले गया। उसने अपने 'दीवान' के अतिरिक्त अपने आका और उसके राजकवि की कविताओ की भूमिका तुकान्त छदो मे लिखी। वही जमाना था जब फारस मे अधिकारो के लिए इग्लैड, फ्रास और रूस मे कशमकश हो रही थी। फतहअली के दरबार मे एक और कवि मिर्जा हबीबुल्ला (मृ० १८५३) था जो अपने तखल्लुस 'काआनी' से अधिक प्रसिद्ध है। १६वी सदी के फारसी साहित्य का वह सबसे प्रतिभाशाली कवि है। उसके व्यग्यों और प्रशस्तियो मे ऊची कविता रूपायित है। उसमे विनोद का भी पुट है यद्यपि अक्सर जीवन का निराशावाद उसकी ध्वनि बन जाता है।

मलका विक्टोरिया के ज़माने मे नासिरुद्दीन शाह (१८४८-६६) ने इग्लैण्ड का भ्रमरण किया। उसने यूरोप सम्बन्धी अपनी यात्राओ की अनुभूति फारसी डायरी मे सुन्दर सरल शैली मे प्रस्तुत की। उसके शासनकाल के कवियो मे रिजाकुली खा लालाबाशी (मृ० १८७६) प्रधान था। उसने लिरिक, वीर कविताए और धार्मिक मस्नवी लिखे। साहित्यिक चरितो के क्षेत्र मे भी उसने दो महान् ग्रन्थ रचे—'मजमाउल फ़ुसहा' और 'रियाजुल आरिफीन'। इनमे फारसी साहित्य के आदि से लेकर ग्रन्थकार के ज़माने तक के साहित्यिको का ज़िक्र है। वह कुछ दिनो ख्वारिज्म के दरबार मे अपनी सरकार का दूत भी रहा। अपने 'सिफारतनाम' मे उसने अपनी खीव की यात्रा का विवरण दिया है।

यूरोप का प्रभाव रजाकुली खां से समकालीन शैबानी की कृतियो पर स्पष्ट है। वे १६वी सदी के यूरोपीय साहित्य का उत्कट यथार्थवाद और निराशावाद प्रतिबिम्बित करती है। इसी काल पहले पहल नाटको का भी फारसी मे प्रादुर्भाव हुआ परन्तु वे सारे के सारे तुर्की नाटको के अनुवाद थे, कॉमेडी जो कभी रंगमच पर खेले न जा सके।

इनसे सर्वथा भिन्न नाटक वे 'ताजिया' है जो प्रतिवर्ष मुहर्रम के अवसर पर हुसैन अली और हसन की मृत्यु पर प्रदर्शित होते है। इन नाटको मे ईरानी राष्ट्रीय चेतना ईरान

मे जगी क्योकि हुसैन और हसन ईरान के माने हुए सन्त और शहीद थे। ताजियो का उदय सर्वथा आधुनिक है जो कर्बला सम्बन्धी कुर्बानी के आधार पर उठे। ये नाटक केवल खेले जाते है, कभी लिखे न जा सके और इनके रचयिताओ का भी कुछ पता नही। इनका अदाज भारतीय रामलीला आदि से लगाया जा सकता है।

१९वी सदी का सबसे बडा ईरानी धार्मिक आन्दोलन 'बाबीवाद' के नाम से विख्यात है। १८४४ ईस्वी मे शीराज के मिर्ज़ा अली मुहम्मद ने अपने को 'महदी' एलान कर इसका प्रवर्तन किया। 'बाब' वह द्वार है केवल जिससे 'सत्य' का लाभ हो सकता है। अली मोहम्मद का आन्दोलन सूफी आधारो पर ही खडा हुआ, एक रहस्यवादी भ्रातृभाव उसने धारण किया और व्यावहारिक रूप से कम्यूनिस्ट प्रवृत्तियो की एक झलक उसके आन्दोलन मे मिली। स्वाभाविक ही वैधानिक इस्लाम की आवाज उसके विरुद्ध उठी। आन्दोलन के अनेक अनुयायी मार डाले गए और अनन्त यन्त्रणाओ के शिकार हुए। शीघ्र ही बाद मे बाबियो मे आन्तरिक झगडे खडे हो गए। नये सम्प्रदाय का प्रधान नेता बहाउल्ला हुआ और उसीके नाम पर आन्दोलन का पिछला नाम 'बहाई' पडा। यद्यपि इस आदोलन का अधिकतर प्रभाव ऐतिहासिक है परन्तु साहित्य भी उससे अछूता न बचा। स्वय बाब ने अनेक ग्रन्थो की रचना की जिनमे प्रधान सिद्धान्तवादी 'बया' (व्याख्या) है। उसके अनुयायियो ने भी अपने सम्प्रदाय का साहित्य प्रस्तुत किया।

वर्तमान काल का फारसी साहित्य राजनीतिक वातावरण मे स्वाभाविक ही एक नई दिशा मे चल पडा है। अनेक कवियो ने साहित्य की शोभा बढाई है। बीसवी सदी मे मशवाद के बाहर ने अच्छी कविताए की और वहा से एक अखबार भी निकाला। आसिफ ने कुछ बडे सुन्दर राजनीतिक बैलेड लिखे है। आसिफ को अपने विचारो के कारण कैद की सजा तक भुगतनी पडी है। गीलान के सैयद अशरफ ने रूढिवादी मुल्लाओ के विरुद्ध काफी सुन्दर काव्य रचना की। इनके अतिरिक्त अनेक नवोदित लेखक और कवि आज के ईरान मे प्रगतिशील साहित्य का निर्माण कर रहे है। वहा के प्रसिद्ध 'तूदे' दल ने जिस प्रहारक नीति से विदेशी शोषण का प्रतिकार किया है उसमे वहा के अनेक प्रतिभाशाली प्रगतिशीलो का भी योग है और प्रकट है कि जनवादी साहित्य के क्षेत्र मे ईरान उत्तरोत्तर प्रगति करता जाएगा।

१७. फिनलैंड का साहित्य

फिनलैंड उसी भू-भाग मे स्थित है जिसमे स्कैन्डिनेविया के नार्वे और स्विडन है। यद्यपि वह स्कैन्डिनेविया का भाग नही माना जाता परन्तु कई अर्थो मे वह उन्ही देशो के समान है। उसकी आबादी मे भी कम से कम दस प्रतिशत स्वीडी बोलने वाले हैं। फिनलैंड की आबादी कुल ४० लाख है। इस प्रकार वह दो भाषाओ का देश है।

फिनलैंड ६०० वर्षो तक रहा भी है स्विडन राज्य का अग जिससे उसकी सस्थाओ और सास्कृतिक अभिप्रायो का स्वीडी परपरा मे विकसित होना और उनसे प्रभावित होना स्वाभाविक ही है। स्वीडी भाषा बहुत दिनो तक वहा राजकीय भाषा के पद पर रही। इसी कारण १९ वी सदी से पहले का उसका साहित्य आज के अर्थ मे विशेष महत्व का नही। हा, लोक-साहित्य की सम्पदा उसमे काफी रही है।

१२००-१५०० के बीच का तीन-चार सौ सदियो का साहित्य लोक-साहित्य है जिसमे वीर काव्य, लिरिक आदि सभी रचे गए है। प्राय. ५० हजार लोक-कविताए सगृहीत हो चुकी है, लगभग ३० हजार लोक कथाए, १० लाख कहावते और प्राय: ४० हजार पहेलिया। लोक-साहित्य की मात्रा का इससे कुछ अन्दाज लगाया जा सकता है। उनका प्रकाशन पहली बार के मुद्रण माध्यम से १९वी सदी मे हुआ।

स्विडन के शासन का अग होने के कारण फिनलैंड के साहित्य की अपनी स्वतत्र स्थिति तो हो ही नही सकती थी। इससे स्वाभाविक ही उसका विकास शृखलित रूप से हुआ। फिन्नी साहित्य का जनक बिशप माइकेल एग्रिकोला[१] कहलाता है। १६वी सदी के मध्य उसने इंजील की नई पोथी का अपनी भाषा मे अनुवाद किया। वह सुधारवादी लूथर के आन्दोलन से प्रभावित था। बिशप एरिक सोरोलेनेन[२] ने बाइबिल की पुरानी पोथी का अनुवाद भी समाप्त किया। अनुवाद की भाषा फिन्नी गद्य का सुदरतम रूप मानी जाती है। बिशप एरिक ने अपने उपदेशो का एक बडा सग्रह भी प्रकाशित किया था।

१७वी और १८वी सदियो मे फिन्नी साहित्य की सीमाए कुछ फैली। भाषा मे कुछ नये अनुवाद हुए और साहित्य धर्म की सीमाओ के बाहर लौकिक विषयो की तरफ भी बढा। फिर भी फिन्नी साहित्य की प्रगति बहुत धीमी थी। उस काल की सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति माथयाज सालाम्नियस[३] की कविता 'मेसिआ' (१६९०) है जिसमे ईसा का चरित सहज और स्पष्ट भाषा मे अकित हुआ है।

---

१ Bishop Michael Agricola, २ Bishop Eric Sorolainen (मृत्यु १६२५), ३ Mathias Salamnius

१८वी सदी से फिनलैड मे स्वतन्त्र सास्कृतिक जीवन का आरम्भ होता है। उसका प्रधान केन्द्र तुर्क विश्वविद्यालय बना जहा जर्मन और अग्रेजी रोमान्टिक प्रवृत्तियो का प्रवेश हुआ। हर्डर ने फिनलैड के साहित्य को सिद्धात प्रदान किए और अग्रेजी साहित्य ने नये मॉडल। इस नये क्षेत्र का नेता प्रोफेसर पोर्थन[1] था। वह फिनलैड का पहला इतिहासकार और भूगोलविद् था और उसीने उस देश के अतीत के चित्र प्रस्तुत किए। उसने फिन्नी भाषा और लोक साहित्य के क्षेत्र मे भी बडा अनुसधान किया और उसके अनेक शिष्यो ने उसके बाद भी उस अनुसधान की शृखला जारी रखी। जैकब तेगस्त्रोम[2] और फ्रास माइकेल प्राजेन[3] उसके शिष्यो मे प्रधान थे। इनमे पहला इतिहासकार और रसवादी था और उसने ग्रीक तथा रोमन मॉडलो के विपरीत इब्रानी, अग्रेजी और प्राचीन स्कैन्डिनेविया के लोक-साहित्य को अपना आदर्श माना। इससे एक तो १९वी सदी को रोमान्टिक प्रवृत्तियो के देश मे विकास का लाभ हुआ और दूसरे फिन्नी सस्कृति तथा राष्ट्रीयता को शक्ति मिली।

उस काल का सबसे महत्वपूर्ण कवि पोर्थन का दूसरा शिष्य फ्रास माइकेल फ्राजेन था उसने यूरोप का काफी भ्रमण किया था। उसकी कविताओ मे बडी सादगी और स्वाभाविकता है। 'मानव मुख' और 'बूढा सैनिक' उसकी दो प्रारम्भि के कविताए है। बाद मे वह घरेलू जीवन पर कविताए लिखने लगा था। स्वदेश की प्रेरणा मे भी उसने कुछ कविताए लिखी और स्वीडन मे उसकी प्रशसा काफी हुई। वहा की एकेडेमी का वह सदस्य चुन लिया गया था। स्वीडन मे ही वह १८४७ मे मरा।

१८०९ मे स्विडन से अलग होकर फिनलैड रूसी साम्राज्य का अग बन गया। तब उस देश के अनेक नेता स्विडन चले गए। १९वी सदी के प्राय. आरम्भ मे ही रोमाटिक आदोलन का फिनलैड मे प्रवेश हो गया था। उसके प्रचारको ने भाव-साम्राज्य की गाथा गाई और पुरानी रूढियो को दबाने मे वे सफल हुए। उस आन्दोलन के परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता का जो देश मे विकास हुआ उससे साहित्य को अच्छी मात्रा मे लाभ हुआ। राष्ट्रीय भावधारा का प्रधान समर्थक आरविदसन[4] था जिसने अपने लेखो द्वारा राष्ट्रीय सुधारो की माग की। उसने समकालीन रूढिवादी वृद्ध नेताओ को उनकी प्रतिगामी सक्रियता के लिए धिक्कारा। रूसी शासन के तेवर तब बदले और उसे फिनलैड छोडकर स्वीडन भागना पडा। १८२८ मे विश्वविद्यालय तुर्कु से उठकर हेलसिंकी चला गया और हेलसिंकी मे ही तब से फिनलैड का सास्कृतिक जीवन केन्द्रित हुआ। १८३० मे वहा

---

१. Professor H. G Porthan (१७५९-१८०४); २. Jacob Toengstrm,
३. Frans Mikael Franzen (जन्म १७७२); ४. A I. Arwidsson (१७९१-१८५८)

जिस सोसाइटी की नीव पडी उसने फिनलैंड के सास्कृतिक जीवन मे बडा महत्वपूर्ण काम किया। उसकी बैठके शनिवार को होती थी, इसीलिए उसका नाम भी 'शनिवार-समाज' पड गया। उस समाज के सदस्य अधिकतर तरुण थे। उस दल का प्रधान पुरुष नरवान्दर[1] था। वैज्ञानिक होने के अतिरिक्त वह कवि भी था। उसकी कविताओ मे सुन्दर-सरल भाषा मे उस काल के रोमाटिक आदर्श प्रतिबिम्बित हुए। उस दल का दूसरा महत्वपूर्ण सदस्य फ्रेडरिक किग्नियस[2] था। उसकी गद्य रचनाए रोमाटिक प्रवृत्ति से भरी थी। उसने फिनलैंड के सास्कृतिक जीवन पर काफी प्रभाव डाला। वह आलोचक भी था। उस दल का सर्वोत्तम कवि जोहान लुडविग रूनेबर्ग[3] था। उससे समाज के आदर्शवाद को बडी प्रेरणा मिली। रूनेबर्ग ने अपनी कृतियो मे फिन्नी किसान का बडा हृदयग्राही चित्र खीचा। उसकी यथार्थवादी किसान सम्बन्धी कृति मे किसान की आत्मा जाग्रत हो उठी। 'एल्क-शिकारी' 'हन्ना' और 'क्रिस्मस की सध्या' उसकी जानी हुई कृतिया है। पिछली रचनाओ मे उसने मध्यवर्ग और अभिजातकुलीय जीवन को मूर्त किया है। 'एल्क-शिकारी' राष्ट्रीय एपिक है। १८०८-९ के रूसी युद्ध मे फिनलैंड ने बडी वीरता का प्रदर्शन किया था। तत्सम्बन्धी घटनाओ का रूनेबर्ग ने अपनी सशक्त कविताओ मे वर्णन किया और वे कविताए न केवल उसकी ही रचनाओ मे श्रेष्ठ मानी गई वरन् फिनलैंड की राष्ट्रीय भावना का भी प्रतीक बन गई। १९वी सदी के मध्य से कुछ ही पूर्व यूरोप के साहित्य मे यथार्थ-वादी प्रवृत्ति का आरभ हुआ था। रूनेबर्ग उस यथार्थवादी प्रवृत्ति का सही प्रतिनिधि था। सशक्त प्रवृत्ति के स्पर्श से समर्थ जीवन उसके आकर्षण का केन्द्र बना और वह रोमाटिक प्रवृत्ति से ऊपर उठ गया। बाद मे निश्चय ही रोमाटिक प्रवृत्ति, सम्भवत और असफल प्रेम के फलस्वरूप उसकी चेतना मे लौट पडी। 'नादेश्दा' और 'राजा फ्यालार' रूनेबर्ग की उसी प्रवृत्ति की कविताए है। फिर भी उससे उसकी यथार्थवादी चेतना नष्ट न हो सकी।

उस काल के रोमाटिक लिरिक कवियो मे सब से विशिष्ट लार्स जैकब स्टेन्बैक[4] था। उसकी कविताओ मे सौदर्य की उपासना थी। परतु कुछ ही काल बाद धर्म के पचडे मे पडकर उसने साहित्य से प्राय किनारा ही कर लिया। १९वी सदी के मध्य के बाद भी फिनलैंड मे रोमाटिक प्रवृत्ति जीवित रही परतु उसके रूप मे अब कुछ अतर पड गया था। अब वह दार्शनिक कम थी हल्की और सद्योजात अधिक। उसमे मातृभूमि की उपासना प्राय आवश्यक हो गई। जाक्रिस तोपेलियस[5] उस युग का सबसे बडा लेखक है। वह पहले कवि था, लिरिक कवि और अपनी कविताओ मे उसने स्वदेश के अभिराम प्राकृतिक दृश्यो का

---

१. J. J Nervander (१८०५-४८), २ Fredrik Cygnaeus (१८०७-१८८१), ३. Johan Ludvig Runeberg (१८०४-७७), ४ Lars Jakob Stenback (१८११-७०), ५ Zachris Topelius (१८१८-९८)

गुणगान किया। बाद मे उसने स्कॉट से प्रभावित होकर राष्ट्रीय रोमान्टिक परपरा के ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। इनमे 'फिनलैड की डचेज' और 'सैनिक सर्जन की कहानिया' विशिष्ट है। उसने ऐतिहासिक ड्रामा भी लिखे। प्रतिभाशाली कवि और नाटककार जोजेफ जूलियस वेकसल[1] तोपोलियस का शिष्य था। उसने अपना प्रसिद्ध और सफल नाटक 'दानिएल ह्योर्त' केवल २३ वर्ष की आयु मे लिखा था। परन्तु वह आज भी दर्शको को मुग्ध कर देता है।

कवि कार्ल तावास्तजेर्ना[2] ने अपनी कविताओ—'नये छन्द' (१८८३) द्वारा अतीत वाली परपरा तोड दी। ये कविताए अपनी प्रेरणा, रूप और प्रभाव सभी मे अद्यावधि कविताओ से भिन्न थी। अपने 'बचपन के मित्र' मे उसने सामाजिक साहित्यकारो का उल्लेख किया। उसने फिर तो सामाजिक प्रश्नो पर भी विचार करना शुरू किया। अपने नाटक 'व्यवसाय' और उपन्यास 'नारी शासन' मे उसने नारी की स्वतन्त्रता पर विचार किया। एक दूसरे उपन्यास 'कठिन जमाना' मे उसने किसान का जीवन व्यक्त किया। परन्तु किसान दयनीय न था, दैत्य था जो किसीका भरोसा नही करता था। वाद मे वह यथार्थवादी दृष्टिकोण से भी कुछ उदासीन हो गया। और आत्मानुगत लिरिक लिखने लगा।

१९वी सदी के अन्त मे तरुण कवियो और लेखको ने फिर यथार्थवादी दृष्टिकोण त्याग कल्पना और भावो का सहारा लिया। इन तरुणो मे पहला माइकेल लीबेक[3] था जिसने पहले प्रकृतिवादी उपन्यास लिखे फिर प्रतीकवादी। रूनार शिल्ट[4] मनोवैज्ञानिक उपन्यास का आचार्य था। रिचर्ड माल्मबर्ग[5] और थूरे जानसन[6] व्यग्यकार थे और अर्विद मोर्ने[7] तथा अर्न्स्ट नेप[8] समर्थ लिरिककार। लिरिककवियो मे प्रधान बर्तेल ग्रिपेनबर्ग[9] था।

फिन्नी भाषा और सस्कृति का असाधारण पुजारी एलियस लौनरॉट[10] था। उसने उस भाषा का लोक-साहित्य तो एकत्र किया ही उसे एक नई शैली भी प्रदान की। समान विषयक विभिन्न पाठको को एकत्र कर उसने उस भाषा का महदुपकार किया। वह समन्वित साहित्य राशि 'कालेवाला' (१८३५) नामक सग्रह मे सचित हुई। यह एक वीर काव्य है जिसमे 'कालेवा' और 'पोहयोला' नामक दो जातियो के युद्ध और सधि का वर्णन हुआ

---

१ Josef Julius Wecksell (१८३८-१९०७), २ Karl A. Tavastst Jerna (१८६०-९८), ३ Mikael Lybeck (मृ० १९२५); ४ Runar Schildt (मृ० १९२५), ५. Richard Malmberg, ६ Thure Jansson, ७ Arvid Morne, ८ Ernst Knape, ९. Bertel Gripenberg (जन्म १८७८), १०. Elias Lonnrot (१८०२-८४)

है। चरित्र प्रकृति के निकटस्थ है, सभ्यता से प्राय दूर। प्रकृति का भी उसमे प्रचुर वर्णन हुआ है। उसके शब्दचित्र अत्यन्त मार्मिक है। फिन्नी साहित्य, सगीत और चित्रकला पर 'कालेवाला' का गहरा प्रभाव पडा। लोनराट ने 'कान्तेलेतार' नामक एक बृहद ग्रथ मे प्राचीन लोक-लिरिक, बैलेड और ख्याते एकत्र की। साथ ही उसने मुहावरो (१८४१), पहेलियो (१८४४) और मत्रो (१८८०) के भी सग्रह प्रकाशित किए। फिन्नी भाषा इन सग्रहो से समृद्ध हुई। उसे बडा बल मिला।

आधुनिक फिन्नी भाषा का पहला मौलिक कवि अलेक्सिस कीवी[१] था। उसने विश्वसाहित्य का अध्ययन काफी किया था। रोमान्टिक परम्परा मे उसने कुछ बडी सुन्दर, भावुक और ताजी कविताए लिखी। उसके नाटक 'लिया' (१८६९) ने फिन्नी रगमच का सूत्रपात किया। उसने यथार्थवादी परपरा मे भी साहित्य रचा और फिनलैंड की जनता का सच्चा चित्रण किया। उसकी कॉमेडी 'मोची' (१८६४) एकाकी 'मगनी' (१८६६) और उपन्यास 'सात भाई' (१८७०) फिन्नी जीवन के सुघड सचायक है। कीवी युग का सबसे विशिष्ट कवि ओक्सानेन[२] था। उस काल के कुछ अन्य कवि निम्नलिखित थे। जिन्होने अपने-अपने मौलिक तरीके से फिन्नी साहित्य का उपकार किया—

कार्लो क्रम्सू[३], जोहाना हेन्रिक्की एर्को[४], अर्वी जेनिस[५], पावो काजान्दर[६]।

मध्य १९वी सदी के बाद फिनलैंड का साहित्य खूब बढा। उसके पढने वालो की सख्या बढी और अन्य यूरोपीय साहित्यो के सीधा सम्पर्क मे आ जाने के कारण 'स्थानीय' से अधिक व्यापक मानवीय प्रश्नो पर विचार होने लगा। नई प्रवृत्तियो का उसमे प्रवेश हुआ। १८८० के बाद प्रकृतिवाद का प्रचार हुआ जिससे सामाजिक समस्या विशेषत सामाजिक वर्गो के पारस्परिक सघर्ष, वर्तमान समाज मे नारी के अधिकार मजूरवर्ग के अधिकार—साहित्य के आराध्य बन गए।

नई प्रवृत्ति, जिसमे प्रकृतिवाद और रोमाटिक शैली का समन्वय था, का आरम्भ एक लेखिका मिन्ना कान्थ[७] ने किया। पहले वह पुरानी परपरा मे लिखती थी जिसका इष्ट रोमाटिक शैली से देहाती जीवन को व्यक्त करना था। अब अपने 'मजूर की पत्नी' (१८८५) मे उसने सामाजिक असुविधाओ पर आघात किया। अपने अन्य उपन्यासो— 'गरीब लोग' और 'छिपी चट्टान' मे भी उसने सामाजिक विषमताओ और कुरीतियो का भण्डाफोड़ किया, नारी के अधिकारो की माग की। सपत्तिहीन जनो का प्रश्न उसने

---

१ Alexis Kivi (१८३४-७२), २ Oksanen (१८२६-८९), ३ Kaarlo Kramsu, ४. Juhana Henrikki-Erkko, ५ Arvi Jannes, ६ Paavo Cajander; ७ Minna Canth (१८४४-९७)

अपने नाटक 'अभाग्य की सन्तान' (१८८८) मे लिया। उसके अन्य नाटक 'सिल्वी' और 'अन्नालीजा' (१८९५) था।

जुहानी आहो[1] ने भी अपने उपन्यासो—'रेलवे', 'पादरी की बेटी' और 'पादरी की बीवी'—द्वारा रोजमर्रा के जीवन और उसकी कुरीतियो का चित्र खीचा और नारी के अधिकारो का समर्थन किया। अन्तिम उपन्यास तो उसकी बडी सुन्दर कृति है। उसने कुछ अत्यन्त मार्मिक कहानिया भी लिखी है। उसकी शैली का फिनलैड मे काफी अनुकरण हुआ। अर्विद जर्नेफिल्ट[2] दूसरा लेखक था जिसने वहा का साहित्य भरा-पूरा। उसपर टाल्स्टाय[3] का प्रकट प्रभाव था। वह किसान हो गया। उसमे बलिदान और शान्तिपूर्ण व्यवस्था की मात्रा काफी है। उसने अपने उपन्यास, नाटको और कहानियो द्वारा अपने विचारो का प्रचार किया। उसकी विशिष्ट कृतिया निम्नलिखित है—

'पितृदेश', 'मेरा परिवर्तन', 'ग्रेटा और उसका भगवान्', 'मनुष्य का भाग्य', और 'जीवन-सागर'।

काजीमीर लेइनो[4] ने अपनी कविताओ द्वारा नये उदार विचारो का प्रकाश किया। उसके केवल तीन कविता-सग्रह और एक नाटक है। पर उनसे उसकी शैली का निखार प्रगट हो जाता है।

जोहानिज लिनान्कोस्की[5] अपनी कृतियो–'शाश्वत सघर्ष', 'लाल फूल का गीत', 'हेइकिला के लिए सघर्ष', 'भगोडे' द्वारा फिन्नी साहित्य को समृद्ध किया। इनमे से पहली दो उपन्यास है, अन्य कहानिया। एइने लेइनो[6] काजीमीर का भाई और विशिष्ट कवि था। तीस वर्ष उसने काव्य-रचना की और उस क्षेत्र मे सारे पूर्वगामी कवियो से वह बढ गया। उसकी सुन्दरतम कविताए 'हेल्गा सूक्त' है। अपनी प्रबन्ध कविताओ—'काल की लहरो से' मे उसने जनता के प्रश्न प्रतिबिंबित किए। अपने भाई की ही भाति वह कवि होने के अतिरिक्त आलोचक भी था। उसने अन्य भाषाओ की सुन्दर कृतियो का अपनी भाषा मे अनुवाद किया। उस काल के कुछ और कवि, ओटो मानिनेन[7], कोस्केनिएमी[8] आदि थे।

आधुनिक फिन्नी साहित्य के निर्माण मे अनेक नारी साहित्यकारो का खासा हाथ रहा है। माइला ताल्वियो[9], मारिया जोतुनी[10], आइनो कालास[11] ने उपन्यास और नाटक के

---

१ Juhani Aho (१८६१-१९२१), २. Aivid Jarnefelt (१८६१-१९३२), ३. Tolstoy, ४ Kasimir Leino (१८६६-१९१९); ५. Johannes Linnankoski (१८६९-१९१३), ६ Eino Leino (१८७८-१९२६), ७. Otto Manninen (ज० १८७२), ८. V A. Koskenniemi (ज० १८८५), ९ Maila Talvio (ज० १८७१), १० Maria Jotuni (१८८०-१९४३), ११. Aino Kallas (ज० १८७८)

क्षेत्र मे अपने साहित्य को अच्छी कृतिया भेट की। माइला ने सामाजिक समस्याओ पर उपन्यास और नाटक लिखकर मिन्ना कान्थ की परपरा जीवित रखी। मारिया के नाटक शैली मे सक्षिप्त है और देहात का जीवन प्रतिबिबित करते है। आइनो ने अधिकतर अपने उपन्यासो और कहानियो के पात्र 'इस्टोनिया' के समाज से चुने।

जर्मन अभिव्यजनावाद प्रेरित लौरी हार्ला[१] ने अनेक स्पष्टाकृतिक नाटक लिखे। उसका सर्वोत्कृष्ट नाटक 'जूडास' प्राय ऐतिहासिक है और अभिराम 'पाप' सर्वथा यथार्थवादी। 'पाप' मे उसने 'अभिव्यजनावाद' त्याग दिया है।

फ्रान्स एमिल सिल्लान्पा[२] आज का सुन्दरतम फिन्नी उपन्यासकार है। उसके उपन्यासो मे सामाजिक वर्गो का वर्णन है। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'जीवन और सूर्य' (१६१६) है। उसके 'शान्त दाय' (१६१६) मे फिनलैंड के गृह-युद्ध के चित्र है। उसकी 'नौकरानी' 'सिल्या' (१६३१) सरल निश्छल कुमारी के यथार्थवादी परिस्थितियो मे जीवन का वर्णन हुआ हे। उसका 'मानव-पथ' (१६३२) भी सुघड कृति है। सिलान्पा को १६३६ मे नोबुल पुरस्कार भी मिला था।

द्वितीय महासमर के बाद भी फिन्नी साहित्यकारो को कुण्ठा ने न घेरा। साहित्य-निर्माण और प्रकाशन का कार्य होना रहा। देश मे ८० प्रकाशक थे और तीन हज़ार से ऊपर पुस्तकालय। १६४५ मे प्राय एक करोड पुस्तके बिकी। भूलना न होगा कि फिनलैंड की कुल आबादी ४० लाख है जिसका १० प्रतिशत स्वीडी है। अर्थात् उस साल किताबो के बिकने का औसत १५ वर्ष से अधिक आयुवाले प्रत्येक जन पर पाच का रहा। लिरिक-कविता और उपन्यास के क्षेत्र मे काफी प्रगति हुई। १६४५ मे सिलान्पा ने स्वय अपनी सुन्दर कृति 'मानव-जीवन का सौन्दर्य और अभाग्य' लिखकर तत्कालीन जीवन का परिचय दिया। आइनो कालास, मार्या जोतुनी और माइला तल्वियो का जिक्र ऊपर किया जा चुका है। उन्होने अपनी साहित्यिक सक्रियता जारी रखी। आइनो ने 'मृत्यु का हस' और 'चन्द्रकिरण' नामक सुन्दर लिरिक लिखे। मार्या ने नाटक और माइला ने 'बाल्टिक सागर की कन्या' नामक उपन्यास लिखा। लाउरी हार्ला[३] अपनी मृत्यु के पूर्व ऐतिहासिक उपन्यासो की ओर झुका और वृद्ध कवि कोस्केनियेमी[४] ने लिरिको के कई सग्रह प्रकाशित किए।

कुछ और फिन्नी आधुनिक साहित्यकार काव्य के क्षेत्र मे लावरी विल्यानेन[५], कातृ वाला[६], साइमा हरमाजा[७] और ऊनो काइलास[८] है। हेला वुओलियोकी[९] ने कुछ सफल

---

१. Laurı Haarla (१८६०-१६४४), २. Erans Emıl Sıllanpaa (जन्म १८८८); ३ Laurı Haarla, ४ V. A. Koskennıemı, ५ Laurı Vıljanen; ६ Katrı Vala (१६०१-४४), ७. Saıma Harmaja; ८ Uuno Kaılas (१६०१-३३), ६ Hella Vuolıjokı

१८. फ्रेंच साहित्य

फ्रेंच साहित्य ससार के अत्यन्त समृद्ध साहित्यो मे से है। उसका काल-विस्तार अंग्रेजी को छोडकर प्राय सभी यूरोपीय वर्तमान साहित्यो से बडा है और उसमे केवल सख्या या परिमाण की ही बात नही, गुणत भी वह बडा प्रभावशाली रहा है। जिस प्रकार यूरोप मे एक काल तक फ्रेंच राजदरबार ने अपने आचार को उदाहरण बना दिया था, उसी प्रकार फ्रास का साहित्य भी एक लम्बे अर्से तक यूरोप के साहित्यिको के लिए प्रेरणा तथा अनुकरण की वस्तु बन गया था। मध्यकाल के आरम्भ से अद्यावधि अटूट रूप से वह साहित्य-रत्न उत्पन्न करता गया है। अनेक बार उसी साहित्य ने यूरोपीय साहित्यो के आन्दोलनो का आरम्भ किया।

, फ्रेंच साहित्य के अपने विशेष रूप का निर्माता सौन्दर्यबोध था। फ्रास की कला और साहित्य दोनो मे सौदर्य की उपासना उसी मात्रा मे हुई है जिस मात्रा मे उसकी जनता ने सौदर्य की उपासना की है। फ्रेंच जनता जीवन के अकृत्रिम रूप से असाधारण भावुक और सौदर्यापेक्षी है। जीवन का साहित्य मे उतर आना स्वाभाविक है और फिर फ्रेंच साहित्य का तो जाति से निरतर सम्बन्ध रहा है। इसका अर्थ यह नही कि और जातियो का सबध उनके साहित्य से कम रहा है। बल्कि केवल यह कि जीवन मे सौदर्य-बोध को विशेष महत्व देकर चलने वाले वे लोग सभवत भावुक और साहित्य-स्रष्टा होने के कारण अपने साहित्य मे भी उस बोध की छाया गहरे रूप से डाल सकते हैं और फ्रेंच साहित्य पर वह छाया नि सदेह बहुत गहरी पडी। फ्रेंच भाषा की मधुरता भी उस सौदर्य की सहायक है।

: १ :

मध्य युग

फ्रेंच साहित्य का वस्तुत. आरम्भ मध्य युग से होता है। उसकी पहली जानी हुई कृति ग्यारहवी सदी ईस्वी के अन्त मे प्रस्तुत 'रोला का गीत' है जिसमे फ्रास के प्राचीन वीरो के पराक्रम का छदोबद्ध वर्णन है। शार्लमान[1] का शासनकाल उसके कथानक का युग है। 'रोला का गीत' मे रोला[2] की मृत्यु, गानेलो[3] के विश्वासघात और शार्लमान के न्याय तथा प्रतिशोध की ओजस्वी कथा है। साथ ही उसमे मूरो के युद्ध और स्वदेश के प्रति फ्रासीसी सैनिको के सस्मरण स्थान-स्थान पर सुदर रीति से अभिव्यक्त हुए है। इस रचना की भावधारा और छद की गरिमा स्तुत्य है। बडी योग्यता से अनेक वीर-कथाए

---

१. Charlemagne, २ Roland, ३. Ganelon

उपन्यास धारा के प्रारम्भ होने के पहले कुछ काल तक सुन्दर गद्यबद्ध कहानियो का प्रचलन रहा जिनमे छद भी प्रचुर मात्रा मे अपनी स्वाभाविक धारा मे यत्र-तत्र प्रवाहित होता था। कथानक अधिकतर वीर नायक और नायिका के प्रणय,पर्यटन तथा असाधारण कृत्यो से अनुप्राणित होते थे। 'ओकासे और निकोलेत' उसी परपरा मे लिखी गई एक सक्षिप्त कथा है। जिसमे फ्रासीसी देहाती जीवन की भी जहा-जहा पर्याप्त झलक मिल जाती है। उस काल की रचनाओ मे 'गुलाब का रोमास' प्रख्यात हो गया है। इसके दो खड है। जिनमे पहला गिलोम द लोरी[1] ने लिखा और दूसरा जा द मन्न[2] ने। पहले भाग मे प्रणय के आदर्श चित्रित है और दूसरे मे तर्क की प्रतिष्ठा है। पुस्तक नि सदेह मध्यकाल का एक प्रबल रूपक है। इसकी काया छन्दबद्ध है। इस काव्य ने यूरोपीय साहित्य पर बडा गहरा प्रभाव डाला। 'रनार का उपन्यास' उसी परम्परा मे लिखा मध्यकालीन सस्थाओ पर समर्थ व्यग्य है। इसमे अनेक प्रकार के पशुओ को पात्र बनाकर मानव कार्यो की पैरोडी की गई है। पशु पात्रो के वक्तव्य समकालीन मानवो के कृत्यो का उपहास करते है। उसी तेरहवी सदी का छन्द मे प्रस्तुत कहानियो का सग्रह 'फाब्लियो' समकालीन मनुष्यो की कथा मानव रूप मे रूपायित करता है। उसका व्यग्य भी कुछ कम गहरा नही।

मध्यकालीन लिरिक का प्रभाव भी उसी प्रकार दरबार की भूमि से मध्यवर्गीय समाज की ओर है। काव्य का आरम्भ उत्तर और दक्षिण के पारपारिक लोक-गायनो से हुआ। परतु साहित्य की शैली मे बधकर वे शालीन बन गए। १४वी और १५वी सदियो मे कुछ काफी अच्छे लिरिक लिखे गए। उस युग का सबसे महान् कवि फ्रासुइस विलो[3] था। अपने ही जीवन की कटुताए और निर्मम कठिनाइया उसने अपने लिरिको मे सजीव कर दी। अपनी प्रसिद्ध कृति 'तैस्तामा' मे अपने झगडे, अपनी माता की प्रार्थना-उपासना, वृद्धा वेश्या का अपने सौदर्यनाश पर विलाप, पेरिस के शोहदो की अभद्र चेष्टाओ, अपनी प्रेयसी मार्गो के विलास आदि का उसने बडा सफल चित्र खीचा। इस रचना मे छदोलकार उलझे हुए है। परन्तु उसकी सादगी, हृदय पर सीधा और मार्मिक चोट करती हे।

उस काल की नाट्य-धारा दो दिशाओ मे बही, एक धर्म के क्षेत्र मे और दूसरी लौकिक चेतना के क्षेत्र मे। इनमे पहली का विकास चर्च की क्रिया-विधियो के आधार से हुआ, दूसरी का लोकाराधन की प्रवृत्तियो से। धर्म सबधी नाटक, गिर्जाघर की उपासना वेदी से उठकर पहले उसके आगन मे खडे हुए, फिर राजमार्ग पर उतर आए। १५वी सदी तक पहुचते-पहुचते उसने अपना वह विराट रूप धारण किया जिसमे गाव का गाव तो प्रदर्शन मे भाग लेता ही था स्वर्ग और नरक की कल्पना भी साकार हो उठती थी। इस

---

१. Guillaume de Lorris (Ca. १२३०), २ Jean de Meun (Ca. १२७५),
३ Francois Villon

प्रकार उसके गाव, स्वर्ग और नरक तीन भाग होते थे। उन नाटको मे कुछ तो रहस्यपूर्ण होते थे जिनके विषय बाइबिल से चुन लिए जाते थे और कुछ मतो के जीवन और उनके चमत्कारो को प्रदर्शित करते थे। आर्नूल ग्रेवा[1] का 'मिस्तैर द ला पेशन' पहले प्रकार का प्रतीक है और जा बोदेल[2] का 'ज द सा निकोला' तथा रूतबूफ[3] का 'मिराकेल द थियोफील' दूसरे प्रकार के उदाहरण है।

लौकिक ड्रामा की पृष्ठभूमि पर अधिकतर विनोदपूर्ण और समसामयिक अथवा अन्य घटनाओ का प्रदर्शन होता था और अनेक बार उसमे नैतिकता का आदर्श उपस्थित किया जाता था। हास्य उसका प्रधान रस था और चरित्रो के आचरण पर कटु व्यग्य उनका विशेष मन्तव्य। इसके सुन्दरतम उदाहरण 'रोबे मारिया', तथा 'ज दला फुइली' (ल० १२६०) है। इनमे पिछले का रचयिता आदम द ला हाल[4] है। इसी परम्परा मे ग्रेगवार[5] का 'ज दु प्रेस दे सोत' (१५१२) और 'मास्टर पाथेलिन' लिखे गए। इस अन्तिम नाटक का नायक शठ है। वस्तुत इस प्रहसन के सभी पात्र उसीकी तरह शठ है। उनके वक्तव्य ससार की नीचता पर प्रकाश डालते हुए मनोरजन और व्यंग्य का एक अद्भुत उदाहरण उपस्थित करते है।

: २ :

पुनर्जागरण काल

रेनेसा या पुनर्जागरण काल प्राय सारे यूरोप मे नई भावनाओ के साथ प्रादुर्भूत हुआ। एक नई चेतना, नया दृष्टिकोण, नई अनुभूति साहित्य और सामाजिक जीवन मे मूर्तिमती हुई। कला और साहित्य मे जो नये-नये प्रयोग हुए उनसे स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि उस नई चेतना ने एक नये युग को प्रसव किया है। पारपरिक ईसाई सकीर्ण प्रवृत्ति को इस नई चेतना ने ज़ोर का झटका दिया और राजनीति की ही भाति साहित्यिक सक्रियता ने भी एक नई दिशा मे गति की। प्रकृति के अभिराम अनायास से उपस्थित सौदर्य से मुह मोड लेने की प्रवृत्ति की चूले हिल गई और सौदर्य को उसके अकृत्रिम रूप मे अपनाने की चेष्टा सफल हुई, जीवन को भी सौदर्यसम्पन्न करने की प्रेरणा लोगो मे जगी और अतीत की कृत्रिम कुठा को सबल चुनौती मिली। ग्रीक और रोमन विचार जो सदियो से विलुप्त हो गए थे अथवा सुदूर पूर्व मे होने से पश्चिमी यूरोप के लिए अनजाने थे, अब उस नई परपरा मे प्रधान प्रतीक बन कर जागे। १४५३ मे कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर तुर्कों ने

---

१ Arnoul Greban (ca १४५२), २ Jean Bodel; ३. Rutebeuf, ४ Adam de la Halle; ५ Gringoire

जो उधर ग्रीक-अध्ययन की परपरा समाप्त कर दी तो वहां के ग्रीक और रोमन पण्डित अपने वेष्टनावृत ग्रथो को लिए दक्षिण पश्चिमी यूरोप की ओर भागे। यूरोप फिर एक बार प्राचीन ग्रीक और रोमन दर्शन साहित्यिक और कलागत मानदण्ड और मूल्याकन से प्रभावित हुआ। उस दृष्टिकोण से पहले इटली प्रभावित हुआ फिर फ्रास।

आल्प्स लाघकर पुनर्जागरण की यह लहर जब फ्रास पहुची तब उसने साहित्य और कला के सिद्धातो की एक नई व्यवस्था की। उसने परपरागत साहित्यिक सिद्धातो पर गहरा आघात किया। मध्यकाल मे भी साहित्यिक सिद्धान्त नि सदेह थे परन्तु उनका सबध शैली और अलकार मात्र के महत्वहीन उपकरणो से था। पुनर्जागरणकाल के सिद्धान्त काव्यगत विषय, रूप, परपरा, शैली, टेकनीक सभी से सबध रखते थे। अरस्तू आदि प्राचीनो के साहित्यिक सिद्धान्त दार्शनिक शालीनता प्राप्त कर चुके थे। और उनका चिन्तन-निरूपण मध्यकालीन समीक्षको की बुद्धि के परे था। शीघ्र ही नई चेतना ने प्रमाणित कर दिया कि प्राचीनो का साहित्य सबधी मूल्याकन और उनके तत्सबधी सिद्धात स्तुत्य तथा अनुकरणीय थे। निकट की 'गौथिक' परपरा से हटकर सुदूर अतीत की ग्रीक और रोमन परपरा का उन्होने अभिवादन किया और उसीको अपना आदर्श बनाकर उसका अनुकरण किया।

इसी वातावरण मे सोलहवी सदी के फ्रासीसी लिरिक काव्य का जन्म हुआ, अभिराम और शीलन। पारपरिक रूप उसके निर्जीव हो गए थे और सिवा उसके शब्द-रूप के उस काव्य के सौरभ का सर्वथा अभाव हो चुका था। न तो उसमे कायिक सौन्दर्य था, न उसमे प्रतिपाद्य विषय मे कोई वैयक्तितता थी। इस स्थिति का अपवाद कभी ही कभी दृष्टिगोचर होता था। क्लेमा मारो[१] के पत्र (१५२५) अभिराम छन्द मे इसी प्रकार के एक अपवाद की सृष्टि करते है। यह काव्य शक्तिम इसलिए बन पडा है कि यह नितान्त प्रगतिशील है, समकालीन परिस्थितियो को विस्तृत रूप से अपनी काया मे प्रतिबिंबित करता है। इसका कवि मारो असामान्य सघर्षशील है, निर्धन, कारावद्ध। निर्वासित होने के कारण और स्वदेश लौटने के लिए, बन्धन से मुक्ति के लिए, जीवन की आवश्यकताओ के लिए उसकी काव्यगत पक्तिया पुकार उठती है। स्वत अनुभूत स्थित उधार ली हुई भावना से कितनी अधिक शक्तिमती होती है, कितनी यथार्थ, इसके क्लेमा मारो के 'पत्र' असाधारण दृष्टान्त है और आगत विपत्तियो को चुनौती द्वारा झेलने की कवि की शक्ति एक अद्भुत हास्यरस का सृजन करती है। मानव जब विरोधी शक्ति की दुर्विनीत चोट का कायल हो जाता है तब वह उस चोट को अगीकार कर लेता है। वही अगीकरण उसकी हार का सबूत है और यदि वह उस चोट को हसकर निष्फल कर देता है तब उसे अगी-

---

१ Clement Marot

कार न करने की सफल प्रेरणा शत्रु की शक्ति को हास्यास्पद कर देती है। मारो अपनी विपत्तियो को हसकर हास्यास्पद कर देता है। और उसकी कृति अपनी अद्भुत ताजगी का प्रभाव पाठक पर डाले बगैर नही रहती। १५४६ ई० मे जोखेम दु बेले[१] ने फ्रेंच स्थानीय काव्य परपरा पर नये दृष्टिकोण से क्रान्तिकारी चोट की। उसके नये सिद्धान्त-निरूपण ने प्राचीन पिण्डर[२] और होरेस[३] का अनुकरण कर उनसे भी बढ जाने की चेष्टा करने वाले अभिनव फ्रेंच कवियो के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित किया।

दु बैले स्वय उस काल के नये कवियो मे अग्रणी था। वह लिरिककार था। अपना लिरिक-सग्रह 'जैतून' उसने १५४६ मे 'खेद', 'रोम का पुरातत्व', और 'देहाती खेल' उसने १५५८ मे प्रकाशित किए। उसने अधिकतर सॉनेट और ओड का उपयोग किया। उसका छन्द अधिकतर पेत्रार्च[४] के अनुकरण मे था और अपने ओड के लिए उसने होरेस को आदर्श बनाया। इस क्षेत्र का दूसरा महान, कवि रौसार[५] था जिसने अपने ३५ वर्ष के रचनाकाल मे अनेक विषयो पर कविताए लिखी और उस दिशा मे प्राय प्रत्येक प्राचीन क्लासिक कवि का सफल अनुकरण किया। उसकी मेधा वीर काव्य को छोड और सारी दिशाओ मे कृतिमती हुई। उसके अनेक लिरिक फ्रेंच साहित्य के अप्रतिम उदाहरण माने जाते हैं।

ग्रीक और रोमन परपरा से प्रेरणा ग्रहण करने वाले अभिनव कवियो का फ्रास मे एक दल ही बन गया था जो 'प्लेइयाद'[६] कहलाता था। उस दल के अनेक कवियो ने उस काल मे बडी अच्छी लिरिक रचना की। वैसे उनका प्रधान गढ तो पेरिस था पर लियो आदि नगरो मे भी उस दल के सदस्यो की कमी न थी। मौरिस सेव[७] और लुई लबे[८] लियो नगर के ही दो विख्यात कवि थे जिन्होने सॉनेट के रूप मे सुन्दर काव्य की रचना की। उनके प्रोटेस्टेन्ट वीर काव्यो के रचियताओ ने भी इसी नई प्रणाली का अनुकरण किया। मालर्ब[९] ने लिरिक रचना मे अपनी भिन्न चेतना द्वारा एक प्रकार का अवरोध उपस्थित कर दिया। उसके काव्य का रूप उन्माद से ऊपर उठकर चिन्तनशील बन गया। उसकी दो कृतिया 'कोमान्टेयर सिर देपोते' और 'कौसोलासियो द मोसिये दु पेरिये' विशेष प्रसिद्ध है। पहली मे तो उसने भाषा और छन्द के सुधार की योजना रखी और दूसरी मे उस योजना का सफल निर्वाह किया। उसके छन्द की परपरा अगले फ्रेंच छन्दो का आधार बनी।

यद्यपि दर्शन की परपरा को अनेक आलोचक साहित्य से भिन्न मानते है परन्तु शैली के रूप मे भाषा और साहित्य के विकास मे निस्सन्देह उसका योग होता है। अनेक बार तो दार्शनिक रचनाओ मे साहित्य का अद्भुत सौरभ फूट पडता है। फिर निबन्ध के रूप मे

---

१ Joachim du Bellay, २ Pindar, ३ Horace, ४ Petrarch, ५ Ronsard, ६ Pleiade, ७ Maurice Sceve ८ Louise Labe, ९ Malherbe

तो दर्शन वैसे भी साहित्य के अनेक अन्तरतम स्तरो को छू लेता है। इसी विचार से १६वी सदी के राबले,[१] काल्विन[२] और मोतेन,[३] १७वी सदी के देकार्त[४] और पस्कल,[५] १८वी सदी के अनेक दार्शनिको, १९वी सदी के रेना[६] और २०वी सदी के बर्गसो[७] की महान् साहित्यिको मे गणना हुई। इनमे राबले के सम्बन्ध मे तो सभवत किसीको आपत्ति नही हो सकती क्योकि ससार के महान् साहित्यिक निर्माताओ मे उसका स्थान है। उसके, 'गार्गन्तुआ और पाताग्रुएल' का रूप प्राय उपन्यास का है यद्यपि वह १६वी सदी मे ही लिखा गया था। उसकी कथा-सामग्री बहुत कुछ मध्यकालीन परपरा मे सास लेती है। परन्तु उसकी गति मे चिन्तन का प्रवाह है। उस तथाकथित उपन्यास मे उस काल के सारे विचारो, आदर्शो, परपराओ और विद्रोहो का निरूपण है। उसमे अत्यन्त सुरुचि और सफल हास्य का निर्वाह हुआ है। पुनर्जागरण के सदाचरण के आदर्श के रूप मे सभवत इससे सुन्दर दूसरी कृति उद्धृत नही की जा सकती। मिशैल द मोतेन ने १६वी सदी को ऋद्ध निबन्ध भेट किए जिनमे लेखक स्वय प्रतिपाद्य विषय बन गया। निस्सन्देह शैली लेखक की अहम्भावना की द्योतक न थी वरन् इस विचार को लेकर चली थी कि वह स्वय अपने समय का प्रतिनिधि है और जो वह अपने विषय मे लिखता है वह समाज के सम्बन्ध मे सत्य है। उसके निबन्ध शुद्ध है और आत्मपरक होने के कारण एक आत्मीयता लिए हुए है।

सुधारवादी आदोलन ने ईसाई धर्मानुयायिओ को भी दो भागो मे विभक्त कर दिया था। परिणामत कैथोलिको और प्रोटेस्टैन्टो मे विचार-सघर्ष अनिवार्य हो गया। फ्रास मे प्रसिद्ध प्रोटेस्टैन्ट सिद्धान्तवादी काल्विन साहित्यिक गद्य की एक विशिष्ट शैली का प्रवर्तक हुआ। १५४१ ई० मे, 'ईसाई धर्म की सस्थाए' प्रकाशित कर काल्विन ने फ्रेंच गद्य-शैली को एक नवीन प्रवाह और शक्ति प्रदान की। शैली नितात सक्षिप्त थी और उसमे कम से कम शब्दो का अधिक से अधिक अर्थ मे प्रयोग किया गया है। इस दिशा मे वह राबले तथा मातेन का जवाब बन गया।

नाटक के क्षेत्र मे ग्रीक ट्रैजेडी और कॉमेडी का विशेष अनुकरण हुआ। कथावस्तु चाहे जो हो, नाम निश्चय ही ग्रीक और लैटिन ही लिए जाते थे। यद्यपि यह प्रयास 'क्लासिकल' साहित्य के रूप मात्र का अनुकरण कर सका। उसकी शालीनता नए अनुकरणो की सीमाओ मे न समा सकी। ट्रैजेडी नितान्त विषादपूर्ण होने लगी पर उसमे नाटकीयता का प्राय अभाव हो गया। कॉमेडी मे भी असाधारण की जो प्रचुरता हुई उससे वस्तुस्थिति जीवन से भिन्न और कृत्रिम हो उठी। मध्यकाल मे जिस

१. Rabelais, २ Calvin, ३ Montaigne, ४ Descarste, ५ Pascal, ६ Renan; ७. Bergson

कथा-परपरा का आविर्भाव हुआ था वह भी अपेक्षाकृत कमजोर पड गई। हा, 'हैप्ता-मेरन' १५५८ मे निस्सन्देह मार्गरीत द नवार[1] ने कथा शैली को एक नई गति और स्फूर्ति प्रदान की यद्यपि उसकी वह कृति इटली के कथाकार बोकाचो[2] के 'देकामेरन' के अनुकरण मे प्रस्तुत हुई। फिर भी इसमे सदेह नही कि मार्गरीत बोकाचो की सरल शक्ति का निर्वाह अपनी रचना मे न कर सकी। उसी काल प्लूतार्च के जीवनचरितो का शुद्ध फ्रेंच शैली मे अनुवाद कर आम्यो[3] ने साहित्य का भण्डार भरा।

: ३ :

सत्रहवीं सदी

सोलहवी सदी के फ्रास मे जो 'प्लेइयाद' के सदस्यो ने ग्रीक और लैटिन मॉडलो के अनुकरण मे साहित्य-रचना प्रारम्भ की थी उसमे अनूठापन तो निस्सन्देह था परतु सफलता की मात्रा कम थी। विशेषकर प्रबन्धकाव्यो और नाटको मे उनके आदर्श मॉडलो का स्तर उनकी अपनी कृतियो के स्तर से नितान्त ऊचा था। उसे वे अपनी रचनाओ मे न उतार सके। यह कार्य सत्रहवी सदी मे सम्पन्न हुआ यद्यपि कार्य साधारण था नही। पहले तो भाषा को ही उन आदर्श कृतियो का वाहन बनाना था। भाषा मे आवश्यक परिवर्तन हो चुकने पर ही क्लासिकल विचारो, प्रकृतियो और आदर्शों का मूर्तन हो सकना सम्भव था। इस उद्देश्य की सफलता मे दो घटनाए बडी सहायक हुई। एक तो १६३४ मे 'फ्रेंच एकेडमी' की स्थापना और दूसरी चौदहवें लुई[4] का राज्यारोहण। फ्रेंच एकेडमी की स्थापना ने पुनर्जागरण के आन्दोलन को प्राय सरकारी और राष्ट्रीय बनाकर उसे स्थायित्व प्रदान किया। भाषा, साहित्य और उनमे रची जाने वाली कृतियो को उसके अधिकारी सदस्यो ने निश्चित किया। साथ ही अपने कृतित्व से फ्रास के सफलतम साहित्यिको ने उसमे आदर्श भी उपस्थित किया। चौदहवे लुई के राज्यारोहण ने देश को एकता प्रदान की जिससे भाषा की एकता उत्पन्न होने मे भी बडी सहायता मिली। लुई का दरबार अपनी शालीनता के लिए इतिहास मे प्रसिद्ध हो गया है। वह शालीनता केवल दरबारी तडक-भडक तक ही सीमित न थी वरन् उसमे मेधा और प्रतिभा का भी प्रभूत योग था। लुई का दरबार फ्रेंच एकेडमी का ही एक दूसरा सस्करण बन गया था और फ्रेंच एकेडमी के अनेक जाज्वल्यमान नक्षत्र स्वय उस सूर्य के चतुर्दिक् भी घूमते थे। इतना ही नही, दोनो की स्थिति मे एक अन्तर भी था जो दरबार के साहित्यिको के पक्ष मे था। वह था अपनी कृतियो के कथानक के लिए तत्काल और समसामयिक कथानक प्राप्त कर लेना। साथ ही उन्हे अपने स्थायी भावो को प्राणमय

---

१. Marguerite de Navarre, २. Boccaccio, ३. Amyot, ४. Louis XIV

बनाने के लिए विभाव भी वहा पर्याप्त मिल जाते थे। वर्साई के महलो मे नन्दन को भी लज्जित करने वाले प्रमदा-वन थे और उनके निकुज कामुको की प्रवृत्ति का निरन्तर उद्दीपन करते रहते थे। राजा स्वय कामुक था जो असख्य ऐसे सामन्तो से घिरा रहता जिन्हे अपनी प्रजा से, सिवा उसके कुचलकर लगान वसूल करने के, और कोई सम्पर्क न था। जो सदा लुई के विलास के साधनो को सजीव करते रहते थे और स्वय भी उसी वातावरण मे जीते थे। कामियो और मुग्धाओ की कमी वर्साई के उस कृत्रिम वनप्रान्तर मे न थी और दरबार के साहित्यिको के लिए वातावरण नितान्त अनुकूल पडता था। यूरोप के अन्य देशो मे ग्रीक अथवा रोमन जीवन के आदर्शो, विशेषकर सामाजिक रोमाटिक प्रवृत्ति को लेकर चलने वाले साहित्यिको को जहा दूर की प्राचीन परिस्थितियो की कल्पना मात्र करके साध्य सभालना पडता था वहा लुई के दरबार के प्रतिभाशील साहित्यकारो के सामने जैसे एथेन्स और रोम वर्साई मे ही मूर्तिमान हो उठे थे। लुई स्वय सुरुचि का अवतार था और उसके सरक्षित कलाकारो को भी सुरुचि का अपनी कृतियो मे विशेष निर्वाह करना पडा। फिर लुई की चुहलबाजी भी कुछ ऐसी ही थी कि उसके समकालीन कृतिकारो को अपनी कृतियो मे छाया के स्थान पर धूप का, चकाचौध का अपेक्षाकृत अधिक उपयोग करना पडा।

इस दिशा मे सत्रहवी सदी के फ्रास के साहित्यकारो मे पहला कदम पियर कार्नेल[१] ने लिया। पहले तो उसने कॉमेडी लिखकर नाम कमाया। फिर सहसा अपनी ट्रैजेडी-कॉमेडी मिश्रित कृति-सी लिखकर उसने पेरिस और वर्साई दोनो को चमत्कृत कर दिया। उसकी यह कृति १६३६ मे प्रकाशित हुई। चार वर्ष बाद उसने 'होरेस और चिना' १६४० तथा 'पौलियक्त' १६४२ लिखकर दर्शको को आश्चर्य मे डाल दिया। तत्कालीन लडाको का जीवन मे आदर्श था—रोमाचक परिस्थितियो मे अपने कर्तव्य-पालन का निर्वाह। वह कर्तव्य चाहे राजा की सेवा मे हो चाहे सुन्दरियो की। दोनो के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जीवन को खतरे मे डाल देने अथवा बलिदान तक कर देने का सकल्प उस युग का आदर्श था। और उसे मूर्त करने मे कार्नेल की प्रतिभा बडी सफल हुई। उसने अपने नायको और नायिकाओ को उसी वातावरण मे सिरजा। समाज के सामतो, अग्रणियो को नित्य के प्रयोग के लिए भाव-सकुल शालीन वाक्य-परपरा चाहिए थी और यह वाक्य-परपरा बहुत कुछ कृत्रिम होती हुई भी प्रयोग-बाहुल्य के कारण सहज और स्वाभाविक हो गई थी। उस परपरा को स्वर और वहनीय बोझ देकर कार्नेल अपने समकालीनो का उपास्य बन गया। फिर भी कार्नेल 'क्लासिकल' आदर्श की दिशा मे इच्छित मजिल तक न पहुच सका। उसके नाटको मे उसके आदर्शों की अपेक्षा गति की कमी थी। कथानक मे आत्मा जैसे खो जाती

१ Pierre Corneille

थी और जीवन की सघर्षशील भावनाओ का उनमे अभाव हो जाता था। कथावस्तु के पेच, भावो की विविधता और शैली की शालीनता उनमे एकत्र रूपायित न हो सकी।

कार्नेल की यह कमी रेसाइन[1] ने पूरी की। जा रेसाइन के अनेक ट्रैजेडी नाटक ऐसे है जिनको पूर्ण की सज्ञा दी गई है। १६६७ और ७७ के बीच उसने सात गजब के नाटक रचे। 'आद्रोमाक' और 'फ्रैद्र' तो प्राय सर्वथा बेजोड थे। इनके अतिरिक्त उसने दो बाइबिल सम्बन्धी नाटक 'एस्थ' और 'अथाली' लिखे। रेसाइन की इस सफलता का एक विशेष कारण था। उसने रोमन के बजाय सूक्ष्म ग्रीक आदर्शो को अपना मॉडल बनाया। सुरुचि तो उसे अपने युग ने ही दी परन्तु भावो का आवेग और कवित्व की प्रतिभा उसकी अपनी थी, सर्वथा वैयक्तिक। फिर जब उसने सुरुचि के साथ अपनी मेधा के योग से ग्रीक आदर्शों को स्थापित किया तब उसकी सफलता मानो सहज हो गई। तीनो का एकत्र योग सजीव और सफल नाट्याकन का कारण बना। कथानक अत्यन्त सहज स्थिति से उठता है। फिर धीरे-धीरे वह उलझने और गुजलक भरने लगता है। फिर तो उस उलझन मे मनोवैज्ञानिक चेष्टाओ के घात-प्रतिघात शुरू हो जाते है। उदाहरणतः 'फ्रैद्र' पत्नी है परन्तु उसे प्रेम हो गया है। फिर वह अपने पति के प्रति अपना उत्तरदायित्व सहज ही निभाना चाहती है। उस दिशा मे वह प्रयत्नशील भी है और अपनी आचार-गुरुता का दर्शको पर प्रभाव डाले बिना नही रहती। वह अपने अपराध से स्वय अत्यन्त भयान्वित हो उठती है। उसका हृदय इस ईमानदार चेतना के कारण मथ उठता है और वह दुख, ईर्ष्या और प्रणय का शिकार हो जाती है। इस प्रकार उसके प्रणय की अकेली भावना मे अनेक स्थितिया विकार उत्पन्न करती जाती है और कथानक मे पेच पर पेच पडता जाता है।

कार्नेल और रेसाइन ने तो सुरुचि और शालीनता का फ्रेंच रगमच पर विकास किया, परन्तु उस काल के लिए इतना ही पर्याप्त न था। सुरुचि आखिर जनसाधारण की स्वाभाविक प्रकृति इतनी न थी जितनी लुई के दरबार के कृत्रिम और सयत पार्षदो की। जनसाधारण को कथागत गौरव तथा सुरुचि से परहेज न था परन्तु उसे इनके अतिरिक्त कुछ और भी चाहिए था। अकृत्रिम मुक्त हास्य। वह फ्रास की जनता को उसके प्रिय नाटककार मौलिए[2] ने दिया। मौलिए रगमच का जादूगर था। भाषा, भाव, और पात्र जैसे सिरजी हुई परिस्थितियो मे स्वाभाविक ही गतिमान हो उठते है। और उनका एक-एक स्फुरण दर्शको के मुक्त और प्रतिध्वनित हास्य का कारण होता है। मौलिए सहज ही लोकप्रिय हो गया। फ्रेंच जनता कुछ स्वभाव से भी दूसरी जातियो की अपेक्षा अपने कृतिकारो का विशेष मान करती है। फिर मौलिए के पक्ष मे तो उसकी असाधारण प्रतिभा भी थी। इस सबध मे एक कथा प्रचलित है। कोई फ्रासीसी शेक्सपियर पढ रहा था। किसी अग्रेज ने अभिमान-

---

१ Jean Racine; २. Moliere

पूर्वक कहा—'अच्छा, हमारा शेक्सपियर पढ रहे हो।' उत्तर मिला—'हा, तुम्हारा शेक्सपियर ही, यह देखने के लिए कि वह हमारे मौलिए की अपेक्षा कितना नगण्य है!'

मौलिए ने सत्रहवी सदी के प्राय मध्य मे लिखना शुरू किया परन्तु उसकी महान् रचनाए—'तारतिफ', 'दो जुआ', 'ला मिजा थ्रौप', 'लै फाम सावात'—रेसाइन की कृतियो की ही समकालीन थी। यह बात विशेष ध्यान देने की है कि जहा कार्नेल और रेसाइन, कम से कम रेसाइन, के सामने उनके क्षेत्र मे सफल-असफल प्रयत्न के रूप मे कुछ मॉडल उपलब्ध थे, मौलिए अपना मॉडल आप था। साधारण से साधारण विनोदात्मक परिस्थिति अथवा हास्य से लेकर सूक्ष्म से सूक्ष्म व्यग्यात्मक चरित्राक्षेप तक सब कुछ मौलिए ने अपने आप ही सिरजा। उसकी अपनी ही रचनाओ मे उसके साहित्य का समूचा विकास हुआ। उसने पथ-प्रदर्शन के लिए किसीकी ओर न देखा और देखने पर भी उसका मिल सकना सभव न था। हास्य की परिस्थितिया वह सहज जीवन से जैसे चुन लेता था। समाज की स्वार्थपरकता, वचकता, कामुकता, हास्यास्पद चेष्टाए उसकी लेखनी की नोक से जैसे टपकती जाती थी और उनके साधन से परिस्थितियो को मूर्त कर हाल को दर्शको के हास्य की सहज प्रतिध्वनियो से गुजा देता था। नाटक के क्षेत्र मे मौलिए का वही स्थान है जो चित्रलेखन की दिशा मे व्यग्यचित्रकार का। कार्टून बनाने वाला रेखाढ्य कलावत जैसे अपने आलेख्य को उसकी आकृति के अवयव विशेष को असाधारण खीचकर उसको रूपायित कर देता है और अपने इस प्रयास मे उसके अन्य अगो को नगण्य अथवा नितान्त छोटा बना देता है—उसी प्रकार मौलिए पापी अथवा अपराधी पात्र की कमज़ोरियो मे से केवल एक को चुनकर उसे जाल की तरह तेजी के साथ बुनने लगता है, परिस्थितियो का योग और उनके प्रति उसके पात्र की प्रतिक्रिया उसकी उस अपराध-चेतना को बृहदाकार कर देती है। परिणामत वह हास्यास्पद हो उठता है।

सत्रहवी सदी के फ्रास मे नाटक-साहित्य ने तो असाधारण प्रगति की ही, उस काल गद्य-रचनाओ को भी फ्रेंच प्रतिभा का अपूर्व दान मिला। मौलिए के समकालीन साहित्यकार समर्थ जा द ला फौतेन[१] ने कथा-साहित्य मे युगान्तर उपस्थित कर दिया। १६६८ और ९४ के बीच उसने बारह खण्डो मे ऐसी काल्पनिक कथाए लिखी जिनकी समता कोई आधुनिक साहित्य नही कर सकता। ला फौतेन के कथा-साहित्य का अनुवाद अनेक यूरोपीय भाषाओ मे हुआ और विदेशो के बढते हुए साहित्य ने कथाओ की दिशा मे उसी साहित्य का दामन पकडा। ला फौतेन पशु-पक्षियो की कथा तो लिखता है। परतु उसकी सेटिंग, उसका प्रसार और प्रवाह सब कुछ नाटकीय होता है। उसमे चरित्रो का विकास, परिस्थितियो की पारस्परिक प्रतिक्रिया, शक्तिम डायलॉग और गति प्रभूत होती है। अन्त मे स्थिति नुकीली

१ Jean de la Fontaine

होकर उपदेश के रूप मे जैसे टपक पडती है। ला फौतेन की नीति-कथाए वस्तुत शैली, सूक्ष्मता और प्रतिभा की आकर है।

उस युग ने अपने साहित्य मे एक असाधारण प्रतिभा के व्यग्यकार को भी जन्म दिया। वह था मौलिए, रेसाइन और ला फौतेन का समान मित्र निकोला ब्वालो[1]। वह गजब का व्यग्यकार और नीति-पद्यकार था। मजाक उडाने की उसकी प्रतिभा इतनी चुटकीली थी कि कम से कम शब्दो मे वह स्थिति और पात्र दोनो पर गहरा प्रहार कर सकता था। उसके विचारो और साहित्यिक प्रहारो का प्रभाव अगली सदी तक बराबर लोगो पर पडता रहा। १६७४ मे लिखे ब्वालो के 'आरपोएतिक', ने रेनेसा (पुनर्जागरण) के मूल सिद्धान्तो और आदर्शों का फ्रेंच मे पहली बार दार्शनिक रूप से प्रकाश किया। १८वी सदी मे साहित्य के क्षेत्र मे जो मनुष्य के व्यापक शाश्वत स्वरूप पर जोर दिया गया, कला के नियमो का अनिवार्यत पालन हुआ और बौद्धिक न्याय के ऊपर सुरुचि को प्रमाण माना गया, वह सारा इस ब्वालो की लेखनी का ही परिणाम था। साहित्य मे इन विचारो की सत्ता समकालीन दर्शन के कारण हुई और उस दर्शन का मूल निर्माता अकेला ब्वालो था। ब्वालो चितन की दिशा मे उस काल का अरस्तू था और उसीकी भाति दर्शन तथा साहित्य के सिद्धान्तो को दार्शनिक रूप से उसने तर्कबद्ध किया। फ्रेंच साहित्य मे सन्तुलन-समीक्षा-शास्त्र का पहला प्रणेता ब्वालो ही था।

नाटक और नाट्यगत काव्य की महत्ता १७वी सदी की अपनी चीज थी ही, उस सदी मे कथा की साधारण स्थिति से उठकर उपन्यास की परपरा भी आकार धारण कर चली। द उर्फ[2] और स्कदेरी[3] ने सदी के आरम्भ मे ही उपन्यास-धारा का स्रोत उद्घाटित कर दिया। हा, उपन्यास का स्वरूप अभी घटना-बहुल ही था और परिणामत: दीर्घकाय, यद्यपि चरित्रो के निर्माण और चित्रण से उपन्यासकार सर्वथा उदासीन न थे। परन्तु शीघ्र ही उस दिशा मे भी विशेष प्रगति हुई। घटनाओ को परिस्थितियो के अनुकूल कर, अनावश्यक घटनाओ को काट-छाट उसकी आकार चेष्टा युक्तिसगत कर ली गई। उस दिशा मे, मादाम द लाफायेत[4] ने अपने उपन्यास 'प्रेसेस द वलीव' (१६७८) मे बहुत कुछ वही सफलता प्राप्त की जो रेसाइन ने अपने नाटको मे की थी। यह उपन्यास निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता किसका है परन्तु साधारणत यह मादाम लाफायेत की ही कृति माना जाता है।

लुई चौदहवे की ही साहित्यिक परपरा मे बोसे[5] भी था। उसने धर्म को एक फैशन बना दिया। उसके करुण प्रवचनो मे उच्चकोटि की नाटकीयता होती थी और उसकी भाषा का प्रवाह तथा उसकी साहित्यिक प्रतिभा उन्हे प्रथम श्रेणी की साहित्यिक कृति का पद

---

१ Nicolas Boileau, २. D'urfe, ३. Scudery, ४. Mme de Lafayette, ५. Bossue

प्रदान करते थे। उसकी गद्य की यह विशेषता ला ब्रियेर[1] के गद्य मे भी मिलती है। ला ब्रियेर ने अत्यन्त सक्षिप्त परन्तु पैनी नोक से सजी गद्य-शैली का अपने 'कारक्तेर'(१६८८) मे उपयोग किया। उसमे समकालीन महानुभावो पर गहरी चोट की गई है। उस कार्य मे साहित्यकार की चुस्ती अद्भुत स्फूर्ति धारण कर लेती है। गद्य के इस चुटकीलेपन का दूसरा आचार्य ला रोशफूको[2] था जिसने उस दिशा मे प्राय एकसूत्र-शैली का प्रयोग किया। उसके 'माक्सिम' (१६६४-६५) १७वी सदी के फ्रेंच गद्य की असाधारण शक्ति का परिचय देते है। उनमे गजब की स्पष्टता और व्यग्य-बाहुल्य है। मदाम द सैविने[3] ने अपने गद्य मे एक आत्मीयतापरक शैली का उद्घाटन किया। उसकी पुत्री और मित्रो को लिखे उसके पत्र उस शैली के माध्यम है जिनकी शक्ति और गहराई साधारण स्थिति मे भी असाधारण प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उस काल मे सिमो[4] ने फ्रेंच मे अत्यन्त सुन्दर और मधुर सस्मरण लिखे। यह याद रखने की बात है कि उस काल का फ्रेंच साहित्य सस्मरणो से भरा था जिसकी शैलीपरक ऊचाई एकात-सिद्ध थी। परन्तु सेट-सिमो उस दिशा मे अनुपम प्रमाणित हुआ। उसकी भाषा और भावो के व्यग्य शक्तिम होते थे और लुई के दरबारियो को पास से देख सकने के कारण वह अपनी कृति को यथार्थत सच्चा और चुटीला बना सकता था।

परन्तु १७वी सदी के सबसे महत्वपूर्ण गद्य देकार्त्त[5] और पस्कल[6] ने लिखे। देकार्त्त और पस्कल दोनो फ्रास के प्रसिद्ध दार्शनिक हो गए है और देकार्त्त तो दर्शन के इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उसका कपाल आज भी 'लोम्म' नामक पेरिस के नये नृशास्त्र-सग्रहालय मे सुरक्षित है। यहा उसकी दार्शनिक विवेचना का उल्लेख न कर केवल उसकी गद्य शैली की ओर सकेत करेगे। उस दशा मे इतना कहना पर्याप्त होगा कि देकार्त्त के ग्रथ 'पद्धति पर विचार' से प्रकट होता है कि फ्रेंच भाषा किस बौद्धिक स्तर तक पहुच चुकी थी और किस प्रभूत मात्रा मे दार्शनिक सूक्ष्मता का यह वाहन बन सकती थी। कहना न होगा कि देकार्त्त ने भी सूत्र-पद्धति को ही अपने विचारों के प्रकाशन के लिए चुना यद्यपि उसकी धारावाहिक सरणि गति और व्याख्या के रूप मे एक मजिल उपस्थित करती है। ब्लेज पस्कल मेधावी वैज्ञानिक था, फिजिक्स का पडित और गणितज्ञ। उसके पत्र असाधारण गतिमान और विनोद-बहुल है। उनमे उनकी भाषा की ताजगी आज भी पाठको को निहाल कर देती है। जीवन के अतिम चरण मे पस्कल 'मिस्टिक' हो गया था। उसकी दार्शनिक और विज्ञानवादिनी शैली भी सक्षिप्त और स्पष्ट है। वस्तुत उसने उस काल के गद्य-लेखको के सामने साहित्य मे एक मॉडल उपस्थित कर दिया।

---

१. La Bruyere, २. La Rochefoucauld, ३ Mme de Sevigne, ४. Saint Simon, ५ Descartes, ६ Blaise Pascal

: ४ :

अट्ठारहवीं सदी

साहित्य-निर्माण के परिमाण मे अट्ठारहवी सदी भी कुछ कम महत्व की न थी। देकार्त्त की पद्धति ने उस सदी के विचारको को काफी प्रभावित किया। १८वी सदी बुद्धि-वादी थी और चर्च, ईश्वर, राज्य, अर्थशास्त्र, आचार-शास्त्र, दर्शन, विज्ञान सब पर अप-रिमित साहित्य उस काल प्रस्तुत हुआ। वस्तुत उसने समाज को न केवल विचारने को वरन् गतिमान होने को बाध्य किया। उसका परिणाम हुआ अतत १७८९ई०की फ्रासीसी राज्य-क्राति। उस क्राति के कारणो मे से एक प्रधान कारण १८वी सदी के चितको का विचार-प्रकाशन था। परपरा के विरुद्ध विज्ञान के आगमन ने उगली उठाई और कोई युक्ति-विरहित विचार केवल परपरागत होने के कारण लोगो को स्वीकार्य न था। इस दिशा मे इग्लैड के चिंतको ने भी फ्रेच विचारको पर कुछ कम प्रभाव न डाला। बेकन[१], न्यूटन[२], लॉक[३], सभी ने अपने-अपने विचारो से सचेत फ्रेच चितको को प्रभावित किया।

देकार्त्त और पस्कल ने धर्म की रक्षा के लिए दर्शन प्रयोग किया था। १८वी सदी के तर्क ने उस धर्म पर मरणातक चोटे की। पहली चोट पियर बैल[४] ने अपने 'ऐतिहासिक और आलोचनात्मक कोष' (१६९७) द्वारा की। ग्रथ विविध विषयो से भरा असाधारण ज्ञान-कोष था जिसमे बाइबिल, चर्च-पिताओ के उपदेश और ईसाई धर्म के मूल सिद्धातो पर गहरे तथा तर्कयुक्त सदेह उपस्थित किये गए थे। युक्तिपूर्ण ऐतिहासिक विश्लेषण द्वारा उसने उनकी असत्यता सिद्ध कर दी। साधारणतया उस सदी के दार्शनिक अनीश्वरवादी न थे इस काल के चितको ने इस बात को समझा कि चर्च सभी प्रकार की रूढिवादिता का गढ है। और उसे तोडे बिना फ्रेच समाज और जीवन मे आवश्यक परिवर्तन नही किए जा सकते थे। उनमे पैम्फलेटो, निबधो और गद्य तथा पद्य द्वारा वोल्तेयर[५] का आक्रमण सबसे अधिक भीषण था। उसने चर्च के विरोध मे अनेक निबध लिखे और प्रत्येक निबंध के अंत मे वह लिखता—'इस घृणिततम वस्तु को कुचल डालो!' चर्च के प्रति उसकी घृणा इतनी घनी थी कि वह उसका नाम भी न ले सकता था। वोल्तेयर के विचार कुछ अपने ही न थे वरन् युग और समकालीन चितको की प्रेरणा का प्रतिनिधित्व भी करते थे। परतु उसका उत्कट व्यग्य, नुकीली शैली, अनवरत धिक्कार, भाषा का अविरल शक्तिम प्रवाह इतने अपने थे कि वह रूढियो पर तत्सामयिक प्रहार की एकात हरावल बन गया।

ईश्वरवादिता, ईसाई आचार-शृखला, परपरा की अतर्क्य शक्ति, प्राकृतिक कानून, सबकी आधारशिला हिल गई जब वोल्तेयर ने अपने लेखो और व्यग्य कविताओ, प्राकृतिक

---

१. Bacon, २. Newton, ३. Locke, ४ Pierre Bayle, ५ Voltaire

कानून पर कविता, तथा रूसो[1] ने अपने 'विचारो' (१७५०-१७५५) और 'एमिल' (१७६२) द्वारा सबल आघात किया। दोनो ने अपनी कृतियो मे अपने नये विचारो और आचारों की शिला रखी। दिदरो[2] की कृतिया भी उस दिशा मे, उस सहार और निर्माण-कार्य मे, किसीसे पीछे न रही। अनेक फ्रेच पर्यटको ने अपने भ्रमण-क्रम मे देखी-सुनी प्रगतिशील भावनाए चुस्त और धारावाहिक फ्रेच मे व्यक्त करना आरभ कर दिया जिससे साहित्य को बडा बल मिला। उन्होने विदेशी राजनीति के सामने फ्रेच राजनीति का भी सागोपाग विश्लेषण किया और प्रथम राजनीति की राजसत्तात्मक प्रवृत्तियो पर प्रबल प्रहार किया। इस दिशा मे दो ग्रथ बडे महत्व के प्रस्तुत हुए—एक तो मातेस्क[3] का 'कानूनो की आत्मा' (१७४८) और दूसरा रूसो का 'सामाजिक राजीनामा' (१७६२) था। मातेस्क ने सरकारो के विविध प्रकारो पर विचार किया और रूसो ने समाज के आचारस्वरूप सामाजिक राजीनामे पर। यह सामाजिक राजीनामा कुछ काल से समाज के निर्माण के सबध मे एक दार्शनिक सिद्धात के रूप मे प्रयुक्त होता था। रूसो ने होब्स और लॉक के विचारो को काटते हुए मानव-प्रवृत्ति को सर्वथा सुन्दर और समाज का प्रारम्भ जनता की प्रेरणा मे माना। जनता को उस दिशा मे उसने सर्वशक्तिमान और उसके अनुशासन को अनुल्लघनीय घोषित किया। उसके विचारो का उपयोग स्वाधीनता-युद्ध के बाद अमेरिका ने अपने सविधान मे किया और एक दशाब्दि बाद फ्रास मे ही फ्रेच राज्यक्राति ने अपनी विचारधारा मे किया।

१८वी सदी प्रभूत वैज्ञानिक सक्रियता की भी थी। प्रयोगशालाओ, व्याख्यानो और तर्कसगत वाद-विवादो की विशेषकर तब के फ्रास मे धूम मच गई थी। साहित्य के दृष्टिकोण से भी कुछ प्रकाशन तब बडे महत्व के हुए। इन प्रकाशनो मे अत्यन्त दूरगामी और महान् 'विश्वकोष' (१७५१-७१) था। इसके प्रधान सपादक दिदरो और जा ल रौ देलाबर[4] थे। उनके अतिरिक्त उस विश्वकोष की काया सिरजने मे देश के प्रमुख मेधावियो का भी हाथ था। उसमे विज्ञान की खोजो से प्रभावित सब प्रकार के प्रगतिशील विचार प्रस्तुत हुए। इसी प्रकार बिफो[5] ने अपने 'प्राकृतिक इतिहास' (१७४९-८८) की प्रौढ शैली मे जीव-विकास पर अद्भुत और गभीर विचार प्रकट किए। विज्ञान के अनेक क्षेत्रो मे बिफो का यह ग्रन्थ आधार-शिला बन गया। उस काल का वैसे सबसे महान् विज्ञान का दार्शनिक डेनी-दिदरो था जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। अपने 'प्रकृति की व्यवस्था पर विचार' (१७५४) और 'द लाबर का स्वप्न' (१७६९) मे उस मनीषी ने विकास के सिद्धान्त की ओर सकेत कर दिया। वह सिद्धान्त वैज्ञानिक रूप मे तो कुछ काल बाद आया, परतु

---

१ Rousseau, २ Diderot, ३. Montesquieu, ४ Jean Le Rond Dalembert (१७१७-८३), ५ Buffon

उसकी मूलभूत कडिया दिदरो ने ही गढकर रख दी। जीवन का अनादि प्रवाह और उसमे निरन्तर परिस्थितियो के अनुकूल, बदले हुए नये ससार के निर्माण के स्वप्न देखने वालो मे महान् ऊपर गिनाए दार्शनिक थे। वोल्तेयर उस नव निर्माण के देवता का तपोनिष्ठ पुजारी था और तत्सम्बन्धी साहित्य का असाधारण प्रकाशक। उसके हजारो पत्र, सैकडो पैम्फलेट, बीसियो कहानिया-कविताए और व्याख्यान उसके मानवतावाद को प्रकट करते है। ऊपर कहा जा चुका है कि उसके अस्त्र उसकी सबल शैली और उसके सहारक व्यग्य थे। जिस युद्ध का उसने प्रारम्भ किया था वह आज प्राय जीता जा चुका है। फिर भी उसकी कृतिया आज भी उतनी ही ताज़गी रखती है कि जितनी वह तब थी। रूसो, वोल्तेयर के विपरीत एक दूसरी ही प्रकृति का व्यक्ति था। गभीर, भावुक, विनोदविरहित। वैयक्तिक चेतना का वह प्रबल पक्षपाती था और उसकी शैली मे गजब का प्रवाह, असाधारण माधुर्य था। गद्य ऐसा लिखता था जैसे छदोबद्ध पद्य अविरल अटूट रूप से बह चला हो। विचारो की शृखला दार्शनिक की भाति नही, प्रौढ प्रेरक साहित्यिक की भाति मर्म को छू लेती थी। और पढने वाला कुछ कर गुजरने के लिए तत्पर हो उठता था। उसकी साहित्यिक प्रतिभा विशेषत उसके 'सस्मरणो' (१७८१-८८) और 'एकान्त पथिक के स्वप्न' मे खुल पडी है। मौतेस्क मे भी गद्य की सुरुचि विशेषकर उसके 'फारसी पत्रो' (१७२१) मे—रीढ की तरह व्याप्त है। जहा वह कहानीकार और सरल गद्यकार के रूप मे प्रकट होता है वहा वह निश्चयपूर्वक असाधारण तेजवान सिद्ध होता है। लेखक प्राय. अपने विचार-प्रकाशन के लिए साहित्य के विविध रूपो को उनका वाहन बनाते थे। इस अर्थ वोल्तेयर ने कहानी को अपना माध्यम बनाया, रूसो ने उपन्यास को, दिदरो ने नाटक को। निस्सन्देह उनकी सक्रियता उद्देश्यपरक थी।

परतु जो साहित्य को साधना के रूप से साधक की निष्ठा से सिरजते थे वे इनसे भिन्न थे। उनका सक्षिप्त परिचय दिया जाएगा। 'उपन्यास' सदी की बढती हुई दशाब्दियो मे विशेष प्रौढ रूप धारण करने लगा। सदी की बौद्धिक चेतना का प्रभाव भी उसपर पडे बिना न रह सका और परिणामतः सामाजिक उपन्यासो की अभिसृष्टि होने लगी। अब उपन्यासो के कथानक जन-साधारण के जीवन से चुने जाने लगे। लसाज[1] का 'गिल ब्ला' (१७१५-३५) मारिवो[2] के 'मारियान' (१७३१-४१) और 'पैस पार्वनी' (१७३५-३६) इसी दृष्टिकोण के नमूने है। निस्सन्देह उनपर स्पेनी साहित्य का प्रभाव पडा है। परतु फ्रेच जीवन और आचार उनके प्राण है। इनमे पहला उपन्यासकार सामाजिक आचारों पर व्यग्य करता है और दूसरा भावो का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण। उस काल का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास अबे प्रेवोस[3] का 'मानो लैस्को' (१७३१) था जिसने मारिवो की परम्परा

---

१. Lesage ; २. Marivaux; ३. Abbe Prevost

मे मनोविज्ञान का चित्रण किया। उसकी शैली सुरुचिपूर्ण और भाषा नितात प्राजल है। कहानी एक विचारवान पुरुष और एक आचारहीन नारी की है। नाटक के क्षेत्र मे वोल्तेयर ने कार्नेल और रेसाइन से बहुत कुछ सीखा परतु अपनी नई चेतना से उसने एक नई दिशा की ओर कदम लिया, यद्यपि नाटकीयता की दृष्टि से उसके नाटक सफल न हुए। सफल नाटक उस काल लसाज, मारिवो और बोमार्क[1] ने लिखे। लसाज की 'तिरकारे' (१७०६) और मारिवो का 'प्रणय और सयोग का खेल' (१७३०) नाटक के क्षेत्र मे विशेष सफल हुए। बोमार्क की दो कामेडिया—'सैविल का नाई' और 'फिगारो का विवाह'—क्रमश १७७५ और १७८४ मे प्रकाशित हुई और दोनो ही भाषा-शैली और ध्वनि की दृष्टि से बडी मनोरम मानी जाती है। दिदरो ने नाटक तो लिखे ही, तत्सम्बन्धी सिद्धान्तो का भी बडी प्रौढता से अपने 'आत्रेतिए' और 'पारादौज' और 'सिर ल कौमैंदिए' मे विवेचन किया। काश उसके सिद्धान्तो का निर्वाह अपने ही नाटको से सफलतापूर्वक हो सका होता।

१८वी सदी का लिरिक काव्य प्राय नगण्य है। निश्चय ही आन्द्रे शेनिए[2] की क्रातिकारी कविताए उस सदी की शृगार है। परन्तु उनकी रचना प्राय सदी के अन्त मे हुई। क्लासिकल प्रेरणा धीरे-धीरे मरती जा रही थी। और यद्यपि शेनिए की भावधारा स्वाभाविक थी, उसमे उसने सयम का अधिकाधिक प्रयोग किया जो क्लासिकल चेतना का प्राण था।

: ५ :

उन्नीसवीं सदी

उन्नीसवी सदी नया जीवन, नई प्रेरणाए लिए आई। मध्यकाल के कवियो मे क्रूसेडो और वीर कार्यो की चेतना बसी थी, पुनर्जागरण युग मे प्राचीन ग्रीक और रोमन प्रवृत्तिया प्रेरक हुई और राष्ट्रीय भावना ने जोर पकडा। उसके बाद का युग वैयक्तिक प्राधान्य का था। ग्यारहवी और पद्रहवी सदियो के बीच मध्य युग ने निर्यौन प्रणय का उद्घाटन किया, सत्रहवी और अट्ठारहवी सदियो मे पुनर्जागरण की प्रेरणा ने प्रतिष्ठा और विकास पाया। वर्तमान काल जो १६वी सदी के साथ आरभ होता है और प्राय. अद्यावधि वर्तमान है, नई चेतनाओ से मुखरित हुआ। उसकी जिज्ञासा क्लासिकल की समस्त मानवीय जिज्ञासा के विपरीत वैयक्तिक थी। उसने राष्ट्र को अन्य राष्ट्रो से भिन्न करके और व्यक्तियो को अन्य व्यक्तियो से भिन्न करके देखा। प्राचीनता उसने अपने दर्शन से अलग कर दी। वर्तमान और सावधि वर्तमान उसके स्वप्न और सत्य बने। प्रयोगो की साहित्य मे एक बाढ-सी आ गई।

---

१ Beaumarchais, २ Andre Chenier

'पुनर्जागरण' की ही भाति वर्तमान युग की वस्तुत यूरोपीय विशेषता है—साहित्य मे उसकी अपनी चेतना जिसने कालातर मे भूमडल के साहित्य को प्रभावित किया। यह चेतना पहले केवल यूरोपीय भूमि पर अवतरित हुई और वहा यूरोप के सारे देशो मे समान रूप से उसका विकास हुआ। पिछली सदी मे ही यूरोप के प्रधान देशो मे अग्रदूत उसके सदेश सुना चुके थे—यग[१] ने इग्लैड मे, रूसो ने फ्रास मे, गेटे[२] ने जर्मनी मे। अब राजनीतिक और औद्योगिक क्राति के साथ जो एक नये ससार का उदय हुआ तो उसमे साहित्य की अभिराम कली भी लिखने से बाकी न रही। क्लासिकल प्रेरणा से लोगो ने मुह फेर लिया और फ्रास ने बजाय ग्रीस और रोम की ओर देखने के इग्लैड, जर्मनी, इटली तथा स्पेन की ओर देखा जहा से उसने सामग्री और शैली दोनो ली। इनसे भी बढकर उसने अपनी ओर देखा, अपने खेतो-खलिहानो की ओर, देहात-नगरो की ओर, अपनी जनता की ओर। इस प्रकार रोमाटिक और यथार्थवादी साहित्य का समारभ हुआ। अलौकिक और अद्भुत को छोड कृतिकारो ने अपने चारो ओर घटने वाली परिस्थितियो को देखा और उन्हे अपने सृजन का आधार बनाया। फिर भावो के सघर्ष और भावुकता के उन्नयन को भी साहित्यकारो की प्रगाढ निष्ठा मिली जिससे उनकी रोमाटिक सज्ञा सार्थक हुई। इस प्रकार उन्नीसवी सदी की दो प्रधान प्रेरक चेतनाए 'रोमाटिक' और 'रियलिस्टिक' (रूमानी और यथार्थवादी) साहित्य-सृजन का आधार बनी।

नये युग का आरम्भ करने वाले मादाम द स्ताइल[३] और शातोब्रिया[४] थे। जर्मन नेक द स्ताईल[५] ने अपने समीक्षा सम्बन्धी ग्रन्थो मे साहित्य की साहित्यिकता, भौगोलिकता, धार्मिकता, जातीयता आदि के साथ सापेक्षता स्थापित की। उसके उपन्यास 'डेल्फिन' और 'कौरिन' ने उपन्यासो के क्षेत्र मे नई भूमि का निर्माण किया। उसे एक नये नारीत्व और कला का पुट मिला। रने द शातोब्रिया मादाम स्ताईल के बाद हुआ और उसने रोमाटिक तथा यथार्थवादी दोनो प्रकृतियो का विकास साहित्य मे अपने आप देखा जिससे उसकी कृतियो मे इन चेतनाओ का अनिवार्य और सफल विकास हुआ। शातोब्रिया ने कल्पना और भावुकता से भरे अपने 'अत्ताला', 'रिनी', 'ईसाई धम की प्रतिभा' रचे।

फ्रास के आधुनिक युग के साहित्य मे लिरिक कविता का फिर से विकास हुआ। १८२० और १८५० के बीच फ्रास मे लिरिक कविताओ की बाढ-सी आ गई। लिरिक जो अतीव सुन्दर, मधुर और शालीन थे। इन लिरिको म वैयक्तिक पुकार 'त्रुवादूरो' की वैयक्तिक चेतना से कही सबल है। लामार्तीन[६], मिसे[७], बिनी[८], ह्यूगो[९] लिरिक कविताओ

---

१. Young, २. Goethe, ३. Mme de Stael, ४. Rane de Chateaubriand, ५. Germaine Necker de Stael, ६ Lamartine, ७ Alfred de Musset, ८. Vigny, ९ Hugo

की पहली धारा मे बहे और १८१० के लगभग उन्होने अपने शालीन लिरिको की धारा बहाई। लामार्तीन के लिरिक-सग्रहो के शीर्षक ही उनके भाव-तत्व को प्रकाशित कर देते है। 'काव्यगत चिंतन', 'काव्यगत और धार्मिक समन्वय' आदि। इन लिरिको का विषय अधिकतर प्रेम है। विषादमय, निराशापूर्ण प्रेम, जिसका प्रवाह अटूट और कर्ण-मधुर है। लामार्तीन की योग्यता उसके गेय विषयो की सूझ मे है। अपनी प्रकृति, प्रणय, धर्म आदि के सबध मे अपनी वैयक्तिक चेतना मे आल्फ्रैद मिसे प्रयोगवादी था। इससे उसके लिरिको मे विविधता प्रचुर मात्रा मे है। उसके 'स्पेन और इटली की कहानिया' की ध्वनि व्यग्यात्मक और विनोदशील है परतु मिसे की काव्य-शक्ति की प्रतिष्ठा उसके प्रसिद्ध लिरिक 'रातै' के प्रकाशन से हुई। इस सग्रह की कविताए हृदय को छू लेती है। उनमे प्रस्तुत चित्रो का रूपायन बडी भावुकता और बारीकी से हुआ है। उनकी गेयता स्वाभाविक है। उनमे लिरिक तत्व का असाधारण प्राचुर्य है। आल्फ्रे द विनी[1] की कविताए उनके मुकाबले कही अधिक अवैयक्तिक है, कही अधिक गर्वीली। उसके लिरिक विचार-प्रधान है, प्रणय-प्रधान नही। 'मूसा' मे उसने चितन की प्रतिभा उद्घाटित की है। 'भेडिये की मृत्यु' मे उसने स्तोइक शालीनता का चित्रण किया है और 'सेम्सन का क्रोध' मे नारी की चपलता का। ये कविताए प्रतीकवादी है और इनके विचारो की बुलदी बिनी की चिंतन-शक्ति और काव्य-क्रियता का सबल उदाहरण है। ह्यूगो का नाम भारत मे भी विक्टर ह्यूगो[2] के रूप मे जाना हुआ है। इसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा मे असाधारण साहित्यिक प्रौढता और समृद्धि है। पहले गिनाए लिरिककारो से वह बहुत ऊचा है—विचारो की बुलदी और शब्दो के चयन दोनो मे। ६० वर्ष उसने साहित्य-सृजन मे लगाए। १८२२ मे उसकी कविताओ का पहला सग्रह 'ओड और कविताए' तथा १८८३ मे 'सदियो की ख्यात' प्रकाशित हुई। और इस बीच उस साठ वर्ष के दौरान मे उसने सभी प्रकार की कविताए सभी विषयो पर लिखी। सुकुमार-स्निग्ध पितृस्नेह, चुभते व्यग्य, वीर काव्य और चित्रप्रधान प्रबन्ध। कल्पना को काव्य मे सदेह करने वाला उसका-सा दूसरा कवि फ्रेंच लिरिक मे न हुआ।

१९वी सदी के कवियो की दूसरी पीढी नई शैली और विचारधारा लिए फ्रेंच साहित्य क्षेत्र मे उतरी। उनका प्राधान्य सदी के प्राय बीच मे हुआ। शैली के निखार, भावो का सयत निरूपण, विषयो की विविधता, उनकी प्रकृति के सूचक थे। इस दल के कवियो की सज्ञा 'परनासी' है। यह नाम १८६६ मे प्रकाशित काव्य के एक सग्रह—लापर्नास काता पौरे—से पडा। उसके पहले १८५२ मे थियोफील गोतिए[3] ने उन्ही चेतनाओ की अभिव्यक्ति अपने 'एमो ए कामो' मे की थी। इस कवि की पहले की कविताए रोमाटिक शैली मे लिखी गई थी। परतु इस सग्रह मे उसने एक नये टेकनीक का प्रयोग किया जिसमे

१ Alfred de Vigny, २ Victor Hugo; ३ Theophile Gautier

रत्न जड़ने वाले सुनार और चित्रकार की कला का प्रयोग हुआ था। वैयक्तिक भावोद्बोधन से हटकर यह काव्यधारा परनासी परपरा मे सर्वथा व्यक्ति-भिन्न भावना मे सपन्न हुआ था। और वह 'कला कला के लिए' वाले सिद्धात का पोषक था। पॉलिश के विचार से जोजे मार्या द आर दिया[1] की त्रौफी (१८६३) से बढकर कविता-सग्रह शायद उस काल नही रचा गया। 'त्रौफी' मे अभिराम सॉनेट का प्रयोग हुआ है और यह सॉनेट प्रग्रा का वर्णन न कर मानव इतिहास के विशिष्ट क्षणो को पुनर्जीवित करते है। कल्पना, उपमा, रागमाधुर्य से वह अपने भावो का ततु प्रस्तुत करते है। इसी प्रकार लकोत द लिल[2] की कविताए— 'पोएम आतीक' (१८५२), 'पोएम बरबार' (१८६२), 'पोएम त्राजीक' (१८८५) भी इतिहास को ही अपना आधार बनाती है। इस दल का सबसे महान कवि शार्ल बोदलेयर[3] है। कुछ लोगो की राय मे तो वह १६वी सदी का सबसे सुन्दर कवि है। उसकी कविता मे 'अनोखी कुरुचि' का विस्तार हुआ है और विस्तार मे भयानक और घृणित का भीषण योग है। असामाजिक, अत्यन्त कुरूप भावनाए कवि की मेधा द्वारा असामान्य सुन्दर कविताओ का कलेवर धारण करती है। अनेक बार भावो का विस्तार दार्शनिक चेतना उद्बुद्ध करता-सा जान पडता है। दृष्टातत उसकी प्रख्यात साधारण सॉनेट 'रसिलमा' शरण की कामना और विषाद से मुक्ति का प्रतीक हो गया है। १८५७ मे प्रकाशित उसका 'पाप के फूल' पिछले कवियो का आकर्षण-केन्द्र बन गया। १६वी सदी के कवियो के अतिम दल की चेतना मे उसी रहस्यवाद का विस्तार मिलता है। इन कवियो के चित्रण और लाक्षणिक रूपायन मे भाव सर्वथा खो जाते है। अस्पष्ट, धूमगत, प्रच्छन्न विचारो की ज्योति यहा-वहा जब-तब दीख जाती है। परतु वस्तुत गुह्य और गोपनीय ही जैसे उनके विकास का उद्देश्य हो जाता है और वह भी वास्तव मे उनका विकास नही बल्कि समाधिस्थ चित्रण। प्रच्छन्नता उस रहस्यवाद की शैली और दृश्य दोनो हो जाती है। प्रतीकवाद धीरे-धीरे एकात व्यक्तिवाद का रूप धारण कर लेता है। और तथाकथित अन्तमुखी प्रवृत्तिया अस्पष्ट रहस्यमय भाषा मे मूर्त होती है। भावनाए, विचार, प्रवृत्तिया इतनी वैयक्तिक तथा निजी हो जाती है कि साधारण भाषा उनके प्रकाश का वाहन नहीं बन सकती और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर की ओर बढता हुआ कवि अवचेतन मे विलीन हो जाता है। उन कवियो का कहना है कि वे विश्व की उन अमूर्त भावनाओ का प्रकाशन करते है जिनके लिए सामान्य भाषा व्यजना का माध्यम नही बन सकती। इस दल के फ्रेंच कवियो मे मुख्य थे वर्लेन[4], मलार्मे[5] और रिम्बो[6]। वर्लेन के विचार, यद्यपि उनका अभाव ही अधिक है, सादे हैं परतु उसके साधन वही है। यौन ध्वनि, अस्पष्ट उपमाए, कविता का क्रमश शुद्ध

---

१. Jose-Maria de Heredia, २. Leconte de Lisle, ३. Charles Baudelaire (१८४२-१९०५), ४. Verlaine, ५. Mallarme; ६. Arthur Rimbaud

सगीत की ओर आनयन। वर्लेन की कविताए सुन्दर गीत है। मालार्मे तो जैसे गोपनीय मे डुबकी लगा लेता है। अस्पष्ट, अप्रकट चेतनाए उसकी कविता की प्राण है। उसमे कुछ कहा नही जाता, केवल ध्वनि-मात्र उत्पन्न की जाती है। उसकी कविता पढने का अर्थ है उसमे प्रच्छन्न अर्थ की खोज। आर्थर रेम्बो उसी प्रवृत्ति का विस्तार है। उसका प्रकाश्य और भी प्रच्छन्न है। उसकी शैली और भी अस्पष्ट। पिछले कवियो ने उसे केवल सराहा ही नही है वरन् देवता तक मान लिया है। परन्तु उसकी यह आस्था वस्तुत गोपनीय की उस भ्रमपूर्ण श्रद्धा-सी है जो असामान्य को पूजता है। यह वृत्ति हिन्दी के छायावाद मे अनजानी नही है जहा बालू की भूमि पर सर्वथा वैयक्तिक, अस्पष्ट दार्शनिक सूचना का आडम्बर खडा किया जाता है, परन्तु जिसको दर्शन से कोई वास्ता नही है। वहा बाहर के जीवन और सघर्ष से भागकर अन्तर्मुख हो रहने की ही प्रवृत्ति है और अस्पष्ट शब्दो की योजना द्वारा एक कृत्रिम ससार की सृष्टि की गई है।

१६वी सदी का साहित्यकाल लिरिक के अतिरिक्त उपन्यासो का समृद्धि-काल है। उपन्यासो का प्रकाशन पहले स्वतन्त्र पुस्तको के रूप मे नही हुआ। अखबारो, पत्रिकाओ, जर्नलो मे धारावाहिक रूप से पहले उनका छपना शुरू हुआ और इन पत्र-पत्रिकाओ की हजारो प्रतिया देखते ही देखते रेलवे बुकस्टालो से उठ जाने लगी। उपन्यासो की लोकप्रियता का इससे भी बडा प्रमाण यह था कि हालैंड और बेल्जियम मे उनके सस्करण चुपचाप चुरा लिए गए और वहा की भाषाओ मे स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित हुए। उस काल की सामाजिक प्रवृत्तियो की छाया भी इन उपन्यासो मे घनी उतरी। १८३० तक उपन्यासो के स्वतन्त्र प्रकाशन का युग प्रारम्भ हो गया था। सन १८३१ मे ईगो (विक्टर ह्यूगो) का प्रसिद्ध उपन्यास 'नात्रदाम द परी' प्रकाशित हुआ जिसमे चित्रण की विविधता, अनूठेपन का आकर्षण और भावो का तारतम्य उपन्यास के वस्तुतथ्य के रूप मे बडी सुघडता से आकलित हुए। ईगो की काव्य-साधना का भी प्रतिबिम्ब उसके उपन्यासो पर पडे बिना न रहा। उसके लिए यह कुछ कम गौरव की बात नही कि उसके उपन्यास—कम से कम—'नात्र दाम द परी' और 'ले मिज़राब्ल'–आज भी प्राय उसी उत्सुकता से पढे जाते है जिस उत्सुकता से आरम्भ मे पढे गए थे। यद्यपि फ्रेच साहित्य के वे प्राय प्रारम्भिक उपन्यास थे। 'ले मिज़राब्ल' (१८६२) मे, 'समुद्र के पर्यटक' (१८६६) मे और 'निन्यानवे' (१८७४) मे प्रकाशित हुए। इन सबके उपकरण प्रायः समान थे। इनकी कला-चेतना प्राय एक-सी थी। चरित्रो का निर्माण ईगो के 'लम्बकूर्च' से स्पष्ट और सफल हुआ, मनोरजन और रुचि की भी उसमे पर्याप्त व्यवस्था थी। उपन्यास के क्षेत्र मे उसकी काफी ख्याति हुई। उन्ही दिनो प्रॉस्पे मेरिमे[१] ने दो विशिष्ट प्रकार के उपन्यासो का आरम्भ

१. Prosper Merimee

किया। ऐतिहासिक उपन्यास (दृष्टान्त)—क्रॉनीक दु रैन द शार्ल नौ, १८२६ और लघु कथा अथवा नूवेल (नावेल) जैसे 'कोलम्बा' और 'कारमा'। मेरिमे के उपन्यासो मे शब्दो का चयन शायद ईगो के उपन्यासो से अच्छा हुआ। अधिक से अधिक भावो की अभिव्यक्ति के लिए उसमे कम से कम शब्दो का उपयोग हुआ। यथार्थवादी समकालीनो के बहुत समीप मेरिमे की कृतिया पहुच गई। भावो और रसो का अविरल प्रवाह रोमाटिक परपरा के उपन्यासो मे जार्ज सा[1] की रचनाओ मे पाया जाता है। इन सारे उपन्यासो मे समसामयिक जीवन निरन्तर उभरता गया है।

समसामयिकता का विस्तृत रूप वस्तुत हेनरी बेल[2] (स्ताधाल) की कृतियो मे प्रगट हुआ। उसके दो उपन्यास 'लरूज ए ल न्वार' (लाल और काला) (१८३०) और 'पारमा का चार्टर घर' (१८३६) काफी प्रख्यात हे। दोनो एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न है। पहले की विशिष्टता उसके चरित्रो और घटनाओं मे है, दूसरे की उसके चित्रण और आवेगो के अकन मे। मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का आरभ फ्रेंच रचनाओ से ही हुआ। स्ताधाल के चरित्र, शक्ति के साथ उसकी कृतियो मे सयत्न फिरते हे।

ओनोरे द बाल्जाक[3] ने उपन्यासो के क्षेत्र मे एक नई दिशा मे कदम उठाया। अपने समाज की विविध वर्गीय परिस्थितियो को जितना बाल्जाक ने अपने उपन्यासो मे प्रतिबिम्बित किया है उतना शायद ही किसी और कृतिकार से हो सका हो। बाल्जाक की 'ला कौमेदी इमेन' १८२६ से १८५० तक के काल-प्रसार मे प्रस्तुत हुई। वह कृति कलाकार के प्राय जीवन भर की रचना है। उसने अपनी जनता को चुम्बक की तरह अपनी ओर खीचा भी। साहित्य मे उस कृति का प्रकाशन नितान्त साहस और मौलिक सूझ का काम था। उसने ऐसे उपन्यासो की एक परपरा बाध दी, जिसमे फ्रेच समाज के कुल स्तर, उसके विविध पेशे, उसके प्रातो और नगरो का जीवन चलचित्र की तरह प्रत्यक्ष हो उठे। जैसे मनुष्य-जीवन एक घटना से दूसरी घटना की ओर स्वाभाविक ही बढता जाता है वैसे ही इन उपन्यासो मे जाने हुए व्यक्तियो का एक समूह एक कहानी से दूसरी कहानी की ओर अनायास ही बढता जाता है और अपने इस बढने के क्रम मे निरतर अपनी क्रियाओ के साथ जीवन का रहस्य खोलता जाता है। इतना बडा वितान साहित्य के क्षेत्र मे जीवन के उपकरणो से बुना कभी न तना। प्रयास असाधारण ही नही एक जीवन के लिए असभव-सा था और बाल्जाक की असामान्य प्रतिभा भी उसे समाप्त न कर पाई यद्यपि उसका बृहदाश प्रस्तुत हो गया। बाल्जाक न केवल फ्रेच साहित्य में बल्कि १९वी सदी के सारे साहित्यो मे जाज्वल्यमान आलोक बनकर चमका जिसका प्रकाश दीर्घकालिक प्रमाणित हुआ। उसने अनेक अद्भुत उपन्यास लिखे जिनमें 'बृद्ध

---

१ George Sand, २ Henri Beyle (Stendhal), ३. Honore de Balzac

गोरिश्रो' (१८३४), 'यूजीनी ग्रान्द' (१८३३), 'पूर्ण की खोज' (१८३४) विशेष विख्यात है। इनके चरित्र सर्वथा लौकिक है और इनका वर्णन नितात घरेलू है। इनके स्रोत से उस यथार्थ जीवन की धारा बहती है जिसके लिए बाल्ज़ाक की कला प्रसिद्ध है।

बाल्ज़ाक की यथार्थता मॉडल के अभाव मे काफी अप्रिय सत्य लेकर आई। उस कला का और भी परिष्कार फ्लोबर[1] की निखरी शैली ने किया। 'मानव कॉमेडी' (१८५०) और 'मादाम बोवारी' (१८५७) दोनो मे उसने प्राय क्रमिक जीवन का उद्घाटन किया। समसामयिक जीवन का, जिसके चरित्र समाज मे जैसे पहचाने जा सकते थे। फ्लोबर ने अनेक उपन्यास और कहानिया लिखी। 'सन्त एन्थनी का प्रलोभन', (१८४९) और 'सालाम्बो' (१८६२) मे फ्लोबर ने विदेशो का चित्र खीचा और 'भावुक शिक्षण' (१८६९), 'सरल हृदय' (१८७७) तथा 'मादाम बोवारी' मे स्वदेश का। 'मादाम बोवारी' ससार के साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है और उपन्यास-कला के दृष्टिकोण से पूर्ण सफल उपन्यासो मे से है। कहानी सहज और असाधारण है। किस प्रकार एक नारी मिथ्या के मोहन से निकलकर उद्घाटित सत्य के साक्षात्कार करती आत्महत्या की ओर चुपचाप बढ जाती है। उपन्यास के चरित्र रोज़मर्रा जीवन के है। फ्लोबर शैली का उतना ही आचार्य है जितना व्यजना के परिमाणो का। अनुभवी कथावस्तु नितात कटी-छटी, स्पष्ट, अनावश्यक से रहित साचे मे ढली हुई उसकी रचनाओ मे उतरती है। भावो का आवेग सर्वथा उचित मात्रा मे चरित्रो की प्रतिक्रियाए सिरजता जाता है। सुरुचि की सुघराई अनुपम है। आल्फोज दोदे[2] तथा गी द मोपासा[3] दोनो फ्लोबर के कनिष्ठ समकालीन थे। दोनो ही ने कहानी-साहित्य मे अद्भुत क्षमता का परिचय दिया। दोदे उस समय अपनी कथाओ मे चरम कृतिमत्ता को छू लेता है जब उनमे वह दक्षिणी फ्रेच पृष्ठभूमि और प्रोवास के चरित्रो को रूपायित करता है। 'मेरी मिल से पत्र' (१८६९) की कहानियो मे गज़ब की सुरुचि, भावुकता का सम्मोहन और सूक्ष्म व्यग्य अभिव्यक्त हुए है। स्थान-स्थान पर हास्य की धारा फूट पडती है। दोदे के उपन्यासो की ख्याति उसकी कहानियो के बराबर तो नही हुई परतु वे कुछ ऐसे बुरे भी नही और उसका 'साफो' (१८८४) तो निस्सदेह एक विशिष्ट कृति है। मोपासा ससार के साहित्य के इतिहास मे फ्रेच कहानीकार के रूप मे ही विशेष प्रसिद्ध हुआ। उस दिशा मे वह इतना सफल हुआ कि कम लोगो को यह ज्ञात है कि उसने सुन्दर उपन्यास भी लिखे। 'फौर कौम ला मौर' (१८८९) मे उसकी कहानीकारिता कहानियो की ही भाति खुल पडी है। परन्तु उसकी कहानिया निश्चय ही अद्भुत प्रतिभा का परिचय देती है और वह उचित ही उस दिशा मे भाषा के

---

१ Flaubert, २. Alphonse Daudet, ३ Guy de Maupassant

निखार और शैली की स्पष्टता के लिए प्रसिद्ध है। मोपासा मे फ्लोबर की सूक्ष्मता और सावधानी एक मात्रा मे उपस्थित है यद्यपि उसकी कल्पना और रग कहानीकार मे नही।

बाल्ज़ाक की भाति ही समसामयिक फ्रेंच जीवन को साहित्य के शीशे मे सागोपाग झलका देने वाला दूसरा सफल उपन्यासकार सदी के अन्त मे एमिल जोला[१] हुआ। परन्तु उसके टेक्नीक और चयन में उसके गुरु बाल्जाक से काफी अन्तर था। उसने अकिंचन और साधारण को अपने 'डीटेल' का आधार बनाया। उसकी वैज्ञानिकता स्पष्टतया सामाजिक जीवन के क्षेत्र मे बाल्ज़ाक से कही आगे बढ गई। ज़ोला के कृतित्व-काल मे वैज्ञानिको ने जीव-शास्त्र पर विशेष खोज की और ज़ोला ने उन खोजो से पर्याप्त लाभ उठाया। अधिकतर उसने जीवन के उपेक्षित और घृणित अगो को ही अपने चित्रण का माध्यम बनाया। कई बार तो ऐसा लगता है कि उस उपन्यासकार की प्रेरणा साहित्यिक नही सामाजिक और वैज्ञानिक है। फिर भी जोला के कम से कम दो उपन्यास—'जर्मिनाल' (१८८५) और 'देबावल' (१८९२) उच्चकोटि के है।

इस प्रकार लिरिक और उपन्यास साहित्य के ये दो अग, १९वी सदी की फ्रेंच प्रेरणा के विशिष्ट प्रसाद थे।

ऐसा नही कि ड्रामा का आकर्षण लोगो अथवा साहित्यकारो को न रहा हो परन्तु रगमच उपन्यासो और कहानियो के समान तब न चमक सका। नाटक बहुत-से लिखे गए परन्तु महान् की कोटि मे उनमे से एक भी न आ सका। ड्यूमा[२] और ईगो[३] के नाटक, फिर भी काफी वेगवान् थे। उस काल का सफलतम और प्रसिद्ध नाटक 'हरनानी' (१८३०) ईगो ने लिखा जिसने समीक्षको मे वादविवाद का एक तूफान खडा कर दिया। उसमे उसने काल और स्थान की एकता न रखी और गीतों का प्राधान्य प्रस्तुत किया। अगली पीढ़ी में ओगिए[४] और उसके पुत्र ड्यूमा ने कुछ नाटक लिखे जो टेक्नीक मे बाल्ज़ाक के उपन्यासो के-से थे। १८९० के आसपास ज़ोला की टेक्नीक से प्रभावित ब्रियो[५] और बेक[६] ने भी कुछ नाटक लिखे।

१९वी सदी के फ्रास मे अनेक साहित्यिको ने साहित्य को अपना पेशा बनाया। पत्र-पत्रिकाओ मे साहित्य की समीक्षा बडी निष्ठा से हुई। साथ ही निबन्धों के भी अनेक सग्रह प्रकाशित हुए। सेन्ट-बव[७] उस सदी का सबसे बड़ा फ्रेंच समीक्षक था। उसने आलोचनात्मक चरित-शैली का आरम्भ किया और उस दिशा में उसने प्रभूत सफलता पाई। दर्शन ने भी साहित्य की सीमा मे प्रवेश किया और कौम्त[८] तथा रेना[९] की सुथरी मधुर शैली मे साहित्य मे उसकी भी अभिराम धारा बही। तेन[१०] और मिशेले ने इतिहास

---

१. Emile Zola; २. Dumas; ३. Hugo; ४. Augier; ५. Brieux; ६. Becque; ७. Sainte-Beuve; ८. Comte; ९. Renan; १०. Taine

के क्षेत्र मे कदम बढाए और फ्रेच साहित्य प्रशस्य गति से अपनी मजिलो को तय कर चला।

: ६ :

बीसवीं सदी

बीसवी सदी अपने प्रतीको, नये साध्यो, प्रयोगो और यथार्थवादी साहित्य के साथ क्षेत्र मे आई। वस्तुत. वर्तमान सदी का पूर्वार्द्ध उपन्यासो के लिए विशेष उपजाऊ सिद्ध हुआ। उपन्यास ही साहित्य के क्षेत्र मे विशेषत फूला-फला। उसमे १६वी सदी की परपरा बनी रही यद्यपि टेक्नीक और रुचि मे अतर काफी पडा। आनातोल फ्रास[1] के उपन्यास इस दृष्टिकोण के ज्वलत उदाहरण है। आनातोल इस प्रकार दोनो सदियो का है। १८६० मे प्रकाशित उसकी 'थाया' ऐतिहासिक काल्पनिक उपन्यास है, जो यद्यपि आधुनिक उपन्यासो की गुथी परपरा का आरभ करता है, वस्तुत १६वी सदी की परपरा का ही। 'लोर्म दु मेल' (१८६७) के-से अन्य उपन्यासो मे उसके विपरीत समसामयिक पृष्ठभूमि को आधार बनाया गया है। इन सबमे निस्सदेह आनातोल की व्यग्यात्मक सुरुचिपूर्ण शैली रूपायित है। उसने अपने जीवन की सस्मरणयुक्त रचनाए—'ल लिव्रद मोनामी' (१८८५) और 'ल पेती पिएर' (१६१८)—भी सादगी और ताजगी मे अनुपम हैं, यद्यपि थाया की सुघड आकृति साहित्य मे प्राय बेजोड है। आनातोल के 'पाग्वे द्वीप' (१६०८) मे अत्यन्त व्यग्यात्मक निरूपण मूर्तिमान हुआ है जिसमे वर्तमान सभ्यता पर गहरी चोट की गई है। उसकी 'इस्त्वार कोतापोरेन' (१८६७-१६०१) तो निस्सदेह समसामयिक जीवन का इतिहास ही है। उसका 'देवता प्यासे है', फ्रेच राज्यक्राति पर चुटीला व्यग्य है। आनातोल के उपन्यास विचार और शैली की सुघड कृतिया है

फ्रेच साहित्य मे जिस अन्तर्मुखी प्रवृत्ति ने काव्य मे छायावाद को प्रश्रय दिया वह बीसवी सदी मे मार्सेल प्रूस[2] की कृतियो मे रूपायित हुई। 'आ ला रिशार्श दु ताप परदू' (विगत सस्मरण १६१३-१६२७) उसी परपरा की एक कृति है। इसमे उपन्यास, आत्मकथा और सामाजिक अध्ययन तीनो का एकत्र योग है। प्रूस की कृतियो का रूप और साध्य दोनो अनोखे होते है। उनमे वह अपने ही समाज, अपने ही जीवन आदि को व्यक्त करता है। परन्तु वह किसी दूसरे के सस्मरणो के सशक्त माध्यम द्वारा। उनकी घटनाओ की परपरा मे एक अद्भुत चेतना का विकास है जो शैली के योग से अत्यन्त आकर्षक हो उठती है और सहसा अतीत वर्तमान का अग बन जाता है, अपनी इस अनोखी रचना

---

१ Anatole France २ Marcel Proust

लिए प्रूस ने उपयुक्त नई शैली का व्यवहार किया। उसके अनेक स्थल अत्यन्त सुन्दर बन पडे है। आद्रे जीद[1] ने १९२६ मे अपनी प्रसिद्ध कृति 'प्रवचक' प्रकाशित कर साहित्य मे एक प्रश्न उपस्थित कर दिया। क्या सेक्स की अव्यवस्था या दुर्व्यवस्था साहित्यिक रचना का उचित प्रतिपाद्य विषय बन सकती है? इस दिशा मे जीद प्रूस के पर्याप्त निकट है परतु दोनो मे समानता यही तक है क्योकि जहा प्रूस वर्णन और विश्लेषण पर जोर देता है वहा जीद गति और डायलॉग पर। जीद का चरित्र-चित्रण नितान्त स्पष्ट और सीधा है। चरित्रो का व्यक्तित्व निरन्तर खुलता चला जाता है। सूक्ष्मता चरित्रो के शब्दो आदि मे प्रकट की जाती है। कथानक धीरे-धीरे एक विशेष पद्धति से समूचे प्रवाह से बढता है जिसमे चरित्र और घटनाए परस्पर सम्बद्ध होते जाते है। जीद की दो रचनाए इस दिशा मे विशेष प्रसिद्ध है।'नूरिनिर तैरेस्त्र'(१८९७)और 'ले काव दु वातिका'(१९१४)। इनमे से पहले मे लिरिक की ध्वनि अदम्य है, दूसरी मे व्यग्यपूर्ण असगतता भरपूर। जीद की सारी रचनाओ मे समाज, धर्म और आचार की परपरा के प्रति एक चुनौती है। वह यह कि व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार सब कुछ करने का अधिकार है। उसका यह दर्शन उसके उपन्यासो, राजनीतिक साहित्य और निबधो, आत्मकथाओ, कहानियो सभी मे फूट पडा है। साथ ही उसकी शैली अत्यन्त मधुर और रोचक है।

बीसवी सदी के साहित्य का एक टेक्नीक उपन्यास-चक्र है जिसे लाक्षणिक रूप से रोमाफलव' कहते है। इसी परम्परा मे रोमा रोला[2] ने अपना 'जा क्रिस्तोफे' (१९०४-१२) लिखा जिसमे एक जर्मन गायक का तूफानी जीवन सूत की तरह कहानियो मे गुथता चला गया। वह कृति सामाजिक जीवन की एक सफल समालोचना है। दुआमेल[3] ने भी इसी प्रकार की दो सीरीज लिखी जिनमे से पहली तो अपने हीरो सालावे के जीवन और आकांक्षाओ को मूर्त करती है। और दूसरी—'पास्की क्रानिकल' एक समूचे परिवार के जीवन और सघर्षो को रूपायित करती है। सालावे साधारण स्थिति का आदमी है जो जीवन की कठिनाइयो से घिरा अपने छुटपन से ऊपर उठने का प्रयत्न करता है और अतीव आत्म-बलिदान के बाद उठने मे सफल भी होता है। सीरीज के दूसरे भाग मे 'लौरा पास्की' प्रधान पात्र है और उसका परिवार अपनी परिस्थितियो मे डूबता-उतराता है। दुआमेल इस शैली का सफल कृतिकार माना जाता है। जूल रोमे[4] ने पहले तो साहित्य में अनेक प्रयोग किए पर अत मे वह भी उसी रोमाफलव-शैली की ओर झुका जिसमे उसने 'नेक-नीयत के आदमी' लिखा। उसके दर्शन की चेतना उस सिद्धात के अनुसार रही है कि व्यक्ति की ही भाति समूह और दल अथवा समाज भी जन्मते, बढते और मरते रहते है। रोमा

---

१. Andre Gide, २. Romain Rolland, ३. Georges Duhamel, ४. Jules Romains

ने इसी विचार से प्रेरित होकर अपने चक्र मे एक समूचे समाज का निरूपण किया है। प्रकट है कि ऐसी रचना मे बहुत कुछ अयुक्त तथा अनावश्यक भी स्वाभाविक ही उतर पडेगा। इसी दल के उपन्यासकार रोजे मार्तें दु गार[१] को अपने 'तीबो' नामक उपन्यास पर (१९३७) मे नोबुल पुरस्कार मिला। इसमे उपन्यासकार ने परिवार के जीवन का बडा स्पष्ट और हृदयग्राही चित्र खीचा है।

बीसवी सदी के कवियो ने अपनी रचना को जब प्रयोग-बहुल बनाया तो उस परपरा मे प्रतीकवाद से लेकर 'सुरियलिज्म' तक सभी वाद उतर आए। प्रथम महायुद्ध के बाद कला और साहित्य दोनो मे जो 'दादावाद' चला उसमे अर्थ का सर्वथा अन्त कर दिया गया। सार्थकता उसके लिए कोई बात ही न रह गई। फिर 'सुरियलिज्म' मे तर्क और सगत को सत्यार्थ का अवगुण्ठन मानकर उन्हे सर्वथा त्याग अवचेतन के धूमिल वातावरण को यान्त्रिक और नितान्त अस्वाभाविक स्वप्नो मे भरा गया। परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक कृतिया काव्य-रचनाए और भावावेगो का रूपायन न होकर सिद्धातो की परिचायक बन गई। भाग्यवश अवचेतन की उस धारा ने लोकनिष्ठ जनता का स्पर्श न किया, वह उसे प्रभावित न कर सकी। निस्सदेह नये प्रयोगो ने लिरिक के टेक्नीक मे कुछ प्रगति की परन्तु साहित्य की कला को उसने कितना आगे बढाया यह कहने की आवश्यकता न होगी। हा, पौल वालेरी[२] के-से कुछ व्यक्ति निश्चय ही उस दिशा मे असफल नही कहे जा सकते। वालेरी की कृतियो की प्रधान धारा दार्शनिक चिन्तन की है। अपनी कविताओ मे वह उन विरोधी तत्वो को जन्म देता है जो सघर्ष करते हुए रचना के क्रम मे आगे बढते है। और अन्त मे वे एक दूसरे मे लीन हो जाते है। उसकी शैली नितात सक्षिप्त होती हुई भी कल्पना की सम्पदा से स्पष्ट हो उठी है। पर जहा वह केवल प्रतीको मे साध्य का वर्णन करता है निश्चय ही वहा वह समझ के परे हो जाता है। 'ला जून पार्क' (१९१७) और 'सिमेतिएर मारे' (१९२०) नामक कविताओ ने प्रसिद्धि पाई है परन्तु उनकी स्पष्टता फिर भी विवादास्पद है।

ड्रामा के क्षेत्र मे अभिनय, वस्त्राभरण, सगीत, दृश्य, प्रकाश आदि के विषय मे इस सदी मे काफी प्रयोग और अनुसधान हुए है और इस दिशा मे निश्चय ही उसने प्रगति भी खूब की है। इस प्रगति का श्रेय अधिकतर गास्तो,[३] बातीं[४], जार्ज दुलें[५], जाक कोपो[६], जा कोक्तो[७] आदि को है। ड्रामा मे अनेक टेक्नीको का भी आरम्भ हुआ जिनके प्रवर्तक जूल रोमें[८], सारमा[९] और लोनोर्मा[१०] आदि है। महान् नाट्यरचना, इनकी कृतियो को

१. Roger Martin du Gard, २ Paul Valery, ३ Gaston, ४ Baty; ५. Georges Dullin, ६ Jacques Copeau, ७. Jean Cocteau, ८ Jules Romain, ९ Sarment, १० Lenormand

कहना उचित न होगा। वैसे नाटक के क्षेत्र मे पाल जेराल्दी[१] फ्लेर[२] और कैलेवे[३] तथा मार्सल पाग्नोल[४] जाने हुए व्यक्ति है। वैसे ही गम्भीर नाट्यरचना मे हेनरी बर्नस्तीन[५] और फ्रास्वा द किरेल[६] भी। स्वप्निल कल्पनाओ का नाट्यकर्ता मतरलिक[७], गायन प्रधान छदात्मक नाटको के रचयिता रोस्ता[८] तथा चमत्कार सम्बन्धी कृतियो के स्रष्टा क्लोदेल[९] हुए। समकालीन नाटक को उन्होने अपने चित्रण के रग और शैली-विविधता से आकर्षक बनाया।

बीसवी सदी मे साहित्य के उपकरणो और सिद्धातो पर विस्तृत कथोपकथन हुए। परिणामतः साहित्य के इतिहास और समीक्षा-शास्त्र की अभिसृष्टि हुई। सदी के पूर्वार्द्ध का अधिकतर समय भी साहित्यिक प्रवृत्ति ने लिया। साथ ही समाजवादी और कम्यु-निस्ट राजनीतिक चेतना तथा रचनाओ ने अपना दूरगामी प्रभाव और देशो की ही भाति फ्रास पर भी डाला। बर्गसो[१०] ने अपने दर्शन का निरूपण प्रौढ गद्य शैली मे किया और सत्य को अपने रूप से देखने का प्रयत्न किया। अपने विचारो को उसने 'सृजनशील विकास' (१९००) मे रखा। दर्शन का शुष्क व्यापार उसकी लेखनी और शैली के मधुर योग से न केवल सह्य वरन् आकर्षक हो गया। उसमे उपन्यास की रोचकता ने घर किया। बर्गसो की कृति ने साहित्यिक सक्रियता को बडा बल दिया यद्यपि साम्यवादी चेतनाओ का प्रसार विपरीत परिस्थितियो के बावजूद फ्रेंच साहित्य के क्षेत्र मे निरन्तर होता गया।

द्वितीय महायुद्ध के बाद मार्क्सवादी साहित्यिको का एक प्रगतिशील दल साहित्य-क्षेत्र मे उतर पडा है जो जीवन को आशा और विश्वास के साथ देख रहा है। उसने आक्रान्त मानव को आक्रान्ता के विरुद्ध ताल ठोककर प्रेरित करने वाला साहित्य रचा है और रचता जा रहा है। उसकी प्रेरणा मे सर्वहारा मानव के उच्छ्वास मूर्तिमान हो रहे है और उनकी रचनाओ का साध्य स्वय सर्वहृत मानव के सघर्ष मे सहायक हो रहा है।

: ७ :

लोकसाहित्य

फ्रास का लोक साहित्य बडा समृद्ध है। उसकी जादू सम्बन्धी लोककथाए अभी हाल तक अमित मात्रा मे प्रचलित रही है। उनका प्रसार प्राय· मौखिक ही रहा है। ये कथाए अधिकतम पश्चिमी यूरोप की लोककथाओ के साथ ही समान आधार से ली गई

---

१. Paul Geraldy, २. Flers, ३. Caillevet ; ४ Marcel Pagnol ; ५. Henri Bernstein ६. Francois de Curel ; ७. Maeterlinck ; ८. Rostand ; ९. Claudel, १०. Bergson

है। जिससे अधिकतर एक-सी है—'दैत्य-सहार', 'अडे मे पिशाच का हृदय', 'नीली दाढी', 'जादू की उडान', 'युवक जो जानना चाहता था कि भय क्या वस्तु है', 'बच्चे और पिशाच', 'दानव की निधि चुराने वाला किशोर', 'खोई पत्नी ढूढने वाला पुरुष', 'खोए पति की खोज', 'सोई सुन्दरी', 'सेदरेला', 'थल-जल पर चलने वाली नाव', 'शीश पर्वत की शाहजादी', 'पिता की सजीवनी की खोज मे बेटे', 'कृतज्ञ पशुओ द्वारा खोजी अगूठी', 'मेज', 'गधा और घडी', 'पशुओ की रहस्यमयी बात सुनकर फिर अपनी दृष्टि पा लेने वाला अन्धा बालक', 'बलवान जॉन और मूर्ख पिशाच', 'करविहीन कुमारी' 'हिम-श्वेत', 'गाने वाली हड्डिया'—ये कहानिया लोककहानियो के फ्रेच सग्रहों में मिलती हे। इनके अतिरिक्त अनेक कहानिया पूर्व और दक्षिण मे कही सुनी जाती है, अधिकतर केवल फ्रेच कल्पना की उपज है। फ्रेच जनता के अधविश्वास मे जो आलौकिक और अपार्थिव का उसके जगलो-मैदानों, नदी-पहाडो आदि मे निवास है उससे लोक-साहित्य का अनायास निर्मित हो जाना स्वाभाविक ही है। इसी प्रकार भगवान् और सन्तो द्वारा किए सैकडो चमत्कारो की धार्मिक कथाए भी उस भाषा मे सुरक्षित हैं। वे विशेषतया ब्रितनी[1] मे प्रचलित है। इसी प्रकार अनेक रोमाटिक सामाजिक कहानिया भी फ्रेंच साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन गई है।

इस साहित्य का निस्सदेह अब फ्रास मे ह्रास होने लगा है और देहाती दुनिया उसे भूल चली है। उन्नीसवी सदी के पिछले काल तक फ्रास मे देहाती प्रणय, नृत्य, व्यग्य आदि के गीतो का बाहुल्य था—एक प्रकार के सामाजिक अथवा धार्मिक विषादमय गीत, कोम्प्लेन्त कहलाते थे। हजारो लोकगीत फ्रास से १७वी-१८वी सदी मे कैनेडा और मिसीसिपी की घाटी मे ले जाए गए और वहा के जगलो, पहाडो को प्रतिध्वनित करने लगे। खेद है कि आज फ्रास के अपने देहातो से लोकसाहित्य उठा जा रहा है।

१. Brittany

१९. मिस्र का प्राचीन साहित्य

मिस्र का इतिहास अति प्राचीन है। वस्तुत यह कहना कठिन है कि उससे भी प्राचीन कोई सभ्यता कही थी। उसकी समकालीन सभ्यताए भारत की सिन्धु सभ्यता और दक्षिणी इराक की सुमेरी सभ्यता थी। परन्तु जहा देखते ही देखते ये दोनो सभ्यताए (कम से कम भारतीय) लुप्त हो गई, मिस्री सभ्यता जीवित रही और मिस्र के राजकुल दजला-फरात की घाटी तक छापे मारते रहे।

ससार की सबसे प्राचीन लिखावट सम्भवत मिस्र के पिरामिडो की है। लिखावट पहले चित्रपरक थी फिर घसीट की कई स्थितियो से गुजरी और क्रमश हिरोग्लीफक[1], हिरेटिक[2] तथा डेमोटिक[3] कहलाई। ईसाई और इस्लाम धर्मो की सहारक चोट ने मिस्र का अत्यधिक साहित्य नष्ट कर दिया। जो कुछ बचा रहा है वह उन्ही पिरामिडो और मदिरो की दीवारो, मूर्तियो और पेपरिस (एक प्रकार का नरकटी कागज) पर है।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, अनेक पुरानी सभ्यताओ के जन्म के पहले ही प्राचीन मिस्र काल के अन्तराल मे सो चुका था। इससे उसका साहित्य भी उसी अनुसार पुराना है। जो कुछ हमे आज प्राचीन मिस्र की लिपि और इबारत के रूप मे उपलब्ध है, उस सबको तो साहित्य की सज्ञा नही दी जा सकती पर साधारणत उसका स्तर-विभाजन किया जा सकता है।

मिस्र की लिखित सामग्री पाच भागो मे उसकी भाषा के विकास के अनुकूल ही बाटी जाती है। ये भाग है—(१) प्राचीन मिस्री-साहित्य इतिहास के आदिकाल और लिपि के आरम्भ से लेकर प्राय २४०० ई०पू० तक। (२)मध्य मिस्री—आज के साहित्य विभाजन के अनुसार 'क्लासिकल युग' २४०० से १३०० ई० पू० तक। यह मिस्री साहित्य का सबसे समृद्ध युग था। (३) उत्तरकालीन मिस्री—१५५० ई०पू० से ७०० ई० पू० तक। समृद्ध होते हुए भी इस युग मे ह्रास आरम्भ हो गया था। (४) डेमोटिक काल ७०० ई०पू० से ४७० ई०पू० तक। डेमोटिक भाषा और लिपि दोनो का नाम है। व्यापार, धर्म और जादू सम्बन्धी तथा अनेक साहित्यिक लेख खण्ड उस काल के मिले है जिनसे प्रकट है कि उस युग मे साहित्यिक प्रयास किसी न किसी रूप मे हुआ है। (५) कोप्टिक मिस्री युग—जब कोप्टिक भाषा मे ईसाई धर्म की पुस्तको का मिस्री मे अनुवाद हुआ।

मिस्री साहित्य के मूल्याकन मे पहले तो भाषा की कठिनाई है। प्राचीन भाषा में कही स्वरो का प्रयोग नही होता था। केवल व्यजन ही लिखे जाते थे जिससे ठीक-ठीक

---

१. Hieroglyphic ; २ Hieratic ; ३. Demotic

लिपिबद्ध साहित्य का अर्थ लगाना या उसकी ध्वनियों का माधुर्य आकना कठिन हो जाता है। फिर भी जो लेख पढ़े जा चुके है और उपलब्ध है,उनसे मिस्री साहित्य पर कुछ न कुछ प्रकाश पड़ता है। वह बहुत तो नही है और इसका कारण यह है कि उस सभ्यता के बाद ही मनुष्य की उस भाव-सत्ता और अभिव्यजना का विकास हुआ है जिसे हम साहित्य कहते है, फिर भी जो कुछ उपलब्ध है उसका निकटतम ब्योरा इस प्रकार है।

एक बात तो आरम्भ मे ही स्पष्ट रूप मे कह दी जा सकती है कि 'एपिक' (ऐतिहासिक, वीर, महाकाव्य और नाटक, ड्रामा) जिस रूप मे हम उन्हे आज जानते है, प्राचीन मिस्र की साहित्यिक परपरा मे न थे। 'एपिक' काव्य का निकटतम रूप हमे मिस्र की उस काव्य-प्रशस्ति मे मिलता है जो रामसेज द्वितीय[1] की हत्तीसघ की विजय (१२६५ ई० पू०) पर रची और खोदी गई थी। प्रशस्ति वाचक होने से कविता अतीव अतिरजित है और यद्यपि यह स्वीकार किया जा सकता है कि राजा की व्यक्तिगत वीरता से वह विजय मिली, नि:सदेह उसकी शब्द-योजना नितान्त हास्यास्पद है। स्वय रामसेज उससे इतना सन्तुष्ट था कि उसने अपने तीन-तीन मदिरो पर खुदवा कर उसे घोषित किया। वस्तुत: वह इतनी सुन्दर मानी गई कि सौ वर्ष बाद रामसेज तृतीय (११६८-६७ ई० पू०) उसकी शब्दावली अपनी प्रशस्ति मे जोडने से न चूका। पेपिरस पर उसकी एक नकल आज भी सुरक्षित है।

आज की परपरा के नाटक तो मिस्र के साहित्य मे न थे। परन्तु मध्यकालीन यूरोप के-से रहस्यमय धार्मिक नाटक निश्चय ही तब के मिस्र मे खेले और पसन्द किए जाते थे। 'प्राचीन राजकुल' के पिरामिडो की भीतरी दीवारो पर खुदे कुछ ऐसे नाटको के खण्ड मिले है जिनसे इस निष्कर्ष की पुष्टि होती है। किसी प्राचीन धार्मिक नाटक का डायलॉग (बातचीत) उस पश्चात्कालीन अभिलेख मे भी मिला है जिसे मिस्री पुराविद् 'मेम्फिस धर्मशास्त्र का अवशेष' कहते है।

वस्तुत: मिस्री नाटक का प्राचीनतम खण्ड वह है जिसमे 'बारहवे राजकुल' के राजा सेनुसर्त प्रथम[2] का राज्यरोहण (१६७२ ई० पू०) दिखाया गया है। नाटक मे राजा ने तो स्वय राजा का पार्ट किया था। और देवताओं का पार्ट मन्दिर के पुरोहितो ने खेला था। अभिनय सम्भवत साम्राज्य के सभी प्रधान नगरो मे हुआ था। जान पडता है कि इस प्रकार राज्यारोहण का प्रदर्शन मिस्र मे प्राचीनतम काल से होता आया था और जब तक वह स्वतन्त्र रहा तब तक होता रहा था। भारत मे रामलीला मे राम का राज्यारोहण (राजगद्दी) भी उसी परपरा मे है। अबिदोस से प्राप्त एक समाधिपट पर एक

---

१. Ramesses II, २. Senusert I

नाटक-खड खुदा हुआ है जिसमे लोकप्रिय देवता ओसिरिस[1] के जीवन-मरण की कथा नाटकीय रूप से प्रदर्शित है।

मिस्री लिरिक कविताए विपुल मात्रा मे उपलब्ध है और उनका काव्य-स्तर भी काफी ऊचा है यद्यपि भाषा की उच्चारण-पद्धति नष्ट हो जाने के कारण उसकी छन्द-शैली का अनुमान नही किया जा सकता। सम्भवत मिस्री लिरिको मे तुक का प्रयोग नही होता था। परतु वाक्यो की लम्बाई आदि से पता चलता है कि उसमे पक्तियो का विभाजन और उनकी सख्या आदि का परिमाण 'स्टैन्जा' के रूप मे रहता था। मिस्री लिरिक कविता मे श्लेषात्मक प्रयोगो का बाहुल्य था। वस्तुत श्लेषात्मक शैली का उपयोग केवल पद्य मे ही नही, गद्य तक मे होता था। उन लिरिको का विषय-परिमाण प्रभूत है। प्राचीनतम लिरिक पिरामिडो के अभिलेखों मे है। उनमे साहित्यिक गुण का अभाव है। उनका प्रयोग मन्त्र के रूप मे हुआ है जिससे स्वर्ग जाती हुई राजा की आत्मा को राह मे किसी प्रकार की क्षति न हो। उन्हीके बीच जहा-तहा राजा की प्रशस्ति गाई गई है। उनका विकास पहले मध्यकालीन राजकुलो के 'ताबूत लेखो' मे हुआ। फिर नये राजकुल की 'मर्त्य-पुस्तको' मे। इनका परिचय १३७५ ई० पू० के उस लिरिक मे हुआ जो एकेश्वर 'अत्तन' की प्रार्थना मे गाई गई थी। तूतन खामन के पिता फेरो अखनातून[2] ने मिस्र के सारे देवताओ का अन्त कर एक सूर्य देव की प्रतिष्ठा की थी। वह देवता अत्तन था। अखनातून सभवत ससार का पहला एकेश्वरवादी था। उस लिरिक कविता की रचना शायद उसीने की थी।

'क्लासिकल' युग का बहुलतम लिरिक-काव्य बारहवे राजकुल के राजा सेनुसत तृतीय[3] की प्रशसा मे गाए गए है। ये निश्चय ही प्राचीन राजकुल कालीन कविताओ से भावरूप मे सुदर है परन्तु अट्ठारहवे-उन्नीसवे राजकुलो की कविताए इनसे कही अभिराम है। इनमे सबसे मधुर वह है जो फैरो-सम्राटों मे सबसे महान् थुतमोज़ तृतीय[4] की प्रशस्ति मे रची गई है और कारणक के मन्दिर मे शिलापट्ट पर अभिलिखित है। कविता शालीन है, वस्तुत. अतिरजित, उसकी उपमाए हृदयग्राही और शक्तिम है। यह इतना लोकप्रिय हुई कि सदियो पीछे तक फैरो इसकी इबारत और पक्तिया अपनी प्रशस्तियों मे प्रयुक्त करते रहे।

मिस्र से प्रचुर मात्रा मे प्रेम सम्बन्धी लिरिक साहित्य मिला है। अभाग्यवश वे अशत: ही सरक्षित है जिससे उनका उचित मूल्याकन हो सकना कठिन है। उनमे कल्पना का बाहुल्य है। उनमे से एक वाटिका स्थित प्रणयीयुगल का वर्णन करती है। बगीचे के वृक्ष उनका मधुर भाषणो द्वारा स्वागत करते है। लिरिको मे सुन्दरतम एक का वह भाग

१. Osiris ; २. Pharaoh Akhnaton ; ३ Senusert III (१८७८-४० B. C.) ४. Thutmose III (१४७० B. C.)

है जिसमें निराश मानव का अपनी आत्मा से डायलॉग सुरक्षित है। आत्मघात की भावना से प्रेरित वह कहता है-

आज मेरे मन मे मृत्यु है
रुग्ण के स्वास्थ्य लाभ के बाद जैसे
जैसे बीमारी से उठने के बाद।

आज मेरे मन में मृत्यु है
अगुरु की सुरभि की भांति
आंधी के दिन आश्रय मे बैठे-से।

आज मेरे मन में मृत्यु है
कमल की उन कलियो की गन्ध जसे,
जो मदिरा भरे चषक पर तर रही हो।

आज मेरे मन मे मृत्यु है
जैसे तूफान लौट गया हो,
जैसे समर से लोग लौट पडे हो।

आज मेरे मन मे मृत्यु है
जैसे आकाश बुहर जाता है,
जैसे आदमी अनबुझे को बूझ लेता है।

आज मेरे मन में मृत्यु है
घर लौटने की उस आदमी की उत्कट कामना की भांति
जो सालो कैद मे गुजार चुका हो।

ऊपर कहा जा चुका है कि मध्यकालीन राजकुलो का युग साहित्य की दृष्टि से बडा समृद्ध है। इसी काल कहानी साहित्य का भी आरभ हुआ। इन सुन्दर कहानियो मे से एक 'नौविप्लुप माझी' की है। यह कहानी कहानी के भीतर की कहानी है—'सहस्र-रजनी चरित' की कहानी-सी। माझी का जहाज तूफान मे टूट जाता है। उसके साथी समुद्र में डूब जाते है। वह अकेला बहता हुआ एक ऐसे जादू के द्वीप मे पहुचता है जहा का स्वामी एक सर्प है। सर्प देवोत्तर शक्तियो से सपन्न है। उसकी कथा सुनता और उसपर दया करता है। फिर बहुमूल्य उपहारो से एक जहाज भरकर उसीसे माझी को भेज देता है। कहानी माझी स्वय कहता है। इसमे कल्पना का एक अद्भुत जगत् निर्मित है। परन्तु इन कहानियों मे सबसे सुन्दर 'सिनुहे की कहानी' है। यह कहानी अनेक आधारो मे मिली है, पेपिरस पर लिखी, चूना-मिट्टी के पट्टों पर खुदी। प्रकट है कि सदियों लोग इसकी

नकल करते और इसे पढते रहे थे। बारहवे राजकुल के फेरो एमेनेम्हेत प्रथम[1] की मृत्यु (अथवा हत्या) के बाद एक मिस्री अमीर सिनुहे देश छोडकर भाग जाता हे। भागने का कारण जैसे जान-बूझकर वर्णन मे दबा दिया गया हे जिससे रहस्यमय होकर कहानी का प्रभाव और बढ जाता है। वह सीरिया मे शरण लेकर वहा के अमीर की कन्या से विवाह करता है। उसका वहा एक परिवार खडा हो जाता है पर उसे वतन नही भूलता। स्वदेश लौटने के लिए वह लालायित है। फेरो के मरने पर जब सेनुसेर्त प्रथम राज्यारोहण करता है, तब उसे मिस्र लौटने का आदेश मिलता है और वह लौट आता है। कहानी के अनेक स्थल बडे सुन्दर है। भागते समय सिनुहे की मन स्थिति, सीरिया के आक्रान्ता शत्रु के साथ उसका द्वद्व युद्ध आदि बडी आकर्षक रीति म वर्णित है। जब वह लौटकर स्वदेश के राज दरबार मे जाता है तब उसकी विदेशी वेश-भूषा का वर्णन कर कथाकार सुन्दर विनोद प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार एक कहानी 'वाचाल किसान' की हे। मजिस्ट्रेट के इजलास मे वह अपना मुकद्दमा इस खूबी और वाक्य रीति से कहता है कि हाकिम बगैर फैसला दिए बार-बार उससे उसकी कहानी सुनता हे जिससे वह सम्राट् के मनोरजन के लिए लिख ली जाए। कहानी की परम्परा प्राय हजार वर्ष बाद तक मिस्र मे जीवित रही। पश्चात्कालीन राजकुलो के समय की कहानिया तो अनेक उपलब्ध है, एक डेमोटिक भाषा मे भी सुरक्षित मिली है। इनमे से एक 'मनोरजक कहानी' अभागे राजकुमार की है, उसके प्रणय और भाग्यहीन परिणाम की। 'दो भाइयो की कहानी' भी बडी प्रभावोत्पादक है और 'वेनामुन की यात्रा' तो और भी। वेनामुन पतनोन्मुख मिस्री साम्राज्य का राजदूत है जो अनेक दिशाओ मे भ्रमण करता हे परन्तु जिसका अपमान इसलिए होता हे कि मिस्री प्रताप का प्रभाव अब विदेशो मे मिस्रियो की रक्षा नही कर पाता।

गीजा के स्फिक्स के पास जो एक शिलापट्ट मिला, इसपर फेरो की शारीरिक शक्ति सबधी—विशेषतः खेल की—प्रदर्शनो से भरी अनेक कहानिया एकत्र गुथी मिली। इनके पाठ अन्यत्र भी मिले है। इसकी विशिष्ट कहानी आएनहोतेप द्वितीय[2] सबन्धी। उसमे लिखा है कि अट्ठारहवे राजकुल के इस राजकुमार ने (जो बाद मे फेरो हुआ) तीरन्दाजी, नौका खेने और रथाश्वो के शासन और सचालन मे अपने सारे प्रतिद्वद्विया को परास्त कर दिया। इससे उसका इतिहास प्रसिद्ध पिता थुतमोज तृतीय बडा प्रसन्न हुआ।

---

१. Amenemhet I (१९९२-७२ B C.) · २ Amenhotep II (१४५०-२५ B C.)

इनके अतिरिक्त कुछ आचार (अथवा नैतिक) ज्ञान सबधी साहित्य प्राय प्रत्येक युग का उपलब्ध है जो असामान्य है। इनको साधारणत ज्ञान-पोथिया कहते है। इनमे से अन्तिम पोथी, जो कहावतो के रूप मे तरुणो को दिए उपदेश है, १००० ई० पू० के लगभग प्रस्तुत हुई। इनमे से प्रत्येक पोथी के साथ उसके स्रष्टा का नाम सबद्ध है। ये कहावते बाइबिल की कहावतो मे इतनी मिलती है कि इसमे सन्देह नही कि एक ने दूसरे से ली है और चूकि संभवत मिस्री कहावतें पहले की है, बाइबिल ने ही उन्हे वहा से लिया होगा। इनमे से विशिष्टतम सग्रह उन कहावतो का है जिनका रचयिता पाचवे राजकुल (लगभग २४०० ई० पू०) का एक वजीर प्ताहोतेप[1] है। इसकी नकल अन्यत्र से भी मिली है। इनमे सगृहीत नसीहतें विवाह, नारी, भोजन आदि के सम्बन्ध मे है। साथ ही सरकारी अफसरो, राजदूतो, नेताओ के सम्बन्ध मे भी कुछ है, और कुछ माता-पिता और गुरुजनो के प्रति आदर सम्बन्धी है।

इन्ही नसीहतो की परपरा मे कुछ ऐसा साहित्य भी है जो सामाजिक न्याय और अच्छे शासन की माग करता है। उससे प्रकट है कि देश किस मात्रा मे गरीब था और फैरो की अमित स्वर्ण सम्पत्ति के बावजूद प्रजा कितनी कगाल थी। साहित्य का एक वर्ग बडा दिलचस्प है। लगता है कि लिखने का पेशा, जैसा कि हजारो-लाखो अभिलेखो से प्रकट भी है, जोर पर था और महत्त्वाकाक्षी पिता अपने बच्चो को लिपि सिखाने वाले स्कूलो मे भरती करा दिया करते थे। वहा ये लडके पेपरिस साहित्य खडो की नकल किया करते थे। इस प्रकार की काफी लिखावटे इन लडको की मिली है, जिनपर उनके गुरुओ का सही किया हुआ भी है। इस वर्ग की लेखमालाओ से मिस्र के प्राचीन-साहित्य पर बडा प्रकाश पडा है क्योकि नकल करते समय विद्यार्थियो को गुरु प्राचीन कथा-साहित्य आदि के खड दे दिया करते थे। ये लेख मालाए स्वय तो पीछे की है, प्राय उन्नीसवे-बीसवे राज-कुलो के समय की, परतु उनपर मश्क किया हुआ साहित्य पुराना है। एक मजे की बात यह है कि लेखक अपना पेशा निहायत अच्छा समझते थे और अपनी तुलना मे व्यापारियो और सैनिको को तुच्छ। एक पेपरिस लिपिपत्र पर दोनो के अप्रत्याशित मृत्यु आदि के दुर्भाग्यो पर दुःख प्रकट किया गया है।

कॉप्टिक मे भी कुछ साहित्य लिखा गया, पर यह अधिकतर ईसाई साहित्य है, बाइबिल आदि के अनुवाद के रूप मे। तब तक मिस्र के समुन्नत युगो का ह्रास हो चुका था और जो कुछ वहा लिखा गया वह मिस्रियो ने नही विदेशियो ने लिखा।

---

1. Ptahhotep

१०. युगोस्लाव साहित्य

युगोस्लाव का साहित्य कई स्लाव का आज सम्मिलित साहित्य है। परन्तु प्राय दो सदी पहले स्लाव की जातिया अलग-अलग कबीलो मे बटी थी और उस देश मे वे तब आई जब रोम और कुस्तुन्तुनिया के परस्पर विरोधी चर्चों मे द्वन्द्व छिडा था। स्लोवीन और क्रोआत्त रोम के प्रभाव मे आए। उन्होने अपना साहित्य लैटिन भाषा और रोमन अक्षरो मे लिखा और पूर्व के सर्ब तथा मान्तीनेग्रिनो ने कुस्तुन्तुनिया के परम्परावादी ग्रीक चर्च का आश्रय लिया और ग्रीक अक्षरो मे अपने भाव व्यक्त किए। वही अक्षर आज भी युगोस्लाविया मे चल रहे है।

युगोस्लाविया का साहित्य भी अन्य पूर्वी यूरोपीय जातियो की ही भाति पहले लैटिन मे था। वह अधिकतर धार्मिक था। प्राचीनतम साहित्य वहा अन्य जातियो की अपेक्षा सर्बों का है। अन्य मध्यकालीन जातियो की ही भाति सर्बों का साहित्य भी धर्म-प्रधान था। ग्यारहवी सदी से ग्रीक से अनुवाद होने लगे। साथ ही सर्बों ने अपने संतो की कहानिया भी अपनी भाषा मे लिखी। इस प्रकार स्टीफेन[1] और संत सावा[2] ने अपने-अपने पिता के जीवन-चरित लिखे। स्वय संत सावा का जीवन-चरित सर्ब भाषा मे मिलता है। बर्लाम और जोज़ाफत तथा सिकन्दर महान् की कहानिया भी तब लिख डाली गई। वस्तुत यह कहानिया सारे यूरोप के मध्ययुग की है।

प्रकट है कि ऊपर लिखे साहित्य का महत्व अधिक न था। वास्तविक महत्व लोक-साहित्य का है जो उस काल रचा अथवा एकत्र किया गया। युगोस्लाव का वह साहित्य किसी यूरोपीय जाति के तद्वत् साहित्य से कम नही। उनके लोकगीत तो काफी प्राचीन है और नारियो के गीत तो कम से कम १३वी सदी ई० के है। ये गीत व्यक्तिगत है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को चित्रित करते है।

लोक-साहित्य का महत्वपूर्ण अग उन वीर काव्यो का है जिनमे 'नेमान्य कुल' का चरित वर्णित है। वीर काव्यो के दो विशिष्ट भाग है, एक वे जिनका सम्बन्ध १३८९ के कोसोवो के युद्ध से है और दूसरे वे जो हिरो मार्को काल्यिविच से सम्बन्ध रखते हैं। ये 'एपिक' और कुछ पछले काल की कविताए युगोस्लाव लोक-काव्य की सुन्दरतम रचनाएं है। इन कविताओ मे अधिकतर तो अपनी घटनाओ की समकालीन है, इनमें से पिछली

---

१. Stephen ; २ St Sava ;

सभवत १६वी सदी की है। समय इनका चाहे जो भी हो इसमे सदेह नही कि है वे अत्यत सुन्दर और हृदयग्राही। १८वी सदी के अत मे जब उनका ज्ञान पश्चिमी यूरोप के सहृदयो को हुआ तो वे इनकी मार्मिकता पर मुग्ध हो गए। लोकसाहित्य, विशेषत लोकगीत, यद्यपि वे पहले सर्बो की बोली मे लिखे गए थे कालान्तर मे युगोस्लाविया के निवासी हर भाग मे पहुचे और वहा की स्लाव जातियो के समान रूप से उपास्य बन गए। एड्रियाटिक सागर के तट पर बसने वाले उस्कोको के भी सर्बो की भाति अपने गीत थे। उस्कोक वीर माझी थे और तुर्क विजेताओं के जहाजो पर निरन्तर छापे मारते रहते थे।

काव्यो मे कोसोवा की युद्धभूमि पर बनेज लाजार की मृत्यु का वर्णन बडा मार्मिक है। उनमे उसके साथियो—मिलोश ओबिलिच, युग बोगदान और उसके दस बेटो—के कृत्यो का सुन्दर वर्णन हुआ हे। ये सब के सब उस दिन उसी युद्ध मे मारे गए थे। फिर उनमे मार्को काल्येविच और उसके अद्भुत घोडे शग्त्स का भी अभिराम वर्णन हुआ है। मार्को बाल्कन जातियो का हीरो हे जिसने उनके लिए बडी-बडी मुसीबतो का सामना किया था। क्रोआत, स्लोवीन और सब तीनो जातियो ने उसके चरित्र गाए है। लोक साहित्य मे पिछली घटनाओ का भी छदोबद्ध वर्णन हुआ है। १८०३ के सर्ब-द्रोह का भी उसमे विस्तृत उल्लेख है। इन गीतो की सख्या हजारो मे है। इनको वस्तुत युगोस्लाव अध गायको ने सुरक्षित रखा हे। अपने भारत की ही भाति वहा भी अधे गायक ज्यादातर तत्रियो पर पुराने गीत गाया करते थे। तन्त्री को 'गुस्ल्या' कहते थे और उसके सहारे अधे गायको को 'गुस्ल्यार।'

युगोस्लाविया के जिन भागो मे रोमन कैथोलिक धर्म का प्रचार था वहा लैटिन से भिन्न अन्य देशी बोलियो मे साहित्य की प्रगति नितान्त थोडी हुई क्योकि चर्च बराबर लैटिन के अनिवार्य प्रयोग पर ज़ोर देता था। एड्रियाटिक तट के निवासियो मे फिर भी चर्च के उस अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना जगी और उनमे स्लाव भाषा की रक्षा के लिए एक आदोलन ही चल पडा।

आधुनिक अर्थ मे साहित्य का उदय दुब्रोवनिक मे हुआ जान पडता है। दुब्रोवनिक नगरराज्य था। रेनेसा काल का बना। वहा वेनिस के अनुकरण मे धनी सौदागरो ने सुन्दर इमारते बनवानी शुरू कर दी थी और धीरे-धीरे वह नगर सुन्दरतम नगरो मे गिना जाने लगा था। १४वी सदी से ही वहा युगोस्लाव साहित्य के एक रूप का उदय होने लगा था। जो प्राचीन विजातीनी साहित्य और लोकगीत दोनो से भिन्न था—यह साहित्य इटैलियन रेनेसा के प्रभाव से विकसित हुआ। अभिजात कुलो के तरुण इटली गए और वहा उन्होने साहित्य के नेताओ मे साक्षात्कार किया। 'तास्सो' पेत्रार्च और त्रबादूरो के साहित्य से वे प्रभावित हुए। पेत्रार्च[1] का एक शिष्य १४वी सदी मे दुब्रोवनिक मे पढाने भी लगा था।

१ Patrarch

इटली की लोकप्रिय साहित्यिक प्रवृत्तियो से प्रभावित इन तरुणो ने अपने अनुवादो और स्वतन्त्र कृतियो मे इटली से सीखी भावनाओ का समावेश किया।

१५वी सदी के प्राय मध्य से कवियो का कार्य शुरू होता है और इनकी एक खासी अदद भी है। इन कवियो मे शिशिको मेचेतिच[1] था। साहित्य जो बना निश्चय ही अधिकाश मे कृत्रिम था क्योकि वह पुराने रूढिगत भावो और रूपो के अनुसार ही प्रस्तुत हुआ था। जब यह दोष उन कविताओ मे स्पष्टत प्रकट होने लगा था तब अपने छदो का उन्होने इटैलियन मॉडल के अनुरूप आकार भी बदल दिया। इन छद-शोधको मे प्रधान दिको रानीना[2] और दिको ज्लातारिच[3] थे।

उस आन्दोलन का विशिष्ट कवि ईवा गुन्दुलिच[4] था। उसने क्लासिकल शैली के अनेक नाटक लिखे—जैसे 'आर्यादिने', 'प्रोसर्पिना पर बलात्कार' और 'दुब्राव्का' उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति बीस सर्गों मे समाप्त प्रबन्ध काव्य 'ओस्मान' है। उसके १४वे और १५वे सर्ग आज उपलब्ध नही। वह काव्य तुर्कों के अत्याचार का अकन करता है और चौदहवे तथा पन्द्रहवे सर्ग उस दिशा मे विशेष सयत्न थे। अनुमानत इसी कारण उन्हे तुर्कों ने नष्ट कर दिया। कहानी मे पोलैण्ड के युवराज व्लादिस्ला के 'ओस्मान' के विरुद्ध उस ऐतिहासिक सघर्ष का वर्णन है जिसका अत १६२१ के वेकिम के युद्ध मे हुआ। काव्य की कहानी १६२३ मे ओस्मान की मृत्यु तक चलती है। गुन्दुलिच ने अपने काव्य को तास्सो की रचना 'आजाद जेरुसलम' के आधार पर रचा था परन्तु उसमे उसने बहुत कुछ तो पोलैण्ड के इतिहास का अकन किया था और अधिकतर युगोस्लाव के नेताओ के गौरव का। 'ओस्मान' दुब्रोवनिक साहित्य की सुन्दरतम कृतियो मे है। दुब्रोवनिक-कवि अधिकतर स्वान्त सुखाय लिखते थे और उनकी कृतिया हस्तलिपि के रूप मे मित्रो मे ही घूमती रहती थी। इसी कारण इस काव्य का प्रकाशन भी १८२६ के पहले न हो सका। दुब्रोवनिक साहित्य शृखला का अन्तिम विशिष्ट साहित्यकार इग्नात ज्योर्गिच[5] था। अधिकतर गद्य रचनाए तो उसने लैटिन मे की परन्तु 'मारी माग्दालिनी' नामक नाटक अपनी बोली मे लिखा।

युगोस्लाविया के स्लोवीन भाग मे साहित्य एक पृथक् रूप धारण कर रहा था। प्रिमोज त्रुबार[6] ने अपनी भाषा मे धार्मिक पुस्तको का अनुवाद शुरू कर दिया था। साथ ही उसने अपनी स्वतन्त्र पुस्तको और लेखो द्वारा भी प्रोटेस्टैन्ट सम्प्रदाय का प्रचार किया। परतु अभाग्यवश उसकी कृतिया कैथोलिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप नष्ट कर दी गई।

---

१. Sisko Mencetic (१४५७-१५२७), २. Dinko Ranina (१५३६-१६०७); ३. Dinko Zlataric (१५५८-१६०९), ४ Ivan Gundulic (१५८८-१६३८), ५. Ignat Gergjic (१६७५-१७३७), ६ Primoz Trubar (१५०८-८६)

कर लिया। वुक काराद्चिच[1] सर्ब तरुण भी उसके सम्पर्क मे आया। इस सर्ब तरुण ने अपनी भाषा के लिए एक व्याकरण लिखा था। उसके सर्ब लोकगीतो के सग्रह ने सर्बो पर गहरा प्रभाव डाला। उसी प्रकार का कार्य क्रोआतो मे ल्युदवित गया[2] ने किया। इस प्रकार उन्नीसवी सदी के पूर्वार्द्ध मे स्लावो ने अपने नये साहित्य-निर्माण के लिए पर्याप्त साधन तैयार कर लिए।

उस काल के कवियो मे प्रधान स्थान पैतर पेत्रोविच न्येगोश[3] का है। वह मान्टि-नेग्रो का बिशप था। उसका काव्य 'पार्वतीय स्रज' आधुनिक स्लाव साहित्यो की मुकुट मणि है। उसमे मान्टिनेग्रो के तुर्कों से आजाद होने की कहानी लिखी है। न्येगोश उदारवादी और रोमान्टिक आन्दोलनो तथा ईसाई धर्म और इस्लाम के सन्धिस्थल पर खड़ा है। उसी पीढी मे वर्तमान स्लोवीन काव्यधारा का प्रवर्तक फ्रास प्रेसर्न[4] हुआ। उस क्षेत्र मे उसका सहायक मातिया चोप[5] था—प्रेसर्न कवि था और उसने अपनी भाषा को समृद्ध करने के विचार मे अन्य भाषाओ से भी शब्द लिए।

देश मे एक 'इलीरियक' आन्दोलन भी चला। उसका उद्देश्य स्लोवेनिया, क्रोआ-शिया और डाल्मेशिया को मिलाकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र इलीरिया कायम करना था। १८४८ तक के अनेक युगोस्लाव कवियो को इस आन्दोलन ने प्रभावित किया। क्रोआत स्लावों मे इस आन्दोलन का बडा जोर था और स्वय स्ताको व्राज[6] ने उसमे अपना योग दिया। प्रसिद्ध क्रोआत ईवा माजुरानिच[7] स्वय उससे प्रभावित था। 'स्माइल आगा चेंगिच की मृत्यु' में एक क्रूर तुर्क सरदार की कथा है जिसको डालमेशिया की आजादी के लिए लड़ने वाले उस्कोको ने मार डाला था। साहित्यिको का एक दल पेतर प्रेरादोविच[8] के साथ हो गया जो रहस्यवादी था।

१८४८ का साल सारे यूरोप के राजनीतिक और साहित्यिक इतिहास मे क्रांति-कारी महत्त्व का था। बालकन देशो मे तो उस साल के आन्दोलन ने बड़ा जोर पकड़ा। स्वतन्त्र सर्बिया और अन्य स्लाव देशो में भी हैप्सबर्ग राजकुल के विरुद्ध विद्रोह की प्रबल भावना जगी और साहित्यिक (तथा राजनीतिक) संस्थाएं जैसे 'ओम्लादीना' (तरुण) एकाएक उठ खडी हुईं। यह आन्दोलन रोमाटिक परंपरा का था परन्तु पश्चिमी यूरोप की तद्विषयक परपरा से भिन्न। उसमे राष्ट्रीयता की भावना अधिक थी। 'इलीरियन' आन्दोलन स्लाव जाति का आन्दोलन था, यह सर्बों, क्रोआतों, स्लावोनों का अलग-अलग जातीयता का आन्दोलन था।

---

१. Vuk Karadjıc (१७८७-१८६४); २. Ljudevıt Gaj (१८०९-७२); ३. Petar Petrovıc Njegos (१८१३-५१); ४. France Presern (१८००-४९); ५. Matija Cop (१७९७-१८३५); ६. Stanko Vraz (१८१०-५१), ७. Ivan Mazuranıc (१८१४-९०); ८. Petar Preradovıc (१८१८-७२)

फ्रांक लेव्स्तिक[1] ने लोक बोलियों के आधार पर एक भाषा के निर्माण का प्रयत्न किया। परिणामत स्लोवोन गद्य का जन्म हुआ। वह १९वी सदी की एक हस्ती था। इस आन्दोलन ने सर्बो मे अनेक प्रसिद्ध लेखक उत्पन्न किए। इनमे प्रधान जमाज योवान योवानोविच[2] था। उसकी काव्यधारा ब्राको रादिचेवच[3] सर्ब राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित रोमाटिक लिरिको से ही प्रादुर्भूत हुई थी। योवानोविच की काव्यधारा अपनी जनता को प्राय तीस वर्षों तक प्रभावित करती रही। उसने 'एपिक', लिरिक, बाल-साहित्य लिखे और उन्हे किसान-सस्थाओ की प्रगति का साधन बनाया। जूरा याक्शिच[4] भी उसी दृष्टिकोण का था, उसने कविताए तो लिखी ही अपनी सर्ब जनता के जीवन पर कहानिया लिखने वाला वह पहला साहित्यकार था। उसने सर्ब-मध्ययुग पर भी कुछ ऐतिहासिक कहानिया लिखी।

क्रोआत लेखको मे प्रधान फ्राजो मार्कोविच[5] और ओगुस्त सेनोआ[6] थे। इनमे पहला आलोचक था दूसरा कवि और उपन्यासकार। १८७० के बाद युगोस्लाव लेखको पर रूसी यथार्थवादी साहित्यकारो का प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। उसी काल रूसी जनवादी साहित्यिक आन्दोलन, साहित्य और कला को सामाजिक समाधान का साधन बनाने पर जोर देने लगा था। पिछले युग की निष्क्रियता वहा अनीश्वरवादी लोक-चेतना मे बदल चली थी। चेरनिशेव्स्की[7], दोब्रोल्युबोव[8] और पिसारेव[9] ने जो समसामयिक समाज व्यवस्था पर चोट की उसका स्लाव लेखको पर बडा प्रभाव पडा। युगोस्लाविया के लेखक उस दिशा मे चैतन्य हुए। रूस से इन नये विचारो को लेकर बुल्गेरिया के ल्युबेन कारायेलाव[10] और सर्ब स्वेतोज़ार मार्कोविच[11] बेलग्रेड लौटे। मार्कोविच तो १८६८ से अपनी मृत्यु तक पुराने लेखको की चाबुक और तरुणो का उपास्य बना रहा। उसने शुद्ध कला, रोमाटिक और भावुकतावाद आदि का घोर विरोध किया। उसने जनता और किसानो के जीवन को साहित्य और कला का आधार बनाने पर ज़ोर दिया। सरकार को यह दृष्टिकोण न रुचा और उसे देश छोडकर भागना पडा। मार्कोविच से प्रभावित मिलोवान ग्लीसिच[12] ने गोगोल[13] की 'मृत आत्माए', टाल्स्टाय[14] के 'युद्ध और शाति' और गोन्चारोव[15] के 'आब्लोमोव' के अनुवाद किए। उसकी अपनी कहानिया भी बहुत कुछ उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुईं। अन्य यथार्थवादी साहित्यकारो मे प्रधान याको वेसेलिनो-

१ Fran Levstik (१८३१-८७), २ Zmaj Jovan Jovanovic (१८३३-१९०४), ३. Branko Radicevic (१८२४-५३), ४ Djura Jaksic (१८३२-७८) ५. Franjo Markovic (१८४५-१९१४) ६ August Senoa (१८३८-८१), ७ Chernyshevsky, ८ Dobrolyubov; ९ Pisarev; १० Lyuben Karayelov, ११ Svetozar Markovic (१८४६-७३); १२. Milovan Th Glisic (१८४७-१९०८) १३ Gogol - १४ Tolstoy, १५. Goncharov

विच[1] और सिमो माताबुल्ज[2] थे। इनमे दूसरे ने अपने उपन्यासो मे उस्काको का जीवन चित्रित किया।

क्रोआत यथार्थवादी प्रकृतिवादी लेखको मे मुख्य सान्दोर जाल्स्की-बाकिच[3] था। स्लोवीनो मे योसिप युर्चि[4] विशेषत याको केर्स्निक थे[5]। स्लोवीनो मे निस्सदेह यथार्थवादी प्रेरणा इतनी प्रभावोत्पादक न हो सकी। उनके विशिष्ट साहित्यकार ईवा ककर[6] ने तो प्रतीकवाद की भी शरण ली।

उन्नीसवी सदी का अत होते ही युगोस्लाव लेखको मे प्रतीको और उनसे सबन्धित आन्दोलनो का आकर्षण जगा। वोजीस्लाव ईलिच[7] जो सर्व कवियों मे सबसे विद्वान् था इसी प्रवृत्ति का कवि रह चुका था। फिर भी पुश्किन[8] और लरमन्तोव[9] ने उस पर प्रभाव डाला और उसके साथ ही अगली पीढी के लेखको का दृष्टिकोण विशेषत प्रथम महायुद्ध से कुछ काल पूर्व आशावादी हो चला। योवान दचिच[10] और बोरिस्लाव स्ताकोविच[11] क्रमश कवियों और लेखको मे इस दृष्टिकोण के प्रतिनिधि थे। यह दूसरा प्रसिद्ध स्लाव उपन्यास 'दूषित रक्त' का लेखक था। क्रोआतो मे उस काल का विशिष्ट साहित्यकार दुब्रोवनिक का निवासी ईवो वोजनोविच[12] हुआ जिसने अपनी रचनाओ मे अभिजातीयता की टूटती दीवारो का अकन किया और समूची युगोस्लाव जाति की एकता पर ज़ोर दिया। आन्ते ट्रेसिच पाविचिच[13], कारदूची[14] के प्रभाव मे आया। उसने निराशावादी दर्शन का अपनी 'ट्रिलोजी' (तीन भाग मे ड्रामा) 'फिनिस रई पुब्लिकी' में वितन्वन किया पर इटली को प्रजासत्तात्मक प्रवृत्तियो का सिहावलोकन करने के कारण मुसोलिनी ने उसका दूसरा भाग 'उतिका का कातो' जब्त कर लिया।

स्लोवीन साहित्य का विशिष्ट कवि ओतोन ज़ुपान्चिक[15] था। उसने पिछले आदोलन की अपने दृष्टिकोण द्वारा समष्टि प्रस्तुत की। प्रथम महायुद्ध के बाद सर्ब, क्रोआत और स्लोवीन समान राष्ट्र के अग बने। इससे 'युगोस्लोवेन्स्का ओम्लादिना' आन्दोलन को बडी शक्ति मिली और युगोस्लाविया के साहित्य मे एकता भी आई। यह एकता कुछ आसान न थी। इसमे दो स्वतन्त्र सास्कृतिक धाराओ—लैटिन-इटैलियन-जर्मन और ग्रीक-बिजान्तीनी-बाल्कनी—का परस्पर विरोधी योग था। पिछले युद्ध मे सर्ब और क्रोआत विरोधी शक्तियो की ओर से लडे थे, इससे यह कार्य और कठिन हो गया था।

---

१ Janko M. Vaselinovic (१८६२-१९०५); २ Simo Matavulj (१८५२-१९०८); ३ Sandor Djalski-Bakic (जन्म १८५४); ४. Josip Jurcic (१८४४-८१), ५. Janko Kersnik (१८५२-९७), ६ Ivan Cankar (१८७६-१९१८), ७. Vojislav J. Ilic (१८६२-९४), ८. Pushkin, ९ Lermontov, १० Jovan Ducic (जन्म-१८७४), ११. Borislav Stankovic (१८७६-१९२७), १२. Ivo Vojnovic (१८५७-१९१९) · १३. Ante Tresic— Pavicic (१८६७-१९४०), १४. Cardvcci; १५. Oton Zupancic (ज० १८७८)

साम्यवाद ने अब युगोस्लावी आन्दोलनो मे प्रवेश किया। तरुण अधिकतर उस क्षेत्र मे प्रयत्नशील हुए। मिरोस्लाव क्रलेजा[१] ने अपनी एक कृति लेनिन को समर्पित की और अपने ग्रन्थ 'क्रोआत देवता मार्स' मे युद्ध के सम्बन्ध मे जनता का दृष्टिकोण प्रकट किया। नात्सी आक्रमण (१९४१) के समय उसकी मृत्यु हो गई जिससे अकाल ही उसके साहित्यिक नेतृत्व और भाव-सम्पदा का अन्त हो गया।

निकोलाज वेलीमिरोविच[२] आलोचक के रूप मे यूरोप और अमेरिका मे प्रसिद्ध हो चुका है। उसने न्येगोश का अच्छा अध्ययन किया।

युगोस्लाव काव्यधारा मे लोक-काव्य का मूलत योग है। लोक साहित्य की परम्पराओ मे वर्तमान साहित्यिक दृष्टिकोण के समर्थन की अद्भुत शक्ति है। इसी कारण युगोस्लाविया का साहित्य पृथ्वी पर अपने पाव टिकाए रख सका है और जीवन से सीधा आहार पाता आ रहा है। एकता का आन्दोलन भी साहित्य मे वहा अच्छा चला। और इस्लामी बोस्निया की साहित्य शाखा भी मूल धारा मे इधर मिलती जा रही है।

द्वितीय महासमर के बाद साम्यवादी दृष्टिकोण का साहित्य अधिक मात्रा मे प्रकाशित होने लगा है, उसमे युगोस्लाविया के विविध प्रातो के लोक साहित्य का योग है। वहा का रगमच लोक साहित्यिक परपरा मे प्राय अभी खडा किया गया है। नृत्य आदि लोक कलाओ का पुनरुत्थान अत्यन्त सराहनीय है।

---

१. Mıroslav Krleza ; २. Nıkolaj Velımırovıc

२१. रूसी साहित्य

: १ :

विदेशी साहित्य से संबंध

रूसी साहित्य का इतिहास वस्तुतः १९वी सदी मे एलेग्जैण्डर प्रथम के साथ आरम्भ होता है, यद्यपि इसे उसका सर्वथा प्रारम्भ नही कहा जा सकता। रूसी साहित्य का सबध स्वाभाविक ही रूसी भाषा से है और फिर रूसी इतिहास से भी, यद्यपि ऐसा नही कि साहित्य सर्वथा भाषा के आरम्भ से ही सपर्क रखता हो। साहित्य भाषा का कलेवर धारण करके भी उसके विकास की स्थिति-विशेष मे और उसके बोलने वालो के हर्ष-विषाद, जय-पराजय, सघर्षजनित भावावेगो के अनुकूल मुखरित होता है। इस विचार से तो निश्चय ही रूसी साहित्य का इतिहास रूसी जनता का इतिहास है परतु चूकि इस अध्यवसाय मे उन सीमाओ का समा सकना सभव नही, उसकी मूल मजिलो का ही निर्देश कर देना यहा समीचीन होगा।

स्लाव जाति का ७वी-८वी सदियो मे नीपर नद के तट पर कीव, स्मोलेस्क और नवगोदर नामक नगरो मे बसा होना सभवत. उस दिशा मे पहली मजिल थी। इन्ही तीनो नगरो मे रूसी जाति की पहली सस्कृति फूली। मॉस्को और सेन्टपीटर्सबर्ग को कीव की ही कालातर में विरासत मिली। इन तीनो नगरो का हवाला रूसी साहित्य के प्राचीनतम अभिलेखो मे मिलता है।

रूसी साहित्य के इतिहास पर प्रभाव डालने वाली दूसरी ऐतिहासिक घटना नार्वे आदि उत्तरीय प्रदेशोके रहने वालोका रूस पर हमला था। उन्होने उस इतिहास पर अपने गहरे पदचिह्न छोड़े और स्वय अधिकतर रूसियो मे ही खो गए। अगली मजिल रूस में ईसाई धर्म के प्रचार की थी। १०वी सदी के चौथे चरण के कीव के राजा व्लादिमीर[1] ने बाइजेन्टियन के रोमन सम्राट् की भगिनी से विवाह किया और तत्काल ईसाई धर्म का प्रचार रूस मे होने लगा। इस प्रकार रूस पश्चिमी जगत् की बौद्धिक परिधि के सपर्क मे आया। स्लावो के बीच विशेषकर बल्गेरिया और सर्बिया मे मकदूनिया की बोली का बलात्कार प्रचार भी उसी दिशा मे एक कदम था क्योकि यही प्रचार एक सदी बाद रूसी स्लावो के बीच भी जारी हुआ। पहली बार रूस का बने-बनाए विदेशी साहित्य से सम्बन्ध

१. Vladimir

स्थापित हुआ । लिखी भाषा का प्रभाव शीघ्र ही सस्कृति, कला और आचार पर पडता है और रूस के सम्बन्ध मे भी यह सिद्धान्त सार्थक हुआ । कहना न होगा कि ११वी सदी मे खीव की गणना यूरोप के शिष्टतम नगरो मे थी ।

खीव के राजकुल का सम्बन्ध फ्रास, हगरी, नार्वे और इगलैंड तक के राजकुलो से था । रूसी हस्तलिपिया जिनका सग्रह खीव के राजकुल की सरक्षा मे हुआ उस प्राचीन-काल मे भी पश्चिमी यूरोप के किसी सग्रह से घटकर न थी । खीव तब पूर्वी यूरोप की कला और सस्कृति का प्रगतिशील केन्द्र था । परतु शीघ्र ही अभाग्यवश जो ईसाई धर्म की पूर्वी और पश्चिमी दो शाखाए बनी तो यूरोप भी अनुकूल भूखडो मे बट गया। इससे रूस पश्चिमी जगत् से कटकर अलग हो गया, यद्यपि उसका वह पृथक्त्व अभी इतने महत्व का न था। ११वी-१२वी सदियो मे जो इतिहास रूस मे प्रस्तुत हुआ वह गज़ब का जनवर्गीय था । रूसी गीतो का नायक बराबर किसान का बेटा होता था जो अपनी असामान्य शक्ति से देश के शत्रु को जीत लेता था और तब पुरस्कार के रूप मे उसे तीन साल तक लगातार भट्ठी मे बैठकर स्वच्छन्द मादक पेय पीने का अधिकार हो जाता था । साहित्य की यह जनपरकता रूस मे अविच्छिन्न रूप से कायम रही है ।

१२वी सदी के खीव का साहित्य अधिकतर खीव के 'क्रॉनिकल' नेस्टर के 'क्रॉनि-कल' और 'राजा ईगोर के हमलो की कहानी' मे सुरक्षित है । इनमे पहला मठ मे लिखा गया था और वह वीर काव्य के गुणो से विभूषित है । रूसी प्रारभिक इतिहास-लेखन पर इनका बडा प्रभाव पडा । 'राजा ईगोर की कहानी' गद्यकाव्य है जो तत्कालीन रूसी लिखी जुबान का अद्भुत स्मारक है । इसकी मौलिकता, इसका ऐतिह्य,इसकी अकन-शक्ति यूरोप के साहित्य के इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है । इगोर ने उत्तरी नवगोदर से दक्षिण के पोलोव्त्सी नाम की खानाबदोश जाति पर ११८५ मे हमला किया था । पहले तो वह जीतता गया परतु बाद मे उसे शत्रु ने ऐसा पराजित किया कि उसे घर लौटना पडा । गद्य के रूप मे गति और काव्य शक्ति मे उस काल की रचनाओ मे यह कृति असा-धारण है । इसका वर्णन बडा तेजस्वी और भाव प्रधान है । निसर्ग का उसमे निरन्तर अकन है । ईगोर वाल्मीकि के राम की ही भाति नदी-नालो से, पेड-पत्तो से बात करता है । अत मे उसका राज्य उसे फिर मिल जाता है और उसकी प्रजा उसे अपना शासक स्वीकार करती है । १८वी ईस्वी मे यह कहानी पहले पहल चौदहवी सदी की पाण्डुलिपि के आधार पर प्रकाशित हुई । यह अमूल्य कृति मास्को के अग्निकाड मे बाद मे जल गई ।

१३वी सदी मे तातारो के धावो ने रूस को प्राय' तीन सदियो के लिए निष्क्रिय कर दिया । १२४० मे खीव को तातारो ने उजाड़ डाला और रूसियो को दक्षिण से उत्तर हट जाना पडा । अब रूस के जीवन और सस्कृति का केन्द्र मॉस्को बना । धर्म का क्षेत्र अब भी स्वतन्त्र था और १४५३ मे जब कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की की मरणान्तक चोट पड़ी तब

मॉस्को जैसे उधर का नया रोम बन गया। फिर भी रूमियो मे सजीवता का सचार करके भी चर्च सर्वत्र की भाति वहा भी प्रतिगामी सिद्ध हुआ। १४वी सदी से १८वी सदी के आरम्भ तक ५०० साल रूस के इतिहास मे साहित्य की दृष्टि से प्राय सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ। पश्चिमी यूरोप उस बीच क्राति पर क्राति पर करता रहा पर रूस सोया पडा रहा। पन्द्रहवी सदी की 'खोजेनिया जात्रिमोर्या' तीन समुद्र पार की यात्रा नाम की एक मनो-रजक हस्तलिपि मिली है जिसमे अफासानिया निकितिन की रूस से भारत यात्रा का वर्णन है। वह (१४६६-१४७२) वास्को डिगामा से प्राय ४० वर्ष पहिले भारत आया था और बहमनी सुल्तान मुहम्मद शाह तृतीय (१४६२-८३) के राज्य मे घूमता फिरा था। यह हस्तलिपि भी जो काराम्जिन के रूसी इतिहास के छठे खड मे छपी, पन्द्रहवी सदी के गद्य का एक सामान्य रूप प्रस्तुत करती है।

रूस के नवनिर्माण मे फिर भी जब-तब कुछ प्रयास होते रहे। ईवा तृतीय से विवाह के बाद सोफिया पालिओलोगा कुस्तुन्तुनिया से अनेक इटालियन शिल्पी आदि ले कर रूस आई और रूस का नवीकरण एक प्रकार से शुरू हुआ। 'भयानक' ईवा के शासनकाल मे मास्को मे जो छापाखाना खुला तो १५६४ मे वहा पहली पुस्तक छपी। परन्तु साहित्य अभी चर्च के ही अधीन था, उसमे अगला कदम बराबर सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था। इसलिए स्वाभाविक ही १७वी सदी तक उस क्षेत्र मे कुछ प्रगति न हुई। उस सदी मे डिम-ट्रियस एक साल के लिए मॉस्को की गद्दी पर बैठा। वह अत्यन्त प्रगतिवादी था। परन्तु अभाग्यवश उसे साल भर बाद ही अपनी प्रगतिशीलता का मूल्य अपने रक्त से चुकाना पडा। कुछ काल बाद खीव एक बार फिर जागा और अपना पुराना ज्ञान स्वायत्त करने लगा। खीव की देखादेखी मॉस्को मे भी जेसुइट धार्मिक स्कूलो की परपरा जागी और धार्मिक पुस्तको का सुधार होने लगा। १७वी सदी मे खीव से कुछ विद्वान् मॉस्को आए जिनमे प्रधान सीमियन था—सीमियन पोलोत्स्की रूस का पहला पद्यकार। १८वी सदी तक साहित्य मे सीमियन की ही परपरा चलती रही।

१७वी सदी के उत्तरार्द्ध मे पोलैड ने भी रूसी साहित्यिक प्रगति मे अपना योग दिया। मॉस्को नगर के समीप ही स्लोबोदा नाम की जर्मनो की आबादी थी जो यूरोपियन सस्कृति का केन्द्र बन गई थी। यही रूसी रगमच का जन्म हुआ था। १६७२ ईस्वी मे ज़ारेविच के जन्म के अवसर पर ज़ार एलेक्सिस[1] ने यही के प्रोटेस्टेन्ट पादरी ग्रेगरी को एक 'कॉमेडी' (विनोदप्रधान नाटक) लिखने का आदेश दिया। एक थियेटर की वहा स्थापना हुई और नाटक खेले जाने लगे। १६७४ मे वही 'बैले' (मूकनृत्य) का आरम्भ हुआ। एक नाटक कम्पनी वहा निरन्तर रहने लगी और जर्मन नाटक रूसी अनुवाद मे प्रस्तुत किए जाने

---

१. Tsar Alexis

लगे। सीमियन पोलोत्स्की द्वारा लिखा पहला मौलिक रूसी नाटक 'फिजूलखर्च बेटा' था।

१७वी सदी के अन्त तक रूस तातारो के जूए से भी आजाद हो गया था यद्यपि स्वय रूस के भीतर उन सहारक शक्तियो की कमी न थी जो बराबर एक दूसरे से रूस मे लोहा लेती रहती थीं। एक बार तो पोलो ने मॉस्को तकपर अधिकार कर लिया पर शीघ्र ही रूस अपने पैरो पर खडा हो गया। रूस के नवीकरण मे पीटर महान् का बडा हाथ था। उसने देश को धर्म के विधानो से स्वतन्त्र कर दिया और उसकी रूढिवादिता के विरुद्ध कमर कसकर वह खडा हो गया। उसने रूसी लिपि और भाषा सरल कर दी और अनेक विदेशी ग्रन्थो का रूसी मे अनुवाद कराया। पहला रूसी पत्र उसीकी सरक्षा मे निकला। फिर भी पीटर की सक्रियता से साहित्य मे तात्कालिक प्रगति न हुई। उसने राजनीतिक क्षेत्र मे तो निश्चय ही सफलता पाई और यूरोप की ओर अपने देश मे 'खिडकी' भी खोल ली परन्तु सफलता अन्तत समय आने पर ही मिली। पश्चिम की ओर से विचारो की अटूट धारा जो चली निश्चय ही रूसी जीवन को, विशेषत उसके साहित्य को प्रभावित किए बिना न रही। १८वी सदी मे फ्रेच और जर्मन विचारो का रूसी इतिहास पर प्रभूत प्रभाव पडा। तातिशखेव और मिखायल लोमोनोसोव[1] उसके ज्वलन्त प्रमाण हे।

मिखायल लोमोनोसोव गणितज्ञ, रासायनिक, ज्योतिषी, अर्थशास्त्री, इतिहासकार, भूतत्ववेत्ता, वैयाकरण, कवि सभी कुछ था। उस किसान के बेटे ने बडी कठिन परिस्थितियो मे मारबुर्ग और फ्राइबुर्ग मे शिक्षा ग्रहण कर रूसी भाषा मे दूरगामी परिवर्तन किए। उसीके प्रयत्नो से साम्राज्ञी एलिजाबेथ ने १७५५ मे मॉस्को यूनिवर्सिटी की स्थापना की। आज मॉस्को विश्वविद्यालय के प्रागण मे उस लोमोनोसोव की आदम मूर्ति खडी है। मॉस्को यूनिवर्सिटी की स्थापना से रूसी सस्कृति मे एक युगान्तर उपस्थित हो गया। फ्रेच प्रभाव का कारण प्रिस कातेमीर[2] था जिसने पहला व्यग्यात्मक रूसी पद्य लिखा, सीमियन की परपरा मे नही, शुद्ध साहित्यिक परपरा मे। उसकी पद्यरचना मुख्यत ब्वालो की फ्रेच शैली पर अवलम्बित थी। परन्तु उससे भी बढकर रूस पर फ्रेच विचारो का प्रभाव जर्मन राजकुमारी साम्राज्ञी कैथेरिन[3] द्वितीय ने डाला। कैथेरिन उदारवादी निरकुश शासको मे गिनी जाती है। फ्रास के विश्वकोष के प्रसिद्ध अनेक लेखक—वोल्तेयर, मोतेस्क, दिदरो उसके मित्र थे। दिदरो सेन्ट पीटर्सबर्ग आया और रूसी सैनिक स्कूल फ्रासीसी शिक्षको से भर गए। रूसो के विचार भी धीरे-धीरे रूसी प्रतिगामिता की नीव को शिथिल करने लगे। परन्तु फ्रासीसी राज्य-क्राति जारशाही को अगीकार नही हो सकती थी और देश मे प्रतिगामिता का शीघ्र ही पोषण होने लगा।

१ Mikhaylo Vasilyevich Lomonosov (१७०८—१७६५), २ Antiokh Kantemir (१७०८—४४), ३ Catherine (१७२९—९६)

इसी काल रादिशचेव[1] नामक एक अफसर ने रूसी समाज (कृषक मजूर) और श्रमिक गुलामो की दशा अंकित करते हुए २० परिच्छेदो मे 'सेन्ट पीटर्सबर्ग से मास्को की यात्रा' नामक पुस्तक लिखी। १७९० मे पुलिस की अनुमति पाकर यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, फ्रासीसी राज्यक्रान्ति के केवल वर्ष भर बाद ही ग्रन्थकार को अपनी प्रगतिशीलता का मूल्य चुकाना पडा। पहले वह साइबेरिया निर्वासित हुआ, अन्त मे [illegible] दिया गया। फिर उसने आत्महत्या कर ली। रादिशचेव रूसी साहित्य का पहला शहीद था जिसने अपने स्वतन्त्र विचारो के प्रकाशन के लिए प्राणो का बलिदान कर दिया।

लोग आश्चर्य करते है कि उदारवादिनी कैथेरिन के शासन मे साहित्यिक प्रगति क्यो नही हुई, तब एक भी कवि अथवा गद्यकार क्यो नही हुआ ? कारण यह है कि कैथेरिन वस्तुत उदार न थी, फ्रेडरिक महान् आदि की नकल भर करने वाली थी। फिर भी तब अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होंने पद्य रचनाए की यद्यपि उनका साहित्यिक स्तर बहुत नीचा था। उस काल 'ओड' काफी लिखे गए और 'ओड' लिखने वालो मे देर्जाविन[2] सबसे महान् था। वह पहला रूसी कवि था और उसकी कविताए प्रथम साहित्यिक क्रान्ति लेकर भाषा मे उतरी। फिर भी राष्ट्रीय साहित्य मे विशेष प्रगति न हुई। शिष्टवर्ग की भाषा फ्रेंच थी और रूसी साहित्य स्वयं फ्रेंच नियमो के अनुकूल ही बाधा जाने लगा। ऐसा नही कि रूसी भाषा मे साहित्य सृजन की शक्ति न रही हो। जैसा लोमोनोसोव ने कहा था उसमे फ्रेंच भाषा की शालीनता थी, जर्मन की शक्ति थी, इटै-लियन का माधुर्य था, ग्रीक और लैटिन का सूत्रपरक शक्तिम वैभव था; केवल उस भाषा का सही रूप मे प्रयोग करने वाला अभी न था।

: २ :

पुश्किन-युग

रूस का नया युग पुश्किन[3] का युग है, १९वी सदी का। रूसी साहित्य का वास्तविक इतिहास, जैसा पहले लिखा जा चुका है एलेग्जैण्डर प्रथम के राज्यारोहण से शुरू होता है। उस काल जो साहित्य का अरुणोदय हुआ उसके प्रकाश मे रूस का कोना-कोना जगमगा उठा। वह युग नेपोलियन के युद्धो का था। नेपोलियन रूस से भी टकराया और १८१२ मे उसे मुह की खानी पडी। रूस ने तब प्रायः पहले पहल राष्ट्रीय एकता की शक्ति पहचानी।

---

१ Aleksander Nikolayevich Radishchev (१७४९-१८०२); २. Gavrila Romanovich Derz Havin (१७४३-१८१६); ३. Aleksander Sergeyevich Pushkin (१७९९-१८३७)

उस राष्ट्रीयता का नेता आरभ मे ला हार्प का शिष्य स्वय एलेग्जैण्डर प्रथम था जिसने देश मे उदार सुधारो की नीव डाली यद्यपि उसकी प्रतिगामिता अपने सुधारवादी दृष्टिकोण को कायम न रख सकी।

एलेग्जैण्डर प्रथम के राज्यारोहण ने साहित्य सम्बन्धी प्रतिबन्ध उठा दिए और उस अपेक्षाकृत मुक्त वातावरण से पहला लाभ उठाने वाला ग्रथकार काराम्जिन[1] था। १८०२ मे उसने 'यूरोप का सन्देशवाहक' नामक अपना 'रिव्यू' निकाला। कैथेरिन के शासन-काल मे ही वह मॉस्को आया था और जर्मन तथा अग्रेज़ी साहित्यो का अध्ययन कर स्विट्ज़रलैंड, लदन और पेरिस आदि की उसने यात्रा की थी। लौटकर अपने ही निकाले मॉस्को जर्नल मे उसने अपने यात्रा-वृत्तान्त 'रूसी यात्री के पत्र' नाम से प्रकाशित किए। इग्लैंड और स्विट्जरलैंड का हिमायती होने के कारण उसे प्रजातान्त्रिक शासन पसन्द था और उसने उसके पक्ष मे लिखा भी काफी। साहित्य मे उसकी देन विशेषतः सरल स्वाभाविक गद्य की है। अपने 'रिव्यू' मे उसने साहित्य और आलोचना के लिए काफी स्थान दिया। फिर उसने सरल जोरदार गद्य मे बारह जिल्दो मे 'रूस का इतिहास' लिखा। साहित्यिक गद्य का उसका इतिहास निश्चय ही परिमार्जित रूप था जिसमे न विदेशीपन की बू थी और न रूढिवादिता के रोडे थे। पहली बार रूसी गद्य मे लिखे ग्रथ को सफलता मिली और उस इतिहास ने रूसियो के सामने रूस को खोलकर रख दिया। स्वय पुश्किन को इस इतिहास ने प्रभावित किया और अपने 'बोरिस गोदुनोव' के लिए उसने वही से प्रेरणा पाई।

राष्ट्रीय महत्व का पहला रूसी कवि क्रिलोव[2] था। उसका रचनाकाल काफी पहले से आरम्भ होकर एलेग्जैण्डर प्रथम की मृत्यु के बाद तक है। उसके नाटक काफी सफल हुए यद्यपि उनमे टिकाऊ गुणो की कमी थी। १८०५ मे उसने नैतिक कहानिया लिखनी शुरू की और अपनी मृत्यु तक बराबर 'फेबुल' लिखता रहा। उसकी प्रारभिक कहानिया ला फोतेन की नैतिक कहानियों का अनुवाद थी। जिनमे उसने उस फ्रासीसी कवि के छन्द का ही प्रयोग किया। उस अनुवाद के साथ ही उसने स्वय भी कहानिया गढनी शुरू की, यद्यपि उसे उनके लिए भी प्रेरणा ईसप और ला फोन्तेन की कहानियो से ही अधिकतर मिली। उसका अनुवाद भी वास्तव मे सीधे अनुवाद नही, बल्कि मूल के ऊपर वे स्वतत्र कथाए है। क्रिलोव ने मूल को हृदयगम कर उसे सर्वथा नया करके उसपर अपने व्यक्तित्व की छाप डाल दी है। ला फोन्तेन की फ्रेच सर्वथा रूसी, नितात राष्ट्रीय हो गई है। एक बार क्रिलोव को पढकर कोई मूल की कल्पना नही कर सकता। नीति सम्बन्धी कहा-

१ Nikolay Mikhailovich Karamzin (१७६६-१८२६) २ Ivan Andreyevich Krylov (१७६८-१८४४)

नियो का लेखक मूलत. व्यग्यकार होता है परतु क्रिलोव व्यग्यकार होता हुआ भी प्रधानत. कवि था। कही-कही तो कविता के आधार से उठकर मर्म व्यग्य पाठक के दिल को पकड लेता है। उदाहरणत 'किसान और नदी' वाली कहानी मे किसान नदी के पास उसकी बाढ से अपने नुकसान की शिकायत करने जाते है, पर जब वहा पहुचकर उसके पानी मे वे अपनी चीजे तैरते हुए देखते है तब एक दूसरे पर नजर डालते है, सिर हिलाते है और घर लौट जाते है। भला शिकायत किससे करे। क्रिलोव की कहानियों का व्यग्य तात्कालिक राजनीतिक पृष्ठभूमि पर खूब उभरता है। नदी वाला व्यग्य स्वय रक्षक की भक्षक वृत्ति को चरितार्थ करता है। अनेक बार तो उसकी कहानिया फ्रासीसी राज्यक्रान्ति, नेपोलियन का रूस पर आक्रमण, विएना की काग्रेस आदि के व्यग्यपूर्ण प्रतिबिम्ब बन गई है। सिंह वाली कहानी मे एलेग्जैडर प्रथम की शिक्षा पर व्यग्य है। उसमे सिंह अपने बच्चे को शिक्षा के लिए ईगल(गरुड)के पास भेजता है, जिससे वह अन्त मे घोसला बनाना सीखता है। अनेक कहानिया रूसी न्याय की कमजोरियो पर व्यग्य करती है। जैसे एक मे किसान जब अपना मुकदमा भेड के विरुद्ध लोमडी के सामने रखता है तो लोमडी उलटे उसी को अपराधी एलान करती है। इसी प्रकार साहित्य पर सरकारी प्रतिबन्ध का व्यग्य उसने उस कहानी मे अकित किया है जिसमे बिल्ली के पजे मे पडी बुलबुल को गाने का प्रोत्साहन है। एक दूसरी कहानी मे बडी गम्भीरतापूर्वक भेडो से कहा जाता है कि आक्रमण होने पर भेडिए को वे निकटतम मजिस्ट्रेट के पास घसीट ले जाए। इस प्रकार रूसी साहित्य आरम्भ से ही जनपरक है, अपनी सरकार से मोर्चा लेने वाला और यह मोर्चा तब तक चलता है जब तक कि वह सरकार बदलकर सर्वथा जनवादी नही हो जाती।

क्रिलोव द्वारा प्रस्तुत साहित्य का सबसे बडा गुण उसकी सुगमता और सरलता है। दुरूहता का उसमे नाम तक नही। निरक्षर भी उसे सहज ही समझ सकता है। फलत: उसकी सफलता भी बडी व्यापक हुई। उसकी शैली कभी पुरानी नही हो सकती, उसका वर्तमान युग-युग का है। जीवन को वह जीवित घटते हुए देखता है और जैसा वह देखता है वैसा ही लिखता भी है। मुहावरेदार अर्थपूर्ण उसकी भाषा मे सहज प्रभाव है और कविता उसकी मनोरम है। उसमे गजब की खूबसूरती है।

रूसी साहित्य के विकास में उसकी आन्तरिक राजनीतिक घटनाओं का बडा योग रहा। वस्तुत. इन्ही घटनाओ के फलस्वरूप वहा साहित्य मे रोमाटिक आन्दोलन का उदय हुआ। नेपोलियन की लडाइयो में अनेक रूसी अफसरों को विदेशो मे रहना पडा था। और जब वे विएना की काग्रेस (१८१५) के बाद स्वदेश लौटे तो विचारों और नये आदर्शों से उनके दिमाग भरे थे। जीवन को उन्होने बहुत 'सीरियस' तौर से लिया जिससे पुश्किन ने उन्हे 'उत्तर के प्यूरिटन' कहा। परन्तु निश्चय ही वे क्रान्तिकारी न थे। प्रतिक्रिया की यूरोप मे लहर चलाने वाली विएना काग्रेस और मेटरनिक के सम्पर्क

मे रहकर वे क्रांतिकारी हो ही नही सकते थे। सस्कृति का नाम अनेक बातो पर पर्दा डाल देता है। उदीयमान क्रांतिकारी प्रवृत्तियो से मुह मोड लेने मे यह शब्द सहायक होता है। और उसी सस्कृति के नाम पर इन्होने 'उपकार समाज' नामक सस्था खोली जिसके ध्येय परोपकार, शिक्षा और आर्थिक अध्ययन थे। इसके नेता सेन्ट पीटर्सबर्ग की शरीर-रक्षक सेना के अफसर थे। परन्तु यह सस्था भी १८२१ मे प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा कुचल डाली गई। यद्यपि उसने आगे चल निकलने वाली क्रांतिकारी प्रवृत्तियो को सहारा दे ही दिया। १८२५ मे एलेग्जैण्डर प्रथम के मरने के बाद इतिहास प्रसिद्ध 'दिसम्बरी' विद्रोह हुआ। सम्राट् के भाई कान्स्टेन्टीन को गद्दी का अधिकार छोडना पडा और निकोलस जार[1] बना। १४ दिसम्बर को विप्लव हुआ और फौजे विद्रोही हो उठी, यद्यपि उसे कुचल डाला गया। अनेको को फासी हुई जिनमे कवि रिलीव[2] भी था।

विद्रोह क्राति तो न बन सका, परन्तु साहित्य के क्षेत्र मे उसका परिणाम दूरगामी सिद्ध हुआ। राजनीति का स्थान अधिकतर दर्शन ने ले लिया और उदारवादिता रोमैंटिक आन्दोलन की जननी हुई। इसी रोमैन्टिक प्रवृत्ति के आधार पर रूसी काव्यधारा नई शक्ति से फूट पडी। पहली बार रूसी जनता को वाणी मिली। रूसी प्रतिभा राजनीति मे प्रतिबन्ध पा कला और काव्य की ओर मुडी। दिसम्बरी विद्रोह की पूरी विरासत रिलीव को मिली। रूसी कॉमेडी के रूप मे रूसी थियेटर पर उसका कुछ कम प्रभाव न पडा। रिलीव की शैली मंज चली थी। उसकी प्रतिभा प्रौढ हो चली थी कि उसे विप्लव के परिणामस्वरूप अपने जीवन मे ३१ वर्ष की आयु मे ही हाथ धोना पडा। रिलीव की कविता मे निराशावादी करुणा है और इसी रूप मे वह उल्लेखनीय भी है। यद्यपि वह १८वी सदी के शब्दाडम्बर और फ्रेंच मॉडलो की नकल के प्रतिबन्धो से मुक्त नही। रिलीव रूसी स्वतन्त्रता के लिए लडा था और उस दिशा मे वह पहला शहीद था जिसका नाम रूसी इतिहास और साहित्य मे अमर हो गया है।

ग्रिबोयेदोव[3] ने स्वय तो दिसम्बरी-क्राति मे भाग नही लिया परतु था वह उसी युग का और उसी क्राति की उपज। उसकी कामेडी 'गोरे आत ऊमा' आज भी रूसी साहित्य मे बेजोड है। ग्रिबोयेदोव पर-राष्ट्रविभाग का अफसर था और तेहरान मे रूसी राजदूत था जहा उसका खून कर दिया गया। जब उस 'कॉमेडी' की हस्तलिपि सेन्ट पीटर्सबर्ग मे पहले पहल पढी गई तो उसने साहित्यिक केद्रो मे उथल-पुथल मचा दी। परन्तु उसका प्रकाशन १८३३ से पहले न हो सका। 'गोरे आत ऊमा' पद्य मे लिखी गई थी। उसका घटनाक्रम एक ही दिन एक ही घर मे समाप्त हो जाता है। घर मॉस्को के एक सरकारी अफसर फामुसोव

१ Tsar Nicholas २ Kondratv Fedorovich Ryleyev (१७९५-१८२६);
३. Aleksander Sergeyevych Griboyedov (१७९५-१८२९)

का है। नाटक मॉस्को के पश्चिम से प्रभावित कृत्रिम जीवन पर कठोर व्यग्य है। समाज के अन्तरग को खोलने वाली यह कॉमेडी अमर है। नाटकीय दृष्टिकोण से इसके कुछ अश अस्वाभाविक है, पर यथार्थ पर व्यग्य के रूप मे उसकी शक्ति अमित है। उसका प्रत्येक चरित्र स्वाभाविक है, दृश्यो की कॉमेडी स्वाभाविक है जो तत्सामयिक रूसी समाज को प्रतिबिम्बित करती है, उसके डायलॉग स्वाभाविक है। कृति की भाषा अत्यन्त सबल, नुकीली, सूत्रवत् है, स्पष्ट, स्फटिक की नाई स्वच्छ। उसकी मौलिकता अपरिमेय है, रूसी जीवन की छाप लिए, रूसी मेधा से प्रसूत, आज भी बेजोड।

इसी काल कवि वासिली जुकोव्स्की[1] हुआ, जिसका रूसी साहित्य पर गहरा प्रभाव पडा। उसने जर्मन और अग्रेजी साहित्य को रूसी भाषा मे उतारा। ग्रेकी 'एलेजी' और बीर गर के 'ल्योनोरे' के अनुवाद ने उसे विख्यात कर दिया। फिर उसने शिलर[2] की 'आर्लीन्स की कुमारी' का भी रूसी भाषा मे अनुवाद किया। अनेक अन्य जर्मन कवियो की कृतिया भी जुकोव्स्की ने अपनी भाषा मे प्रस्तुत की और उनके ऊपर अपने व्यक्तित्व की छाप डाली। उसने १८४८-५० मे होमर की 'ओडिसी' का भी अनुवाद किया। उसने फ्रास के जादू को, जो रूसी जबान पर प्रतिवन्ध का काम कर रहा था, उठा दिया।

जब तक रूसी भाषा यूरोपीय भाषाओ के घातक बन्धन से मुक्त हो चुकी थी। आवश्यकता इस बात की थी कि कोई और रूसी भाषा की मिठास को साहित्य मे घोल दे, उसके राग को ध्वनि पर साध कर अलाप दे। वह कार्य पुश्किन को करना था, रूसी भाषा और साहित्य के अप्रतिम जादूगर को। पुश्किन आया और तब जब कभी 'क्लासिकल' और 'रोमैंटिक' के बीच समर ठना था। दोनो की परिभाषाओ मे लोगो को आपत्ति थी। प्रत्येक साहित्यकार इन्हे अपनी-अपनी परिभाषा देता था। पुश्किन के लिए जुकोव्स्की ने मैदान साफ कर दिया था और जब उसने रूसी भाषा को राष्ट्रीय साहित्य देना शुरू किया, अपने 'मॉडल' सामने रखे तो ये झगडे अपने आप शान्त हो गए।

पुश्किन[3] का जन्म मास्को मे १७९९ की २६ मई को हुआ था। उसका घराना प्राचीन था। माता की ओर से उसे नीग्रो (हब्शी) रक्त मिला था (उसकी परनानी पीटर महान् के नीग्रो हैनिब्ल की कन्या थी)। बचपन में ही उसने विविध साहित्यों का गहरा अध्ययन कर लिया। उसकी स्मरणशक्ति गजब की थी और वह जो कुछ पढ़ता उसके दिमाग पर नक्श हो जाता। स्कूल के दिनो में वह चुपचाप पढता गया, बे-अन्दाजा, अन्धाधुध। उस काल उसे वोल्तेयर की कविता से बडा स्नेह था। पहली पद्य-रचना उसने फ्रेंच मे की, फिर रूसी मे। उसकी उस काल की रचनाओं तक में उसकी अपनी वह वाणी

१. Vasily Andreyevich Zhukovsky (१७८३-१८५२); २. Schiller;
३. Aleksander Sergeyevich Pushkin (१७९९-१८३७)

उतर पड़ी जिसके लिए पीछे वह प्रसिद्ध हुआ। उसकी भावी शक्ति का अन्दाज उसी काल रूस के यशस्वी साहित्यिको डेर्ज़हाविन, कारामजिन, जुकोव्स्की को लग गया और उन्होने उसे उत्साहपूर्वक मेटा भी। जुकोव्स्की तो उसके स्कूल मे जाकर उसे अपनी कविता सुनाया करता था। जब पुश्किन ने अपने स्कूल जीवन के सस्मरण 'जस्कोसिलो के सस्मरण' पढे तब जुकोव्स्की के उत्साह की सीमा न रही। ये कविताए १८१५ अर्थात् पुश्किन के सोलहवे वर्ष से पूर्व ही लिखी जा चुकी थी। उनकी स्वाभाविकता ने बायरन के 'आवर्स ऑव आइ-डिल्नेस' को तिरस्कृत कर दिया। दोनो के नाजो-अन्दाज मे जमीन-आसमान का अन्तर था। पुश्किन का भविष्य उसके इन सस्मरणो मे नाच उठा। उसने भाषा मे एक नई टकसाल खड़ी कर दी जो सर्वथा रूसी थी, सर्वथा उसकी अपनी।

और जब १८२० मे उसने अपनी कविता 'रुस्लान और लुदमिला' प्रकाशित की तब उसपर जमाना टूट पड़ा। हस्तलिपि की स्थिति मे ही उसे पढकर रूसी साहित्य के पेशवा उसपर लुट चुके थे और उन्होने उसे अब समान भूमि पर योग्यता की अपनी ऊचाई पर स्वीकार किया। जुकोव्स्की ने तो पहला ही अक सुनकर उसे अपनी तस्वीर भेट करते समय उसपर लिखा--'उस शिष्य को जिसने अपने गुरु को पराजित कर दिया।' क्लासिकल कवि बाब्युश्कोव ने कहा—'ओफ! शैतान ने क्या गजब लिखना शुरू किया है।' रूसी लोकविश्वासो का यह पहला काव्याकन था। सचित्र, सबल, अद्भुत। कुछ आलोचको ने उसकी तीव्र भर्त्सना भी की, उसके कथानक को लेकर कि उसने अशिष्ट ग्राम्य किसान को चमचमाते रूसी ड्राइगरूम मे पहुचा दिया। कविता मे 'पैशन' न था, व्यग्य न था, पर थी वह तरुण, अल्हड, कामुक, स्वच्छन्द। सबने जाना कि एक रूसी नौजवान 'मुह मे सोना भरे, आखो मे अरुणोदय लिए' दुनिया को पुकार रहा है।

वह हुस्सार होना चाहता था, पर न हो सका। तब वह पर-राष्ट्र-विभाग मे अफसर हो गया। उदारवादी तरुणो की गोष्ठी मे वह उठने-बैठने लगा। उसे 'दिसम्बर' आदोलन से भी सहानुभूति थी यद्यपि वह स्वय उसमे भाग न ले सका। कुछ काल बाद उसका दक्षिण मे तबादला हो गया और उसने काकेशस और क्रीमिया की सैर की, जिसकी छाप उसकी कृतियो पर पड़ी। इन्ही दिनो उसने अग्रेजी और इटैलियन लिखी और बायरन तथा अद्रे-शेनिए से प्रभावित हुआ। इन्ही दिनो जो उसने अपना 'काकेशस का कैदी' लिखा तो उस पर 'चाइल्ड हेरोल्ड' का स्पष्ट प्रभाव झलका। उस कविता मे काकेश साफ उतर आया। क्रीमिया की प्रेरणा से उसने 'बागचीसराय का स्रोता' लिखा, जिसमे एक तातार खान और उसकी ईसाई गुलाम की कथा है। खान की पुरानी प्रेयसी ईर्ष्यावश गुलाम के प्रेयसी को मार डालती है और खान स्वय उसे भी पानी मे डुबाकर मरवा डालता है। उसी दक्षिणी इलाके मे पुश्किन ने अपनी कुछ अमर कविताए लिखी, जिसमे उसकी प्रसिद्ध 'पुस्तक-विक्रेता और कवि की बातचीत' भी थी। उस कविता की चार पक्तियो के लिए तुर्गनेव

ने कहा था कि यदि अपनी सारी कृतियो के बदले उनको वह लिख पाता तो अपने को धन्य मानता। इसी सग्रह मे उसकी कविताए 'जिप्सी' 'ओनेगिन' का आरभिक भाग 'बोरिस गोदुनोव' और 'महर्षि ओलेग', 'डाकू भाई' आदि थी।

'जिप्सी' अत्यन्त लोकप्रिय हुई। उसका नायक आलेको जिप्सियो के गिरोह मे शामिल हो जेम्फीरा से विवाह कर लेता है जो दूसरे पुरुष को प्यार करने लगती है। आलेको दोनो को मार डालता है। उसकी पत्नी का पिता, जो अपनी पत्नी की ओर से समान घटना का शिकार है, आलेको को अपने गिरोह से निकालते हुए कहता है—'हमे छोडकर चला जा, मनस्वी तरुण। हम बनैले जीव है। हम कानूनो के कायल नही, हम बदला नही लेते, दण्ड नही देते। न तो हम रक्तपात करते है, न चाहते है। हम खूनी के साथ नही रह सकते। तू बनैले जीवन के लिए नही बना है। केवल अपने लिए तू आजादी चाहता है। हम शर्मीले और नेकदिल है, तू बद है, मनमानी करने वाला। जा, चला जा, विदा, आमीन।' इसमे जिप्सी जीवन, डेरो आदि का अनूठा वर्णन है

'बोरिस गोदनोव' की कथा पुश्किन ने कारामजिन के इतिहास से ली और उसका नायक उस डेमिट्रियस को बनाया जिसने 'भयानक' ईवा की मृत्यु के बाद अपने को उसका हतपुत्र घोषित किया। यह नाटक है। नायक गद्दी हासिल कर लेता है, उसकी प्रेयसी उसे प्यार इसलिए करती है कि वह जार का बेटा है। पर भेद खुल जाता है। और वह उसे त्याग देने का सकल्प कर लेती है। तब हारा नायक शर्म से शक्ति पाकर चीख उठता है—'मै वचक हो सकता हू पर मैं बादशाह होने के लिए ही जन्मा हू। मै प्रकृत बादशाह हू और मै तुम्हे ललकारता हू—भला बदल दो मेरी स्थिति। चाहो तो जो कुछ मैने तुमसे कहा है सबसे कह दो। कोई तुम्हारी बात का विश्वास न करेगा।' प्रेयसी मारीना उसके साहस और निर्भीकता से विजित हो जाती है। 'बोरिस गोदुनोव' १८३१ मे प्रकाशित हुआ। धीरे-धीरे उसके 'ग्राफ नूलिन', 'कोलोम्ना की झोपडी' और 'पोल्तावा' निकले। पहले दोनो मे रोमैटिक परिस्थितियो का अकन था, 'पोल्तावा' मे पीटर महान् सबधी काव्य। १८२९ मे पुश्किन फिर काकेशस की ओर गया और वहा उसने अनेक मधुर लेख लिखे। १८३१ तक उसके 'ओनेगिन' का अन्तिम अक भी समाप्त हो गया।

'ओनेगिन' उपन्यास है, पुश्किन की लेखनी का जादू, रूस का पहला उपन्यास, जिसका नायक युजीन ओनेगिन है। अनेक आलोचको की राय मे उस उपन्यास की जोड का रूसी साहित्य मे दूसरा नही। इसमे टॉल्स्टॉय का यथार्थ है, तुर्गनेव की कलाकारिता। ओनेगिन, नायक, सेन्ट पीटर्सबर्ग का साधारण स्थिति का आदमी है। पिता सरकारी नौकर है जो कर्ज करके तडक-भडक के साथ रहता है। ओनेगिन जमाने के अनुसार शिक्षित है, लन्दन का सिला सूट पहनता है, फ्रेंच बोलता है, 'मजुरका' नाच लेता है। सब विषयों पर बोलता है, जब बातचीत का विषय गभीर हो जाता है तो अपने अज्ञान छिपाने के लिए

यदाकदा एक-आध शब्द बोल देता है। समाज का प्रतिबिंब है। पिता के मर जाने पर चचा की जायदाद पाकर देहात मे जाता है। लेन्स्की जर्मनी से आकर उसका एक परिवार से परिचय कराता है जिसमे दो कुमारिया है जिनमे से छोटी को वह स्वय प्यार करता है। उसका नाम ओल्गा है। तातियाना बडी बहन है। उसका-सा यथार्थ चरित टॉल्स्टॉय का जीवन-अध्ययन और तुर्गनेव की कला भी नही सिरज सकी। वह रूसी नारी की प्रतीक है। तातियाना ओनेगिन से प्रेम करने लगती है और जब अपना प्रेम व्यक्त करती है तो कविता उसका पानी भरती है। आलोचको का कहना है ससार के काव्यक्षेत्र मे ऐसी सरल और हृदयग्राही आत्माभिव्यक्ति और कही नही। कहते हैं, यदि पुश्किन ने केवल यही लिख दिया होता तो संसार के कवियो मे वह अनूठा हो गया होता। वास्तव मे तातियाना का वह पत्र रूसी ही लिख सकता था और रूसियो मे भी पुश्किन ही। ओनेगिन उससे कहता है कि वह उसे प्यार नही कर सकता, प्यार के लिए वह बना ही नही। पर नाच मे वह ओल्गा की ओर आकृष्ट होकर लेन्स्की की चुनौती पर उसे डुएल मे मार डालता है, फिर चला जाता है। तातियाना उसका इन्तजार करने के बाद सेन्ट पीटर्सबर्ग के एक धनी से ब्याह कर लेती है। ओनेगिन जब वहा पहुचता है तो बुरी तरह उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है पर वह उससे साफ कह देती है कि उसके हृदय मे अब भी ओनेगिन का ही निवास है पर वह अपने पति को धोखा नही दे सकती। बस, कहानी यहा खत्म हो जाती है। 'ओनेगिन' पुश्किन की प्रौढतम कृति है, सर्वथा उसी की-सी। काव्य रूप मे लिखा यह उपन्यास अद्भुत है।

पुश्किन ने अपने अल्पकालिक जीवन मे और भी कितनी रचनाए की, कविताए, नाटक और कहानिया लिखी, 'दूब्रोव्स्की' ,'कप्तान की बेटी', आधी', 'पिस्तौल की गोली' 'किसान-महिला', 'हुकुम की रानी' आदि। इनमे अतिम अत्यत लोकप्रिय हुई। उसकी रचना 'मिश्री' दिलचस्प कहानी है। उसने अनेक बैलेड भी लिखे—'पोप और बाल्दा की कहानी', 'मारचेन', 'मृत जारित्सा', 'सोने का मुर्गा', 'मछलीमार और मछली की कहानी', 'वर'। 'पीतल का घुडसवार' भी उसकी अच्छी काव्य रचना है। 'काजबेक का मठ' के बाद उसने 'पैगम्बर' नाम की बडी प्रौढ और सर्वथा असामान्य कविता लिखी।

१८३७ मे पुश्किन मरा या मारा गया। पत्नी के कारण उसे डुएल लडना पडा और उसी चोट से सैंतीस वर्ष की आयु मे वह मर गया। छोटी उमर मे मरकर भी उसने रूसी साहित्य को अमर कृतिया प्रदान की। जीवनकाल मे भी उसका इतना प्रभाव था कि रूसी साहित्य के दिग्गज—काराम्जिन, जुकोव्स्की, गोगोल—उसे घेरे-घेरे फिरते थे। पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि था। उसकी प्रतिभा का भेद उसकी सार्वभौमिकता है। वह कवि है, यथार्थवादी कवि, अद्भुत लिरिक कवि। उसने रूसी ज़बान को विदेशी प्रतिबधो से मुक्त कर दिया। वह असाधारण कलाकार था और उसकी रची आकृतिया सगमरमर

की प्रतिमाओ सी स्पष्ट और सुघड है। वह पार्थिव था, सर्वथा मानव, इसीसे रूसी कवियो मे सबसे महान्। उसकी कविताओ का निवास रूसी हृदय मे है। रूसी तरुणो की जबान पर उसकी पंक्ति-पंक्ति है। लेनिन पुश्किन की कविताए पढकर उमग-उमग पडता था।

: ३ :

लेरमोन्तोव[1]

बैरन देल्विग[2] पुश्किन का मित्र था और उसका सहृदय आलोचक भी। उसने भी कविता लिखी। वह १८३१ मे पुश्किन से पहले ही मर गया। उसी परम्परा मे याजिकोव[3], बारातिन्स्की[4], वेनोवितिनोव, पोलेजाव आदि ने भी अपनी रचनाए की। ये सभी लिरिक कवि थे। पर वस्तुत. पुश्किन के रिक्त स्थान पर बैठने वाला लेरमान्तोव था, रूसी साहित्य का सुदरतम लिरिक कवि। उसका जन्म १८१४ मे, हिगेल की मृत्यु के चार वर्ष बाद, मार्क्स के जन्म के चार वर्ष पहले हुआ। प्रोफेसरो से झगडा कर उसे मास्को विश्वविद्यालय छोड देना पडा। बीस वर्ष की आयु मे वह हस्सार सेना मे आफिसर हो गया और तब उसका जीवन आधी की तरह उठा। आज यहा डुएल, कल अफसरो की नाराजगी परसो जार्जिया को तबादला, नवगोरद्, सेन्ट पीटर्सबर्ग, काकेशस, फिर सेन्ट पीटर्सबर्ग, फिर-फिर काकेशस, और अन्त मे साधारण बात के लिए १८४१ मे वही डुएल से मृत्यु २७ वर्ष की अल्पायु मे।

और इसी बीच वह रूसी साहित्याकाश का अप्रतिम नक्षत्र बन गया। अपने काव्योपन्यास 'इन दिनो का नायक (हीरो)' में उसने अपना ही चरित्र गाया है। वह कठिन मित्र था यद्यपि उसका हृदय तरल था, स्नेह से भरा, आधी-सा उसका जीवन था, उसमे व्यवस्था न थी। पर उसमे भाव था, तरल आवेग प्रवाह था, अकृत्रिम उल्लास था। उसने अपनी कृतियो मे समसामयिक जीवन की उत्कट आलोचना की। जैसे-जैसे उसकी आयु बढती गई उसकी अभिमान की मात्रा भी बढी और एक दिन दुर्दैव का सामना करना ही पड़ा।

महत्वाकाक्षी जीवन असफल होने से खीझ गया था। और उसे सबसे शिकायत थी, सबसे झगड़ा था। इसीसे वह जीवन से भी विरक्त हो उठा। वह अपनी कृतियो मे समाज से बदला लेता था। समाज उसे काकेशस भेजकर उससे बदला लेता था। फिर भी उसकी रचनाओ मे निराशा का कही सकेत नही।

---

१. Mikhail Yurevich Lermontov (१८१४-४१); २ Baron Anton Antonovich Delvig (१७९८-१८३१); ३ Nikolay Mikhaylovich Yazykov (१८०३-४६); ४. Evgeny Abramovich Baratynsky (१८००-४४)

लेरमोन्तोव भी पुश्किन की भाति मूलत· लिरिक कवि था। अधिकाधिक व्यक्ति-मूलक स्वकीय। परन्तु पुश्किन के विपरीत वह सच्चा रोमाटिक था। पुश्किन की ही भाति अल्पायु मे ही उसने भी फ्रेंच मे पद्य लिखने शुरू किए। उसे पुश्किन की मृत्यु सम्बन्धी कविता से ख्याति मिली। जिसमे उसने उस महाकवि को खून के प्यासे समाज का शिकार बताया। रचना का शब्द-शब्द कठोर था। उसके अविरल प्रवाह मे गजब की चोट थी। एक विचार मे उसने इसी शक्ति से अपने समाज पर प्रहार किया। इसी प्रकार नेपोलियन का भस्मावशेष पेरिस ले जाए जाने के अवसर पर जो कविता लिखी उसमे भी तरल तीखापन था कि जिन फ्रासीसियो ने जीवनकाल मे उसे त्याग दिया वे अब मरने पर उसकी राख पूज रहे है।

परन्तु लेरमोन्तोव की ख्याति इन कविताओ पर अवलम्बित नही। उसने अपने समकालीनो से कुछ न लिया। न पूर्ववर्तियो से ही, न ही उसने विदेशी प्रतीको को ही अपना आदर्श बनाया। उसने अपने लिए आप राह बनाई और बिना झिझक के उसीपर निरतर चलता रहा। लिखा भी उसने उन्ही विषयो पर जिन्हे उसने आरम्भ मे चुन लिया था। उसका चुनाव रोमैटिक था। उसकी रचना—दानव—सबसे अधिक जानी हुई है। उसमे एक नारी के प्रति दानव का प्रेम वर्णित है। नारी काकेशस की है। और अकन के रग विविध हे। कभी मलिन न होने वाले, सतत उज्वल शैतान कहता है कि मै वह हू जिसे कोई प्यार नही करता, प्रत्येक जन जिसे गाली देता है। अपनी प्रेयसी से जब वह अपना प्रणय निवेदन करता है तब भाव और भाषा सौन्दर्य मे होड करते है। मूर्ति धारण कर लेते हैं। और पक्ति के बाद पक्ति अनूठी ताज़गी लिए रस की हिलोर बनकर हृदय को आप्लावित करने लगती है। काकेशस की पृष्ठभूमि का चित्रण तो इसमे पुश्किन से कही सबल है, कही चमत्कारी।

'दान' के अतिरिक्त कुछ अन्य और कहानिया लेरमोन्तोव ने काव्यबद्ध की—इस्माइल बे, हाजी अब्रेक, ओरशा। पहली दोनो कहानियो की पृष्ठभूमि भी काकेशस की उपत्यका ही है। उसका 'मत्सिरी-नौसिखा'-सर्वांग सुन्दर कृति है। इसमे मठ मे मरते एक अभागे यतीम का अपराध का स्वीकरण 'कन्फैशन' है। जिसमे वह बाहर की उस पुकारती हुई दुनिया के समृद्ध, निसर्ग और कमनीया नारी के रुदन का हृदयविदारक कोमल, करुण, अभिराम वर्णन है। काकेशस की भूमि जैसे सजीव होकर अपनी कमनीय आकृति खोलती जाती है। काकेशस का इतना शालीन अकन लेखनी ने शायद कभी नही किया।

'दानव और मत्सिरी' की परपरा मे ही ज़ार ईवा वासिलिएविच का गान भी है, उन्हीकी भाति मनोरम शरीररक्षक सेना का सिपाही एक सौदागर की पत्नी का अपमान करता है। सौदागर उसे ललकारता हे और घूसो से मार डालता है फिर प्राण-दण्ड भोगता है। कविता लोककथा के आधार पर उठकर कुछ ऐसे सरल, तरल, यथार्थ, रोमा-

चक दृश्य उपस्थित कर देती है कि उस दिशा मे वह रूसी साहित्य मे बेजोड हो जाती है।

इनके अतिरिक्त लेरमोन्तोव ने कुछ अन्य लिरिक भी लिखे— 'पाल', 'फरिश्ता', 'प्रार्थना'—जो रूसी बच्चे-बच्चे की जबान पर है। उसके रोमैटिक स्पर्श के नीचे जीवन है, यथार्थ रोजमर्रा का जीवन, कांपता, छटपटाता, उदास, विषाद भरा, कुचला। उसके वर्णन ज्वलत है, अभिराम, फोटो के-से सच्चे। पहाडो-जगलो का तो वह अप्रतिम चित्रकार है। वर्णनात्मक प्रतिभा मे वह बाइरन-सा लगता है पर बाइरन लेरमोन्तोव के मुकाबले कल्पना में कितना कगाल है। लेरमोन्तोव उससे कही शुद्ध रोमैटिक है।

लेरमोन्तोव की भाषा आमफहम है, साधारण नागरिक की तरह जो कवि स्वय अपने नित्य के जीवन मे बोलता होगा, उसमे कही कृत्रिमता नही, कही दुविधा नही, कही दुर्गमता नही। जहा कजाक-माता अपने बच्चे को लोरी सुनाती है वहा घर-बाहर का जीवित चित्र खडा हो जाता है, ऐसा जैसा वह माता देखती है। भाषा वैसी ही है जैसी वह बोलती-सुनती है, जिसे बच्चा भी समझ लेता है। बोरोदिनो जो लडाई का वर्णन करता है वह कोई लडाका ही कर सकता है। निश्चय ही लेरमोन्तोव की मछलिया कभी इन्सानों की बोली नही बोलती। लगता है, प्रकृति स्वय उसकी कलम उठा लेती है और लिखने लग जाती है, लेरमोन्तोव बीच मे नही आता। पुश्किन तक की शैली को हम सराहते है, वाह-वाह कह उठते है पर लेरमोन्तोव की शैली तो हमारे सामने से हट जाती है। दृश्य अपने आप बोल उठते हैं, प्रत्यक्ष, मूक और मुखरित। पुश्किन की भाति लेरमोन्तोव की प्रतिभा बहुमुखी नही, पर उसमे व्यजना, रसपाक, शुद्ध अकन प्रभूत है। पुश्किन के साथ ही रूसी राष्ट्रीय गायन का वसन्त निखर गया।

उसके बाद उस परम्परा का बस एक ही कवि हुआ कोल्त्सोव[1] समकालीन, रूसी लोक-कवियो मे सबसे महान्। उसका पिता मवेशियो का छोटा-मोटा रोजगार करता था। एक दिन मॉस्को के एक तरुण के हाथ कोल्त्सोव की कविताए लग गई और उसने चदा करके उन्हे छपवाया, बगैर किसी बनावट या भावुक शब्दजाल के। कोल्त्सोव किसानों का जीवन खीचकर रख देता है। उसका जीवन जैसे भीतर से निकलता आता है। उसने अपनी लिरिकों मे फसलों की बुवाई और कटाई, कुटिया करने वाली कुमारी की अपने अन्तरग की व्यथा, किसान के हृदय के राग और जीवन के स्वप्न सभी जाग उठे। वह लरेमोन्तोव की मृत्यु के बस साल भर बाद ही मारा गया। और उसके साथ ही रूसी तत्सामयिक कविता का यवनिकापात हो गया। फिर जब यवनिका उठी तो रंगमच पर रूसी गद्य का प्रवेश हो चुका था।

---

१. Aleksyey Vasilyevich Koltsov (१८०८-४२)

: ४ :

गद्य-युग

गद्य-युग के प्रारम्भिक काल का महान् कलाकार निकोलाई गोगोल[1] था। गोगोल उपन्यास और नाटक दोनो क्षेत्रो का प्रतिनिधि साहित्यकार था। वह लघु रूसी था, कजाकिस्तान के पोल्तावा का, पर १८२६ मे वह उक्रेन छोडकर सेन्ट पीटर्सबर्ग चला गया। रङ्गमच सम्बन्धी कुछ असफल प्रयत्न कर वह यूनिवर्सिटी मे इतिहास का प्रोफेसर हो गया। यद्यपि उस कार्य मे भी उसे सफलता न मिली और तब वह साहित्य की ओर मुडा।

पुश्किन से मित्रता होते ही उसे प्रेरणा मिली। उसने पहले कुछ स्केच लिखे—'खेत की साझ' फिर 'मीरगोरोद'। गोगोल रोमैंटिक प्रवृत्ति का था, कल्पना और स्वप्न उसके रोम-रोम में बसे थे। परन्तु अन्य रूसी साहित्यकारो की ही भाति उसकी रोमैंटिक प्रवृत्ति को भी यथार्थ का योग सुलभ था। साथ ही उसमे हास्य की भी प्रतिभा थी। हास्य की सभी मात्राओ की—ठठाकर हसाने से लेकर मुस्कराने और व्यग तक की।

उसकी पहली पुस्तक की पहली कहानी मे रूस का असाधारण यथार्थ रूप प्रस्तुत है। दक्षिण की दुपहरी मे चमकती धूप मे बालो भरी फसल खडी है, मेले मे गेहू बेचा जा रहा है। मेले का शोर बू-बास के साथ सर्वत्र उठ रहा है। गोगोल अपने प्रारम्भिक प्रयास में ही अपनी विशेषता लिए उतरा। यह पहली पुस्तक उसकी 'लाल जाकेट' थी। इसमे ही गोगोल की अलौकिक की भावना अकित हो गई जो निरन्तर उसकी कृतियो मे बनी रही। अप्सराए, चाद चुराने वाला दानव, डाइने, जादूगर सभी इसमे उतर पडते है। 'मीरगोरोद' की कहानिया—'प्राचीन पन्थी जमीदार' और 'दो ईवानो का झगडा'—मे यथार्थ लहराने लगा है। 'तारास बुल्बा' इसी प्रकार अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर कजाक-जीवन साचे मे ढालकर रख देता है। इन कहानियो के अतिरिक्त उसकी कहानियो के दो सग्रह—'अरावेस्क' (१८३४) और 'कहानिया' (१८३६) और निकले। इनकी भूमि अलौकिक से हटकर हास्यमिश्रित तथ्य पर निर्मित होती है। यद्यपि जहा-तहा असाधारण का योग भी बना है। 'गाडी' मे यथार्थ और हास्य का मिश्रण है और 'ओवर कोट' मे यथार्थ और करुणा का।

इन्ही दिनों गोगोल रङ्गमच के लिए लिखता रहा पर वहा दिक्कत सेन्सर से पास होने मे थी यद्यपि उसका 'तहकीकात' या 'इन्स्पेक्टर जेनरल' पास हो गया जो आश्चर्य की बात थी। यह जार की कृपा का परिणाम था। नाटक रूसी नौकरशाही के कृत्यो पर

[1] Nikolay Vasilyevich Gogol (१८०९-५२)

प्रखर व्यग्य है। इसका प्रत्येक चरित्र झूठा, बेईमान, बुद्धू और हृदय-हीन है, प्रत्येक साहित्यिक कला का नमूना है।

नाटक खेले जाने के बाद गोगोल सदा के लिए रूस छोड रोम मे जा बसा। वही उसने अपनी सुन्दरतम और रूसी भाषा की अतिम कृति 'मृत आत्माए' प्रकाशित की। इसकी प्रेरणा भी 'इन्स्पेक्टर जनरल' की ही भाति उसे पुश्किन से ही मिली थी। गजब की कहानी थी। रूसी जमीदारो के सर्फो (खेत के कृषक-मजूर) को मृत आत्माए कहते थे। दस साल पर इनका मुआयना होता था और मरे हुए जीवो पर टैक्स लगता था। बीच मे कोई इन्हे नही पूछता था। कहानी के नायक चिचिकोव को एक नई बात सूझी। उसने सोचा कि क्यो न मृत जीवो को खरीदकर सेट पीटर्सबर्ग या मॉस्को मे किसी बैंक मे रहन कर दिया जाए। आखिर दूसरे दशक तक तो उनके विषय मे कोई पूछेगा नही। ये मृत आत्माए कही क्रीमिया मे है और चिचिकोव उनकी खोज में फिर रहा है। कहानी तीन भागो मे सम्पन्न होने वाली थी परन्तु दूसरे ही भाग के बाद जब गोगोल की धार्मिक प्रेरणा ने उसे बुरा माना तो समाप्त द्वितीय भाग को उसने दो-दो बार आग मे डाल दिया। पुस्तक का पहला भाग और अपूर्ण दूसरा प्रकाशित हुए। इनके प्रकाशन ने शिक्षित रूस पर गजब का असर किया। सचमुच गजब की पुस्तक है 'मृत आत्माए', बच्चो को हसा देने वाली, तरुणो को चिन्तनशील कर देने वाली, बूढो को रुला देने वाली। इसमे 'सेक्स' कही न था। प्रेम का स्पर्श कही न था। साहित्य मे यह क्राति थी क्योकि प्रणय का नशा कहानी के लिए स्वाभाविक अनिवार्य भूमि माना जाता था।

उपन्यास-कला के साथ ही साथ गद्य के क्षेत्र मे आलोचना का भी विकास हुआ। कारामजिन ने ही साहित्यिक आलोचना की बुनियाद डाल दी थी अब कुछ और भी आलोचक हुए जिन्होने उसका विकास किया। प्रिन्स व्याजेम्सकी उनमे प्रथम था। परन्तु पहला पेशेवर जर्नलिस्ट पोलेव्या था जिसने आलोचना के क्षेत्र मे नितान्त पैनी कलम चलाई। परन्तु आलोचना की रुचिपूर्ण शैली का वास्तविक निर्माता बेलिन्स्की[१] था। पोलेव्या की ही भाति वह भी निम्न वर्ग का था, और आत्मशिक्षण के बल पर बढा था। उसका जीवन बडे सघर्ष का था। कगाल, रुग्ण, आवश्यकताओ से भरा। सेन्सर ने उसे बडा परेशान किया पर वह अपना काम कर गया और जागृत आलोचना की नीव पड गई। फिर तो उसे अगली पीढी के गोन्चारोव, दॉस्ताएव्स्की, हर्जेन और दूसरों ने और आगे बढाया। बेलिन्स्की ने पुश्किन, लेरमोन्तोव, गोगोल, ग्रिबोयेदोव, जुकोवस्की आदि की व्याख्या और समीक्षा की। उसके विचारो का साका चल गया। उसने जीवन को कला के ऊपर रखा। कला कला के लिए—वाले सिद्धात का वह प्रबल शत्रु था।

---

१. Vissarion Grigoryevich Belinsky (१८१०-४८)

वेलिन्स्की की परम्परा का सीधा रुख समाजवादी था जिसका शुद्ध विकास एलेग्जैंडर हर्ज़ेन[1] के साहित्य मे हुआ। हर्ज़ेन का असली नाम याकोव्लेव था। वह समृद्ध रूसी पिता का पुत्र था। पिता ने जर्मनी मे विवाह किया पर रूस लौटकर विवाह को जायज नही करवाया जिससे बच्चों को माता का उपनाम ग्रहण करना पडा। हर्ज़ेन ने इसीसे अपना जर्मन नाम ही चलने दिया।

हर्ज़ेन अपने ज़माने का बडा प्रभावशाली व्यक्तित्व था। असाधारण, महान्। फिर वह अप्रतिम सस्मरण-लेखक भी था। यूनिवर्सिटी मे उसने गणित की शिक्षा पाई पर उतरा वह साहित्य के क्षेत्र मे। उसका उपन्यास 'दोष किस का हे ?' साहित्य मे असामान्य स्थान रखता है। अपने विचारो के प्रचार के कारण वह पहले पर्म फिर व्यात्का को निर्वासित कर दिया गया। फिर तो उसने १८४७ मे सदा के लिए रूस छोड दिया। पहले वह पेरिस गया। फिर लन्दन गया। वहा उसने 'दि बेल' का सम्पादन किया। हर्ज़ेन समाजवादी था। मार्क्स का समकालीन वह सामूहिक स्वत्व का प्रचारक था और निहिलिस्टो का पूर्ववर्ती। उसके सस्मरण—'मेरा अतीत और मेरे विचार'—शैली के आकर्षण मे बेजोड हे। १८७० मे वह मरा, रूसी साहित्य और इतिहास दोनो मे अमर होकर।

स्लाव-विशिष्ट-चेतना को 'स्लावोफिल' कहते है। इस प्रवृत्ति मे विश्वास करने वालो का विचार है कि पश्चिमी सभ्यता सड गई है, उसका उद्धार रूसी किसान (स्लाव) करेगा। इस विचार का नेता रूस का असाधारण सुसस्कृत और शिष्ट व्यक्ति होम्याकोव[2] था, द्वन्द्ववादी कवि, अतीतवादी। त्यूचेव[3] और ईवा अक्साकोव[4] भी उसी परपरा के कवि थे। सेर्गे अक्साकोव[5] हर्ज़ेन की ही भाति अपने विचारो के अनुकूल सस्मरण लिखने मे सिद्धहस्त था। वह ईवा कवि का पिता था जो १७९१ मे जन्मा था और १८५९ मे मरा। अपनी मृत्यु के तीन वर्ष पहले उसने अपना 'पारिवारिक तवारीख' प्रकाशित किया जो अट्ठाहरवी सदी के अन्त और एलेग्जैंडर के युग के इतिहास के लिए बडे महत्व का है। उसमे गद्य की चिरस्मरणीय शैली मे चरितात्मक निबन्धो का सग्रह है। उसने जिन कृषको का चित्र खीचा है वे उसके विचारो के अनुकूल ही निरक्षर होकर भी आचारवान् और स्तुत्य है, आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता से अविकृत, प्रकृति के स्वच्छ 'मॉडल' और यह सारा जिस गद्य मे प्रस्तुत हे उसका अविरल प्रवाह अप्रतिम है। फिर भी इसकी शैली भाषा की पच्चीकारी है।

---

१ Aleksander Ivanovich Herzen (१८१२-७०), २ Aleksyey Stepanovich Khomyakov (१८०४-६०), ३ Feodor Ivanovich Tyutchev (१८०३-७३); ४ Ivan (१८०६-५६), ५. Sergey Timofeyevich Aksakov (१७९१-१८५९)

: ५ :

सुधार-युग

बेलिन्स्की की मृत्यु के बाद ७ वर्ष का समय (१८४८-५६) रूसी साहित्य के लिए बडा घातक था, भयानक ज़ार निकोलस का शासन काल था और सेन्सर ने गजब की छान-बीन शुरू की थी। विशेषत इसलिए कि पेरिस की १८४८ की क्रांति ने रूसी राजनीति और साहित्य के नरम-गरम दोनो दलो पर समान रूप से अपना असर डाला था।

फिर भी साहित्य को जीवित रखने और नई चेतनाओ का प्रचार करने के लिए कुछ साहित्यकार बराबर प्रयत्नशील रहे थे। इनके एक दल का नाम 'पत्राशेव्स्की' था, इसी नाम का नेता परराष्ट्र-विभाग मे अफसर था। शुक्रवार के दिन ये लोग मिलते और विविध विषयो पर परामर्श-आलोचना करते। दल क्रातिकारी नही था पर पुलिस को जो उसका पता चला तो उसपर आफत ढा दी गई। उनमे से २१ को फासी का हुक्म हुआ, इन्हीमे दॉस्ताएव्स्की भी था। अन्त मे ये लोग प्राणदण्ड से मुक्त कर इधर-उधर जेलो मे भेज दिए गए या निर्वासित कर दिए गए। १८५५ मे ज़ार निकोलस के मरने पर अलेग्जैंडर द्वितीय सम्राट् बना और रूस मे सुधारो का युग शुरू हुआ। 'सर्फ' स्वतन्त्र कर दिए गए, न्याय, स्थानीय स्वतन्त्रता आदि सभी में कुछ न कुछ प्रगति हुई और एक नया जीवन नया सवेरा लिए रूस की जमीन पर उतरा। नये दिन ने रूसी साहित्य मे जो नव सृष्टि आरम्भ की उसका दूरगामी प्रभाव हुआ और ससार के साहित्य मे रूस अधिकारी बनकर आया। ससार के उपन्यास-क्षेत्र मे शीघ्र ही रूस के असाधारण उप-न्यासकार बेजोड अग्रणी बने—तुर्गनेव, टॉल्स्टॉय और दॉस्ताएव्स्की।

ईवा तुर्गनेव[1] ने पहले पद्य लिखना शुरू किया पर शीघ्र ही मोपासा की भाति उसने जान लिया कि यह उसका क्षेत्र नही। १८४७ मे किसान-जीवन के आधार पर उसने 'समकालीन' लिखा। 'खोर और कालीनिच' भी उसी साल लिखा गया जो बाद मे (१८५२ मे) 'खिलाडियो के स्केच' का अग बना।

पुश्किन की ही भाति तुर्गनेव को भी सरकार ने दो-दो बार दक्षिण की ओर निर्वा-सित कर दिया जो उसके लिए प्रचुर उपादेय सिद्ध हुआ। वहा उसने जीवन को प्रत्यक्ष देखा। फिर वह पश्चिमी यूरोप चला गया—पेरिस; और जब-तब रूस आता-जाता रहा। उसने अधिकतर सुधार-युग से पहले के रूस का अकन किया, पर जब वह समसामयिक रूस का अपनी कृतियो मे आधार बनाकर चला तब सैद्धान्तिक झगडे खड़े हो गए। उसके 'रूदिन' १८६० मे, 'शिष्टो का नीड' १८५६ में, 'सांझ को' १८६० में, 'पिता

१. Ivan Sergeyevich Turgenev (१८१८—८३)

और पुत्र' १८६२ मे, और 'धुवा' १८६७ मे लिखे गए। जब उसने अपने उत्कर्ष के समय यूरोप का भ्रमण किया तब उसे बडा आदर मिला। यूरोप के साहित्यकार और आलोचक उसकी ओर युग-प्रवर्तक के रूप मे देखने लगे। फ्लोबर उससे चमत्कृत हो गया, जॉर्ज सैण्ड ने उसे शिष्य की शिष्टता से भेटा, टेन ने उसकी कृतियो को सोफोक्लीज की कृतियो के बाद कला का अनुपम निखार माना। उसने यूरोप को सर्वथा जीत लिया।

रूस मे तो उसको तत्काल लोकप्रियता मिली। उसके 'शिष्टो का नीड' ने उसे अमित ख्याति दी। केवल उसके 'पिता और पुत्र' ने उसकी ख्याति को बडी क्षति पहुचाई। क्रातिकारी दृष्टिकोण ने उसके नायक बाजारोव को सर्वथा निन्द्य ठहराया और प्रतिगामियो को वह लुसिफर (शैतान) का अवतार तथा उपन्यास निहिलिज्म का प्रचार जान पडा। गरज कि तुर्गनेव दोनो दलो के क्रोध का शिकार हुआ।

तुर्गनेव मूलत कवि है और उसने रूसी गद्य के क्षेत्र मे वह किया जो पुश्किन ने पद्य के क्षेत्र मे किया था—उसने शैली के 'मॉडल' प्रस्तुत किए। उसकी शैली मे पुश्किन की-सी ही स्वच्छता और स्पष्टता थी। उसकी कृतियो मे देहात सम्बन्धी घटनाए और किसान जीवन के चित्र यथार्थ पर अवलम्बित हैं और इन सबसे ऊपर कलाकार की सुरुचि मे वह अपना प्रतीक आप था। इस रूप मे उसका 'खिलाडियो के स्केच' प्रमाण है। उसका 'बेजिन मैदान' जिसमे बच्चे एक दूसरे से डरावनी कहानिया कहते है, यूरोपीय साहित्य मे आज भी अप्रतिम है। उसी प्रकार उसके 'गायक', 'मृत्यु' आदि सभी असाधारण कृतिया है। 'रूदिन' बडी करुण कृति है यद्यपि समय ने उसके प्रभाव को आज कमजोर कर दिया है। उसका 'चश्मे का पानी' पद्य की मुखरता लिए हुए है। 'पिता और पुत्र' विपरीत आलोचको के बावजूद अद्भुत कृति है, कला की दृष्टि से अनूठी। 'कुवारी भूमि' मे तुर्गनेव ने क्रातिकारी आन्दोलन अकित किया जिसमे वह सफल न हो सका। फिर भी अपने जीवन के उत्तरकाल मे, जो उसने 'गद्य मे कविताए' प्रस्तुत की तो उनसे उसने ध्वन्यात्मक माधुर्य का स्रोत खोल दिया। गद्य मे यदि कही गायन की सामग्री किसी को देखनी हो तो तुर्गनेव की इस कृति मे देखे।

रूस के लिए तुर्गनेव महान् था और यूरोप के लिए महत्तर। क्राति की नई धारा ने उसकी लोकप्रियता को झकझोर दिया और टॉल्स्टॉय तथा दॉस्ताएव्स्की की सशक्त रचनाओ ने तुर्गनेव की नाजुक कलाचातुरी पर प्रचुर आघात किया यद्यपि स्रष्टा की कलात्मक रचना प्रणाली मे वह आज भी अनोखा है।

गोन्चारोव[1] उच्चवर्गीय था और उसने ससार के भ्रमण के बाद यात्रा सम्बन्धी अपने पत्र लिखे। उसके तीन उपन्यास—'रोजमर्रा की कहानी', 'आब्लोमोव' और 'भूपात'

---

१. Aleksander Ivanovich Goncharov (१८१२-९१)

उसकी यात्रा के बाद प्रकाशित हुए। 'आब्लोमोव' इनमें सबसे सुन्दर कृति है। जो १८५८ मे प्रकाशित हुई। 'आब्लोमोव' ड्रेसिंग गाउन और स्लिपर पहन कर ड्राइंग रूम में रहने वाले पीटर्सबर्ग के श्रीमानो का प्रमादी रूप प्रस्तुत करता है।

इसी काल कुछ और भी गद्यात्मक रचनाएं हुई जिन्होंने रूस के साहित्य और इतिहास पर आलोचना मे अपनी छाया डाली। इनमे अराजक बकनिक तो रूसी निहिलिज्म का अवतार ही था। ग्रिगोरिव ने कला का सम्बन्ध रूसी राष्ट्रीय भूमि से स्थापित किया था और उसका प्रभूत प्रभाव दॉस्तॉएव्स्की पर पडा। कात्कोव पहले हरज़ेन और बुकनिन की परपरा मे था। पहले वह दर्शन का अध्यापक था परन्तु उसे यूनिवर्सिटी अपने विचारों के कारण मजबूरन छोड देनी पडी। फिर उसने जर्नलिस्ट का जीवन अख्तियार कर लिया और 'मास्को समाचार' का सम्पादन करने लगा। पोलैण्ड के विद्रोह के अवसर पर जो उसने राष्ट्रीय विचारो का नेतृत्व किया उससे हर्ज़ेन के प्रकाशन 'दि बेल' पर घातक चोट पडी। परन्तु कुछ ही दिनो बाद कात्कोव सकीर्ण राष्ट्रीयतावादी बन गया। स्लावाफिल परपरा के दो अन्य आलोचक स्त्राखोव और दानिलोव्स्की थे, दोनों ही दॉस्तॉएव्स्की की ही भाति ग्रिगोरिव के शिष्य थे जिन्होंने साहित्य मे पाश्चात्यता का विरोध किया।

इस दिशा मे रेडिकल विचारो का कर्ण चेरनिशेव्स्की[1], दोब्रोल्यूबोव[2] और पिसारेव[3] के हाथ रहा। चेरनिशेव्स्की ने जान स्टुअर्ट मिल के विचारो का अनुवाद किया, कला और यथार्थता के पारस्परिक सम्बन्ध पर एक पुस्तक प्रकाशित की। सात वर्ष की कडी कैद झेली और २० वर्ष निर्वासित जीवन व्यतीत किया। उसने उत्कट समाजवादी प्रचारात्मक आलोचना द्वारा अभौतिक दर्शन की रीढ तोड दी और अपने उपन्यास—'क्या करना है ?' द्वारा अपनी और अगली पीढी पर असाधारण प्रभाव डाला। इस उपन्यास का विषय निहिलिज्म है। दोब्रोल्यूबोव जो २४ वर्ष की आयु में ही मर गया, उसी यथार्थवादी दृष्टिकोण का था—उसकी प्रधान आलोचना यह थी कि रूसी साहित्य आब्लोमोव की चित्तवृत्ति से जकड गया है, किचात्स्की, पिचोरिन और रूदिन सभी आब्लोमोव है। पिसारेव भी यथार्थवादी दार्शनिकता मे चेरनिशेवस्की का ही अनुयायी था और सौन्दर्य को जीवन से अलग देखने का विरोधी था। उसके विचार मे कला का एकमात्र कर्त्तव्य जीवन को व्यक्त करना है। पिसारेव ने तुर्गेनेव के 'बाजारोव' को उपन्यासकार की ही प्रतिमूर्ति मानी जो तुर्गेनेव पर कुछ ओछा व्यग्य न था। पिसारेव भी अल्पायु में ही मरा।

---

१. Nikolay Gavrilovich Chernyshovsky (१८०८-८६); २. Nikolay Aleksandrovich Dobrolyubov (१८३६-८१) · ३ Dmitry Ivanovich Pisarev (१८४०-७८)

व्लादिमिर सोलोवीव[1] रूसी साहित्य का एक असाधारण निर्माता है। वह कवि, दार्शनिक और समालोचक तीनो था। समालोचना के क्षेत्र मे उसने निहायत स्वाधीन वृत्ति का आचरण किया। वह राजनीतिक दलो की चेतनाओ से पृथक् था। उसे पुराने स्लावोफिलो से सहानुभूति थी परन्तु कात्कोव के-से राष्ट्रीयतावादियो पर उसने गहरी चोट की। उसकी शैली शक्तिम और मार्मिक थी और महान् विचारको की भाति वह अपने युग से आगे था। उसे रूस से अगाध प्रेम था और वह ईसाई धर्म का बडा हिमायती था, उसके आचार विधान मे ईसाई आचार का गहरा पुट है। उसीकी परपरा मे मिखेल साल्तिकोव भी था।

साल्तिकोव[2] ने 'शेद्रिन' नाम से लिखा और प्रतिभा तथा ससार के प्रधान व्यग्यकारो के नाते रूसी साहित्य मे उसका असामान्य स्थान है। उसकी व्यग्यात्मक चोट क्रिलोव, गोगोल और ग्रिबोयेदोव सबसे भिन्न थी, उन सबकी शक्ति से परे। उसने बहुत लिखा। उसकी कृतियो के सग्रह ग्यारह जिल्दो मे प्रकाशित हुए। उसमे अनेक साहित्यिक अमर रचनाए है। आरम्भ मे ही वह व्यात्का निर्वासित कर दिया गया, जहा उसे आठ-नौ वर्ष रहना पडा। वहा उसके अनुभव ने बडी समृद्धि अर्जित की। उसने उसका प्रकाशन (१८५६-५७) मे अपने 'प्रातीय जीवन के स्केच' मे किया। उसकी दृष्टि सर्वत्र पहुची, श्रीमानो के जीवन से लेकर किसानो और कैदियो के जीवन तक और उसके व्यग्य की प्रखर चोट प्रस्तुत विषय पर गहरी पडी। रूसी साहित्य मे शायद उसका-सा व्यग्यकार दूसरा नही हुआ। अधिकतर उसके व्यग्य का प्रहार मध्यवर्ग, ऊचे-नीचे अफसरो और रूढियो के ऊपर हुआ। उसकी सबसे ख्यातिलब्ध अमर कृति 'मूल प्रमाणो के आधार पर एक नगर का इतिहास' है। इसमे ग्लोपोव नामक एक मूर्ख नगर का वर्णन है। जहा के लोग इतने मूर्ख है कि वे अपने से भी अधिक मूर्ख व्यक्ति को अपना शासक स्वीकार करते है। ग्लोपोव का अन्तिम शासक वह है जो नगर को बैरक बना देता है। स्पष्टत व्यग्य निकोलस प्रथम पर है।

साल्तिकोव की एक दूसरी अद्भुत रचना 'पाम्यदूरी' है। जिसमे उसने उच्च पदस्थ अधिकारियो के अन्तरग को चीरकर खोल दिया है। कला की दृष्टि से व्यग्य की भूमि पर कही कोई ऐसी कृति सुघड न उतरी। साल्तिकोव नितान्त मौलिक है, व्यग्य की भूमि पर खडा अतिमानव। साल्तिकोव की ही परपरा मे लेस्कोव[3] था जिसने पहले 'स्तेबनित्स्की' नाम से लिखा। लेस्कोव का स्थान भी रूसी आलोचना-साहित्य मे पहली पक्ति मे है। उसमे प्रतिभा है, हास्य और विनोद है, रग और भावनाओ की गहराई है, साथ ही कल्पना की समृद्धि भी है। परन्तु यह सब होते हुए भी शायद लेस्कोव के बराबर दूसरा आलोचक उपेक्षित न हुआ। १८६० मे उसने अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया।

१ Vladimir Sergeyevich Solovyev (१८५३-१९००); २ Mikhail Evgrafovi Saltykov Shchedrin (१८२६-८९); ३. Nikolay Semenovich Lyeskov

परतु १९०२ तक यद्यपि सारे रूस ने उसकी कृतियो को पढा, किसीने उसका मूल्याकन न किया और वह उपेक्षित ही रहा। इसका एक विशेष कारण था। आज का समाज अब वर्ग-विशेष या गिने-चुने लोगो का न रहा और उसकी इकाइयो ने जो फैलकर एक ठोस सिलसिला कायम किया है उसपर वही ठहर सकेगा जो उससे अपनी आत्मीयता स्थापित कर सके। लेस्कोव समाज को उथल-पुथल कर देने वाली तत्कालीन रूसी विचारधाराओं के सघर्ष से अलग था। इसीसे वह उपेक्षित भी हुआ। कार्य के उपसहार के रूप मे उसने एक निर्माणात्मक परिशिष्ट जोडा। वह सुधारवादियो की आलोचना मे निकलने वाला पहला उपन्यासकार था। उसकी आलोचना केवल नकारात्मक ही न होकर क्रियात्मक भी थी।

लेस्कोव की ही भाति पिसेम्स्की[1] भी असामान्य प्रतिभा से सम्पन्न था और उसीकी भाति उसने भी नये आचार-विचारो, सुधारो और सुधारको की आलोचना की। पिसेम्स्की फिर भी लेस्कोव से कही अधिक तिक्त और निराशावादी था। उसने समसामयिक सुधारवादी जनसत्ता की प्रवृत्ति को बुरी तरह धिक्कारा यद्यपि वह स्वय पुराणपथी न था, उसका 'क्रुद्ध सागर' (१८६२) क्रातिकारी और रेडिकल रूस पर भयानक आघात था जिसका परिणाम उसे भी लेस्कोव की ही भाति भोगना पडा। दोनो साहित्यिक ससार से जैसे बहिष्कृत हो गए। ओस्त्रोव्स्की[2] का सम्बन्ध अधिकतर रगमच के इतिहास से था जहा उसने मध्यवर्ग के जीवन और नागरिक तथा निम्नवर्गीय अफसरो, सौदागरो आदि का समसामयिकरूप प्रस्तुत किया। वह एक अर्थ मे आधुनिक रूसी यथार्थवादी कामेडी और ड्रामा का विधाता था। उसने रंगमच को उसकी पुरानी मान्यताओं से मुक्त कर प्राय: सर्वथा आधुनिक बना दिया।

इस सुधारवादी युग की साहित्यिक प्रगति का अकन ग्रिगोरीविच के उल्लेख बिना समीचीन नही हो सकता। वह भी उपन्यासकार था और यद्यपि उसकी सर्जनात्मक शक्ति पिसेम्स्की और लेस्कोव के स्तर पर नही रखी जा सकती, निस्सदेह रूसी साहित्य के किसान-परक कृतियो का वह प्राय: प्रवर्तक था। उसने तुर्गनेव से भी पूर्व किसानो के जीवन का जो चित्रण पहली बार किया तो उसके पाठक उस जगत के प्रति सहृदय हो सहानुभूति से सराबोर हो उठे। अपने 'माझी' मे उसने तुर्गेनेव की ही भाति चित्रण मे कुशलता प्रदर्शित की और अपने 'देहात की सडके' मे तो उसने पूर्ण जमाने का बडी चातुरी से चित्र खीचा। विनोद, हास्य, करुण और नैसर्गिक सहानुभूति की तो उसने एक नई धारा ही बहा दी।

---

१. Aleksyey Feofilaktovich Pisemsky (१८२०-८१). २ Aleksander Nikolayevich Ostrovsky (१८२३-८६)

: ६ :

टॉल्स्टॉय और दॉस्ताएव्स्की

तुर्गनेव ने रूसी साहित्य को यूरोपीय धरातल पर खडा कर दिया था। उससे रूसी साहित्य को असाधारण आदर मिला। उसी युग ने टॉल्स्टॉय[1] और दॉस्ताएव्स्की[2] को भी उत्पन्न किया जो अपने देश के साहित्य के विशाल स्तम्भ होतेहुए भी वस्तुत विश्व-साहित्य के कर्णधार बन गए। उपन्यासो के क्षेत्र मे उनके नाम आलोचक की लेखनी ससम्भ्रम लिख जाती है। दोनो विचारवादी थे, दोनो ही क्रातिकारी, दोनो सुधारक और असाधारण कलाकार थे।

टॉल्स्टॉय ने तो धर्म और जीवन के क्षेत्र मे भी एक वैयक्तिक क्रान्ति की थी। वह खोजी था, असाधारण खोजी। उसकी आखे गरुड की आखे थी जिससे समाज मे कही कुछ छिप न सकता था। वह सुकरात की परपरा से जन्मा था और जिस दिन से उसने अपने साहित्यिक अथवा चिन्तक जीवन का आरम्भ किया उस दिन से लेकर अपनी मृत्यु के दिन तक कभी कोई बात ऐसी अगीकार न की जो केवल पारस्परिक थी। वह विचारो को, कथित सत्यो को, पूर्णत विशिष्ट करके देखता था और उसके अनुसधान की इस वृत्ति मे एक नई विश्लेपक चेतना का आविर्भाव हुआ। उसकी इस विश्लेषक शक्ति के साथ निर्माता की शक्ति का भी गहरा योग था। उपन्यासो की दुनिया मे उसने चिंतन का राज स्थापित किया परतु कला को उपेक्षित न होने दिया, उसकी महानता केवल रूसी साहित्य की निधि नही ससार के साहित्य का गर्व है। उपन्यास के क्षेत्र मे तो वह ससार का सबसे बड़ा कलाकार है। कुछ अजब नही कि लेनिन का-सा क्रातिकारी उसकी कृतियो पर रीझ गया हो और गोर्की के सामने उसने उन्हे आदर्श रूप मे धर दिया हो।

टॉल्स्टॉय की रचनाए उसके अनुसधान का परिणाम है, उसकी चेतनाओ और अनुभूतियो का कलात्मक निरूपण, अपने 'बचपन, कैशोर और तारुण्य' मे उसने इन तीनो विकास-कालो पर दृष्टि-प्रक्षेपण किया है। इसे हम दृष्टि-प्रक्षेपण इसलिए कहते है कि यह केवल अतीत पर सिंहावलोकन नही वरन् उसका एक प्रकार से पुनराकन है। जीवन की उन आरम्भिक मजिलो से हटते ही वह प्रौढ पुरुष के वातावरण के अनुसधान मे लगा, 'ज़मीदार की सुबह' मे उसने ज़मीदार का जीवन खोलते हुए दिखाया, जो वास्तव मे उसका अपना जीवन था, कि वहा सिवाय असतोष के और कुछ न था। फिर वह काकेशस की ओर भागा और वहा से शक्ति पाकर सूझ के साथ उसने अपनी अद्भुत कृति 'कज्जाक' रची। फिर वह दुनिया की ओर लौटा और क्रीमिया के युद्ध मे शरीक हुआ। उसने उसको युद्ध के दर्शन

१ Count Leo Nikolayevich Tolstoy (१८२८-१९१०), २ Feodor Dostoyevsky

पर एक दृष्टि दी। क्रीमिया के युद्ध से लौटकर वह भ्रमण के लिए निकला; विदेशो की यात्रा करता रहा। वहा से लौटकर उसने विवाह किया और गृहस्थ बना। गृहस्थ के जीवन का सुख उसने अपने 'गार्हस्थ्य सुख' मे व्यक्त किया। और तब १८६५ मे अपना 'युद्ध और शाति' लिखा। 'दिसम्बरी' आन्दोलन पर लिखने की उसकी उत्कट इच्छा थी और 'युद्ध और शाति' जैसे उसने उसकी भूमिका के रूप मे लिख दी। उपन्यास उसके अपने ही सस्मरणो पर आधारित था, उसका जगत् काल्पनिक किंचित् न था। पहली बार ऐतिहासिक उपन्यास मे उसने अनुभूत सत्य को शरीरी बनाया। लगता है जैसे उस उपन्यास के पात्रो के बीच हम स्वय जा पडे हो, उनको हम जानते हों और उनकी पृष्ठभूमि हमारा अपना ही अनुभूत अतीत हो। उसमें उसने एक समूची पीढी का अंकन किया। उसके 'पियर बेजुखोव' के रूप मे उसकी अपनी खोज मूर्तिमान हुई और रोस्तोवों के चरित्र-सा पारिवारिक जीवन का सुन्दर निरूपण तो साहित्य मे कही मिलने का नही और न 'नताशा' का-सा मनोरम व्यक्तित्व ही। तुर्गनेव की नारिया अपने रूप में कलाकार की चित्रण कुशलता मे अपनी सानी नही रखती, सही, पर टॉल्स्टॉय की नताशा के मानव-सौन्दर्य को कोई देखे और उसके विधाता कलाकार टॉल्स्टॉय की निपुणता को। युद्ध और शान्ति ऐतिहासिक उपन्यासो की दुनिया मे, चिन्तन और कला के क्षेत्र मे बेजोड है।

टॉल्स्टॉय का दूसरा ससार-प्रसिद्ध उपन्यास 'अना कैरेनिना' (१८७५-७६) मे प्रकाशित हुआ। इसमे वेलास्क की भाति एक विशाल कैन्वस पर उस असाधारण कलाकार ने सेन्ट पीटर्सबर्ग और देश के उच्च वर्ग के समसामयिक जीवन को उतार दिया। 'अना कैरेनिना' का नायक लेविन स्वय टॉल्स्टॉय है। इस उपन्यास मे भी टाल्स्टॉय की कला उसकी अन्य कृतियो की ही भाति रूस की भौगोलिक सीमाओं को लाघकर बाहर निकल गई है क्योंकि इसके पाठक को भी क्षण मात्र के लिए क्षोभ नही होता कि वह विदेशी कहानी पढ रहा है। लगता है, अना प्रत्यक्ष देख रही है, कुछ सुन रही है। अप्रतिम कुशलता के साथ व्रोन्स्की के प्रति अना के प्रेम का उद्घाटन और विकास हुआ है। उपन्यास का प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक घटना, प्रणय के चढाव-उतार, आखिरी विपद् तक सभी कुछ अद्भुत है, यद्यपि सारा सत्य, सुगम और स्वाभाविक है।

अपने 'आत्मोद्घाटन' मे भी टॉल्स्टॉय ने अपनी विश्लेषक दृष्टि बरकरार रखी और स्वय अपने को भी उसमे तार-तार कर दिया। उसे विश्वास हो गया था कि सम्पत्ति ही सारे दुःखो का मूल है। और उसने स्वय सर्वथा मुक्त हो जाना भी चाहा यद्यपि वह ऐसा न कर सका। उसने तृष्णा का शमन कर लिया था और सम्पत्ति उसके लिए कोई आकर्षण न थी परन्तु पारिवारिक सम्बन्ध उसके मार्ग मे बाधक सिद्ध हुए। फिर भी जीवन के अन्तिम दिनों मे घर से उसका पलायन सिद्ध करता है कि सम्पत्ति छोडने की उसकी इच्छा बनावटी न थी।

'अना कैरेनिना' के बाद टॉल्स्टॉय ने साहित्य का क्षेत्र कुछ काल के लिए छोड दिया। फिर भी वह लिखता रहा। पहले उसने बच्चो के लिए कहानिया लिखी फिर धर्म सम्बन्धी कुछ पैम्फलेट लिखे। १८८६ मे वह फिर साहित्य के क्षेत्र मे जो लौटा तो उसके हाथ मे किसान जीवन का वह सबल निरूपण 'अधकार की शक्तिया' था। फिर एक के बाद एक, उसके 'क्रूत्सेर सोनाता', 'ईवा ईलिच की मृत्यु और रिसरेक्शन' आए, एक से एक सुघड। रिसरेक्शन तो कुछ आलोचको की दृष्टि मे उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति है। टॉल्स्टॉय के मरने के बाद भी उसकी कुछ रचनाए प्रकाशित हुई। उनमे प्रधान 'जीवित लाश' है।

टॉल्स्टॉय की कथा चिन्तनशील, पर सरल और स्वाभाविक है। उसमे क्रातिकारी का साहस सर्वत्र है और निर्माण के लिए पुकार है। टॉल्स्टॉय ने महात्मा गाधी पर कितना गहरा प्रभाव डाला यह उस भारतीय सुधारवादी नेता ने स्वय स्वीकार किया है। टॉल्स्टॉय ने ससार के अन्य महापुरुषो को भी अपनी सूझ और साहस से प्रभावित किया। ससार के साहित्याकाश मे तो वह चन्द्रमा की शीतल चन्द्रिका के साथ उदित हुआ।

दॉस्ताएव्स्की[१] रूसी गद्य साहित्य मे टॉल्स्टॉय के बाद सबसे बडा व्यक्ति माना जाता है। यूरोप ने, जो तुर्गनेव से प्रभावित था, पहले दॉस्ताएव्स्की की उपेक्षा की। उसकी कृतिया उपलब्ध भी न थी परतु आज वहा के आलोचक साधारणत स्वीकार करते है कि दॉस्ताएव्स्की तुर्गनेव से उसी मात्रा मे महान् है जिस मात्रा मे लियोनार्दो दा विची फान्डाइक से कला के क्षेत्र मे महान् था। यूरोप ने तब अभी सिवा 'अपराध और दण्ड' के दॉस्ताएव्स्की का और कुछ न जाना था। परतु जैसे-जैसे उसकी कृतिया पश्चिमी यूरोप की भाषा मे अनूदित होती गई वैसे ही वैसे उसकी सत्ता का बोध लोगो को होता गया। कुछ आलोचको की दृष्टि मे तो वह टॉल्स्टॉय से भी बडा है। जो भी हो, है वह टॉल्स्टॉय का एक प्रकार से साहित्य मे जवाब, उसका 'एन्टीथेसिस'। टॉल्स्टॉय पार्थिव और स्वस्थ का सबल चित्रकार था, दॉस्ताएव्स्की असाधारण, अपराधियो, पागलो, रहस्यो का उद्धर्ता था। टॉल्स्टॉय अपने ही विस्तृत परिवार मे सम्पन्न शान्त जीवन बिताता था, दॉस्ताएव्स्की दर-दर की ठोकरे खाता फिरा, कानून और घृणित दड विधान का शिकार था। पहले उसे प्राणदड की आज्ञा मिली, फिर चार बरस तक साइबेरिया मे उसने कठिन कैद की सजा भोगी, छः वर्ष निर्वासित रहा। घर की आर्थिक स्थिति सत्यानाश को पहुच गई थी, सदा ऋण मे रहता था। पुलिस और अधिकारी उसे एक ओर पीसते थे। प्रतिगामी उदारवादी दूसरी ओर उसे गाली देते थे। हजार-हजार विपत्तियो को झेलने वाला, पैसे-कपडों के अभाव मे दिन-दिन रात-रात कलम घिसने वाला, उस लेखनी के अहर्निश श्रम

---

१. Feodor Mikhailovich Dostoyevsky (१८२१-८१)

से भी कुछ कायदे से न कमा सकने वाला दॉस्ताएव्स्की टॉल्स्टॉय से इस दिशा मे सर्वथा भिन्न था। उस महान् साहित्यकार ने इतनी विपत्ति कही कभी न झेली।

दॉस्ताएव्स्की की पहली पुस्तक 'कगाल' १८४६ मे निकली और उस कृति से यतीमो और अभागो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति का पता चल गया। उसकी दूसरी पुस्तक 'मरणागार से भेजे पत्र' मे यह मानव-सहानुभूति और व्यापक हो उठी। कैद के दिनो पर आधारित यह कृति कारावास के जीवन का अद्भुत उद्घाटन है। उसके शब्द-शब्द से मानव-भाव की पुकार उठती है। १८६६ मे उस उपन्यासकार का प्रसिद्ध उपन्यास 'अपराध और दण्ड' प्रकाशित हुआ जिसने उसे प्रभूत ख्याति प्रदान की। मनोविज्ञान का साहित्य मे इतना सही निरूपण और निर्वाह कम हुआ है। आशा, भय, घबडाहट इसके विशेष स्थल है। वृद्धा का खून करके रास्कोलनिकोव की जो मन:स्थिति हो जाती है वह व्यक्त करना कठिन है। राजुमिखिन जब वारागना के सामने घुटने टेककर कहता है—'मै तुम्हारे सामने नही झुका हुआ हू, मानव जाति की समूची पीडा के सामने झुका हू' तब जैसे उपन्यासकार अपनी कुल सहानुभूति सारी वेदना मे अपने साहित्यादर्श को खोलकर रख देता है। जब दॉस्ताएव्स्की ने अपना यह उपन्यास लिखा तब तक यूरोप में अभी 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' का पारिभाषिक उपयोग न हुआ था। पर बाद में जिस उपन्यास-परपरा की इस नाम मे घोषणा हुई उसके उपन्यास इस 'अपराध और दण्ड' के समाने नगण्य हो गए।

'अपराध और दण्ड' के बाद ही 'मूर्ख' (१८६८) का प्रकाशन हुआ। इसका नायक म्विश्किन, जिसकी सज्ञा पुस्तक के साथ ही मूर्ख है, वास्तव मे बुद्धिमान मूर्ख है। उसमे व्यग्य, घृणा, अभिमान का अभाव है। उसकी सरलता धूर्तों, झूठों, चोरो और पापो से निरन्तर रक्षा करती है और उन सबपर वह अपने अकृत्रिम व्यक्तित्व की छाप छोडता जाता है। उसकी नेकनियती सारी बदी की सफल दवा है। उसमें आचरण का अद्भुत माधुर्य है। उसके जवाब में सौदागर रोगोजिन अविनीत तृष्णाओं का गुलाम है। और जिस नताशा को प्यार करता है उसीको मार डालता है। उपन्यास के साधारण चरित्र भी अचरज की सफलता से नक्श है। अनेक लोगों को 'मूर्ख' दॉस्ताएव्स्की की सबसे सुघड कृति लगी है।

१७८१ मे उसने 'भूत' लिखा जो निहिलिज्म के विरोध में प्रस्तुत हुआ। पिछले दशक मे निहिलिज्म का भडाफोड हो चुका था फिर भी अभी अनेक उसका पल्ला पकडे हुए थे और अपनी आदर्शवादिता के कारण स्वार्थ-साधकों के शिकार हो रहे थे। स्थिति-विशेष के परिचय मे पुस्तक अतिरंजित कही गई यद्यपि अगली घटनाओ ने 'भूत' के दृष्टिकोण की सचाई प्रतिष्ठित कर दी। इसके बाद ही उसने फिर जर्नलिस्ट का जीवन अख्त्यार किया यद्यपि कुछ काल बाद वह फिर अपना 'कारामाजाव बन्धु' लेकर उपन्यास

क्षेत्र मे उतरा। यह उसके उपन्यासो मे सबसे लम्बा है, फिर भी अपूर्ण ही है। इसमें दिमिमि, इवा और अल्योश नामक तीन भाइयो का चरित है। इनमे पहला कामुक है, दूसरा लोकवादी और तीसरा मानवता का प्रेमी। पुस्तक पूरी होने के पहले ही दॉस्ताएव्स्की ससार से चल बसा।

पुश्किन की मूर्ति उद्घाटित करते समय दॉस्ताएव्स्की ने जो व्याख्यान दिया था उससे उसके अनेक राजनीतिक शत्रु भी मित्र बन गए थे। और १८८१ मे जब वह मरा तब उसकी अर्थी के साथ सभी प्रकार के नर-नारियो की असख्य भीड इकट्ठी हो गई थी। इससे उसके रूसी समर्थको की निष्ठा का परिचय मिलता है। दॉस्ताएव्स्की का स्थान रूसी साहित्य की चोटी पर है, टॉल्स्टॉय के बराबर उसने ससार के मनोवैज्ञानिक उपन्यासो की परम्परा का आरम्भ करते हुए अपने विचारो को साहित्य का कलेवर दिया। उसका जीवन कष्टकर और सघर्षमय था। फिर भी किसीमे इतनी निर्भीकता, इतना साहस न था। कभी उसने परिस्थितियो से मजबूर होकर विचारो से समझौता न होने दिया।

: ७ :

कविता का पिछला युग

कविता का यह पिछला युग 'कला कला के लिए' का उपासक था। इस उन्नीसवी सदी के तीसरे चरण में स्वय रूस मे भी कुछ कवि इस विचार के हुए जिन्होने इस सिद्धात का पोषण किया परन्तु साधारणत वहा की राजनीतिक स्थिति ने इसे अधिक प्रश्रय नही दिया। उपन्यास और गद्य साहित्य का, जो विचारो का वाहन बन चला था, बोल-बाला था। हा, ज़ार अलेग्जेंडर द्वितीय की हत्या के बाद फिर एक बार पद्य के क्षेत्र मे कुछ प्रयास हुए और उस साहित्य ने कुछ प्रगति की।

इस काल के कवियो मे पहला नाम त्यूजेव[1] का है जो पुश्किन का समकालीन था, इससे चार वर्ष छोटा, पर जिसकी कृतियो की दीर्घकाल (१८५४) तक बडी उपेक्षा हुई। उसकी कविता मे विचारो की गहराई और लिरिक की मिठास है। प्रकृति को भी वह सुन्दर अकित करता है। मनुष्य का भयानक अदृष्ट और सर्वथा शून्यता की छाया जैसे उसे घेरे-घेरे फिरती है। यद्यपि उसकी कविता मे वसन्त की ताजगी और धूप भी फैल जाती है, वसन्त के चित्रो के अतिरिक्त रात का जितना आह्लादकर, भयकारक, स्वप्निल वर्णन उसने किया है किसी और रूसी कवि ने नही किया।

१. Feodor Ivanovich Tyutchev (१८०३-७३)

नेक्रासोव[1] जन कवि था और उसने अपनी प्रेरणा सीधे जीवन से ली और जनता के हर्ष-विषाद का उसने काव्यांकन किया। उसकी कविता में मनुष्य और प्रकृति साथ आते हैं। परन्तु प्रकृति शेली, वर्ड्सवर्थ की भांति आदर्श अथवा बायरन की भांति नहीं मनुष्य का मित्र-शत्रु होकर। क्रैब की भांति वह भी सर्वथा यथार्थवादी है। उसी की तरह उसमें भी करुण रस का प्रभूत प्रवाह है। उसकी सबसे महत्वपूर्ण कृति जनपरक महाकाव्य थी 'रूस में सुखी कौन है।' उसमें अलौकिक कल्पना की बहुलता है। इसमें भी काफी तीव्र विषाद है, व्यंग्य है, कठोर यथार्थवाद है, प्रकृति-पर्यवेक्षण है, अमित विविधता है। उसकी दो लम्बी कविताओं में साइबेरिया में भेजे जाने वाले दिसम्बरी क्रान्तिकारियों की पत्नियों का करुण वर्णन है।

यूरोप की 'पारनेसियन' परंपरा के तीन रूसी कवि माइकोव (१८२१-८७), फेत और पोलोन्स्की (१८२०-९८) हैं। ये तीनों राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं से मुक्त हैं। माइकोव क्लासिकल विषयों का प्रेमी है, इटली और पुराने बैलेडों से प्रभावित परन्तु उसकी शक्ति रूसी प्रसंग के चित्रण में है। माइकोव की ठोस मूर्तिवत रूपायनता के विपरीत फेत की कला उसकी काल्पनिक स्वाप्निल मायावी शैली में है। उसकी कल्पना, उसकी भावना, शब्द-योजना सभी नाज़ुक हैं। पोलोन्स्की की कविता मधुर आकर्षक व्यक्तित्व का भेद खोलती है। उसमें संगीत का माधुर्य है और सादगी है। परन्तु तीनों में से कोई नेक्रासोव के स्तर को न छू सका। उसके मुकाबले तीनों साधारण कवि हैं। हां, यदि उसके समीप इस काल का कोई कवि पहुंचता है तो वह काउण्ट अलेक्सी टॉल्स्टॉय[3] है। वह भी पारनेसियन परम्परा का ही कवि था और नैतिक काव्यत्व से अलग था। यद्यपि कुजमा पुत्कोव के नाम से जो व्यंग्य उसने लिखा वह रूस में घर-घर प्रचलित है। उसने प्रिन्स सेरेब्रियानी नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा और रूसी इतिहास के प्रसिद्ध भयानक ईवा-युग पर नाटकों की ट्रिलोजी भी। इनमें 'भयानक ईवा की मृत्यु', 'ज़ार फियोदोर इवानोविच' और 'ज़ार बोरिस' संगृहीत हैं जो अकसर खेले जाते हैं और रंग-मंच पर अच्छा प्रभाव लाते हैं। परन्तु अलेक्सी टॉल्स्टॉय की ख्याति उसकी लिरिक कविताओं पर अवलंबित है और उसकी बहुमुखी प्रतिभा पुश्किन की याद दिलाती है। उसकी लिरिक सौंदर्य और माधुर्य की प्रतीक है। वसन्त और पतझड़ पर उसने सुन्दर कविताएं लिखीं। वसन्त के सौरभ ताज़गी, प्रेमावेग, प्रभात आदि पर तो उसकी कविताएं यूरोप के साहित्य में भी अपना सानी नहीं रखतीं।

---

१. Nikolay Alekseyevich Nekrasov (१८२१-७७); २. Afanasi Afanasyevich Shenshin-Fet (१८२०-९२); ३. Aleksey Kostantinovich Tolstoy (१८१७-७५)

इस साधारणत सूख युग मे भी कोल्त्सोव की परपरा मे कवि निकितिन हुआ। उसने अपने विषय सीधे जीवन से लिए। क्रीमिया के युद्धकाल मे उसने जो देश-प्रेम सबधी कविताए लिखी उनसे उसे खासी ख्याति मिली। परन्तु अधिक सफल वह हुआ प्रकृति के वर्णन मे। उसकी सूर्यास्त, प्रभात, अबाबीलो के घोसलो आदि पर कविताए अधिक सफल हुईं। उस काल के दो और कवियो के नाम उल्लेखनीय है जिनकी तब तो काफी उपेक्षा हुई पर जो बाद मे काफी पढे गए। वे थे स्लुचेव्स्की और अपुख्तिन। इनमे पहला दार्शनिक कवि है और उसकी शैली बोझिल है। अपुख्तिन पारनेसियन-परपरा का कवि था। १८८० के बाद रूस मे कवियो की बाढ-सी आ गई। इस काल के कवियो में सबसे महत्व का नादसन (१८६२-८७) था। वह चौबीस साल की आयु मे ही यक्ष्मा से मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसकी कविताओ के इक्कीस सस्करण हुए और उनकी १,१०,००० प्रतिया बिकी। दस सस्करण तो उसके जीवन काल मे ही हो चुके थे। नादसन ने युवावस्था के विषाद, स्वप्न, निराशा आदि गाए। उसके सामने अन्य कवियो की कृतिया लोगो को बडी फीकी लगने लगी। उसकी प्रकृति सम्बन्धी वसन्त, रात, विशेषत रिवियश की रात पर कविताए बडी लोकप्रिय हुईं। वे उन्हे बडी मादक लगी।

परन्तु अगली पीढी ने उसकी अवहेलना कर दी। वह वर्तमान काल्पनिक जगत से दूर हटकर यथार्थ के समीप आता जाता था जिसकी आवश्यकताए, प्रवृत्तिया, प्रेरणा नई थी, अपनी। इस नवीन परपरा मे सर्वथा अवधि के पहले सोलोगुब ब्रूसोव, बाल्मोन्त, इवानोव और बेली ने अपनी रचनाए की जिनकी उपेक्षा नही की जा सकती। अलेग्जैण्डर ब्लाक इनमे प्रधान था। रूस के वर्तमान कवियो मे उसका स्थान बडा ऊचा है। अपनी सुन्दरतम कृति 'बारह' मे उसने क्राति की आत्मा के गीत गाए। परन्तु रूस इधर निरन्तर आगे बढ़ता गया है और उसकी समाजवादी निर्वर्गवादी परपरा को नित्य नये कवियो का शक्तिम योग मिलता जा रहा है।

: ८ :

बीसवीं सदी और वर्तमान

तुर्गनेव और दॉस्ताएव्स्की की मृत्यु के साथ एक महान् साहित्यिक युग का अन्त हुआ। उसके बाद का युग साहित्यिक निर्माण के विचार से अन्धकारमय था जो रूस-जापान के युद्ध तक कायम रहा। १९०५ मे क्रांतिकारी आन्दोलन की लहर उठी जो धीरे-धीरे अपने जबडे खोलती प्रथम महासमर के ही समय पुराने रूस को निगल गई।

परन्तु इस बीच कुछ ऐसे साहित्यिकों का प्रादुर्भाव हुआ जो न केवल रूस के लिए अमर हुए वरन संसार के साहित्य पर अपनी छाप छोड गए। इनमे प्रधान चेखोव[१] और मैक्सिम गोर्की[२] थे। इनके अतिरिक्त गार्शिन, कोजलेंको और मेरेज्कोस्की ने भी अपनी प्रतिभा से रूसी साहित्य का कल्याण किया। इनमे चेखोव और गोर्की असाधारण हैं। चेखोव ने मध्यवर्ग और शिक्षित जनता का चित्रण कर रूसी साहित्य की परिधि विस्तृत की और उस साहित्य का खोया हुआ विनोद उसे फिर दिया। गोर्की तो अप्रतिम है। उसने सर्वथा नई भूमि तैयार की और अपनी कृतियो मे सर्वहाराओ, अभागो, मजूरो, कगाल शिल्पियों, ऐरो-गैरो का चित्रण किया। परन्तु उनके विषाद का निराशामय करुण रूप उसने अपने साहित्य मे नही रखा, और यदि रखा भी तो उन्हे सचेत करने के लिए पृष्ठ-भूमि के रूप मे जिससे वे अगले सहार और निर्माण का स्वप्न पूरा कर सकें। उसमें कही मायूसी नही। कही बुजदिली नही।

गोर्की की कला एक नया सन्देश ले आई, एक नई दुनिया लिए जिसकी किसीने कल्पना तक न की थी। जीवन के प्रति उसके नायकों का रुख उसके पूर्व के सारे उपन्यास-कारो के रुख से भिन्न था। उसके हीरो जीवन मे 'हैमलेट' का स्वाग नही करते, जीवन की विषमताओ और कठिनाइयो को हल करने के लिए दैन्य नही प्रदर्शित करते, न दान की भिक्षा मागते या आत्मसमर्पण करते है। वे जीवन के सघर्ष में बचे हुए वीर है, इससे वे हेय नहीं हो सकते। उनमे बदला लेने की ताकत और तमीज है।

गोर्की साहित्य का नया विधाता है, नया निर्माता। जीवन का वातावरण अभि-सृष्ट करने, उसके अमिट चित्रण में उसे कमाल हासिल है। और प्रकृति के चित्रण में तो वह जादू का असर पैदा कर देता है। रूसी गद्य साहित्य में पहली बार पुराणपन्थी प्रकृति निरीक्षण से हमारा छुटकारा होता है और हम असल प्रकृति के रूबरू खडे होते हैं। लगता है जैसे साहित्य मे नये प्राण फूक दिए गए हैं, नई बयार बह गई है। गोर्की की सक्रिय कल्पना के साथ यथार्थ का निरूपण होता है जिसमे मेधा और हृदय दोनों अपना उचित भाग पाते है।

चेखोव ने पुरानी परम्परा में लिखा। उसकी भूमि दूसरी जरूर है पर जैसे वह तुर्गनेव का वारिस है। उसने रूसी अधकार युग को अपनी कृतियो मे प्रकाशित किया। उसमे यथार्थ जैसे कैमरे के लेन्स मे उठ जाता है। पर साथ ही वह अप्रतिम कलाकार भी है। उसका निराशावाद मानवता और हास्य के पुट से सदा सह्य हो रहता है। यदि कहीं

---

१. Anton Pavlovich Chekhov (१८६०-१९०४); २. Maxim Gorky (Aleksey Nikolayevich Pyeshkov) (१८६८-१९३६)

ऐसा न होता तो उसके चित्रित जगत का विषाद झेले नही बनता, सर्वथा असह्य हो उठता। उसकी कुछ कृतिया स्टेज के लिए लिखी गई और उसने उनमे देहाती जीवन का खरा प्रतिबिम्ब रखा। 'काका कान्या' इसी प्रकार की उसकी रचना है। उसकी कहानियो की ही भाति यहा भी वही थके, सरल, सुस्त लोग है, आशा से रहित, विचारो मे कगाल, परन्तु यहा भी ओछे और क्षुद्र जीवन के पीछे मानवता की मिठास है।

रूसी जापानी युद्ध छिडने के बाद ही १९०४ मे चेखोव मरा। गोर्की उसके दशको बाद तक लिखता रहा। उसी काल मेरेज्कोव्स्की ने भी लिखा, आलोचना, काल्पनिक ऐतिहासिक उपन्यास। उसकी ख्यातिलब्ध कृतिया, गद्य मे ट्रिलोजी, 'देवताओ की मृत्यु' (नास्तिक जुलियन की कहानी) और 'अनार्किस्ट' (अराजक पीटर महान् और उसके पुत्र अलेक्सी की कहानी) और 'देवताओ का पुनरुत्थान' (लियोनार्दो दा विची की कहानी) है। इस ट्रिलोजी का अनुवाद प्रत्येक यूरोपीय भाषा मे हो चुका है। आलोचना के क्षेत्र मे टॉल्स्टॉय, दॉस्ताएव्स्की और गोगोल सम्बन्धी उसके ग्रन्थ उत्कृष्ट है।

रूसी-जापानी युद्ध काल मे कुप्रिन[1] ने 'यामा' लिखकर बडा नाम कमाया। वह उपन्यास है भी सुन्दर। अपने दूसरे उपन्यास 'डुएल' और बाद की कृतियो मे भी उसने अपनी वर्णन-शक्ति पूर्ववत कायम रखी। उसी काल लियोनिद आन्द्रीव ने भी अपनी कहानिया और नाटक लिखे जिनमे सुन्दर प्राजल शैली मे निराशावाद अपना दम तोड चला।

१९०५ मे पहला क्राति-आन्दोलन अपनी अनन्त साधो और आशाओ के साथ उठा। राजनीतिक दृष्टि से तो वह कुचल दिया गया परन्तु उसके परिणामस्वरूप जिन प्रवृत्तियों ने साहित्य मे पदार्पण किया उनमे लोकवादी आशावादी सबल गोर्की-अनुयायी साहित्य परम महत्व का था। १९०५ के राजनीतिक प्रयत्नों का लाभ १९१७ की सफल क्राति से हुआ।

नये रूस-सोवियत जनतत्र की मानव जाति को (साहित्येतर भी) देन उसकी अभिव्यक्ति है, सरल-स्पष्ट-सबल अकृत्रिम अभिव्यक्ति। सत्य के प्रति उसकी निष्ठा सर्वथा बेजोड है क्योकि गद्य या पद्य समूचे रूसी साहित्य का मूल यथार्थ की भूमि मे है। उसकी मानवता, मानव-सहानुभूति और हृदय बडा व्यापक है, इतना व्यापक कि उसमे अपनी अपरिमित सहानुभूति, बन्धुत्व, दया, दान और प्यार द्वारा वह ससार की सारी वेदना को डुबा सकता है।

---

१. Aleksander Kuprin (१८७०-१९३९)

: ६ :

क्रान्ति के बाद

क्रांति-पूर्व और उत्तरकाल के मैक्सिम गोर्की का उल्लेख ऊपर हो चुका है। उसके अतिरिक्त भी अनेक साहित्यकार है जो दोनो युगो मे लिखते रहे है। कुछ तो सर्वथा नये है जिन्होने उत्तरकाल मे ही लिखना शुरू किया। पुराने लेखकों मे, जिन्होंने उत्तरकाल मे लिखा उनमे से कुछ बोरिल पिलनिएक, इवानिन और लियोनेव है। पहले ने 'ऊसर साल' दूसरे ने 'साइबेरिया की कहानी' और तीसरे ने 'आइजक बैबेल' लिखा। उस काल का एक और उपन्यास 'रक्तस्नात रूस' है।

उसके बाद ही प्रोलेतारियन (सर्वहारा) उपन्यासो की रचना विशेष शक्तिमती हुई। जामयतिन बुनिन[1], कुप्रिन[2] आदि भी पहले से लिखते आ रहे थे और बाद तक लिखते रहे परन्तु उन्हे अपने दृष्टिकोण मे कुछ परिवर्तन करना पड़ा। क्रांति बाद के उपन्यासो मे असामान्यकृति सेराफिमोविच का 'लौह वाष्प' है। आलेग्जान्दर फदेयेव ने 'उन्नीस' लिखकर अपना स्थान उत्तरकालीन उपन्यासकारो मे ऊचा किया। उसमे मजूरों की दुनिया सिरजी गई। मिखेल शोलोकाव इन पिछले काल के उपन्यासकारो का अग्रगी रहा है। 'और डान धीरे बहती है' लिखकर वह अमर हो गया। इस उपन्यास का सारे संसार मे प्रचार हुआ। उसका दूसरा उपन्यास है 'जोती हुई जमीन'। आलेक्जान्दर एवदेन्की का उपन्यास 'मैं प्यार करता हू' बडा लोकप्रिय हुआ है। उसमे कामिक जीवन की महिमा प्रदर्शित है।

इधर के रूसी उपन्यासकारो मे प्रधान इल्या एहरेनबुर्ग है। उसका 'पेरिस का पतन' द्वितीय महासमर से सम्बन्ध रखता है और पेरिस के सर हो जाने के बाद के वहां के जीवन पर प्रकाश डालता है। रूस की लेखिकाओ में अन्नाकोरावेवा विशेष प्रसिद्ध हुई है। उसने रूस और फिनलैंड के युद्ध के अवसर पर अपना सफल उपन्यास 'थुशाग्रव की लेना' लिखा था। अलेक्सी टॉल्स्टॉय आज के प्रधान रूसी लेखको मे है। रूस के गृहयुद्ध का बडा सुन्दर चित्रण उसने अपने उपन्यास 'कलवरी की राह' मे किया। उसका उपन्यास 'पीटर प्रथम' काफी विख्यात है। इसी पिछले महायुद्ध के समय वाण्डा वासिलेव्स्का ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास 'इन्द्रधनुष' लिखा था। युद्धकालीन उपन्यासो मे

---

१. Ivan Alekseyevich Bunin (जन्म १८७०); २. Aleksander Ivanovich Kuprin (१८७०-१९३९)

११. लातीनी (लैटिन) साहित्य

: १ :

रिपब्लिक युग

जिस हिन्दी-यूरोपीय आर्य-शाखा ने उत्तर से आकर इटली के प्राचीनतर निवासियो को भगा दिया, उन्हे 'लातिन' कहते थे। उन्हीकी भाषा 'लातीनी' (लैटिन) कहलाती है। उनके आने के बाद ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दी मे एशिया माइनर से आकर एक और जाति रोम के उत्तर तिबेर (टाइबर) नद की घाटी मे बस गई। वह इत्रुस्कन[1] कहलाती है। उसकी अपनी लिपि और भाषा थी जिन्हे जाति के ही नाम पर इत्रुस्कन कहते थे। कालान्तर मे लातिन इनके ऊपर भी हावी हो गए और इटली का इतिहास उन्होंने ही बनाया।

इटली का अधिकतर इतिहास रोम (रोमा) का इतिहास है। इस नगर में इत्रुस्कनो की भी अपनी जनसख्या थी, परन्तु कालान्तर मे लातिन सख्या, बल और महत्व सबमे उनसे बढकर वहा के स्वामी हो गए। रोमा या रोम के मूल का अर्थ है 'बहना' जिससे 'स्रोततटीय' नगर (रोम) उसका नाम पडा। कुछ काल बाद लातिनों का सबन्ध ग्रीको से हुआ और उन्होने उनसे उनकी वर्णमाला सीख ली। वह इस प्रकार थी A B C D E F Z H I K L M N O P Q R S T V X। ई० पू० तृतीय शती मे Z के स्थान पर G कर ली गई, पर ई० पू० प्रथम शती मे Z फिर लौट आया। अब वही ग्रीक वर्णमाला रोमन कहलाई और भाषा तो लातिनो की होने से 'लातीनी' कहलाती ही थी।

पहले तो 'इत्रुस्कन' ही रोमन किसानो के स्वामी जमीदार थे, राजा और निरकुश शासक भी। पर धीरे-धीरे रोमनों ने इनकी शक्ति तोड दी और इनके निरकुश शासको को भगाकर उनसे शक्ति छीन ली। उस काल की इस लातिन या रोमन वीरता की कुछ कथाए प्राचीन लातीनी साहित्य मे सुरक्षित हैं। यह बताना कठिन है कि प्राचीनतम लातीनी साहित्य कैसा था परन्तु जो सामग्री उपलब्ध है उससे सकेत मिलता है कि पहले स्वाभाविक ही उसमे प्रकृति के देवताओ के प्रति कहे मन्त्रों का प्राचुर्य था और वही आज अनुपलब्ध लातीनी साहित्य की आधारशिला है। लातीनी के प्रारम्भिक साहित्य का एक रूप हमे उसके 'विधान के द्वादश पत्रो' (कानून के बारह खाकों) में मिलता है। ये ग्रीक आधार से उठे थे।

प्राचीनतम लातीनी साहित्य का कुछ ज्ञान हमें पहली सदी ईस्वी पूर्व के प्रख्यात

१. Etruscan

राजनीतिज्ञ, कवि और प्रवक्ता सिसेरो[१] की रचनाओ से होता है। सिसेरो स्वयं हुआ तो था रिपब्लिकन (साधारणत प्रजातन्त्र परन्तु रोम मे 'अभिजातकुलीय तत्र') युग (ई० पू० २३०-३०) के अन्त मे परन्तु उसकी कृतियो मे प्राचीन लातीनी साहित्य के प्रसग भी उद्धृत और सरक्षित है। उससे पहले साहित्यकार लिवियस आन्द्रोनिकस[२] का पता चलता है जिसने लातीनी मे होमर[३] की 'ओदिसी' का अनुवाद किया था। उसकी शैली सम नही ऊबडखावड है। 'सातुर्नी' छन्द मे प्रस्तुत उस अनुवाद की कुछ पक्तिया पश्चात्कालीन वैयाकरणो ने दृष्टान्तत· अपनी कृतियो मे उद्धृत की है। उस प्राचीन काल के साहित्य-कारो की कृतिया पाठ्यपुस्तको के रूप मे रोमन स्कूलो मे पढाई जाती थी और 'ओदिसी' का यह अनुवाद प्रथम शती ई०पू० के महाकवि स्वय होरेस[४] ने बचपन मे पढा था। लिवियस भाषाओ का शिक्षक था और उसने ग्रीक 'ट्रैजेडियो' (दुखात नाटक) के भी कुछ अनुवाद किए। २४० ई० पू० मे होने वाले रोम के विख्यात खेल-उत्सव के अवसर पर खेले जाने के लिए लिवियस ने एक ग्रीक नाटक को लातीनी मे प्रस्तुत किया था। सिराक्यूज मे पहले प्यूनिक युद्धो के बाद रोमन जनरलो ने यूरिपिदिज[५] और मेनान्दर[६] के नाटक देखे थे। इन्ही संभ्रान्तकुलीय जनरलो के प्रोत्साहन से ग्रीक नाटको के अनुवाद हुए जो काफी स्वच्छन्द रूप से घटा-बढा दिए गए थे। लिवियस अर्ध ग्रीक था जो रोम बन्दी के रूप मे आया था।

निवियस[७] कम्पानिया का रोमन था और प्यूनिक युद्ध मे लड चुका था। उसने भी ग्रीक नाटको के लातीनी रूपान्तर किए। इस प्रकार के उसके अनुवाद पहली बार २३५ ई० पू० मे प्रस्तुत हुए। वह लातीनी साहित्य का भी पहला नाटककार था। उसने कई प्रकार के मचोपयोगी नाटकीय वेश भी प्रस्तुत किए। अपने 'तारेन्तुम (स्थान-विशेष) की लडकी' मे उसने एक नागरिक लडकी के मन्दिर-विलास का प्रदर्शन किया है। उसने प्यूनिक युद्ध पर एक ऐतिहासिक (एपिक) काव्य भी लिखा था। उसके कुछ खण्डित अश भी मिले है जिनसे उसकी प्रतिभा प्रकट होती है। उस काव्य ने इनियस और वर्जिल[८] दोनो को प्रभावित किया था।

क्विन्टस इनियस[९] नीवियस का समकालीन था। वह लातीनी साहित्य का 'जनक' कहा गया है। लिवियस की ही भाति वह भी ग्रीक और लातीनी दोनो भाषाओ का आचार्य था परन्तु जहा लिवियस कगाल और सामाजिक दृष्टि से उपेक्ष्य मुदर्रिस था, इनियस सभ्रान्त वर्ग का था। स्वय मार्क्स की उसपर बडी कृपा थी। उसने अपने वीर-काव्य 'एनाल्स' का विषय स्वभावत ही राष्ट्रीय चुना। उसने अपना यह काव्य अठारह लघु

---

१. Cicero, २. Livius Andronicus (Ca २८४-Ca २०४), ३. Homer, ४. Horace, ५ Euripides; ६ Menander, ७ Cn. Naevius (Ca. २७०-Ca १९९ B C.), ८ Virgil, ९ Quintus Ennius (२३९-१६९ ई० पू०)

खण्डो और ६०० पद्यो मे रचा। इससे एक ओर तो होमर की वीरछन्द की परम्परा मे पश्चात्कालीन काव्यकारो को लिखने का 'माडल' मिला, और दूसरी ओर पहली बार होमर के षट्पदीय छन्द का रोमन कविता मे व्यवहार हुआ। उसने नीतिपरक प्रबन्ध-काव्य के रूप मे व्यग्य लिखने की भी परिपाटी प्रचलित की।

इनियस की परिपाटी का ही उसके भतीजे पासूवियस[1] ने विकास किया। वह भी राष्ट्रीय नाटककार था और उसकी ट्रैजेडियो की सत्तर पक्तियों के अश आज भी उपलब्ध हैं। आक्कियस[2] उसका समसामयिक था। सिसेरो लिखता है कि दोनो के नाटक खेल-महोत्सवो मे खेले जाते थे। तब पासूवियस ८० वर्ष का था और आक्कियस तीस-पैंतीस वर्ष का।

माक्कियस प्लातस[3] भी इनियस का समकालीन था। उसकी २१ कॉमेडियो का उसके सौ वर्ष बाद होने वाले विद्वान् वारो[4] ने जिक्र किया है। अधिकतर ये नाटक ग्रीक कॉमेडी नाटको के आधार पर लिखे गए थे परन्तु नाटककार ने इटली के वातावरण मे उन्हे 'उगाकर' सर्वथा देशी बना लिया है। उनमे तृतीय-द्वितीय शती ई० पू० का रोमन जीवन अपने सारे विनोद-वैभव के साथ बुना पड़ा है। वह उम्ब्रिया का निवासी था, परन्तु बाद मे रोमन नागरिक हो गया था।

सिसीलियस स्तातियस[5] अपने प्रौढ समकालीन साहित्यिक प्लातस से आयु मे तीस वर्ष से भी अधिक छोटा था। वह पो नदी की घाटी के इन्सुब्रिया का 'गॉल' था जो युद्ध के बन्दी के रूप मे गुलाम बनाकर पहले लाया गया था। फिर स्वतन्त्रता लाभ कर वह इनियस[6] और तेरेन्स[7] दोनो का मित्र बन गया। वह ग्रीक मूल के आधार पर चालीस कॉमेडी नाटको का रचयिता माना जाता है। शैली के दृष्टिकोण मे वह प्रहास्यप्रिय प्लातस और शिष्ट कला-प्राण तेरेन्तियस के बीच खडा है, दोनों की सन्धि पर। स्तातियस तेरेन्तियस से प्राय: बीस वर्ष बडा था।

तेरेन्स अथवा तेरेन्तियस आफेर[8] अफ्रीका का रहनेवाला था और युद्ध मे गुलाम बनाकर रोम लाया गया था। और उसीसे उसने अपने नाम का एकाश पाया। फिर वह स्वतन्त्र कर दिया गया। बाद मे उसपर हैनिबल के विजेता रोम के प्रधान राजनीतिज्ञ जनरल और ग्रीक सस्कृति के पोषक स्कीपियो आफिकानस[9] की कृपादृष्टि पडी जिसमे तेरेन्तियस का भविष्य चमका। गुलाम रह चुकने के कारण लोगो ने प्रसिद्ध कर दिया कि उसके

१. M. Pacuvius (२२० Ca.-१३० ई० पू०); २. Accius (ज० १७०), ३. T. Maccius Plautus (२२०-१८४ ई० पू०); ४. Varro; ५. Caecilius Statius; ६. Ennius; ७. Terence (Ca. १९५-१५९ ई० पू०); ८. P. Terentius Afer; ९. P. Scipio Africanus

नाटक उसके स्वामी के लिखे है। इसका निराकरण उसने अपने नाटको की भूमिका लिखकर किया। उसकी कॉमेडियो के चरित्र बारीक रेखाओ से खिचे लगते है और उनकी रूपरेखा सुकुमार परन्तु स्पष्ट है। आज उसकी छ समूची कॉमेडी (विनोद नाटकः प्रहसन-मुखान्त) उपलब्ध हे। अपने 'आन्द्रोस की महिला' मे उसने प्लातस के विपरीत सभ्रान्त वारागना का चित्रण किया है। उसी प्रकार उसका 'आत्मपीडक' भी सभ्रान्त कला का स्वच्छ आमोदयुक्त आदर्श प्रस्तुत करता है।

वर्जिल ने इटली की जमीन मे लगाई इस ग्रीक कला पर बडा सुन्दर व्यग्य किया है। वह कहता है कि 'वह फल-वृक्ष आश्चर्य के साथ अपने उन फलो को देखता था जो उसके न थे।' इसलिए चाहे जितनी सतर्कता और प्रतिभा से ग्रीक आधार से उठे नाटको की रचना की गई, यह शीघ्र स्पष्ट हो गया कि आखिर वे विदेशी मॉडल थे। पहली सदी ई० पू० का रोमन समाज जनसकुल लीलाओ, नकली और फार्सों का कायल था। भडैती के प्रसग और दृश्य उस काल की जनता को विशेषकर अपने रोमन वर्ष के चार त्योहारो पर अधिक आकृष्ट करते थे। उस काल सभ्रान्त रोमनो का स्वभाव अन्य प्रकार का था, जहा वे अपनी विजयो के स्मारक मे बडे-बडे जलूस निकाल अपनी महत्वाकाक्षा की तृष्णा मिटाते थे वहा वे लोकप्रिय, अपने विचार से फूहड नाटक (भडैती आदि) प्रदर्शन हेय समझ हीन जनसाधारण के लिए ही छोड देते थे। स्वय वे दर्शन और सत्साहित्य मे रुचि रखते थे और तेरेन्तियस, वारो या सिसेरो की भाति 'कृषि' अथवा 'राज्य' पर डायलॉग रचने नगर से बाहर के अपने निभृत आवासो मे चले जाते थे। आम जनता और सभ्रान्त कुलीय रोमन शासको के बीच का यह प्रशस्त विषम अन्तर स्वाभाविक ही तत्कालीन ई० पू० प्रथम शती और पश्चात्कालीन साहित्य की नई दिशा और नये 'अभिप्रायो' का स्रष्टा था, इस कारण जनता की अधिकाधिक प्रकाशित साहित्य-कृतियो मे इन्ही सभ्रान्तकुलीयो (जो प्राचीनता, विजय, राजनीति, सम्पत्ति या शक्तिके कारण सभ्रान्त थे) के राग-द्वेष, गुण-दोष, महत्वाकाक्षा, विफलता आदि प्रतिबिम्बित होने लगे। अधिकतर रचयिता इसी अल्पसंख्यक शक्ति की सेवा मे लगे।

कपानिया का लूसिलियस[1] भी हेलेनिक (ग्रीक) साहित्य-प्रिय स्कीपियो आफ्रिकानस की ही गोष्ठी का था। उसकी कृतिया आज समूची और स्वतन्त्र रूप से उपलब्ध नही, केवल उन हजारो छन्दो के रूप मे बची है जो दो सौ वर्ष वाद लातीनी कोष मे एक कोषकार ने दृष्टान्त रूप मे एकत्र कर दी थी। इसमे उस प्रबल व्यग्यकार का मूल्याकन करना कठिन हो जाता है। जो हो यह असन्दिग्ध है कि उस लूसिलियस ने ही काव्य मे व्यग्य की लातीनी मे प्रतिष्ठा की। नये रूप से अब समसामयिक घटनाओ और व्यक्तियों

१. C Lucilius (C. १८०-१०३ ई०पू०)

कविताओ के लिए' (फॉर हिज बैड वर्सेज) मार डालना चाहता है। सिन्ना, फ़ुरियस और आगुस्तस युगो का सेतु है।

यहा कातुलस[1] पर दो शब्द लिख देना अनिवार्य है। यह वेरोना का निवासी था और उसकी कविताओ मे वैयक्तिक चेतना और अनुभूति की गहरी ध्वनि थी। वस्तुत. जितना यूरोपीय लिरिक काव्यधारा पर उसका प्रभाव पडा है प्राचीनो मे सैफो[2] को छोड-कर शायद किसी और का नही। सैफो की एक विख्यात लिरिक को जो कातुलस ने अनुवाद किया तो उसकी आकृति और ध्वनि पर स्वय अपनी छाप डाल दी। लेस्बिया[3] जिसका वास्तविक नाम क्लोदिया था, उसकी कविताओ की मूल प्रेरणा थी। इस प्रान्तीय तरुण के हृदय पर लगता है, उस चतुर नारी ने अपने सारे हावभावो से आघात किया और कातुलस बेबस हो गया। तुकान्त छन्द मे वह लिखता है—

'मै प्रेम करता हूं, उतना ही घृणा भी। पूछती हो क्यो ?
नहीं जानता, क्यो, पर है यह सच, पीडा का स्वाद लग गया है।'

लातीनी आलोचको ने उसे 'विद्वान' कहा हे, संकेत उसके ग्रीक काव्य-ज्ञान की ओर है। उसकी विवाहपरक कविताए शायद उस काल पसन्द न की गई परन्तु यूरोप के कवियों ने उन्हे खूब सराहा। कातुलस की काव्य-प्रतिभा बहुमुखी थी।

लुक्रेशियस[4] कातुलस के विपरीत दार्शनिक कवि था जिसका आकर्षण वस्तुओ के वास्तविक स्वभाव के प्रति अधिक था। वह विश्व की जलती दीवारो के उस पार चला जाना चाहता था। उसने अपना आचारपरक काव्य छह खडो मे समाप्त किया। वह एपिक्यूरस[5] का अनुयायी था। उसने एपिक्यूरस शाति को उस रोमन सभ्रातकुलीय परुष विनयन से समन्वित किया जिसके आदर्श एम्पेदोक्लीज़[6] के-से दार्शनिक ग्रीक कवि थे। एम्पेदोक्लीज़ ज्वालामुखी पर्वत के अग्निविस्फोटक मुख मे कूद पडा था, कहते है, लुक्रे-शियस ने भी 'मृत्यु की अमरता' अपनाने के लिए आत्महत्या कर ली। वह मृत्यु को अमर कहता है, उसे सराहता है उस जीवन के विपरीत जिसे जीवन-लोलुप रोगियो ने मरणान्तर का लोक कहा है। उसका आणुविक सिद्धात प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक डेमोक्रितस[7] के आधार पर बना है परन्तु महाकवि ने उसे अपनी रसमयी विवेचना से सरस कर दिया है। सिसेरो ने उसके 'हज़ारो पक्तियो के बीच' कुछ अद्भुत शक्ति-प्रेरणा, रस और सौन्दर्य को माना है। लुक्रेशियस कवि था परन्तु कवि से अधिक शायद दार्शनिक था।

अन्य साहित्यो की ही भाति लातीनी मे भी गद्य का आविर्भाव पद्य के पश्चात्

---

१. C Valerius Catullus of Verona (Ca. ८४-५४Bc), २ Sappho, ३. Lesbia (Clodia), ४. Lucretius (९५-५४ ई० पू०), ५. Epicurus, ६. Empedocles, ७. Democritus

हुआ और जब हुआ भी तब पहले ग्रीक प्रतीको की छाया मे। कातो(सेन्सोर)[1] पहला जाना हुआ गद्यकार है। यद्यपि जिनकी कृतिया नष्ट हो गई है ऐसे कुछ गद्यकारो ने उससे पूर्व इतिहास पर ग्रथ लिखे थे। कातो इटली की देशी परपरा का प्रबल पोषक था। वह ग्रीक विचारों का विरोधी था और ग्रीक भाषा भी उसने इनियस के कहने से बहुत पीछे सीखी। स्वय उसकी गद्य शैली प्रौढ है। उसके व्याख्यानो की भाषा भी प्रखर और शक्तिम है।

कातो के बाद और सिसेरो से दस वर्ष पूर्व मार्क्स तेरेन्तियस वारो[2] हुआ। वह बडा पडित था और उसने अनेक ग्रन्थ लिखे। डायलॉग-शैली मे कृषि सम्बन्धी उसकी कृति का वर्जिल पर काफी असर पडा। विविध विषयो पर लिखी उसकी चालीस पुस्तकों का पता चलता है। भाषा शास्त्र पर भी उसने अधिकारी की योग्यता से लिखा। सिकदरिया के विद्वानो की भाति उसने भी एक बृहद् कोष ग्रन्थ मे इटली के प्राचीन पाखडो और धार्मिक विश्वासो आदि का सग्रह किया। सिसेरो ने भी अपने निबन्धो मे उसीके लातीनी मे प्रचलित किए ग्रीक डायलॉग का प्रयोग किया। सभवत निबध की शुष्कता दूर करने के लिए यह नाटकीय स्वरूप निबन्धो को दिया गया। सिसेरो का वह बडा आदर करता था, उसे गद्यकारो मे सबसे महान् और अनुपम मानता था।

मार्क्स तुलियस सिसेरो[3] मानव इतिहास का असाधारण वक्ता और लातीनी साहित्य का सुन्दरतम गद्यकार अपने काल का महान् राजनीतिज्ञ भी था। ससार के गद्य पर जितना गभीर प्रभाव उसका पडा है उतना और किसीका नही। वारो ने अपना लातीनी साहित्य सबधी ग्रन्थ सिसेरो को समर्पित किया था। आज उसकी ४७ वक्तृताए उपलब्ध है जो अपनी प्रखरता, मार्मिकता, तर्क और वाक्शक्ति मे ससार के साहित्य मे बेजोड है। ग्रीको मे वक्तृता का बडा आदर था और वे उस कला को विशिष्ट आचार्यों से, विशिष्ट पीठो मे सीखते थे। सिसेरो ने भी अपनी कला ग्रीस जाकर ही प्रौढ की थी। उसके उपलब्ध ७०० पत्रो मे गजब की सरगिक ताजगी है, साथ ही उनसे तत्कालीन राजनीतिक-दार्शनिक स्थिति पर भी प्रकाश पडता है। उसके व्यक्तित्व की शब्द-शब्द पर छाप है। दर्शन के क्षेत्र मे भी सिसेरो ने बडा काम किया। उस क्षेत्र मे उसके प्राय. एक दर्जन ग्रन्थ उपलब्ध है। इनमे उसने ग्रीक दर्शन को खोलकर फिर एक बार लातीनी भाषा में रखा। १६वी सदी में ग्रीक साहित्य के पुनरुद्धार के पहले ग्रीक दर्शन का प्राय एकमात्र आधार सिसेरो की कृतिया थी। उसका पद्य उस प्राचीन काल मे भी बोझिल न हो सका। उसका अन्त हत्या से हुआ। जीवन के पिछले दिनो मे हृदय की कमजोरी उसे कभी अन्तोनी, कभी आगुस्तस के प्रति विश्वासघात करने को बाध्य करती रही।

---

१. Cato (Censor) (२३४–१४६ ई० पू०); २. Marcus Terentius Varro (११६–२७ ई० पू०), ३. Marcus Tullius Cicero (१०६–४३ ई० पू०)

प्रबल विजेता जूलियस सीजर[1] जो सिसेरो से छह साल छोटा था, गद्यकार भी था। उसकी विशिष्ट रचना गाल के युद्धो से सम्बन्ध रखती है जो शैली की दृष्टि मे लातीनी साहित्य मे असामान्य है। वह रचना उसके युद्धो के चित्र खीच देती है, और बडी कसी हुई है। उसने उसमे अपने प्रति सकेत अन्य पुरुष के रूप मे किया है। भाषा का तो वह मूर्तिकार है। कभी एक शब्द जाया नही करता फिर भी अनेक स्थल इस खूबी से वर्णित है कि वे नाटक के दृश्य बन जाते है। उसका एक प्रशसक सालस्त[2] था, उसके दल का मित्र और रोम के सम्भ्रान्तकुलीय शासको का अनुपम शत्रु। उसने कातिलीनी के षड्यन्त्र और जुगुर्थी युद्ध पर दो ग्रन्थ लिखे। उसकी शैली मे काफी लोच और प्रौढता थी। लातिन आलोचको ने उसे सराहा है।

: २ :

आगुस्तस का युग

आगुस्तस[3] का युग लातीनी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। ई० पू० पहली सदी रोमन इतिहास मे घोर रक्तपात और भयानक हत्याकाण्ड की थी। पहले तो बहुत दिनो तक कुलीनो और 'रजीलो' मे लडाई चलती रही फिर जूलियस सीजर की हत्या के बाद वह लडाई प्राय. कुलीनो मे ही परिमित हो गई। अत मे अन्तोनी आदि पर विजयी हो, सीजर की बहिन का पोता ओक्तेवियस आगुस्तस के नाम से रोम का सम्राट् हुआ। रिपब्लिक की रक्षा के लिए सैकडो महान् रोमनो ने तप और साधना की थी, हजारो ने अपने प्राण होम कर दिए थे, स्वय जूलियस सीज़र की इसीलिए ब्रूट्स जैसे दार्शनिक ने, मित्र होकर भी, हत्या की थी और अब उसी रिपब्लिकन रोमन साम्राज्य का आगुस्तस सम्राट् बन गया।

आगुस्तस का शासन-काल फिर भी बडी शाति और अद्भुत साहित्य-सृजन का था। लातीनी साहित्य के प्रधान कवि वर्जिल[4], होरेस[5], प्रोपर्तियस[6], ओविद[7] सब इसी युग मे हुए। इनमे से पहले तीन ने तो नये शासन के गीत भी गाए, दरबारी कवि भी हुए। तीनों राजनीति मे असफल रहे थे, तीनो की सपत्ति हाथ से निकल गई थी, तीनो सब कुछ खोकर रोम के वीर और कला के प्रबल सरक्षक मिकेनास[8] के पास बारी-बारी पहुचते थे। इन तीनो मे वय और प्रतिभा मे बडा वर्जिल था, लातीनी साहित्य के उत्कर्ष काल का प्रमुख गायक।

---

१. Julius Caesar (१००–४४ ई० पू०), २ Sallust (८६–३५ ई० पू०); ३. Augustus (४३ ई० पू.–१४ ई०), ४ Virgil (७०–१९ ई० पू०); ५ Horace ६ Propertius ७ Ovid; ८. Maecenas.

वर्जिल की मन्तुग्रा की जमीदारी छीनकर सैनिको मे बाट दी गई थी क्योकि फिलिपी के युद्ध मे वह कैसियस[1] और ब्रुतस[2] की ओर रहा था। रोम पहुचने के बाद ४१ और ३९ ई० पू० के बीच उसने गडरिया-जीवन सम्बन्धी प्रसिद्ध दस कविताए रची जिनका नाम 'एकलोग' पडा। इनकी पृष्ठभूमि सर्वथा इटली और सिसिली की है। उसका आदर्श उसमे ग्रीक थियोक्रितस[3] है। वर्जिल की कृति 'ज्योर्जिक्स' मे इटली की साम निहित है। प्राचीनता का पोषण समाज मे आरभ हो गया था। वारो आदि ने बेकार ही लेखनी नही घिसी थी। और जब सेनेट ने जूलियस सीजर के दत्तक पुत्र ऑक्तेवियन[4] को 'आगुस्तस' (परम श्रद्धेय) का विरुद प्रदान कर दिया तब तो जूलियस का अपनी कुल-परपरा देवताओ से जोडने का अध्यवसाय भी सिद्ध हो गया। आगुस्तस पुराने देववर्ग मे देवी वीनस को मानता था। उसके कुल का प्रादुर्भाव इसी वीनस के पुत्र से माना गया। वह पुत्र ईनिस[5] था जो ट्रॉय के युद्ध मे एचिलिस[6] से लडा था। ट्रॉय के विध्वस के बाद ट्रोयन वीर गृह विहीन होकर द्वीप-द्वीप फिरते है। उनके दुर्भाग्य से आर्द्र होकर कार्थेज की रानी दीदो[7] ईनिस से विवाह कर लेती है। बाद मे, देववाणी सुनकर ईनिस पत्नी को छोड इटली चला जाता है और वहा युद्धो मे विजयी हो अपना राजकुल स्थापित कर लेता है। जूलियस और आक्तेवियस उसी कुल मे उदित देवाश है। वर्जिल का यह महाकाव्य दृश्य-वर्णन, चरित्र-चित्रण, रागाभिव्यजन, सभी दृष्टि से असाधारण है। इसके चरित्र कभी स्मृति से लुप्त नही होते। ससार के महाकाव्यो मे 'ज्योर्जिक्स' का स्थान अपना है। उसके छठे खण्ड मे वह अद्भुत और प्रख्यात भावी रोम का स्वप्न है।

होरेस[8] ने भी एक दृष्टि से वर्जिल का ही अनुकरण किया। रोमन लडाइयों मे वह प्रजातान्त्रिक (जन) दल की ओर से लडा था। उसके बाद उसे रोम मे सालो क्लर्क का कठिन जीवन बिताना पडा था। यद्यपि उस काल उसे लिखने-पढ़ने की कुछ फुर्सत मिली। परिणामत उसने कविताए (इपोड और सटायर—व्यग्य) लिखी। वर्जिल ने उसे अपने सरक्षक मिकेनास[9] से मिलाया जिससे होरेस को बडा प्रोत्साहन मिला। उसीके प्रोत्साहन से पहले उसने अपना 'इपोड' लिखा जिसमे उसकी प्रसन्न और गभीर दोनों प्रकार की कविताए सगृहीत हुई, फिर उसने अपने विश्वविश्रुत 'ओड' लिखे। ई० पू० २३ मे उसके 'ओडो' (कसीदो) का सग्रह निकला और उन लिरिक कविताओं के सौदर्य-माधुर्य ने ससार को मोह लिया। लिरिक रूप मे उन कविताओ का स्थान मानवजाति के इतिहास में अक्षुण्ण हो गया। उसके ओड तीन भागो मे विभक्त थे। २० और १३ ई० पू० के बीच

---

१. Cassius; २. Brutus; ३. Theocritus; ४. Octavian; ५. Aeneas; ६. Achilles; ७. Queen Dido; ८. Horace (६५-८ ई० पू०); ९. Maecenas

उसने दो भागो मे अपने 'एपिस्तल' लिखे, उसकी मेधा की प्रौढ कृति 'आर्स पोएतिका' (एपिस्तल की द्वितीय पुस्तक मे सगृहीत) मे उसने काव्यकला पर अभिराम विचार प्रगट किए।

लातीनी के 'एलेजी' (मरसिया) लिखने वाले प्रमुख कवि कातुलस[1], प्रोपर्तियस[2], तिबुलस[3] और ओविद[4] थे। कातुलस ने व्यक्तिजन्य प्रणय को प्रश्रय दिया जिसे उसके परवर्ती लिरिक कवियो ने भी अपना ध्येय बनाया। कातुलस की लेस्बिया की ही भाति प्रोपर्तियस की लिरिको का ध्येय सिंथिया[5] थी, तिलबस की देलिया[6] और ओविद की कोरिन्ना[7]। आलोचक क्विन्टिलियन[8] ने लिखा कि लातीनी की लीरिक कविताए अपनी प्रकार और भावव्यंजना मे ग्रीक लिरिको से किसी प्रकार घटकर नही है। सेक्सतस प्रापर्तियस की तीन खण्डो मे प्रस्तुत 'एलेजियो' की ७१ कविताओ की काव्यकारिता गजब की है। कही-कही सिकन्दरिया की पद्धति झलक पडी है और तब कविता का अर्थ दुरूह हो जाता है। पर साधारणतः प्रोपर्तियस नितान्त मधुर है और उसका प्रवाह अविच्छिन्न है, फ्रेंच कवि विलो[9] की भाति राबर्ट बर्न्स[10] की भाति। अल्बियस तिबुलस की सोलह 'एलेजियो' का मुकाबला तो केवल वर्जिल ही कर सकता है। उनकी अभिराम गति निर्बाध है। देहात का जीवन उसे अपने जादू से मुक्त कर लेता है। देहाती जीवन की हसी-खुशी, उसके व्रत-त्योहार उसकी कविताओ मे रूपायित होते है और तब उसकी देलिया की रेखाए भी धुधली पड जाती है।

ओविद की अधिक कविताए भी एलेजी के 'मीटर' मे ही है। इसमे उपवाद केवल उसका पुराणपरक एपिक 'मेतामारफोसेज' और 'रोमन कैलेण्डर' है जिन्हे उसने बाद मे लिखा, सन् आठ ईस्वी मे निर्वासित होने के पहले। 'मेतामारफोसेज' मे पुराणव्यजित रोम (ससार) का इतिहास है—सृष्टि के आदि से आगुस्तस तक १०००० छन्दो मे सम्पन्न ओविद की मृदुल भावना सर्वत्र उसकी कविताओ का प्राण है। उसकी प्रेयसी कोरिन्ना उसकी कृतियो मे से टपकी पडती है। अपनी 'हिरोइन्स' पत्रो मे लिखकर उसने उपेक्षित और विषादग्रस्त नायिका और महिलाओ के प्रति औचित्य का समर्थन किया। उसकी 'प्रणय की कला' अतीव हृदयग्राही है यद्यपि अनेक रूप से आज की नैतिक दृष्टि से वह अश्लील है। तब के रोमन ससार की आचार-व्यवस्था के वह अनुकूल है और उसका तब के पाठको-श्रोताओ पर प्रभाव भी प्रभूत पडा।

उसका 'प्रणय का उपचार' तो और भी आचारहीन है, अश्लील। उसके प्रवास

---

१. Catullus, २. Sextus Propertius (४७-१५ ई० पू०); ३. Albius Tibullus; (५५-१९ ई० पू०); ४. Ovid (४३-१८ ई० पू०), ५. Cynthia; ६. Delia ७. Corinna, ८. Quintilian ९. Villon, १०. Robert Burns

मे लिखी कविताओ मे आत्मग्लानि है पर साथ ही काव्यकारिता मे वे आत्मविश्वास प्रकट करती है ।

उस आगुस्तमीय स्वर्ण-युग मे गद्य सृजन भी प्रभूत हुआ । लिवी[1] ने अपना बृहत् इतिहास लिखकर उस दिशा मे बडी प्रगति की । काव्य मे अपनी जनता के लिए जो काम वर्जिल ने किया वही लिवी ने गद्य मे किया । प्राचीनतम काल से समसामयिक रोम तक का इतिहास उसने अपने असाधारण नगर और रोमनो का लिखा और अतीत के प्रति अपने पाठको की भावना जगा दी । यद्यपि स्वय वह अतीत से प्रभावित हो वर्तमान को तिरस्कृत कर देता है और अनेक बार उसकी वैयक्तिक चेतना घटनाओ के ऊहापोह मे दब जाती है । वह उस काल की दृष्टि से सफल इतिहासकार है और अनेक स्थलो पर उसके वर्णन-चित्रण कविकृत से चमक उठते है ।

: ३ :

रजत युग

१४ ई० से ११७ ईस्वी तक का काल लातीनी के साहित्यिक इतिहास मे रजत-युग कहलाता है । इस काल गद्य ने अपना प्रखर और सफल रूप धारण किया । तासितस[2] और सुतोनियस[3] दोनों ने गद्यो मे तत्कालीन इतिहास प्रस्तुत किए । तासितस का दृष्टि-कोण सर्वथा एकागी था और वह घटनाओ मे घुसकर लिखता था । फिर भी उसने सम-सामयिक राजनीतिको को तार-तार करके रख दिया । जितना घटनाओ का विश्लेषण उसने किया है प्राचीन जगत के किसी इतिहासकार ने नही किया । अपने इतिहास-ग्रंथ 'एनाल्स' और 'हिस्ट्रीज' मे उसने पहली सदी के ऐतिहासिक व्यक्तियों के उद्देश्य जैसे उनके भीतर से निकालकर इतिहास के पृष्ठो पर रख दिए । इनके अतिरिक्त उसने साहित्यिक आलोचना पर भी एक पुस्तक लिखी और इग्लैड के रोमन शासक का एक जीवन-चरित भी । उसकी 'जर्मेनिया' प्रचुर प्रसिद्ध हुई जिसमें उसने अपने समकालीन विषयी, प्रमादी और स्वार्थपर रोमनो की तुलना तत्कालीन जर्मनो से उनका, उस ग्रन्थ मे, चित्र खीचकर की है । तासितस की भाषा उसकी विश्लेषणात्मक शैली के अनुरूप ही कसी हुई और सूत्रवत् है । सुतेनियस का 'सीजरो का जीवनचरित' प्रसिद्ध है जिसमे उसने स्पष्ट सरल भाषा मे जूलियस सीजर से लेकर डोमीशियन तक के रोमन सम्राटो का इतिहास लिखा है । वह स्वय सम्राट् हाद्रियन का सेक्रेटरी था और उसे सम्राटों के जीवन की इतिहास-सामग्री प्रभूतमात्रा मे उपलब्ध थी । उसने उनके चरित लिखते

---

१. Livy (५९ ई० पू०—१७ ई०) ; २. Cornelius Tacitus. (५५-११८ ई०) ; ३. Suetonius (७५-१६० ई०)

समय कुछ न छोडा, अच्छा-बुरा सभी लिख दिया और वैयक्तिक जीवन का यह उद्घाटन निस्सन्देह इस क्षेत्र मे बेजोड है। उसी काल एक और इतिहासकार हुआ, प्लिनी[1] जो प्रसिद्ध तो काफी हुआ है पर जिसकी प्रतिभा लिवी, तासितस आदि के सामने कुछ नही है। वह श्रीमानो का मित्र था, उन्हीकी गोष्ठियो मे रमा करता था। उसकी रचना मे प्राचीन गौरव के प्रति आस्था झलकती है। तब भारत का रोम के साथ व्यापार उत्कर्ष पर था। मोती, मलमल और मसाले मे भारत का व्यापारिक एकाधिकार था। प्लिनी ने उस व्यापार का बडा विद्रोह किया कि रोमन साम्राज्य का 'सारा सोना विदेश बहा ले जाता था।' उसने सेनेट तक मे इस व्यापार के विरुद्ध वक्तृताए दिलवाईं, सौ फीस दी कर भी भारत से आने वाले माल पर लगवाया पर रोम के छैले, श्रीमानो, उनकी प्रेयसियो और गृहपत्नियो ने अपने राग से भारत के उस व्यापार की रक्षा कर ली और भारतीय व्यापारी रोम के सम्बन्ध से समृद्ध होते रहे।

उस रजत युग की एक विशेषता व्यग्य साहित्य (सेटायर) थी। पर्सियस फ्लाकस[2] और जुवेनाल[3] ने सेटायर लिखे। पर्सियस ने अपने छह व्यग्य चित्रो मे समसामयिक समाज पर उत्कट व्यग्य करते हुए नैतिक और आचार चेतना का प्रतिपादन किया। वह स्तोइक के दर्शन से प्रभावित था और प्रसिद्ध स्तोइक दार्शनिक कोर्नतस[4] के व्याख्यान सुना करता था। उसकी व्यग्य-रचनाए मध्यकालीन यूरोप मे खूब पढी गई। पर्सियस स्वय सभ्रान्त कुल का होने के कारण प्रायः शक्तिमान् श्रीमानो के भय के कारण अपनी रचनाओ मे तरह दे जाता था, बचा जाता था। जुवेनाल मे इस प्रकार की कोई कमजोरी न थी और उसने शक्तिमान् श्रीमानो को भी अपनी रचनाओ मे व्यग्य-चोट से जर्जर कर दिया। उसने चाटुकारो (जिनकी सख्या समसामयिक रोम मे बेहद बढ गई थी) की खूब खिल्ली उडाई। जुवेनाल के लिए कुछ भी 'पावन' नही जो छुआ नही जा सकता। अपने दुर्गुण और पाप सम्बन्धी व्यग्यो मे उसने ऐसे किसीको न छोडा जो आलोचना के पात्र हो सकते थे। जुवेनाल का विशेष रोष उन पौर्वात्यो के विरुद्ध था जो रोम मे घुसकर उसके निवासियो को धीरे-धीरे पदविचलित कर उनके स्थानापन्न होते जा रहे थे।

क्विन्तिलियन[5] का स्थान तासितस के समीप है। उसीकी भाति वह भी प्रथम शती ईस्वी का प्रतिनिधि लेखक है। वह जन्म से स्पेन का था परन्तु अनेक सम्राटो के शासन मे रोम मे 'रेटोरिक' (वक्तृता, अलकार, आदि) पढाता रहा था और उससे वहा विशेष समादृत हुआ था। 'ओरेटरी' (वक्तृत्व के सिद्धान्त) पर लिखा उसका ग्रन्थ न केवल शिक्षा, वक्तृता और भाषालकरण पर, वरन् साहित्यालोचन पर भी प्रामाणिक

---

१ Pliny, २. A Persius Flaccus (३४-६२), ३ Juvenal (५५-१३०), ४. Cornutus; ५. Quintilian (३५-१००)

निरूपण है । ग्रन्थ के दसवे स्कन्ध मे ग्रीक और लातीनी साहित्य पर अद्भुत आलोचना-सामग्री उपलब्ध है । क्विन्तिलियन की आलोचक प्रतिभा प्रखर है और उसका वह ग्रन्थ आज भी आलोचना की दृष्टि से असाधारण और व्यापक प्रभाव का माना जाता है ।

प्रथम शती ईस्वी के चार एपिक काव्यो मे पाम्पेयाई के फार्सलस-युद्ध पर लिखा अन्नियस लुकानस[1] का काव्य सराहनीय है । उसका स्थान मध्यकालीन पठनीय कवियो मे वर्जिल के पास ही था और यद्यपि क्विन्तिलियन ने उसके काव्य मे 'वक्तृता अधिक कवित्व कम' देखा । उस काल के अन्य काव्यो मे लुकानस का काव्य निश्चय ही श्रेष्ठ है । लुकानस प्रसिद्ध सेनेका का भतीजा था । उसके काव्य का हीरो तो पाम्पेयाई है पर पाठक की समवेदना सीजर के साथ है ।

अन्नियस सेनेका[2] स्तोइक आचार समन्वित साहित्य के नये क्षेत्र मे अग्रणी था । सिसेरो के समकालीन सालुस्त की भाति सेनेका और उसका भतीजा लुकानस दोनों प्राचीनता-विरोधी थे । प्रतिष्ठित मान्यताए रूढिगत हो गई थी और प्रगति मे स्पष्ट बाधक हो रही थी । सेनेका ने उसका प्रबल विरोध किया । उसके नौ ट्रैजेडी नाटक प्रवास (निष्कासन) मे लिखे गए । वह और उसका भतीजा दोनो सम्राट् नीरो[3] के समकालीन थे, दोनो को ही देशद्रोही कहकर निर्वासित कर दिया गया, दोनो को मजबूर होकर आत्महत्या कर लेनी पडी ।

ऊपर तासितस और प्लिनी का उल्लेख किया जा चुका है । वे दोनो भी इसी रजत युग के रत्न थे । इनमे प्लिनी (प्लिनियस सिसिलियस सेकुन्दस)[4] असाधारण धनी था । उसके प्राय ३६८ सुन्दर पत्र उपलब्ध है जिनसे तत्कालीन रोम की वस्तु-स्थिति पर बडा प्रकाश पडता है । इन्हीमे कुछ तासितस और सुनोनियस को भी लिखे गए थे । परन्तु जो पत्र प्राचीन जगत् के सुरावादी सारे कवियो मे श्रेष्ठ मार्तियल[5] पर उसने लिखा, उससे इस महाकवि की शक्ति प्रगट होती है । पत्र उस कवि की मृत्यु पर लिखा गया था जिसने उस शक्तिशाली धनाढ्य की सरक्षा कभी मागी थी । प्लिनी उसे महाकवि मानता है, उसके काव्यगत भाषा के ओज की सिसेरो की शब्दशक्ति से तुलना करता है । सेनेका और क्विन्तिलियन की ही भाति मार्तियल भी स्पेन का था । वह स्वय कहता है कि मेरी कविताए तब पढो जब दावत खत्म हो चुकी हो और शराब के दौर चल रहे हो । लिखा उसने सुन्दर परन्तु अपनी प्रतिभा उसने बेच दी थी और अपने संरक्षको के मनोरजन

१. M. Annaeus Lucanus (३९-६५ ई०); २. Annaeus Seneca (Ca. ४ ई०. पू०—६५ ई०); ३. Nero; ४. C Plinius Caecilius Secundus; ५. Martial

के लिए उनके बताए किसी विषय पर वह कुछ भी लिख सकता था। परतु उसकी कविताओ मे रोम का घृणित सामाजिक जीवन खुल पडा है।

उसी प्रकार गेयस पेत्रोनियस[1] की कृतियो मे भी रोम के प्रमादी, कामुक, घृणित जीवन का पर्दाफाश अमित मात्रा मे हुआ है। उसने अपने व्यग्य चित्रो (विशेषत त्रिमाल्चियो की दावत) मे समाज के भीतर घुसकर जैसे उसे विश्लिष्ट कर दिया है। मार्तियल ने रोम का जीवन बाहर से देखा और पेत्रोनियस ने भीतर से।

उसी प्रकार दूसरी सदी ईस्वी के मध्य होने वाले अपूलियस[2] ने गद्य मे उस काल के रोम के धार्मिक और सास्कृतिक ह्रास का चित्र अपने 'हिरण्य गर्दभ' मे सबल शब्दो मे खीचा। उस आत्मकथापरक गद्य 'सुनहरे गद्य' मे क्यूपिड[3] और साइकी[4] का प्रणय-निवेदन है पर उसी बहाने रोमन समाज रूपायित हो उठा है। इस कथा को वाल्टर पैटर[5] ने पीछे फिर से साहित्य का आधार बनाया। अपूलियस प्रसिद्ध ग्रीक जीवन चरितकार प्लूतार्च[6] का समकालीन था।

द्वितीय शती ईस्वी मे लातीनी साहित्य का पूर्वार्द्ध इतिहास समाप्त हो जाता है। ऊपर का विवरण 'क्लासिकल' लातीनी का है।

: ४ :

उत्तरकालीन लातीनी साहित्य

उत्तरकालीन लातीनी साहित्य अधिकतर ईसाई साहित्य है। ईसाई-लातीन का पहला गद्य तरतूलियन[7] की पुस्तक 'अपोलोजेतिकस' मे है। जिस साधन से उसने ईसाई धर्म की रक्षा मे रोमन मूर्तिपूजक धर्म को ललकारा, उसकी मुख्य रचना 'द प्रिस्किप्तिओने हिरेतिकोरम' है। यह ग्रथ कुवाच्य और व्यग्य का भण्डार है। इसमे अग्निमय शब्दो मे चर्च का पक्षसमर्थन किया गया है। तरतूलियन की भाषा मे गजब का तीखापन है। उसकी भाषा अफ्रीकी लातीनी है, उसकी शैली शक्तिम और ओजभरी अलकृता। शत्रु का विध्वस करने मे शत्रु जैसे सारे अस्त्रो का उपयोग करता है। तरतूलियन भी रोम के 'पेगन' धर्म के विरुद्ध भाषाशैली की सारी शक्तियो का उपयोग करता है। जैसे व्यग्य, अलकार उपमा, प्रखर शब्दावली।

इसी काल (तृतीय शती ईस्वी) एक प्रभावशाली 'डायलॉग' की रचना हुई, जिसका नाम 'आक्तावियस' है। इसे मिनूसियस फेलिक्स[8] ने लिखा। इसकी शैली मे

१ Gaius Petronius (मृ० ७७); २. L Apuleius; ३ Cupid; ४ Psyche ५ Walter Pater, ६ Plutarch; ७ Tertullian (१६०-२२०); ८. Minucius Felix

बडा आकर्षण है। यह भी डायलॉग के रूप मे ईसाई धर्म के समर्थन मे लिखा गया। इसी स्पिरिट मे अर्नोबियस[1] ने अपना 'अदवर्सस नातिओनिज' लिखकर 'पेगन' (रोमन-ग्रीक) देवताओ की परपरा पर आक्रमण किया। लाक्तान्तियस[2] वकील था और अपने पेशे की समूची मेधा प्रकाशित करते हुए उसने ईसाई धर्म के सिद्धान्तो के प्रतिपादन और पेगन देव-मण्डल के खडन मे अपना 'इन्स्तुतिओनिज़ दिवीनी' लिखा। साहित्य की दृष्टि मे इन सारी रचनाओ (सिवा तरतूलियन के) का स्तर क्लासिकल लातीनी की शालीनता से उतरता गया है, यद्यपि इनमे असाधारण तीव्रता और प्रखरता है।

जब 'पेगन' धर्मावलम्बियो ने ईसाई लेखको को अपने (पेगन) साहित्य की सम्पत्ति उपयोग करने से रोका तब सन्त जेरोम[3] और सन्त आगस्तिन[4] दोनो ने उसका इस्तेमाल 'प्रभु' और सत्य के कार्य मे उचित बताया। और इस प्रकार चर्च प्राचीन लातीनी और इटली की सास्कृतिक दाय का उत्तराधिकारी बन गया। अगला काल सन्त आगस्तिन का युग कहलाता है। इस युग मे बडा साहित्य निर्माण (साहित्य निस्सदेह धार्मिक अथवा धर्म-मण्डन-खण्डन का था) हुआ। सन्त आगस्तिन के अतिरिक्त अन्य 'चर्च-पिताओ' सन्त जेरोम और सन्त अम्ब्रोस[5] तथा पौलिनस[6] ने भी अपनी हृदयग्राहिणी कविताए लिखी और दोनातस[7] तथा मार्तियानस कापेला[8] ने अपने मार्मिक प्रवचन। इन महान् ईसाई सन्तो और लेखको की सैकडो रचनाए बाइबिल, आचार, सिद्धात, दर्शन, प्रवचन आदि पर विद्यमान है जिनका बराबर अध्ययन हुआ है और जो यूरोप के मध्यकाल मे ईसाई तत्वविवेचन के स्तम्भ बन गईं। सन्त जेरोम ने पहली बार बाइबिल का अनुवाद लातीनी मे किया, सन्त आगस्तिन ने 'द सिवितात देई' म ईसाई दर्शन और इतिहास का प्रणयन किया और उसके 'कन्फेशन्स' (आत्मानुभूतिया) तो आत्मानुभूति और आत्मानुचिन्तन की अद्भुत पोथी है। सन्त अम्ब्रोस ने पहली बार पद्य-सूक्त का प्रयोग किया। सन्त जेरोम का गुरु दोनोतस उस काल का प्रमुख वैयाकरण था और कापेला प्रधान भाषाशास्त्री। कापेला का 'सातो ललित कलाओं' पर प्रस्तुत ग्रन्थ 'द नुप्तीस फिलोलोगी एट मेरकुरी' शब्द शास्त्र के साथ ही शिक्षा के अनेक विषयो पर भी प्रकाश डालता है और मध्यकालीन यूरोप का तो वह अनिवार्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ बन गया था।

इस क्रिश्चियन-पेगन द्वन्द्ववाद से प्रजनित एक समन्वित साहित्यिक और सास्कृतिक सम्पदा उठ रही थी, तभी उसे एक और शक्ति का योग मिला। रोमन साम्राज्य के

---

१. Arnobius (३०३); २ Lactantius (२५०-३१०); ३. St. Jerome (३४५-४२०); ४. St. Augustine (३५४-४३०); ५. Ambrose (३४०-३७६), ६. Paulinus (३५३-४३१); ७. Donatus (४ श० ई०); ८. Martianus Capella

आक्राता जिन्हे रोमन 'बर्बर' कहते थे, धीरे-धीरे ईसाई धर्म मे दाखिल हो गए जिससे उस काल के साहित्य को एक और पाया मिला। इन सारे तत्वो को एकत्र कर उनको समष्टि-भूत एक पिण्ड बनाने का काम जिन धार्मिक साहित्यकारो ने किया, उनमे प्रधान थे—बीथियस[1], कासियोदोरस[2], सन्त बेनेदिक्त[3] और ग्रेगरी महान्[4]। इनमे से पहले दोनो ने प्राचीन ग्रीक-रोमन सम्पदा की रक्षा की। कासियोदोरस ने तो अरस्तू के 'ओर्गानो' का जो सस्करण प्रस्तुत किया वह मध्ययुगीय ध्वनि की शिला-भित्ति बन गया। उसके अध्यवसाय और साहित्यिक प्रयास से ईसाई-मठो मे ज्ञान-शोध का कार्य शुरू हुआ और सन्त बेनेदिक्त की तद्विषयक योजनाओ ने तो उन मठो को विद्यापीठो का रूप दे दिया। इन दोनो के प्रोत्साहन से वहा ग्रथो के अनुवाद हुए, विशेषत हस्तलिपिया प्रस्तुत कर प्राचीन साहित्य की रक्षा की गई। ग्रेगरी ने ईसाई धर्म के सगठन मे अचरज का काम किया। उसने तरतूलियन की शक्ति से पेगन-विश्वासो पर चोट की। उसकी निष्ठा इस लोक की न थी। उसके ग्रन्थो मे जीवन को परलोक के योग्य बनाने का विशेष राग मिलता है। ग्रेगरी उस धर्म के विशिष्ट और महान् प्रचारको मे हो गया है।

सन्त इसीदोर[5] ने ज्ञान की दिशा को दूसरी ओर मोड दिया। उसने प्राचीन ज्ञान की रक्षा के लिए 'एतिमालोगी' नाम का एक विश्वकोष रचा जो सदियो ज्ञानकोष का काम करता रहा। सेदूलियस[6] ने तभी ईसाई धर्म सम्बन्धी अनेक कविताए लिखकर यह प्रमाणित कर दिया कि आखिर पेगन साहित्य साहित्य ही नही, यद्यपि प्राचीन ऊचाइयो को छू सकना उसके लिए असम्भव था। साहित्य के लौकिक भावतत्व निस्सदेह धर्म के विश्लेषण पर नही खडे हो सकते। हा, फोरतुनातस[7] निश्चय ही काव्यकला मे निष्णात था और उसने अपने मधुर सूक्तो द्वारा गायन को शक्ति दी। अब तक लातीनी की प्रधान शैली बिखर चली थी। विविध जातियो के योग से यह सम्भव न था कि उनकी अपनी-अपनी भाषा-विशेषताओं के सामने क्लासिकल लातीनी अपने प्राचीन शालीन रूप की रक्षा कर सके। उसमे प्रभूत सकरता का प्रादुर्भाव होने लगा जो तूर्स के ग्रेगरी[8] की कृतियो मे विशेषतः लक्षित है।

पश्चिमी यूरोप मे साहित्य निर्माण-कार्य पहले आयर्लड और इग्लैंड मे आरम्भ हुआ। कोलम्बानस[9] और बीड[10] ने अपने लातीनी ग्रथो मे प्रभूत साहित्य का सृजन किया।

---

१ Boethius (४८०-५२५); २. Cassiodorus (४८०-५७०); ३. St. Benedict (४८०-५४७), ४ Gregory the Great (५४०-६०४), ५. St Isidore of Seville (५७०-६३६), ६. Sedulius, ७. Fortunatus (५३५-६००); ८. Gregory of Tours, ९ Columbanus (५४३-६१५), १०. Bede (६७३-७३५)

बीड का 'इग्लैड का धार्मिक इतिहास' तो उस काल के लातीनी साहित्य मे शैली का एक नमूना माना जाता है। महान् सम्राट् शार्लमान[१] का शिक्षामत्री अल्कुइन[२] उस काल का अप्रतिम ईसाई साहित्यकार था। शार्लमान स्वय पढा-लिखा न होने पर भी विद्वानो का सरक्षक था और उसने बाइबिल और अन्य धर्मग्रथो के पाठ-सुधार को बड़ा प्रोत्साहन दिया। अल्कुइन के सहायक उस काल के प्रधान पडित ये थे—थियोडल्फ[३], पॉल[४], ऑगिल्बर्त[५], आइनहार्ड[६], लूपस सेरवातस[७]। उसी परम्परा का ह्राबानुस मारूस[८] भी था। वालाफ्रिद स्त्राबो[९] ने तभी प्रकृति सम्बन्धी अपनी सुन्दर कविताए लिखी और प्रतिभाशाली गायक कवि गोत्सचाक[१०] ने अपने सम्मोहक लिरिक। नवी सदी मे जान[११] (स्कॉट) और सेदूलियस स्कोतस[१२] (आयरिश) ने अपने ग्रीक के ज्ञान का परिचय दिया। साम्राज्य के विभक्त हो जाने से निस्सदेह दसवी सदी मे ज्ञान और लातीनी साहित्य का ह्रास हुआ, फिर भी अनेक प्रतिभाए उस काल भी अपनी मेधा का प्रकाश फैलाती रही। इनमे गर्बर्त[१३] और भिक्षुणी ह्रात्स्विथा[१४] थे। गर्बर्त उस काल का प्रकाण्ड गणितज्ञ था और ह्रात्स्विथा साहित्यानुरागिणी कवियित्री थी। उसने रोमन तेरेन्तियस अफर का अनुकरण कर लातीनी में अनेक कॉमेडी लिखी।

ग्यारहवी सदी मे यूरोप की जन-भाषाओ का उदय हुआ यद्यपि उनपर लातीनी का प्रभाव इतना गहरा पडा कि उनकी सज्ञा ही रोमास भाषा हो गई। स्वय उन्होने लातीनी पर अपना प्रभाव कुछ कम न डाला। यही युग विश्वविद्यालयो के उदय का भी था। इन दिनो यूरोप में अनेक विश्वविद्यालयो की प्रतिष्ठा हुई जहा साहित्य, विशेषत धार्मिक लातीनी का निर्माण होने लगा। रोमास भाषाओ का उदय तो हुआ परन्तु सैद्धातिक निरूपण—विशेषकर धार्मिक—सभी लातीनी में ही होते थे, यद्यपि वह लातीनी 'क्लासिकल' लातीनी से बडी भिन्न थी। विषयतत्व मे भी अब अन्तर पडा। आन्सेल्म[१५] ने धार्मिक पैम्फलेट लिखने शुरू किए। सत पीटर दामियान[१६] ने सिसेरो[१७] के विरोध में दर्शनशास्त्र लिखा। आबेलार[१८] ने पेरिस यूनिवर्सिटी को अपना केन्द्र बनाया। उसकी 'हिस्तोरिया कालामितातुम' उसके अपने दु:खो का विवरण है। प्राचीन क्लासिकल साहित्य का असाधारण पडित और शैली मे सिसेरो का अनुगामी सैलिस्बरी का जान[१९] आबेलार

१. Charlemagne; २. Alcuin (७३५-८०४ ई०); ३. Theodulf; ४. Paul; ५. Angilbert; ६. Einhard; ७. Lupus Servatus, ८. Hrabanus Maurus, ९. Walafrid Strabo; १०. Gottschalk; ११. John the Scot; १२. Sedulius Scottus; १३. Gerbert (लग०-१००० ई०), १४. Hrotswitha; १५. Anselm of Bec, १६. St. Peter Damian; १७. Cicero; १८. Abailard (१०७९-११४२ ई०); १९. John of Salisbury (१११५-८० ई०)

का शिष्य था। मध्यकालीन यूरोप का वह सबसे बडा विद्वान् माना जाता है। क्लेफो का बर्नार्ड[१] इस युग का स्तुत्य चर्चपिता है जिसके तप और तप पूत तथा रहस्यवादी ग्रन्थो ने सारे यूरोप को प्रभावित किया। फिर भी उस काल का सबसे ऊचा व्यक्तित्व सन्त तामस अक्विनस[२] का है। उसकी कृति 'सुमा थियोलोजिका' की उपमा मध्यकालीन चर्च की गोथिक इमारत से दी गई है जो अपने वास्तु मे सर्वत्र पूर्ण है, जिसमे कही कोई खामी नही। कहते है कि सिसेरो के समय दार्शनिक विवेचन के लिए लातीनी उपयुक्त न थी। उसे दर्शन का सही वाहन इसी सन्त तामस ने अपनी महान् मेधा से बनाया। सदियो इस महापुरुष के साहित्य का अनुशीलन हुआ है। मध्यकालीन यूरोप मे जो चर्च और स्टेट के बीच निरन्तर दार्शनिक युद्ध हुआ था, उसमे भाग लेने वालो मे सबसे महान् सन्त तामस ही था।

बारहवी-तेरहवी सदी मे काव्य की प्रभूत साधना हुई। ओविद[३] विशेष लोकप्रिय हुआ। उसका फ्रेच और अग्रेजी कविता के विषय और रूप दोनो पर गहरा प्रभाव पडा। उसका अनुकरण भी खूब हुआ। मध्यकालीन यूरोप का सबसे महान् कवि दाते[४] है। उसकी प्रधान कृति तो निश्चय ही इतालियन भाषा मे है, 'दिवीना कामेदिया' (दिव्य कॉमेडी)। परतु उसकी लातीनी रचनाए भी बडी सुन्दर है। फिर भी वह इतालियन भाषा का हिमायती था और उसके पक्ष साधन के लिए उसने अपनी प्रसिद्ध लातीनी कृति 'दि वुलगारी एलोक्वेन्तिया' लिखी। दाते के साथ ही यूरोपीय मध्ययुग का अन्त हो गया। उसके बाद पुनर्जागरण का युग आरम्भ हुआ।

रेनेसा (पुनर्जागरण) के युग मे प्राचीन ग्रीक और रोमन ससार की कला, साहित्य, विचारधारा के प्रति नई चेतना, नई अभिरुचि उत्पन्न हुई। हालैड के टामस केम्पिस[५] ने मध्ययुगीय शैली मे अपना 'इमितातियो क्रिस्ती' लिखा। फ्रासिस्कस पेत्रार्का[६] ने पहली बार यूरोप मे हस्तलिखित ग्रथो की खोज शुरू की। उसने अपने पत्रो की शैली सिसेरो की शैली (अत्तिकस को पत्र) पर अवलम्बित की। उसने अपने प्रारम्भिक 'सॉनेटो' को छोड बाकी सारी मुख्य रचनाए लातीनी मे की। उसके पत्र, उसका एपिक सभी लातीनी मे है। एपिक तो वर्जिल का अनुयायी है। सिसेरो और क्विन्तिलियन धीरे-धीरे फैशन हो गए। कोई बगैर उन्हे पढे-रटे शिक्षित नही कहलाता था। 'एलोक्वेन्तिया' से प्रभावित होने का अर्थ था लातीनी धाराप्रवाह बोलना। फिर तो लातीनी पढाने वाले अनेक शिक्षक उत्पन्न

---

१ St Bernard of Clairvaux (१०९०-११५३), २ St Thomas Aquinas (१२२४-७४), ३. Ovid, ४ Dante (१२६५-१३२१), ५ Thomas Kempis (१३८०-१४७१), ६. Franciscus Petrarca (१३०४-१३७४)

हो गए। वल्ला[१] ने अपनी पुस्तक 'एलिगान्ती सेरमोनिस लातीनी' में मध्ययुग की बर्बरता को धिक्कारा और सिसेरो आदि की शैली को सराहा। उसी परम्परा का पोप लियो दशम का सेक्रेटरी बेम्बो[२] भी था। परन्तु इस दिशा में मुरेतस[३] सबसे स्तुत्य था। उसने सिसेरो के असामान्य शब्दों के प्रयोग से अपने आलोचकों को चक्कर में डाल दिया। उत्तर में आक्सफोर्ड का प्रसिद्ध पंडित और ग्रीक तथा लातीनी का परम उपासक इरैस्मस[४] हुआ। वह उस काल के प्रसिद्ध मानवतावादियों में अग्रणी था।

सोलहवीं सदी में भी रेनेसा के भावुक अनुयायी लातीनी में ही लिखते रहे। उनमें प्रसिद्ध दो स्कालीगर्स,[५] कासौबन,[६] लिप्सियस,[७] और सल्मासियस[८] थे। सत्रहवीं सदी में अद्भुत आलोचक रिचार्ड बेन्टली[९] हुआ जिसने केम्ब्रिज के आधार से सारे यूरोप के रेनेसावादियों को प्रभावित किया। मिल्टन[१०] ने अपनी कविता तो अधिकतर लातीनी में ही लिखी, उसका आधे से ज्यादा गद्य भी लातीनी में ही लिखा गया। आरम्भ में उसने पद्य भी लातीनी में ही लिखा। उसके अधिकतर निबन्ध, पत्र, धार्मिकग्रंथ, तर्क सम्बन्धी पुस्तक सब लातीनी में ही लिखी गई। इसी प्रकार बेकन[११] अपनी सूत्रवत् चुस्त शैली के प्रसिद्ध निबन्धों के लिए अंग्रेजी को अपने विचारों का वाहन न बना सका। उसने अपना 'नोवम आर्गेनन' और न्यूटन[१२] ने अपना 'प्रिन्सिपिया' लातीनी में ही लिखा और लातीनी में ही जेसुइतो का प्रसिद्ध 'आक्ता सान्क्तोरम' लिखा गया। लिपिशास्त्र, धर्म-शास्त्र, आचार-व्यवस्था सब लातीनी में ही है। जेसुइतो में कविताएं बराबर लातीनी में ही लिखी जाती थीं। सारबिव्स्की[१३] ने लातीनी में एक गीतिक और लिरिको की चार पोथियां लिखीं। इसी प्रकार रीपिन[१४] ने वाटिकाओं पर एक लम्बी कविता लिखी। आन्द्रियास स्कॉट[१५] ने गद्य-पद्य दोनों लातीनी में लिखे और उस भाषा की अनेक हस्तलिपियां सम्पादित की तथा पाठ शुद्ध किए। हारदुइन[१६] मुद्राशास्त्र के प्रारम्भिक जानकारों में से है। उसने अपने अनेक ग्रन्थ इस विषय पर लातीनी में लिखे, साथ ही अनेक धर्मशास्त्र पर भी।

अब विविध देशों को अपनी-अपनी भाषा के साहित्य प्रस्तुत हो जाने से लातीनी की विशेष महत्ता न रही। उन्नीसवीं सदी तक उसका विशेष प्रभाव था। वैसे आज भी अनेक

---

१. Valla (१४०७-१४५७ ई०); २. Bembo (१४७०-१५४७ ई०); ३. Muretus (१५२६-८५ ई०); ४. Desiderius Erasmus; ५. Scaligers; ६. Casaubon; ७. Justus Lipsius; ८. Salmasius; ९. Richard Bentley; १०. Milton; ११. Bacon; १२. Newton; १३. Sarbiewski; १४. Rapin; १५. Andreas Schott; १६. Hardouin

यूरोपीय और अमेरिकन विश्वविद्यालयो मे थीसिस कुछ विषयो मे लातीनी मे ही दी जाती है। पोप के वैटिकन राज्य के विधान लातीनी मे ही होते है और मठो मे अनेक ईसाई विद्वान् आज भी लातीनी मे लिखना अपना धर्म समझते है। फिर भी उसका इधर काफी ह्रास हुआ है और उसके पुनर्जागरण की कोई आशा नही।

१३. संस्कृत, पाली और प्राकृत

: १ :

संस्कृत

वैदिक साहित्य

संहिता-काल

'संस्कृत', जिसे श्रद्धालु हिन्दू देववाणी कहता है, हिन्दी-यूरोपीय भाषा की प्राचीनतम शाखा है और 'वेद' उसका प्राचीनतम साहित्य। 'वेद' 'विद्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'जानना', इसीसे 'वेद' का अर्थ हो गया है ज्ञान, जो दैवी आधार में उठा। भावुक श्रद्धालु वैदिक ज्ञान को मनुष्यकृत न मानकर ईश्वरकृत मानता है। इसीसे वेद का दूसरा नाम 'श्रुति' भी पड़ा, अर्थात् वह ज्ञान जो सुना गया, 'उन्हामी'। श्रुति का ज्ञान उस ज्ञान से पृथक् है जो 'स्मृति' कहलाता है, स्मृति अर्थात् ज्ञान जो याद रखा गया। श्रुति ज्ञान अपरिवर्तनशील, शाश्वत है। स्मृति ज्ञान श्रुति पर अवलम्बित है, उसीका अनुकारी, उसीकी याद है वह। जो उसके अनुकूल नहीं है वह स्मृति नहीं है, क्योंकि वह 'मूल की याद' नहीं। स्मृति ईश्वरकृत श्रुति के विपरीत मनुष्यकृत है। श्रुति से एक और स्थिति का बोध होता है, उस अलिखित साहित्य का जो केवल सुनकर याद रखा गया। लिपि और लेखन का उस अति प्राचीन काल मे अभाव होने से वह सदियो मौखिक रूप से ही संरक्षित हुआ और उसका ज्ञान पिता पुत्र को अथवा गुरु शिष्य को उच्चारण द्वारा कराता था। श्रुति 'सुनी हुई' तो कही ही जाती है, प्राचीन आचार्यों ने उस ज्ञान को देखा हुआ भी माना है। आखिर उसके संहितामन्त्रो का सम्बन्ध ऋषियो से है, ऋषियों को मन्त्रकार कहते है परन्तु उस रूप मे नही जिस रूप मे कवि छंद की रचना करता है बल्कि द्रष्टा के रूप मे। ज्ञान पहले से था, वह केवल 'देखा गया' इसीसे ऋषियों की परिभाषा मे कहा भी गया है:—साक्षात्कृत धर्माणः मन्त्रद्रष्टारः ऋषयः।

जो भी हो, वेद भारतीय आर्यों और हिन्दुओं के धर्म और धार्मिक साहित्य के प्रधान स्रोत और आदि बिन्दु माने जाते है और उन्होंने हजारों वर्षों से उनका आदर पाया है। वेद चार है—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। इनमे से पहले तीन विशेष श्रद्धा के केंद्र थे और एक साथ 'त्रयी' कहलाते थे। अपने प्रतिपादित विषय के कारण शायद अथर्ववेद को बहुत काल तक 'त्रयी' का आदर नही मिला था। अब वह भी चारो वेदो मे

से एक है। वेदो की शुद्ध श्रुति मत्रो मे है, छदोबद्ध सूक्तो मे। यद्यपि यजुर्वेद के अनेकाश गद्य मे भी है। इन्ही मत्रो-सूक्तो का सग्रह 'सहिता' कहलाता है। बहुत काल तक ये मत्र विविध पुरोहित परिवारो की निधि थे और यत्र-तत्र लोगो की स्मृति मात्र मे बिखरे थे, पश्चात् इन्हे एकत्र कर लिया गया और वही एकत्र किया हुआ साहित्य 'सहिता' कहलाया। चार वेद वस्तुत शुद्ध रूप मे यही चार सहिताए है। इन चारो मे प्राचीनतम ऋग्वेद है, हिन्दी-यूरोपीय आर्यो की प्राचीनतम पुस्तक। ऋग्वेद अधिकाश मे अन्य तीनो सहिताओ का मूलाधार भी है। सामवेद के केवल ७५ मत्र अपने है, शेष ऋग्वेद के है। इसी प्रकार यजुर्वेद के भी अधिकतर मत्र ऋग्वेद के है और अथर्ववेद का भी बीसवा भाग उसी आधार का ऋणी है।

ऋग्वेद दस मडलो मे विभक्त है, मडल अनेक अनुवाको (अध्यायो) मे, अनुवाक सूक्तो मे और सूक्त मत्रो मे। सूक्तो के विषय विविध है—देवस्तुति, दानप्रशस्ति, कुलेतिहास आदि। और इनके क्रम मे स्थान-स्थान पर अभिराम कवि-ग्रन्थि खुल पडी है। विविध ऋषिकुलो मे विविध वेदो का अध्ययन होता था और यह स्वाभाविक था कि अलिखित साहित्य केवल मौखिक होने के कारण वितरित होते समय उच्चारणादि भेद से पाठभेद प्रस्तुत कर दे। इसीसे ऋषि-'चरणो' की अपनी-अपनी वेद-'शाखाए', बन गई। ऋग्वेद की जो शाखा आज उपलब्ध है उसे 'शाकल' शाखा (शौनक की) कहते है। उसमे १०२८ सूक्त (अनेक मत्रो का एक सूक्त होता है) है, और १०,६०० मत्र। ये सूक्त सदियो के काल-विस्तार मे रचे गए, अनेक ऋषियो द्वारा अनेक काल-स्तरो मे। इसीगे ऋग्वेद के पहले ही सूक्त मे प्राचीन और नूतन ऋषियो का उल्लेख हुआ है।

ऋग्वैदिक आर्यों के देवता प्राकृतिक शक्तियो के प्राय मानुष रूप थे। उनकी चेष्टाए मानुष थी। देवता अनेक थे, एकेश्वरवाद की कल्पना अभी नही हुई थी। इन देवताओ के तीन प्रकार थे। उच्चतम स्वर्ग अथवा आकाश के देवता—द्यौस, वरुण, मित्र, सूर्य, सवितृ, पूषन्(पिछले चारो सूर्य के ही अश-विशेष या नामातर थे)।अश्विन(अश्विनी कुमार) और देविया उषस् और रात्रि, अतरिक्ष के देवता—इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु, पर्जन्य, और पृथ्वी के देवता—अग्नि, सोम और पृथिवी (देवी)। इनके अतिरिक्त अनेक देवता-देवी और थे। यह देवकुल द्यौस और पृथ्वी की सन्तान थे। अनेक अमूर्त देवी-देवताओ का उल्लेख भी हुआ है और नद-नदी के देव-देवियो के प्रति भी मत्र कहे गए है। आर्यों का धर्म यज्ञपरक था और यज्ञो मे पशुबलि भी दी जाती थी। यज्ञावसर पर मत्र और सूक्त देवताओ की स्तुति मे गाए जाते थे और यज्ञपूत मास खाया जाता था, सोम पिया जाता था। पुरोहितो की परम्परा आवश्यकतावश निरन्तर बढती ही गई।

अनेक सूक्तो मे डायलॉग का प्रयोग हुआ है, जैसे यम-यमी मे, इन्द्र-इद्राणी मे, पुरूरवा-उर्वशी मे। इनमे से अन्तिम को तो महाकवि कालिदास ने उत्तरकाल मे अपने

नाटक 'विक्रमोर्वशी' का आधार बनाया। वस्तुत संस्कृत नाटकों का मूल इन ऋग्वैदिक डायलॉगो को ही बताया जाता है।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सूक्त छदोबद्ध मत्रो मे है। प्रत्येक मत्र मे साधारणत चार पद है। छदो मे विशेषत 'त्रिष्टुप', 'गायत्री' और 'जगती' का उपयोग हुआ है। ऋग्वेद की भाषा प्राचीनतम आर्यों की साहित्यिक भाषा है जिसका परिष्कृत रूप 'क्लासिकल' संस्कृत मे निखरा, जिसका व्याकरण पाणिनि ने प्रस्तुत कर उसे निश्चित रूप दिया। सरल सम्मोहक भाषा मे ऋग्वेद के अनेक सूक्त अत्यन्त मार्मिक है। ऊषा के प्रति गाए गए छद लिरिक के रूप मे प्राचीन साहित्य मे अनुपम है। इन्द्र वाले मत्र शक्ति के परिचायक है और वरुण सम्बन्धी असामान्य शालीन। दसवे मडल मे एक अत्यन्त मनोरम सूक्त (३४) जुआरी का है। हृदयस्पर्शी गायन मे उसने द्यूत सम्मोहक आकर्षण का करुण वर्णन किया है। मृत्यु सम्बन्धी कविताए गम्भीर और रहस्यवादी है और वागम्भृणी की नितान्त ओजस्विनी। इन ऋग्वैदिक मत्रो की रक्षा के लिए ऋषियो ने 'पद', 'क्रम', 'जटा', 'धन' आदि पाठो का निर्माण किया। ऋग्वेद के दसवे मण्डल मे ही वह प्रसिद्ध 'पुरुष सूक्त' है जिसमे वैदिक साहित्य मे पहली बार वर्णों के उदय का उल्लेख हुआ है। सामवेद गेय मत्रो की सहिता है। इसमे ७५ ऋचाओ को छोड शेष सभी ऋग्वेद की है (विशेषत: उसके आठवे-नवे मडल से आकृष्ट)। इनको उद्गातृ और उसके सहकारी पुरोहित यज्ञ के अवसर पर गाते थे। इस सहिता की तीन शाखाए —'राणायनीय' 'जैमिनीय' और 'कौथुम', इसके दो भाग है—पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। यजुर्वेद केवल यज्ञ-मन्त्रो की सहिता है। इसकी अनेक शाखाए थी परन्तु अब उसकी केवल पाच शाखाए मिलती है—चार 'कृष्ण' यजुर्वेद की और एक 'शुक्ल' यजुर्वेद की। कृष्ण यजुर्वेद मे यजुस (यज्ञपरक मन्त्र) और स्तुतियो के साथ-साथ अनेक स्थल पर उनकी गद्यात्मक व्याख्या भी है जिन्हे 'ब्राह्मण' कहते है और शुक्ल मे ये ब्राह्मण पृथक् कर दिए गए है जो एकत्र होकर 'शतपथ ब्राह्मण' कहलाते है।

अथर्ववेद की नौ शाखाओ मे से आज केवल दो—'पैप्पलाद' और 'शौनकीय' उपलब्ध है। शौनकीय शाखा बीस मण्डलो, ७३१ सूक्तो और ६००० पक्तियो मे सगृहीत है। इसके अनेकाश ऋग्वेद से लिए गए है परन्तु इसके कुछ अश अनुवृत्त और परपरा के रूप मे सम्भवतः ऋग्वेद से भी प्राचीन हैं। इस सहिता के अधिकतर मंत्र झाड-फूक, मारन-उच्चाटन, भूत-प्रेत, रोग-व्याधि सम्बन्धी है। उससे स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक आर्यों की सामाजिक और सास्कृतिक चेतना मे अब तक प्रभूत अन्तर पड गया था। अथर्ववेद के भी अनेक स्थल अत्यन्त मार्मिक है। वरुण के प्रति कहे कुछ मत्र (४, १०) तो अपनी शालीनता मे समूचे वैदिक साहित्य में अपना जोड नही रखते। माता भूमि सम्बन्धी सूक्त (१२,१,६३) भी देश-प्रेम का रोमाचक आदर्श प्रस्तुत करता है। इसमें कुछ बड़े महत्व के

मन्त्र राज्यारोहण सम्बन्धी भी है जिनका उपयोग राज्यारोहण के समय हिन्दू राजा बराबर करते रहे है। उस वेद मे पहले पहल 'इतिहास-पुराणो' का उल्लेख हुआ है।

वेदो का काल-निर्णय बडा कठिन है और इस विषय पर भी मत अनेक है। यह तो असदिग्ध है कि ऋग्वेद उनमे प्राचीनतम है और अथर्ववेद सबसे पीछे का। स्वय ऋग्वेद सहिता के अनेक कालान्तर है और उसके मत्रो के रचयिता-द्रष्टा ऋषियो तथा दान-स्तुतियो के नायक कुलागत राजाओ की परपरा से प्रगट हो जाता है कि उसके मत्रो की रचना अनेक पीढियो मे हुई है। फिर मत्रो का रचना-काल भी स्वाभाविक ही सहिता काल से भिन्न है। सर्वांगीय दृष्टि से ऋग्वेद का रचनाकाल ३००० ई० पू० और १३०० ई० पू० के बीच माना जा सकता है। सम्भव है उस वेद के प्राचीनतम मत्र ३००० और २५०० ई० पू० मे कभी रचे गए हो। राजा शातनु आदि महाभारतकालीन राजाओ का उसमे उल्लेख होने से यह भी सिद्ध है कि उसका अतिम अश चौदहवी शती ई० पू० से पहले नही रखा जा सकता। अथर्ववेद निश्चय ही बहुत पीछे का है और मत्रो के रचना-काल मे भी परस्पर सदियो का अतर है। उसके समाज, सस्कृति, भूगोल आदि को देखते हुए उसकी रचना और पीछे सहिता का समय ई० पू० १००० के लगभग होना चाहिए। सभवत. उसके मन्त्रो की वर्तमान सहिता तब तक प्रस्तुत हो चुकी थी।

उत्तरकालीन वैदिक साहित्य

ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्

ब्राह्मण वेदमत्रो की व्याख्या और यज्ञ सम्बन्धी टीकाए है। यज्ञ के अवसर पर जो अनेक बार विधि की कठिनाइया हो जाती थी, उन्हीके समाधान के लिए समय-समय पर संभवत ये ब्राह्मण लिखे गए। इनमे सृष्टि सम्बन्धी उन कथाओ, पौराणिक आख्यानो आदि का भी उल्लेख है जो यज्ञो से सपर्क रखती थी। इनमे विशेषत पुरोहितो को उनकी विधि-क्रियाओ के सम्बन्ध मे विधिपरक अनुशासन भी मिलते है। वस्तुत ब्राह्मणो-पुरोहितों के पेशे सबधी इसमे भेद बताए गए है जिनसे इनकी सज्ञा ब्राह्मण सार्थक जान पडती है। ये ज्ञानग्रथ नही यज्ञग्रथ है, पौरोहित्य के। ब्राह्मण गद्य मे लिखे गए और सस्कृत गद्य की प्राचीनतम कठिन शैली प्रस्तुत करते है। उनमे बीच-बीच मे पद्यबद्ध 'गाथाए' भी दी हुई है। सभवत प्रत्येक वेद की प्रत्येक शाखा के अपने-अपने ब्राह्मण थे। प्राचीनतम ब्राह्मण के एक रूप का दर्शन हमे कृष्ण यजुर्वेद के गद्याशो मे होता है। साधारणत प्राचीनतम ब्राह्मण 'पचविश', 'तैत्तिरीय', 'ऐतरेय', 'जैमिनीय' और 'कौषीतकि' माने जाते है, फिर 'शतपथ' तब अथर्ववेद का 'गोपथ' और अत मे सामवेद के लघु ब्राह्मण। उनमे वेदो मे आई आख्यायिकाए आदि विशेष रूप से महत्व धारण कर लेती है। 'शतपथ' ब्राह्मण मे अक्कादी साहित्य की जलप्रलय की कथा भी (जो वहा 'गिल्गमेश' काव्य मे

मिलती है) कही गई है। अन्तर बस इतना है कि उसमें अक्कादी जिउद्सुद्रु के स्थान पर नायक मनु है जो अपनी रक्षा के बाद यज्ञ के लिए 'असुर-ब्राह्मण' को पुरोहित बनाता है। यह जलप्रलय ई० पू० ३२०० के लगभग सुमेर में (इराक का दक्षिणी भाग दजला-फरात का मुहाना, ऊर, उरुक आदि नगरों में) हुआ था। ऋग्वेद ई० पू० २००० के पहले लिखा गया और शतपथ ब्राह्मण ई०पू० १००० और ८०० के बीच कभी। ब्राह्मणों मे देवता वेदों के ही है परन्तु प्रजापति (यज्ञ का देवता और उसका स्वरूप) धीरे-धीरे प्रबल हो गया है। प्रजापति स्वय यज्ञ है और यज्ञविधि का सर्वज्ञ जानकार पुरोहित ब्राह्मण स्वय देवता है।

ब्राह्मणो के अन्तिम अश 'आरण्यक' कहलाते है। विद्वानों का मत है कि इनका रहस्यमय ज्ञान अरण्य के एकात मे शिष्य को दिया जाता था, इसीसे इनका यह नाम पडा। उपनिषदो का भी अधिकतर यही अर्थ है। आरण्यक और उपनिषद् दोनों कभी 'वेदान्त' कहलाते थे। बाद मे यह सज्ञा केवल उपनिषद्-दर्शन की हो गई। प्राय २०० उपनिषदे आज हमे उपलब्ध है। इनमें अनेक विविध सम्प्रदायों के है और प्राचीनों मे भी काफी सामग्री बाद मे मिलाई गई है। उपनिषदो मे दार्शनिक चिंतन और रहस्यमय प्रसगो के अतिरिक्त प्रणय-प्रसग और रोग-मत्रादि भी है (कौषीतकि और छांदोग्य)। उपनिषदो मे ब्राह्मण-कर्मकाण्ड के विरुद्ध साफ विद्रोह प्रगटित है। यज्ञपरक धर्म के स्थान पर उसमे दार्शनिक चेतना और ज्ञान का प्रतिपादन हुआ है। ब्रह्म-आत्ममय जगत् का प्रतिपादन हुआ है। काशी के अजातशत्रु और गार्ग्य बालाकि के बीच, याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी मे और नचिकेता के उपाख्यान मे भारतीय दर्शन का बीज उपलब्ध है यद्यपि इस बीज का कोई न कोई रूप स्वय ऋग्वेद मे भी झलक जाता है। उपनिषद्विद्या के द्रष्टा क्षत्रिय है, ब्राह्मणो के कर्मकाण्ड और पौरोहित्य के विरोधी। उन्होने रक्तहीन यज्ञ, बौद्धिक चिन्तन और ज्ञान को उत्तम माना जिसकी पराकाष्ठा जैन और बौद्ध धर्मान्दोलनो मे हुई। ऋग्वैदिक काल मे ही ब्राह्मण-क्षत्रियो मे जो पारस्परिक द्वन्द्व चला आता था उपनिषदें उसीकी परिणति थी। उनके सिद्धातो का विश्वव्यापी प्रभाव पडा। ग्रीस के नौ अफलातूनी और सोफी सिद्धात, सिकन्दरिया आदि के ईसाई दर्शन और ईरान-अरब के सूफी चिंतन वेदान्त से ही प्रभावित माने जाते है। उपनिषदों मे अनेक स्थल काव्य के निखरे प्रसाद-गुणयुक्त रूप हैं। शैली प्राचीन और कभी-कभी प्रसंगवश दुरूह होती हुई भी सरल और शालीन है। भाषा और छन्द के रूप मे उपनिषदो की भूमि वैदिक और 'क्लासिकल' संस्कृत के बीच की है। कुछ प्रामाणिक उपनिषदों के नाम है—कौषीतकि, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर, मैत्रायणीय, कठ, मुण्डक और माण्डुक्य।

वेदांग

'श्रुति' का बाह्य परिमाण उपनिषद् है। वस्तुतः अनेक तो संहिताओं तक ही

उसकी सीमा मानते है। वेदागो का प्रकाश और विकास वेदो के अध्ययन के लिए हुआ, उनके अध्ययन मे इनसे सहायता मिली। वेदाग ६ प्रकार के है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। इन सभी पर आज अलग-अलग प्रभूत साहित्य सस्कृत मे प्रस्तुत है जो अनेक रूप से विज्ञान का स्थान ग्रहण कर चुका है। इनमे शिक्षा मे उच्चारण आदि पर प्रकाश डाला गया है, कल्प मे यज्ञ और समाज सबधी विधि-निषेध है, व्याकरण मे भाषा का निदान है, निरुक्त शब्दशास्त्र अथवा कोषविज्ञान का आरम्भ करता है, छन्द वैदिक छन्दो पर विचार कर परवर्ती 'मीटर' पर शास्त्रीय विवेचन है और ज्योतिष तत्सबधी ज्ञान का निरूपण करता है। इन वेदागो पर ग्रन्थ सूत्र-पद्धति से लिखे गए। कम से कम शब्दो मे अधिक से अधिक विचार और भाव भरे गए।

सूत्र विचारो के साकेतिक बीज है। इस साहित्य शैली का उदय केवल सस्कृत मे हुआ, ससार की किसी अन्य भाषा मे नही। यह सूत्र-सरणि भाषा की सुईकारी है। सूत्रो का अनेकार्थ मे निर्माण-काल ब्राह्मणो, आरण्यको का ही है। उन्हीके अधिकतर वे विकास है। उन्हीके आचार्य आश्वलायन, शौनकादि के रूप मे इनके भी प्रारभिक प्रणेता है।

सबसे महत्व का वेदाग कल्प है। कल्प (यज्ञविधि-निरूपण) सभी वैदिक चरणो के अपने-अपने थे। इनके तीन मुख्य भाग है—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। श्रौतसूत्रो मे विविध वैदिक यज्ञो के विधान है—अग्निहोत्र सोमज्ञ आदि विभिन्न यज्ञो का। इन्हीके एकाश (अन्त्याश) 'शुल्वसूत्र' भारतीय गणित का (यज्ञ-वेदी के माप आदि द्वारा) प्रारभ करते है। गृह्यसूत्रो मे गृह और शरीर सबधी आचार का विचार और वर्णन है। उसमे ४० संस्कारों का निरूपण है जिनमे सोलह शरीर से सबध रखते है। ये सस्कार वस्तुतः मनुष्य के जन्म से भी पहले शुरू होकर उसकी मृत्यु के बाद तक चलते रहते है। धर्म सूत्रो मे सामाजिक और धार्मिक क्रियाओ के सबध मे विधि-निषेध प्रस्तुत है। राजधर्म, विविध वर्ण-धर्म, दण्डनीति उसके विषय है। व्याकरण आदि के सूत्रग्रन्थ वस्तुत विज्ञान से तात्पर्य रखते हैं और उनका उल्लेख यथास्थान किया जाएगा।

: २ :

इतिहास-पुराण

ऐतिहासिक काव्य

'इतिहास-पुराण' का उल्लेख अथर्ववेद मे हुआ है। जहा तक पौराणिक आख्यायिकाओ आदि का सबध है, वे तो वेदो और ब्राह्मणो आदि प्राचीन ग्रथो मे मिलती ही है, सस्कृत के दो प्राचीन महाकवियो के नायको और उनके कुलो का भी सकेत वहा किसी न किसी रूप मे मिलता है। ऐतिहासिक काव्य की सूत-परपरा किसी न किसी रूप मे वैदिक

काल मे कायम थी और चारणो की भांति सूत अथवा गाथा गायक उन्हे यत्र-तत्र गाया करते थे। फिर एक दिन वह कवि वाल्मीकि उत्पन्न हुआ जिसने भारत और संस्कृत को उसका पहला महाकाव्य 'रामायण' दिया। 'रामायण' से पहले भी संस्कृत मे कोई महाकाव्य था इसमें विद्वानो ने सदेह किया है, यद्यपि उसके होने का सकेत मिलता है। द्वितीय शती ई० पू० के पतजलि ने अपने 'महाभाष्य' मे वाल्मीकि के ही पूर्व-पुरुष च्यवन के रामकाव्य से दो श्लोक उद्धृत किए है। और प्रथम शती ईस्वी के बौद्ध-साहित्यकार और दार्शनिक अश्वघोष ने अपने 'बुद्धचरित' मे लिखा है कि किस प्रकार वाल्मीकि रामायण की रचना मे अपने पूर्वज च्यवन से प्रौढ़तर सिद्ध हुए। जो भी हो आज जो रामायण हमें उपलब्ध है वह एक कवि की कृति है और उसका रचयिता वाल्मीकि परपरया 'आदिकवि' कहलाता है। प्रगट है कि वाल्मीकि के आदि कवि होने से 'रामायण' भी संस्कृत का आदिकाव्य हुआ। रामायण की चुस्त और शालीन शैली तथा उसकी कथा की एक और प्रधान स्रोतज धारा प्रमाणित करती है कि उसका रचयिता वाल्मीकि अथवा जो कोई रहा हो, रहा वह अकेला। रामकथा को उसने काव्य का रूप देकर खड़ा किया। फिर धीरे-धीरे और कथाए भी उसके आकार मे आ मिली।

रामायण की मूल कथा इस प्रकार है। अयोध्या के राजा दशरथ के तीन रानियां थी, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। कौशल्या के पुत्र राम ने अपने गुणों से प्रजा का मन हर लिया था और अवस्था ढल जाने पर दशरथ ने राम को युवराज बनाने का निश्चय किया। इसी बीच कैकेयी की दासी मन्थरा ने उसे फुसलाकर अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी मागने को मजबूर कर दिया। कैकेयी की एक पुरानी सेवा के बदले राजा ने उसे वर देने का वचन दिया था जो कैकेयी ने भरत को गद्दी और राम को चौदह वर्ष के वनवास के रूप मे मागा और राजा को देना पडा। राम अपनी प्रिय पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन चले गए। भरत मामा के यहां थे। पिता राम का वियोग न सह परलोक सिधारे तब श्राद्ध में आने पर जब भरत को अपनी मा का कृत्य मालूम हुआ तो वह भागे हुए वन पहुचे और भाई को मना लेने के बड़े प्रयत्न किए। परतु जब राम पिता का वचन मिथ्या करने पर राजी न हुए तब भरत उनकी खडाऊ लेकर लौट आए और उन्हें गद्दी पर रख प्रतिनिधि के रूप मे प्रजा-पालन करने लगे। उधर लंका के राक्षस राजा रावण ने राम की सुन्दर पत्नी सीता को हर लिया। राम और रावण में भयानक युद्ध हुआ जिसमे रावण को सपरिवार मारकर राम ने सीता का उद्धार किया। फिर चौदह वर्ष बीत जाने पर वह अयोध्या लौटे। रामायण का प्रस्तुत आकार ई० पू० २०० के लगभग सम्भवतः पूर्ण हो गया था। कुछ आश्चर्य नही यदि उसका प्रधान कथाकाव्य ई० पू० के लगभग ही समाप्त हो गया हो।

रामायण गार्हस्थ्य-गुणों का अद्भुत काव्य है। आज का हिन्दू परिवार अपने

सामाजिक आदर्शों के लिए रामायण की ओर ही देखता है। उसका पिछले काव्यों पर बडा गम्भीर प्रभाव पडा है। लगातार पश्चात्कालीन कवियो ने उससे अपनी कृतियो के लिए सामग्री ली है। उसकी भाषा सरल है और शैली शालीन। उसमे अधिकतर श्लोक छन्द का उपयोग हुआ है। उसके अनेक स्थल इतने मार्मिक है कि हृदय करुणा से ओतप्रोत हो जाता है।

रामायण की घटना ऐतिहासिक है या नही, है तो कब घटी, इसपर प्रबल मतभेद है। उसे ऐतिहासिक मानने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए। उसका घटना-काल ई० पू० सोलहवी-पन्द्रहवी शती हो सकता है।

सस्कृत का दूसरा प्रधान काव्य (एपिक) 'महाभारत' है। महाभारत रामायण के विपरीत अनेक लेखनियो की उपज जान पडता है। कुछ बृहदाकार है, प्राय· एक लाख श्लोको मे सम्पन्न। इसीसे पाचवी सदी ईस्वी के एक गुप्तकालीन लेख मे उसे 'शतसाहस्री-सहिता' कहा भी गया है। उसकी मूल कथा इस प्रकार है—विचित्रवीर्य के मरने पर उसके पुत्र धृतराष्ट्र के जन्माध होने के कारण उसका कनिष्ठ पुत्र पाण्डु राजा हुआ। उनकी असमय मृत्यु से धृतराष्ट्र कुरुओ की गद्दी पर बैठे। फिर अपने भतीजे युधिष्ठिर के गुणो पर मुग्ध होकर उन्होने उन्हे युवराज घोषित किया। इसपर उसका पुत्र दुर्योधन ईर्ष्यालु होकर अनेक प्रकार के उपद्रव करने लगा। तब पाण्डु के पुत्र पाण्डवो को भागना पडा। इधर-उधर जब वे घूम रहे थे तभी राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर हुआ और अर्जुन ने द्रौपदी को जीतकर अपनी और अपने भाइयो की उसे पत्नी बना लिया। फिर द्रुपद के बीच-बचाव से धृतराष्ट्र ने राज्य कौरवो और पाडवो मे बाट दिया। कौरवों की राजधानी प्राचीन कुरुओ का हस्तिनापुर हुई और पाडवो ने जगल साफ कर इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया, परन्तु जब दुर्योधन से उनका वैभव न देखा जा सका तब एक दिन पाडवों को धोखे से जुए मे हराकर उसने उनका राजपाट और पत्नी तक जीत लिया। बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास पाडवो को करना पडा। बाद मे जब लौटकर उन्होने अपना राज्य मागा तब दुर्योधन उन्हे सुई की नोक बराबर भूमि देने को भी तैयार न हुआ और कौरव-पाडवो मे लडाई ठन गई। अठारह दिनो तक प्रसिद्ध कुरुक्षेत्र के मैदान मे तुमुल युद्ध हुआ जिसमे सारे कौरव और उनके मित्र तथा पाडवो के अनेक सम्बन्धी मारे गए। विजय पाडव-पक्ष की हुई और युधिष्ठिर कुछ काल राज्य कर भाइयो तथा पत्नी के साथ हिमालय चले गए। यह काव्य ओजभरी शैली मे अनेक छदो मे प्रस्तुत है। इसका मूल नाम 'जय' था और इसमे ८८०० श्लोक थे। कालातर मे इसमे और भी कहानिया जोड दी गईं, तब उसका नाम 'भारत' हुआ जिसमे भरतवश के प्राचीन राजाओं का यश भी जहा-तहा गाया गया। उस सस्करण मे शायद २४००० श्लोक थे। अत में कृष्ण विषयक अनेक कहानिया जोडी गईं और 'हरिवश' नामक एक समूचा पुराण

भी उसमे जोड दिया गया । तब एक लाख श्लोको का अठारह पर्वों मे आज का 'महाभारत' प्रस्तुत हुआ । इसका रचना-काल सम्भवत. ई० पू० ५०० और २०० ईस्वी के बीच है । महाभारत के रचयिता व्यास माने जाते है । पुराणो के रचयिता भी वही माने जाते हैं। पुराणवत् महाभारत का रचयिता उन्हे होना भी चाहिए ।

महाभारत वस्तुत पुराण ही है । इसमे भारतीय इतिहास और ख्याते भरी पडी है। पश्चात्कालीन भारतीय साहित्य महाभारत का अनेक रूपेण ऋणी है । उसकी ख्याते, अनुवृत्त सभी उस आकर मे सन्निहित हैं। भारतीय जीवन को इन दोनों महाकाव्यों ने प्रभूत रूप से प्रभावित किया है। कोई हिन्दू नही जो इनकी कथा न जानता हो। व्यवहारत पद-पद पर पडित और निरक्षर मूर्ख दोनो इनकी कथाओ का स्मरण और उल्लेख करते है। इनके नायक राम और प्रधान पुरुष कृष्ण हिन्दुओं के देवता बन गए। वेदो के देवताओ का इन्होने अन्त कर दिया और राम-कृष्ण को उनके स्थान पर प्रतिष्ठित किया ।

पुराण

आज के हिन्दू समाज की धार्मिक क्रियाए और विश्वास पुराणों की भूमि से ही उठे हैं। पुराणों के देवता ही उसके देवता है। उन्हीके महापुरुषो के चरित और कथाए साधारण हिन्दुओ के आदर्श है । उस काल के व्रत, उपवास, अवतार आदि सभी पुराणो के ही है। पुराण एक प्रकार से भारतीय विश्वासों और कथाओ के आकर है । उनका उपयोग बराबर विश्वकोष की भाति हुआ है । उनमे इतिहास, अलंकार, चिकित्सा, व्याकरण, ज्योतिष, संगीत, नाट्य कला, विज्ञान, सभी विषयो पर साहित्य भरा पडा है । जिस प्रकार अन्य प्राचीन साहित्यो मे विश्वकोषों और सृष्टि के आरम्भ से इतिहास की रचना हुई है, सस्कृत मे उसी प्रकार प्रायः उसी अर्थ मे पुराणो का प्रणयन हुआ । इसके पारपरिक विषय पाच माने जाते हैं—सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय के बाद नई सृष्टि), वश (देववशावलिया), मन्वन्तर (अनेक मनुकल्प) और वंशानुचरित (प्राचीन राजकुलो के ऐतिहासिक विवरण) । वशानुचरितो ने, जो अनेक पुराणो मे मिलते है, भारतीय इतिहास के शोध मे बड़ी सहायता की है। उन्होने उसके अनेक संदिग्ध स्थलों पर प्रकाश डाला है और अनेक ऐतिहासिक राजकुलों के वृत्तान्तों की रक्षा की है ।

पुराणो की ओर भी अथर्ववेद ने संकेत किया है। 'पुराण' शब्द का अर्थ है, प्राचीन, अर्थात् उस साहित्य में प्राचीन कथाओ का संकलन है । वर्तमान पुराणों की अनेक बातें समान होने से लगता है कि उनका आधार कोई मूल पुराण रहा है। ऐसे मूल पुराण के होने की परपरा भी पुराणो मे है । उसी मूल पुराण का महाभारतकार वेदव्यास (कृष्ण द्वैपायन व्यास) ने सम्पादन किया । प्रधान पुराणों की सख्या अठारह है— ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, वराह, लिंग, स्कन्द, वामन,

कूर्म, मत्स्य, गरुड और ब्रह्माण्ड । प्रगट है कि इनमे से अनेक साम्प्रदायिक है । इनके अतिरिक्त छोटे-बडे सौ के लगभग अन्य पुराणो का भी जहा-तहा उल्लेख मिलता है ।

पुराणो की रचना का काल प्राय असम्भव है । समय-समय पर ये बनते गए है और इनमे सामग्री तो अभी हाल तक जोडी जाती रही है । अनेक प्रधान पुराणो का सकलन गुप्त काल मे पाचवी सदी ईस्वी के आसपास हुआ ।

रामायण-महाभारत की ही भाति पुराणो का भी सस्कृत और प्राकृतिक साहित्यो पर गहरा असर पडा है । इन तीनो ने केवल सस्कृत और प्राकृत के ही साहित्यो को प्रभावित नही किया वरन् समूचा भारतीय साहित्य, सस्कृत से लेकर जन बोलियो तक, अपनी सामग्री के लिए पुराणो के अमित भडार का ऋणी है ।

: ३ :

'क्लासिकल' साहित्य

'क्लासिकल' सस्कृत साहित्य का चरम विकास कालिदास है । परन्तु कालिदास पाचवी शती ईस्वी मे हुए, गुप्त शासनकाल में । उनसे पहले अनेक कवि और नाटककार हो गए हैं । अपने पूर्ववर्ती तीन साहित्यकारो—भास, सौमिल्ल, कविपुत्र का तो उसी महाकवि ने अपने 'मालविकाग्निमित्र' मे उल्लेख किया है । वैसे उनसे भी पहले के कवियो का निर्देश साहित्य मे हुआ है । आखिर जिस प्रतिभा का परिचय रामायण और महाभारत ने दिया उसके और पाचवी सदी के कालिदास के बीच साहित्य भूमि अनुर्वर कैसे रह सकती थी ?

महाभाष्यकार पतजलि (ल० १८५ ई० पू०) ने कविताओ और नाटको का उल्लेख किया है। महर्षि च्यवन-कृत रामायण के प्रति सकेत का उल्लेख ऊपर किया ही जा चुका है, यहा यह और लिख देना असगत न होगा कि 'महाभाष्य' से जालूक और तित्तिर के अनुष्टुप श्लोको का ही हवाला मिलता है और उसी आधार से वररुचि की एक कविता का भी पता लगता है। वररुचि वैयाकरण था। उसका दूसरा नाम कात्यायन था। यदि वररुचि ही कात्यायन रहा हो तो उसके चन्द्रगुप्त मौर्य-पूर्व नन्द का मत्री होने मे कोई सदेह नही। पतजलि के अतिरिक्त राजशेखर ने भी वररुचि को 'कण्ठाभरण' नामक काव्य का प्रणेता माना है। इसी प्रकार भोज ने भी अपने 'शृगार प्रकाश' मे कात्यायन की कृति कहकर दृष्टान्ततः 'वसन्ततिलका' का अर्धाश उद्धृत किया है। महान् वैयाकरण पाणिनि की कुछ कविताए भी सुभाषितो मे जहा-तहा मिल जाती है। क्षेमेन्द्र ने उसे उसके उपजाति छदो की सुन्दरता पर सराहा है। राजशेखर ने तो पाणिनि को 'जम्बवती जय' (पाताल-विजय) काव्य का रचयिता ही माना है। पाणिनि पाचवी सदी ई०पू० के थे और सम्भवत· वररुचि (कात्यायन जो उसका रन्ध्रान्वेषी था) नन्दराज के समसामयिक थे, शायद नन्द

के दरबारी भी। निश्चय ही पाणिनि कात्यायन से पहले हुए थे क्योंकि कात्यायन ने उनके सूत्रो का खडन और पतजलि ने उनका समाधान किया है।

वररुचि के बाद की तीन सदियो के साहित्य का पता नही चलता। यह मानना कठिन होगा कि साहित्य की प्रतिभा उस काल म्लान हो गई थी क्योंकि संस्कृत साहित्य के इतने रत्नो का लोप हो गया है कि कुछ आश्चर्य नही यदि उस काल की कुछ रचनाए नष्ट हो गई हो। सुबन्धु और भास का नाम इस काल के लेखको मे लिया जाता है जो मानना कठिन है। उनका समय प्रमाणत: पीछे है। पहली शती ईस्वी मे एक महान् काव्यकार और नाट्यकार अश्वघोष का प्रादुर्भाव हुआ। अश्वघोष साकेत का रहने वाला ब्राह्मण था और उसकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। अश्वघोष बौद्ध हो गया था और उस सम्प्रदाय का वह दिग्गज दार्शनिक हो गया है। उसे कुषाणराज कनिष्क पाटलिपुत्र से सम्मानपूर्वक पेशा-वर ले गया और कश्मीर मे जब उसने तीसरी बौद्ध सगीति की तब प्रधान की अनुपस्थिति मे अश्वघोष ने ही उसका सचालन किया था। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है अश्वघोष ने काव्य और नाटक दोनो लिखे। उसने अपने विचारो के प्रकाशन और बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए साहित्य को वाहन बनाया, यह वह स्वय अपने 'बुद्धचरित' मे स्वीकार करता है। उसने 'रामायण' के बाद फिर महाकाव्यो की परिपाटी चलाई और 'बुद्धचरित' तथा 'सौन्दरनन्द' नाम के दो महाकाव्य लिखे। इनमे से पहला जैसा नाम से प्रगट है बुद्ध का चरित है, दूसरे में बुद्ध के वैमात्र भ्राता नन्द और उसकी पत्नी सुन्दरी की रोमानक कथा है। बुद्ध भिक्षा के लिए जब आते है तब नन्द पत्नी का प्रसाधन करता होता है। कोई भिक्षा नही देता, सभी नौकर प्रसाधन प्रस्तुत करने मे व्यस्त है। बुद्ध को रिक्तपात्र लिए जाते नन्द खिडकी से देख लेता है और उन्हे फिरा लाने जाने के लिए पत्नी से अनुमति मागता है। सुन्दरी कहती है—जाओ, पर कपोलों के 'विशेषक' सूखने के पहले ही लौट आना! नन्द जाता है तो बुद्ध उसे अपना भिक्षापात्र थमा देते है और दूसरो से बात करने लगते है, फिर उसे लिए-दिए विहार मे चले जाते हैं। नन्द को उन्हे पात्र पकडाकर घर लौटने का साहस नही होता और इधर बुद्ध अपने प्रवचनों में व्यस्त हो जाते हैं। नन्द उनसे मिलना चाहता है, घर जाने की अनुमति के लिए, पर मिल नही पाता। बहुत काल इसी प्रकार बीत जाता है तब बुद्ध एक दिन उसे आकाश-विहार और स्वर्ग को ले जाते है। फिर नन्द को विरक्ति हो जाती है और वह सघ में शामिल हो जाता है। 'सूत्रालंकार' भी अश्वघोष की ही रचना मानी जाती है। अश्वघोष रामायण से प्रभावित था परन्तु स्वय उसने अनेक परवर्ती कवियो को प्रभावित किया। स्वय कालिदास उससे इतने प्रभावित थे कि उन्होने अपने 'रघुवश' और 'कुमारसम्भव' दोनो मे अश्वघोष के अनेक श्लोक शोध-सम्हाल कर इस्तेमाल कर लिए। जैसे बुद्ध को देखने नगर की स्त्रिया दौडती है, उसी प्रकार प्राय: उन्हीं शब्दो में अज और शिव को भी नारियां दौड़कर देखती हैं।

अश्वघोष के तीन नाटको के अश भी तुरफान से मिले है। एक मे शारीपुत्र अथवा शारद्वतीपुत्र का चरित नौ अको मे प्रस्तुत है, दूसरे मे काल्पनिक रूपकीय पात्रो का उपयोग हुआ है और तीसरे मे वारागना, दुष्ट आदि का नाट्याकन है।

दूसरी शती ईस्वी के मध्य (१५० ई०) गिरनार की शिला पर सुदर्शन ह्रद का बाध ठीक करने मे महाक्षत्र रुद्रदामन का प्रशस्त काव्यमय अभिलेख खुदा है। उसमे लिखा है कि शकराज ने बगैर प्रजा पर नया कर लगाए सुदर्शन झील के टूटे बाध की प्रभूत व्यय से मरम्मत करा दी। उस अभिलेख मे सस्कृत गद्य की पहली प्राजल शैली मिलती है। इसमे आश्चर्य की बात नही कि एक विदेशी ने 'देववाणी' की पहली सुथरी गद्य शैली भारत को दी क्योकि भारतीय सस्कृति की अनेक इकाइया इन्ही विदेशी योगो से बनी हैं।

यद्यपि सुबन्धु और भास के काल का ठीक पता नही है, यहा उनपर विचार कर लेना अनुचित न होगा। सुबन्धु के नाट्यान्तर्गत नाटक 'वासवदत्ता नाट्यधारा' का उल्लेख वामन और अभिनव गुप्ताचार्य दोनो ने किया है। भास का उल्लेख कालिदास ने अपने 'भास-सौमिल्लकवि पुत्रादीनाम्' पद मे किया है। भास के अनेक नाटक गणपतिशास्त्री ने प्रकाशित किए थे। उसके नाटको मे सबसे प्रसिद्ध और महत्व का 'स्वप्नवासवदत्ता' है। उसमे भी उदयन की कथा है। उदयन ने प्राचीन काल के अनेक काव्य-नाटको को अपने नायकत्व से सनाथ किया। भास के इस नाटक से बुद्ध-कालीन राजकुलो पर प्रकाश पडता है। भास सम्भवत तीसरी सदी ईस्वी मे हुए थे। भास के साथ ही कालिदास ने जिन सौमिल्ल और कविपुत्र दो कवियों को 'प्रथित यशसा' कहा है, उनका भी कुछ ठीक पता नही चलता। राजशेखर ने एक सौमिल को रामिल के साथ 'शूद्रकथा' का रचयिता माना है। परन्तु यह कह सकना कठिन है कि सौमिल्ल और सौमिल एक ही थे। वल्लभदेव के सुभाषित मे दो 'कविपुत्रो' का उल्लेख है। उनके एकाध श्लोक उसमे उद्धृत है पर कहा नही जा सकता कि कालिदास का कविपुत्र उन्हीमे से एक है या तीसरा अथवा इनसे सर्वथा भिन्न।

शिलालेख-काव्य की ओर ऊपर सकेत किया जा चुका है। गुप्तकाल मे अभिलेखो मे काव्य का उपयोग साधारण हो गया। समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति सबल शब्दावलि मे उसके दरबारी कवि हरिषेण ने रची थी। वह स्तम्भ लेख लगभग ३४५ ई० का है। इससे अधिक हरिषण के विषय मे हम कुछ नही जानते, और न कुमारगुप्त के उस दरबारी कवि वत्सभट्टि के विषय मे जिसने मन्दसोर का विख्यात काव्यबद्ध अभिलेख (लग० ४७३-४) रचा था। मन्दसोर का वह अद्भुत अभिलेख तो कालिदास की याद दिलाने लगता है। उसपर पडा भी है उस महाकवि का प्रभूत प्रभाव। दो और गुप्तकालीन अभिलेखो का यहा उल्लेख कर देना उचित होगा। दोनो स्कन्दगुप्त के है, एक सैदपुर भीतरी का दूसरा जूनागढ का। दोनो प्रौढकाव्य धारा प्रवाहित करते है। परन्तु उनके रचयिताओ का पता नही।

हरिषेण और वत्सभट्टि दोनो कालिदास के समकालीन थे, एक बडा, दूसरा छोटा। गुप्त अभिलेखों से तो उस काल की कवि-प्रतिभा व्यक्त ही है। गुप्त सम्राटों की भी, प्रगट है, कविमेधा जाग्रत थी। कम से कम समुद्रगुप्त की तो 'कविराज' आदि विरुदों द्वारा कवि-शक्ति प्रयाग स्तभवाले लेख में प्रदर्शित की ही गई है। जान पड़ता है महाकवि कालिदास का आविर्भाव समुद्रगुप्त के शासनकाल ही मे हो गया था। यद्यपि निश्चय वे कुमारगुप्त के शासनकाल (स्कन्दगुप्त के जन्म) तक रहे थे। विशेषतः वे चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (लग० ३७५-८०-४१४ ई०) के समकालीन थे और सम्भवत उसके दरबारी भी। कालिदास के समय पर बडा मतभेद रहा है। विद्वानों ने उस महाकवि का समय दूसरी शती ई० पू० (पुष्यमित्र शुग के पुत्र अग्निमित्र का समकालीन) से लेकर छठी शती ईस्वी तक आका है। परन्तु महाकवि के काव्यो और नाटकों की आन्तरिक सामग्री गुप्तकालीन काव्यधारा, मुद्रा-अभिलेख, सस्कृति आदि सभी पुकारकर कालिदास का रचनाकाल चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का समीपवर्ती घोषित करते है। दिङ्नाग प्रसिद्ध बौद्ध-दार्शनिक और 'कुन्दमाला' का सम्भावित रचयिता, के प्रति भी शायद कालिदास ने अपने 'मेघदूत' मे सकेत किया है। दिङ्नाग समुद्रगुप्त का समकालीन था यद्यपि उसके कुन्दमाला के रचयिता होने मे लोगों को सन्देह है।

कालिदास ससार के प्रधान कवियो में से है। उसकी कृतियों ने देशी-विदेशी सभी काव्यमर्मज्ञो को अपनी काव्य-प्रतिभा से प्रभावित किया है। भारत मे तो वह 'कविकुल-गुरु' माना ही जाता है। उसका महत्व और बातो के अतिरिक्त तो इससे प्रगट है कि उसके 'मेघदूत' के अनेक अनुकरण हुए और अनेक पश्चात्कालीन कवियों ने उसके नाम से कविता लिखी। अनेक काव्य-कृतिया और ग्रन्थ इसीसे कालिदास के नाम से सबधित है यद्यपि वे उसकी रचनाए हैं नही। काव्य और नाटक दोनों क्षेत्रो में वह महाकवि औरों से गुणत. अग्रणी है। काव्यशक्ति की वह चरम परिणति है। 'क्लासिकल' काव्य का वह चरम उत्कर्ष प्रकाशित करता है। आदिकवि वाल्मीकि ने काव्य का प्रारम्भ किया था, महाकवि कालिदास ने उसे पराकाष्ठा दी। वह वाल्मीकि और अश्वघोष दोनो से प्रभावित था। एकाध दिशा में उसने दोनों का अनुकरण भी किया परन्तु उन दोनो से वह कितना भिन्न था।

महाकवि कालिदास की सात रचनाएं आज उपलब्ध है, चार काव्य—'रघुवश' 'कुमारसम्भव', 'मेघदूत' 'ऋतुसंहार'—और तीन नाटक—'अभिज्ञानशाकुन्तल' 'विक्रमोर्वशी' और 'मालविकाग्निमित्र'। उसकी एक और कृति 'कौन्तलेश्वरदौत्य' का भी साहित्य मे उल्लेख मिलता है परन्तु वह रचना उपलब्ध नही। रघुवश प्रबन्धकाव्य का सुन्दरतम आदर्श है। महाकाव्यों में बेजोड। उसके सैकड़ों सौदर्यों का वर्णन यहा असम्भव है। वाल्मीकि की कथा और पुराणो के सूर्यवश का इतना अद्भुत और समन्वित रूप रघुवश

मे अभिव्यक्त हुआ है कि काव्य गुणेतर कला चातुरी मे भी वह अप्रतिम है। रघुवश की कथा विशेषत रघु, राम और अग्निवर्ण के चतुर्दिक् निर्मित हुई। इनमे से पहला शक्ति और साम्राज्य का परिचायक है, दूसरा कर्तव्यशीलता का प्रतीक, तीसरा अनुपम कामुक। रघुवश उन्नीस सर्गो मे रचा गया है। 'कुमारसम्भव' आठ सर्गो मे सभवत अपूर्ण काव्य है। इसमे तारकासुर के वध के लिए देवताओ की प्रार्थना पर 'कुमार' (स्कन्द) की उत्पत्ति के लिए शिव द्वारा पार्वती का पत्नी के रूप मे पाणिग्रहण वर्णित है। स्कन्द के जन्म के पूर्व ही काव्य समाप्त हो जाता है। इसमे पार्वती का शिव के लिए तप जिस साधना से वर्णन किया गया है उसी कला-नैपुण्य से शिव पर काम का आक्रमण भी अभिव्यजित है, और उसी प्रतिभा-प्रगल्भता द्वारा आठवे सर्ग का शिवविलास भी। 'मेघदूत' लिरिक काव्य में ससार का सबसे अभिराम नमूना है। अभिशप्त विरही यक्ष अपनी प्रेयसी से वर्ष भर के लिए दूर है। चुपचाप दीर्घकाल तक वह विरहवेदना का सहन करता है, परन्तु जब आषाढ के आरम्भ मे मेघ घुमडने लगते है तब उसका हृदय भी असह्य द्रवित हो जाता है और वह मदिर शब्दो मे दूर की प्रेयसी को अपना सन्देश मेघ द्वारा भेजता है। पूर्वमेघ मे बादल के मार्गो का उसने वर्णन किया है, उत्तरमेघ मे प्रियानिकेत अलका और प्रेयसी यक्षिणी का। करुण मन्दाक्रान्ता मे मधुरगति से वेदना जैसे रूपायित होकर चल पडती है। मेघदूत ससार के लिरिक काव्यो मे बेजोड है। सैफो की रचनाए उसके सामने सर्वथा मलिन पड जाती है। मेघदूत के सैकडो अनुकरण हुए परन्तु मूल की सफलता का आचल भी वे न छू सके। कालिदास का 'ऋतुसहार' भारत की षड्ऋतुओ का मनोहर वर्णन करता है और यद्यपि उसे उस अप्रतिम कवि के 'मेघदूत आदि की श्रेणी मे नही रखा जा सकता, उसकी अपनी सुन्दरता भी कुछ कम नही।

कालिदास का नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तल' नाट्य क्षेत्र मे एक चुनौती है। इसके वर्णन की सुकुमारता, वस्तु का गठन, शैली की मनोरमता कला का चातुर्य सभी अनुपम है। जो सफलता इस नाटक को विदेशी आलोचको के मूल्याकन मे मिली, वह सम्भवतः किसी विदेशी साहित्य को कभी यूरोप मे नही मिली। ग्रीक नाटको की यूरोप मे धूम के बावजूद समीक्षको ने स्वीकार किया कि शाकुन्तल वस्तु की एकता, भावावेगो की अभिव्यक्ति और शैली के अभिराम निर्वाह मे उनसे कही आगे है। उस नाटक का ऐतिह्य कुरुकुल के दुष्यन्त और उसकी प्रेयसी आश्रमवासिनी शकुन्तला से सम्बन्धित है। कथा महाभारत की है यद्यपि कालिदास ने उसे काफी बदल दिया है। पिता की अनुपस्थिति मे शकुन्तला सखियो के साथ आश्रम मे अकेली है। दुष्यन्त आखेट के लिए जाता है और शकुतला के रूप-प्रणय का स्वय शिकार हो जाता है। गधर्व-सबध के बाद वह हस्तिनापुर लौट जाता है और शकुन्तला के राजधानी आने पर शापवश उसे पहचान नही पाता। शकुन्तला कश्यप के आश्रम मे चली जाती है और अन्त मे पुत्र सर्वदमन के साधन से दोनो

मिलते है। दु ख दोनों की अनीत को जैसे धो डालता है और पति-पत्नी पुत्र के साथ सुखी होते हैं। शाकुतल सर्वांगसुन्दर कृति है। 'विक्रमोर्वशी' की कथा ऋग्वेद के पुरूरवा-उर्वशी के सवाद से ली गई है। उर्वशी को देख राजा प्रेम में पागल हो उठता है। स्वकार्य के बाद इन्द्र की अनुमति से उर्वशी उसे कुछ काल के लिए मिलती है, पर केवल कुछ ही काल के लिए। प्रणय-सुखजनित अल्पकालिक मदनिद्रा तब सहसा टूट जाती है जब उर्वशी के पार्थिव निवास की अवधि पूरी हो जाती है। पुरूरवा का विलाप दिगन्त को व्याप्त कर देता है, चराचर को द्रवित, करुणा से ओतप्रोत। इस नाटक का भी अपना असाधारण स्थान है यद्यपि वह किसी भी दृष्टि से शाकुतल के समकक्ष नही रखा जा सकता। 'मालविकाग्निमित्र' कालिदास का तीसरा नाटक है, सम्भवत: यह आरम्भ काल में रचा गया। वह पुष्यमित्र शुगकालीन कथा का उद्घाटन करता है। पुष्यमित्र शुग मगध का ब्राह्मण सम्राट् था। जिसने १८५ ई०पू०के लगभग बृहद्रथ को मार मौर्यवश का अत किया और जो महाऋषि पतजलि का समकालीन था। 'मालविकाग्निमित्र' में उसी पुष्यमित्र के पुत्र और विदिशास्थित प्रातीय शासक अग्निमित्र तथा उसकी प्रेयसी मालविका का प्रणय निदर्शित है। उसमे गजब की शाति और रसो का परिपाक हुआ है। सगीत के सिद्धान्तो का भी उसमें अच्छा निरूपण है। शुगकालीन इतिहास पर इस नाटक द्वारा बड़ा प्रकाश पड़ा है। उसीमें पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र की राजसूय के अवसर पर अश्वरक्षा के क्रम में उन यवनो (ग्रीकों) का उल्लेख है जिन्हे उस शुग युवराज ने सीमा के सिन्धुतट पर पराभूत किया था।

कालिदास की भारती अपनी कला और रूप में अप्रतिम है। वह भारती अनेक अलकारो से मण्डित है, अनेक छन्दों द्वारा निरूपित। वैदर्भी वृत्ति का उपयोग जैसा उस महाकवि ने किया है वैसा अन्यत्र कही दृष्टिगोचर नही होता। उस कविकुलगुरु के वैयक्तिक जीवन के सबध में हमारा ज्ञान नही के बराबर है।

इसी काल में अथवा कुछ पहले चौथी सदी में कुछ बौद्धकाव्यों का भी प्रणयन हुआ। 'अवदानशतक', 'दिव्यावदान' और आर्यसूर की 'जातकमाला' सम्भवत: उस काल की रचनाएं है। पर उनका सम्यक् उल्लेख यहा प्रासगिक नही। बौद्ध मातृचेट की कृतियो का उल्लेख बौद्ध ग्रन्थो मे मिलता है। मातृगुप्त को भी अनुवृत्त असाधारण कवि माना जाता है जिसकी रचनाओं से प्रसन्न होकर विक्रमादित्य ने उसे कश्मीर का राज्य दे दिया था। राजतरगिणीकार कल्हण का यह उल्लेख सर्वथा स्वीकार करना कठिन है। कश्मीर कभी किसी मालव विक्रमादित्य के अधिकार में नही रहा। इससे इस वक्तव्य की सत्यता में सदेह होना स्वाभाविक है। फिर भी मातृगुप्त कवि और राजा दोनों हो सकता है। वह नाटक और नृत्यविषयक रचनाओ का कर्ता माना जाता है। वह भी सम्भवत: चौथी सदी ईस्वी का ही था। कुछ विद्वानो का मत है कि कल्हण द्वारा उल्लिखित 'महाकाव्य हयग्रीववध' का रचयिता भर्तृमेण्ठ इसी मातृगुप्त का दरबारी कवि अथवा कम

से कम सरक्षित मित्र था। मेण्ठ का उल्लेख अन्यत्र भी हुआ है। राजशेखर ने अपने 'बालरामायण' के आरम्भ मे उसे रामकथा सम्बन्धी कोई काव्य रचने का श्रेय दिया है। कल्हण ने मातृगुप्त और मेण्ठ के अतिरिक्त इनसे पूर्व के राजा तुजिन प्रथम द्वारा सरक्षित नाटककार चन्द्रक का भी उल्लेख किया है। परन्तु उसका ज्ञान हमे नही के बराबर है। हा यदि 'पद्यचूडामणि' के रचयिता बुद्धघोष प्रसिद्ध दार्शनिक बुद्धघोष ही हो तो उसका समय भी पाचवी सदी ही होना चाहिए।

यह चौथी-पाचवी सदी का गुप्तकाल इतिहास मे राजनीति, कला और साहित्य की दृष्टि से स्वर्णयुग माना जाता है। बहुत कुछ पेरिक्लियन, आगस्तन और एलिजाबेथन युगो की भाति। यह सर्वथा सही है। उस काल के उन साहित्यिक अग्रणियो का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है जिनमे प्रधान कालिदास थे। समुद्रगुप्त तो कवि था ही। एक मत के अनुसार तो चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य भी कवि था। 'सूक्ति-मुक्तावली' मे साहसाक को 'गन्धमादन' नामक काव्य का रचयिता माना गया है और साहसाक को कुछ लोग चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ही मानते है। गन्धमादन आज उपलब्ध नही। प्राचीन अनुवृत्तो और अनुश्रुतियो के अनुसार '(चन्द्रगुप्त) विक्रमादित्य' बडा कवि-नाटककार-पण्डित-सरक्षक था। उसके दरबार मे 'नवरत्न' थे। इन नवरत्नो मे कौन-कौन-से ऐतिहासिक व्यक्ति थे, यह कहना आज कठिन है। परन्तु उनमे से अनेक उसके समकालीन ज्ञात होते है। कालिदास के उसके समसामयिक होने मे तो कोई सन्देह होना ही नही चाहिए, प्रसिद्ध वैद्य धन्वन्तरि भी यदि तभी हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नही। प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर (५०५-८७ ई०) कुछ बाद हुआ और विख्यात गणितज्ञ आर्यभट (जन्म ४७६ ई०) भी कुछ ही बाद अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने लगा था। गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त निश्चय बाद का है, क्योकि उसका जन्म ५९८ मे हुआ, यद्यपि वह भी गुप्तपरिधि के ही अन्तर्गत माना जाता है। 'अमरकोश' का रचयिता अमरसिह सम्भवत चन्द्रगुप्त का समकालीन ही था। उसी गुप्तकालीन परिधि मे अनेक पुराणो की रचना हुई और 'मनुस्मृति' का अन्तिम सस्करण हुआ तथा 'याज्ञवल्क्यस्मृति' रची गई। परन्तु ललित काव्य न होने के कारण इन कृतियो का यहा उल्लेख अप्रासगिक है।

गुप्तकालीन कवियो मे कालिदास-परवर्ती कवि विशाखदत्त का उल्लेख यहा अनिवार्य है। वह सम्भवत गुप्तो का कोई सामन्त था। उसकी कृतिया जानी हुई है। एक तो प्रसिद्ध नाटक 'मुद्राराक्षस' ही है जिसमे चाणक्य की कूटनीति का उद्घाटन हुआ है। नाटक चन्द्रगुप्त मौर्य और चाणक्य के सम्मिलित प्रयास द्वारा नदवश के नाश के बाद आरभ होता है। इसमे नष्ट नन्दवश के आमात्य राक्षस और चन्द्रगुप्त के मन्त्री परमकूटनीतिज्ञ चाणक्य के परस्पर कूटसघर्ष की कथा है जिसमे चाणक्य विजयी होता है। राजनीतिक 'प्लाट' के रूप मे ससार का कोई नाटक इतना महत्वपूर्ण नही

जितना 'मुद्राराक्षस'। इसी विषय पर विशाखदत्त द्वारा रचित एक दूसरा नाटक 'प्रतिज्ञा-चाणक्य' भी गिना जाता है। कुछ साल हुए फ्रेंच पंडित सिल्वाँ लेवी ने विशाखदत्त के एक तीसरे नाटक 'देवी चद्रगुप्तम्' का हवाला दिया था। 'जूर्नाल एशियातिक' मे उस विद्वान् ने 'नाट्यदर्पण' मे उद्धृत इस नाटक के कुछ अश भी प्रकाशित किए। इस नाटक अथवा इसके विषय का उल्लेख अनेक स्थलो मे अनेक व्यक्तियो द्वारा स्वतत्र रूप में हुआ है जिससे उसके अस्तित्व मे तो किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकता। परन्तु नाटक समूचे रूप मे उपलब्ध नही है। उसकी कथा इस प्रकार है। समुद्रगुप्त के बाद उसके बडे बेटे रामगुप्त को साम्राज्य मिला। परन्तु वह दुर्बल था। उसकी दुर्बलता का लाभ उठाकर शकराज ने उसपर आक्रमण किया और सन्धि की शर्त मे गुप्त सम्राट् की रानी ध्रुवस्वामिनी को भी मागा जिसे देने को उसका पति रामगुप्त राजी हो गया। ध्रुवस्वामिनी की लाज की रक्षा रामगुप्त के अनुज ने ध्रुवदेवी के वेश मे शकराज को मारकर की। फिर उसने ध्रुवदेवी से विवाह किया और गुप्त साम्राज्य के स्वामी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस ध्रुवदेवी का पता गुप्त अभिलेखो से भी चलता है। उसीके पुत्र कुमारगुप्त और दामोदरगुप्त थे। नाटक की सत्यता सिद्ध है। प्रगट है कि विशाखदत्त का ऐतिहासिक ज्ञान अत्यन्त प्रौढ था और उसका ऐतिहासिक निरूपण सर्वथा सफल। 'मुद्राराक्षस' से चद्रगुप्त मौर्य के इतिहास पर प्रभूत प्रकाश पडा है और 'देवीचन्द्रगुप्तम्' ने तो समुद्रगुप्त द्वितीय और विक्रमादित्य के बीच एक रामगुप्त राजा ही ढूढ निकाला है। कहते है कि विशाखदत्त ने 'अभिसारिकावचित' नाम का एक उदयनपरक प्रणयकाव्य भी लिखा था पर वह प्राप्त नही है।

इसी गुप्तकाल की कृति 'कौमुदीमहोत्सव' मानी जाती है जिसकी रचयित्री एक नारी थी। इससे भी गुप्तकालीन राजनीति पर कुछ प्रकाश पडा है। काशीप्रसाद जायसवाल ने इसके चण्डसेन को गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त प्रथम माना है। उसमे अभिभावक चण्डसेन द्वारा राजपुत्र से पाटलिपुत्र का राज्य हडप लेने की बात लिखी है। छठी सदी ईस्वी मे सिहल के राजा (जिसे कालिदास का मित्र भी कहा जाता है) कुमारदास ने अपना 'जानकीहरण' लिखा। 'जानकीहरण' पर कालिदास का गहरा प्रभाव स्पष्ट है।

'मृच्छकटिक' नामक (प्रकरण) के रचयिता शूद्रक का समय निश्चय करना इस समय असंभव-सा है। उसके नाम के साथ अनेक अनुश्रुतिया, किम्वदन्तिया और ख्याते जुड़ गई हैं, जिनसे इतिहास को पृथक् करना आसान नही। फिर भी उसको इस काल के आसपास रखना अयुक्तियुक्त न होगा। 'मृच्छकटिक' नाना रसो और दृश्यो से युक्त प्रकरण है। इसमे नायक दरिद्र ब्राह्मण चारुदत्त है और ब्राह्मण ही चोर भी है जो चोरी प्रायः सिद्धांतपरक दृष्टि से करता है और जिसका यज्ञोपवीत ही सेध लगाने के लिए आवश्यक मानसूत्र है। इस नाटक की नायिका वेश्या कन्या है। गरज कि उदात्त नाटक के ठीक विपरीत

जाते है और अनेक नाटक, परन्तु उपलब्ध काव्य उसका एक ही है —'कप्फिणाभ्युदय' —जिसमे राजा कप्फिण के राज्य छोड बौद्ध भिक्षु हो जाने की कथा वर्णित है। रत्नाकर 'वागीश्वर' कहलाता था। उसने पचास सर्गों मे शैव महाकाव्य 'हरविजय' लिखा जिसकी भाषा मधुर और शैली परिमार्जित है। आनन्दवर्धन प्रसिद्ध समीक्षक हो गया है, परन्तु वह स्वय अच्छा कवि भी था। संस्कृत और प्राकृत दोनों मे उसने काव्यरचना की। उसका काव्य 'अर्जुनचरित' आज उपलब्ध नही। उसकी रचना 'देवी-शतक' चित्रकाव्य का सफल नमूना है।

नवी सदी मे अनेक महाकाव्य लिखे गए। जैनो ने भी रामायणादि की भांति अपने तीर्थंकरो के चरित काव्यबद्ध किए। जिनसेन और उसके शिष्य गुणभद्र के 'हरिवश' और 'आदिपुराण' इसी प्रकार के काव्य है। इसी प्रकार 'जटासिंहनन्दी' ने 'वरांगचरित', वादिराज और माणिक्यसूरि ने अपने-अपने 'यशोधरचरित', हरिश्चन्द्र ने 'धर्मशर्माभ्युदय' और अमरचन्द ने 'पद्मानन्दकाव्य' लिखा।

नाट्यप्रणयन भी साथ ही चलता रहा। सातवी सदी के आरम्भ का हर्ष बाणभट्ट का सरक्षक था। हर्ष (६०६-४८) ने स्वय 'नागानन्द' नाटक और 'प्रियदर्शिका' तथा 'रत्नावली' नाटिकाए रची। नागानद मे जीमूतवाहन का बौद्धचरित प्रदर्शित है। रत्नावली बडी प्रौढ कृति मानी जाती है। हर्ष के दरबार मे मातगदिवाकर, द्रोण, मयूर आदि अनेक कवि रहते थे परन्तु इन सबमे प्रधान सस्कृत का मुख्य शैलीकार और प्रसिद्ध 'हर्षचरित' तथा 'कादम्बरी' का प्रणेता बाणभट्ट था। वह लम्बे समस्तपदीय वाक्य लिखता था। 'कादम्बरी' तो एक मधुर 'रोमास' है। उसका 'चण्डीशतक' काफी विख्यात है। उसने महाभारत के आधार पर 'मुकुटताडित' नामक एक नाटक भी लिखा था जो अब प्राप्य नही है परन्तु जिसका उल्लेख नाट्यालकार की पुस्तको मे हुआ है। 'सूर्यशतक' का रचयिता कवि मयूर बाण का श्वशुर कहा जाता है।

हर्षवर्धन के पश्चात् कन्नौज की राजनीति पर कुछ काल के लिए पटाक्षेप हो गया परन्तु प्राय. सौ वर्ष के बाद जो वहा पर्दा उठता है तो अनेक साहित्यकार वहा प्रविष्ट दीखते है। आठवी सदी के आरम्भ में वहा का राजा यशोवर्मन् (लग० ७२५-७५०) हुआ जिसे कश्मीरराज ललितादित्य मुक्तापीडे ने परास्त किया। स्वय यशोवर्मन ने 'रामाभ्युदय' नाम का एक नाटक लिखा जिसके एकाध अश ही आज उपलब्ध है। परन्तु कन्नौज राज के दरबार के कवियो मे महान् और सारे भारतीय नाट्यक्षेत्र मे अग्रणी भवभूति था। भवभूति के तीन नाटक 'मालतीमाधव', 'उत्तररामचरित' और 'महावीरचरित' सस्कृत साहित्य की अक्षय निधि है। महावीरचरित अपूर्ण है। उत्तररामचरित मे राम के सीता-परित्याग की कथा है और मालतीमाधव मे मालती और माधव के प्रणय का। दोनों मे करुणरस का बाहुल्य है। करुणरस के प्रदर्शन मे भवभूति बेजोड़ है। मालती

माधव मे वह स्मरणीय स्थल है (१,८) जिसमे उसने अपने समीक्षकों को यह कहकर चुनौती दी है कि 'यह यत्न उनके प्रति नही है, वरन् उनके प्रति जो समान धर्मो के रूप मे कभी और कही प्रगट होगे, क्योकि पृथिवी विपुल है और काल की कोई अवधि नही। भवभूति की भाषा और शैली की शालीनता भी अन्यत्र अप्राप्य है।' 'गौडवहो' नामक प्राकृत काव्य का रचयिता वाक्पतिराज भी यशोवर्मन का ही दरबारी था।

उसी काल के कुछ और अनेक नाटक हे। उनमे एक 'कृत्यारावण' है जिसमे अद्भुत रस का प्रदर्शन हुआ है और दूसरा 'चलितराम'। कलचुरीराज मायुराज अथवा मात्रराज ने 'उदात्तराघव' लिखा। शृगार का प्रतिपादन करने वाली उस राजा की उदयन सम्बन्धी सुन्दर कृति 'तापसवत्सराज' आज भी उपलब्ध है। भट्टनारायण का 'वेणीसहार' असामान्य गतिमान और शक्तिम नाटक है। महाभारत के भीम, दु शासनादि के उसमे सुन्दर चित्र आए है और तीसरे अक के दृश्य जिनमे अश्वत्थामा और कर्ण के परस्पर वैमनस्य का वर्णन है, बडे सुन्दर है। त्रिलोचन के 'पार्थविजय' की भी नाटको मे अच्छी चर्चा हुई है। उस काल के अनेक नाटककारो मे कालजराज भीमट का नाम उल्लेखनीय है। वह पाच नाटको का रचयिता कहा जाता है। इनमे प्रधान 'स्वप्नदशानन' है।

मुरारि और राजशेखर के समय से नाटको मे एक नई दिशा का आरम्भ हुआ—महाभारत आदि की कहानिया लेकर उन्हे प्रणय-शृगार का रूप देना। मुरारि का 'अनर्घराघव' उस दिशा मे बडा सफल हुआ। इसी प्रकार का नाटक 'आश्चर्यचूडामणि' दाक्षिणात्य शक्तिभद्र का है। राजशेखर प्रतीहार राजा महेन्द्रपाल प्रथम (लग० ८८५-९१०) का राजकवि था। उसका 'काव्यमीमासा' समीक्षा का सुन्दर ग्रथ है। उसने 'बालरामायण' और अपूर्ण 'बालभारत' भी लिखा और 'विद्धशालभजिका नाटिका' भी प्राकृत मे लिखी। उसकी 'कर्पूरमजरी' भी सुन्दर 'सट्टक' (एक प्रकार का ड्रामा) है। राजशेखर संस्कृत साहित्य का दिग्गज काव्य-मीमासक हो गया है। उसका आदर प्रतिहार और कलचुरी राजाओ ने समान रूप से किया।

हास्य के क्षेत्र मे प्रहसन और भाड प्रकार के नाटको का भी सस्कृत मे सृजन हुआ। काची के पल्लवराज महेन्द्रवर्मन प्रथम (सातवी सदी का आरम्भ) ने प्रहसन का रूप अपने 'मत्तविलास' मे रखा। 'भगवदज्जुकीय' भी उसीकी कृति माना जाता है। मत्तविलास मे बौद्धो का मज़ाक उडाया गया है। काफी प्राचीन चार प्रधान 'भाण' निम्नलिखित है—वररुचिकृत 'उभयाभिसारिका' ईश्वरदत्तरचित 'धूर्त विटसम्वाद', श्यामिलक का 'पादताडितक' और शूद्रक का 'पद्मप्राभृतक'।

यहां अब पीछे छोडे काव्यो का सूत्र फिर पकड लेना उचित होगा। नवी सदी मे पालराज हाववर्ष का सरक्षित कवि अभिनन्द हुआ। उसकी कृतिया तो उपलब्ध नही है परन्तु 'रामचरित' के प्राप्याशो से उसकी काव्य कुशलता का पूरा प्रमाण मिल जाता है।

राजशेखर ने इसी काल मे अपना महाकाव्य 'हरविलास' लिखा था जो अप्राप्य है। पचमहाकाव्यो मे से अन्तिम 'नैपधीयचरित' का रचयिता श्रीहर्ष कन्नौज के राजा जयचन्द (११७०-११९४) का राजकवि था। उसका महाकाव्य बाईस सर्गों मे विभक्त है जिसमे नल-दमयन्ती की कथा वर्णित है। काव्य सुन्दर है परन्तु उसमे अलकारण का उपयोग अधिक हुआ है। श्रीहर्ष दार्शनिक और तार्किक भी था। तर्क सबधी उसका ग्रथ 'खण्डनखण्डखाद्य' प्रसिद्ध है।

सस्कृत गद्य का आरम्भ तो जैसा ऊपर कहा जा चुका है, ब्राह्मणों मे ही हो गया था, परन्तु रोमास आदि गद्य-काव्यों का लिखना उचित रूप से सातवी सदी मे आरम्भ हुआ। बाण ने अपने 'हर्षचरित' मे भट्टार हरिचन्द्र के 'गद्यबन्ध' का उल्लेख किया है परन्तु वस्तुत वही सुन्दर गद्य काव्यकार पहला हुआ। वैसे शैली के सौन्दर्य मे तो गद्य-काव्य का सृजन दूसरी सदी ईस्वी मे ही शुरू हो गया था जैसा शकराज रुद्रदामन के गिरनार वाले लेख (१५० ई०) से प्रमाणित है परन्तु ग्रन्थ के रूप मे बाण की ही कृतिया पहले आई। हम उनके ग्रथो की चर्चा ऊपर कर चुके है। उसके दोनो ग्रन्थ 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' अपूर्ण है। दूसरे का उत्तरार्ध उसके पुत्र पुलिन्द भूषण भट्ट ने लिखा, परन्तु शैली दोनो की प्राय. एक है। बाण श्लेष का अद्भुत लेखक है। उसने अतीव लम्बे समस्त-पदीय वाक्यों का प्रयोग किया है परन्तु उसकी भाषा मे असाधारण प्रवाह है। 'हर्षचरित' मे उसने अपने सरक्षक हर्षवर्द्धन की जीवनी लिखी और 'कादम्बरी' मे कल्पित रोमास, जिसमे प्रणय का अमित विलास प्रस्तुत है और उसका निर्वाह मरणान्तर तक होता है। अपने नाम के अनुसार ही 'कादम्बरी' का प्रभाव वारुणी का प्रभाव है, अभिराम और मादक। सुबन्धु ने बाण का अनुकरण किया। उसने भी उसीके श्लिष्ट पदो मे अपना रोमास 'वासवदत्ता' लिखा। कहना कठिन है कि एक और सुबन्धु का नाम मिलता है वह यही है या इससे भिन्न। धनपाटन (दसवी सदी) की 'तिलकमजरी' की भी इस क्षेत्र मे बड़ी ख्याति है। इसी परपरा मे पादलिप्त सूरि की 'तरगवती' रुद्र की 'त्रैलोक्यसुन्दरी', 'त्रिभुवनमाणिक्यचरित', 'नर्मदासुन्दरी', 'विलासवती' आदि भी है।

परन्तु इस क्षेत्र का बाणवत् महान् कृतिकार दण्डी हुआ। जो अपने गद्य काव्यो के बल पर ही महाकवि कहलाया। उसके प्रपितामह दामोदर ने भी सस्कृत मे 'गन्धमादन' और प्राकृत मे अनेक ग्रन्थ लिखे थे। काव्यालकार पर भी सभवत: उसने एक ग्रन्थ लिखा, परन्तु उसका प्रपौत्र दडी प्रत्येक दिशा मे उससे बढ गया। अपनी कविताओं के अतिरिक्त वह अपने समीक्षाशास्त्र द्वारा विशेष यशस्वी हुआ। उसका 'काव्यादर्श' काव्यालोचन का असामान्य ग्रन्थ है। उसका 'दडीदिविसन्धान' भी काफी जाना हुआ है। परतु उसके 'दशकुमारचरित' ने ही उसे कवि की प्रतिष्ठा दी। उसमे एक राजपुत्र और उसके नौ मंत्रिपुत्र साथियो की भ्रमण-कथा लिखी है। उसने आत्मकथापरक और कुलपरिचायक

'अवन्तिसुन्दरी' नामक गद्य-काव्य भी शुरू किया, परन्तु वह अपूर्ण ही रह गया। दडी की शैली अनेक लोगो को बाण की शैली से सुन्दर लगती है। उसमे पद-पद पर बाण की भाति श्लेष नही है और भाषा मे ओज और प्रवाह अमित है।

वैदिक काल से ही गद्य-पद्य की एक मिश्रित शैली चली आती थी जिसका कालातर में 'चम्पू' नाम से विकास हुआ। त्रिविक्रम (लग० ६१५) के 'नलचम्पू' अथवा 'दमयन्ती-कथा' इसी चम्पू शैली मे लिखा है। उस साहित्यकार ने सभवतः एक 'मदालसाचम्पू' भी लिखा था जो अब उपलब्ध नही है। जैन साहित्यकार सोमदेव ने दसवी सदी मे अपना प्रसिद्ध 'यशस्तिलकचम्पू' रचा। ग्रथ अन्त मे आचार और नीतिपरक हो जाता है। उसी प्रकार हरिचन्द्र ने भी 'जीवन्धरचम्पू' लिखा। परन्तु सबसे सुन्दर चम्पू प्रसिद्ध राजा भोज (ग्यारहवी सदी के आरभ मे) ने लिखा जो 'रामायणचम्पू' के नाम से आज भी बड़े चाव से पढा जाता है। राजा भोज द्वारा प्रणीत ग्रन्थो की एक खासी तालिका है जिसमे सभी प्रकार और दिशा के ग्रन्थ गिनाए जाते है। फिर भी यह सच है कि भोज केवल साहित्यिको का सरक्षक ही नही था, स्वय साहित्यकार और कवि भी था और अपनी अटूट लडाइयो के बावजूद काव्य-विनोद करता रहता था। उसने धारा मे सस्कृत का एक कालेज खोला था। वस्तुत उस काल एशिया मे अन्यत्र भी शोध सबधी कालेज खोले जा रहे थे जिनमे बगदाद का तो बडा प्रसिद्ध हुआ। भोज का ही समकालीन महमूद गजनी था जिसके दरबार मे ससार के सबसे बडे मेधावी थे, उदाहरणतः अलउ-तबी, अल-बेरूनी, फरिश्ता। भोज से कुछ पूर्व कोकण के सोढल ने चम्पू-परपरा मे ही अपनी 'उदयसुन्दरीकथा' लिखी थी। नवी-दसवी सदी मे ऐतिहासिक अथवा जीवनचरित काव्यो का आरम्भ होता है। यशोवर्मन और भवभूति के समकालीन वाक्पतिराज ने प्राकृत मे 'गौडवहो' लिखा। समीक्षक शकक ने किसी कश्मीरी युद्ध पर 'भुवनाभ्युदय' लिखा जो अप्राप्य है। 'नवसाहसाकचरित' पद्मगुप्त (परिमल) का राजा भोज के पिता सिन्धुराज नवसाहसाक या सिन्धुल पर लिखा पहला वास्तविक ऐतिहासिक वीर-काव्य है। यह लगभग १००० ई० के लिखा गया। कल्यान के चालुक्य विक्रमादित्य पर कश्मीरी कवि बिल्हण ने अपना 'विक्रमाकदेवचरित' (११वी सदी) लिखा। उसने अपने नाटक 'कर्णसुन्दरी' मे भी ऐतिहासिक सामग्री का ही उपयोग किया। प्रणय-प्रसग की कविताओ के लिए यह कवि प्रभूत विख्यात है। दूसरा कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र (११वीं सदी) ने छोटे-बडे अनेको काव्य, व्यग्य, नाटक, नीति काव्य आदि लिखे। उसकी रचनाओ की संख्या पचास से भी ऊपर है। उसकी 'राजावली' का उपयोग कल्हण ने भी अपनी 'राजतरगिणी' की सामग्री के अर्थ किया था। कल्हण सस्कृत ऐतिहासिक काव्य का सबसे महान् प्रणेता है। उसकी 'राजतरगिणी' कश्मीर के इतिहास पर अत्यन्त महत्व का ग्रन्थ है जिसके लिए सामग्री उसने क्षेमेन्द्र के अतिरिक्त

अभिलेखों और राजकीय रेकार्डों से भी ली थी। जोनराज ने उसी इतिहास के क्रम में अपनी 'द्वितीय राजतरंगिणी' लिखी। उसमें श्रीवरप्राज्य और शुकक्रामीयोग थे। कल्हण की राजतरंगिणी बारहवीं सदी के मध्य लिखी गई थी, जोनराज की मुस्लिम काल में समाप्त हुई। बारहवीं सदी में ही पृथ्वीराजविजय लिखा गया। तंजौर के विरूपाक्ष ने प्रायः तभी 'चोलचम्पू' लिखा जिसका आधार चोल शासन था।

रूपकों-उपरूपकों का आरम्भ ड्रामा साहित्य में चन्देलराज कीर्तिवर्मन (११वीं सदी) के आश्रित कवि कृष्णमिश्र ने किया। इस वर्ग के नाटक-साहित्य की सुंदरतम रचना जयदेव का 'गीत गोविन्द' है। जयदेव उड़ीसा का था। परंतु बंगाल के सेन वंशीय अन्तिम नरेश लक्ष्मणसेन (११७५-१२००) का राजकवि था। गीतगोविन्द राधा और कृष्ण के प्रणय, विरह और संयोग का काव्य है। संस्कृत साहित्य में इतना मधुर और संगीतपरक काव्य और दूसरा नहीं। जयदेव ने 'प्रसन्नराघव' नाम का एक नाटक और अलंकार ग्रंथ भी लिखा। उसी दरबार में कवि धोयिक भी था जिसने मेघदूत के अनुकरण में पवनदूत लिखा। स्वयं लक्ष्मणसेन ने पिता के प्रारम्भ किए 'अद्भुतसागर' को समाप्त किया।

कुछ काव्य व्याकरण को लेकर श्लेष में लिखे गए। भट्टि ने अपना 'भट्टिकाव्य' (रावणवध) इसी शैली में लिखा। इस प्रकार के काव्यों को 'द्वयाश्रय' कहते थे। भूमक ने भी अपना व्याकरण ग्रन्थ 'रावणार्जुनीय' इसी पद्धति में लिखा जिसमें रावण और कार्तवीर्यार्जुन (सहस्रबाहु) का युद्ध भी साथ ही साथ निरूपित हुआ। उसी परपरा में राष्ट्रकूटराज कृष्ण तृतीय (लग० ६५०) के राजकवि ने अपने संरक्षक का चरित लिखते हुए अपना व्याकरण ग्रन्थ 'कविरहस्य' रचा। इसी प्रकार हेमचन्द्र (१०८८-११७२) ने अपने 'द्वयाश्रयकाव्य' को संस्कृत और प्राकृत व्याकरण का वाहक बनाया। उसका दूसरा नाम 'कुमारपाल प्रतिबोध' था। इस प्रकार का काव्य व्याकरण, इतिहास और काव्य तीनों का वाहन होता था। उदाहरण तो ऐसे काव्यों के भी हैं जो अपना विषय प्रतिपादित करते हुए रामायण-महाभारत की कथाएं भी साथ कहते जाएं। कविराज का 'राघवपांडवीय' इसी प्रकार का एक काव्य है। ग्यारहवीं सदी के अंत में सन्ध्याकरनन्दी ने इस प्रकार का अपना काव्य 'रामचरित' लिखा जिसमें रामकथा के साथ ही बंगाल के नृपति रामपाल का जीवन चरित भी अंकित है। लगभग ३२ काव्य ऐसे हैं जिनमें तीन अर्थ की कथाएं एक साथ कही गई हैं। जैन पण्डित हेमचन्द्र के लिए तो अनुश्रुति है कि उसने सात-सात कहानियों का एक ही काव्य (सप्तसंधान) लिखा। परन्तु कहना न होगा कि इस प्रकार का काव्यांकन काव्य को गुणहीन कर देता है। इस शैली को चित्रकाव्य कहते हैं।

एक प्रकार के काव्य जो सौ श्लोकों में सम्पन्न होते थे 'शतक' कहलाते थे। ऊपर मयूर के 'सूर्यशतक' और बाण के 'चण्डीशतक' का उल्लेख किया जा चुका है। सातवीं सदी के आसपास के भर्तृहरि ने तीन शतक लिखे—'शृङ्गारशतक', 'वैराग्यशतक' और

'नीतिशतक'। कश्मीरी कवि अमरूक ने 'अमरूशतक' लिखा जिसकी एक-एक पक्ति प्रणय का अभिराम वर्णन करती है। सातवी सदी से ही, सम्भवत उसने अपना शतक लिखा, वह लोकप्रिय हो गया और उसके श्लोक निरन्तर उद्धृत किए जाते रहे है। बिल्हण ने अपनी 'चौरपचाशिका' मे पचास पक्तियो मे पचास अभिराम अनुभूतियो का वर्णन किया है। जयदेवकालीन गोवर्धन की 'आर्यासप्तशती' मे ७०० श्लोक है। इसी प्रकार भर्तृहरि के अतिरिक्त घटकर्पर, वररुचि और वेतालभट्ट के क्रमश. 'नीतिसार' 'नीतिरत्न' और 'नीतिप्रदीप' है। इस प्रकार के अनेक अन्योपदेश काव्य कवियों ने लिखे। बल्लट (कश्मीरी) (नवी सदी) इनमे मुख्य था। क्षेमेन्द्र की भी अनेक इस प्रकार की रचनाए हैं। साथ ही उसने व्यग्य भी काफी लिखा। 'कलाविलास' मे उसने वैद्यो, सगीतज्ञों, वारागनाओ का खूब मजाक उडाया है। उसके 'देशोपदेश' और 'नर्ममाला' मे कायस्थो, गणको, लेखको आदि पर प्रशस्त व्यग्य है। उसकी 'समयमातृका' मे वारागनाओ को अपना पेशा संभालने की अनुभव-जन्य सलाह दी गई है। इसका आधार अधिकतर 'कुट्टनिमत' है जिसे कश्मीरनरेश जयापीड के मत्री दामोदर गुप्त ने रचा था। इसी प्रकार जल्हण ने अपने 'मुग्धोपदेश' में वारागनाओ और उनके कृपापात्रो पर उत्कट व्यग्य किए। सत्रहवी सदी के दीक्षित ने 'कलिविडम्बन' लिखकर वैद्यो, अनाडी शिक्षको, ज्योतिषियो आदि का मजाक उडाया। उसका 'सभारजन' भी इसी प्रकार का काव्य है। तजौर के कुट्टि कवि (वाछेश्वर यन्वन्) ने 'महिषशतक' मे तजौर के ह्रासशील मराठा दरबार पर व्यग्य किया। इस प्रकार की कविताए 'चाटू' कहलाती है। प्रशस्तिवाचक होती है। चाटुकारिता से भरी ये अधिकतर प्रेमियो और सरक्षक राजाओ तथा श्रीमानो के प्रति कही गई हैं। सुभापितों का भी सस्कृत मे बाहुल्य है। ये कविकृतियो के संग्रह हैं। अनेक कवियो की सूक्तियां अनेक प्रकार से इनमे सगृहीत है। इनमे प्राचीनतम और विषयानुसार सगृहीत सुभाषित 'कवीन्द्रवचनसमुच्चय' है। इसमे विषयो के कवियो के नाम भी दिए हुए है। इसके अतिरिक्त कश्मीरी वल्लभदेव की 'सुभाषितावली' बगाली श्रीधरदास (१२०५) की 'सदुक्ति कर्णामृत', वैद्यभानु पण्डित रचित 'शार्गंधर पद्धति' देवगिरि के यादवराज, कृष्ण के महावत कश्मीरी जल्हण कृत 'सूक्तिमुक्तावली' (१२५७), १४वी सदी के कालिगराय सूर्य का 'सूक्ति रत्नहार' आदि बडी उपादेय है। सैकडो काव्य-सग्रह इस प्रकार के मुस्लिम-शासन काल मे भी बने जिनमे प्रधान 'सुभाषितरत्न-भाण्डागार' है। इन्ही सुभापितो से कवियो के अतिरिक्त ४० कवयित्रियो का पता चला है। इनमे सबसे महत्व की पुलकेशिन द्वितीय की पुत्रवधू और चन्द्रादित्य की रानी विज्जिका (विजयाका—७वी सदी) थी।

कुछ नारी कवियो ने महाकाव्य और चम्पू आदि भी स्वतन्त्र रूप से लिखे हैं। कम्पराय (१४वी सदी) की रानी ने 'मदुरा विजय' मे अपने पति की विजयो का बखान

किया। तिरूमलाम्बा ने राजा अच्युतराय (१६वी सदी) के वादम्बिका के साथ विवाह पर एक चम्पू लिखा। रामभद्राम्बा ने अपने पति तञ्जोर के राजा रघुनाथ (१७वीं सदी) के जीवन पर एक महाकाव्य लिखा। इसी प्रकार तञ्जोर दरबार की मधुरवाणी नाम्नी कवयित्री ने रामायण नामक एक काव्य लिखा।

स्तोत्रो (भक्तिकाव्यो) का भडार भी सस्कृत मे बडा है। अनेक भक्त कवियो ने अपने इष्टदेव की प्रशसा और प्रार्थना मे स्तोत्र लिखे। इनमे अनेक तो अत्यन्त हृदयग्राही है। उनकी परपरा तो बहुत प्राचीन है, वैदिक मत्रो आदि की और भगवद्गीता के ग्यारहवे अध्याय की है। ये स्तुतिया अधिकतर शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य आदि की अर्चना में गाई गई हे। प्राचीनता मे बौद्ध मातृचेट का 'शतपंचाशतिक' अधिक प्रसिद्ध है। मयूर ने 'सूर्यशतक' और बाण ने 'चण्डीशतक' लिखा। पुष्पदन्त का 'शिवमहिम्नस्तव', दण्डी, हलायुध, बिल्हण, मल्हण और मलयराज की स्तुतिया एकत्र 'शिवपचाशत्टवी', भट्टनारायण की 'स्तवचिन्तामणि', उत्पलदेव (१०वी सदी) की 'शिवस्तोत्रावली', कुलशेखर की 'मुकुन्दमाला', यामुनाचार्य का 'स्तोत्ररत्न' श्री वत्साक की 'पचस्टवी', 'सौन्दर्यलहरी','देवी-पचष्टवी' आदि अनेक स्तोत्र है जिनकी शैली बडी मधुर और गेय है। कृष्ण के ऊपर भी प्रभूत स्तोत्र साहित्य रचा गया इनमे लीला शुक बिल्वमगल (दसवी-ग्यारहवी सदी) का 'कृष्णकर्णामृत' तो बालकृष्ण पर अत्यन्त मधुर रचना है। कुछ आश्चर्य नही यदि सूरदास की कृतियो पर इसका प्रभाव पडा हो।

कथा-साहित्य का आरम्भ सम्भवत' भारत में ही हुआ। वेदों में भी अनेक आख्यायिकाए है। फिर पुराणों की कितनी ही कथाए तो ऋग्वेद से भी प्राचीन मानी जाती है। महाभारत में भी सैकडो कथाए सगृहीत हैं। 'पंचतन्त्र' का अनुवाद अरबी मे सदियों पहले हुआ। 'तन्त्राख्यायिका' और 'हितोपदेश' भी कहानियो के आकर हैं। गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' पैशाची में दूसरी सदी ईस्वी में ही लिखी जा चुकी थी। इसका मूल तो नष्ट हो गया परन्तु सातवी सदी के गगराज दुर्विनीत ने इसका सस्कृत सस्करण प्रस्तुत कर दिया। कश्मीर के राजा अनन्त की रानी सूर्यमती के मनोरंजन के लिए सोमदेव द्वारा प्रस्तुत (१०६३-८१)'कथासरित्सागर' कहानियों की खान है। अन्य कथा-सग्रह हैं—'शुकसप्तति', 'सिंहासनद्वात्रिंशिका', शिवदासकृत 'कथार्णव', राजशेखर का 'प्रबन्धकोश' मेरुतुंग की 'प्रबन्ध-चिन्तामणि' विद्यापति की 'पुरुषपरीक्षा' बौद्धो की 'जातकमाला' आदि।

पिछले काल में भी काफी काव्यरचना हुई। सोलहवीं सदी के शाहजहांकालीन पडितराज जगन्नाथ अपने ज्ञान और काव्य-शक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। इधर की सदियों मे उनका-सा कवि और रसमर्मज्ञ दूसरा नहीं हुआ। उनकी 'गंगालहरी' माधुर्य और शब्दलालित्य में संस्कृत साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। 'भामिनीविलास' भी बड़ा मधुर काव्य है।

इस काल अथवा कुछ पूर्व से ही फारसी कृतियो के सस्कृत अनुवाद शुरू हो गए थे। पन्द्रहवी सदी मे ही श्रीवर ने यूसुफ और जुलेखा की कहानी 'कथा कोथुक' मे लिख डाली थी। 'अकबरनामा' का सस्कृत रूपान्तर भी 'अकबरनाम' नाम से प्रस्तुत हुआ। फारसी से एक और कहानीग्रथ का अनुवाद 'सर्वदेशवृत्तान्त सग्रह' है। अब्दुल रहमान ने 'अपभ्रंशदूतकाव्य' और 'सदेशवाहक' लिखा। अकबरशाह ने 'शृगारमजरी' रचा और लक्ष्मीपति ने सैयद-भाइयो मे से एक पर 'अबदुल्ला-चरित' प्रस्तुत किया। इसी प्रकार बाइबिल के दाऊदपुत्र सुलेमान (सालोमन) पर (अनुवाद रूप मे) कल्याणमल्ल ने 'सुलेमच्चरित्र' की रचना की।

: ४ :

पाली

वस्तुत पाली (पालि) भी प्राकृत ही है, बुद्धकालीन मगध की प्राकृत। बौद्धो का साहित्य विशेषत· पालि-प्राकृत मे ही लिखा गया यद्यपि सस्कृत भी, विशेषत उत्तर काल मे, उनकी व्याख्या और चिन्तन का माध्यम बनी। साधारणतः हीनयानियो का साहित्य पाली मे है। और महायानियो का सस्कृत मे। कुछ लोगो का मत है कि पाली गौतम बुद्ध के पितृस्थान की भाषा न थी बल्कि अनेक प्राकृत भाषाओ के सम्मिश्रण से बनी थी जो पहले बुद्ध के उपदेशों की सज्ञा बनी फिर उनके साहित्य की। आज उसका साहित्य विशेषत· सिघल, बर्मा और स्याम मे प्रचलित है।

बौद्धो के सिद्धान्त अधिकतर त्रिपिटको मे सगृहीत है। त्रिपिटक-साहित्य प्राय समूची मात्रा मे आज हमे उपलब्ध है। उसके तीन भाग है—विनयपिटक, सुत्तपिटक, और अभिधम्मपिटक। इनमे उपदेशो, गीतो, आख्यानो, सघ के विधानो और दार्शनिक तत्वचेतना का सग्रह है। इनके अश विविधकाल मे सगृहीत होते गए। उनको एकत्र करने का पहला प्रयास बुद्ध की मृत्यु के शीघ्र ही बाद राजगृह मे हुआ। दूसरा १०० वर्ष बाद सघ मे विधान और सिद्धान्त सम्बन्धी विवाद उपस्थित होने पर प्रस्तुत हुआ। तीसरा संग्रह अशोक द्वारा आहूत पाटलिपुत्र की तीसरी बौद्ध सगीति मे हुआ। उसी काल तीसरी सगीति के प्रधान तिस्सामग्गलिपुत्त ने विरोधियो के उत्तर मे अपना 'कथावस्तु' रचा। कथावस्तु भी त्रिपिटकों मे ही प्राय. मान लिया गया है और बौद्ध धार्मिक सिद्धान्तो का एक अग बन गया है।

बौद्ध धार्मिक सिद्धान्तो के अतिरिक्त अन्य साहित्य भी पाली भाषा मे लिखा गया। 'नेत्तिप्पकरण' और 'पेटकापदेश' भाषा और शैली सम्बन्धी ग्रन्थ है। पाली का एक विशिष्ट ग्रन्थ 'मिलिन्दपन्ह' है जिसे साकल (स्यालकोट) के ग्रीक राजा मिलिन्द (मेनान्दर) के दार्शनिक प्रश्नो के उत्तर मे उसके गुरु नागसेन ने प्रस्तुत किया। इस प्रश्नोत्तर

के परिणामस्वरूप यवनराज मेनान्दर बौद्ध हो गया। इस ग्रंथ की-सी साहित्यिक प्रवीणता पाली के अन्य ग्रन्थो मे नही मिलती। मेनान्दर का समय १५० ई०पू० के लगभग माना जाता है। जातक कहानियो का सग्रह पाली साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी कथाए ५५० के लगभग है और बुद्ध के (बोधिसत्व के रूप मे) जन्म से सम्बन्ध रखती है। भारतीय सभ्यता के इतिहास मे इनका बहुत ऊचा स्थान है। ईसा पूर्व तृतीय शती से पाचवी शती ईस्वी तक का भारतीय जीवन इनमे प्रतिबिम्बित है।

बौद्ध साहित्य की अनेक टीकाए और भाष्य पाली मे ही लिखे गए। बुद्धदत्त, बुद्धघोष और धर्मपाल ने अपनी साहित्यिक चर्या द्वारा पाली साहित्य का भडार भरा। बुद्धदत्त ने अपने 'विनय-विनिश्चय' मे विनयपिटक को सक्षिप्त किया। बुद्धघोष ने त्रिपिटको पर अपनी अनेक टीकाओ के अतिरिक्त 'विसुद्धिमग्ग' नाम का अनुपम ग्रथ लिखा। धम्मपाल की 'विमानवत्थु' और 'थेर-थेरिगाथा' पर टीकाएं वस्तुतः कथाओ और आख्यानो के सग्रह है। सिंहल के प्रसिद्ध धार्मिक इतिहास दीपवंस और महावस भी पाली मे ही है, जो बौद्ध धर्म के इतिहास पर प्रभूत प्रकाश डालते है। इनके अतिरिक्त 'चूलवस', 'दाथावस', 'सासनवस' आदि भी इसी वस-साहित्य के अंग है। पाली मे महाकाव्य तो उपलब्ध नही परन्तु कुछ छदोबद्ध कृतिया फिर भी उपलब्ध हैं। इनमे 'जिनचरित' 'तेलकटाहगाथा' 'पजमधु' और 'सद्धम्मोपायन' सस्कृत की पद्धति के अनुसार ही कच्चायन और मोग्गलायन ने भी पाली व्याकरण का निर्माण किया। 'सद्दनीति' नाम का पाली व्याकरण भी उसी काल रचा गया। मोग्गलायन ने भी पाली व्याकरण का निर्माण किया। मोग्गलायन वैयाकरण होने के अतिरिक्त कोषकार भी थे। उनकी 'अभिधान-प्पदीपिका' इस दिशा में पर्याप्त प्रसिद्ध है। 'वुत्तोदय' और 'छंदोविचिति' मे छंदशास्त्र का अध्ययन हुआ और 'सुबोधालंकार' मे अलकार शास्त्र का। परन्तु निस्संदेह संस्कृत अनुशीलन का अनुयायी पाली साहित्य इस क्षेत्र मे मूल की तुलना मे सर्वथा नगण्य है।

: ५ :

संस्कृत में बौद्ध साहित्य

सस्कृत मे प्रस्तुत बौद्धों का प्रभूत साहित्य मूल मे नष्ट हो गया है और आज उसके कुछ अनुवाद चीनी और तिब्बती भाषाओं में ही उपलब्ध है। उस सस्कृत की शैली पाली और प्राकृत मिश्रित है। उसमे माधुर्य और प्रवाह है।

धार्मिक चिन्तन का पर्याप्त साहित्य संस्कृत मे निर्मित हुआ। बुद्ध को लोकोत्तर मानने वाला और उनके जीवन के चमत्कारो का उल्लेख करने वाला (विनयपिटक का) 'महावस्तु' संस्कृत मे ही था। महाकाव्य के रूप मे बुद्ध का जीवन 'ललितविस्तर'

में छदोबद्ध हुआ। वस्तुत यह ग्रन्थ गद्य और पद्य दोनो मे प्रस्तुत है। सभवतः चीनी मे इसका पहला अनुवाद ३०८ ई० मे हुआ और तिब्बती मे ६वी सदी मे। सूत्रो की मर्यादा महायान शाखा के बौद्धो मे बढी है। इनकी रचना भी सस्कृत मे ही हुई। नैपाल मे विशेष आदृत नवधारणीयो मे इस सस्कृत मे लिखी 'अष्टसाहास्निका', 'प्रज्ञापारमिता', 'सद्धर्मपुण्डरीका', 'लकावतार', 'सुवर्णप्रभास' की गणना है। इन सूत्रो मे 'प्रज्ञापारमिता' विशेष महत्व की है। बौद्ध सस्कृति के महान् कवियो मे नागार्जुन, आर्यदेव, अश्वमेघ और कुमारलब्ध (कुमारलाभ) हुए। अश्वमेघ तो सस्कृत का महाकाव्यकार हो गया है। इनमे से पहले दो महायान के शून्यवाद के प्रवर्तक थे। नागार्जुन ने उसी सिद्धान्त की व्याख्या में 'मध्यमक शास्त्र' रचा। नागार्जुन के दो और ग्रन्थ 'युक्तिषष्टिका' और 'शून्यतासप्तति' पर्याप्त प्रसिद्ध है। नागार्जुन के शिष्य आर्यदेव ने 'चतु शतक' की रचना की। महायान सम्प्रदाय का दूसरा दिग्गज दार्शनिक वसुबन्धु असग था जिसने 'अभि-धर्मकोष' और उसके ऊपर एक सक्षिप्त भाष्य लिखा। यशोमित्र ने 'अभिधर्म कोष-व्याख्या' नाम की टीका रची जिसका ज्ञान-विस्तार अपूर्व है।

दिङ्नाग बौद्ध तर्कशास्त्र का प्रतिष्ठाता था। बौद्ध दर्शन मे उसकी ऊचाई के नाम कम है। वह गुप्तकाल मे हुआ, सम्भवत चौथी शती ईस्वी मे और 'न्यायप्रवेश' तथा 'प्रमाण-समुच्चय' लिखकर उसने तर्कशास्त्र की नीव डाली। दिङ्नाग की साहित्यिक सक्रियता केवल बौद्ध दर्शन तक ही सीमित न थी। कुछ विद्वानो के मत से 'कुन्दमाला' का भी रचयिता वही है। पण्डितो ने उसको कालिदास का समकालीन भयावह समीक्षक भी माना है। सातवी सदी के विचक्षण बौद्ध दार्शनिको मे महान् धर्मकीर्ति हुआ जिसके 'प्रमाणवार्तिक' और 'न्यायबिन्दु' बौद्ध तर्कशास्त्र के अनुपम स्तम्भ हैं। इस दिशा के महापण्डितो मे ही 'बोधिचर्यावतार' के रचयिता शान्तिदेव और तत्वसग्रह के प्रणेता शान्तरक्षित की भी गणना है।

अश्वघोष का नाम ऊपर आ चुका है। उसने 'बुद्धचरित' और 'सौन्दरानन्द' नाम के काव्य लिखे। मध्य एशिया से मिले कुछ नाटकाशो से विदित होता है कि अश्वघोष नाटककार भी था। 'शारिपुत्रप्रकरण' उसका एक प्रकरण-नाटक था जिसके अश मिले है।

जातको का उल्लेख पहले किया जा चुका है। इन पाली जातको की शैली मे ही सस्कृत मे 'अवदान' लिखे गए। 'दिव्यावदान' इसी प्रकार का बौद्ध महापुरुषो के महान् कार्यों का सग्रह है। आर्यसूर ने सस्कृत मे 'जातकमाला' और कुमारलात ने 'कल्पना-मण्डितिका' लिखी। अवदानो मे सबसे प्राचीन 'अवदानशतक' है जो तीसरी सदी ईस्वी मे ही चीनी भाषा में अनूदित हो चुका था। स्वय 'दिव्यावदान' जिसमे सहज गद्य और अलकृत काव्य दोनो का सुन्दर एकत्र सग्रह है, ४०० ई० के पहले प्रस्तुत हो चुका था। अवदानो की परम्परा मे ही 'कल्पद्रुमावदानमाला', 'रत्नावदानमाला', 'भद्रकल्पना-

वदान', 'विचित्रकारिणकावदान' और 'अवदानकल्पलता' लिखे गए। इनमें से अंतिम प्रसिद्ध कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने १०५२ ई० में लिखा। क्षेमेन्द्र के अवदानों में उसके पुत्र सोमेन्द्र ने 'जीमूतवाहनावदान' नाम के एक नये अवदान के साथ एक भूमिका भी जोड़ी।

बौद्ध साहित्य का एक अंग तन्त्र है। उनका विस्तार देश में बड़ा है, यद्यपि उनका आरम्भ वस्तुतः आसाम और बंगाल में हुआ। ८वीं सदी ई० अथवा उससे कुछ पहले से भारतीय तन्त्र तिब्बती और चीनी में भी अनूदित होने लगे थे। ७२० ई० के लगभग वज्रबोधि और अमोघवज्र नामक दो आचार्यों ने चीन जाकर वहां तन्त्रों का प्रचार किया। तन्त्रों की संस्कृत शैली बड़ी बर्बर है। उतनी ही बर्बर जितना उनका प्रतिपाद्य विषय। तन्त्रों का प्रभाव भारत और एशिया पर गहरा पड़ा। कुछ लोग तो उन्हें अत्यन्त प्राचीन मानते हैं और उनके साथ के आगमों की प्राचीनता तो वेदों की-सी पुरानी घोषित की गई है।

: ६ :

प्राकृत

प्राचीन भारतीय भाषा में साधारणतः दो प्रधान भाग किए जाते हैं संस्कृत और प्राकृत। प्राकृत का अर्थ है स्वाभाविक अथवा साधारण, वस्तुतः संस्काररहित; और संस्कृत का संस्कारयुक्त, अर्थात् शिष्ट। कुछ लोगों ने प्राकृत को संस्कृत का बिगड़ा हुआ रूप भी माना है जो नितांत असंगत है। सच तो यह है कि जिस स्वाभाविक जनसाधारण की भाषा का संस्कार हुआ और जिसे संस्कृत कर शिष्ट व्यवहार में लाने लगे वह प्राकृत थी—जनभाषा—और संस्कारयुक्त होकर वही संस्कृत कहलाई। इससे उसका प्रधान मूलभूत और संस्कृत-पूर्व होना अनिवार्य है, यद्यपि यह भी स्वीकार किया जा सकता है कि संस्कृत भी अनेक बार जनसाधारण के संपर्क में आकर जो सरल रूप में व्यवहृत हुई वह भी कालान्तर में प्राकृत की अपनी स्वतंत्र, साहित्यिक शैली बनी और उस शैली का विविध प्रान्तों में विविधतः विकास होकर अनेक स्वतन्त्र प्राकृत शैलियों का जन्म हुआ।

वैदिक संस्कृत साहित्य के समकालीन प्राकृतों के हमें दर्शन नहीं होते परन्तु निःसन्देह छठी सदी ई० पू० के महावीर और बुद्ध के प्राकृत प्रवचनों से सिद्ध है कि प्राकृतों का प्रादुर्भाव शैलियों के रूप में भी उस सदी से काफी पूर्व हो चुका था। क्रमशः तीसरी और दूसरी ई० पू० की सदियों के अशोक और खारवेल के लेख भी प्राकृत में ही सम्पन्न हुए। वैसे ही सातवाहनों के भी अभिलेख प्राकृतों में ही हैं। पहली में पहली सदी से ही कुछ पात्रों की प्राकृत बोलने की परम्परा चल पड़ी। स्वयं अश्वघोष इसका प्रमाण है। नाटकों में राजा और महान् वीर तथा ब्राह्मण पुरोहित आदि तो संस्कृत में बोलते हैं परन्तु महिलाएं

और निम्नपात्र प्राकृत मे। महिलाओं का साधारण वक्तव्य शौरसेनी मे होता है और निम्नवर्गियो का मागधी मे।

प्राकृत की विभिन्न शैलियो मे प्रधानत महाराष्ट्रीय, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रश आदि मानी गई है। पाली और अर्ध-मागधी भी जिनका उपयोग बौद्ध तथा जैन धार्मिक सिद्धात ग्रन्थो मे हुआ है प्राकृत ही थी। प्राकृत का पहला रूप पाली और पैशाची मे मिलता है और दूसरा शौरसेनी तथा मागधी मे। अर्धमागधी यद्यपि उत्तरकालीन है, पाली से बहुत मिलती है। महाराष्ट्री अनेक काव्यकृतियो की भाषा बनी। पाचवी सदी ईस्वी तक प्राकृत भी सस्कृत की ही भाति शैली के रूप मे रूढिगत हो चुकी थी और एक नई जनबोली, अपभ्रश, जो शिष्टो के सम्पर्क से अपनी शक्ति अब तक नष्ट होने से बचाए हुए थी, अब साहित्य की नई शैली के रूप मे प्रयुक्त हुई। लगता ऐसा है कि शिष्टो की भाषा और काव्य, कथा आदि की वाणी सस्कृत होते हुए भी उसकी परिष्कृत शैली के बावजूद व्यजना को जब-जब शक्ति और नवीनता की आवश्यकता हुई तब-तब उसने अपने रूढि आधार को छोड प्राकृतो को वरा। शूद्रक ने 'मृच्छकटिक' मे महाराष्ट्री का प्रयोग किया और कालिदास ने 'विक्रमोर्वशी' मे (यदि उनको प्रक्षिप्त न माना जाए) गीतो के लिए अपभ्रश का। हजार वर्ष बाद प्राय १४०० ई० मे विद्यापति ने अपने सस्कृत-प्राकृत नाटको मे मैथिली छन्दो का उपयोग किया।

एक विशेष प्रकार के ड्रामा, 'सट्टक' मे मात्र सस्कृत का प्रयोग होता है। सस्कृत नाटिका के वह अत्यन्त निकट है। इस प्रकार का एक नाटक 'कर्पूरमजरी' है जिसे ९०० ई० के आसपास राजशेखर ने लिखा। इसका कथानक प्रणय-कलह है जिसके अन्त मे चण्डपाल और कर्पूरमजरी का विवाह सम्पन्न होता है। राजशेखर साहित्यिक व्यजना और छन्द शैली का अनुपम पण्डित है और उसके छन्दो मे असाधारण सागीतिक झकृति है। प्रवाह भी उसका तरल और अविरल है। प्राय ९०० वर्ष बाद कालीकट के जमूरिन (समुद्रिन) की सभा के रुद्रदास ने चन्द्रलेखा नामक सट्टक लिखा जिसमे मानवेद और चन्द्रलेखा के विवाह की कथा है। तञ्जौर के मध्य १८वी सदी के राजा तुलजाजी के राज-कवि घनश्याम ने 'आनन्दसुन्दरी' नाम का सट्टक लिखा। उत्तरकाल मे उत्तरापथ मे भी प्राकृत मे नाटक लिखने के कुछ प्रयोग हुए जिनमे मुख्य 'नयचन्द्रगाथा' है। वह पन्द्रहवी सदी के लगभग हुआ और उसने अपने सट्टक 'रम्भामञ्जरी' मे काशी के राजा जैत्रसिह और गुजरात के मदवर्मन की कन्या रम्भा की कथा प्राकृत और सस्कृत की परस्पर गुथित शैली मे लिखी।

यह तो हुई प्राकृत के धर्मेतर साहित्य की बात, परन्तु उस साहित्य का प्रधान अग तो धार्मिक जैन सिद्धातो मे विकसित हुआ। जैन आगम में महावीर और उनके शिष्यो के उपदेश अर्धमागधी मे सगृहीत है। चौथी शती ईस्वी पूर्व मे पाटलिपुत्र की सगीति मे इनका सग्रह

सम्पन्न हुआ और प्राय. ९०० वर्ष बाद वल्लभी सभा ने देवर्द्धि के नेतृत्व में जैन धर्म के इन प्राकृत सिद्धान्तो का विशेष वर्गीकरण किया। उन ग्रंथों की सीमा में सारा मानव ज्ञान जैसे सिमटकर आ गया है। 'आचारांग', 'दशवैकालिक' आदि ने भिक्षु आचार का वृहत उल्लेख किया। 'जीवाधिगम' आदि में प्राणियों के सम्बन्ध के विचार मिलते। 'उपासक दशा', 'प्रश्नव्याकरणांग' ने आदर्शो और गृहस्थो के आचारो का विवेचन किया। अन्य ग्रंथो में विशदरूप से सुकर्म, सृष्टि, उपदेश सम्बन्धी आख्यानों का संग्रह हुआ। 'भगवती' के-से ग्रन्थ तो विश्वकोष का रूप धारण कर चुके है।

'आचारांग' के गद्य मे छन्दों का भी सन्निवेश है। जैन प्राकृत शैली में सूत्र और प्रवाहतरल दोनो रूपो का विकास हुआ है। दर्शन अथवा प्रतिपाद्य विषय के अनुकूल उनकी प्राकृत शैली चुन ली गई है। महावीर ने अर्धमागधी में अपने प्रवचन कहे थे। इसीलिए जैन सिद्धान्त ग्रन्थो की भाषा की संज्ञा अर्धमागधी है। शास्त्रीय प्रवचनों के अतिरिक्त साहित्यिक व्यंजना के वाहन स्वरूप प्राकृत के प्रयोग का श्रेय श्वेताम्बर जैनों को है। दिगम्बरो और श्वेताम्बरो की शैलीगत भाषा के प्रयोग में काफी अन्तर है।

एक मनोरंजक जैन प्राकृत शैली उत्तरापथ के पर्यटको ने दक्षिण के सम्पर्क में विकसित की। चौथी शती ई० पू० के प्रायः अंत में चंद्रगुप्त मौर्य मगध के अकाल से पीड़ित हो जैनाचार्य भद्रबाहु और उनके कुछ अनुयायियों के साथ दक्षिण चले गए। अपने सम्प्रदायिकों की मनस्तुष्टि के लिए भद्रबाहु आदि ने अपने स्मृतिगत भावों को लिख डाला। इनका एक विशिष्ट वर्ग बन गया जो जैन सम्प्रदाय मे आदर और महत्व का विषय बना। इनमें से प्राचीनतम 'सत्कर्म' और 'कषायप्राभृत' है जो दृष्टिवाद के अवशेष माने जाते है। ८१६ ईस्वी मे वीरसेन-जिनसेन ने अपने ग्रंथ मे प्राकृत की पूर्वकालीन टीकाओं का समावेश किया। इन टीकाओं मे कर्म के सिद्धात का अद्भुत विश्लेषण है। इस प्रकार के सिद्धान्तपरक ग्रन्थों मे वट्टकेर का 'मूलाचार' और शिवराम की 'आराधना' भी गिनी जाती हैं। इनमें जैन-प्रव्रजित जीवन के आचार-विधान सांगोपांग वर्णित है। जैन-प्राकृत में एक वर्ग का साहित्य 'भक्ति' कहलाता है जिसमें स्वाभाविक ही भक्तिमूलक गायनो का बाहुल्य है।

जैनग्रन्थो का एक पूरा परिवार कुन्दनकुन्द के नाम से सम्बन्धित है। कितना उस यती का है, कितना दूसरो का आज यह नही कहा जा सकता। वह सारा परिवार आज हमें उपलब्ध भी नही। 'पचास्तिकाय' और 'प्रवचनसार' निश्चय ही माननीय ग्रन्थ है जो उस महाभूत की लेखनी से प्रसूत हुए। उसका 'समयसार' अद्भुत प्रेरणामूलक कृति है। यतिवृषभ का 'तिलोयपण्णत्ति' अनेक विषयों का संग्रह है। कुन्दनकुन्द और यतिवृषभ के ग्रन्थ ईसा की प्रारम्भिक सदियो में रचे गए। मूलग्रन्थो पर अनेक टीकाएं भी लिखी गईं जिनमे कई तो छन्दोबद्ध है और 'निर्युक्ति' कहलाती हैं। इनमें से अनेक भद्रबाहु की लिखी बताई जाती हैं। इनका तर्क और दार्शनिक शैली असाधारण है। आवश्यक निर्युक्ति पर

६०९ ई० मे जिनभद्र क्षमाश्रमण ने प्राकृत मे जो भाष्य लिखा वह इसी परम्परा का प्रमान्य ग्रन्थ माना जाता है। भाष्य निर्युक्तियो के ऊपर यत्र-तत्र उनके पूरक के रूप मे छदोबद्ध लिखे गए। उन्ही निर्युक्तियो की गद्य टीकाए प्राकृत और सस्कृत के अनोखे मिश्रण के रूप मे सम्पन्न होकर 'चूर्णि' कहलाए। जिनदास महत्तर द्वारा लिखा 'नन्दीचूर्णि' ६७६ ईस्वी मे सम्पन्न हुआ।

प्राकृत का काव्य-साहित्य भी बडा अनमोल और पर्याप्त प्राचीन है। अनेक गेय अथवा लिरिक कविताओ की हाल से भी पहले रचना हुई। प्राचीनतम विशद गाथा-रचना हाल की 'सत्तसई' है जिसमे ७०० गाथाओ का सग्रह है। हाल वस्तुत. इस अद्भुत सग्रह का सम्पादक है। इनमे से उसकी अपनी कुछ ही गाथाए है। अधिकतर उसने लोकगीतों से ही सग्रह किया और उनका सग्रह करते समय निस्सदेह उसने उनकी शैली, विषय, भावादि का विशेष ध्यान रखा। हाल का यह सग्रह केवल अपनी कलात्मक मधुरता अथवा काव्यगत सौदर्य के लिए ही प्रख्यात नही वरन् उसकी महत्ता उसके प्रारम्भिक प्राकृत लोक-साहित्य होने मे भी है जिसकी रचना मे मूलरूप मे अनेक नारियों ने भी सक्रिय भाग लिया था। हाल आन्ध्रसातवाहन राजा था जिसके समय का निश्चित पता तो हमे नही है परतु जो सभवत ईसा की पहली और तीसरी सदियो के बीच कभी हुआ था। कम से कम हाल का यह सग्रह दूसरी अथवा तीसरी सदी ईस्वी तक प्रस्तुत हो चुका था। सस्कृत और हिन्दी मे इस सत्तसई के अनुकरण मे अनेक सग्रह प्रस्तुत हुए परन्तु मूल प्राकृत के सौदर्य तक कोई नही पहुच सका। हिन्दी की बिहारी आदि की सतसइया भी इसी हाल की 'गाथा-सत्तसई' पर अवलबित हुई। 'गाथा-सत्तसई' का विषय प्रधानत और साधारणतः जनपदो के जन-जीवन पर अवलम्बित है, परन्तु किसी मात्रा मे साहित्यिक रुचि अथवा शिष्टता को उसकी शैली दूषित नही करती। ऋतुओ की पृष्ठ-भूमि, देहात का काव्योपकरण, गाव की जनता का भाव-विलास, और निस्सीम चराचर का अभिराम निरूपण यथार्थ रूप से 'सत्तसई' के एक-एक, दो-दो पक्तियो मे उभर पडे है। काव्य का प्रधानभाव शृगार और करुणा है और प्रणय के प्रसग विविध रूप से अकित हुए हैं। विरह और सयोग, अनग रग और परिताप रोमाचक प्रवीणता से चित्रित हुए हैं। अनेक दृश्यों में करुणा का अविरल प्रवाह है। प्रमदा पिपासु पर्यटक को जल पिला रही है, जल की धार अटूट रूप से ऊपर से गिरती है, नेहमूढ पिपासु के स्निग्ध लोचन ऊपर टग गए है और शिथिल उगलियो के बीच से जल नीचे अविराम टपकता जाता है। कभी ऊपर से गिरने वाली धारा अनगाहत नारी के शैथिल्य से नितात पतली होकर अपेय हो जाती है। दोनों की क्रिया में सचेतक प्रमाद है, सद्योजात प्रणय से सम्भूत, और दोनो ही अपने-अपने तरीके से मिलन की अवधि लम्बी कर रहे है। 'गाथा-सत्तसई' ससार के जनसाहित्य मे प्रणय-सवाद के रूप मे, शैलीगत साहित्य के रूप मे, प्राचीनतम और अनुपम है।

ऊपर कहा जा चुका है कि 'सत्तसई' के अनुकरण में अनेक ग्रन्थ संगृहीत हुए। संस्कृत और हिन्दी मे तो उनके अनुकरण हुए ही, संस्कृत सुभाषितों के 'पर्याय' संग्रह स्वय प्राकृत मे भी कुछ कम संख्या मे नही बने। यहां पर्याय लिखने से तात्पर्य किसी प्रकार यह नही कि प्राकृत सत्तसई या संस्कृत सुभाषितों की अनुवर्ती है। हां, भावों की समता निश्चय ही सिद्ध है। परन्तु वह अधिकतर इस कारण है कि दोनों का (पारस्परिक आदान-प्रदान से भिन्न) आधार, समान कोष, लोकचर्या है, यद्यपि इस लोकचर्या से सामीप्य संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत का सर्वदा अधिक रहा। हाल से मिलता-जुलता एक संग्रह 'वजालग्गइन्' नाम से जयवल्लभ ने किया। यह भी एक प्रकार की सत्तसई ही है यद्यपि पाठभेदों के कारण इसके छंदों की संख्या ठीक ७०० नहीं। इसमें हाल के अनेक छंद मिलते हैं। इसमे तीन विशेष प्रसंगो—धर्म, अर्थ और काम—का निरूपण है, यद्यपि काम सम्बन्धी अंश शेष दोनो से कही अधिक और ग्रन्थ का प्रायः आधा है। सत्तसईकार जैन है परन्तु संग्रह मे साम्प्रदायिकता का स्पर्श तक नही। गाथाएं महाराष्ट्री में है जिनमें अपभ्रंश की मात्रा भी कुछ कम नही।

नीतिपरक छंदों के भी अनेक संग्रह प्राकृत में मिलते हैं। इस प्रकार का प्राचीनतम संग्रह 'उवएसमाला' है जिसमें श्रमणों और गृहस्थों के आचार ५४० छंदों में निबद्ध हैं। संग्रह का रचयिता महावीर का समकालीन या कुछ बाद का प्रव्रजित राजा धर्मदास माना जाता है। ग्रंथ की रचना उसने अपने पुत्र कुमार रणसिंह के लिए की। नवीं सदी ईस्वी से ही इसपर टीकाएं लिखी जाने लगीं जिनकी संख्या की अनेकता से इसकी लोकप्रियता प्रकट है। इसमे जैन सिद्धांतों का भी आख्यायिकाओं के रूप में विवेचन है। प्रायः हजार गाथाओं में हरिभद्र का संग्रह 'उपदेशपद' है जो आठवीं सदी में संगृहीत हुआ। इसको वस्तुतः साहित्यिक कृति कहना अन्याय होगा क्योंकि इसकी शब्द-योजना नितान्त दुरूह है और इसकी शैली असाधारण पाण्डित्यपूर्ण। हेमचन्द्र की 'उपदेशमाला' की ५०० गाथाएं प्रायः २० धार्मिक विषयों पर उपदेश करती है, शैली अलंकार बोझिल है। हेमचन्द्र गुजरात के प्रसिद्ध राजा जयसिंह सिद्धराज (१०६४-११४३) का समकालीन था। ११९१ मे आसड ने १४० दोहों मे धार्मिक जागरण के लिए अपना 'विवेकमंजरी' लिखी। उत्तरकाल में भी इस प्रकार के अनेक संग्रह हुए यद्यपि उनकी शैलीगत काव्यता से कहीं अधिक महत्व की उनकी धार्मिकता है।

उपासना के लिए भी प्राकृत मे, विशेषकर जैन सिद्धान्तों से अनुप्राणित अनेक प्रार्थनापरक प्राकृत स्तोत्र लिखे गए। स्तोत्रकारों मे प्रधान भद्रबाहु, मानतुंग, धनपाल और अभयदेव हुए। 'ऋषिमण्डल स्तोत्र' श्रमणों का एक प्रकार से इतिहास ही प्रस्तुत करता है और 'द्वादशांग प्रमाण' अर्धमागधी में रचित जैनानुशासन का ग्रंथ है। सोमसुन्दर ने १५वीं सदी में विविध प्राकृत बोलियों मे अपनी प्रार्थनाएं रचीं। यह प्रार्थनाओं की परंपरा

भारत की अनेक प्रान्तीय बोलियो मे प्राय. अद्यावधि सन्तो ने जीवित रखी है। प्राकृत मे साहित्यिक प्रबन्धो की एकान्त प्रचुरता है विशेषत जैन महाराष्ट्री और अपभ्रश मे। इनमें 'बृहत्कथा' के अतिरिक्त शलाका पुरुषो के चरित, प्रव्रजित महात्माओ की कथाए और लौकिक-अलौकिक, ऐतिहासिक-अनैतिहासिक प्रसगो का कथागत सग्रह है। 'बृहत्कथा' की रचना गुणाढ्य ने पैशाची मे की। आज स्वय 'बृहत्कथा' तो प्राप्य नही परन्तु उसकी तीन सस्कृत अनुकृतिया उपलब्ध है। उससे प्रगट है कि मूलग्रंथ कितना विशद और शालीन रहा होगा। उत्तरकालीन साहित्यिको की रचनाओ के लिए अनन्त कथानक इस 'बृहत्कथा' ने प्रदान किए। दण्डी, सुबन्धु, बाण और अन्य साहित्य-धुरीणो ने निरन्तर श्रद्धापूर्वक गुणाढ्य की इस अनुपम कृति का उल्लेख किया है। गुणाढ्य का व्यक्तित्व तिमिराच्छन्न है। संभवत. वह भास से पूर्व ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियो मे हुआ हो।

रामकथा का एक जैन रूप विमल द्वारा प्रणीत 'पऊमचरिऊ' मे मिलता है जो चौथी सदी ईस्वी की कृति है। इसमे रावण और मारुति (हनुमान) को क्रमश· राक्षस और बन्दर न मानकर विद्याधर माना गया है। ग्रथ की काव्यकारिता इसकी शक्तिम और तरल शैली से प्रगट है। प्राय उसी काल पादलिप्त ने आज अप्राप्य धार्मिक उपन्यास 'तरंगवयी' प्राकृत में लिखा। कहानी प्रणय की थी परन्तु उसका अन्त उपदेशपरक था। यदि उसे उपन्यास माना जाए तो सम्भवत संसार के साहित्य मे वह पहला उपन्यास रहा होगा, यद्यपि उसकी अनुपस्थिति मे आज यह कह सकना कठिन है कि आधुनिक उपन्यासो के किस रूप का वह प्रकाशन करता है। इसके साहित्यिक सौंदर्य का कुछ पता हमें एक अन्य विशद प्राकृत ग्रन्थ 'तरगलता' से मिलता है। ६०० ई० से पहले संघदास और धर्मदास ने 'वसुदेव हिन्दी' नाम की एक बृहद् गद्य-कथा लिखी, जिसमें हरिवश के वसुदेव के भ्रमणो और अनेक दन्तकथाओ का वर्णन है।

८६८ ई० मे शीलाचार्य ने प्रधानशलाका पुरुषो के चरितो का अपने 'महापुरुष चरित' में सग्रह किया। दसवी सदी ईस्वी के लगभग प्रसिद्ध जैनग्रथ 'कालकाचार्य कथानक' की रचना हुई जिससे शक इतिहास पर प्रभूत प्रकाश पडता है। सन्तकालिक शक क्षत्रपशाहियो के पास जाकर अपनी भगिनी सरस्वती के आहर्त्ता उज्जैन के राजा गर्दभिल्ल के नाश मे उनकी सहायता मागता है। कथानक के साथ ही ग्रन्थ मे प्रौढ शैली का प्रयोग हुआ है। १०३८ ई० मे लिखा धनेश्वर का 'सुरसुन्दरीचरिऊ' एक लम्बा रोमास (काल्पनिक उपन्यास) है जिसके १६ सर्गों मे विद्याधर राज की प्रणय कथा का निर्वाह हुआ है। इसमे कथानक के अन्तर्गत कथानक प्रस्तुत हैं और उनका वर्णन धारावाहिक है। महेश्वरसूरि ने उदाहरणो द्वारा सूत्रपचमी केशव का महत्व अपनी 'पचमीकहा' मे लिखा है। विजयचन्द्र केवलिन्, वर्द्धमान आदि ने भी अपने ग्रथ इसी ग्यारहवी सदी मे लिखे। कुमारपाल की मृत्यु के केवल ग्यारह वर्ष बाद सोमप्रभ ने अपना 'कुमारपाल प्रतिबोध' लिखा,

जिसमें उस राजा के जैन सम्प्रदाय मे दीक्षित होने की कथा है। अपभ्रंश के प्रादुर्भाव से प्राकृतो मे एक नया जीवन, नया चाचल्य झलक पड़ता है। भाषा का प्रवाह, भावों की यथार्थ चेतना, शैली की सहज तरलता सभी कुछ नवजीवन लिए आते है और कुशल कवि के अकन से अमर बन जाते है। ऊपर कहा जा चुका है कि किस प्रकार कालिदास ने अपनी 'विक्रमोर्वशी' मे अपभ्रंश गीतो का उपयोग किया। वस्तुतः प्रत्येक भारतीय भाषा के अपने-अपने विशिष्ट छन्द रहे है—सस्कृत मे श्लोक, प्राकृत मे गाथा और अपभ्रंश में दोहा। दोहों का प्रभाव प्राकृत, सस्कृत और अनेक जन-बोलियों पर पड़ा है।

अपभ्रंश के प्राचीनतम कवियो मे से एक चतुर्मुख है। अपभ्रंश के 'पद्धड़िया' छन्द का सभवत. उसीने प्रकाश किया। आठवी सदी में स्वयम्भू और उसके पुत्र त्रिभुवन स्वयम्भू ने अपभ्रंश साहित्य को श्रीसम्पन्न किया। अपभ्रंश का सबसे महान् कवि पुष्पदन्त दसवी सदी के मध्य हुआ। राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज तृतीय के मन्त्री भरत की सरक्षा मे उसकी मेधा श्रीसम्पन्न हुई और उसने अपने अद्भुत ग्रथ महापुराण 'जसहर चरिउ' और 'नयकुमारचरिउ' रचे। उनकी शैली काव्य सौन्दर्य मे अपभ्रंश साहित्य मे अपना सानी नही रखती। कनकामर सभवतः उसका समकालीन था। उसने 'करकडचरिउ' की रचना तरल शैली मे की। हरिभद्र के प्रायः ढाई सौ वर्ष बाद मैथिल कवि विद्यापति हुआ जिसने अपभ्रंशोत्तर भाषा मे अपनी 'कीर्तिलता' रची।

कालान्तर मे प्राकृत में भी सस्कृत की ही भाति काव्यो और रोमासो की रचना हुई। प्रवरसेन का 'सेतुबन्ध' रामायण की ही एक घटना पर अवलम्बित है परन्तु काव्य के रूप में सारे गुणों को उसका रचयिता अपनी कृति मे प्रतिबिम्बित करता है। इसकी कल्पना भावाकर्षण और श्लेष काव्यरचना मे अपना स्थान रखते है। बाण और दण्डी दोनो ने 'सेतुबन्ध' की प्रशसा की है। आठवी सदी के कन्नौज के राजा यशोवर्मन के राजकवि वाक्पतिराज ने 'गाऊडवहो' की रचना की। वाक्पति जनपद कवि है। उसमें देहात के जीवन का इतना बाहुल्य है कि उसके सौन्दर्य और ताजगी से वह अपने काव्य को अनुपम बना देता है।

हरिभद्र ने आठवी सदी में 'समराइच्चकहा' नाम का अपना प्राकृत चम्पू लिखा। मानवजीवन का वह गम्भीर अध्येता है, यद्यपि उसके इस चम्पू में आत्माओ के सघर्ष का ही निरूपण है। हरिभद्र ने भारतीय साहित्य मे अनुपम अपना अद्भुत व्यंग्य 'धूर्ताख्यान' लिखा जिसमे चार पुरुष और एक स्त्री धूर्त अपनी-अपनी अनुभूतियों का वर्णन करते हैं। साहित्यिक कृतित्व के रूप मे यह ग्रथ अपने समय से बहुत आगे है। हरिभद्र के शिष्य उद्योतन ने 'कुवलयमाला' लिखकर हूण, तोरमान के ऊपर काफी प्रकाश डाला है। वह उस दिशा में साहित्यिक और अच्छी ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है, कुतूहल का 'लीलावती' रोमाचक काव्य है जिसमे गतिमान वर्णन हुआ है और जो निस्संदेह ओज से

पहले रची गई। काव्य में सातवाहनराज और सिहल की राजकुमारी लीलावती का प्रणय वर्णित है। कथा के तन्तु निश्चय ही उलझे हुए है। परन्तु भावो का प्रवाह आकर्षक है।

ग्यारहवी सदी मे जैन महाराष्ट्री गद्य-पद्य मे गुणचन्द्र ने 'महावीर-चरित' लिखा। ग्रथ १०८२ ई० का है और उसमे व्याकरण की चुस्ती अपूर्व है। काव्याकन दूषित नही होता। जैन साहित्य मे विशेषकर उसके धार्मिक क्षेत्र मे हेमचन्द्र (१०८९-११७२) का नाम अग्रणी है। गुजरात मे तो जैन सम्प्रदाय के विस्तार का सबसे अधिक श्रेय इसी महापुरुष को है। उसने अपने व्याकरण और कोपकारिता द्वारा प्राकृत शब्दशास्त्र की नीव रखी। उसका 'कुमारपालचरित' जीवनचरित होकर भी व्याकरण का प्रकाश करता है। काव्य की पद्धति अपूर्व है जो चरित के साथ-साथ ही प्राकृत व्याकरण का वर्णन करती है।

दक्षिण मे भी प्राकृत साहित्य का प्रणयन हुआ और श्रीकठ, रामपाणिवाद आदि ने अनेक काव्यकृतिया इस भापा को भेट की।

कर्मसिद्धात के निरूपण मे भी प्राकृत मे जैनो ने अनेक मूलग्रथ और टीकाएं लिखीं। शिववर्मन, चन्द्रर्षि और नेमिचन्द्र की कृतियो पर ग्रन्थ विशद भाषा सस्कृत मे रचे गए। उनके मूल क्रमश 'कम्मपयदि', 'पचसग्रह', 'गोम्मटसार' प्राकृत मे थे। सातवी सदी के सिद्धसेन दिवाकर ने नयस् और अनेकातवाद नामक जैन सिद्धातो पर अपना अद्भुत पाण्डित्यपूर्ण प्राकृत ग्रथ 'सन्मतितर्क' लिखा। इसी प्रकार हरिभद्र का 'धर्म सगहणि' भी विशेप प्रसिद्ध हो गया है। कुमारदेव, सेन, जोइन्दु आदि ने भी प्राकृत साहित्य को अपनी मेधा से परिपूर्ण किया। हिंदी के प्रारम्भिक दोहाकार कन्हपा और सरहपा ने भी कान्ह और सरह नाम से अपने दोहाकोप प्राकृत मे ही लिखे।

प्राकृत मे व्याकरण की दिशा मे भी कुछ प्रयास हुए जैसा अनेक उद्धरणो से प्रमाणित होता है परतु अभाग्यवश आज वे उपलब्ध नही। आज जितने भी प्राकृत सम्बन्धी व्याकरण उपलब्ध है वे सस्कृत मे ही है। हा, कोषकारिता के क्षेत्र मे अनेक स्तुत्य प्रयत्न हुए है। धनपाल ने ९७२-७३ ई० मे अपनी भगिनी सुन्दरी के लिए प्रसिद्ध पर्याय कोष 'पाइयलच्छीनाममाला' प्रस्तुत किया। इसी प्रकार जिन देशी शब्दो का सम्बन्ध सस्कृत मूल से नही किया जा सकता ऐसो की एक तालिका उनके प्रयोग सम्बन्धी उद्धरणो के साथ हेमचन्द्र ने 'देशीनाममाला' मे प्रस्तुत की। हेमचन्द्र ने अपने इस ग्रथ मे प्राय एक दर्जन पूर्वगामी प्राकृत कोपकारो की ओर सकेत किया है परन्तु उनकी कृतिया आज उपलब्ध नही। अलकार सम्बन्धी 'अलकारदर्पण' नामक एक ग्रथ मिलता है जिसके रचयिता का पता नही। अपभ्रश ग्रथो मे छन्दो की नई सरणियो का उद्घाटन हुआ है। नदीनाथ ने अपने 'गाथालक्षण' मे गाथा के प्रकारो पर प्रकाश डाला है। इसी प्रकार स्वयम्भू ने अपने 'स्वयम्भू छन्द' मे विविध छन्दो का उल्लेख मय उनके प्रयोगो के किया है। प्राकृत कोष और पिगल सम्बन्धी कुछ कृतिया 'वृत्तजातिसमुच्चम्', 'कविदर्पण', 'छन्द कोष'

और 'प्राकृतपायगल' आदि है। इस दिशा मे हेमचन्द्र के 'छन्दोनुशासन' मे प्राकृत छन्दो पर प्रभूत प्रकाश पडता है। इनके अतिरिक्त प्राकृत मे ज्योतिष और चिकित्सा सम्बन्धी भी कुछ ग्रन्थ उपलब्ध है।

प्राकृत साहित्य बहुमुखी है और उसमे जनसम्बन्धी उन जीवित स्तरो का साहित्य है जिसे सस्कृत की शिष्टता न अपना सकी और जो प्रान्तीय बोलियो की सम्पदा बन गया। साहित्य और आदोलन के वाहन के रूप मे उसके प्रयोग का श्रेय महावीर और बुद्ध को है और राजकीय घोषणाओ का महामना अशोक को। प्राकृतो का मूल रूप मे अध्ययन आज की प्रातीय जन-बोलियो के अध्ययन में प्रचुर सहायक होगा।

१४. स्पेनी साहित्य

: १ :

मध्य युग

वीर काव्य

स्पेनी भाषा की उत्पत्ति लातीनी से हुई, लातीनी और स्थानीय बोलियो के योग से। उसका आरभ अरबो और स्पेनियो की विजय से होता है। उस काल का स्पेनी साहित्य 'वीर कृत्यों के गीतो' (कातार)[१] का है। इनमे प्राचीनतम दसवी सदी ईस्वी की हत्या और प्रतिशोध ही मुख्य विषय है। तब का अधिकतर काव्य साहित्य इन्ही खूनी कारनामों से भरा है। इस प्रकार के अनेक छोटे-बडे वीर काव्य पूर्ण-अपूर्ण दशा मे आज स्पेनी भाषा मे उपलब्ध है। प्राचीन स्पेन के वीर काव्यो का सुघड और समूचा रूप 'इल कातार द मिओ किद' (विदेशो मे 'किद' मात्र से प्रसिद्ध है) नामक एपिक मे मिलता है। यह ११४० ई० मे प्रस्तुत काव्य अशेष रूप मे उपलब्ध भी है। उसके तीन भाग हैं। दोन 'रोद्रिगो' (किद) का अल्फोजों षष्ठ द्वारा लगभग १०७५ के निर्वासन, उसकी कन्याओ का उनके पतियों द्वारा अपमान, समझौता और काउण्टो को दण्ड। काव्य शालीन और मधुर है, दृश्यो मे सम्पन्न और शक्तिम भावाकन मे समृद्ध। इसी प्रकार के एक और वीर काव्य 'रोसेन्वालेस' के कुछ खण्डो का पता चलता है। यह एपिक १३वी सदी का है। कहानी काउण्ट जूलियन की कन्या के साथ अन्तिम गोथ राज रोद्रिगो के बलात्कार की है। परिणामस्वरूप काउण्ट मूर तारीक को बुला भेजता है। ७११ मे जब्र-अल-तारीक स्पेन जाकर उसपर कब्जा कर लेता है और वहा अरबी साम्राज्य के पाये खडे हो जाते हैं। उसी अरब विजेता के नाम पर जिब्राल्टर नाम पडता है। यह कहानी कुछ ही हेरफेर के साथ लातीनी, अरबी और स्पेनी तीनो मे मिलती है। अरबी पाठ ११वी सदी का है।

स्पेनी काव्यधारा पर फ्रेंच का भी प्रभाव पडा। उस प्रभाव ने अनेक बार धार्मिक रूप धारण किया। फ्रेंच प्रभाव में प्रस्तुत १३वी सदी का एक काव्य 'ला विदा द साता मारिया ईगिप्सियाका' है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है। उसके बाद की गोन्ज़ालो द बर्सियो[२] पादरी और गायक ने अपनी रचनाए प्रस्तुत की। उसने छदो मे अनेक सतो के चरित्र लिखे। उसके अनेक गीत सुरक्षित है। युआन लोरेन्ज़ो द आस्तोर्गा[३] द्वारा १०,०००

---

१. Cantares ; २. Gonzalo de Berceo (११९८-१२६५) , ३. Juan Lorenzo de Astorga

पक्तियो मे प्रस्तुत सिकंदर सम्बन्धी एक काव्य 'लिब्रो द आलिजान्द्रे' (न० १२५०) है। जिसमे बाबली नरेश के विरुद्ध सिकन्दर के युद्ध का वर्णन है। नैसर्गिक सौंदर्य और पार्थिव सम्पदा का उसमें मार्मिक वर्णन है। १३वी सदी के साधु सान पेद्रो द आर्लान्ज़ा[1] की एक बडी हृदयग्राही कविता–'एल पोएमा द फर्नान गोन्ज़ाले'–उपलब्ध है। इस प्रकार के अनेक एपिक काव्य खडशः अथवा सम्पूर्णत. सुरक्षित है, जो स्पेनी भाषा की गेयता प्रमाणित करते हैं। १४वी सदी के लगभग स्पेन की एपिक काव्यधारा और छन्दोबद्ध इतिहासो का अन्त हो गया।

एपिक काव्य की ही भाति प्राचीन स्पेन मे लिरिक काव्य भी फूला-फला। उसके निर्माण मे जिन आधारो का योग था उनमें अरबी 'ज़ेजेल' (गज़ल) प्रधान था। उत्तर-कालीन लातिनी गीतो का भी उस काल पर्याप्त प्रचार था। वस्तुतः उत्तर कालीन लातिनी और प्राचीन स्पेनी भाषाओ की सीमाएं काल रूप से प्राय. समान थी। फिर 'रोमास' काव्य धारा अल्फोन्ज़ो षष्ठ[2] के काल तक देशी गायन-समारोहो मे अत्यन्त लोकप्रिय थी। गड़रियो—नर-नारी दोनों—के गीत भारतीय अहीरों के बिरहाओं की भाति देश मे सदा और सर्वत्र गाए जाते थे। फ्रेंच प्रभाव की ओर सकेत ऊपर किया जा चुका है। कास्तिल के १३वीं सदी के गीतो पर फ्रेंच 'देवा' का प्रभाव स्पष्ट है। अल्फोन्ज़ो दसवां स्पेन का पहला 'त्रोवादोर' (त्रूवादूर, कवि, गायक) था। कवि होने के अतिरिक्त वह सुन्दर गद्यकार और प्रकाड पडित (१२२०-८४) भी था। कास्तिल की सभ्यता का वह जनक कहा जाता है। उसने प्रोवेन्स—पुर्तगाली शैली मे सांता मारिया संबधी ४५० गीत लिखे। इनमें अधिकतर चमत्कारी कहानियां थीं। फिर भी उनमें 'सूर' (स्तोत्र) ४१ थे और सूक्त १५। उनकी शैली नितान्त सरल है।

लोक-बोलियों में गीत लिखने और गाने वाले अनेक 'त्रोवादोरों' के नाम भी मिलते हैं। इनमे प्रधान पैद्रो आमिगो द सेविला[3], राजा साचो प्रथम[4], ऐरास नूनेज़ द सान्तियागो[5], और पुर्तगाल के राजा दोन दिनिस[6] हैं। नारी-गीतों के अनुकरण में युवान ज़ोरों[7] और पेरो मेओगो[8] तथा पुरुष-गीतों के अनुकरण में नुनो फर्नान्डिज़ तोर्नियोल[9] ने गीत लिखे। मधुर और लोकप्रिय लिरिकों के अनेक प्राचीन संग्रह आज उपलब्ध हैं।

मध्य युग का गद्य प्रायः समूचा ही नीत्यात्मक है। कानून, पुराण, इतिहास के अतिरिक्त कहानियो, कहावतों, कथोपकथनों, आदि के लिए गद्य का प्रयोग हुआ है। दृष्टांत-

---

१. San Pedro de Arlanza ; २ Alfonso VI (१२२६-५७) ; ३. Pedro Amigo de Sevilla ; ४. King Sancho I ; ५. Airas Nunes de Santiago ; ६. King Don Dinis of Portugal ; ७. Juan zorro ; ८. Pero Meogo ; ९. Nuno Fernandes Torneol

परक नीतिकथाओ का स्पेनी भाषा मे प्रादुर्भाव तो पौर्वात्य देशो के प्रभाव से हुआ है। उनका उपयोग पादरी और उपदेशक अपने प्रवचनो तथा उपदेशो मे करते थे। इन दृष्टांतपरक कहानियों मे सबसे रुचिकर भारतीय 'पचतत्र' की कहानिया है। जो अरबी अनुवाद 'कलील-ए-दिम्न' (करकट-दमनक—पचतत्र के सियारो के नाम) मे सग्रहीत हुई। कास्तिल के युवराज दोन युवान मानुएल[1] ने उनका कास्तिली कथाओ के सम्मिलित संस्करण के रूप मे 'एल कोन्दे लुकानोर' प्रकाशित किया। कास्तिल के जनपदो का वातावरण भारतीय परिस्थितियो मे घुल-मिलकर एक हो गया है।

नीतिपरक कहानियो का एक सग्रह 'एल लिब्रो द इयेप्म्पलोज' नाम से क्लिमेन्त सान्शेज़[2] ने किया। इनमे नारियो के आचार पर बडी शका की गई है। वस्तुतः युवराज दोन फाद्रीक[3] के आदेश से १२५३ मे अरबी 'सेन्देबार' से अनूदित त्रियाचरित्र के प्रचार के बाद नारी के प्रति घृणा और बढी। 'दिसिप्लिना क्लेरिकालिस' पर यहूदी प्रभाव स्पष्ट है। 'एल-लिब्रो देल कावालेरो जिफार' पहला वीर-उपन्यास है जिसमे कथा मे कथा निकलती आती है। प्राचीन स्पेनी साहित्य का पहला उपन्यास 'एल सिएर्वो लिब्रे द आमोर' (ल० १४४०)—युवान रोद्रिगेज़ द कामार[4] का है। पेद्रो रोद्रिगेज़ द लेना[5] द्वारा वर्णित एक ऐतिहासिक वृत्तान्त को सौ वर्ष बाद उपन्यास की सज्ञा दी गई।

'कोप्लाज़ देल प्रोविन्शियल' (ल० १४७०) मे दरबार सम्बन्धी एक व्यग्य है। इसी प्रकार 'कोप्लाज़ द यिंगो रेविल्गो' मे एन्रिक चतुर्थ[6] के विरुद्ध जनता की शिकायत है। इनिगो लोपेज़ द मेन्दोज़ा[7] की वृद्धाओ की कहावते नामक सग्रह मे घरेलू सीखो का बाहुल्य है। कारियोन के रब्बी (यहूदी पुरोहित) सेम तोब[8] ने 'क्रूर' पैद्रो[9] के लिए छन्दोबद्ध व्यग्यात्मक कहावतो का एक सग्रह 'प्रोवर्बियोस मोरालेज' नाम से प्रस्तुत किया था। कहावतो और कहानियो का विस्तार मध्ययुगीय स्पेनी साहित्य मे बहुत बडा है। स्वय बौद्धधर्म का उसपर कुछ कम प्रभाव न पडा। बुद्ध सबधी कथाओ का आयात स्पेनी भाषा मे लातीनी द्वारा हुआ। 'ला एस्तोरिया द योसाफात ए द बरलाम' की अनेक स्पेनी कथाओ पर बौद्ध कहानियो ने प्रभाव डाला।

युवान रुइज[10] और आरसीप्रेस्त द हिता[11] दोनो मध्यकालीन प्रख्यात कवियो ने ७००० पक्तियो मे 'एल-लिब्रो द बुएन आमोर' नाम का एक सग्रह लिखा जिसमे

---

१. Don Juan Manuel (१२८२-१३३८), २. Climente Sanchez (१३७९-१४२६); ३. Don-Fadrique; ४ Juan Rodriguez de la Camar, ५ Pedro Rodriguez de Lena; ६. Enrique IV, ७. Inigo Lopez de Mendoza; ८. Sem Tob (The Rabbi of Carrion), ९ Pedro the Cruel (१३५०-६९); १०. Juan Ruiz, ११. Arcipreste de Hita

धार्मिक चमत्कार, दृष्टान्त-कहानियां सभी कुछ थे। ये क्रान्तिकार बोकाचो[1] और चासर[2] के प्राय: समकालीन है और उन्हींकी रुचि के स्मारक है। इस संग्रह की गद्यात्मकी प्रखर है और प्रणय, प्रकृति आदि का वर्णन सजीव है। अनेक स्थल पर चरित्र-चित्रण भी सुन्दर हुआ है। मनुष्य की कमज़ोरियों का उसमें अच्छा चित्रण है। पेरो लोपेज़ द आयाला[3] राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था। उसके 'रिमादो दि पालासियो' में दरबारी रहन-सहन पर गहरा व्यंग्य है। अविग्नान में कैद पोप की स्थिति और परिणामतः चर्च के अभाग्य पर उसने दुःख प्रकट किया है। किसानों के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है। दोन एनरिक द विलेना[4] की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह जादूगर और स्वप्नों का व्याख्याता भी था। उसने काव्य रूपक और शिष्टाचार पर विचार लिखे, साथ ही काव्यकला पर भी 'आर्ते द त्रोबार' नामक एक ग्रन्थ लिखा। उसने 'ईनिद' और 'देवी कोमेदी' का अनुवाद भी किया। सान्तिलाना का मार्क्विस दोन इनीगो लोपेज़ द मेन्दोज़ा[5] मध्य वर्ग का असाधारण व्यक्तित्व था। उसने प्राचीन स्पेनी काव्य शैली का विकास किया और इतालियन सानेटों का स्पेनी में उपयोग किया। युवान द मेना[6] ने 'ईलियद' का अनुवाद किया। उसने सन्तों के भी कुछ सुन्दर चरित लिखे है।

अल्फोन्ज़ो मर्तिनेज़ द तोलेदो[7] तालावेरा का प्रधान पादरी था। परन्तु उसकी कृतियों में यौन शृंगार का खुला वर्णन हुआ। अद्भुत शब्द-बाहुल्य से उसने नगर-नारियों की चपलता और धूर्तता का वर्णन किया है। गोमेज़ मान्रिक[8], मार्क्विस द सान्तिलाना[9] का भतीजा था। अपनी 'पोएज़िया' में उसने अच्छी काव्य-शक्ति का परिचय दिया है। उसके अनेक धार्मिक नाटक लीलाओं की तरह खेले गए। योर्जे मान्रिक[10] गोमेज़ का भतीजा था। उसकी ५१ कविताए उपलब्ध हैं। अधिकतर वे मनुष्य की अन्तर चेतना से संबंध रखती हैं। मृत्यु पर उसने कुछ सुन्दर लाइनें लिखी है। फर्नान पेरेज़ द गुज़मान[11] पहला सुन्दर चरित्रकार है। उसने दो खंडो में सन्तों, वीरों और समकालीनो के मनोहर और आलोचनात्मक चरित लिखे हैं। वैसे उससे भी अभिराम चरित हरनान्दो द पुल्गार[12] ने लिखे है।

पन्द्रहवी सदी के कवियो की कृतिया अधिकतर संग्रहों में संग्रहीत हैं जो आरा-

---

१. Boccaccio; २. Chaucer, ३. Pero Lopez de Ayala (१३३२-१४०७); ४. Don Enrique de Villena (१३८४-१४३४); ५. Don Inigo Lopez de Mendoza; ६. Juan de Mena (१४११-५६); ७. Alfonso Martinez de Toledo (१३९८-१४७०); ८. Gomez Manrique (१४१२-९०); ९. Marques de Santillana; १०. Jorge Manrique; ११. Fernan Perez de Guzman (१३७६-१४६०); १२. Hernando de Pulgar (१४३६-९३)

गान और कास्तिल के राजाओ के आदेश से समय-समय पर प्रस्तुत हुए। इस प्रकार के एक सग्रह मे ५४ कास्तिली कवियो की रचनाए है। उसीमे प्रसिद्ध आल्फोज्रो द विलासान्दिनो[1] के हृदयग्राही और यौन-शृगारिक लिरिक भी है। फ्रासेस्को[2] और रे द रिबेरा[3] की रचनाए भी उसमे सग्रहीत है। इनके अतिरिक्त अनेक विनोदप्रिय कवियो की कविताए उस सग्रह के कलेवर मे गुथी है। पन्द्रहवी सदी के विनोदशील कवियो मे सबसे प्रतिभाशाली युवान अल्वारेज गातो[4] है।

: २ :

पुनर्जागरण युग

रूढिवादी परम्परा पर आघात

रेनेसा की जिस धारा ने यूरोप के अन्य देशो को आप्लावित किया उससे स्पेन का साहित्य भी वचित न रह सका। पुनर्जागरण का उद्गम मूलत इटली मे हुआ था। और स्पेन उसका केवल निकटतम पडौसी ही नही लातीनी का आशिक उत्तराधिकारी भी था। अरबो और यहूदियों के कारण स्पेनी साहित्यकारो का सबध वैसे भी पौर्वात्य ज्ञान-भडारसे किसी न किसी मात्रा मे हो चुका था और जब पुनर्जागरण की लहर चली तब उसे उस लहर को प्रयोगश अपनाने की आवश्यकता न पडी। वह जैसे उसका स्वाभाविक उत्तराधिकार बन गया। स्पेन मे शीघ्र ही लातीनी, ग्रीक और इब्रानी ग्रथो का अध्ययन आरभ होने लगा। वस्तुत' रेनेसा की दिशा मे स्पेन की प्रगति औरो से अधिक सहज मे हुई। कारण कि उसकी भौगोलिक खोजो और सत्सम्बन्धी आविष्कारो ने उसे एक नई चेतना और साहित्यिक एकता प्रदान कर दी थी जिससे रेनेसा का कलम आसानी से वहा लग सका।

विज्ञान के उदय से स्पेन मे जिज्ञासा की प्रवृत्ति और प्रबल हो उठी। इरैस्मस के लेखो ने उसे और भी जागरूक बना दिया और १६वी सदी के पहले चरण मे स्पेन ने वस्तुओ को आलोचनात्मक दृष्टि से देखना शुरू किया। फ्रासिस्को सान्शेज एल ब्रोकेन्ज़े[5] ने फतवा तक दे दिया कि धर्म के विषय को छोडकर अन्य सारे विषयो की समीक्षा होनी चाहिए। पोप की सत्ता के अनुकूल और प्रतिकूल दोनो प्रकार के साहित्य का आलोचक दृष्टि से निर्माण होने लगा। अनेक नारियो ने भी उसमे भाग लिया। पहली बार जुआन ने 'दियालोगो द ला लेगुआ' मे साहित्य का शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से मूल्याकन किया। भाषा और शैली सम्बन्धी विचारो को रक्खा। अनेक स्वतन्त्र चिन्तको ने रूढिवादी परम्परा पर

१. Alfonso de Villasandino २ Francisco, ३ Rey de Ribera, ४. Juan Alvarez Gato (१४४०-१४९६), ५. Francisco Sanchez el Brocense (१५२३-९९)

आघात भी किया। धर्म को इस प्रकार समीक्षक की दृष्टि से देखना भी एक बड़ा खतरा था क्योंकि हमे यह बात न भूलनी चाहिए कि कैथोलिक धर्म के विरोधियों पर क्रूर प्रहार करने वाले 'इन्क्विजिशन' का प्रारम्भ स्पेन मे ही हुआ था। वहा उसकी सत्ता सर्वथा निरंकुश थी।

मानवतावादी-साहित्य का अधिकाधिक सृजन स्पेन में होने लगा था। उस दिशा मे गद्य के क्षेत्र में विविध प्रयोग हुए थे। और अब दर्शन की दिशा में ग्रीक दार्शनिकों का अध्ययन भी शुरू हो गया। रेनेसा के क्षेत्र मे स्पेन के लेखकों और चिन्तकों का ध्यान पहले ग्रीक-ज्ञान की ओर गया। अफलातून काव्य के क्षेत्र मे और अरस्तू दर्शन के क्षेत्र मे उनके आराध्य बने। प्रेम की एक नई व्याख्या हुई और नारी के सम्पर्क मे उसकी आराधना होते हुए भी उसका एक पक्ष भगवान् की दिशा मे जागरूक हुआ। इस प्रकार की कविताए, जिनमे मानव प्रेम मनुष्य की सीमाओ को पार कर शृंगारिक चेतना मे अलौकिकता का स्पर्श करता है, स्पेन मे पहले भी अनजानी न थी। सूफी अरबो और इब्रानी लेखकों ने किसी न किसी मात्रा मे उसका आरम्भ स्पेन में कर दिया था। फिर प्राचीन ग्रीस की सॉफिस्ती परपरा स्वयं उस दिशा मे कृतकार्य हुई। अब सौंदर्य का अनुशीलन भी ग्रीक परम्परा के अनुसार शुरू हुआ। हा, अन्य देशों की रेनेसां-परपरा और स्पेनी दृष्टिकोण मे एक विशेष अतर पड चला। जहा अन्य देशों मे तर्कसगत चेतना मानव और प्रकृति के सबंध में साहित्य में मुखरित हुई वहा स्पेन मे मनुष्य और ईश्वर सबंधी सीमाओं को भी पार कर वह चेतना अंतर्प्रेरणा तथा घनी भक्ति के प्रति दृढ़ हुई।

रेनेसा का साहित्य-गौरव स्पेन मे उसके नाट्य-क्षेत्र मे विशेषतः प्रतिष्ठित हुआ। जुआन देल एन्सिना[1] ने नाटकों को इटालियन रेनेसा सम्बन्धी सिद्धान्तों पर उतारा। 'क्रिस्तिनो इ फैबी' मे गडरिया-जीवन का अच्छा चित्रण है, और स्वय ईसाई साधु पशु-पालन का जीवन अपने से उन्नतर मानते हैं। बार्तालोमे द तोरेस नाहारो[2] ने अपनी कॉमेडी 'ला सोल्दादेस्का' (सैनिक) अथवा 'ला तिनलारिया' मे सुन्दर हास्यमय यथार्थ-वादी दृश्यों का आकलन किया है। 'कोमेदिया हिमेनी' स्पेन के उस काल की एक सुन्दर कॉमिडी है जो लोक-चेतना और पैने व्यग्य को भी चरितार्थ करती है। गिल विकेन्ते[3] इन प्रारम्भिक नाट्यकारों में सबसे समर्थ था। वह पेशे से सुनार था। उसने पुरानी ख्यातों और पौराणिक आख्यायिकाओ का अच्छा प्रयोग किया। चर्च की उसने बड़ी तीखी आलोचना की और शृंगारिक चेतना को विनोद द्वारा हल्का कर दिया। उसके नाटको की शैली बड़ी रोचक और शक्तिम है।

---

१. Juan del Encina (१४६९-१५२९); २. Bartolome de Torres Naharro (मृत्यु १५३० के बाद); ३. Gil Vicente (१४६५-१५३६)

स्पेनी रंगमच को धार्मिक ड्रामा से भी बडी सहायता मिली। प्राचीन रहस्यवादी लीलाओ का स्थान धीरे-धीरे बाइबिल के नाटको ने ले लिया। ट्रैजेडी विशेषत बडी सफलता से खेली जाने लगी और तब जैसा कॉमेडी के क्षेत्र मे भी सगत है, ग्रीक दृष्टिकोण का समाविष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। कुछ नाटककारो ने तो क्लासिकल कथानको को उनके रूपक तत्व को छोडकर, अपने प्लॉट के लिए चुना। फर्नान पेरेज द ला ओलिवा[1] का 'ला वैंगान्ज़ा द आगामेम्नोन' (१५२८) तथा जुआन द तिमोनेडा[2] का 'फिलोमेना' (१५६४) इसी प्रकार के ग्रीक कथानको से सनाथ कृतिया हैं। परन्तु उस दिशा मे अनेक कृतिया तो समसामयिक घटनाओ को लेकर चली। फ्रे जैरोनिमो बर्मूदेज सालामान्का[3] के नाटक 'नीजे लास्तिमोजा' और 'नीजे लारियादा' (१५७७) समकालीन वस्तु से ही सगठित हुए। क्रुस्तोबाल द विरूएज़[4] ने सेनेका[5] की पद्धति स्वीकार कर लडाई-भिड़ाई और खून-खराबे के ड्रामे लिखे। उसकी 'आत्तिला फ़ूरियोजो', 'एलिसा दिदो' और 'ला इन्फेलिके मार्केला' उसी परम्परा की कृतिया है।

स्पेन की सामुद्रिक विजयो ने जो एक औपनिवेशिक साम्राज्य का निर्माण कर दिया तो उसके साहित्यकारो का अनेक मानव-जातियो से परिचय हुआ और यह सभव न था कि उनके प्रति उनकी किसी मात्रा मे प्रतिक्रिया न हुई हो। सेविल के अभिनेता लोपे द रुएदा[6] ने चटपटी भाषा मे अनेक लोकप्रिय यथार्थवादी लघुनाटको की रचना की जिसमे 'लास असितुनास' और 'यूफेमिया' तथा 'आर्मेलिन्दा' जानी हुई हैं। उसने नीग्रो पात्रो को भी अपने रगमच पर स्थान दिया। जुआन द ला कुएवा[7] ने ट्रैजेडी और कॉमेडी दोनो लिखी, जिनका विस्तार क्लासिक कथानको से लेकर समसामयिक कहानियो तक था। दोन जुआन[8] की कहानी ने भी बीज रूप मे उसके एक नाटक मे स्थान पाया।

स्पेनी रेनेसा का सबसे महान् नाटककार लोपे द वेगा[9] था। उसने क्लासिक कथानको का भी परित्याग कर अपने प्लॉट स्थानीय लोकप्रिय लोककथाओ से लिए। उसके पात्रो मे विविधता थी और शैली मे बडी सजीवता। पशुपालन सम्बन्धी कॉमेडी, 'किसान अपने कोने मे' मे उसने देहाती जीवन का चित्रण किया। वह यथार्थ को कल्पना के स्पर्श से सम्मोहक बना देता था। उसकी कृतियो मे देश-प्रेम की भी काफी मात्रा होती थी और ईमानदार तथा वीर नारियो के मनोवैज्ञानिक चित्रण में ईर्ष्या और मान का योग दे वह कृतियों को सर्वथा मानवीय तथा सफल बना देता था। उसने बहुत लिखा। उसके

---

१. Fernan Perez de La Oliva; २. Juan de Timoneda; ३. Fray Jeronimo Bermudez Salamanca; ४. Cristobal de Virues (१५५०-१६०६); ५. Senecan blood and Thunder Drama; ६. Lope de Rueda (मृ० १५६५); ७. Juan de la Cueva (१५५०-१६१०); ८. Don Juan; ९. Lope de Vega;

नाटकों में ५०० रचनाओं की गणना की जाती है। उनमें से अधिकतर तीन-तीन अंकों की हैं। उसने कुछ धार्मिक नाटक भी लिखे। जिनमें 'आत्मा की यात्रा' प्रसिद्ध है। उसकी कॉमेडी 'मिथ्या सत्य' अनेक समीक्षकों की दृष्टि में सुन्दर कृति है। उसने ऐतिहासिक नाटक भी लिखे जिनमें स्पेनी इतिहास के रोमांसों पर आधारित रचनाएं तो निस्सन्देह अत्यन्त आकर्षक हैं। 'आस्तूरिया की प्रसिद्ध कुमारियां', 'सेविल का नक्षत्र', 'फुएन्ते ओवेजुना' और 'एल अल्काल्दे द ज़ालामी' उनमें सबसे अधिक सफल रचनाएं हैं। इनके अतिरिक्त उसने पौर्वात्य कथानकों के आधार पर भी कुछ नाटक लिखे। लोप की कृतियों में गति और चित्रण में बड़ा समुचित सन्तुलन है।

तिर्सो द मोलीना[1] ने धार्मिक और दार्शनिक नाटकों की रचना की। उसकी शब्द-योजना लोपे से भी अधिक सुन्दर है। उसका दृष्टिकोण उसमें कहीं वैयक्तिक है। अपनी कृतियों को वह बराबर सुधारता रहता था और इस प्रकार उसने उन्हें एक नया रूप प्रदान किया। वह जीवन का तत्व तप में खोजता था। इसीलिए उसकी कृतियों में आचार की शक्ति सदा मोह और घृणा पर विजय पाती है। अपने नाटक 'गृह शासिका नारी' और 'राजप्रासाद की लज्जाशीला' में उसने पतनोन्मुखी नारी के निकट आचारवान तरुण को खड़ा कर दिया है। उसने नारी की साधुता और मातृ-स्नेह तथा साहस का भी चित्रण किया है। 'सान्ता जुआना' 'दोया मार्या द मोलीना', 'सेविल का रसिया' और 'दोन गिल' उस दिशा में प्रमाण हैं।

दोन गिलेन द कास्त्रो ई बेलविस[2] स्पेन का बड़ा लोकप्रिय नाटककार हो गया है। उसने भी राष्ट्रीय कथानकों को ही अपनाया और विदूषक के सम्बन्ध में शेक्सपियर की शैली का ही अनुकरण किया। यद्यपि उसकी गहराई वह न पा सका। अपने प्रधान पात्रों को वह सर्वथा प्रतिकूल चित्रण में उपस्थित करता है। ईसाई और मूर (अरब) पुरुष और नारी उसके परस्पर विरोधी पात्र होते हैं। उसकी प्रसिद्ध रचनाएं निम्नलिखित हैं। 'सिद का यौवन', 'सिद के कृत्य', 'वालेन्सिया का असम विवाह' और 'एल क्यूरीओसो इमपरतिनेन्त'।

जुआन रूइज़ द आलारकोन ई मेन्दोज़ा[3] मैक्सिको में उत्पन्न हुआ था। उसने सुन्दर काव्य-पद्धति में २१ नाटक लिखे जिसमें प्रधान निम्नलिखित थे—'संदिग्ध सत्य' 'मित्र-चयन', 'दीवालें सुनती हैं', 'पति-परीक्षा', 'उसका छाया-पुरुष' और 'गुफा'।

मानवतावादी स्पेनी कवियों ने क्लासिकल तथा इटैलियन काव्य का अध्ययन तो किया, परन्तु अपने देश की काव्यधारा से वे कभी विमुख न हुए। प्राचीन रोमांसों को

---

१. Tirso de Molina; २. Don Guillen de Castro Y Bellvis; ३. Juan Ruiz de Alarcon Y Mendoza (१५८१-१६३९)

उन्होंने एकत्र किया और उनकी परपरा आगे बढाई। मूरो और सरहदी-बैलेडो को भी उन्होंने अपनी निष्ठा प्रदान की और देशी-विदेशी विविध विषयो पर उनकी कल्पना ने हृदयग्राही कृतिया रची। १६वी सदी के कवियो ने इन लोक-गीतो के आधार पर अधिकतर अपनी रचनाए की। उस काल की अनेक कविताए विविध सग्रहो मे आज भी उपलब्ध है। क्रिस्तोबाल द कास्तिलेजो[1] ने ओविद[2] और कातुलस[3] का अनुकरण तो किया, परतु छद, शब्द-योजना, पैनी उक्ति अपनी भाषा के ही प्रयुक्त किए। उसने अपनी कृतियो मे शृगार-रस का अधिकाधिक उपयोग किया है। जुआन बोस्कान द आल्मोगावेर[4] उसका समकालीन था। बोस्कान ने स्पेनी काव्य टेकनीक को निखारकर उसे एक नई इटैलियन चमक दी। वह शैली अधिकतर इटैलियन टेकनीक पर ही मजी। उसकी कविताओ के तीन सग्रह उसके निधन के बाद उसकी पत्नी ने १५४३ मे प्रकाशित किए। बोस्कान की शैली तो बडी प्राजल थी। परन्तु उसमे जीवन की कमी थी। उस जीवन की ताजगी का उसके मित्र गार्सिलासो दे ल वेगा[5] ने अपनी कविताओ मे सचार किया। बोस्कान की कविताओ के साथ ही गार्सिलासो के लिरिक भी प्रकाशित हुए। स्पेन के रेनेसा युग के सबसे सुदर लिरिक इसीने लिखे। उनकी करुणा उसके अपने ही असफल प्रणय की अभिव्यजना थी। उसकी कृतियो मे तर्क और भावुकता, सौंदर्य और नेकी-बदी, सुख और दुख एक साथ घुले-मिले है।

काव्य-जगत् मे तब सबसे अधिक गौरव सेविल के कवि फरनान्दो द हेरेरा[6] को मिला। उसने तुर्की, पुर्तगालियो, मूरो आदि पर स्पेन की विजयो से प्रेरणा ली और उनके आधार पर अत्यन्त सबल 'ओड' रचे। प्रणय सम्बन्धी उसके लिरिक भी अन्यन्त क्षमता रखते हैं। उसके समकालीनो ने फिर भी उससे कही अधिक गार्सिलासो का अनुकरण किया। फर्नान्दो से भी अधिक शृगारिक फ्रासिस्को द फिगेरोआ[7] है। उसकी शैली बडी प्रभावोत्पादक और शब्द-योजना नितान्त चित्र-बहुल है। रोद्रिगो कारो[8] ने अपनी कविताओं मे रोमन गौरव की पुकार उठाई। लुपरसिओ[9] और बार्तोलोमे[10] नामक दो भाइयो ने भी उस काल सुथरी कविता की। क्लासिकल रूप के बावजूद भी उनके व्यग्य और सॉनेट स्वदेशी भावनाओ के वाहन बने।

गद्य की दिशा में भी स्पेन ने रेनेसा काल मे कुछ कम उन्नति न की। फ्रास, जर्मनी आदि विदेशो से तो धारावाहिक रूप मे उसे नया साहित्य मिलता ही रहा, स्वय उसका अपना

---

१. Cristobal de Castillejo (१४९०-१५५०), २. Ovid, ३. Catullus; ४. Juan Boscan de Almogaver (१४९५-१५४२), ५. Garcilaso de le Vega; ६. Fernando de Herrera; ७. Francisco de Figueroa (१५३६-१६१७), ८. Rodrigo Caro (१५७३-१६४७), ९ Lupercio Leonardo de Argensola (१५५९-१६१३), १०. Bartolome Leonardo de Argensola (१५६२-१६३१)

कृतित्व भी उस दिशा में कुछ कम न था। तपःशील और रहस्यवादी धार्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक रहन-सहन की तीखी आलोचना, भाषा और शैली सम्बन्धी विचार सभी स्पेन में स्थानीय दृष्टि से विकसित हुए। फ्रे हरनान्दो द तालावेरा[1], आलेजो वेनेगास[2] आदि उस क्षेत्र में प्रारम्भ में अग्रणी रहे। सन्त इग्नातियस ऑफ़ लोयोला[3] 'ट्रिब्यूनल' की घातक न्याय-परंपरा का प्रवर्तक होने से अधिकतर निन्दा का पात्र हुआ। परन्तु इस काल उसके प्रवचन और पत्र गद्य की दिशा में एक शक्तिम शैली के द्योतक हुए। उसी धार्मिक चेतन का समर्थन बर्नार्दिनो[4] ने भी किया और जुआन द आविला[5] ने भी। इस दूसरे का शिष्य लुइस द ग्रानादा[6] अपने प्रवचनों, उपदेशों और रचनाओं में बड़ा समर्थ सिद्ध हुआ। उसके उपदेश असाधारण वाग्मिता के उदाहरण हैं। उसने अनेक लैटिन कृतियों के सुंदर स्पेनी में अनुवाद भी किए। उसके व्याख्यान रहस्यवादिता के सिद्धान्त भी भाषा के आधार पर से मधुर से मधुर वाणी में प्रस्तुत करते हैं। उस रहस्यवाद का एक सरल निरूपण फ्रांसिस्को द ओसुना[7] ने भी किया। ओसुना स्पेन के उस युग का एक विख्यात कृतिकार हो गया है। उसमें लुइस की-सी गहराई तो न थी परन्तु रहस्यवाद का स्पष्ट और सरल विवेचन उसीने किया। उसीका अनुकरण आलोन्जो द ओरोज्को[8] और फ्रांसिस्कन जुआन द लास एन्जिलिस[9] ने किया। जुआन स्वयं अपनी शैली में चित्रकार की क्षमता रखता था।

सान पेद्रो द आल्कान्तारा[10] रहस्यवाद को प्रेम का विज्ञान बना देता है। स्पेनी रहस्यवाद की पराकाष्ठा सान्ता तेरेसा द जसूज[11] ने की। वह साधुनी सर्वथा निपढ़ थी। परन्तु उसकी बहुश्रुत मेधा ने रहस्यवाद के क्षेत्र में इतने मौलिक प्रतीकों को रूप दिया कि उस आधार से अनेक नई रहस्यवादी धाराएं फूट पड़ीं। उसकी अनेक कृतियां उपलब्ध हैं। उनमें प्रसिद्ध 'लिब्रो द परफेक्सिओ' (१५८५) है। उसने भगवान के स्वरूप को पहचान कर उसमें रम जाने की पुकार उठाई। वह समाधि द्वारा अनेक बार अपनी चेतना अन्तर-निविष्ट कर एक प्रकार की तुरीयावस्था उत्पन्न कर लेती थी। उसकी कविताएं अद्भुत गीत-तत्वों से सरस हुईं। फ्रे लुईस द लिओन[12] तेरेसा की कृतियों का सम्पादक था। वही उसके उद्गारों को एकत्र करता था। स्वयं उसने अफलातूनी, इब्रानी और रहस्यवादी तत्वों का समुचित साहित्य प्रस्तुत किया। उसके चिन्तनों में उसका प्रकृति प्रेम प्रायः

१. Fray Hernando de Talavera (१४२८-१५०७); २. Alejo Venegas (१४९३-१५५४); ३. St. Ignatius of Loyola (१४९१-१५५६); ४. Bernardino de Laredo (१४८२-१५४५); ५. Juan de Avila (१५००-६९); ६. Luis de Granada; ७. Francisco de Osuna; ८. Alonso de Orozco (१५१२-९१); ९. Franciscan Juan de los Angeles; १०. San Pedro de Alcantara (१४९९-१५६२); ११. Santa Teresa de Jesus; १२. Fray Luis de Leon

झलक जाता है। उसकी काव्य-कृतिया तो मधुर है ही, गद्य रचनाए भी कुछ कम आकर्षण नही। उसके लिरिक अपनी गेयता मे रहस्यवाद को भुला बहुत ऊचे उठ जाते है। सानुजुआन द ला क्रुज[१] का जीवन जितना तप.शील था उसका गद्य भी उतना ही रहस्यवादी हुआ। परन्तु उसमे एक खूबी यह थी कि वह अपने प्रतीको और उनके भावो को पहचानने योग्य बना देता था। उस दशा मे उसकी कल्पना और शैली सहायक थी।

स्पेन के प्रारम्भिक साहित्य-निर्माण के युग मे इतिहास अथवा 'क्रॉनिकल' की रचना अन्य देशो की ही भाति सर्वथा अवैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न होती थी। तर्कहीनता उसकी शैली थी, रोचकता उसका उद्देश्य था। रेनेसा के युग मे इतिहास की जिस परपरा का विकास हुआ वह अपने पूर्व-पर तथा कारणो और परिणामो से भली प्रकार मडित थी। उसमें घटना के कारणों और विकास का पर्याप्त विश्लेषण होने लगा। फिलिप द्वितीय १५५६-९८ के विरुद्ध प्रबल मोस्को विद्रोह पर दियेगो हर्तादो द मेन्दोजा[२] ने अपना 'ग्रानादा का युद्ध' (गेर्रा द ग्रानादा) लिखा। कृति मे इतिहासकार ने वक्ताओ तक को उद्धृत कर साक्षात् द्रष्टा का चित्र उपस्थित कर दिया। जेरोनिमो जुरिता[३] मे दियेगो की साहित्य-शैली तो न थी परन्तु आलोचक की पैनी दृष्टि उससे कही अधिक थी। इसी प्रकार एस्तेवा द गारिबे[४], फ्लोरियन द ओकाम्पो[५], आम्ब्रासिओ द मोरालेस[६] आदि ने भी अनेक दिशाओ में ऐतिहासिक रचनाए की। जुआन द मार्याना[७] का 'स्पेन का इतिहास' १६०१ तो एक साहित्यिक अभिसृष्टि है जिसकी शैली का सौंदर्य समसामयिक समान रचनाओ मे नही मिलता। बिशप बार्तोलोमे द लास कासस[८] ने अपने इतिहास की पुकार अमेरिका के इडियनो के पक्ष मे उठाई। फ्रे जोजे द सिगुएन्जा[९] की इतिहास सम्बन्धी कृति क्लासिकल शैली मे लिखी गई है परन्तु रचयिता की वैयक्तिक चेतना का भी पूरा विकास हुआ है।

अनेक इतिहासकारों ने तो छदोबद्ध इतिहासो की रचना की। वस्तुतः उनकी कृतियों का रूप वीर-काव्यों-सा हो गया। इन रचयिताओ मे प्रधान बर्नार्द्रो[१०], बाराहोना[११], आलोन्जो[१२] फ्रे दियेगो[१३] आदि थे।

१. Sanjuan de la Cruz, २. Diego Hurtado de Mendoza; ३ Jeronimo Zurita (१५१२-८०), ४. Esteban de Garibay (१५२५-९९), ५ Florian de Ocampo (१४९९-१५५८); ६. Ambrosio de Morales (१५१३-९१); ७ Juan de Mariana; ८. Bishop Bartolome' de las Casas (१४७५-१५६६); ९. Fray Jos'e de Siguenza (१५४४-१६०६); १० Bernardo de Balbuena (१५६८-१६२७), ११. Barahona de Soto (१५४८-९५), १२ Alonso de Ercilla (१५३३-९४), १३. Fray Diego de Hojeda (१५७०-१६१५)

उपन्यासो की परम्परा तो वास्तव में जैसे सर्वत्र बाद में चली, स्पेन में भी उसका आरम्भ देर से हुआ। परन्तु वहां कथा-साहित्य काफी फूला-फला और उस साहित्य की अनेक कृतियां तो विदेशी कथा साहित्य की आधार बन गई। कहना न होगा कि प्राचीन कथा-साहित्य अधिकतर काल्पनिक ही था यद्यपि उसमें यथार्थ का जहां-तहां योग होता था। वस्तुत. पहला यथार्थ तत्वो से घुला-मिला उपन्यास -'तिरान्तो ब्लान्क' जुआन मारतोरेल' ने १४६० में लिखा। फिर 'एस्प्लान्दियान' 'पालमैरीन द ओलिवा', 'लिसुआरते द ग्रेकिया' और पिछले साल 'दोन फ्लोरिसेल द निकाया' तक के बाद एक १५५१ तक प्रकाशित हो गए। जिन उपन्यासो ने साहित्य में यश कमाया उनका आधार इस काल में लिखे गए रोमान्स ही थे। इस सम्बन्ध में इतना जान लेना ही पर्याप्त होगा कि पश्चात्कालीन उपन्यासो को अनेक बार इन रोमान्सों की ओर देखना पड़ा जो गद्य और पद्य दोनो में रचे गए थे।

प्रेमियो के प्रणय को आधार बनाकर चलने वाले इन रोमासों के अतिरिक्त अनेक ऐसे कथानक भी रोचक उपन्यास के रूप में लिखे गए जिनका आधार प्रणय न होकर स्पेन का ऐतिहासिक गौरव हुआ करता था। मूरों की विजय पर इस प्रकार की अनेक रचनाए हुईं। स्पेनी रोमासो की जो विशिष्ट शैली रेनेसा युग में विकसित हुई उसका कथानक अधिकतर 'धूर्त' से सम्बन्ध रखता है। धूर्त सम्बन्धी उपन्यासों की उस काल अनेक रचनाए हुईं। १५५४ में रचे 'लाजारिलो द तोरमेस' के तो अब तक १२२ संस्करण हो चुके है। जिससे उसकी लोकप्रियता सिद्ध है। उसके रचयिता का पता नही। उस काल के कथाकारों में मातिओ आलेमन' विख्यात थे। उसके उपन्यास 'गुजमान द आल्फाराशे' में एक धनी धूर्त का चित्रण हुआ है। इस प्रकार के बीसियों कहानियां धूर्तों, चोरों, कामुकों और सैनिको विशेषतः उपनिवेशों में नौकरी करने वालो के आधार पर लिखी गई।

स्पेन के रेनेसा काल के उपन्यासकारों में जिस प्रतिभाशाली व्यक्ति ने यूरोप के साहित्यकारो को अपने कृतित्व से अचम्भे में डाल दिया वह मिगुएल द सरवान्तिस' था। उसने उन कथानको की अनेक घटनाओं का अपनी प्रसिद्ध कृति 'दोन कुइजोते' (अंग्रेजी डान क्विक्जोट) में पिरो दिया। उसकी कृति न केवल स्पेन में ही लोकप्रिय हुई बल्कि सारी यूरोपीय भाषाओ में अनूदित हुई। अधिकतर उन साहित्यों में कथाकारों को उपन्यास लिखने की प्रेरणा सैरवान्तिस की उसी कृति से मिली। उसीपर अनेक भाषाओं के प्राथमिक उपन्यास अवलम्बित हुए। पहले सैरवान्तिस ने 'गालातिया' (१५८५) लिखा जिसमें कविता और साहित्यिक आलोचना दोनो थी। उसने अपने 'वियाजे देल पारनासो' में नये कवियों की प्रशंसा की। उसने कुछ नाटक भी लिखे। उसके कुछ उपन्यास आदर्शवादी

१. Juan Martorell; २. Mateo Alemani ३. Miguel de Cervantes

थे। 'ला गितानिला' और 'ला एस्पाञोला इंगलेसा' उसी श्रेणी की कृतिया थी। इसी प्रकार 'एल कैलोसोएक् स्त्रेमेजो' उसकी यथार्थवादी रचना थी। 'दोन किजोते' की व्याख्या मे अनेक पुस्तके लिखी जा चुकी है। और समीक्षको ने उसे अनेक प्रकार से समझने का प्रयत्न किया है। वस्तुत: वह मध्ययुगीय वीर-व्यवस्था (शिवेलरी) पर व्यग्य है। साथ ही भविष्य पर भी वह एक प्रकार की टिप्पणी है। तथ्य चाहे जो हो, वह कम से कम मानव अतीत का ऋद्ध विवरण और भविष्य का द्रष्टा नि सदेह है। वह अपने प्रकार का अनूठा उपन्यास है।

अनेक कथाकारो ने 'देकामेरान' के अनुकरण मे कहानिया लिखी। आतोनियो द एस्लावा[१] सालास बारबार्दिलो[२], कास्तिलो सोलोर्जानो[३], गोन्जालो[४] आदि उसी परपरा के कथाकार थे। स्पेनी भाषा मे सैरवान्तिस के भी अनेक अनुकरण हुए। जुआन पेरेज़ द मातालबा[५] ने उसका अनुकरण किया और मारिया द जायास इ सोतोमायोर[६] ने भी। मारिया ने नारी अधिकारो की रक्षा के लिए गैर कानूनी प्रणय को सराहा और उन्हीकी चेतना से अपने कथानक गढे। सैरवान्तिस की ही भाति उसके उपन्यासो का भी पश्चात्कालीन कथाकारो की कृतियों पर गहरा प्रभाव पडा।

इसी काल स्पेन के साहित्य-क्षेत्र मे उस शैली का आरभ हुआ जिसे 'बारोक'[७] कहते है। यह शैली केवल साहित्य मे ही नही थी, चित्रकला मे भी थी। यह रेनेसा, अफ्रीकी, लातीनी, अरबी सैद्धातिक चिन्तन, जैसूइत विचार-मूर्तन आदि सबका सम्मिश्रण थी। तप और काम, तर्क और अतर्क, पार्थिव और अपार्थिव सभी उसमे घुले-मिले थे और वह अद्‌भुत शालीन समष्टि बारोक कहलाई। उसकी व्याख्या अनेक प्रकार से हुई परन्तु स्पेन मे उसने धर्म-सुधार-विरोधी-भावना मे मध्ययुगीय वीर व्यवस्था और कामुक प्रवृत्ति की माग की।

जोज़े द वाल्दिविएल्सो[८] ने अत्यन्त सरल कविताए लिखी। जो बारोक-परम्परा मे थी। परन्तु उस परपरा का प्रतिनिधि कवि लुइस द गागोरा इ आर्गोते[९] था। उसके कविता-संग्रह 'लास सोलेदादिज' (निर्जनताए) और पालिफेमो की अनेक कविताए उत्तर-कालीन कवियो के लिए प्रमाण बन गई। उसकी कविताओ के कुछ पक्ति-शीर्षक इस प्रकार थे। 'मुझे सागरतट पर रोने दो' 'फूलो मे गाने वाला प्रत्येक पक्षी बुल-बुल नही,'

---

१. Antonio de Eslaba ; २. Salas Barbardillo (१५८१-१६३५) ३. Castillo Solorzano ; ४. Gonzalo de Cespedes Y Meneses (१५८५-१६३८) ; ५. Juan Perez de Montalban (१६०२-३८) , ६ Marin de Zayas Y Sotomayor (१५९०-१६६१) , ७. The Baroque , ८ Jose de Valdivielso (१५६०-१६३८) ; ९. Luis de Gongora y Argote

'प्रणय-कलह के लिए मैदान पंखों का' 'नीली घड़ियों में जब ऊषा गौतम होती है' और 'दिन लाल'।

जुआन द आर्गीजो[1] ने अपने विषाद और करुणा का प्रकटन स्पष्टार्थात्मक सॉनेटों में किया। पेद्रो द एस्पिनोज़ा[2] ने तप और प्रकृति-प्रेम का एकत्र निदर्शन किया। उसकी कविताओं में रूपकों और पौराणिक आख्यायिकाओं का भी उपयोग हुआ। मार्तिनेज द जोरेगी[3], फ्रान्सिस्को द रियोजा[4] और एस्तेबान मानुएल द विल्लेगास[5] ने भी गोंगोरा की शैली में ही अधिकतर अपनी रचनाए कीं। बारोक के रंग, श्रृंगार और मांसल अभिव्यक्ति की मांग फ्रांसिस्को द क्विवेदोई विलेगास[6] ने पूरी की। उसने मृत्यु-चिन्तन के बीच अभिराम जीवन की तृष्णा जगाई। उसकी पंक्तियों में सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य का स्रोत फूट पड़ा। वह अपनी कविताओं में स्पेनी राजनीति और दोन दिनेरो (धनीशाह) पर व्यंग्य-प्रहार करता है। व्यंग्य-कविताए तो उसने अनेक लिखीं। सुन्दर और शान्ति-दायिनी कविताए भी उसने पर्याप्त मात्रा में रचीं।

बाल्तजार ग्रासियान[7] ने अपने युग के ह्रास पर कविताएं लिखीं। अपने 'एल क्रितिकोन' में धीमान और शिष्ट, दुर्बल और रूखे और सबल प्राकृत मानव को, वह समान मानता है। उसकी रचनाओं के अनेक स्थल अपनी नैतिक ऋजुता के लिए प्रसिद्ध हैं।

बारोक शैली का सबसे सुन्दर रोमांटिक नाटककार लुइस वालेज द गेवारा[8] था। उसने अपने 'जूलियानो आपोस्ताता' में धर्म और भक्ति की शान प्रतिष्ठित की। 'एल कावालेरो देल सोल' में वह शानदार और चमत्कारी दृश्यों में विमुग्ध हो अशान्त और विद्रोही प्रवृत्तियों को चित्रित करता है। दोन सोल की मृत पत्नी के शरीर में प्रवेश होकर एक बनैला जीव सोल फिर से विवाह करने और अपना वारिस उत्पन्न करने को कहता है। 'एल दियाबोलो एस्ता एन सान्ति लाना' में लोपे भूत का चेहरा लगाकर 'क्रूर' पीटर को डराता है और इस प्रकार उससे अपनी वधू ले लेता है। 'ला सेराना द ला वेरा' में किसान की कन्या अपने बेवफा पति का पीछा कर उसे मार डालती है। पेद्रो काल्देरोन द ला बार्का[9] ने भी प्रायः इसी प्रवृत्ति से अपने नाटक लिखे। परन्तु उसकी शैली बड़ी प्रांजल थी। अनेक विरोधाभासों की रचना कर वह दिखा देता है कि उन सारे विरोधों के बावजूद, विकृत सत्य के पीछे भगवान की सत्ता है। अद्भुत डायलॉग और शब्द, ध्वनि, संगीत,

---

१. Juan de Argui Jo (१५६७-१६२२); २. Pedro de Espinosa (१५७८-१६५०); ३. Martinez de Jaure Gui (१५८३-१६४१); ४. Francisco de Rioja (१५८३-१६५६); ५. Esteban Manuel de Villegas (१५८६-१६६६); ६. Francisco de Quevedo Y Villegas; ७. Baltasar Gracian; ८. Luis Velez de Guevara; ९. Pedro Calderon de La Barca

सेटिंग से वह अभिराम नाटक प्रस्तुत कर देता है। उसके नाटको मे प्रसिद्ध 'एल ग्रा तियाओ देल मुन्दो', 'ला विदा एस सेजो' (जीवन स्वप्न है),'एल अलकाल्दे द जलामिया', 'एल मेदिको द सु ओनरा', और 'एल पिन्तोर द सु देजोनरा' है। इनमे से पिछले तीन नाटक बारोक प्रवृत्ति को पूर्वतः प्रकाशित करते है। अन्तिम मे दोन जुआन की कहानी है। काल्देरोन बारोक नाटक क्षेत्र का प्रधान कृती है।

तब का स्पेन रगमंच की दृष्टि से काफी आगे था। उस पृष्ठभूमि में फ्रासिस्को रोजास ज़ोरिल्ला[1] की नाट्य कृतिया विशेषत, व्यग कॉमेडी, पर्याप्त सफल हुई। आगोस्तिन मोरेतो[2] ने नाटको की शैली मे आचार और मनोविज्ञान का एक खास पुट दिया। लुइस क्विनोनेस द बेनावेन्ते[3] उस शैली का प्राय अतिम रचयिता था।

बारोक शैली की तब अनेक रचनाए धार्मिक क्षेत्र मे हुई। उस दिशा मे सोर मारिया द आग्रेदा[4], मिगुएल द मोलीनोस[5] और फ्रे होर्तेन्सियो फेलिक्स पाराविसिनो[6] विशेष प्रयत्नशील हुए। इनमे पिछला पादरी था और उसके प्रवचनो की भाषा नितान्त अलंकृत थी।

: ३ :

अट्ठारहवीं सदी

अट्ठारहवी सदी के मध्य बारोक शैली का स्पेन मे ह्रास हो चला। इसका एक कारण फ्रेंच उदार दृष्टिकोण का प्रभाव था। उस दृष्टिकोण का स्पेन मे प्रचार फ्रास मे जन्मे स्पेनी राजा फेलिपे पंचम और फर्नान्दो षष्ठम ने किया। परन्तु उस दिशा मे स्वय धार्मिक क्षेत्र के अनेक मनीषियो ने दूरगामी प्रयत्न किए। इनमे प्रधान फ्रे बेनितो जेरोनिमो फइजो इ मान्तिनिग्रो[7] था। उसके 'तिआत्रो क्रीतिको यूनिवर्सालि' और 'कार्ताज़ एरुदी-ताज' (पाडित्यपूर्ण पत्रों) ने अज्ञान, पूर्वाग्रह और अन्धविश्वास पर प्रहार किया। साथ ही उसने साहित्य और भाषा भी समृद्ध की। उसमे वोल्तेयर की-सी शकाशीलता न थी परन्तु स्पेनी समीक्षाशास्त्र को उससे बडी शक्ति मिली। उसने अरस्तू तक को न छोडा। उसके चिकित्साशास्त्र के ज्ञान की ओर सकेत किया। नारी के गौरव और अधिकारो का वह पक्षपाती था। उसकी कृतियो ने उस दिशा में अच्छा प्रचार किया। वनस्पति शास्त्र का पडित

१ Francisco Rojas Zorrilla (१६०७-४८); २. Agostin Moreto (१६१८-६९); ३. Luis Quinones de Benavente (मृ० १६५२); ४ Sor Maria de Agreda (१६०२-६५), ५. Miguel de Molinos (१६२८-९६); ६. Fray Hortensio Felix Paravicino (१५८०-१६३३), ७. Fray Benito Jeronimo Feijoo Y Montenegro

और साहित्यकार इतिहासकार फ्रे मार्तिन सार्मिएन्तो[1] उसका शिष्य था। उसके भाषा-सबधी विचारो का अध्ययन और प्रचार जेसुइट पादरी लोरेन्जो हेर्वास द पान्दुरो[2] ने किया। यह वैज्ञानिक भाषाशास्त्री था। इसी प्रकार जुआन आन्द्रेज[3] और एस्तेबान आर्तियागा[4] ने भी फेइजो की अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियो का अध्ययन किया। जनता के अन्धविश्वास पर फेइजो के मित्र जोजे फ्रासिस्को द इस्ला[5] ने अपने व्यग्य उपन्यास 'फ्रे गेरुन्दिओ द कम्पाजास' द्वारा किया। साथ ही गणित के पडित दोन दिएगो द तोरेस विल्लारोएल[6] ने समसामयिक साहित्यिक रिक्तता का भंडाफोड़ किया। उसने अपने 'सेजोज मोरालेज' (१७४३), 'विदा' और मसखरे पचागो द्वारा राष्ट्रीय ह्रास की ओर उगली उठाई। और बौद्धिक क्रान्ति की आवश्यकता सिद्ध की।

मानव कार्यों मे सापेक्ष्यता का सिद्धान्त जोजे कादाल्सो[7] ने प्रचलित किया। उसे नि.शेष प्रगति में विश्वास नही। न मनुष्य की स्वाभाविक नेकी मे ही था। उसने मूर (अरब) के दृष्टिकोण से तत्कालीन स्पेन की दशा पर पत्र लिखे। जो उत्कट व्यग्य प्रमाणित हुए। साथ ही उसने अनुवादो की शैली पर विचार प्रकट किए और यथार्थ तथा कृत्रिम ज्ञान की सही व्याख्या की। शिक्षण के सबध मे भी उसने अनेक दृष्टिकोणो से विचार व्यक्त किए। विश्वकोषीय ज्ञान का वह विरोधी था। उसे एक विषय का सागोपाग ज्ञान अधिक अभीष्ट था। फ्रेंच फिजिओक्रात दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित दोन गास्पर मेलचोर द जोवेलानोज[8] ने अपने 'दिस्कुर्सोज' (विचारों) और सस्मरणो द्वारा सार्वजनिक शिक्षा, नारी के अधिकारो और रगमचीय सदाचरण का प्रबल समर्थन किया। वह फ्रासीसी राज्यक्राति और प्रेस की स्वतन्त्रता का वैसे विरोधी था। दोन पेद्रो रोद्रिगेज द काम्पोमानेज[9] ने उसीकी भाति सार्वजनिक शिक्षा और न्याय आदि का समर्थन किया यद्यपि वह चर्च का विरोधी था।

शुद्ध साहित्य के क्षेत्र में दोन फेलिक्स मारिया समानिएगो[10] ने देशी सामग्री के आधार पर अपने 'फाबुलाज मोरालेज' लिखे। उस दिशा में विशेष यत्नवान तोमास द इरियार्ते[11] हुआ जिसने प्राचीन कहानियों के दृष्टान्तों को समकालीन कवियों पर घटाया।

१. Fray Martin Sarmiento (१६९५-१७७२); २. Jesuit P. Lorenzo Hervas Y Panduro (१७३५-१८०९); ३. P. Juan Andres (१७४०-१८१७); ४. P Eesteben Arteaga (ज० १७४७); ५. Jose Francisco de Isla (१७०३-८१); ६. Don Diego de Torres Villarroel (१६९३-१७७०); ७. Jose Cadalso (१७४१-८२); ८. Don Gaspar Melchor de Jovellanos (१७४४-१८११); ९. Don Pedro Rodriguez de Campomanes (१७२३-१८०२); १०. Don Felix Maria Samaniego (१७४५-१८०१); ११. Tomas de Iriarte (१७५०-९१)

उस दिशा मे विविध छदो मे उसने अपने ७६ 'फाबुलाज लितरारियाज' लिखे। उसने भी साहित्य मे देशीयता पर जोर दिया और स्वदेशी कथानको तथा शैलियो का महत्व प्रदर्शित किया। अपने 'दियारियो द लोस लितेरातोज' द्वारा इरियार्त ने नव क्लासिक-चेतना के समर्थक इग्नासियो द लुजान[1] पर प्रबल प्रहार किया। लुजान ने अपनी 'पोएतिका' (१७३७) मे अरस्तू और उसके इटैलियन व्याख्याताओ के साहित्यिक सिद्धान्तो का विकास किया। उसने अपने विचारो को काव्य तक ही सीमित रखा था। गद्य के क्षेत्र मे ग्रैगोरियो मायान्स[2] ने 'रेतोरिका' लिखी। दोन जुआन पाब्लो फोर्नेर[3] भी 'क्लासिकल' प्रवृत्ति का ही समर्थक था। फ्रेंच मॉडलो ने भी उसे आकृष्ट किया था, पर मूलत वह स्पेनी साहित्यिक सिद्धान्तो का ही हिमायती था।

शीघ्र ही फ्रेंच नाटकों के भी स्पेनी भाषा मे अनुवाद प्रस्तुत हुए। दोन रामोन द ला क्रूज इ ओल्मेदिला[4], मोलिए[5], बोमार्क[6], क्रेबिलो[7] आदि के नाटको का अनुवाद किया। उसके अपने नाटको की प्रवृत्ति अधिकतर नैतिक थी। उसने उनमे फ्रेंच शैली और टेकनीक का प्रयोग किया। उसकी कृतिया पर्याप्त लोकप्रिय हुई। वस्तुत इतनी कि मोरातीन आदि के यश को उसने मलिन कर दिया। दोन निकोलाज फर्नान्देज़ द मोरातीन[8] ने क्लासिकल अनुकरण मे अपना 'होर्मेजिन्दा' लिखा। उसके पुत्र लियान्द्रो फर्नान्देज़ द मोरातीन[9] ने क्लासिक और देशी दोनो की सम्मिलित शैली का प्रयोग किया। उसके क्लासिक दृष्टिकोण मे भी फ्रेंच शैली का समावेश था। उसने समकालीन नाटककारो पर गहरे व्यंग्य किए। उसने भी मोलिए के नाटको के अनुवाद और स्पेनी रूपान्तर किए। उसकी 'लडकियो की हुँकार' स्पेनी साहित्य की सुघडतम कॉमेडियो मे है। उसमे सशक्त नाटकीयता, फ्रेंच टेकनीक और स्पेनी मुहावरो का अनुपम प्रयोग हुआ है।

नव क्लासिकवाद का अभ्युदय लिरिक काव्य और साहित्यिक गद्य मे भी हुआ। जुआन मेलेन्देज वाल्देज[10] उसका प्रबल प्रचारक था। शैली की दृष्टि से वह शुद्धतावादी था। और उसने स्पेनी काव्यरूप को विशेष प्रश्रय भी दिया परन्तु वह फ्रेंच मानवतावादी विचारो से प्रभावित था। उसने काफी रचनाए की, प्रणय-प्रधान और नीतिपरक दोनो, और यद्यपि जहा-तहा उसने अमूर्त की भी व्यजना की। उसकी शैली बोझिल कही न हो पाई। अलकृत गद्य के क्षेत्र मे भी उसने अच्छा काम किया। दोन मानुएल जोजे किन्ताना[11] के ओड और दोन निकासियो अल्वारेज़ द सियेन्फुए-

१. Ignacio de Luzan (१७०२-५४), २. Gregorio Mayans (१६९९-१७८१), ३. Don Juan Pablo Forner (१७५६-९७), ४ Don Ramon de la Cruz Y Olmedilla (१७३१-९४), ५. Moliere; ६. Beaumarchais, ७. Crebillon; ८ Don Nicolas Fernandez de Moratin (१७३७-८०), ९. Leandro Fernandez de Moratin (१७६०-१८२८), १० Juan Melendez Valdes (१७५४-१८१७), ११. Don Manuel Jose Quintana (१७७२-१८५७)

गोज़[1] की करुण कृतियों पर उसका खासा प्रभाव पड़ा। साथ ही निकासियो गालेगो[2] ने नव क्लासिकवाद, सान्चेज़ बार्बेरो[3] ने मानवतावाद और [illegible] अल्बेर्तो लिस्ता[4] ने उसकी विरासत पाई। पर इसी काल धीरे-धीरे रोमांटिक और यथार्थवादी प्रवृत्तियां भी साकार होती जा रही थीं। उनका विशेष विकास अगली सदी में हुआ।

: ४ :

उन्नीसवीं सदी

स्पेन ने साहित्य की रचनाओं में इतनी रोमांटिक प्रवृत्ति नहीं दिखाई जितनी उसके सिद्धान्तों के निरूपण में। स्पेन में उन सिद्धान्तों का प्रचार हर्डर[5] और श्लेगेल[6] से सीखकर निकोलास बोल द फाबर[7] ने किया। वहां रोमांटिक शैली का विकास 'एल यूरोपियो' नामक पत्र द्वारा हुआ। दुके द रिवास[8] के 'एल मोरो एक्सपोसितो' की भूमिका में गालियानो[9] ने रोमांटिक सिद्धान्तों की सबलतम प्रतिष्ठा की। १८१४ और '३३ के बीच अनेक स्पेनी नागरिक फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड से लौटे और वहां जो कुछ उन्होंने उस दिशा में जाना-सुना था उससे स्वदेश की साहित्य चेतना में अभिवृद्धि की। लोपेज सोलर,[10] एस्प्रोन्स दा[11], दूरान[12], जोज़े गोमेज द ला कोर्तिना[13] आदि ने ह्यूगो[14], बायरन[15], बुतरवेक[16] की कृतियों के अनुवाद प्रस्तुत कर या उनके अनुकरण में अपनी रचनाएं कर रोमांटिक प्रवृत्तियों का प्रचार किया। रोमांस और ड्रामा संबंधी जर्मन विचार भी बड़ी तेज़ी से स्पेनी साहित्य की सिद्धान्त-कृतियों में भर चले। स्पेन की कृतियों में फिर भी इस उधार ली हुई प्रवृत्ति का उज्ज्वल रूपायन न हो सका। उसके ऐतिहासिक उपन्यासों और नाटकों का स्तर ऊंचा न उठा। हां, लिरिक काव्य और कहानियों की दिशा में निश्चय ही उसने मौलिक और सफल प्रयोग किए। उन क्षेत्रों में उसने स्थानीय रंग-राग का विकास किया। उस व्यापक स्थानीय रंग-राग का सांकेतिक नाम 'कोस्तुम्ब्रिस्ता' पड़ा।

१८३४ से १८४४ तक दस वर्ष स्पेन में रोमांटिक ड्रामा के थे। रंगमंच परिणामतः

१. Don Nicasio Alvarez de Cienfuegos (१७६४-१८०९); २. Nicasio Gallego (१७७७-१८५३); ३. Sanchez Barbero (१७६४-१८१९); ४. Alberto Lista (१७७५-१८४८); ५. Herder; ६. Wilhelm Schlegel; ७. J. Nicolas Bohl de Faber; ८. Duque de Rivas; ९. Galiano; १०. Lopez Soler; ११. Espronce Da; १२. Duran; १३. Jose Gomez de la Cortina; १४. Hugo; १५. Byron; १६. Bouterweck

तोलेस्फोरो द त्रवा इ कोसिओ[1] का 'गोमेज आरीयाज' (१८२८), पात्रीसियो द ला एस्कासूरा[2] का 'नीरेनी रोक' (१८३५), एन्रिक गिल इ कारास्को[3] का 'एल सेन्योर द बाम्बिब्रे' (१८४४) आदि सभी ऐतिहासिक उपन्यास थे। उजेनियो द ओचोआ[4] ने अपने उपन्यास 'एल आतो द फे' (१८३७) में दोन कार्लोस की कथा दुहराई। नाट्यकार और लिरिक कवि गर्त्रुदिस गोमेज द आवेल्लानेदा[5] के अनेक उपन्यासों में कम से कम दो—'मंजिको' (१८४६) और दोस मुजेरेस (१८४२) हृदयग्राही हैं। निकोमिदिज पास्तोर दियाज[6] के उपन्यास 'विल्लाहर्मोसा आ ला चीना' (१८५८) में करुण भावुकता का विकास हुआ।

धीरे-धीरे यथार्थवादी भावधारा भी उपन्यासों में बही। पेरेज एस्रिच[7] और जुआन द आरिजा[8] ने यथार्थवादी उपन्यासों का आरम्भ किया। फर्नान कावालेरो[9] ने लाक्षणिक रूप से यथार्थवाद का अपनी कृतियों में प्रयोग किया। उसका उपन्यास 'ला गोविओता' (१८४९) सागर-पक्षी-मल्लाह की नारी की स्वाभाविक कहानी है। धूप की तेजी, सड़कों का शोर, बच्चों की चिल्लपों, लोगों की दौड़-धूप इस स्वाभाविकता से चित्रित हुए हैं कि समाज जैसे कहानी में जीवित हो उठा है। उसके 'ला फामीलिया द आल्वारेदो' (१८५६) में उस किसान की कहानी है जो डाकुओं के साथ रहने लगा है और उनके साथ रहकर भी वह उनसे भिन्न है।

दोन पेद्रो आन्तोनियो द आलारकोन[10] की सुन्दरतम कृति 'तिकोनी टोपी' (१८७४) है। उसमें पर-पत्नी-गमन और प्रतिशोध का प्लाट विनोद में मुखरित हो उठा है। उसकी दो रचनाएं 'एल एस्कान्दालो' (१८७५) और 'एल निञो देला बोला' (१८८०) हैं।

'मसीआज' नाटक के रचयिता ने अपने और अन्य पत्रों में सामाजिक रीति-रस्मों के विरुद्ध अनेक व्यंग्य लिखे। अपने इन निबन्धों के लिए मारियानो जोज़े द लारा[11] प्रसिद्ध हो गया है। उसके निबन्धों ने यथार्थ की ओर लोगों का रुख स्पष्टतः फेर दिया। मेसोनेरो रोमानाज़[12] ने अपनी रचनाओं में पुराने माद्रिद के दृश्य चित्रित किए। उसके

---

१. Telesforo de Trueba Y Cossio (१७९९-१८३५), २. Patricio de la Escosura (१८०७-७८); ३. Enrigue Gil Y Carrasco (१८१५-४६); ४. Eugenio de Ochoa (१८१५-७२); ५. Gertrudis Gomez de Avellaneda (१८१४-७३); ६. Nicomedes Pastor Diaz (१८११-६३); ७. Perez Esrich (१८२९-९७); ८. Juan de Ariza (१८१६-७६); ९. Fernan Caballero; १०. Don Pedro Antonio de Alarcon; ११. Mariano Jose de Larra; १२. Mesonero Romanos (१८०३-८२)

संस्मरणात्मक लेख भी बडे सुन्दर है। दोन सेराफीन इस्तेवानेज काल्देरोन[1] की कृतिया रग-बिरगे लोक-चित्रो से भरी है। इसी प्रकार जोजे मारिया काद्रादो[2] ने सारे स्पेन के विविध सौदर्यों का बखान किया। जाइमे बाल्मेज़[3] ने अपने 'एल क्रितेरियो' (१८४५) मे इतिहास के तर्कसंगत दर्शन का विकास किया है। जुआन दोनोसो कोर्टेस[4] के उदारवादी विचारो तथा समाजवाद पर आघात किए।

कास्तुम्ब्रिस्ता (स्थानीयता) के आन्दोलन ने यथार्थवादी उपन्यास को अपने सिद्धान्त की चोटी पर पहुचा दिया। जोजे मारिया द पेरेदा[5] ने स्थानीय रग अपनी कृतियो पर खूब चढाए। उसकी प्रवृत्ति धार्मिक थी और भक्त की निष्ठा से उसने इस दिशा मे साधना की। वह उदार मध्यवर्गीयो पर प्रहार करते समय भी उनके प्रति सदय होता है, विशेषकर स्वतत्र विचारको के प्रति उनके प्रोत्साहन पर। वह कभी अपने देहातो को नही भूलता। उसकी यथार्थवादी प्रतिभा 'सोतिलेजा' (१८८५) और 'पेजाज अरीबा' (१८९५) में पूर्णतया खुल पडी है। पहली मे मछुओ की कहानी है, दूसरी मे एक नगर का निवासी प्रकृति के जादू का शिकार हो आस्ट्रिया के पर्वतो पर लुभा जाता है। उसका चरित्र-चित्रण तो इतना प्रौढ नही है, परन्तु उसका वर्णन अनुपम सुन्दर होता है। उसकी शैली बडी मनोहर है। सुन्दर डायलॉगो से भरी, सक्षिप्त, नन्दित पदावली से सयुक्त, जिसमे भाषा की काकली लोकबोली के हाशिये से चमक उठी है।

पेरेदा का उदार-चेता मित्र बेनितो पेरेज़ गाल्दोज़[6] उससे भी महान् साहित्यकार है। उसकी कृतियो का दायरा पेरेदा के दायरे से कही बडा है और अपनी उन्ही कृतियो मे वह स्पेन के समसामयिक समाज को ढाल देता है। अपनी ४७ 'नेशनल कहानियो' और ३३ 'समकालीन उपन्यासो' मे उसने तत्कालीन समाज, राजनीति, रूढिवादी परपरा पर राष्ट्रीय, सुधारवादी और आवश्यकतावश क्रातिकारी दृष्टिकोण से विचार किया है। उसकी रचनाओ मे प्रधान 'दोजा परफेकता' (१८७६), 'ग्लोरिया, (१८७७) और 'ला फामिलिया द ल्योन रोच' (१८७९) है। इनमे से पहले मे उसने धार्मिक असहिष्णुता का वर्णन किया है (तब का स्पेन यहूदी तथा अन्य विधर्मियो के रक्त मे नहा रहा था।) दूसरे मे जातीय असहिष्णुता का सत्यानाशी परिणाम प्रदर्शित है (ग्लोरिया एक यहूदी से प्रेम करने लगती है) और तीसरा ढुलमुल स्वतत्रता की ट्रेजेडी प्रस्तुत करता है।

---

१. Don Serafin Estebanez Calderon (१७९९-१८६७), २ Jose Maria Quadrado, ३ Jaime Balmes (१८१०-१४), ४ Juan Donoso Cortes (१८०९-५३); ५. Jose Maria de Pereda, ६ Benito Perez Galdos

दोन जुआन वालेरा[1] का दृष्टिकोण अधिक मनोवैज्ञानिक है और शैली अधिक प्राजल। 'आमोर ई मीस्तिका एरगाजोना' उसका आलोचनात्मक अध्ययन है जिसमें तप की निष्ठा स्थापित है। उसका उपन्यास 'पेपिता जेमिनज' (१८७४) व्यंग्यपरक है जिसमें प्रेम की महिमा मूर्त हो उठी है। तप और प्रेम का ही विरोध दिखाया गया और पारस्परिक तनाव वालेरा के 'एल कोमेन्डादोर मन्दोजा' (१८७७), 'दोन्ना लूज' (१८७६) तथा 'मोर्समोर' (१८६६) में भी है। जीवन के प्रत्यक्ष चित्र उसके 'लास इल्यूजियोनज देल दाक्तर फास्तीनो' (१८७५) और 'पासार्स द लिस्तो' में मूर्त हुए हैं। पिछली कृति का नायक तो अपनी कमी के कारण अपने को अपनी पत्नी के अयोग्य समझता है और उधर वह उसके साथ बराबर विश्वासघात करती जा रही है। वालेरा का एक अन्य उपन्यास 'गेनिओ द फिगुरा' (१८६७) भी इसी व्यंग्य-विरोध को प्रकाशित करता है। गंभीर दृष्टिकोण और मनोवैज्ञानिक चेतना में तो ये उपन्यास निश्चय ही प्रशस्य हैं। परन्तु डायलॉगों का विकास सामाजिक स्तर पर नहीं हो पाता और स्वाभाविकता पाण्डित्य के घटाटोप में लोप हो जाती है।

अकृत्रिम प्रकृतिवाद का पक्ष काउन्टेस एमीलिया पार्दो बजान[2] ने अपने प्रसिद्ध पैंफलेट 'ला केस्तियों पाल्पितान्ते' (१८८३) में सम्हाला। स्पेन के प्रकृतिवादी (नचरलिस्टिक) उपन्यासों में पहली बार एमीलिया ने स्थानीय चित्रण में मनोवैज्ञानिक सूझ से काम लिया। उसकी सर्वोत्तम कृति 'लोस पाजोज द उल्लोआ' (१८८६) है। उसका उपसंहार 'ला माद्रे नातुरालेजा' (१८८७) है। उस रचना में उसने गालीशिया के एक प्राचीन ह्रासोन्मुख कुल का अध्ययन किया है। 'ला त्रिबूना' (१८८२) भी उसकी प्रौढ़ कृति है जिसमें एक विद्रोही नारी की कहानी है। 'एल किजनन द सिनामोंतो' (१८८५) में एक रोमांटिक और कामुक क्लर्क के लिए सत्यानाश का चित्र है। 'मोरिजा' (१८८६) की करुण कहानी में यत्र-तत्र विनोद की लौ चमक जाती है। दोना एमीलिया[3] छोटी कहानियां भी उसी क्षमता से लिखती है जिससे अपने उपन्यास 'लास मेदियास रोजाज', और 'रिकोसिलिआदोज' उसकी सुन्दर सफल कहानियां हैं।

समाज के भ्रष्टाचार और चर्च के छल-कपट का भंडाफोड़ अर्मान्दो पालसियो वाल्देज[4] अपने उपन्यासों में करता है। 'मार्ता ई मारिया' (१८८३), 'ला हर्मोना सान-सान सुल्पिसियो,' (१८८६) और 'ला फे' (१८६२) इसी परंपरा के उपन्यास हैं। 'ला एस्पूमा' में पार्थिव जीवन का एक विशेष चित्र उतर पड़ा है। साथ ही अभिजात जीवन का 'एल

---

१. Don Juan Valera ; २. Countess Emilia Pardo Bazan ; ३. Dona Emilia ;
४. Armando Palacio Valdes

माइस्त्रोन्ते' (१८६३) मे और 'कादिज' के बहिरान्त का 'लोस माजोस द कादिज' (१८६६) मे। उसकी छोटी कहानिया भी बडी प्रौढ है। सौलो मे बच्चा अपने पिता को डूबते हुए देखता है। गजब की शक्ति है इस कहानी मे।

जासिन्तो ओक्तावियो पिसोन[1] के प्रकृतिवाद (नेचुरलिज्म) को उसकी कला के लिए कला प्रवृत्ति ने विकृत कर दिया है। वह इस विचार का समर्थक तो नही है, परन्तु उसकी भाषा की सुन्दरता और शब्दो का एकान्ततम चयन इसकी पुष्टि करते है। उसके 'लाजरो', 'पेकेजेसेज' आदि इसके प्रमाण है। पादरे लुइस कोलोमा[2] ने भी कैथॉलिक सिद्धान्तो और मानवीय नेकी पर जोर देने के लिए प्रकृतिवादी लक्षणो और दृश्यो का उपयोग किया है।

उस काल मे रगमच का भी नया सुधार हुआ। नाट्यकार, गीतकार, अभिनेता, अभिनेत्रियो ने भी उस दिशा मे अनेक नई सूझे प्रदर्शित की। उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध मे तो सभी प्रकार के नाटको की स्पेन मे बाढ-सी आ गई। जोज़े एककेगारे[3] ने अकेले ६० नाटक लिखे, जिनमे समसामयिक जीवन का प्रतिबिंब था। उस काल के बीसियो नाट्यकारो मे वस्तुत: साहित्यिक और सैद्धान्तिक मूल्यो को नाट्यकारिता की टेकनीक के साथ सही संयोग करने वाला विचक्षण नाट्यकार जाकिन्तो बेर्नाविन्ते[4] था। उसके नाटको का मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय है। यद्यपि स्पेन उसमे सर्वत्र बोलता है। उसकी कृतियो का मूलाधार नेकी-बदी है।

: ५ :

वर्तमान काल

१८६८ के युद्ध ने स्पेन की राजनीति कुण्ठित कर दी। उसका गौरव प्राय नष्ट हो चुका था और उसके उपनिवेश स्पेन के साम्राज्यवादी शिकजे से आज़ाद हो चुके थे। स्वय उनमे अपना साहित्य ऊचे तबके का एक ज़माने से प्रस्तुत हो रहा था। फिर भी यदि उनपर राजनीतिक सत्ता नही स्थापित की जा सकी तो कम से कम उन उपनिवेशो के साथ सास्कृतिक और साहित्यिक एकता तो स्थापित की ही जा सकती थी। इसी विचार के अनेक पोषक पिछली सदी के अन्त मे स्पेन मे थे। आलोचको ने उस दिशा की ओर सकेत भी किया।

---

१ Jacinto Octavio Picon (१८५३-१९२४), २ Padre Luis Coloma (१८५१-१९१४), ३. Jose Echegaray (१८३२-१९१६), ४ Jacinto Benavente

उस दिशा मे अग्रगी वार्तालोमे जोजे गालार्दो[१] था। उस [illegible] दोन मार्सेलीनो मेनेन्देज ई पेलायो[२] उससे भी आगे बढ़ गया। उसने [illegible] तत्व-महत्ता और साहित्य तथा कला-सौंदर्य का आधार माना। अपनी महान् [illegible] में उसने अरबो और यहूदियो के सांस्कृतिक आदानो को भी अंगीकार किया। वह साहित्य के रसास्वादन में सौंदर्य-विश्लेषण की शक्ति अनिवार्य मानता है, साथ ही साहित्यिक समीक्षा के लिए भाषा-शास्त्रीय और ऐतिहासिक ज्ञान आवश्यक।

उस राष्ट्रीय ह्रास के विषय मे जो स्पेन में विवाद चला उसमें अनेकों [illegible] ने भाग लिया जिससे आलोचना, यद्यपि सदा वह आलोचना साहित्यिक ही न थी परन्तु उसमे प्रौढ चिन्तन शैली का प्रयोग तो निरन्तर ही हुआ, साहित्य को शक्ति मिली। इन आलोचको मे प्रधान आगेल गानिवेत[३], मिगुएल द उनामुनो[४] आजोरिन (होजे मार्तीनेज)[५] और जोजे ओर्तेगा द गासेत[६] थे। अन्य विशिष्ट और विवादास्पद विषयों पर निम्नलिखित समीक्षको और चिन्तको ने अपने विचार प्रगट किए। रूबियो द ओर्स[७], मादारियागा[८], रोद्रीगेज मरीन[९], रामोन मेनेन्देज पिदल[१०], मिगुएल आर्तिगास[११], सैन्ज रोद्रिगेज[१२], वालबुएना प्रात[१३], एन्त्राम्बसागुआज[१४], दामासो[१५], अमादो अलोन्सो[१६] और दियाज प्लाजा[१७]। ये प्राय. सभी जीवित है।

हमारे समकालीन राजनीतिक और सामाजिक उपन्यासकारों में प्रधान पियो-बारोजा[१८] है। उसने शोहदो, लुटेरो आदि की मुसीबतो का अपने उपन्यासों में चित्रण किया है। 'ला-बुस्का', 'माला हिएर्बा' आदि उसी प्रकार की कृतियां हैं। पूंजीवाद के विरुद्ध विद्रोह कर सकने वाले सर्वहाराओ का चित्रण उसके 'आरोरा रोजा' (लाल सवेरा १९०४) मे हुआ है। यह उपन्यास रूसी क्रान्ति के पहले का है। परन्तु अपनी किसी रचना में बारोजा स्पेन को नही भूल पाता। विन्सेन्ते ब्लास्को इबानेज[१९] ने भी अनेक उपन्यास लिखे है। उसकी कृतियां अधिकतर धर्म-विरोधी हैं। उसका 'आपोकालिप्स के के चार घुडसवार' (१९१६) बहुत लोकप्रिय हो गया है।

रामोन पीरेज द आयाला[२०] ने अपने उपन्यासो में धर्मव्यवस्थित गार्हस्थ्य सदाचार

---

१. Bartolome Jose Gallardo (१७७६-१८५२); २. Don Marcelino Menendez Y Pelayo (१८५६-१९१२); ३. Angel Ganivet (१८६२-९८); ४. Miguel de Unamuno; ५. Joes Martinez Ruiz (जन्म १८७४); ६. Jose Ortega Y Gasset; ७. Rubio Y Ors; ८. Madariaga; ९. Rodriguez Marin; १०. Ramon Menendez Pidal; ११. Miguel Artigas; १२. Sainz Rodriguez; १३. Valbuena Pratt; १४. Entrambasaguas; १५. Damaso; १६. Amado Alonso; १७. Dias-Plaja; १८. Pio Baroja (ज० १८७२); १९. Vicente Blasco Ibanez (१८६७-१९२८); २०. Ramon Perez de Ayala (ज० १८८०)

के स्थान पर विश्रृंखलित यौन सम्बन्ध का चित्रण किया है। उसमे व्यग्य भी कम नही, परन्तु वह उसके मनोवैज्ञानिक सविस्तार रसिया जीवन के चित्र को नीरस नही होने देते। यौन सौदर्य जो जीवन से हटकर स्वप्न देश मे चला जाता है, रामोन मारिया देल वाले इक्लान[1] ने विशेष अकित किया है।

लिरिक काव्य की आधुनिक प्रेरणा वस्तुत स्पेनी अमेरिका ले आई, रूबेन दारियो[2] मे। उसीने आधुनिक कवियो के लिए लिरिक का मार्ग प्रशस्त किया। आन्तोनिओ माकादो[3] के लिरिक सौदर्य सत्य और भगवान के लिए अपने अन्तर मे झाकते है।—अन्धकार से अन्धकार की ओर! एक उदाहरण—

> कल मैने स्वप्न देखा, कि मैने देखा भगवान् को और
> कि मै बोला भगवान् से और मैने कि भगवान् ने
> मेरी बात सुनी—तब मैने स्वप्न देखा, कि मैने स्वप्न देखा

जुआन रामोन जिमेनेज़[4] ने भी अन्तर्निविष्ट चेतना से ही अपना मार्ग आलोकित किया है। उसके मूलाधार निराशा, शून्य और माया (इलूजिओन) है। उससे अधिक सार्थक कविता जोजे मारिया गाब्रिएल इ गलान[5] और पेद्रो सालिनास[6] की है। फेदेरिको गार्सिया लोर्का[7] सुरियलिस्ट (अवचेतन अथवा अतिचेतन) कवि है। इनके अतिरिक्त अनेक कवि स्पेन मे आज विविध प्रकार के काव्य प्रयोग कर रहे हैं। पिछले गृहयुद्ध के बीच और बाद भी कुछ अच्छे साहित्य का स्पेन मे सृजन हुआ है। परन्तु वस्तुत सुन्दर साहित्य विशेषत. काव्य की अभिसृष्टि स्पेन मे नही, स्पेनी अमेरिका मे हुई है।

: ६ :

स्पेनी अमेरिका

सोलहवी सदी मे ही अमेरिका के स्पेनी उपनिवेशो मे किसी न किसी मात्रा मे साहित्य रचना होने लगी थी। अमेरिका मे अनेक स्पेनी बोलने वाले देश है। जैसे उत्तर अमेरिका मे मैक्सिको, और दक्षिण अमेरिका मे चिली, क्यूबा, कोलबिया, वेनेजुएला, ग्वातेमला, इक्वेडोर, पेरू, अर्जेन्टाइना, उरूगुए, ब्राजील आदि। यहा हम नितान्त सक्षेप मे, केवल (अधिकतर आधुनिक) साहित्यकारो का उल्लेख करेंगे। ये

१ Ramon Maria del Valle-Inclan (१८६९-१९३६), २. Rubendario; ३. Antonio Macando (ज० १८७५); ४ Juan Ramon Jimenez (ज० १८८१), ५ Jose Maria Gabriel Y Galan (१८७०-१९०५), ६ Pedro Salinas (ज० १८९२), ७ Federico Garcia Lorca (१८९९-१९३६)

अधिकतर ऐसे होंगे जिन्होंने अपना प्रभाव स्वदेश के साहित्य पर डाला है, अथवा अन्तर्राष्ट्रीय यश कमाया है। अन्यथा विस्तार इतना बड़ा है कि प्रधान साहित्यकारों अथवा स्पेनी अमेरिका की साहित्यिक प्रगति का साधारण परिचय भी स्थान की असुविधा उत्पन्न कर देगा।

अर्जेन्टाइना में यथार्थवादी ड्रामा की परिणति फ्लोरेन्सियो सान्चेज़[1] ने की। वह पैदा तो उरुगुए में हुआ था परन्तु जीवन उसने अधिकतर अर्जेन्टाइना में बिताया। सान्चेज़ इब्सन का अनुयायी था और प्लाट के निर्माण में उसकी प्रतिभा अद्भुत क्षमता रखती थी। उसके चरित्र स्पष्टाकृतिक हैं और देहात तथा नगर दोनों के जीवन से आकृष्ट हुए हैं। दर्शकों में अपने नाटकों द्वारा भावान्दोलन उत्पन्न करने में वह बेजोड़ है। राष्ट्रीय प्रभाव भी उसमें काफी है। वह स्वयं समाजवादी विचारों से प्रभावित था। उसने प्रायः २० नाटक लिखे जिनमें सबसे अधिक प्रशंसा 'मीजो एल दोतार' (१९०४) और 'ला ग्रिंगा' को मिली है।

वर्तमानवादी यथार्थ शैली के साहित्यकारों में अग्रणी पेरू का रहने वाला मानुएल गोन्ज़ालेज़ प्रादा[2] और क्यूबा का जोज़े मार्ती[3] थे। प्रादा पेरू में विचार-क्षेत्र का नेता था और साहित्य में भी वह शक्तिमान आलोचक हो गया है। उसने रूढ़िवादिता पर गहरा आघात किया और राजनैतिक तथा धार्मिक व्यवस्थाओं पर उसने निर्भीक और निर्दय चोट की। कोई शक्ति उसे उसके मार्ग से हटा न सकती थी। न उसे धन का लालच जीत सकता था न दण्ड का भय। वह देश के तरुणों की नवचेतना के क्षेत्र में प्रेरणा बन गया। गद्य की उसकी शैली नितान्त प्रखर थी। वह बड़ी ऊंची कोटि का कवि था। उसने छन्द को कुछ नये रूप और काव्य की भाषा को नये शब्द दिए। जोज़े मार्ती क्यूबा की आज़ादी का पहला स्तम्भ था। अत्याचार के प्रति घृणा और समकालीन व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह उसकी कृतियों को गति प्रदान करते थे। दो-दो बार वह देश से निर्वासित कर स्पेन भेज दिया गया। फिर न्यूयार्क में रहकर वह क्यूबा की सेवा में तत्पर हो गया। १८९२ में उसने एक क्रान्तिकारी दल का निर्माण किया। वह लड़ते हुए मारा गया। क्यूबा का तो वह राष्ट्रीय हीरो था। उसका साहित्यिक प्रभाव उसके राजनीतिक प्रभाव से भी ऊंचा था। वह अमेरिका के नितान्त मौलिक लेखकों में से था। उसकी शैली में गज़ब की मर्म-स्पर्शिता और असाधारण शालीनता थी।

रूबेन दारियो[4] का उल्लेख अन्यत्र किया जा चुका है। वह स्पेनी अमेरिका के कवियों में सबसे महान् था। वहां का वही पहला पेशेवर लेखक भी था। अपनी कृति 'आज़ूरे' (१८८८) द्वारा उसने, वर्तमानवादी आन्दोलन का सूत्रपात किया। और

१. Florencio Sanchez (१८७५-१९१०); २. Manuel Gonzalez Prada (१८४४-१९१८); ३. Jose Marti (१८५३-९५); ४. Ruben Dario (१८६७-१९१६)

'प्रेजाज प्रोफानाज' (१८९६) द्वारा उसकी परिणति की। स्पेन और स्पेनी अमेरिका दोनो पर उसका काफी गहरा प्रभाव पडा। उसकी प्रतिभा असामान्य थी और छद की दिशा मे भी उसने कुछ नये प्रयोग किए। 'जीवन और आशा के गीत' (१९०५) मे उसकी कविता नितान्त सरल और अद्भुत सुन्दर बन पडी है। उसने 'याकी' साम्राज्यवाद का प्रबल विरोध किया। वह उत्पन्न तो दूर के नीकारागुआ मे हुआ था परन्तु घूमता यूरोप और उत्तर अमेरिका मे रहा।

स्पेनी अमेरिका के गद्यकारो मे उरूगुए के जोज़े एंरिक रोदो[1] का स्थान बडा ऊचा है। वह निबन्धकार और दार्शनिक था। उसने अपने बाद की पीढी पर विचारो से गहरा प्रभाव डाला। उसका प्रधान ग्रन्थ 'आरिएल' था। उसकी शैली प्राजल और प्रभावशाली है। वह स्पेनी अमेरिका का सबसे बडा निबन्धकार माना जाता है। उसने चितन के अतिरिक्त साहित्यिक समीक्षा मे भी निबन्ध लिखे। उसके निबधो की भाषा बडी अलकृत है।

वर्तमानवाद साहित्य के प्रधान स्पेनी निर्माताओ मे ही रूफिनो ब्लाको फोम्बोना[2] भी था। वह उपन्यासकार और लेखक था। उसने वेनेजुएला के समाज पर अपना गहरा प्रभाव डाला। वह अत्याचार तथा राजनीतिक असभ्यता का प्रबल विरोधी था और अपना अधिकतर जीवन उसे प्रवास मे ही बिताना पडा। उसकी शैली का भी काफी अनुकरण हुआ। उसका उपन्यास 'केन्तोज अमेरिकानोज' (१९०४) मे वेनेजुएला की राजनीतिक समस्याओ का अच्छा प्रतिबिम्ब मिलता है।

स्पेनी अमेरिका के उत्तर वर्तमानवादी साहित्यिको मे प्रधान अर्जेन्टाइना के मानुएल गाल्वेज़[3] और रिकार्दो गिराल्दिज़[4], उरूगुए के होरासियो किरोगा[5], मैक्सिको के मार्यानो आज़ुईला[6], क्यूबा के कार्लोस लोवेइरा[7], कोलम्बिया के जोजे उस्तासिओ रिवेरा[8] और वेनेजुएला के रोमूलो गालेगोस[9] गिने जाते हे। इन्होने अपने-अपने देश मे उपन्यास के क्षेत्र मे काफी नाम कमाया। गाल्वेज ने अर्जेन्टाइना के जीवन को अपनी कहानियो और उपन्यासो मे चित्रित किया। उसने अपने उपन्यासो मे वेश्या से लेकर कैथोलिक मिशन तक का अंकन किया है। उसका सर्वोत्तम उपन्यास 'नार्मल स्कूल की शिक्षिका' है। किरोगा स्पेनी अमेरिका का सुन्दरतम कहानीकार माना जाता है। उसकी तुलना पो और मोपासा के साथ की जाती है। वर्णन की दृष्टि से उसकी 'सोलितेयर', 'सिर कटी मुर्गी'

१. Jose Enrique Rodo (१८७२-१९१७), २ Rufino Blanco Fombona (१८७४-१९४४), ३. Manuel Galvez (ज० १८८२), ४. Ricardo Guiraldes (१८८६-१९२७); ५. Horacio Quiroga (१८७८-१९३७), ६. Mariano Azueela (ज० १८७३), ७ Carlos Loveira (१८८२-१९२८), ८ Jose Eustacio Rivera (१८८९-१९२८), ९. Romulo Gallegos (ज० १८८४)

और 'किराए के हाथ' नामक कहानियां उसकी कृतियों में सुन्दरतम है। घाजइन्ना ने वैद्य का पेशा करते हुए भी साहित्य में बड़ा नाम कमाया। उसकी प्रारम्भिक कृतियों में ही सर्वहारा वर्ग के प्रति उसका दायित्व प्रकट हो गया। उसने मैक्सिको की क्रांति सम्बन्धी उपन्यास भी अनेक लिखे। अधिकतर वे मैक्सिको नगर के निचले स्तर के लोगों का अंकन करते है।

'लोस द अबाजो' (१९१५) अनेक समीक्षकों की दृष्टि में उसकी सफलतम कृति है। लोविहरा ग्यूवा रा सबसे महान् उपन्यासकार है। वह समाज का प्रबल आलोचक है। उसने अपने देश के सर्वहाराओं की स्थिति सुधारने में जीतोड़ परिश्रम किया। अपने उपन्यास 'अमर' में उसने तलाक के कानून की पुकार की। उसका अन्तिम उपन्यास 'जुआन' उसकी सबसे सुन्दर कृति है। वह असाधारण यथार्थवादी है और उसने अपनी कृतियो में सामाजिक समस्याओ पर विचार किया है। उसके चरित्र मनुष्य के जीवन में जैसे सीधे ले लिए गए है। उसने साहित्य के निर्माण म सौंदर्य से अधिक सत्य को महत्व दिया। रिवेरा की सुन्दरतम रचना 'वोरतेक्स' है। उसमें उसने कोलम्बिया के फैले मैदानों और जगलों का चित्र खीचा। उसके चरित्रो के चित्रण ने रबड़ उत्पन्न करने वालों के पक्ष मे ससार को जीत लिया। उनकी दयनीय स्थिति को उसने खोलकर रख दिया और उनको सतानेवालों की स्वार्थपरता पर घने आघात किए। रिवेरा ने अपनी कविताओं का भी एक सग्रह प्रकाशित किया था। गोलेगोस अपने उपन्यास 'दोया बर्बेर' (१९२९) द्वारा जगत्-प्रसिद्ध हुआ। उसके माध्यम से वेनेजुएला का जीवन ससार के साहित्य मे मूर्त हुआ। उसकी इस कृति में सभ्यता और बर्बरता के संघर्ष का अंकन है।

चिली के साहित्यिक जीवन मे लुसिला गोदोय अलकायागा[१] ने भी पर्याप्त यश अर्जित किया। उसका कवि नाम गाब्रिएला मिस्त्रल था। गाब्रिएला उच्चकोटि की कवयित्री है और निचले वर्ग के पक्ष में अधिकतर रचनाएं करती है। उसके आकर्षण के विशेष केन्द्र मां और बच्चे भी है। उसकी कविताओं में बड़ी सादगी, गेयता और भावुकता है। मृत्यु सम्बन्धी सॉनेटों ने उसे पर्याप्त यश दिया। १९४५ मे उसे नोबुल पुरस्कार मिला।

वर्तमानवाद काव्य का निकटतम विकास एक नई दिशा मे हुआ। जिसे साबधि फ्रेंच लिरिककारों से प्रभावित कवि 'शुद्ध काव्य' कहते है। इस क्षेत्र के कवियों म टेकनीक की मौलिकता का विशेष पक्षपात है। उन्होंने अधिकतर तुकान्त छन्द का त्याग कर अतुकांत छन्द का प्रयोग किया है और उस दिशा में अनेक नई शैलियां चलाई है। उनकी कविता (गद्य भी) सरल होती हुई भी अनेक नई प्रतीकों से भरी होती है। और उनकी उपमाएं सर्वथा विचित्र। स्पेनी अमेरिका में इस क्षेत्र के कवियों में प्रधान मैक्सिको

१. Lucila Godoy Alcayaga (ज० १८८९) or Gabriela Mistral

के तोरेमबोदेत[1] के पद्य और गद्य दोनो स्पेनी अमेरिकी साहित्य की परिवर्तनशील प्रवृत्तियों के साथ ही उनके निजी विकास के भी प्रमाण है। उसकी शैली मे सरल से लेकर नितान्त अवचेतन 'सुपर रियलिज्म' तक का विकास प्रस्तुत है। पहली स्थिति के द्योतक उसके 'गीत' (१९२२) है और दूसरी का उसका 'निर्वासन' (१९३०)। उसकी सुन्दरतम कृतिया नितात कवित्वपूर्ण गद्य मे है। उसकी शैली मे गजब की साहित्यिक शालीनता है। नेरूदा[2] का प्राकृत नाम नेफताली रेयस है। वह आज के स्पेनी-अमेरिकी तरुण कवियों मे सबसे प्रतिभाशाली है। उसके प्रारम्भिक सग्रह 'दावत का गीत'—ने ही उसकी गहरी काव्यानुभूति का परिचय दिया था, यद्यपि उसकी प्रतिभा की प्रतिष्ठा एकात वर्तमानवादी कृति 'क्रेपुस्कुलम्' से हुई। उससे उसकी मेधा की गहराई का परिचय मिला। १९२७ से जो वह राजनीतिक दौत्य के प्रसग मे देश-देश घूमता रहा है, उससे उसका कृतित्व और भी चमक उठा है। पहले उसकी कविताओ मे एक आत्मगत निष्ठा थी और रोमाटिक प्रवृत्ति से बोझिल निराशा का अकन होता था। परन्तु आज नेरूदा ससार के जन-कवियो मे अग्रणी है। राजनीतिक स्वार्थपरता को उसने बहुत पास से देखा है। और उसके विरुद्ध उसकी लेखनी ने बगावत की है। उसका स्वर आज सर्वहारा वर्ग के थके नथुनो मे प्राण फूक रहा है। वह साम्यवादी यथार्थवादी है और उस की कविताए निरतर 'प्रोलोतारिएत' के अधिकारो तथा शाति के पथ मे मुखरित हो रही है। उसकी अनेक कविताए आज देश-विदेश के मजदूरो और उनके अधिकारो के लिए लडने वालो की जबान पर है। परन्तु स्टालिनग्राड वाली कविता तो नितात असाधारण है। उसमे अनुपम शक्ति और गति है।

---

१. Jaime Torres Bodet (ज० १९०२), २ Pablo Neruda (Neftali Reyes ज० १९०४)

१५. स्वीड साहित्य

: १ :

मध्यकालीन साहित्य, बाइबिल के अनुवाद

स्वीडन मे लिपि का पर्याप्त प्रयोग प्राचीन काल मे ही होने लगा था। वहा ८०० ई० से भी पूर्व के अभिलेख मिले है। इनसे ज्ञात होता है कि वहा लिरिक और वीर काव्य तभी लिखे जा चुके थे। नार्व और आइसलैड की भांति 'एड्डा' साहित्य-सा भी कुछ प्रस्तुत हो चुका था। ११वी सदी के आरम्भ मे ईसाई धर्म के प्रचार के बाद वहा का वह साहित्य नष्ट कर दिया गया। प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य प्रान्तीय न्यायालयो के कानून से सम्बन्ध रखता है।

१३वी सदी तक स्वीडन का दक्षिणी और पश्चिमी यूरोप मे सम्बन्ध स्थापित हो चुका था और उसके विद्यार्थी पेरिस यूनिवर्सिटी मे पढने लगे थे। मध्यकालीन साहित्य की विख्यात साहित्यकारिणी सन्त बर्गिता[1] थी। उसके प्रवचन यूरोप मे भिन्न-पढे जाने लगे और उसका वादस्तेना का मठ शिक्षा का केन्द्र बन गया। मध्यकालीन अवतर साहित्य अधिकतर छदोबद्ध इतिहास था। तब की कुछ कविताए, बैलेड और लोकगान मिले है।

१५२७ मे स्वीडन प्रोटेस्टैट सम्प्रदाय का हिमायती होने से चर्च की सरक्षा मे अलग हो गया जिससे उसकी शिक्षा को कुछ क्षति हुई। स्वीड ओलौस पेत्री[2] लूथर[3] का शिष्य था। उसने तत्कालीन स्वीड साहित्य को अपनी रचनाओ से पुष्ट किया। उसके प्रवचनों की शैली अत्यन्त प्रौढ है। बाइबिल की 'नई पोथी' का उसका अनुवाद इतना सुन्दर हुआ कि पेत्री 'स्वीड गद्य का जनक' कहलाने लगा। १७वी सदी मे जो स्वीडन मे एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ उससे उस देश के साहित्य का बड़ा लाभ हुआ। १४७७ मे ही स्थापित 'उप्साला' यूनिवर्सिटी[4] पहले केवल पुरोहितों की संस्था थी जो १७वी सदी मे अब गुस्तवस अदोल्फस[5] के प्रयत्न से वास्तविक यूनिवर्सिटी बनी और आज भी अपनी बौद्धिक क्रियाशीलता के लिए विख्यात है।

स्वीडन का पहला लिरिक कवि लार्स विवालियस[6] था। वह घुमक्कड़ था जो बिना रुपये-पैसे के यूरोप में फिरा करता था। एकाध बार तो उसे कैद भी भुगतनी पड़ी।

१. St. Birgitta ; २. Olaus Petri ; ३. Luther ; ४. Uppsala University ; ५. Gustavus Adolphus ; ६. Lars Wivallius (१६०५-६६)

उसने प्रकृति और पर्यटन सम्बन्धी कुछ बडी सुन्दर कविताए लिखी। वैसी कविताए स्वीडन मे तब तक नही लिखी गई थी। वे बडी लोकप्रिय हुई। अन्य यूरोपीय देशो की ही भाति स्वीडन मे भी ड्रामा पहले बाइबिल के दृश्यो के प्रकाशन तक ही सीमित था।

जार्ज स्टियर्नहिएल्म[1] ने प्राचीन परपरा मे अपना प्रसिद्ध काव्य 'हरक्यूलिज' १६४८ मे लिखा जो १६५८ मे प्रकाशित हुआ। जार्ज उस काल का प्रतिनिधि लेखक माना जाता है। उसके दो शिष्यो—सामुएल कोलबस[2] और उर्बन हियार्ने[3] ने भी क्रमशः 'ओदी सतिकी' और ट्रैजेडी 'रोजीमूण्डा' लिखकर साहित्य को गति दी। साहित्य मे स्टियर्नहिएल्म का उत्तराधिकारी वस्तुत. हाक्विन स्पेगेल[4] था जिसने 'गुदज वर्क ओख व्हीला' लिखा। अब इटैलिन साहित्य से मॉडल चुने जाने लगे थे और रोंसार्ड[5] के आधार पर स्कोगेकार बार्गबो[6] ने अपनी शृगारिक कविताओ का सग्रह 'वेनेरीद' (१६८०) प्रकाशित किया। मध्यवर्गीय समाज के कवि जोहान रूनियस[7] ने विवाह और मृत्यु पर कुछ बडी मार्मिक कविताए लिखी। धार्मिक कविताओ मे मुख्य बाइबिल की 'स्तोत्र-पुस्तक' थी जिसे बिशप जेस्पर स्वेदबर्ग[8] ने सम्पादित किया और जो १८१६ तक स्वीडन के गिरजाघरों मे चलती रही थी। १७वी सदी मे पहली बार वहा पेशेवर अभिनेता और थ्येटर हुए। स्वीडी नाट्यकारो के रचे नाटक अब स्वीडन मे खेले जाने लगे।

: २ :

अठारहवी सदी मे विज्ञान और साहित्य सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण रचनाए हुई। स्वतन्त्रता का युग (१७१८-७२) स्वीडन के लिए स्वर्णयुग-सा था जब देश मे अनेक पडितो का प्रादुर्भाव हुआ। गणित और भौतिक विज्ञान मे सैमुएल क्लिगेतस्त्येर्ना[9], गणितज्ञ ज्योतिषी आन्डर्स सल्सियस[10], रासायनिक तोर्बर्न बर्गमान[11] आक्सीजन का अन्वेषक रासायनिक कार्ल विलहेल्म शीले[12] रहस्यवादी हो जाने के पूर्व शुद्ध वैज्ञानिक एमानुएल स्वीडेनबोर्ग[13] तब के वैज्ञानिक जगत मे विख्यात हुए।

साहित्य के क्षेत्र मे कार्ल वान लिने[14] भाषा-शास्त्री था और स्वेन लागरब्रिंग[15] विख्यात इतिहासकार। फ्रेंच और अग्रेज़ी साहित्यिक प्रवृत्तियो ने स्वीडी साहित्य को भरपूर प्रभावित किया। स्वीडन का विशिष्ट साहित्यकार तब ओलोफ-वौन-बालिन[16] था।

१. Georg Stiernhielm (ज० १५८८), २. Samuel Columbus (१६४२-१६७६), ३. Urban Hiarne (१६४१-१७२४), ४. Haqvin Spegel (१६४५-१७१४), ५. Ronsard, ६. Skogekar Bargbo; ७. Johan Runius (१६७६-१७१३), ८. Bishop Jesper Svedberg (१६५३-१७३५); ९. Samuel Klingenst Jerna (१६६८-१७६५), १०. Anders Celsius (१७०१-४४), ११. Torbern Bergman (१७३५-८४), १२. Garl Wilhelm Scheele (१७४२-८६); १३. Emanuel Swedenborg (१६८८-१७७२); १४. Carl Von Linne (१७०७-७८), १५. Sven Lagerbring (१७०७-८७), १६. Olof Von Balin

उसने एडिसन के 'स्पेक्टेक्टर' के अनुकरण में अपना साप्ताहिक 'आर्गस' (१७३२) निकाला और वोल्तेयर के 'हेन्रियाद' से प्रेरणा पाकर 'स्वेन्स्का फ्रीहेतेन' (स्वीडी स्वाधीनता) नामक 'एपिक' लिखा। उसका 'सागा ओम हास्तेन' लोकजीवन पर आधारित रूपक है। वह राजकवि भी था और उसने अनेक किताबें लिखीं। उसके साप्ताहिक ने स्वीडन के साहित्यिक जीवन में एक क्रांति उपस्थित कर दी। सदी की प्रतिनिधि कवयित्री रूसो से प्रभावित और स्वीडन में फ्रांस प्रवृत्तियों की पोषिका हेडविग चार्लोत्ते नोदेनफ्लिक्त[1] हुई। स्वीड भाषा के कुशल कवि काउण्ट गुस्ताफ फ्रेड्रिक गिलेन बोर्ग[2] और काउण्ट गुस्ताफ़ फ़िलिप[3] उसी महिला कवि के अनुयायी और भक्त थे। उसके बाद दूसरा प्रसिद्ध साहित्यकार केलग्रेन[4], जिसने 'स्टाक होल्मस्पोस्तेन' निकाला, हुआ। फिर दो विशिष्ट कवि—वालेनबर्ग[5] और बेलमान[6] साहित्य क्षेत्र में उतरे। कवि जेकोब वालेन-बर्ग ने चीन की यात्रा का आत्मकथात्मक वृत्तान्त लिखा। बेलमान और वालेनबर्ग, स्वीडन के पहले हास्यकार थे। कार्ल माइकेल बेलमान उस देश के प्रधान लिरिककारों में हो गया है। वह मध्यवर्ग का कवि था, उस वर्ग का प्रिय गायक।

गुस्ताव-युग के आरम्भ में दो विशिष्ट कवि हुए 'स्कोर्डोर्ना' का रचयिता योहान गाब्रिएल ओक्सेन्स्तिएर्ना[7] और गुदमुन्द जोरन आद्लरबेथ[8]। इस दूसरे ने राजकीय रंगमंच के लिए अनेक नाटक लिखे। उसी काल केलग्रेन ने, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, प्रभूत रूप से सुरुचि के साथ साहित्य का संस्कार शुरू किया। उसने देश-प्रेम की कविताएं भी लिखीं। परन्तु फ्रांस के रूसो और जर्मनी के 'तूफान और आग्रह' (स्तूर्म उण्ड द्रांग) का वास्तविक प्रतिनिधि स्वीडन में तोमास थोरिल्द[9] था। उसने 'ग्रान्स्कारेन' (आलोचक) नाम की एक पत्रिका प्रकाशित करनी शुरू की। आलोचना सिद्धांतों पर उसका और केलग्रेन का काफी दिनों तक कथोपकथन चला जिसमें उस दिशा में काफी चर्चा हुई। थोरिल्द को राजनीतिक कारणों से स्वदेश छोड़ जर्मनी की शरण लेनी पड़ी जहां वह प्रोफेसर हो गया। उस काल का वह विशिष्ट गद्यकार था। उस काल का, विशेष-कर 'तूफान और आग्रह आन्दोलन' का कवि बेंग्त लिदनर[10] था। थोरिल्द संसार को सुधारना चाहता था। उसके विपरीत लिदनर का जीवन के प्रति रुख सर्वथा नकारात्मक

१. Hedvig Charlotte Nodenflycht (१७१८-६३) ; २. Count Gustaf Fredrik Gyllen Borg (१७३१-१८०८) ; ३. Count Gustaf Philip Creutz (१७३१-८५) ; ४. Kellgren; ५. Jakob Wallenberg (१७४६-७८) ; ६. Karl Mikael Bellman (१७४०-९५) ; ७. Johan Gabriel Oxenstierna (१७५०-१८१८) ; ८. Gudmund Joran Adlerbeth (१७५१-१८१८) ; ९. Tomas Thorild (१७५९-१८०८) ; १०. Bengt Lidner (१७५७-९३)

था। उसके ओपेरा 'मेदिया' (१७८४) मे उस काल की कुछ सर्वोत्तम कविताए हैं। उसकी प्रसिद्ध कविता है, 'इत्तेर्स्ता दोमेन' (अन्तिम निर्णय, १७८८) जो अन्य यूरोपीय साहित्यों के धार्मिक आन्दोलनो के अनुकूल थी।

उसी काल कार्ल गुस्ताफ ऑफ लियोपोल्द[1] ने भी अपनी दार्शनिक कविताए, नाटक और व्यग्य लिखे। आना मारिया लेनग्रेन[2] मध्यवर्गीय यथार्थवादी कविताओ के लिए देश मे काफी विख्यात हुई। स्वीडी काव्यक्षेत्र मे शिशु को पहली बार विषय बनाने वाला कवि फ्रास माइकेल फ्रान्ज़ेन[3] था।

पहला स्वीडी उपन्यास १७४२-४४ मे प्रकाशित हुआ। उसका लेखक हेन्रिक मोर्क[4] था। परन्तु लोग विदेशी उपन्यासो को अधिक पसन्द करते थे। इससे उनका प्रचार विशेष नहीं हुआ। हा, नाटको की रचना काफी हुई। स्वीडन का रगमच जर्मन और विशेषत: फ्रेंच प्रभाव से चमका। फिर गुस्ताफ तृतीय की सरक्षा मे वह बढ चला। तभी ओपेरा की भी प्रतिष्ठा हुई। जोहान ओलोफ वालिन[5] ने 'रोमान्टिक' प्रवृत्तियो का प्रचार किया। उस साहित्य प्रवृत्ति का प्रधान नायक अत्तरबोम[6] था जो शेलिंग[7] से प्रभावित था। उसी भावना से प्रेरित लोरेन्ज़ो हेमरशोल्ड[8] ने स्वीडन का पहला साहित्यिक इतिहास लिखा। वह काल स्वीडन के साहित्य का स्वर्णयुग था। उसके प्रतिनिधिस्वरूप बोम ने अपने दो पौराणिक नाटक 'आनन्द का द्वीप' और 'नीला पक्षी' लिखे। उसी काल तेग्नेर[9], स्तान्यलियस[10] और गेइजेर[11] ने अपनी सुघड़ काव्य कृतिया प्रस्तुत की जिनकी गणना उस देश के साहित्य की अमर रचनाओ में की जाती है। एरिक स्टोबर्ग[12] का कविनाम 'वितालिस' था। वह रोमान्टिक आदर्शवादी था। वह काफी मानी था और यक्ष्मा का शिकार होकर भी लोगो की सहायता लेने से उसने इनकार कर दिया। गेइजेर को १८०३ में स्वीडी अकेडेमी का उसके वीरकाव्य पर पुरस्कार मिला। वह इगलैड भी कुछ काल जाकर रहा था और उसका उसपर खासा असर पडा था। उसने प्राचीन विषयो पर कुछ बड़ी मधुर कविताए लिखी। वह उपसाला विश्वविद्यालय मे इतिहास का अध्यापक नियुक्त हुआ और रोमांटिक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक विवेचना की। आचार्य की हैसियत से वह बड़ा प्रभावशाली हो गया। परन्तु उस युग का महान कवि तेग्नेर था। वह आन्दोलनो मे रहता हुआ भी स्वतत्र रूप से कविताएं लिखता था। उसकी कविताओ को राजनीतिक

---

१. Carl Gustaf af Leopold (१७५६-१८२९), २ Anna Maria Lenngren (१७५५-१८१७); ३. Frans Michael Franzen (१७७२-१८४७); ४. Henrik Mork (१७१४-६३), ५. Johan Olof Wallin, ६ Atterbom, ७. Schelling, ८. Lorenzo Hammarskjold (१७८५-१८२७); ९. Tegner १०. Stagnelius, ११. Geijer, १२ Eric Stoberg (Vitalis) ([illegible]),

पृष्ठभूमि से वस्तुत. प्रेरणा मिली। स्वीडन पर रूस की विजय पर उसने अपनी प्रसिद्ध कविता 'सेना का युद्धगीत' (१८०८) लिखा। उसका राजनीतिक कल्पनास्रोत उससे भी अधिक 'देत एविगा' (अन्तहीन, १८१०) और 'स्वेआ' (१८११) में फूटा और इन्हींके कारण वह विशेषत: स्वीडन का राष्ट्रीय कवि कहलाने लगा। उसकी सबसे विशिष्ट कृति 'फ्रितिओफ्स सागा' (१८२०-२५) है।

आल्मकिस्त[1] था तो अत्तरबोम का समकालीन परन्तु उसकी कृतियों का प्रकाशन पीछे हुआ। फ्रेंच उदारवादी आन्दोलन से प्रभावित उसने अनेक लोकप्रिय निबन्ध और कहानियां श्रमिकों के पक्ष में लिखीं। इस प्रकार वह यथार्थवादी आन्दोलन का अग्रदूत बन गया और उस दिशा में निरंतर बढ़ता हुआ प्रायः अराजक क्रान्तिकारी हो गया। वह उस काल का सर्वोत्तम उपन्यासकार तो था ही, आदरणीय नाटककार भी था। उसके पहले औगुस्त ब्लांश[2] और फ्रान्स हडबर्ग[3] ने स्वीडी भाषा में कुछ नाटक लिखे थे। आल्म किस्त के बाद दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यासकार फ्रेड्रिका ब्रेमर[4] था।

धीरे-धीरे स्कैन्डिनेविया (नार्वे, स्वीडेन, डेन्मार्क) के देशों में पारस्परिक एकता का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। उस आन्दोलन के कवि आस्कर पात्रिक स्टुर्जनबेकर[5] (उपनाम ओर्वार आद), कार्ल विलहेल्म आगुस्त स्त्रान्दबर्ग[6] (उपनाम तालिस क्वालिस) और गुनार वेनेरबर्ग[7] थे। वैसे उस काल का सबसे विशिष्ट कवि योहन लुड्विग रूनेबर्ग[8] था, यद्यपि उसका अधिक सम्बन्ध फिनलैंड के साहित्य में है।

सही अर्थ में महान कृतिकार स्वीडन में १८७० के बाद हुए। विक्तर रिदबर्ग[9] और कार्ल स्नोइल्स्की[10] उस दिशा में विशेष उल्लेखनीय हैं। रिदबर्ग उदारवादी था परन्तु उसकी कविता रोमान्टिक आदर्शवादी है, रहस्यवादी भावधारा लिए हुए। उसमें रूप और टेकनीक का आकर्षण और आदर्शवाद की दार्शनिकता है। वह निम्नवर्गीय था। उसके विपरीत स्नोइल्स्की संभ्रांतकुलीय था यद्यपि उदारवादी आन्दोलन को समझने का उसने निश्चय प्रयत्न किया। अपनी कविताएं उसने आनन्दविभोर होकर लिखीं। 'स्वेन्स्का बिल्डर' (स्वीडी चित्र) में उसने तीन सदियों के बिखरे चित्र अंकित किए। रिदबर्ग निस्संदेह उससे विशिष्ट कवि था। पर जहां तक प्रभाव का सम्बन्ध है साहित्य के

---

१. Almquist; २. August Blanche (१८११-६८); ३. Frans Hedberg (१८२८-१९०८), ४. Fredrika Bremer; ५. Oscar Patrick Sturzen-Becker (Orvar Odd १८११-६९); ६. Carl Vilhelm August Strandberg (Talis Qualis १८१८-७७); ७. Gunnar Wennerberg (१८१७-१९०१); ८. Johan Lodvig Runeberg; ९. Viktor Rydberg; १०. Garl Snoilsky (१८४१-१९०३)

इतिहास मे तत्कालीन आन्दोलन प्रकृतिवाद के प्रतिनिधि स्ट्रिन्डबर्ग[1] का महत्व अधिक है। उस आन्दोलन के अन्य प्रतिनिधि हाइडेन्स्ताम,[2] फ्रोदिंग,[3] सेल्मा लागरलोफ[4] आदि है। स्ट्रिन्डबर्ग की रचनाए १९वी सदी के साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण देन मानी जाती हैं। बड़ी जल्दी वह उस दार्शनिक आदर्शवाद से मुक्त हो गया था जो उस काल स्वीडी यूनिवर्सिटियों को अपने सिद्धातो से जकडे हुए था। उसने अपने पहले वर्तमानकालीन ड्रामा 'मास्टर ओलोफ' (१८७८) मे अपने क्रातिकारी यथार्थवादी उत्साह की घोषणा की। 'मास्टर ओलोफ' की ही भाति उसका 'रोदा रूम्मेत' (लाल कमरा, १८७९) स्वीडी साहित्य का पहला महान सामाजिक उपन्यास था। वह फिर भी समाजद्रोही था। उसने 'गिफ्ताज' (विवाहित, १८८४) मे नारी-स्वतन्त्रता का विरोध किया। अपने दृष्टिकोण के कारण उसे स्वदेश छोडकर जाना पडा। १८८७ मे उसने देहाती जीवन व्यक्त करते हुए अपनी भाषा का सुन्दरतम उपन्यास 'हेम्सोबोर्नी' (हेम्सो के निवासी) लिखा। उसका 'फ्रोकेन जुली' सारे यूरोप मे खेला गया। उसने अनेक रहस्यवादी ड्रामा भी लिखे। अपनी रचना 'स्वर्ता फानोर' (स्याह झडे) १९०४ मे उसने अपने पुराने मित्रो पर आघात किया। अपने अतिम विशिष्ट लिरिक ड्रामा, 'स्तोरा लान्दस्वागेन' (प्रशस्त राजमार्ग १९०९) मे उसने आत्मविरोधी जीवन का हल ढूढने का प्रयत्न किया।

स्ट्रिन्डबर्ग के यथार्थवादी युग का प्रसार १८७९ से १८८८ तक है। उस काल के साहित्यिको मे दो प्रधान नारिया एने चारलोती एडग्रेन[5] और विक्टोरिया बेनेडिक्टसन[6] है। इनमे से पहली ने ड्रामा और कहानिया लिखी और वह इब्सन तथा स्ट्रिन्डबर्ग से प्रभावित थी। दूसरी ने कहानिया और उपन्यास लिखे। उसका साहित्यनाम अर्न्स्ट आल्ग्रेन[7] था। उसका जीवन दु खमय था। इसलिए उसने आत्महत्या कर ली। उस दल का सबसे प्रतिभावान कवि ओला आन्सन[8] था। उसने अच्छी कविताओ के अनेक सग्रह प्रकाशित किए जिनसे उसे समर्थ लिरिककार की प्रतिष्ठा मिली। अल्बर्ट उल्रिक बाथ[9] ने भी अपनी लोकप्रिय कविताओं द्वारा यश कमाया। गुस्ताफ आफ गेइजरस्ताम[10] यथार्थवादी उपन्यासों और नाटकों का लोकप्रिय रचयिता था।

तोर हेडबर्ग[11] ने पहले कुछ यथार्थवादी उपन्यास लिखे। फिर इब्सन की प्रेरणा से यथार्थवादी नाटक। उसने कुछ प्रतीकवादी कविताए भी लिखी। आस्कर लेवर्तीन[12]

---

१. Strindberg ; २. Heidenstam ; ३ Froding ; ४ Selma Lagerlof ; ५. Anne Charlotte Edgren (१८४९-९२), ६ Victoria Benedictson (१८५०-८८), ७. Ernst Ahlgren ; ८. Ola Hanson (१८६०-१९२५) ; ९. Albert Ulrik Baath (१८५३-१९१२) ; १०. Gustaf af Geijerstam (१८५८-१९०९) ; ११. Tor Hedberg ; १२. Oscar Levertin (१८६२-१९०६)

ने हेइदेन्स्ताम[1] के साथ नये रोमांटिक आंदोलन का प्रारम्भ किया। उसने अपने 'विजे-ण्डेर-ओसविजोर' (ख्याते और बैलेड) में रोमांटिक परंपरा का निर्वाह किया। और 'न्या दिक्तर' (नई कविताएं, १८९४) में अभिजात अभि[illegible]वाद की ओर वह झुका। उसकी कविताओं में एकाकीपन का चित्रण है। वह विद्वान और आलोचक था। स्वीडी संस्कृति का वह प्रेमी था। परन्तु युग के साहित्य का नेतृत्व वर्नेर फान हाइडेन्स्टाम ने किया। वर्नेर अभिजात कुलीय था। स्वास्थ्य सुधारने के लिए उसे विदेश जाना पड़ा। दक्षिण और पूर्व में वह फिरता और उधर की संस्कृति का अध्ययन करता रहा। २९ वर्ष की आयु में उसने अपनी कविताओं का संग्रह 'वालफार्त आग्व वान्द्रिंग्सार' (तीर्थयात्रा और पर्यटन के वर्ष) प्रकाशित किया। उसने झट स्वीडन के कवियों, आलोचकों और पाठकों का हृदय जीत लिए। सात वर्ष उसने 'कविताएं' प्रकाशित कीं। उससे पहले उसने 'रेनसान्स' निबन्ध और आत्मकथा 'हान्स आलिएनस' (१८९२) लिख लिया था। उसने यथार्थवाद को पुराना और हेय कहकर उसके स्थान पर [illegible]वाद की प्रतिष्ठा किया। उसकी कविताओं ने स्वीडन के अतीत के प्रति लोगों की सुप्त निष्ठा जगा दी।

हाइडेन्स्टाम की विशिष्ट गद्यकृतियां 'कारोलिनेर्ना', 'हेलिगा बिर्गितास', 'पिल्ग्रि-म्स्फार्द' और 'फोल्कुन्गत्रादेत' थीं। उनके जरिए उसने चार्ल्स बारहवें और संत बिर्गिता आदि के प्राचीन उदात्तचरितों को पत्थर की मूर्ति की भांति कोरकर रख दिया। क्लासि-कल के प्रति उसकी प्रेरणा उसकी इस अतीत साधना में बड़ी सहायक हुई। उसने प्रोलेता-रियन उसूलों को स्वीडन के लिए घातक बताया। पीछे की ओर मुड़ कर देखने वाले राष्ट्रीयतावादियों की यह सर्वत्र लचर दलील रही है। उसने स्ट्रिन्डबर्ग के साथ भी वाद-विवाद शुरू किया। और उसके विचारों के विरोध में अपने निबंध 'सर्वहारावर्ग का ह्रास और पतन' (१९११) लिखे। उसके बाद वह अपने पाठकों से केवल पद्य में बोला। १९१५ में उसने 'न्या दिक्तेर' (नई कविताएं) प्रकाशित कीं। इनके भाव गम्भीर हैं, रूप प्रौढ़ हैं, आवेग अंकन स्फटिक की भांति स्पष्ट हैं। उसके बाद उसने केवल अपनी आत्मकथा लिखी जो उसकी मृत्यु के बाद छपी। हाइडेन्स्टाम को नोबुल पुरस्कार मिला।

सेल्मा लागेरलोफ[3] की प्रतिभा शालीन अतीत के अध्ययन से द्युतिमती हुई। उसने अतीत के अध्ययन में भौगोलिक सीमाएं न बांधीं। दक्षिणी स्वीडन में वह कई वर्ष तक शिक्षिका रह चुकी थी। उसके बाद उसने अपना उपन्यास 'गोस्ता बर्लिंग्स्सागा' लिखा, जिसे लेवर्तिन ने हाइडेस्टाम-लेवर्तिन परंपरा की पहली कृति मानी। उसमें कहानी कहने की क्षमता अनुपम थी। उसके उपन्यास ने पाठकों का मन मोह लिया। स्वीडन का तो वह

---

१. Heidenstam (Verner Von Heidenstam १८५९-१९४० २. Saint Birgitta ; ३. Selma Lagerlof

सर्वप्रिय उपन्यास है ही, अब वह उसकी सीमाओं को लाघ चुका है। तीस भाषाओ मे उसका अनुवाद हो चुका है और आज वह ससार के साहित्य का अग है। इसी प्रकार उसने अपने दूसरे उपन्यास 'चमत्कार' (१८९७) मे इटली (सिसिली) के देहाती जीवन का सबल चित्र अकित किया। इसी प्रकार 'ईसा-शिशु', 'खजाना', 'जेरूसलेम' मे उसने पौर्वात्य वातावरण मे किसान और श्रद्धालु का चित्र खीचा। उसे भी नोबुल पुरस्कार मिला।

गुस्ताफ फ्रोदिग[1] पर हाइडेन्स्टाम का गहरा प्रभाव पडा था। उसकी कविताओ का पहला सग्रह 'गितार ओख दागरमोनिका' (१८९१) उसका प्रमाण है। लेवर्तीन[2] ने उसकी कविताओ को पसद नही किया, परतु जनसाधारण की वे बडी प्रिय बन गई। उनमे काफी हास्य है। उसका दूसरा सग्रह 'न्या दिक्तर' (१८९४) भी हास्य-प्रधान है परन्तु 'स्ताक ओख पिलकर' में विषाद की धारा बही।

उपसाला सदा साहित्यिको का केन्द्र रहा था। फ्रोदिग ने स्वय एक विद्यार्थी एरिक एक्सेल कार्लफेल्ट[3] को दिखाकर कहा था कि वह उसे कवित्व शक्ति मे लाघ जाएगा। एरिक कार्ल फेल्ट समर्थ कवि हुआ। उसके सग्रह 'फ्रिदोलिन्स विजोर' और 'फ्रदोलिन्स लुस्तगार्दे' किसान जीवन के सम्मोहक चित्रो को लेकर साहित्य-क्षेत्र मे उतरे और अपनी अमिट छाप छोड गए।

उस युग का अन्तिम विशिष्ट कृतिकार हाल्स्ट्राम[4] था। वह करुणा से भरा है और उसके चित्रण अधिकतर निराशाजनक है। वह बडी सहृदयतापूर्वक 'विल्स्ना फागलर' (१८९४) और 'एन गायल-हिस्टोरिया (१८९५) मे अभागो के चित्र अकित करता है। उसके ड्रामा उपन्यासो के-से ऊचे नही, फिर भी काफी प्रशसित हुए है। उनमे उसने अपनी स्वस्थ मानवता का परिचय दिया है। उसकी सबसे अधिक लोकप्रिय कृति 'चार नदय' (१९०८) है। उसमे प्रायः सेल्मा लागरलोफ की कला से किसानो का जीवन अकित हुआ है।

: ३ :

नई कविता का उदय

१८८० और १९०० का साहित्य स्वीडन के साहित्यिक इतिहास मे महान माना जाता है। परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि वह सदी के साथ ही समाप्त हो गया। वस्तुत. उसके अनेक विशिष्ट निर्माता बीसवी सदी के पिछले दशक तक लिखते रहे है। कम से कम उन्नीसवी सदी के पिछले दशको मे जिस लोकसाहित्य और किसान-परपरा का साहित्य मे विकास हुआ वह मर न सकी। उस दृष्टिकोण ने स्वीडन की सस्कृति

१. Gustaf Froding २. Levertin ३. Erik Axel Karlfeldt ४ Per Hallstrom [illegible]

का अनुसधान कर लोक चेतना जगाई, नगर-नगर, गांव-गांव में संग्रहालय (म्यूजियम) स्थापित किए।

लोक-सस्कृति का एक प्रबल प्रतिनिधि कार्ल एरिक फोर्स्लुंड[1] हुआ। जिसने श्रमिक-वर्ग के लिए एक विशिष्ट स्कूल की स्थापना की। उस वर्ग के अनेक प्रतिनिधि वहां से कवि और उपन्यासकार होकर निकले। फोर्स्लुंड का उपन्यास 'स्टोरगार्डन' जो कि [illegible] के सिद्धान्तो पर आधारित था, काफी उत्साह से पढ़ा गया। बाद में उसने अपना समय पुरातत्व के अनुसन्धान में लगाया। कार्ल गुस्ताव ओसियननिल्सन[2] फ्रोडिंग और अंग्रेज कवियो द्वारा प्रभावित है और अपनी कविताओं में सामाजिक सहानुभूति के चित्र प्रस्तुत करता है। उससे कही अधिक राजनीतिक रुचि का कवि तूरे नरमान[3] है परन्तु उसकी प्रेरणा विशेषत: यौन है, घोर शृगारिक।

अनेक नये कवियों और उपन्यासकारो की प्रेरणा स्वीडन की पिछली सदी के राष्ट्रवाद और राजनीतिक तथा सामाजिक चेतना से उदासीन हो गई है। अनातोल फ्रांस[4], आस्कर वाइल्ड[5], हरमान बाग[6] से प्रभावित उनका दृष्टिकोण अधिकतर निराशा-मूलक हो गया है। उस दल का एक प्रतिनिधि ह्यालमार सोदरबर्ग[7] है जिसकी प्रभाववादी टेकनीक और दु:शील नायकों ने आस्कर-द्वितीय युग के स्वीडी पाठकों को व्यथित कर दिया था। बो बर्गमान[8] ने अपनी कहानियों में जीवन के प्रति उसी दृष्टिकोण का अकन किया है। परन्तु प्रधानत: वह लिरिककार है। धीरे-धीरे पिछले सालों में उसकी सहानुभूति ने एक नया रूप धारण किया है, मानवतावादी।

सोदरबर्ग, बर्गमान, विलहेल्म एकेलुड[9], आंडर्स ओस्टर्लिंग[10] आदि सभी पिछले काल के कवियों ने अधिकतर देश के स्थानीय सौन्दर्य को ही अपनी विविध शैलियों से काव्य में व्यक्त किया। बात यह है कि जिस अभिजातीय व्यक्तिवाद का साहित्य में इस सदी के आरम्भ में उदय हुआ था वह चल न सका और फिर यथार्थवादी सामाजिक समस्याओ को साहित्य का विषय बनाना पड़ा। स्वेन लिदमान[11] जो उस व्यक्तिवाद का नेता था, धार्मिक साहित्य उत्पन्न करने लगा और व्यक्तिवाद सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध हुआ। उसपर पहली गहरी चोट अपनी कहानियो द्वारा अलबर्ट एंगस्त्रोम[12] ने की। उसने कृत्रिम मनोवैज्ञानिक परम्परा के विपरीत प्राकृतिक स्वस्थ यथार्थवाद का समर्थन किया

१. Karl Erik Forsslund (१८७२-१९४१); २. Karl Gustav Ossiannilsson (जन्म १८७५); ३. Ture Nerman (जन्म १८८६); ४. Anatole France; ५. Oscar Wilde; ६. Hermann Bang; ७. Hjalmar Soderberg; ८. Bo Bergman (जन्म १८६९); ९. Vilhelm Ekelund (जन्म १८८०); १०. Anders Osterling (जन्म १८८४); ११. Sven Lidman (जन्म १८८२); १२. Albert Engstrom

और किसानों तथा मजदूरों के रग-बिरगे चित्र अपनी कृतियो मे प्रस्तुत किए। ओलोफ होग्बर्ग[1] ने यही रुचि प्रारम्भिक लोक साहित्य मे प्रदर्शित की। होग्बर्ग की ही भाति उत्तरी स्वीडन के प्रतिनिधि साहित्यकार पेले मोलिन[2] और लुड्विग नोर्दस्त्रोम[3] भी थे। लुड्विग के उपन्यासो की पृष्ठभूमि सामाजिक है। पहले महासमर के बाद उसने सामाजिक रिपोर्ताज लिखे। ह्यालमार बर्गमान[4] ने मध्य स्वीडन के जीवन के चित्र अपनी कृतियो मे अकित किए। बर्गमान में कल्पना की बडी शक्ति थी, उसकी शैली भी थोड़ी-बहुत रोमान्टिक है। कई बार तो उसका दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक होकर दॉस्तॉएवस्की[5] की याद दिलाने लगता है। उसके कुछ उपन्यास विनोद-प्रधान है, कुछ विषाद-प्रधान। बर्गमान नाटककार भी सुन्दर था और उस दिशा में तो केवल स्ट्रिन्डबर्ग ही उससे बडा कहा जा सकता है। उसने कुछ दिनो हालीवुड मे फिल्मी सिनेरियो भी लिखे। सीगफ्रिड सीवेर्त्स[6] भी इसी साहित्यिक दल का था और व्यक्तिवाद को छोड जीवन के सक्रिय पहलुओ का अकन करने लगा था। उसकी कृतियों ने समसामयिक जीवन का चित्रण अपना आदर्श बनाया। उसकी प्रतिनिधि रचना 'एल्डेन्स आर्क्सकेन' (१९१६) प्रथम महासमर के बीच लिखी गई थी। उसकी रचनाओं मे सबसे सुन्दर पारिवारिक उपन्यास 'सेलाम्बस' (१९२०) है। उसमे बडी चतुराई से आज के विलासी धुनवादी स्वार्थत व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का उन्मूलन किया गया है। उसने बडी सुन्दर शैली मे अनेक असामान्य कहानिया भी लिखी। पर अनेक बार वह यथार्थ को इतना प्रतीक बना देता है कि उसकी शैली से 'कला के लिए कला' की ध्वनि निकलने लगती है। समसामयिक समस्याओं ने उससे कही अधिक गुस्ताफ हेलस्त्रोम[7] को आकृष्ट किया। उसके उपन्यासो में सुन्दरतम 'नेम बनाने वाले लेकहोलम का एक विचार' है (१९२७), जिसमे उसने स्वीडन जनसख्या पर विचार किया। सेल्मा लागरलोफ[8] के निधन के बाद स्वीडी एकेडमी में उसका स्थान एलिन वाग्नर[9] को मिला। वह पहले जर्नलिस्ट थी। उसकी नायिकाए अधिकतर आधुनिक नारिया हुई जो स्वतन्त्र रूप से अपना खर्च चलाती है। स्वावलम्बन उनका मूल मन्त्र है। उसने नारी-आन्दोलन' मे सक्रिय भाग लिया और अपनी कृति 'पेन्स्कापतेर' (कलम) मे उसने स्वीडन मे नारी-स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक वर्षों का अकन किया। उसके उपन्यास सुधार के द्योतक है और समाज के जीवन का अच्छा विश्लेषण करते है। 'आसा-हन्न'

१. Olof Hogberg (१८५५-१९३२), २. Pelle Molin, ३. Ludving Nordstrom, ४. Hjalmar Bergman, ५. Dostoievsky, ६. Sigfrid Siwertz (जन्म १८८२), ७. Gustaf Hellstrom (जन्म १८८३), ८. Selma Lagerlof, ९. Elin Wagner (जन्म १८८२)

(१९१८) उसकी सफल कृति है। मारिका स्टीयर्नस्टेड्ट[1] ने उच्चवर्गीय जीवन का अपने उपन्यासो मे अंकन किया है। उसका उपन्यास 'उल्लाबेल्ला' (१९२२), जो कुलीनता का वर्णन करता है, देश मे काफी लोकप्रिय हुआ। नारी-उपन्यासकारों मे उसका अपना स्थान है। गेर्ट्रूड लिल्जा[2] मारिका से प्राय १२ वर्ष छोटी है। कहानीकारों मे उसका ऊंचा स्थान है और उसके उपन्यासों मे 'स्थानीय' पृष्ठभूमि अधिकाधिक चित्रित हुई है। उसने असफल व्यक्तियों का काफी सफल अंकन किया है। उसीकी भांति उसकी समवयस्का अना-लेना-एल्गस्त्रोम[3] ने भी अपने समाज के निचले स्तर के चित्र प्रस्तुत किए है। इस दिशा में उसके उपन्यास 'कंगाल लोग' (१९१२) और 'मानाग' (१९१७) खास सफल हुए है। स्वयं वह मध्यवर्ग की है, परन्तु उसकी सहृदयता निम्नवर्गीयों के प्रति है। इस प्रकार के चित्र-निरूपण में मार्टिन कोच[4] योग्यता और ज्ञान दोनों दृष्टियों मे उससे बड़ा है। उसके चित्रण मे रूसी साहित्यकारों की परख और पकड़ मूर्तिमान हो गई है। अपने 'आर्बेतार' (मजदूर, १९१२) मे उसने देश के साहित्य मे पहली बार श्रमिकों के जीवन का सही अंकन किया है। उसकी सुन्दरतम रचना 'भगवान का सुन्दर संसार' (१९१६) है। उसमे उसने निचले स्तर के लोगो की स्थिति का, उनके अनिवार्य अपराधों का समाजवादी दृष्टि से अद्भुत अंकन किया है। फाबियन मान्सोन[5] ने अनेक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और उनमे बदलते हुए जीवन को प्रतिबिम्बित किया। गुस्ताव-हेदन्विन्द एरिक्सोन[6] उससे अधिक समर्थ कलाकार था और उसने मजूरों तथा गिरी स्थिति के लोगों का समर्थ चित्र खींचा। अलबर्ट विक्स्टेन[7] के आर्कटिक महासागर सम्बन्धी उपन्यास भी स्वीडन में चाव से पढ़े जाते है।

प्रथम महासमर ने स्वीडन के साहित्य पर भी स्वाभाविक ही गहरा प्रभाव डाला। परिणामतः समकालीन समस्याओं पर गहरा विचार होने लगा। लुण्ड यूनिवर्सिटी के दर्शन के प्रोफेसर हान्स लारसन[8] ने समसामयिक प्रश्नो पर अपने डायलॉग-उपन्यासो मे विचार किया। उस युद्ध के बाद अनेक कवियो ने जीवन के दुःखों का अंकन प्रारम्भ किया। अनेक धर्म की ओर झुके। दूसरों ने कठिनाइयों को हल करने वाले संघर्ष को अपनाया। परन्तु इनकी चेतना अधिकतर मध्यवर्गीय थी जो दुख के कारणों पर इतना विचार नही करती जितना उसके समसामयिक रूप पर और उसीके परिणामस्वरूप वे कभी कुंठा और कभी विषाद के शिकार होते हैं, वास्तविक समस्या सम्बन्धी कृतियां १९२० के बाद काव्य-क्षेत्र मे प्रस्तुत होने लगी जब मजूर वर्ग के अधिकारी साहित्यकारों ने उस क्षेत्र मे

१. Marika Stiernstedt (जन्म १८७५); २. Gertrud Lilja (जन्म १८८७); ३. Anna Lenah Elgstrom (जन्म १८८४); ४. Martin Koch; ५. Fabian Mansson (१८७२-१९३८); ६. Gustav Hedenvind-Eriksson (जन्म १८८०); ७. Albert Viksten (जन्म १८८९); ८. Hans Larsson (१८६२-१९४४)

पदार्पण किया। उन्होंने परंपरा और सास्कृतिक दाय को मानकर भी समसामयिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ और उनके समाधान को उनके ऊपर रखा। उनके शब्दो मे सादगी और ताजगी है और रोजमर्रा का जीवन सस्वर हो उठता है। इस दल के कवियो मे विशिष्ट और दीर्घायु बिरगैर सिओबर्ग[1] है। उसकी प्रसिद्ध रचना 'फ्रिदाज बोक'(फ्रीदा की पुस्तक, १६२२) बड़ी सुन्दर कृति है और साधारण से धीरे-धीरे उठकर कला का अद्भुत प्रतीक बन जाती है। वह ४४ वर्ष की अल्पायु मे ही मर गया और वर्तमान स्वीडी साहित्य को परिणामतः बडी हानि हुई। डान ऐण्डरसन[2] भी उसीकी भाति 'प्रोलेतारियन'[3] का कवि है। उसकी मृत्यु १६२० मे ३८ वर्ष की अवस्था मे ही हो गई। उसने कविता के अतिरिक्त कुछ उपन्यास भी लिखे। वह आधुनिक स्वीडी साहित्य मे काफी ऊचा साहित्यिक माना जाता है।

एरिक लिन्डोर्म[4] वर्तमान परपरा का कवि था जो १६४१ मे मरा। उसकी कविताए मधुर और मृदुल कल्पनाओ द्वारा जीवन का स्पर्श करती हे। वह दृष्टिकोण से क्रान्तिकारी था। रोजमर्रा के जीवन को विशेषत कार्ल आस्प्लुन्ड[5] और गुन्नार मास्कोल सिल्फरस्तोल्पे[6] ने अपनी कृतियो का आधार बनाया। प्रथम महासमर की घटनाओ को लेकर जो सिल्फर स्तोल्फे ने अपना 'स्वाल्लार्नी' (हिरो, १६१६) लिखा तो उसकी बडी ख्याति हुई। उसने अपने प्रात के स्थानीय चित्रो का भी लिरिको मे अकन किया है। वह स्वीडन के देहातो के भी अभिराम चित्र प्रस्तुत करता है। रागनर यान्देल[7] ने अपनी कविताओ मे पहले गहरी सामाजिक सहृदयता दिखाई, वह स्वय सर्वहारा वर्ग का था। एक नितात करुण म अर्थ-बहुल लिरिक मे उसने क्रातिकारी नायको की स्तुति की है। धीरे-धीरे उसकी कृतियों मे एक धार्मिक चेतना का विकास हुआ जिसने उसकी सबल समाजवादी प्रेरणा को कुठित कर दिया। जिन अन्य कवियो ने स्वीडन को अपने लिरिक दिए उनमें प्रधान बेरित स्पोग[8], गाब्रियल जोन्सन[9], आइनर माल्म[10] आदि है। स्टेन सेलान्दर[11] संस्कृति और सामाजिक प्रश्नों पर विचार रखता है। उसकी कविताओ के अनेक सग्रह है जिनमें शैली का सुन्दर विकास हुआ हे। पार लागरक्विस्त[12] पहले महासमर की क्रूर स्मृतियों मे उद्वेलित कवि है। उसने ड्रामा के क्षेत्र मे एक प्रकार के पुनर्जागरण का

१. Birgar Sjoberg; २. Dan Andersson; ३. Proletarian Poet; ४. Erik Lindorm; ५. Karl Asplund (जन्म १८८०); ६ Gunnar Mascoll Silfverstolpe (१८९३-१९४२); ७. Ragnar Jandel (१८९५-१९३९); ८. Berit Spong (जन्म १८९५); ९ Gabriel Jonsson (जन्म १८९२); १०. Einar Malm (जन्म १९००); ११. Sten Selander (जन्म १८९१); १२. Par Lagerkvist (जन्म १८९१)

भी स्वप्न देखा। जर्मन अभिव्यंजनावाद से भी वह काफी प्रभावित है। सांस्कृतिक दृष्टि से वह मानवतावादी है और उस मानवतावाद का हिंसक शक्तियों से उसने अपने 'जल्लाद' और 'बौना' नामक नाटकों मे बचाव किया है। बर्टिल माल्मबर्ग[1] पलायनवादी है जो संसार के दुखो से भागकर अनन्त सौंदर्य के उपचेतन संसार में शरण लेता है। उसकी कविताओ मे वैयक्तिक रंग है, विषादपूर्ण, निराशावादी। अपने कवितासंग्रह 'ऐटलान्टिस' (१९१६) और 'सीमा की कविताए' (१९३५) मे उसका दृष्टिकोण मूर्त है। एरिक ब्लोमबर्ग[2] ने पार्थिव ससार को काल्पनिक के ऊपर स्थान दिया है, यद्यपि आदर्शवाद उसका भी स्पष्ट है। कारिन बोये[3] उसी चेष्टा का कवि है। यद्यपि उसके आदर्शवाद का आधार धर्म नही है। काव्य-क्षेत्र मे उसका स्थान ऊंचा माना जाता है। १९४१ मे ४१ वर्ष की आयु मे उसका निधन हुआ।

प्रथम महासमर के बाद मजूर वर्ग की शक्ति बढ़ चली। उसमें शिक्षा का विशेष प्रचार हुआ और उसके 'सर्वहारा कवि' देश के साहित्य में अग्रणी हुए। समसामयिक जीवन उनकी कृतियो मे स्पष्टतः मूर्त हो उठा है। सामाजिक दृष्टिकोण प्रोलेतारियन पृष्ठभूमि से अंकित होता है। कुछ तरुण प्रोलेतारियन लेखकों के आत्मकथात्मक उपन्यासों ने मजूर वर्ग की स्थिति को समाज के दृष्टिकोण का केन्द्र बना दिया। कविताओं की दिशा मे भी सर्वहारा वर्ग के कवियो ने लम्बे कदम बढ़ाए।

परन्तु ऐसे साहित्यकारों की विदेश मे कमी न रही जिन्होंने उपस्थित सत्य की अवहेलना कर 'सब्जेक्टिव' का पोषण किया। एग्निस वान क्रूसेन्स्त्येर्ना[4] इसी वर्ग की लेखिका थी। शृंगारिता के अमर्यादित निरूपण ने उसके दृष्टिकोण को शीघ्र ही विकृत कर दिया। आइविन्द जान्सन[5] बौद्धिक और व्यापक दृष्टिकोण से उसमें ऊंचा मनोवैज्ञानिक है। उसकी पिछली कृतियो मे मजूर जीवन का अच्छा मनोवैज्ञानिक अध्ययन हुआ है। तरुण मनोविज्ञान के चित्रण में स्वीडी साहित्य मे जान्सन के बराबर कोई कृती नही। अपने युद्धकालीन उपन्यासो में उसने व्यक्तिवाद और शक्ति पूजा का प्रबल विरोध किया है। रूडोल्फ वार्नलुण्ड[6] ऊंचे तबके का उपन्यासकार है और उसकी कृतियो मे मजूर जीवन छलका पड़ता है। जोजेफ कयेलग्रेन[7] उसी दल का लेखक है और उसके मूर्तन का विषय भी साधारण श्रमिक है।

स्वीडी देहात का जीवन चित्रित करने वालों में अग्रणी विल्हेल्म मोबर्ग[8] है।

---

१. Bertil Malmberg (जन्म १८८९); २. Erik Elomberg (जन्म १८९२); ३. Karin Boye; ४. Agnes Von Krusenstjerna; ५. Eyvind Johnson (जन्म १९००); ६. Rudolf Varnlund (१९००-४५); ७. Josef Kjellgren (जन्म १९०७); ८. Vilhelm Moberg (जन्म १८९८)

उसका उपन्यास 'रास्केन्स' (१९२७) काफी प्रसिद्धि पा चुका है। उसने ड्रामा और उपन्यास दोनो साधनों से किसान जीवन का सफल चित्रण किया। ऐतिहासिक उपन्यास 'रिद ईनान' (१९४१) उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। उसमे उसने अत्याचार और नानाशाही के विरुद्ध स्वीडन की जनता की प्रतिक्रिया अकित की है। उसने किसी स्कूल मे शिक्षा न पाई थी। इवार लो-जोहान्सन[1] भी उसीकी भाति आत्म-शिक्षित है। उसने अपने उपन्यासो मे समाज का चित्रण काफी खूबी के साथ किया है। उसके 'गोड नाटयोर्द' (१९३२) मे मजूरो की शक्ति, भावावेग और लक्ष्य का बडी यथार्थवादी उनमता से मूर्तन हुआ है। सर्वहारा चेतना की यह एक अद्भुत कृति है। मोआ मार्तिन्सन्[2] भी उसी दृष्टिकोण से देहाती सर्वहारा वर्ग का अपनी कृतियो मे अकन करती है। वह स्वय देहात का जीवन देख-जान चुकी है। जान फ्रिडगार्द[3] भी उसी दल का साहित्यकार है।

स्वीडन मे एक पाच तरुणो का दल है। जिसके सदस्यो ने आलोचको को घनी मात्रा मे आकृष्ट किया। उनमे हैरी मार्तिन्सन[4] काफी समर्थ साहित्यकार है। उसने आधुनिक गद्य मे समुद्र सम्बन्धी कुछ सुदर प्रकाशन किए। १९४५ मे प्रकाशित उसके कविता-सग्रह ने उसे प्रतिभाशील कवियो की पक्ति मे खडा कर दिया। उसी दल का गुस्ताव सेन्डग्रेन[5] ने वर्तमानवादी कवि के रूप मे पहले लिखना शुरू किया, फिर वह गद्य मे स्केच लिखने लगा। उस दल का वास्तविक प्रतिनिधि आर्थर लुण्डक्विस्त[6] है। उसने अपनी कविताओ मे उत्साहपूर्वक अकृत्रिम जीवन के आनद की प्रशसा की है। नैराश्य का उनमे कही नाम नहीं। फिर भी १९३० के बाद के अनेक कवियो मे कुठा और निराशा मूर्तिमान हुई है। निल्स फर्लिन[7] ऐसा ही निराशावादी कवि है, परन्तु उस दिशा मे जीवन की निरर्थकता का प्रतिपादन याल्मार गुलबर्ग[8] ने दार्शनिक की निष्ठा से किया। उसी निराशावादी चेतना के साहित्यकार जोहान्स एडफेल्ट[9] और कार्ल रागनर गिएरो[10] भी है। पिछले काल के कुछ वर्तमान उपन्यासकारो में आचारवादी भी हुए है, जैसे ओले हेडबर्ग[11], हेराल्ड बेइजर[12], हैरी ब्लोमबर्ग[13] और स्वेन स्तोलपे[14]।

१. Ivar Lo-Johansson (जन्म १९०१); २. Moa Martinson (Helge Svarts १८९०); ३. Jan fridegard (जन्म १८५७), ४. Harry Martinson (जन्म १९०४); ५. Gustav Sandgren (जन्म १९०४), ६ Arthur Lundkvist (जन्म १९०६); ७. Nils Ferlin (जन्म १८९८); ८. Hjalmar Gullberg (जन्म १८९८); ९. Johannes Edfelt (जन्म १९०४); १०. Karl Ragnar Gierow (जन्म १९०४), ११. Olle Hedberg (जन्म १८९९); १२ Herald Beijer (जन्म १८९६); १३ Harry Blomberg (जन्म १८९३), १४ Sven Stolpe (जन्म १९०५)

स्वीडन का साहित्य उत्तरी यूरोप के साहित्यों में विशिष्ट स्थान रखता है। पिछले काल निम्नवर्गीय जीवन को जितना उसके साहित्यकारों ने आलोकित किया है, उतना दूसरे साहित्यों में कम हुआ है। पिछले युद्ध-काल में भी वहां के साहित्यकार अपने नात्सी विरोधी प्रयत्नों में लगे रहे। नात्सी जुल्म के शिकार अनेक नार्वे और डेन-साहित्यकारों ने स्वीडन में ही शरण ली थी। और वहां अपनी कृतियों का विकास किया था।

२६. हित्ती साहित्य

बोगजकोइ के खण्डहर

हित्तियों के अपूर्व साहित्य भडार के प्रतीक

हित्ती[1] साहित्य को भी हम आज के अर्थ मे साहित्य नही कह सकते। परन्तु जो कुछ भी उस भाषा और लिपि में उपलब्ध है उसका यहा कुछ हाल लिख देना समीचीन होगा। हित्ती, वैसे, हिन्द-यूरोपीय भाषा परिवार की ही एक शाखा है परन्तु उसकी लिपि और साहित्य अक्कादी (आसुरी-बाबुली) अथवा उससे भी पूर्ववर्ती सुमेरी से प्रभावित है।

अभी हाल तक तो पता भी न था कि हित्ती संस्कृति या इतिहास का भी कोई अपना अस्तित्व है। परन्तु अब पुराविदों के फावडे ने प्रभावित कर दिया है कि तुर्की (एशियाई) साम्राज्य के एक बडे भाग के स्वामी हित्ती थे और उनका अपना साम्राज्य था जो प्राचीन काल के मध्य-पूर्व के साम्राज्यों मे (ई० पू० १७वी-१२ सदियो में) तीसरा स्थान रखता था। उससे बडे साम्राज्य अपने-अपने समय मे केवल मिस्रियों और आसुरी-बाबुलियों के ही रहे थे।

जर्मन पुराविद् ह्यूगो विंकलर[2] ने प्राचीन हित्ती साम्राज्य की राजधानी बोगजकोइ (प्राचीन का आधुनिक प्रतिनिधि) से खोदकर जब कीलनुमा अक्षरो मे लिखी प्राय: बीस हजार ईंटें और पट्टिकाएं रख दी तब हित्तियो के उस भडार का पता चला। भारत के लिए इन खोजो का बडा महत्व था क्योकि बोगजकोइ से ही मिली एक चौदहवी सदी ई० पू० की पट्टिका पर ऋग्वेद के इन्द्र, वरुण, मित्र आदि देवताओ के नाम 'पदपाठ' (सिलेबिक लिखावट) मे मिले। पट्टिका हित्ती-मितन्नी दो राष्ट्रों के युद्धान्तर का सन्धि-पत्र थी जिसपर साक्ष्य के लिए इन देवताओ के नाम दिए गए थे। इस अभिलेख से आर्यों के संक्रमण-ज्ञान पर प्रभूत प्रकाश पडा है।

हित्ती कब उठकर प्रबल हो गए यह कहना तो बडा कठिन है परन्तु इतना निश्चित है कि अट्ठारहवी सदी ई० पू० में उनकी शक्ति का लोहा बाबुली और मिस्री दोनो साम्राज्यों ने माना और फिलिस्तीन, एशिया माइनर, सीरिता और दजलाफरात के द्वाब पर उनका दबदबा बढा। उनका पहला साम्राज्य-काल सत्रहवी से पन्द्रहवी सदी ई० पू० तक रहा और दूसरा चौदहवी से बारहवी सदी ई० पू० तक।

---

१. Hittite २. Hugo Winckler

पूर्वी एशिया माइनर के स्थानीय निवासी 'खत्ती' कहलाते थे। उन्हींके नाम से हित्ती या हत्ती शब्द निकला। परन्तु खत्ती न तो हित्तियो की भाति हिन्द-यूरोपीय भाषा बोलते थे, न हित्तियो के रक्त सबन्धी थे। ई०पू०की तीसरी सहस्राब्दी मे कभी हित्तियो का एशिया माइनर के पूर्वी भाग मे प्रवेश हुआ और उन्होने स्थानीय सस्कृति की अनेक बाते अपना ली। बोगजकोइ से मिली पट्टिकाओ मे एक बडी महत्व की थी क्योकि उसपर कालम बनाकर बराबर सुमेरी, अक्कादी, हित्ती आदि भाषाओ के शब्द पर्याय दिए हुए थे। इससे यह भी पता चला कि किस प्रकार अनेक भाषाओ से हित्तियो का सम्पर्क था और उन्होने उन सारी भाषाओ और उनके साहित्यों से सीखा और अपना ज्ञान भडार भरा। अनेक बार तो बाबुली आदि के साहित्य के लिपिपाठ हित्ती-समानान्तर अनूदित साहित्य से शुद्ध किए गए है। प्रसिद्ध बाबुली काव्य 'गिल्गमेश' के अनेक अश, जो पट्टिकाओ के टूट जाने से नष्ट हो गए थे, हित्ती पट्टिकाओं से ही पूरे किए गए।

हित्ती ऐतिहासिक साहित्य का अधिकाश राजवृत्तो से भरा है। लेखक वृत्त गद्य की साहित्यिक शैली में वृत्त लिखते थे और उनके नीचे अपना हस्ताक्षर कर दिया करते थे। इन वृत्तो मे अनेक प्रकार का ऐतिह्य है —असुर-बाबुली-मिस्री राजाओ और सम्राटो के साथ सुलहनामे, राजघोषणाए और राजकीय दानपत्र, नगरों के पारस्परिक झगड़ों मे बीचबचाव, विद्रोही सामन्तो के विरुद्ध साम्राज्य के अपराध-परिगणन, सभी कुछ इन हित्ती अभिलेखो मे भरा पडा है। इनमे विशेष महत्व के वे अगणित पत्र हैं जो हित्ती सम्राटों ने दूसरे समकालीन नरेशो को लिखे थे या उनसे पाए थे। इन पत्रो को साधारणत. अमरना (तेल-एल-अमरना) पत्र कहते हैं। प्राचीन काल की यह पत्र-निधि सर्वथा अद्वितीय और अनुपम है। इन पत्रो मे एक बड़े महत्व का है। उसे हित्तियों के राजा शुप्पिलुलिउमाश[1] के पास मिस्र की मल्का ने लिखा था। उसमे मल्का ने लिखा था कि हित्ती नरेश कृपया अपने एक पुत्र को उसका पति बनने के लिए भेज दे। कुछ काल बाद राजा का एक पुत्र भेजा भी गया परन्तु मिस्रियों ने शीघ्र ही उसे पकडकर मार डाला।

बोगजकोइ के उसी लेखभाडार से एक बड़ा महत्वपूर्ण हित्ती और मिस्र के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सन्धिपत्र उपलब्ध हुआ। जब हित्ती नरेश मुत्तालिश की सेनाओं ने मिस्री विजेता रामसेज[2] द्वितीय की सेनाओं को १२८८ ई० पू० मे कदेश के युद्ध मे बुरी तरह पराजित कर दिया तब मुत्तालिश[3] के उत्तराधिकारी खत्तुशिलिश[4] तृतीय और मिस्र राज के बीच सन्धि हुई। उसमे तै पाया कि मिस्र और हित्ती साम्राज्य के बीच बराबर मैत्री और पारस्परिक शान्ति रहेगी। ई० पू० १२७२ में इकरारनामा लिख डाला गया।

---

१. Shuppiluliumash (१३८५-१३५० ई० पू०); २. Ramesses (Rameses) II; ३. Muttalish ४. Khattushilish III

उसमें १८ पैराग्राफ है और वह चादी की पट्टिका पर खुदा है। खोदकर वह रामसेज के पास भेजा गया था। उसकी मुख्य शर्तें निम्नलिखित थीं दोनो मे से कोई दूसरे पर आक्रमण न करेगा, दोनो पक्ष दोनो देशो के बीच की पहली सन्धियो का फिर से समर्थन करते है, दोनो शत्रु के आक्रमण के समय एक दूसरे की सहायता करेंगे, विद्रोही प्रजा के विरुद्ध दोनों का सहयोग और राजनीतिक झगडो का 'परस्पर परिवर्तन। यह सधि इतनी महत्वपूर्ण समझी गई कि मिस्री और हित्ती रानियो ने भी परस्पर सधि की खुशी मे बधाई के पत्र भेजे। पश्चात् हित्ती नरेश की कन्या मिस्र भेजी गई जो सम्राट् रामसेज द्वितीय की रानी बनी।

बोगजकोइ की पट्टिकाओ पर २०० पैरो मे हित्ती कानून-विधान लिखा हुआ है। साधारणतः हित्तियो की दण्डनीति आसुरी, बाबुली, यहूदी दण्डनीति से कही मृदुल थी। प्राणदंड अथवा नाक-कान काटने की सजा शायद ही कभी दी जाती थी। कुछ यौन सबधी दण्ड तो इतने नगण्य है कि हित्तियो की आचार-चेतना पर विद्वानो को सन्देह होने लगा है। उस विधान का एक बडा अंश राष्ट्र के आर्थिक जीवन से सम्बन्ध रखता है। उससे प्रगट है कि वस्तुओं के मूल्य, नाप-तोल के बटखरे, पैमाने आदि निश्चित कर लिए गए थे। कृषि और पशुपालन-प्रधान सभ्यता की समस्याओ का उसमे आश्चर्यजनक मृदु उपायो से हल हुआ है। कानून और न्याय के प्रति उसमे प्रकटित आदर वस्तुत. अत्यन्त सराहनीय है। अनेक अभिलेखो मे महाई धातुओ के प्रयोग युद्ध-बदियो के प्रबध, चिकित्सा और शालिहोत्र आदि पर हित्ती मे प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। मध्यपूर्व मे ही सम्भवतः पहले पहल अश्व का प्रयोग शुरू हुआ। उस दिशा मे अश्व-विज्ञान पर पहला साहित्य (शालिहोत्र) मितनियो ने प्रस्तुत किया। उनसे हित्तियो ने सीखा और वे अपने पडौसियो तथा उत्तरवर्ती सभ्यताओ को सिखा गए।

इस साहित्य-भाण्डार मे सबसे अधिक भाग धर्म को मिला है। उससे प्रगट है कि हित्तियों के देवताओ की सख्या विपुल थी और वे प्रायः छ. अत्याधारो से लिए गए थे। ऊपर सधिपत्रो पर देवसाक्ष्य का उल्लेख किया जा चुका है। इन्ही सन्धिपत्रो पर देवताओ के नाम है जो सुमेरी-बाबुली, हुर्री, लूवी, खत्ती, हित्ती और भारतीय है। इन देवताओ के अतिरिक्त हित्ती आकाश, पृथ्वी, पर्वतो, नदियो, कूपो, वायु और मेघो की भी आराधना करते थे।

पौराणिक अनुवृत्तिक साहित्य मे प्राधान्य उनका है जो सुमेरी-बाबुली से ले लिए गए है। हित्तियो में बाबुली आधार से अनूदित गिलगमेश वडा लोकप्रिय हुआ। उस काव्य के अनेक खड अक्कादी, हित्ती और हुर्री मे लिखे बोगजकोई से उस अपूर्व भडार से मिले थे। हुर्री में लिखे 'गिलगमेश के गीत' तो पन्द्रह से अधिक पट्टिकाओ पर मिले थे। हित्तियों से ग्रीकों ने गिलगमेश का पुराण पाया।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि हित्तियो का धार्मिक साहित्य प्रचुर था। उसमे भी अक्कादी साहित्य की ही भांति सूक्त और गायन थे। मन्दिरो मे यज्ञ आदि पर जो क्रिया होती थी उसे पुरोहित पुरुष और नारी दोनो सम्पन्न करते थे। दोनो के नाम क्रियाओं में लिखे जाते थे। मंत्रदोष, प्रायश्चित, क्रिया सभी सबंधी थे। अपनी संस्कृति के निर्माण मे जितना योग अन्य संस्कृतियो से सर्वथा उदारभाव से हित्तियो ने लिया उतना सम्भवतः और किसी जाति ने नही। कोश निर्माण का पहला प्रयत्न उन्होने ही अनेक भाषाओं के पर्याय एक साथ समानान्तर लिख कर किया। विविध भाषाओ के समानान्तर पर्यायो से ही भाषा-शास्त्र की नीव की पहली ईंट रखी जा सकी, और वह ईंट हित्तियों ने ही प्रस्तुत की। हित्तियो के अन्तकाल में आर्यग्रीकों (डोरियनो) का आक्रमण ग्रीस पर हुआ और एशिया माइनर पर भी धीरे-धीरे उनका दबदबा बढ़ा जब उन्होने त्रॉय का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर नष्ट कर दिया। तभी हित्ती राष्ट्रसत्ता निस्तेज होकर केवल अपने साहित्य के उपकरणो से ग्रीस के नवागन्तुको के पुराण भरने लगी।